# जनजातीय एवं जनपदीय लोकगीतों में सामाजिक – राजनैतिक चेतना

## डॉ.विजय चौरसिया

# प्राक्कथन

राजनैतिक एवं सामाजिक चेतना की भावना हरेक भारतीय के मन में विघमान है। चाहे वह ग्रामीण हो या शहरी - हर क्षेत्र में हर अंचल में राजनैतिक एवं सामाजिक चेतना की भावना से ओत - प्रोत लोक गीत मिलेंगे। मध्य प्रदेश के लोकांचलों में ही नहीं जनजातीय क्षेत्रों में भी ब्रिटिश साम्राज्य से मुक्ति के लिये लोग शिद्दत से जुटे हुये थे। बस्तर, झाबूआ, मंड़ला, ड़िंड़ौरी जैसे तमाम जनजातीय क्षेत्र इस दिशा में शीर्ष पर थे। महाकौशल,बुंदेलखंड़,बघेलखंड़,निमाड़ और छत्तीसगढ़ जैसे लोकांचलों में भी स्वतंत्रता प्राप्ति के कार्य और भावनायें चरम पर थीं। जिससे मध्यप्रदेश के जनजातीय एवं लोकांचलों के सुराज लोकगीतों में स्वतंत्रता आंदोलन के स्वर मुखरित होते हैं।

लोकगीत न पुराने होते हैं न नये , वह तो जंगल के एक वृक्ष के समान है, जिसकी जड़ें तो दूर जमीन में धंसी हुयी हैं, परन्तु जिसमें निरंतर नई - नई ड़ालियां, पल्लव और फल - फूल रहते हैं। स्वतंत्रता आंदोलन के स्वर एक देश से दूसरे देश के गीतों में बराबर सामंजस रखते हैं। क्योंकी देश प्रेम और इससे प्रसूत स्वतंत्रता या राष्ट्रीयता का भाव जनमानस में किसी न किसी रुप में विघमान रहता है। जो युगानुरुप निर्झर की तरह झरने लगता है।

आदिकाल से अपनी विविधता और संवेदनात्मक ऊर्जा के बहुत सारे लोक गीत आज भी जीवित है,साथ ही बेहद लोक प्रिय भी हैं। जन मानस के सर्वोच्च सिंहासन पर विराजमान, ये लोक गीत किसी सम्राट की भांति सुशोभित हो रहे हैं। वास्तव में ये सबके सुख - दुख के साथी हैं। सभी को दुलारते पुचकारते और सांत्वना देते हुये निरन्तर गतिमान रहते हैं, इतना ही नहीं बल्कि आन्नद की नई दिशायें खोल देने की क्षमता है। लोक गीत मानव हृदय की सहज धड़कन है। सृष्टि के सम्पूर्ण बिम्ब लोक गीतों में जीवंत हो गये हैं। जिस दिन यह धड़कन बंद हो जायेगी, उस दिन समाज , संस्कृति, साहित्य सभी निष्प्राण हो जायेंगे। यदि कुछ बचा भी रहेगा । तो वह देखने,सुनने और प्रयोग करने लायक नहीं रहेगा। इनमें तो लोक जीवन का समूचा इतिहास समाया रहता हैं जो रचना अपनी माटी से जुड़ी रहती है तथा जिसमें मानवता की व्यथा - कथा समाहित होती है, वही कालजयी होती है। लोक गीतों की यात्रा कब और कहां से शुरु हुयी, यह कोई नहीं जानता। जबसे पृथ्वी लोक पर मानव जाति का प्रादुर्भाव हुआ तभी से इनका भी उद्‌गम माना जाता है।

लोक जीवन में जो भी घटित होता है। उसे लोकगीतों में देखा जा सकता

है। लोक साहित्य का लक्ष्य मनुष्य है। मनुष्य ही उसके चित्रण और अभिव्यक्ति का आधार है। जो रचना मनुष्य को अलग रखकर खड़ी होती है, वह समय के एक थपेड़े में ही धराशाही हो जाती है। लोक गीत किसी धर्म ,जाति, भाषा या प्रान्त के बंधन में कभी नहीं बंधा, उसने तो स्वतंत्रता जन्म सिद्व अधिकार के रुप में पाई है।

ये लोक गीत हमारी स्मृतियों को ताजा कर देते हैं तभी तो बूढ़े भी बच्चों की तरह नाचने गाने के लिये उछल पड़ते हैं। इनमें इतिहास की गौरव गाथा भी छिपी रहती है। जिन्हें सुनकर हमारी धमनियों में संचारित लहू उफान मारने लगता है। लोकगीत आने वाली पीढ़ी के समक्ष पौराणिक आदर्श प्रस्तुत करने में कुशल ही नहीं अपितु सफल भी हैं। इन लोक गीतों में मानवता ,चरित्र और बंधुत्व की भावना कूट - कूट कर भरी होती है। इतिहास और शास्त्र जहां उत्तर नहीं दे पाते, वहीं ये लोक गीत अपनी सरलता और मधुरता के बल पर पूरी व्यथा को ध्वनित कर देता है। परिवर्तन के दौर पर विचलित मन को ये लोक गीत काफी धीरज प्रदान करते हैं। ये लोक गीत संजीवनी की भांति मृतकों में प्राण फूंक देते हैं। देश का सच्चा इतिहास और उसका नैतिक और सामाजिक आदर्श इन लोकगीतों में सुरक्षित है। राष्ट्रीय भावना को,जन चेतना को, लोकगीतों में व्यक्त करने की एक सुदीर्घ परम्परा रही है। अपने देश के प्रति प्रेम और वीरत्व की भावना जाग्रत करने की यह परंपरा इन लोक गीतों में बहुतायत से देखने को मिलती हैं। ये लोकगीत राष्ट्रीय संतुलन बनाये रखने और विश्वबन्धुत्व की भावना स्थापित करने के परम साधन हैं।

आज लोक गीत इस मुकाम पर हैं कि सारा आयाम इनसे प्रभावित है। विशेष भाषा - शैली का मिश्रण होने से लोक गीत विभाजित भी हुये जैसेः बुंदेलखंड़ी, मालवी, छत्तीसगढ़ी, भोजपुरी, मराठी, बंगाली, राजस्थानी, गुजराती, पंजाबी, आसामी, उड़िया, गोंड़ी, नेपाली, ब्रजवासी, बैगानी, उरांव, बघेली, निमाड़ी, भतरी, भीली, हल्बी, कोरकू इत्यादी कई भाषाओं के आधार पर इनका विभाजन हुआ।

लोक गीतों की धुनों में हमारे यहां होली, फाग, दीवाली, रसिया, लांगुरिया, बधाई, राई, बन्ना, शैला - रीना, पंड़वानी, करमा, साखी, चौमासा, मटेश, ढ़ोला, सजनई, दादरा, कहरवा, ददरिया, भड़ौनी, भजन , देवी गीत इत्यादि प्रमुख हैं।

देश में स्वतंत्रता आन्दोलन की शुरुआत इतिहास की महत्वपूर्ण घटना है। देश का शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र होगा, जहां राष्ट्रीय भावना ने अपना असर न उठाया हो।देखत - देखते यह लहर देश के कोने - कोने में फैल गई। इसी राष्ट्रीय भावना से प्रभावित होकर देश के हजारों युवक फांसी पर चढ़कर शहीद हो गये।

हजारों वीर गोलियों के शिकार हो गये और हजारों ऐसे भी मॉ के लाल हैं जो बिना प्रचार पाये,बिना अपने गले में हार ड़लवाये ही राष्ट्रीय आंदोलन की भेंट हो गये। जब देश की नस - नस में ,मिट्‌टी के कण- कण में राष्ट्रीय भावना उमड़ चुकी तो लोक जीवन उससे कैसे दूर रह पाता?लोक जीवन ही किसी राष्ट्र की संस्कृति का जीवंत ( सच्चा ) स्वरुप होता है। जब लोक में चेतना प्रस्फुटित होती है तो वह लोकगीतों के द्‌वारा साकार हो उठता है और यही लोक गीत अतीत का संबंधवर्तमान से जोड़े हुये इतिही ास के पृष्ठों को संवारते रहते हैं।

मध्य प्रदेश में आंदोलन निश्चित ही महत्वपूर्ण रहा जिसने राष्ट्रीयता के विविध आयामों एवं उसकी व्यापकता को सफलता पूर्वक प्रस्थापित किया और यही कारण था कि श्रमिकों, किसानों, छात्रों , युवकों एवं महिलाओं द्‌वारा किये गये आंदोलन सांस्कृतिक व सामाजिक संस्थाओं की राष्ट्रवादी, शैक्षणिक, साहित्यिक एवं पत्रकारिता के क्षेत्रों की भूमिका, हरिजनों का उद्‌वार कार्यक्रम, खादी प्रचार, स्वदेशी - आंदोलन आदि गतिविधियां भी इससे प्रभावित हुयी

मध्य प्रदेश भारत का हृदय स्थल है, यह भूमि वीर प्रसविनी है। जिन्होंने अपनी अंगुली से बूंद - बूंद करके विंध्यावासिनी देवी पर रक्त चढ़ाया और बुन्देले कहलाये। रानी दुर्गावती ने अकबर से लोहा लिया था। महरानी लक्ष्मी बाई और उनके सहयोगी वीर तात्या टोपे और बानपुर के महराजा मर्दन सिंह ने अंग्रेजों के छक्के छुड़ाये थे। मध्य प्रदेश के स्वतंत्रता सेनानियों ने लक्ष्य प्राप्ती के लिये एक लंबी अवधि तक राष्ट्र के साथ कंधे से कंधा मिलाकर संघर्ष किया। जिन विभूतियों ने मध्य प्रदेश स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व किया , उनमें से अनेक हमारे बीच से जा चुके हैं, लेकिन सौभाग्य से जो हमारे मध्य विघमान हैं, उनके सतायु होने की कामना करते हैं।

1857 ई. के स्वतंत्रता - संग्राम को अंग्रेज इतिहासकार अथवा उनके समर्थक भले ही राजाओं की राज्यलिप्सा कहें या फौज की गदर, लेकिन ऐसे प्रमाणिक साक्ष्य मौजूद हैं। जो उसे जनता का स्वतंत्रता संग्राम सिद्‌व करते हैं। गवाह है वह सच्चा इतिहास, जो सत्ता के अभिलेखों पर विश्वास नहीं करता,वरन् लोक साक्ष्यों में प्रमुख हैं लोक प्रचलित लोक गीत, लोकगाथायें,कटक,समौ,लड़ाई आदि।

प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के समय से ही मध्य भारत के अनेक स्थानों पर स्वतंत्रता की चेतना विकसित होना प्रारंभ हो गयी थी। यह प्रक्रिया नगरीय केंद्रों के साथ ही लोकांचलों और सुदूर आदिवासी क्षेत्रों में भी अपना असर दिखा रही थी। लोकांचलों और आदिवासी क्षेत्रों में उस समय विपुल मात्रा में ऐसे लोक गीत

रचे गये जो स्वतंत्रता की चेतना के साथ ही साथ सामाजिक और राजनैतिक चेतना और देश की मुक्ति के लिये चलाये जा रहे संघर्ष की मार्मिक अभिव्यक्ति कहे जा सकते हैं। ये लोक गीत लोक कंठ में निवास करने वाली हमारी वाचिक परंपरा की अमूल्य धरोहर हैं।

स्वराज संस्थान संचालनालय द्वारा स्वतंत्रता संग्राम में योगदान के विविध पक्षों, घटनाओं, व्यक्तियों और प्रवृत्तियों पर शोध कार्य के उद्देश्य से स्थापित स्वाधीनता फैलोशिप के अंर्तगत वर्ष 2006 - 07 में जनजातीय एवं जनपदीय लोक गीतों में सामाजिक - राजनैतिक चेतना विषय पर शोध कार्य करने का दायित्व मुझे सौंपा गया है। यह संग्रह उसी वाचिक परंपरा के थोड़े से भाग को संकलित प्रकाशित करने का प्रयास है। ये लोक गीत संर्घर्ष में शब्द की शक्ति को सहजता से अलोकित करते हैं। जिसमें हमारा अतीत अपने दुखों ,आशाओं और देश की मुक्ति के लिये जूझने के संकल्प में दीप्त हो उठता है। हमारा संग्राम लोक धर्मी था , इसका यह संग्रह एक अकाटय प्रमाण है। अभी तक हमने, विशेषकर इतिहासकारों ने ब्रिटिश शासन के संबंध में अपनी मौखिक परम्परा की ओर बहुत कम ध्यान दिया है। कुछ युवा इतिहासकार और लोक संस्कृति कर्मी इस दिशा में अवश्य अग्रसर हुये हैं। यह साहसी और सराहनीय पहल है।हम आशा करते हैं हमारे स्वतंत्रता प्रेमी योद्वा पुरखों और जनमानस की सही तस्वीर बाद की पीढ़ी के लिये सहजता से उपलब्ध होगी और एक समग्र दृष्टि का विकास होगा। यह संपूर्ण कार्य मेरे द्वारा प्रदेश के जनपदीय और जनजातीय क्षेत्रों में स्वयं भ्रमण कर वृद्व लोक गायकों उनकी पांडुलिपियों एवं सदर्भ ग्रंथों से प्राप्त लोक गीतों का संकलन किया गया है।

**डॉ.विजय चौरसिया**

Email.chourasiadrvijay3@gmail.com
<mailto:Email.chourasiadrvijay3@gmail.com>
mo-09424386678

लोकगीतानुक्रमणिका

## छत्तीसगढ़ अंचल में प्रचलित राजनैतिक एवं सामाजिक चेतना के लोकगीत

1.राष्ट्रीय आल्हा

2.छत्तीसगढ़ी आल्हा सुराज

3.पावो सुराज मजा करवो

4.दिल्ली के रंग हय गयीस लाल

5.हमला काबर सताथव गा अंगरेजवा

6.जागव जागव गा मोर भइया

7.तै हर लूट ड़ारे हमला रे! गोरा

8.भइया भइगे सुराज ,भइया भइगे सुराज

9.अब आये हे सुराज तेला नहिं छोड़ी

10.जय माटी जय जनम भूमि के

11. भड़किस आगी जहां तहां

12. चलवा क्रांति तेवहार मनाये

13. तुमला आज कसम हे संगी

14. आवव गोहरावव सब संगी

15.गांधी तैं कैसे जूझि गै सभा में

16.जयति जय - जय छत्तीसगढ़ देश

17.चलो सब जन मिलके रंहटा ला कातवो

18.अजी अंगरेज तै हमला बनाये कंगला

19.गांधी से लिये अवतार कलियुगी भाई

20.ते भारत के भाग ला फेरे

21.चरखा चलावो संगी चरखा चलावो

22.उगे है अकासे में पुन्नी के चंदा

23.हम गरीबहा के परान बचइया

24.अपन देस आजाद करे बर ,चलो जेल संगवारी

25.बापू जी हमला पढ़ाइस अहिंसा के पाठ

26. हमारो आए राज सुदेसा है

27. गांधी के विरवा

28. देवदूत बन आये गांधी

29. दीदी देखे जावो झंड़ा तिरंगा ला

30. चल गिंया पढ़े जाबो खुले है मदरसा.

31. दारु मांगे जूता पनहीं मन लगे तो पी
32. छुआ छूत भरमा भूत
33.पहली पंवारों गौरी ,फेर गावो देवी शारदा.
34.हरे सुमिरन करौं रे.
35.नई गिरें पानी बूंदी नइै पाके धान.
36.हरे मैं तो गांव में रहिहौं गा .
37.दुधवा के मोल छुटवइहा.
38.दाउ कहे जल्दी आहे बिटिया.

## निमाड़ अंचल में प्रचलित राजनैतिक एवं सामाजिक चेतना के लोकगीत

1.भारत वंदना.
2.गाथा टण्ट्या देवत की
3. वारत टण्ट्या भील अंण पोमल भीलणी की
4. पोमली बोल रईऽज छे ललकार
5. बोलो कोई करनो छे मरदा
6. टण्ट्या कर ग्यो छे रापारोल
7. मरद टण्ट्या
8. आयो जाबर टण्ट्यो
9. टण्ट्या म्हारो भायो
10 टण्ट्यो भील बड़ो लरैया
11.गांधी थारी जोत से जोत जली.
12.गांधी इक महातमा हुयी गया.
13..ई खोटो पैसो नी खरी चांदी आयऽ.
14.आगे - आगे गांधी पीछे -पीछे सुभास.
15..जरमन तोर लड़ाई जिया न बांचै रे.
16.म्हारा चरखा का टुटनी तार.
17.भैया सोंवण को नंई हंई जमानो.
18.जाग रे किरसाण भाई.
19.द्वापर मऽ मोहन हुआ कलियुग मोहनदास.
20.चढ़ी गयो निरमल धाम,गैलवै बैकुंठ की सीधी पकड़ी.
21.जिस दिन याद करोगा,उस दिन बहोत झुरोगा.
22.कुदरत की गत् न्यारी साहेब.

23.रतन को पिंजरो रे जतान करी राखतो.

24.काया नहीं सुहानी भजन बिना.

25.भवर खेलन मत जईयो.

26. मन मेरे नजरों मोती आया

27..आधीनता जब आवै जन को.

28.ठंड़ा लीमड़ा री छाया,

29.कौन की माया कौन की काया.

30.हाउ तो रंग भरी दिवलो संजोवली

31. कोई नी मिलऽ रे म्हारा देश को.

32 .हारे मन भंवरा तू लोभिया.

33.सीता राम सुमर लेवो तजि देवो सब काम.

34.दुख सुख मन मं नी लावणा.

35.सोई पूछे सोई बावरा, क्या है उमर हमारी

36.अरे बणाजारा हो मित्र सुण - सुण बांता परेम की

37.म्हारो साई बसे अगमपुरी चलणा वही देश.

38.करम की गति न्यारी

39.घर बरज छेऽ नार चतुर ज्ञानी

40.काया जिव से येऊ कहे

41.राज पाट छोड़ी गया छोड़ा कुटुंब परिवार

42 .मन सागर दरिया बहे

43.अन्त मिलऽ नी कोई आपणा

## भील जनजाति में प्रचलित राजनैतिक एवं सामाजिक चेतना के लोक गीत

1. नोम सुणी भीमा नो
2. चोदंनी यो रोत से
3. कोण भीमों बोणसे
4. लाल घोड़ाऽ बोसी आयो
5. बोड़नी मोरनो से भीमो बोन जाणों से
6. यो चोंद जोगी गुयो
7. घोड़ा नीऽ टोप गूंजे टोपऽ टोप
8. रई ने केवें बोले रे गांधी हंई आवे
9. हांसु राईने केवें बोले मनजी नाल मांये रे

10. सासू बोलाड़े बणी जरा बोलजे
11. सोना नौ ढुल्यो बेनी रुपा ना पाया
12. खेती खेड़ा हरि नाम की तेमा मिलसे लाभ
13. ..ओम, सोम दोनों बैल सुरता रास लगाये

.

14. .सरग झोपड़ा बांदिया ने बण लिया रे दुवार.
15. .मायली गोदणी साधू धोई लेणा.
16. सीता हो राम सुमर लेणा भजि लेवो भगवान.
17. हारे सतगुरु का भरम नी पाये रे.
18. खोटो बेटो आज काम को.
19. .पावो फाटिया ने सूरिमल उगियो रे भंवरा.
20. भगवान लेखो मांगे जी.
21. चेतना.
22. यौवन की पीड़ा.
23. .दुखी गंवरा.
24. .लंगोटी प्रतीक है
25. .अन्ध विश्वास.
26. दारु.
27. धरती जोतकर

28.सिक्सा टाली जीवड़लो किकम करी नकेल रे

## मालवा अंचल में प्रचलित राजनैतिक एवं सामाजिक चेतना के लोकगीत

1. वात टण्ट्या मामा की
2. चाल चा म्हारा चक्र सुदरसन.
3. .छल्ला भोलक की भोलकी रे.
4. .आलकी के पालकी जै कन्हैया लाल की.
5. .अगड़ बंम नीचे खंब,देवी वन में गाजे.
6. .सीस कटाये ने घाट बंधायो,मुख पै उड़े रे गुलाल.
7. .अंगरेज ऊतरियो काली टोपी रा.
8. .अवतार महातमा गांधी का भारत का भार उतारन को.
9. .झंड़ा तिरंगा हिंद में आजाद हो लहरा गया.
10. .गांधी मातमा ने जदी करी सत्यागिरे की तययारी.

11. .हात लकड़िया पांव पवाड़िया.
12. .सुणलो दुखियों की आवाज.
13. . लाट साहब ने किरस्तान करने को बता
14. .गांधी जी का पुवाड़ा.
15. .ये देश गुलामी का पंजा से छुई ग्यो आंको बांको थो.
16. .सिर पे बांध के कफन चली थी जांवे शहीदों की टोली.
17. .सुन रे नाना सुन रे कान्हा,सुन ओ नानी धापू.
18. .जिना देस की माटी से यो बन्यो हमारो तन मोटो.
19. करम करो रे करमी लोगां
20. .मत पियो पिया जी दारुड़ी.
21. .आवो सब मिलकर कदम बढ़ई दो रे.
22.भारत की तकदीर बनई दो.

## भतरी जनजाति में प्रचलित राजनैतिक एवं सामाजिक चेतना के लोकगीत

1.भूमकाल गीत
2.राम भाई नाई कोनी

## उरांव जनजाति में प्रचलित राजनैतिक एवं सामाजिक चेतना के लोकगीत

1.चींया चींया बाबा रजिनिम चींया बाबा.
2.राजिर दुनिया सदर नानो

## हलवा जनजाति में प्रचलित राजनैतिक एवं सामाजिक चेतना के लोकगीत

1.भारत माता चो कहानी.
2..मंद चो जोर ने धरा धारी
3.माड़ीपाटा गीत.
4.मनाय दाय काल दादा.
5.मुरिया पाटा गीत.
6.सत ने मिला भात मिरदे
7. तुचो जय जय गाऊं माता
8.जेचो सेवा ने सब आसत.
9.ए हिंड़तो बीता झपके झपके.

10.गोटक खूंटे गांधी बाबा गोटक खुंटे जवाहर.

11 मंद के छांड़ा तुमी.

12.देस काजे जिउक सिखा देस काज मरा

16.जय जय भारत माता चो.

17.कठियावाड़ राज जो दिवान.

## कोरकू जनजाति में प्रचलित राजनैतिक एवं सामाजिक चेतना के लोकगीत

1.चोय चान्दी मान्दीवेन नेहरु गांधी जी चोय मान्दी वेन.

2.ड़ोंगरेन सत्याग्रह सेबेय कू.

3.इंगरेज कू गांजखे एटा कखब्बे.

4.टाला टालाटोन भारत माय जय माण्ड़ीयेन.

5.सूरज देवता तुम बड़ो रे भायु.

6.बारा जीरा खोदिया रे राजा मोर.

7.धरती चोजा लियेन टेगेन.

8.आजे डो कोन्जई आजे डो कोन्जई राजो.

9.मिनी नी दाना जोवन जा जगमा.

10.आला जड़ूका सायला रे राजा

11.बालेमा बालेमा बालमा जा .

12.गंगा जमुना डो सुबान केरे.

13.कनियारी फूल डो माय.

14.ढोगजा गोमजा डोगेजा अंगा बन डो पगड़ी बान.

## बघेलखंड़ में प्रचलित राजनैतिक एवं सामाजिक चेतना के लोकगीत

1.अंगरेजन के राज मा केवादा व्है गा रे.

2.इन गुन्ड़ों ने होरिका रचाये दिहे गा.

3.गांधी केर आई बहार.

4.भारतवासी बड़े सूरमाकठिन जात बलवान गा.

5.चार सौ बरिस मा सुराज मिला हो.

6.गांधी नीति तोहार देश को आजाद करायो रे.

7.जब -जब उठी बड़ेरा जोरगर देस मा छाई रे.

8.आज देस आजाद त हंई पइ मन नहीं मानई रामा.

9.नई चमक मॉ लोकरीति बिसराईने हो.

10.भारत माता के पूत भे गांधी,काटिन कठिन कलेश हो मॉ.

11.दुखः दरिद्र हरा तू गांधी,घटा टोप अंधियार.

12.देसवा अबई न संभरी तो फिर देस संभल न पाई कबहूं.

13. हमका निकही लागई गांधी केर चलनिया.

14.जहॅ - जहॅ गांधी सम्भारि पग ढ़ारिन हो.

15.गांधी भे अइसन लाल अहिंसा केर लई के ढ़ाल.

16.धरती के सरग बनायेंगे बापू.

17.कईले परनाम जोर दोनउ बांहीं.

18.गांधी के इतिहास बना सब झुकि - झुकि बांचइ हो.

19.सुलुग उठा पंजाब सगल, आंदोलन भूत सवार

20.गांधी कै जब आई ऑधी.

21.रघुपति राघव राजा राम पतित पावन सीताराम

22.मिलै वाली है सुराज सुना भाई.

23.जलियावाले बाग मा एक ठे सभा किहिन सब जाई.

24.सब झन बोलि महातमा गांधी केरि जय.

25.पहिलै तो फिरंगी आये बनके विपारी.

26.अगड़ बंम,बगड़ बंम महादेव.

27.बापू अपने भारत को तुम पहचान नहीं पाओगे.

28.ऐ नशा बाजी मा गा रे.

29.अमवा लगाये कं बड़ा फल जउ

30.पांच पेड़ आमा लगार के बड़ा फल

31. करम गति कोई नहीं बांच सुनाबय

## बुंदेलखंड में प्रचलित राजनैतिक एवं सामाजिक चेतना के लोकगीत

1.हुकुम गांधी के निभा प्यारे बन्ने

2.बदले लीनो है मलखे को.

3.पारीछत कौ कटक.

4.अरी कमोदनी तू कैसे रै गई बांड़ बेला में.

5.बड़े पारीछत महराज.

6.मुर्गा बोले पतेरन में.

7.भगे फिरत अंगरेजा बेकल,दौआ हो राओ हौआ.

8.भच्छन कर ततच्छन घोर मात कालिका.
9.काट कूट के सबई फिरंगी चित्रकूट पै धमके.
10.बांदा लुटो रात को गुंईयां.
11.अंगरेजन खों बुला इनन नैं बंटाधार करा दओ
12.खूबई लरी मरदानी .
13.कट गई झांसीवारी रानी.
14.उरझा सैन फिरंगी लूटैं.
15.फिरंगी झांसी भरोसे न रहीओ.
16.अंगरेजी परी गोरी गम खानें.
17.सात समुंदर दूर से आके हमपै ड़ांको ड़ारो जूं.
18.गांधी की लंगोटी की धुजा है सुराज की.
19.देखो टूटै न चरखा को तार.
20.भैया अब सुराज के लानै तन - मन से लग जानैं.
21.सैंया होकें भारतवासी काहे हॅसी करावत मोर .
22.बाजी भारत की रनभेरी.
23.पनघट में ड़ोलैं फिरगी

.

24.भारतवासी सोय रये सब, सिगरी दुनिया जागै री
25. चना जोर गरम बाबू
26. मन समझ करो उपकार देस में
27.अंगरेजन के गुलाम राजा.
28.गौरमेंट के बिना असि मथुरा गांधी लेत सुराजै.
29.चुनरिया रंग दैयो मोरे यार.
30.अरे गांधी बब्बा आये.
31.गांधी टोपी चल गई देखो चारउ देस.
32..नबाबी ढ़ीली परी आसफ खॉ की.
33.बंदो भारत माता तुमखौंपंईयां परौ नबाऔं सीस.
34.गांधी जू के जे बंदरा.
35.एक चुवन्नी चांदी की जै बोलो महातमा गांधी की.
36.देख गरीबी टपरिया में,बब्बा रहन लगे झुपड़िया में.
37.गांधी बब्बा बोलत ते.
38.दार चांवल रोटी के,गांधी एक लंगोटी के .

39.गांधी हमैं जगा रये ते.

40.पर गओ बेईमानी को पारो कौ करहै निपटारौं.

41..अपनी का कऊ से कानें,कएसे का मिल जानें.

42..तुम खॉ कात लगत है जाड़े बरसा के दिन आड़े.

43.घर में नाज नंई खेंवे खौं,न बरबरी रेवे खौं

44.छूट जात जगत सैं नातो चल कौल दे तातो .

45.रैया मन मोहल से बरकी,तुम नंई भई अहीरी की.

46.बाहर अंगिया पैर कड़े गये,नेंचें मूंड़ करै गये.

47.मानुष कबै - कबै फिर होनैं रजऊ बोल लो नौंने.

48.प्यारी लूट मजा लव रस के,जे जोवन दिन दस के.

49. कही मान लो छोड़ो नसे बाजी

50..जिनके पियत तमाकू सैंया उन तिरियन सुख नंईयां.

51.गांजा पियौ न पीतम प्यारे,जर में कमल तुमारे.

52.चाय पी पी के दूध कीकर दई मंहगाई

53.पिया हो गये तबाह सट्टा हार के

54.खोय देत हौ जीवन बिना काम के

55. स्वारथ को व्यवहार जगत में

56. गरब करे साई हारे

57..सबसे बोलो मीठी बानी,थोड़ी है जिन्दगानी.

58.मोहन लखौ देस पै गुरखा,गरज करे दुख बरखा.

59.जागो रे किसान भैया जागने की बेला. .

60.राधे गोविंद भजो राधे गोविंद.

61.आई जिनके घर फूहर नारियां.

62.बिन्नू सासरे में तनिक न ड्राइयों.

63.उड़ जाने गंगा राम परोसी बैठे कौन भरोसे.

64.चल बिरछ पूज गुन गायें सखी री.

## गोंड़ जनजाति में प्रचलित राजनैतिक एवं सामाजिक चेतना के लोक गीत

1.अपन भारत ला सुंदर बनावोगा.

2.लहर - लहर लहराये तिरंगा.

3.मोर रामगढ़ के रानी के पैंया लागूं रे.

4.दुर्गावती के राज में खुशी के जीना यार.

5.गढ़ मंड़ला की रानी दुर्गावती
6.खूब लड़ी दुर्गावती रानी.
7.दलपत को चाहे दुर्गावती.
8.गोंड़ ध्वजा फहराया.
9.भारत का पेड़ आखर भारत में कैसे आया.
10.लड़ाई मा भैया भारत सरकार.
11.अंगरेजन ला मार भगावो.
12. हे भारत लड़नी को जाय.
13.भारत भैया अंगरेजन से.
14.वीर जवाहर के तुम साथी.
15.भारतवासी कठिन सुरमा.
16.भारत माता खड़े हवै द्वार.
17.मोर भारत देश महान.
18.धन्य - धन्य मोर भारत माता.
19.फिर से आजा गांधी भारत में रे.
20.मोर भारत माता तोर सेवा.
21.पहरे तिरंगा लुगरा माता.
22.जय हो रे मोरे भारत माता
23.देश के राजनीति गा बैरनिया है गै.
24.दुर्गावती आल्हा.
25.आजादी के वर्षगांठ मा झंड़ा फहरावो गा
26.देश के नेताओ वीर बहादुर
27.रंग बिरंगी फुलबगिया कस देश ला हम सवरावो
28.मोर भारत देश के नेताओ भाईयो
29.झन पियो दारु ला
30.अहा हाय रे सुधारो चोला.
31.शिलालेख हमें भूली याद दिलाते हैं.
32.महल खड़े देखत है संसार.
33.बड़ा देव का महल हमारा.
34छोटा परिवार सुख राखे अपार
35.झिन काटो रुख राई रे संगी.
36.नदिया के दूर सिर में धुतिया पछारो.

37.हो जावे बरबाद नशाबाजी में गा.

38.पैली पवार तोला गावैं हो देवी.

39.मैया शारदा सिंग पे सवार.

40.पलाड़ी पाल तड़ा रेयो न अना.

41.मामा ना रचा ड़ारो वाले सांगो.

42.महात्मा गांधी ना राज

## बैगा जनजाति में प्रचलित राजनैतिक एवं सामाजिक चेतना के लोक गीत

1.चालो के चालो हमार देश मा.

2.ड़ोंगरी पहार रे गांधी संग जावो .

3. दुर्गारानी जादू मारे कंवलगढ़ भुंजाये.

## हिन्दी भाषा में राजनैतिक एवं सामाजिक चेतना के लोक गीत

1.गांधी चालीसा

2.चौंक उठा था विश्व एक दिन सुन यह तेरी बानी.

3.गांधी के राज में बापू के राज में.

4.सूर वीरता भर भारत को जग का मुकुट बनाना है.

5.गांधी से मिलने आये साबरमती जवाहर लाल.

6.आओ बच्चो वृक्ष लगायें.

संथाली भाषा में राजनैतिक एवं सामाजिक चेतना के लोक गीत

1.हिन्द रेन सोना,धरती रेन आत्मा मराड्ॖ

2.चेतना दिसम खुन गांधी बाबाये दराये कान्

1.मेरठ जनपद :गांधी दिवा दिखैयो रे.

2.भोजपुरी बिरहाः गांधी के लडइया

3.अवधी बिरहाः सुमरी गांधी ओ गंगा

संदर्भ ग्रंथ

0ध्ध्ध्ध्ध्0

# प्राक्कथन

राजनैतिक एवं सामाजिक चेतना की भावना हरेक भारतीय के मन में विघमान है। चाहे वह ग्रामीण हो या शहरी - हर क्षेत्र में हर अंचल में राजनैतिक एवं सामाजिक चेतना की भावना से ओत - प्रोत लोक गीत मिलेंगे। मध्य प्रदेश के लोकांचलों में ही नहीं जनजातीय क्षेत्रों में भी ब्रिटिश साम्राज्य से मुक्ति के लिये लोग शिद्‌दत से जुटे हुये थे। बस्तर, झाबूआ, मंड़ला, ड़िंड़ौरी जैसे तमाम जनजातीय क्षेत्र इस दिशा में शीर्ष पर थे। महाकौशल,बुंदेलखंड़,बघेलखंड़,निमाड़ और छत्तीसगढ़ जैसे लोकांचलों में भी स्वतंत्रता प्राप्ति  के कार्य और भावनायें चरम पर थीं। जिससे मध्यप्रदेश के जनजातीय एवं लोकांचलों के सुराज लोकगीतों में स्वतंत्रता आंदोलन के स्वर मुखरित होते हैं।

लोकगीत न पुराने होते हैं न नये , वह तो जंगल के एक वृक्ष के समान

है, जिसकी जड़ें तो दूर जमीन में धंसी हुयी हैं, परन्तु जिसमें निरंतर नई - नई ड़ालियां, पल्लव और फल - फूल रहते हैं। स्वतंत्रता आंदोलन के स्वर एक देश से दूसरे देश के गीतों में बराबर सामंजस रखते हैं। क्योंकी देश प्रेम और इससे प्रसूत स्वतंत्रता या राष्ट्रीयता का भाव जनमानस में किसी न किसी रुप में विघमान रहता है। जो युगानुरुप निर्झर की तरह झरने लगता है।

आदिकाल से अपनी विविधता और संवेदनात्मक ऊर्जा के बहुत सारे लोक गीत आज भी जीवित है,साथ ही बेहद लोक प्रिय भी हैं। जन मानस के सर्वोच्च सिंहासन पर विराजमान, ये लोक गीत किसी सम्राट की भांति सुशोभित हो रहे हैं। वास्तव में ये सबके सुख - दुख के साथी हैं। सभी को दुलारते पुचकारते और सांत्वना देते हुये निरन्तर गतिमान रहते हैं, इतना ही नहीं बल्कि आन्नद की नई दिशायें खोल देने की क्षमता है। लोक गीत मानव हृदय की सहज धड़कन है। सृष्टि के सम्पूर्ण बिम्ब लोक गीतों में जीवंत हो गये हैं। जिस दिन यह धड़कन बंद हो जायेगी, उस दिन समाज , संस्कृति, साहित्य सभी निष्प्राण हो जायेंगे। यदि कुछ बचा भी रहेगा । तो वह देखने,सुनने और प्रयोग करने लायक नहीं रहेगा। इनमें तो लोक जीवन का समूचा इतिहास समाया रहता हैं जो रचना अपनी माटी से जुड़ी रहती है तथा जिसमें मानवता की व्यथा - कथा समाहित होती है, वही कालजयी होती है। लोक गीतों की यात्रा कब और कहां से शुरु हुयी, यह कोई नहीं जानता। जबसे पृथ्वी लोक पर मानव जाति का प्रादुर्भाव हुआ तभी से इनका भी उद्गम माना जाता है।

लोक जीवन में जो भी घटित होता है। उसे लोकगीतों में देखा जा सकता है। लोक साहित्य का लक्ष्य मनुष्य है। मनुष्य ही उसके चित्रण और अभिव्यक्ति का आधार है। जो रचना मनुष्य को अलग रखकर खड़ी होती है, वह समय के एक थपेड़े में ही धराशाही हो जाती है। लोक गीत किसी धर्म ,जाति, भाषा या प्रान्त के बंधन में कभी नहीं बंधा, उसने तो स्वतंत्रता जन्म सिद्व अधिकार के रुप में पाई है।

ये लोक गीत हमारी स्मृतियों को ताजा कर देते हैं तभी तो बूढ़े भी बच्चों की तरह नाचने गाने के लिये उछल पड़ते हैं। इनमें इतिहास की गौरव गाथा भी छिपी रहती है। जिन्हें सुनकर हमारी धमनियों में संचारित लहू उफान मारने लगता है। लोकगीत आने वाली पीढ़ी के समक्ष पौराणिक आदर्श प्रस्तुत करने में कुशल ही नहीं अपितु सफल भी हैं। इन लोक गीतों में मानवता ,चरित्र और बंधुत्व की भावना कूट - कूट कर भरी होती है। इतिहास और शास्त्र जहां उत्तर नहीं दे पाते, वहीं ये लोक गीत अपनी सरलता और मधुरता के बल पर पूरी व्यथा को ध्वनित

कर देता है। परिवर्तन के दौर पर विचलित मन को ये लोक गीत काफी धीरज प्रदान करते हैं। ये लोक गीत संजीवनी की भांति मृतकों में प्राण फूंक देते हैं। देश का सच्चा इतिहास और उसका नैतिक और सामाजिक आदर्श इन लोकगीतों में सुरक्षित है। राष्ट्रीय भावना को,जन चेतना को, लोकगीतों में व्यक्त करने की एक सुदीर्घ परम्परा रही है। अपने देश के प्रति प्रेम और वीरत्व की भावना जाग्रत करने की यह परंपरा इन लोक गीतों में बहुतायत से देखने को मिलती हैं। ये लोकगीत राष्ट्रीय संतुलन बनाये रखने और विश्वबन्धुत्व की भावना स्थापित करने के परम साधन हैं।

आज लोक गीत इस मुकाम पर हैं कि सारा आयाम इनसे प्रभावित है। विशेष भाषा - शैली का मिश्रण होने से लोक गीत विभाजित भी हुये जैसेः बुंदेलखंड़ी, मालवी, छत्तीसगढ़ी, भोजपुरी, मराठी, बंगाली, राजस्थानी, गुजराती, पंजाबी, आसामी, उड़िया, गोंड़ी, नेपाली, ब्रजवासी, बैगानी, उरांव, बघेली, निमाड़ी, भतरी, भीली, हल्बी, कोरकू इत्यादी कई भाषाओं के आधार पर इनका विभाजन हुआ।

लोक गीतों की धुनों में हमारे यहां होली, फाग, दीवाली, रसिया, लांगुरिया, बधाई, राई, बन्ना, शैला - रीना, पंड़वानी, करमा, साखी, चौमासा, मटेश, ढ़ोला, सजनई, दादरा, कहरवा, ददरिया, भड़ौनी, भजन , देवी गीत इत्यादि प्रमुख हैं।

देश में स्वतंत्रता आन्दोलन की शुरुआत इतिहास की महत्वपूर्ण घटना है। देश का शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र होगा, जहां राष्ट्रीय भावना ने अपना असर न उठाया हो।देखत - देखते यह लहर देश के कोने - कोने में फैल गई। इसी राष्ट्रीय भावना से प्रभावित होकर देश के हजारों युवक फांसी पर चढ़कर शहीद हो गये। हजारों वीर गोलियों के शिकार हो गये और हजारों ऐसे भी मॉ के लाल हैं जो बिना प्रचार पाये,बिना अपने गले में हार ड़लवाये ही राष्ट्रीय आंदोलन की भेंट हो गये। जब देश की नस - नस में ,मिट्टी के कण- कण में राष्ट्रीय भावना उमड़ चुकी तो लोक जीवन उससे कैसे दूर रह पाता?लोक जीवन ही किसी राष्ट्र की संस्कृति का जीवंत ( सच्चा ) स्वरुप होता है। जब लोक में चेतना प्रस्फुटित होती है तो वह लोकगीतों के द्वारा साकार हो उठता है और यही लोक गीत अतीत का संबंधवर्तमान से जोड़े हुये इतिहीास के पृष्ठों को संवारते रहते हैं।

मध्य प्रदेश में आंदोलन निश्चित ही महत्वपूर्ण रहा जिसने राष्ट्रीयता के विविध आयामों एवं उसकी व्यापकता को सफलता पूर्वक प्रस्थापित किया और यही कारण था कि श्रमिकों, किसानों, छात्रों , युवकों एवं महिलाओं द्वारा किये गये आंदोलन सांस्कृतिक व सामाजिक संस्थाओं की राष्ट्रवादी, शैक्षणिक, साहित्यिक एवं पत्रकारिता के क्षेत्रों की भूमिका, हरिजनों का उद्वार कार्यक्रम, खादी प्रचार,

स्वदेशी - आंदोलन आदि गतिविधियां भी इससे प्रभावित हुयी

मध्य प्रदेश भारत का हृदय स्थल है, यह भूमि वीर प्रसविनी है। जिन्होंने अपनी अंगुली से बूंद - बूंद करके विंध्यावासिनी देवी पर रक्त चढ़ाया और बुन्देले कहलाये। रानी दुर्गावती ने अकबर से लोहा लिया था। महरानी लक्ष्मी बाई और उनके सहयोगी वीर तात्या टोपे और बानपुर के महराजा मर्दन सिंह ने अंग्रेजों के छक्के छुड़ाये थे। मध्य प्रदेश के स्वतंत्रता सेनानियों ने लक्ष्य प्राप्ती के लिये एक लंबी अवधि तक राष्ट्र के साथ कंधे से कंधा मिलाकर संघर्ष किया। जिन विभूतियों ने मध्य प्रदेश स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व किया , उनमें से अनेक हमारे बीच से जा चुके हैं, लेकिन सौभाग्य से जो हमारे मध्य विघमान हैं, उनके सतायु होने की कामना करते हैं।

1857 ई. के स्वतंत्रता - संग्राम को अंग्रेज इतिहासकार अथवा उनके समर्थक भले ही राजाओं की राज्यलिप्सा कहें या फौज की गदर, लेकिन ऐसे प्रमाणिक साक्ष्य मौजूद हैं। जो उसे जनता का स्वतंत्रता संग्राम सिद्व करते हैं। गवाह है वह सच्चा इतिहास, जो सत्ता के अभिलेखों पर विश्वास नहीं करता,वरन् लोक साक्ष्यों में प्रमुख हैं लोक प्रचलित लोक गीत, लोकगाथायें,कटक,समौ,लड़ाई आदि।

प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के समय से ही मध्य भारत के अनेक स्थानों पर स्वतंत्रता की चेतना विकसित होना प्रारंभ हो गयी थी। यह प्रक्रिया नगरीय केंद्रों के साथ ही लोकांचलों और सुदूर आदिवासी क्षेत्रों में भी अपना असर दिखा रही थी। लोकांचलों और आदिवासी क्षेत्रों में उस समय विपुल मात्रा में ऐसे लोक गीत रचे गये जो स्वतंत्रता की चेतना के साथ ही साथ सामाजिक और राजनैतिक चेतना और देश की मुक्ति के लिये चलाये जा रहे संघर्ष की मार्मिक अभिव्यक्ति कहे जा सकते हैं। ये लोक गीत लोक कंठ में निवास करने वाली हमारी वाचिक परंपरा की अमूल्य धरोहर हैं।

स्वराज संस्थान संचालनालय द्वारा स्वतंत्रता संग्राम में योगदान के विविध पक्षों, घटनाओं, व्यक्तियों और प्रवृत्तियों पर शोध कार्य के उद्देश्य से स्थापित स्वाधीनता फैलोशिप के अंर्तगत वर्ष 2006 - 07 में जनजातीय एवं जनपदीय लोक गीतों में सामाजिक - राजनैतिक चेतना विषय पर शोध कार्य करने का दायित्व मुझे सौंपा गया है। यह संग्रह उसी वाचिक परंपरा के थोड़े से भाग को संकलित प्रकाशित करने का प्रयास है। ये लोक गीत संर्घर्ष में शब्द की शक्ति को सहजता से अलोकित करते हैं। जिसमें हमारा अतीत अपने दुखों ,आशाओं और देश की मुक्ति के लिये जूझने के संकल्प में दीप्त हो उठता है। हमारा संग्राम लोक धर्मी

था , इसका यह संग्रह एक अकाटय प्रमाण है। अभी तक हमने, विशेषकर इतिहासकारों ने ब्रिटिश शासन के संबंध में अपनी मौखिक परम्परा की ओर बहुत कम ध्यान दिया है। कुछ युवा इतिहासकार और लोक संस्कृति कर्मी इस दिशा में अवश्य अग्रसर हुये हैं। यह साहसी और सराहनीय पहल है।हम आशा करते हैं हमारे स्वतंत्रता प्रेमी योद्वा पुरखों और जनमानस की सही तस्वीर बाद की पीढ़ी के लिये सहजता से उपलब्ध होगी और एक समग्र दृष्टि का विकास होगा।
यह संपूर्ण कार्य मेरे द्वारा प्रदेश के जनपदीय और जनजातीय क्षेत्रों में स्वयं भ्रमण कर वृद्व लोक गायकों उनकी पांडुलिपियों एवं सदर्भ ग्रंथों से प्राप्त लोक गीतों का संकलन किया गया है।


**डॉ.विजय चौरसिया**

Email.chourasiadrvijay3@gmail.com <mailto:Email.chourasiadrvijay3@gmail.com>
mo-09424386678


# छत्तीसगढ़ के जनजातीय

# लोक गीतों में

# राजनैतिक एवं सामाजिक चेतना

## छत्तीसगढ़

भारत के हृदय प्रदेश मध्य प्रदेश के दक्षिण पूर्वी दिशा में 17'- 23.7' उत्तर अक्षांश और 80.43'-83.30' पूर्वी देशांश के मध्य छत्तीसगढ़ स्थित है। तीन राजस्व संभागों- बिलासपुर ,रायपुर और बस्तर के अंर्तगत सात जिलों में क्रमशः बिलासपुर,रायगढ़, सरगुजा, रायपुर,दुर्ग, राजनांदगांव और बस्तर में विभाजित है। इस अंचल में पर्वतीय और मैदानी भाग की बहुलता हैं छत्तीसगढ़ उड़ीसा,बिहार ,आंध्र प्रदेश और महाराष्ट्र की सीमा से घिरा है। अतः यहां इन प्रदेशों की परंपरायें भी बखूबी देखी जा सकती हैं।यहां प्रागैतिहासिक काल से लेकर रामायण और महाभारत काल के अवशेष मिलते हैं।जैन और बौद्व धर्म का प्रभाव भी यहां स्पष्ट देखा जा सकता हैं । छत्तीसगढ़ में गोंड ,हल्बा, कमार, माड़िया, मुरिया, कंबर, बिंझवार, सावर, धुरवा, भतरा, नागासिया, कोरबा, खैरवार, मझवार, सवर, धनवार, खड़िया, मैना एवं बैगा जनजाति के लोग सदियों से निवास करते आ रहे हैं।

लोकगीतों की व्यापकता सर्वत्र है।यह सार्वकालिक और सार्वभौमिक है। लोकगीतों की इस सार्वकालिकता और सार्वभौमिकता से छत्तीसगढ़ परे नहीं है। छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक उर्वरता और लोक कला के प्रति इसका अनुराग मानव सभ्यता की आदिम प्रवृतियों से जुड़ा हुआ है। यह धन - धान्य खनिज सम्पदा और जंगल - पहाड़ से जितना परिपूरित है। उससे भी अधिक यह लोक संगीत की दृष्टि से सम्पूरित है।जहां जंगल है,पहाड़ है, है,खेत है,खलिहान है, जहां श्रम की पूजा करने वाले श्रमजीवी किसान और मजदूर हैं। वहीं लोक गीत सहजता और सरलता के साथ लोक कंठ में सुनाई पड़ते हैं।रंगों की रम्यता और उसकी सुंदरता का मोहक रुप है इंद्रधनुष पर ! इंद्रधनुष के रंग भी छत्तीसगढ़ी लोकेगीतों के सामने

फीके हैं। इंद्रधनुष में केवल सात रंग होते हैं। छत्तीसगढ़ के लोक गीतों में अनेक रंग हैं। ये रंग लोक जीवन के हैं,ये रंग प्रकृति के हैं। ये रंग लोक समग्रता और समृद्वि के हैं। इन लोकरंगों का अवलोकन कर आँखों के साथ - साथ अपनी आत्मा को भी संतृप्त करने की क्षमता है।

यहां के लोक जीवन में लोक गीतों का ही सम्पूर्ण साम्राज्य है। जीवन को हर पक्ष हर क्षण लोकगीत से आल्हादित होता है। छत्तीसगढ़ प्रांत के लोक गीतों की परंपरा में ददरिया, करमा, पंथी, आल्हा, सुआ, भोजली, बांस गीत, माता सेवा गीत, राउत नाचा गीत, सोहर गीत आदि - आदि अनेक प्रकार के लोक गीत मिलते हैं।

छत्तीसगढ़ में स्वाधीनता का संग्राम प्रारंभ से ही लड़ा जाता रहा है । सन् अठारह सौ संतावन में सोन खान के जमींदार नारायण सिंह ने वनवासी किसानों की सेना लेकर अंग्रेजों से युद्व किया था। उन्हें फांसी पर लटका दिया गया था। वे छत्तीसगढ़ के प्रथम शहीद हैं। किन्तू आजादी की लड़ाई का नेतृत्व जब महात्मा गांधी जी ने सम्हाला तब आंदोलन की आंच गांव - गांव तक फैल गई। छत्तीसगढ़ के लोक गीतों में भी स्वराज के आंदोलन की तीव्रता प्रकट होने लगी।

## राष्ट्रीय आल्हा

पिंवरा उज्जर हरियर रंग के, सुन्दर झंड़ा बने हमार।
रहंटा छाप लगे है जेमा, हम सब करथन ओला पयार।।
देखत में आनंद भर जाथै, मन में होथै शांति अपार।
ड़र दुख तुरते ही भग जाथै, बल बढ़ जाथै अपरंपार।।
बैरी ला जब ये दिख जाथै,तब कंप जाथै हिम्मत हार।
मुंड़ ला निचट नवा के आपन, सोचे लगथै अत्याचार।।
मरद इस्त्री मा कोनों हो, लइका बुढ़वा अउर जुवान।
कांगरेस के भीतर मा जतका,हिन्दू पारसी मुसलमान।।
सब ला झंड़ा पियारा हावै, राखै हावै अतका खियाल।
झंड़ा ऊंचा रहे हमारा, चाहे होवे हाल बेहाल।।
गोली बरसे बरछी मारे ,चल जावे छुरी तरवार।
सूली फांसी में लटकावे, बरसावे चाहे अंगार।।
परबत ला गिरा कस न दे, पानी में देवे सरवाय।
जेल करे जुरमाना ठोंके, ये सबके नईये परवाय।।
झंड़ा के इज्जत के खातिर, धन जावै औ जावै जान।
पर कुच्छू हो एखर खाल्हे, रखवो हम झंड़ा के शान।।

निधड़क सच मिलके हम गावो,जयभारत माता,जय देश।
धर्म सहित लेयन स्वराज हम, इहिच टेक ला रखिस महेश।।
बंदौ भारत माता! तुमला, पैंया लगौं नवा के शीश।
जनम भूमि मा पियारी देवी!,देहूं दास ला परेमाशीश।।
विघा तुम हो धरम करम हौ,हौ शरीर औ तुम हौ पिरान।
भक्ति - शक्ति तुम ही हौ माता,सुख दाता तुम हो भगवान।।
नई जानन हम देवी - देवता तुम हौ पूजा के आधार।
कमल सिंहासन मा तुम बैईठ,े हमला देवत हौ आहार।।
तुम्हार गोद मा हे मां दुर्गे!, सब पूतन के है कलयान।
श्रृण ला तुम्हार चुकाये खातिर, होयेन मौका में बलिदान।।
जैसन हमला पोसे पाले, वैसन आयें इस दिन काम।
बन्धन ले मुक्तायन तुमला, करथन कोटि बार परनाम।।
बड़े नाम ओंकार तुम्हारो, जेला गाथैं चारों वेद।
जोगी जती तपी अर तपसीन,ई पावै तबहौं ले भेद।।
ऐसन में तब का गा सकिहों, ये गुन ला तुम्हार भगवान।
हमकां मनका देहौ बुद्वि ला, धुन में लगिहों मैं अनजान।।
हवा बास मन ले बारीक हौ, निराकार कहिथैं सब लो
दरशन करना मुश्किल है, तब नइ मिले मोला संजोग।।
एक बात आथै ये मन में, घट - घट में है राम समाय।
तब तो जनता के ओधा में, झांकी दरशन करिहौं जाय।।
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0
जौन देश में रहथन भैया, येला कहिथन भारत देश।
मति अनुसार सुनावों तुमला, ऐखर कछु सुन्दर संदेश।।
उगती बाजू जगन्नाथ है, बुड़ती में दुवारिका नाथ।
बदरी धाम भंड़ार बिराजे, मुकुट हिमालय जेखर नाथ।।
सौं हें सागर पांव धोत हैं, रकसहू रामेश्वर तीर।
बंजर झाड़ी फूल चढ़ावें, कोमल विनय करे गंभीर।।
जो ये देह हमार बने है, पियारे अन्न इहें के जान।
लहू हमार इहैं के पानी, हवा इहैं के परान समान।।
रोंवा - रोंवा , पोर - पारे ले, कहां कहौं बात समझाय।
थोरको नइये हमार कहे बर, सब्बो ये भारत के आय।
धुर्रा माटी खेल - खेल के, हम सब बने भुसंड़ा जुवान।

बुढ़ुवा होके मर जावो तो, हमला देहै ये अस्थान।।
दशरथ, हरिशचंद्र, युधिष्ठीर, सतधारी थे राजा राम।
जोगेश्वर श्री कृष्ण जनक थे, अर्जुन भीष्म कर्ण बलराम।
धुरुव प्रहलाद लव - कुश अभिमन्यु ऐसन बालक इहें रहीन ।
सीता गौरी औ अनसुइया, पतिव्रत धरम के कष्ट सहीन।।
गौतम,वशिष्ठ,नारद,कनाद, शुक्र्र,व्यास, कपिल मुनिराज।
इही देश के हैं सब जनमें, इनखर हुये धरम के काज।।
कीर्ति पताका फहरावत हैं, धन - धन गावत सकल जहान।
इनखर रसदा इनखर करनी, पढ़ सुन चलथें लोग पुरान।।
पुरुष इस्त्री जुमला मिलके, हम होथन करोड़ पच्चास।
बड़ भागी अन हम सब लोगन, प्रभुबर जहां पुराइस आस।।
हमार देस है हमला पियारा कर लैं , कोटी - कोटी पिरनाम।
काम करैं सब मन धन देके, रह जावे भारत के नाम।।
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0
हमार देश में एक सभा है, जेला कहथन सब कांगरेस।
कई लाख जेखर मेंबर हैं, हिन्दू मुसलमान अंगरेज।।
वोकर हाल बताओं तुमला, भैया सुनलो कान लगाय।
साल पचास होयगै येला, अब ये दिन उपराहा आय।।
दादा भाई, तिलक गोखले, लाला, दास, बनर्जी घोष।
सेन गुप्त, वेसेन्ट नेहरु, मोती लाल, जवाहर, बोस।।
अजमल खां, अंसारी, अयंगर, तैयब, सैयद, अली, आजाद।
मालवीय, पटेल, सरोजनी, गांधी जी, राजेन्दर प्रसाद।।
ये सब सभापति अब ले के, होके करिन कई ठन काम ।
येहू ला बतला दवों अब, सुन लो पांच सात नाम।।
छोटे लड़का ला सब्बो झन, मोफत में विघा मिल जाय।
ऊंच नींच नंिह भेद भाव नंिह, पुरुष इस्त्री जो हो जाय।।
धरम - करम रोजगार नौकरी, लिखने - पढ़ने सभा वजार।
आने जाने बसने में भी, कुंआ बावली अर हथयार।।
सबका हक्क बरोबर होगा, करले इच्छा के अनुसार।
करज किसानों के छुट जावें, भरना में करदो सुधार।।
देश के कपड़ा रक्षा पावे, उन पर टैक्स उठाया जाय।
दारु गांजा अर अफीम के, कहूं न बिकरी होने पाय।।

पलटन के खरचा आधा हो, फांसी सजा हटाय जाय।
बड़े ले बड़े नौकर कस न हों,पान सौ ले ऊपर न पांय।।
अतके के खातिर में यारो, दुख पाइन हैं लोग अघात।
जेल बैंत जुरबाना कुड़की, गोली - गाली के उतपात।।
जौन ला जेमन जैसन पाइन, तौन लाते मेर दिइन धसाय।
कई झन ला फांसी लटकाइन, कई ला दूसर देश भगाय।।
तन ला देइन मन ला देइन धन ला सरबस छोड़।
कांगरेस पर कभ्भू न छोड़िन माया - मोह से मुखड़ा मोड़ ।।
धन - धन तुमला धन भैया, जुग - जुग जीयव लाख बरस।
किर्ति तुम्हार अटल धुरुव होवे, देवत हन अतका आसीस।।
अब तो कांगरेस ऐसन जम जम गै,जैसन वर के होथै झाड़।
वर्रो वरोवर जिला - जिला,अउर प्रांत - प्रांत में गै ये माड़।।
गांव - गांव जर छछले लागिस, जानिन सब किसान बनिहार।
बर रुपी कांगरेस भोगा के, होय लागिस गजब तैयार।।
ना अब हीलै ना अब ड़ोलै, कसनौ आंधी आ आ जाय।
बिजली चमके पानी बरसे, जरे सरे के नो हो आय।।
ऐसन बर के छाया नीचे, ठंड़क पवन चले दिन रात।
सुख अघात आगे है दीखत, लाख जीभ मानौ बतरात।।
कांगरेस सुंदर मंदिर में, ये भारत देवी ला पधराय।
लाज बचाये के खातिर में तिरंगा खादी पहराय।।
गांधी महात्मा जहां पुजारी, चेला बने जवाहर लाल ।
पंड़ित ज्ञानी दानी त्यागी,बुढ्वा जुवान औ है बाल।।
किसम - किसम के भगत बने हैं , करथें बारंबार पुकार।
सब झन मिलके लाज बचावौ, भगती भारत के उद्वार।।
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्0
आजकाल सौ में अस्सी झन, गिनती में हैं यहां किसान।
इनखर हाल कहां लौ बरनौ, जानत हौ तुम सबो सुजान।।
जब सुध आथै इन लोगन के , नैनन में बह जाथै धार।
रोवं खड़े - खड़े हो जाथैं, तिरछुल के लग जाथै मार।।
करिया - करिया फरिया पहिरे, सुरज इन ला चुरोथे रोज।
निच्चट उघरा कुच्छू नइये, बरसा हर कर देथै सोज।।
थपरा मार - मार के जाड़ा, हाड़ा ला रख देथै तोड़।

तब ले कैसन खेती खातिर, थोरको नइ बनै मुंह मोड़।।
माटी में माटी सहि मिलके , करथै ऐसन डट के काम ।
मूंड़ पसीना चुंहे गोड़ में, लक - लक ले तिप जाथै घाम।
तब ले हाय कहे न कहबू, जब तक बेर ठाढ़ न आय।।
बेरा होइस काम छोड़ दिन , दतवन चाबत चलिन नहाय।।
छपकिन पटुका झटपट बूड़िन, लकर - धकर कर देईन जाप।
ओढे पहिरे - पहिरे, लयकाऔ महतारी बाप।।
आधा बासी आधा पानी , चटनी नून संग ले खाय।
ढकर ढकर पानी ला पीके, जानो मानो गइन अघाय।।
इनखर दुख ला ये मन जाने, औ जाने सिरी भगवान।
थोर बहोत इनकर संग रइथें, बाकी के हैं सब अनजान।।
काबर ये मन ऐसन करथें , का ऐमा है लाभ अघात।
मोर समझ में तो नहीं आवै, कैसन - कैसन इनखर बात।
काला ये मन भरना देहैं, कतका लेहैं ये बैल।
बांस फूस कतका के लेहैं , कपरा नून गुर औ तेल।।
आये जाये औ खाय वर, खरचा करके रखवी बीज।
पिंड़ा पानी बर बिहाव में , करहीं कैसे सब तजबीज।।
उपज ले उपराहा खरचा हो, जाथै तुम देखो जोड़।
लेन - देन औ कुड़की ड़िगरी, ऐसन ला देये हौ छोड़।।
कोनो साल बरसथै पानी, कबहू बजूर पड़े दुकाल।
कबहु माहू फांफा मुसुवा, जाथै खेती के बाल।
तब तो मरना होथै इनला, दुख देखे इनखर नइ जाय।
खांव - खांव करथै सब्बो झन, काल बराबर ये ड़रवाय।।
लावौ भरना रख दौ जलदी, ब्याज पटावौं साले मोर।
खरचा के उधारी दे दौ, का देखत हौ दांत निपोर।।
ड़ौकी लैका ला का पूछौ, दे दो दस काठा में धान।
नइ तो नालिस कर देयेंगे, टूट जाय फिर ये अभिमान।।
चुरु पुरु मींज कूट के, औने - पौने देथें जाय।
भरना पानी ब्याज उधारी दे आथै ऐसन सन्नाय।
घर में एक्को दाना नइये, खाबो अब काहेला भगवान।
कपड़ा नुन तेल औ खाये, कोन देय काकर घर जान।
साहूकार अब नहि पतयावै, नहि पतयावै वो सरकार।

ये दुनों के कारण देखो, बिगड़ गइस हवै सब घर द्वार।।
रुपिया पीछे आधा आना, कभू इकन्नी दियेन ब्याज ।
डयोढ़ी दूनी बाढ़ी दियेन नहिं , संतोष महाजन आज।
नालिस के कुड़की ड़िगरी मे,ं सौंप दियेन गाड़ी औ माल।
जेल गइन जरबाना दियेन, होइस हाल हमार बेहाल।
ऐसने भरना के खातिर में, बेंचत आइन चांदी सोन।
अब तो गिलट तांम बचे है, एला ले है ऐसन कोन।
मही ला खाके घी ला बेचिन, हंसा औ गुरमुटिया धान।
गेंहूं ला बेचिन चोकरा खाइन, तबहो ले नइये कलयान।।
कंह ले बचि हैं दूना तीना, भरना तो होंगे असमान।
दस काठा में रुपिया होथै, कंह तक ऐला देय किसान।
सबो तरफ अंधियार होइगे, सूझत नइयो एक्को द्वार।
हाय ! हाय ! बस चौपट होगे, सौंप देइन खेती खेतियार।।
उत्तम खेती रहीस एक दिन, आज बनिस निच्चट गरियार।
जेखर खातिर तन - धन खोइन, तबले होइन पर बनिहार।।
हे भगवान खबर कर जलदी, तोर बिना नइ होय उबार।
भारत ड़ोंगा ड़ोलत हावय, कर दे एक बार संम्हार।
जेखर कमाई ला खा - खा के, सुख पावत हैं कई परकार।
ओखर पिठ में कानून रगरै, राम - राम ! कैसन अपकार।।
चंदा सूरज नछत्र वही ये, धरती वही, वही असमान।
गंगा जमना नदी वही ये , पर हम बने आन के आन।।
पड़थन पोथी औ गुनथन तो, पुरखा रहिन बड़े गुनवान ।
एकन्नी भर उनखर नइयन, करम फूट गये हैं भगवान।।
कैसन खाई कैसन पहरिन, कैसन रखिन वो व्यौहार।
लेइन देइन धरम कमाइन, वो सबला मैं कहौं पुकार।
तरह - तरह के माल बनाके, काम निकारौ तुम सब भाय।।
उत्ती मुहाटी के माटी के, कुरिया ला छटिकन सिरजाय।
कांड़ कोरई काट खारले, लाके कचरा देइन छाय।
लेके बसुला बेंस बनाइन, दरवाजा में दियन धराय।
परछी भर फरिका ला बांधिन, जाड़ घाम न आने पाय।
अंगना के बीच में चवरा है, जेमा है तुलसी के झाड़ ।
तीर - तीर में फूल फूले, वो झूम झमले गये है माड़।

चक - चक ले छुही में पोते, साफ सुघर ऐसन दरसाय।
जानो मानो जड़ काला के, पुन्नी के चंदा तो आय।
रकसहूं में गाय बंधे है, बांय - बांय रहत रंभाय।
बंधे है घोड़ा एक बछैटू , हिनहिनाय के गोड चलाय।
धान उन्हारी भी ढ़बा में, भरे है मुंह तलक ले आय।
रुपिया पेसा ला नइ जानै, कुरिया बसे खीर ही खाय।
अरसी तिल होत है ऐसन, जेला घानी में पिरवाय।
देह में चुपरिस मूंड़ में ठोंकिन, आंखी कभू नहीं चिपराय।
भूंजी बरी बघारिन भाजी, मिरचा धनिया तोड़ झुकाय।
महर - महर ममहावत ऐसन, दू कौरा उपराहा खाय।
खेती में अंड़ी ला बोइन, ब्यारा में अंड़ा मंडराय।
कूटके मरकी में डबकाइन, गाड़ा आंगिन दिये जराय।
बारी के खाले में बरछा, जेमा लगे खुबिच कुसियार।
कठवा के चरखा में पैरें, गुर के पाग धरैं हुसियार।।
खोरवा अंधरा ला गुर बांटिन, दिइन बढ़ई औ लोहार ।
छेरिन घोड़ा खोधिर कालिन, समधी लाने भइन सवार ।।
मौका पाके कुबरी मोहर, देइन ढ़ेंकी में घनियाय।
भुखिया दुखिया मंगतिन रांड़ी, दूझन कुटे बर भिड़जाय।।
गहूं ला अक झन जांता में, पीस - पीस कर करिस पिसान।
कनकी कोढ़हा ओमन पाइन, खाइन सुख से करिन बिहान।।
आइन समधी घोड़ा कुंदावत, बोवरा अरिसा झट बनवाय।
जांघ जोर के जेंवन बइठिन, गुर के संग सोंहारी खाय।।
मनवा कपसा ला भर्री में, बोइन है लगते असाड़।
पांच सात ठन घरवारी में, लगा देव कपास के झाड़।
चरिहा भर चुनके चरखी में, बीनौरा देइन अलगाय।
धरिन धुनेटी कपसा धुकिन, औ पोनी ला देइन बनाय।।
टरर - टरर रंहटा ला कातिन, डुकरी बहू कभू खुद आप।
महिना भर में सुत सकलाइस जेला, पनिका ले गै नाप।
लुगरा पटका औ बरहत्थी, बिनके देय धान ले जाय।
मन में आइस तो हरदी में, नइ तो हिर मिची रंगवाय।।
जेवत खात भिंजोवें कपड़ा,बड़े फजर कांचै पकवान।
मसरी दार बरोबर झलके,पहिरे चले गली में जुवान।।

अरसी चीला औ तिलौंजी, जेखर राख ला रखै बनाय।
मैलाहा कपड़ा ला बोरिन, चक - चक ले उज्जर हय जाय।।
घठर के द्वारी में चंवरा है , लीपे गोबर से सफियान।
छिटका छरा लगे है जेमा, बइठिन दस बारा झन सियान।।
घुघरु वाला झुलप रखाये, चंदन चोवा देह लगाय।
कसनो मार पीट पंचायत, गुन के करथे सुन्दर नियाय।।
पंच परमेसर कर दें जैसन, सच सनतोष लेवैं वो मान।
खोट कपट सब दूर भगा दैं,जायत भर रही जावे गियान।।
जुर खुडुवा खो - खो मिल खेलें, औ झेले कबहू चकनार।
गूरज भनाटी लकड़ी चालैं, बलके जिनके मिलेन पार।।
गरमी धात बात नहीं जानैं, अनपच सूल अउर न रोग।
सब झन चंगा चहरा झलकै, करथें सब हिसाब से भोग।।
जर खांसी जब आ जावे, तो लांघन करके देय उड़ाय।
गूरुच भनौरी भटकटैया के, काढ़ा देवै उसे पिवाय।।
हर्र औ बहेरा गुर मधुरस में देवे सान।
सांझ सबेरे गोटी खावैं, खोखी भगीस चैन हे परान।।
रहि - रहि के लइका हा रोवे, चुन्ना पकरे ठौंके आय।
भुर्सि रस्पित गरम पानी में कूट - पीस के देय सोखाय।
दाई मन का गुठियावों, सिरतों में देवी तो आय।
बेह भर में अमोसी चूरी, औ वोमा दू लाख लगाय।
लाख्ेा के खिनवा ला पहिरे, बेनी मा फुंदरी ला गाथ।
संेदुर दिये मांग भर माता, अतका ला मानै अहिवांय।।
थोरको गहना के पहिरे बर,  मन में टेक ना राखै साध।
खादी के सुन्दर लुगरा में, सब कुछ अपन बुतावै साध ।।
हंसी दिल्लगी निंदा चारी, ऐंसन में होवें नाराज।
अपन बूता ले फुरसत पावे, कर देवै औरो के काज।।
पति के सेवा हुकुम बजावै, सब झन संग बोलैं मीठी बात।
कोठा खोर खरहारैं बहरैं, बरतन मांजैं नींद भर रात।।
बेर उत्ते घघरी ला धरके, पानी बर जावै गुठियात।
एक दूसर ला उंहा बोहा क,े घर में आवैं एक्के सात।।
बामहन साधू एसन मानै, जानै वो देवता तो अांय।
तैहा - तैहा के पुरखा के, सुनथन जिवन कहानी आज।

जिव तो ललचा ऐसन जाथैं, पर मान में हो जाथै लाज।।
बघवा पुरखा औ हम कोलिहा, हाय! गजब के होगै बात।
सुख बैकुण्ठ इन्हें वो लूटिन, दुख भोगन का हम दिन रात।।
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्0
भारत के जुमला मिलके, सात लाख हवंय सब गांव।
इने गिने कुछ शहर नगर हैं, जंहा पर बसे चतुर अर साव।।
ये चतुरा - धनवान सबों के, हो जाथें सुख में निरवाह।
पर किसान बनिहार गांव के, दुख में रोते भरके आह।।
खाना - कपड़ा,घर - अंगना के, देखत में लग जाथें सोग।
अक झन नहिं अक झन ला घर मा,खटिया मा घेरे है रोग।।
अतको में कतको के ऊपर, कुड़की - ड़िगरी औ नालिस।
ये गरीब मन ला बड़हर, मन मार - मार के ड़ारीन पीस।।
है गरीब मजदूर सही में ,सब लोगन के परान अधार।
कांगरेस सब देख समझके, शुरु करिस अब गांव सुधार।।
मत खावो धन कुट्टी चाउर, ऐखर से होथै अक रोग।
जेला बेरी - बेरी कहथै, ऐसन से बचना है जोग।।
ढेकी मसूर में कुटवा लो, अपन लोग के खाये धान।
दुखिया कोड़हा कनकी पाही, जेखर से रख ले हे परान।।
घानी मा तिल ला पिरवा लौ, चुपरी खावो लेके सवाद ।
तेल हर तुमला निमगा मिलही, अतका बात ला राखौ याद।।
गावें घर मा घींव बिसावौ, अऊ गुर ला लेवो सफियान।
घर मा चाऊर गेंहूं पिसा के, जातेज के खावो पिसान।।
सख भर अपन गांव के बउरौ, जो कुछ तुमला लागै चीज।
माल विदेशी के छोड़े बर, मन में कर लेवो तजबीज।।
अपन देश में बनन लागिस, आनी बानी के समान।
लैलो सौख बुछालो सबझन, अतका कहना लैहों मान।
ठलहा मा रहंटा या तकली, लेके सुन्दर कातौ सूत ।
सन पटुआ के सुतरी कातौ, कुछ तो करत रहौ करतूत।।
ऐसन में जो पेसा बचही, ओही आही दूसर काम।
हाय - हाय के जिनगानी मा, थोकल मिल जाही आराम।
कांगरेस हरका कई झन कहथैं, पानी लातौ राखों साफ।
पानी ले धूंकी हर आथै, जेमा मरथै आपे आप।।

घर ला जैसन रखो सफाई, वैसन रखो गली औ खोर ।
छोटे बड़े गांव के चंगा ,रही हौ एक पवन के जोर ।।
कपड़ा तो गंधावत रहथै, अर रहथैं वो देहे साथ।
नइये लाज सरम कछु ऐमा, साफ करौ तुम अपना हाथ।।
सरहा फल अर तरकारी ला, सस्तीहा ला लेथे मान।
खाथैं औहा - झौहा पाके, जेकर ले खो दे थैं परान।।
कइ किसम के गंदला रहना, रोग बीमारी के घर आय ।
थोकन के निस्बत में जिवला, आफत में कर देथैं जाय।।
तन हर जाथै धन हर जाथै,दुख पाथै कुटुम परिवार।
काम धाम के हरकत होथे, तब मन में आ जाथै हार।।
रखें ध्यान कोतवाल मुकद्दम, औ बस्ती के मालगुजार ।
गांव - गांव तब साफ सुधर हो, चेत लगावै जब सरकार।।
घाट घठौंधा घुरुवा टट्टी के, गंदला से होथै रोग।
येकर रसदा बना दिये ले, रहिहैं बसती के अरोग।।
कांगरेस में श्री गांधी जी ,हर बात करे हंय अक ठन पास।
करौ सफाई गांव - गांव में, बनैं किसानों के अब दास।।
मोफत में दवाई सबला, देकर करौ रोगन के नास।
दवा ला अच्छा साफ करौ तो, रोग न होवै ककरो पास।।
बिन पेसा के सेवा करना, सबय धरम ले बढ़कर जान।
समझो जनता के सेवा में, राजी होथै वो भगवान।।
पढ़े लिखे भाई मन ला तो, करना परही एहू काम।
बसती के मन खेत खार ले, आही पाये वर आराम।।
तब ओमन ला गिनती अक्क्षर, सिखलावो कोनो हो जात।
अउ उनखर मन बहलावे बर, करहू कांगरेस में के बात।।
हो ही का कछु दिन मा देखौ ,पढ़े लिखे बन जाहीं लोग।
कई ठन बात समझहीं ओमन, तब नइ होही दुख वो रोग।।
आमदनी के कतको हर तो, रेंगथे निचट धारे धार।
कतको बियाज मुकदमा मा औ, कतको ला झिंकथै सरकार।।
ऐसन के जुगतौ ला कांगरेस कहिथे, सुन लो ए किसान।
पंचायती कोठी ला खोलौ न्याय, पंच के लैवो मान।।
कम खरचा में काम निकारौ, तब हो है तुम्हार कल्यान।
हिल - मिल कर रहना सीखौ ,तबहे सुख देही भगवान।।

नहीं तो कांगरेस हर का करही, भाग भरोसा रहि हौ रोज।
सूते बाघ के मुंह मा कबहू , हरिना हर नहिं घूसै सोज।।
जब बघवा हर कूंद उचटके, मिहनत से करही शिकार।
तब फिर ओला भी मिल जाही, मजा सहीत सुन्दर आहार।।
ये किसान बनिहार सबौ मिल, भाग्य छोड़ करहीं काम।
मिलहैं तब ऊना ला दूना सुख, स्वराज इहेंच आराम।।

0ध्ध्ध्0

पूछि हनुवा सुन भाई नंदा, एक बात देही समझाय ।
बहुत दिन ले सोचत - सोचत, आज भेद ला खोलेव आय।।
गांधी जी हर काबर कहिहैं, गांव - गांव में जाके खास।
खादी पहरैं , खादी पहिरौ , खेती में तुम बोवौ कपास।।
रहंटा ला तुम रोज चलावौ, तब स्वतंत्र बन जाहौं आप।
मोर अकल हर नइ तहो पूरा, साफ - साफ बतलाहौ आप।।
बोलिस नंदा सुन ले हनुवा, खरचा के हैं दुई ठन बात।
देह रक्क्षा बर कपड़ा होना, औ खाये बर रोटी भात।।
चाऊंर गेंहूं अघातेच होथे, हमर देश में पैदावार।
खात - खात ले कतको बचथै, पलथैं जेमा विदेशी यार।।
कपड़ा ला हम्मन लेथन, रुपिया जाथै साठ करोड़ ।
नइ लेबो तो नंगरा रहवो, तब का बोला देबन छोड़।।
आठ माह खेती ला करथै, चार माह करथैं आराम।
घर मा तो बैइठे माई पिल्ला, धुनहीं कतहीं अपन कपास।
पंदरा गज खादी लाबिन के काबर करहीं पर के आस।।
कुरता धोती अर बरहत्थी ,घप - घप ले पुरजाही ठीक।
अपन बनाये के खुशयाली ,मन में हो ही अधिक अधीक।।
तब स्वतंत्र जीवन भर जाही ,जग जाही हमार देश।
खाना अपन पहरना अपन, सुख स्वराज तबका है शेष।।
अतका मा हनुवा हर बोलिस, ठीक - ठीक है सब्बो बात।
कतको काम करैया मन ला, कामेच काम हवय दिन रात।।
ओमन खादी कैप पाही, मिल के कपड़ा लेही जाय।
खादी हर कछु मंहगी परथै, ये हूं ला दे हौ बतलाय।।
सुन ले भाई मिल वाला, मन दिइन गरीबन के हक मार।
रुपिया के बल मिल गड़वा के, कैंच लेवत सबके अहार ।।

ऐसन पापी के कपड़ा ले, वोकर लेवब हो ही ठीक।
जेहर खादो वोकर निमित में, राखे हवंय बोकर नजदीक।।
पेसा - धेला ये लेवब में, जाही जादा नइये हान।
पैसा हर देशे मा रहिही, औ गरीब के बचही जान।।

0ध्ध्ध्ध्ध्0

चमरा घसिया गांड़ा कतिया, कंड़रा मेहतर भंगी डोम।
महरा मांग आदि सब ऐसन हावै, अपना इहां जो कौम।
अब ऐसन ला हरिजन कहथैं, धरिन नाम गांधी महराज।
औ गांधी इनखर निबत कहिथें, तौन बताहौं आज ।ं
हमार देश भर में हिन्दू मन, होथैं सब बाइस करोड़।
एहीच के भीतर में समझो, हरिजन होथै पांच करोड़ ।।
ईश्वर के उपजाये अन सब, रखथें वो हर एक समान।
हात पांव छाती मूड़ी नख, अंगरी अंगठा आंखी कान।
नाक दांत जिभ चमड़ा, हाड़ा पीठ पेट औ लोहू केस ।
सब ला एक बरोबर देके, सिरजाये है एक्के भेस।।
औ फिर सूरज चंदा धरती पानी, पवन छांव औ घाम।
दुवा भेद ऐहू में नइये देकर करिस न्याय के काम।।
जब भगवान समझथै सबला, मोर जन्माये बेटा आंय।
तब हिन्दू मन हरिजन ऊपर, काबर करथैं ये अन्याय ।।
कथा भागवत हूंम जग्ग में, देबी देवता के इस्थान ।
कुंआ ,बावली ,घाट ,बाट में, नइये हरिजन के कल्यान।।
हटौ - हटौ देर छीं - छीं, कहि के अलगाये जाथैं रोज ।
अतको मा जब ये डट जाथें, मार - मार के करथैं सोज
एधी सूधी गारी खाना, औ निन्दा के कई ठन बात ।
सब ला सइथैं हरिजन भैया, नीचे निवट नवा के माथ।
कुकर बिलई ला कोरा मा ,करथैं बड़े प्यार पुचकार।
तब हरिजन ला काबर ओमन, बतलाथें भारी धुतकार ।।
पश जोनी ले का कमती है, मानुख तन के करौ विचार ।
वेद सास्तर कहथैं, ऐसन बड़े है मानुख हर परकार।।
तब का ए इज्जत के लाईक, नइ हो सकहीं हरिजन लोग?।
परेम पियार के का अधिकारी, या नइये छुये के जोग?।।
चमरा हर जब तक ले भिड़के, करहीं अपन चाम के काम।

मेहतर हर मैला फैंके बर, लगे रही सुबो औ साम।।
तब तक ले छुये के लाइक, नइये ये लैबो तुम जान।
नहा खोर के सब ऐमन फिर, कपड़ा पहिर लेही सफियान।।
तब ये मन ला छू लेवब में, नइ हावै कोनो ला हान।
औ समाज में ये धंधा से, पाये लाइक हैं सनमान।
घाव दाव में जब कोनों हर, पीरा में होवै हैरान।
औ डॉक्टर हर चीर - फार के, दवा लगा रख देवै परान।।
वो समया में लहू पीप से, डॉक्टर नइये छुये जोग।
साफ बने ले ओला छूही ,औ इज्जत करहीं सब लोग।।
पथरा पीपर कठवा लोहा, जल - थल,पशु - पक्षी औ सांप ।
जगा - जगा में ईश्वर बसथैं, हिन्दू धरम में कहथै आप ।।
तब हरिजन लोगन में भी हैं, सुन्दर वासुदेव भगवान।
अपन तरफ ले करौ जहां तक, भाव परेम औ आदर मान।।
टट्टी औ धुरवा ले आके, कोनो ला नइ छूवैं आप ।
वही नहा के शुद्व बने ले, मंदिर में जा करथैं जाप ।।
ब्राम्हण मुड़ ये छत्री भुजा ये, वैश्य कमर शूद्र ये गोड़।
देह रुपी मंदिर सिर जाये, हाबै ऐमन ला सब जोड़ ।।
भुजा कमर मूड़ के ऊपर में, रखही सुन्दर जैसन पियार ।
वसने ये गोडो के ऊपर, रखहीं अच्छा परेम व्यवहार।।
छप्पन औ तिरपन संवत में, कइ झन होंही मुसलमान ।
कई झन मन ईसाई होंहीं, असने बहोत होही हान ।।
बचे खुचे मन अब छुट जाहीं, हिन्दू से होके नाराज।
वही-वही हो जांही, तब तो लात मार के करहीं राज।।
हिन्दू धरम के देवी - देवता, कथा भागवत औ पुरान।
सब ला हरिजन पढ़थैं सुनथें, सुमरन करथैं रखथें ज्ञान।
तब का ये हिन्दू नो हैं, बेशक हिन्दू रक्खो खियाल।
ये हरिजन कुंआ बावली , औ खोलौ मंदिर के दुआर।
मिल जुर बैठौ गले लगावो, सब झन गावौ मंगलाचार।।
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

दुनिया भर के सब मानुख ले,बड़े हवय गांधी महराज।
देश - देश मा जिनखर पूजा,परेम भाव से करथैं आज।।

छमा - दया के सत्य मूर्ति, ये भारत माता के ये परान।
दुखिया दुरबल औ गरीब क,े करथै हरदम सबके धियान।।
गउ धरती औ हरिजन सेती, लेये हबय फकीरी भेस ।
लालच ममता गुस्सा इरका, इनकर मन में नइये लेश।।
पंड़ित ज्ञानी बड़ चतुरा ये, समय देख करथैं व्यवहार ।
बड़े - बड़े पीछे हट जाथैं, जब इनखर हो जाय विचार।।
इन ला सच्चा साधू समझो, सुख ला मार दिये हैं लात ।
आगी बरसे बज्र गिरे फिर, दुख पावै वो दिन औ रात ।।
तब ले हाय कहें न कबहूं ,चाहे कुछ हो जावे हाल ।
एक बात के धुन हैं इनला ,जेखर निचट रखे हैं खियाल।।
अत्याचार मिटावे में फिर, राखौं भारत मां के लाज ।
सरकारी फंदा ला काटौं, औ पावों में पूर्ण स्वराज।।
एहीच मंत्र ला सबला देके, करत हवय अब गांव सुधार ।
राम राज आहो फिर आही, इनकर बल इनकर आधार ।।
धन - धन इनखर माता-पिता ला,जिनखर कोख लिइन आय।
अड़बड़ गुन ये का मैं बरनौं, नइ मिलै इनखर कुछ पाप।।
मैं सूरज हर पांव परत हौं, सुन ले विनती हे भगवान।
रहंटा धारी गांधी जी ला, अमर रखौ देवो बरदान ।।

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थ :

हमारा झंड़ा सफेद और हरे रंग का है । हमारे झंड़ा में चरखा का चित्र छपा है। जिसे हम सभी बहुत प्यार करते हैं। हम अपने झंड़े को देखकर आनंदित हो जाते हैं। जिससे हमारे मन को शांति मिलती है। झंड़े को देखकर भय और दुख दूर होकर हमारे शरीर में बल का संचार होने लगता है। दुश्मन हमारे झंड़े को देखकर कांपने लगता है। वह हमारे ऊपर जो अत्याचार कर रहा है। हमारे झंड़े को देखते ही सिर नीचा करके सोचने लगता है। भारत के सभी स्त्री - पुरुष,बूढ़े,जवान और कांगेस में जितने हिन्दू मुसलमान और पारसी हैं। सभी हमारे झंड़े से प्यार करते हैं। किसी भी प्रकार की स्थिति हो पर हमारा झंड़ा ऊंचा रहेगा, चाहे गोलियों की बरसात हो जावे ,बरछी चले , छुरी चले,तलवार चले, चाहे हमें सूली और फांसी पर लटका दें,चाहें तो अंगार बरसा दें,पहाड़ से गिरा दें,पानी में बहा दें,जेल में सजा दें या जुर्माना ठोंक दें,हमें इस सब की कोई्र परवाह नहीं है। हमारे झंड़ा की रक्षा के लिये हमारी जान या हमारी सारी संपत्ति ही क्यो न चली जावे । हम अपने

झंड़े की शान को बनाये रखेंगे।

हम सभी लोग निर्भय होकर भारत माता की जय का गान करेंगे। हम अपने धर्म को आंच नहीं आने देंगे और स्वराज लेकर रहेंगे।

0000

हे भारत माता आपको चरण र्स्पश कर नमन करता हूं,मेरे जन्म भूमि की देवी मुझे आशीष दो। आप ही विघा,धर्म,कर्म, प्राण और शरीर हो । आप ही मेरी भक्ति और शक्ति हो। आप ही मेरे माता - पिता और भगवान हो। हम अन्य देवी - देवताओं को नहीं जानते, आपही हमारी पूजा के आधार हो। हे भारत माता आप कमल के सिंहासन पर आसीन हो। आप हमारे देवी देताओं के समान हो। हे मां दुर्गे आपकी गोद में हम सभी पुत्रों का कल्याण हो। आपका कर्ज चुकाने के लिये हम अपने प्राणों की आहूति भी दे सकते हैं। आपने जिस प्रकार से हमारा पालन पोषण किया है । हम लोग एक दिन आपके काम आयेंगे। हम आपको अंग्रेजों के बंधन से छुड़ाकर ही रहेंगे। हे भारत माता आपको कोटी - कोटी प्रणाम! आपके गुणों को चारों वेद गाते हैं। जोगी ,जती, तपी, सती और तपसी भी आपके भेद को नहीं जान सकते। ऐसे में मैं आपके गुणों का बखान कैसे करुं। आप मुझे बुद्वि प्रदान करें। जिससे मैं आपके गुणों का बखान जनता के सामने कर सकूं।

0000

हम जिस देश में निवास करते हैं भाई उस देश को भारत देश कहते हैं। मैं अपनी बुद्वि के अनुसार भारत देश का वर्णन कर रहा हूं। सूयरेंदय की दिशा में जगन्नाथ स्वामी का मंदिर है, तो सूर्यास्त की दिशा में द्वारका नाथ का मंदिर है। हिमालय ने बद्रीनाथ धाम को अपना मुकुट पहना दिया है। समुद्र रामेश्वर के तट पर आपके चरण धो रहा है। हमारा शरीर इसी भारत देश का है। यहीं का आनाज हम खाते हैं। हमारा खून,पानी ,हवा एवं प्राण यहीं का है। मेरे रोम - रोम और पोर - पोर में आप समाये हैं। यह सभी भारतवर्ष का है। यहां की धूल और मिट्टी में खेलकर हम जवान हुये। हम बूढ़े होंकर मर जावेंगे तब भी यह भूमि हमको स्थान देगी। राजा दशरथ, हशिचंद्र, युधिष्ठर, सत्यवादी राजा राम, श्रीकृष्ण,अर्जुन, भीष्म पितामह,कर्ण,बलराम,धुव्र,प्रहलाद,लव - कुश, अभिमन्यू,जैसे महान पुरुषों ने इस भूमि पर अपना बचपन व्यतीत किया है। सीता, गौरी, अनुसुईया ने पतिव्रत धर्म का पालन कर कष्ट उठाये हैं। गौतम,वशिष्ठ मुनि,नारद,शुक्र,व्यास एवं कपिल मुनि जैसे महात्माओं ने इस भारत भूमि पर धर्म कार्य किये हैं। इन महापुरुषों ने भारत की किर्ती संपूर्ण विश्व में फैला दी है। जिसे संपूर्ण विश्व स्मरण करता है। पुराने लोग इन महापुरुषों के सतमार्ग एवं कायरें को पढ़कर उसका अनुसरण

करते हैं। स्त्री - पुरुष ,बाल - बच्चे सभी को मिलाकर हम पचास करोड़ होते हैं।हम बड़े भाग्यवान हैं जो इस भारत भूमि पर निवास करते हैं। हमारा देश हमको प्यारा है, हम इसे कोटी - कोटी प्रणाम करते हैं। सभी लोग अपना तन,मन,धन देकर देश के विकास के लिये कार्य करो। जिससे भारत का सम्मान संपूर्ण विश्व में हो सके। 00000

हमारे देश में एक सभा है, जिसे सभी लोग कांग्रेस कहते है। हिंन्दु, मुसलमान, अंग्रेजों सहीत कई लाख लोग कांग्रेस के सदस्य हैं। इस कांग्रेस कमेटी को बने पचास वषरें से ऊपर हो गये हैं। दादा भाई नौरेजे,तिलक,गोखले,लाला लाजपत राय,दास,बनर्जी, घोष,सेन, गुप्त,वेसेन्ट,मोती लाल एवं जवाहर लाल नेहरु, चंद्रशेखर आजाद, सुभाष चंद्र बोस, अजमल खां अंसारी, अयंगर तैयब, सैयद अली, मालवीय जी, पटेल, सरोजनी नायडू, महात्मा गांधी जी, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद इन सभी ने कांग्रेस के सभापति होकर देश के लिये अनेकों कार्य किये हैं। मै आपको कुछ और बात बतला रहा हूं। जिससे छोटे बच्चों और सभी को मुफ्त में ज्ञान प्राप्त हो जावेगा। हमारे देश में ऊंच - नीच, स्त्री - पुरुष किसी का भी भेद - भाव नहीं है। ये सभी धर्म - कर्म, रोजगार, नौकरी, लिखने - पढ़ने, एक साथ जाते हैं। आने जाने में कुंआ- वावली के पानी, हथियारों पर सब का बराबर का अधिकार है। जिसकी जो इच्छा हो वह वही करे। किसानों के कर्ज में छूट होनी चाहिये। हाथकरघा के वस्त्रों को कर मुक्त किया जावे। शराब,गांजा और अफीम की बिक्री पर रोक लगे। सेना पर किया जा रहा व्यय आधा किया जावे और फांसी की सजा को हटाया जावे। बड़े लोग छोटों को नौकर के समान न समझें, सभी को पांच सौ रुपयों से ज्यादा वेतन मिले। आज हमारा देश आजाद हो गया है, इसके कारण भारतवासियों ने अनेकों कष्ट झेले हैं। वे जेल गये, बेंतों की सजा खाई, जुर्माना किया गया, कुड़की की गई, गोली और गालियों के उत्पात हुये। जो जहां भी रहा जैसा भी रहा उसे लातें मारकर जेलों में भर दिया गया। अनेक लोगों को फांसी की सजा दी गई। इसी प्रकार अनेकों लोगों को दूसरे देश में ले जाकर काले पानी की सजा दी गई। । लोगों ने तन - मन,धन,मोह,माया,ममता, को त्याग सभी काग्रेस को अर्पित कर दिया।

हे भाई आप धन्य हैं आप युगों - युगों तक लाखों बरस तक जिवित रहैं। हम आपको आशीष देते हैं की आपकी सुयश धुव्र तारा के समान अटल रहे। अब तो कांग्रेस पार्टी ऐसे जम गई है जैसे बट वृक्ष की जड़ें हों। कांग्रेस पार्टी सभी जिलों और प्रांतों में हो गई है। गांव - गांव के मजदूर और किसान कांग्रेस पार्टी को जानने लगे हैं। कांग्रेस पार्टी इतनी मजबूत हो गयी है कि अब किसी भी प्रकार की आंधी

आये या तूफान वह हिल तक नहीं सकती। चाहे बिजली चमके या पानी बरसे, सब कुछ जल जाये पर कांग्रेस पार्टी एक ऐसे वट वृक्ष की छाया है, जिसकी ठंड़क उसे दिन रात मिलती रहती है।

इसके सुख को देखकर लाखों लोगों को अघात पहुंच रहा है, कांग्रेस एक सुंदर मंदिर है। इसे भारत देवी ने बनाया है। भारत माता ने अपनी लाज बचाने के लिये खादी का तिरंगा झंड़ा धारण किया है। इस भारत माता मंदिर के पुजारी महात्मा गांधी जी और उनके चेला जवाहर लाल नेहरु जी हैं। इस मंदिर के भक्त पंड़ीत, ज्ञानी, ध्यानी, दानी , त्यागी, बूढ़े और जवान तथा बच्चे हैं। हम सभी मिलकर भारत माता की लाज बचायेंगे।

000000

आजकल सौ में से अस्सी लोग किसान हैं। इनके हाल आपको कहां तक बतलायें। आप सभी को मालुम है। जब इनकी याद आती है, तो आंखों से आंसू बहने लगते हैं। शरीर के रोम खड़े हो जाते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि शरीर में त्रिशूल भिद रहा है। ये किसान मैले कुचैले वस्त्रों को धारण करके दिन भर सूरज की तपन में रहते हैं। इनके शरीर पर कुछ भी नहीं हैं। बरसात में ये अलग परेशान होते हैं। ठंड़ इतनी अधिक पड़ती है कि वह हड्डीयों को कंपा कर रख देती है। ठंड़ के कारण किसान का पूरा शरीर थरथराने लगता है। इसके बाद भी किसान अपनी खेती से मुंह नहीं मोड़ता। यह मिट्टी में मिट्टी के समान मिलकर खूब मेहनत से अपना कार्य करता है। उसके सिर का पसीना पैरों तक बहने लगता है। सिर पर सूर्य की प्रचंड़ धूप पड़ती है। फिर भी किसान के मुंह से आह तक नहीं निकलती।

शाम होने पर खेत का काम पूरा कर वह स्नान करने चला जाता है। वह अपने वस्त्रों को धोकर पानी में डुबकी लगाकर अपने माता - पिता और बच्चों के पास आ जाता है, घर पर आकर अपना रुखा - सूखा भोजन नमक, चटनी लगाकर खाता है और भरपेट पानी पीकर सो जाता है, इनके दुखों को यही या श्री भगवान जानता है। जो लोग इनके साथ रहते हैं वे भी अनजान बने रहते हैं। हे ईश्वर तुम ऐसा क्यों करते हो । इससे क्या लाभ है। इन लोगों की बात मेरे समझ में नहीं आती।

ये कितने पैसों के बैल लेंगे, कितनो के नमक, तेल, कपड़े और गृहस्थी का समान। इनके यहां जो पैदावार होती है उस आनाज को बेचकर ये आने - जाने और गृहस्थी के खचरें में लगा देते हैं। ये इसके बाद भी खेत में आनाज बोने के लिये बीज बचा ही लेते हैं। किसान जन्म, विवाह, मृत्यू - संस्कार में भी हिसाब से खर्च करता है, सभी का हिसाब किताब चुकता कर देता है, किसी वर्ष पानी गिरता

है, तो किसी वर्ष आकाल पड़ जाता है। कभी किसान के खेतों में इतना आनाज हो जाता है की चूहे खाने लगते हैं। तो कभी - कभी खेत में धान भी नहीं उगती। जब आकाल पड़ता है तो इनका दुख देखा नहीं जाता है। सभी लोग एक दूसरे से बहस करने लगते हैं। किसान अपने गहने जेवर गिरवी रख देता है। पत्नी पति से कहती है कोठी में जो धान रखी है उसे दे दो। नहीं तो साहूकार अदालत में नालिस कर देगा। जिससे तुम्हारा अभिमान टूट जायेगा। किसान अपना आनाज औने पौने दाम में बेच देता है। वह पैसा वह साहूकार को देकर अपनी उधारी चुकाता है। घर में खाने के लिये एक भी दाना आनाज नहीं है। कपड़ा,नमक,तेल किसके घर मांगने जायें। अब तो साहूकार भी उधार नहीं देता और न ही सरकार कोई मदद कर रही है। इस कारण हमारी गृहस्थी उजड़ रही है। एक रुपया के पीछे आधा आना या इकन्नी ब्याज देना पड़ रहा है। साहूकार का ब्याज बढ़ रहा है। फिर भी साहूकार को संतोष नहीं है। साहूकार अदालत से नोटिस लाकर घर की कुड़की करा देता है। कभी - कभी किसान को जेल में सजा भी भोगनी पड़ जाती है और जुर्माना भी देना पड़ता है। ऐसे मौके पर सोने - चांदी के गहने बेचने पड़ जाते हैं। अब तो किसान के पास गिलट और तांबा बचा हैं इसे कौन लेगा। मही खाकर घी बेचा और हंसा तथा गुरमटिया किस्म की धान भी बेच ड़ाली। किसान गेहूं बेचकर उसका चोकर खा रहा है। तब भी उसका कल्याण नहीं है। जब तक किसान की गांठ में पैसा रहता है । वह अपना पैसा साहूकारों को दे देता है। अब तो चारों ओर अंधेरा छा गया है। कुछ समझ में नहीं आ रहा है। खेती किसानी सब चौपट हो गई साहूकारों को खेती - बाड़ी सौंप दी। एक समय था जब उत्तम खेती थी। परंतु आज तो कुछ भी नहीं बचा हैं जिस खेत में तन मन से खेती की उसी खेत में आज मजदूरी करनी पड़ रही है। हे भगवान अब तो मेरी खबर कर लो। आपकी सहायता के बिना मेरा उद्वार नहीं होने वाला। जिस खेत की कमाई खाकर सुख पाते थे उसी खेत के कारण आज अदालत के चक्कर लगाने पड़ रहे हैं।

0000000

चंदा ,सूरज, ग्रह, नक्षत्र सभी आसमान पर हैं। गंगा और जमना नदी भी अपने स्थान पर बह रही है। परंतु हमारा कोई ठिकाना नहीं है। हम आने पूर्वजों का इतिहास किताबों में देखते हैं, तो मालुम पड़ता है कि हमारे पूर्वज बहुत गुण्वान थे। हम लोग अपने पूर्वजों के सामने एक आना भर नहीं हैं। वे कैसा कमाते और कैसा खाते थे, कैसा उनका लेन - देन और धर्म था।

अब आप भी तरह - तरह की सामग्री बनाकर अपना काम निकालो। अपना घर, दरवाजे और परछी बना लो। आंगन के बीच में तुलसी कोट बनाकर उसमें

तुलसी लगा दो। आंगन के किनारों में फूल - पौधे लगा दो। अपने मकान की पुताई कर लो। गौशाला में गाय बंधी है वह रंभा रही है। घुड़शाल में घोड़ा बंधा है वह भी हिनहिना रहा है। अब तो आनाज की कोठी में धान ऊपर तक भरी है। अब हमारे पास में रुपया पैसा आ गया है। घर के लोग खीर खा रहे हैं। अलसी का तेल घानी में पिरवाया जा रहा है। अलसी के तेल को सिर में लगा लो या शरीर में यह चिरपिरा नहीं लगता। अलसी के तेल से सब्जी और बरी बघार लो। समझदार किसान अपने खेत में अंड़ी बो देता है। गेहूं को पीसकर उसका आटा बना लेते हैं रिश्तेदार घर में आकर भोजन करने लगते हैं। असाढ़ के माह में खेत के भर्रा में कपास के पौधे लगा देना चाहिये। घर की बाड़ी में भी कपास के पांच - सात पेड़ लगा देना चाहिये। उस कपास की पौनी बनाकर चरखा से बहू,बेटा,ड़ोरी और स्वतः धागा बनाओ और उस धागे को बुनकर के पास ले जाकर उसके वस्त्र बनवालो। यदि इच्छा हो तो उन वस्त्रों को हल्दी से रंग दो। अलसी,चीला औ तिलौंजी को जलाकर उसकी राख बना लो और उस राख से अपने कपड़ों को धो ड़ालो। कपड़े साफ हो जावेंगे। साफ कपड़ों को धारण कर गांव की गलियों में घूमने निकल जाओ। कहीं मारपीट हो जाये तो अपने न्याय के लिये पंचायत में जाओ। पंच परमेश्वर होते हैं। वे उचित न्याय दिला देंगे। अच्छा - अच्छा भोजन करोगे, तो किसी भी प्रकार का रोग नहीं होगा। यदि आपको खांसी आ जावे, तो उपवास रख लो या गुरुच,भुनौरी और भटकटैया का काढ़ा बनाकर पिला दो खांसी ठीक हो जावेगी। हर्रा और बहेरा को शहद के साथ देने से भी खांसी ठीक हो जाती है। शरीर में थोड़े से जेवर पहनो। खादी की साड़ी पहनकर तुम बहुत सुन्दर लगोगी। किसी से हंसी मजाक नहीं करना चाहिये। ऐसा करने से सामने वाला नाराज हो जाता है, यदि अपने कामों से फुरसत हो जाओ तो दूसरों के काम में सहायता करना चाहिये। अपने पति की सेवा करना चाहिये। घर के कमरों में झाड़ू लगाकर उन्हें साफ रखना चाहिये। सुबह उठकर गघरी में पानी लेने जाना चाहिये। ब्राम्हण और साधू को देवताओं के समान सम्मान देना चाहिये। उनकी कथा कहानी सुनकर खुश होना चाहिये। आज हम अपने पूर्वजों की कहानी सुन रहे हैं। हमारे पूर्वज बाघ थे और आज हम लोमड़ी हो गये हैं। हमारे पूर्वजों ने बहुत सुख भोगा है और हम यहां पर दिन - रात दुख भोग रहे हैं।

0000000

भारत में कुल मिलाकर सात लाख गांव हैं। इने गिने कुछ शहर देश में हैं। जहां पर होशियार और सज्जन लोग निवास करते हैं। शहर में रहने वाले चतुर धनवान लोगों का जीवनयापन सुखों से बीत रहा है। परंतु गांव में रहनें वाले किसान

और मजदूर आह भरकर रोते हैं। इनके वस्त्र रहन - सहन और मकान देखकर दुख होता है। किसी न किसी के घर में बीमार मरीज खटिया पर पड़ा रहता है। इतने पर भी न जाने कितने किसानों के ऊपर अदालत का नोटिस और कुड़की का भय रहता है। ये गरीब लोग अपना मन मसोस कर रह जाते हैं। ये गरीब मजदूर सभी के प्राणों के आधार हैं। कांग्रेस पार्टी ने अब गरीब लोगों पर ध्यान दिया है। वह गांव - गांव में सुधार के कार्य करवा रही है। धनकुट्टी चांवल को कभी मत खाना क्योंकी इससे बेरी - बेरी रोग होने की संभावना रहती है। अपने खाने के लिये मसूर को ओखली में कुटवा लो गरीब लोगों के प्रान कोडहा और कनकी ही बचाते हैं। घानी में तिली को पिरवाकर उसके तेल को स्वाद से खाओ। तुमको तिली का शुद्व तेल मिलेगा। गांव में गाय भैंस का घी बनाओ। घर में चावंल और गेंहू का आटा पिसाकर उसकी रोटी खाओ। तुमको जो भी चीज पसंद हो उसे अपने गांव में ही पैदा करो। परंतु विदेशी वस्तुओं को त्याग करो। अपने देश में ही अनेकों प्रकार के समान बनने लगे हैं। आप लोग मेरा कहना मान कर सीख लो। तकली से सुंदर सूत कातो। इससे जो पैसा बचेगा वह दूसरे कामों के काम आयेगा। इस हाय - हाय के जीवन में कुछ आराम तो मिल जावेगा। कांग्रेस के सभी लोग कहते हैं कि पानी को साफ करके पीना। जिस प्रकार घर की सफाई रखते हो उसी प्रकार अपने गांव की गलियों और चौपालों की सफाई रखो। गांव में जब शुद्व हवा बहेगी तो गांव के सभी लोग स्वस्थय रहेंगे। तुम्हारे कपड़ों से बदबू आती है। उन्हीं कपड़ों को तुम अपने शरीर में धारण करते हो । अपने कपड़ों को तुम स्वतः साफ करो इसमें कोई लाज शरम नहीं है। सड़ी - गली सब्जियों को तुम सस्ता खरीद लेते हो। जिसे खाकर तुम अपना जीवन संकट में ड़ाल देते हो। कई प्रकारों से गंदा रहना बीमारियों का कारण होता है। जिससे तन और धन दोनों नष्ट होते हैं। जिससे तुम्हारा परिवार दुखी हो जाता हैं फालतू मत बैठो अपना काम धाम करो। सरकार कहती है अपने गांव को स्वच्छ रखो, नदी तलाबों,कुंऐ के घाटों में गंदगी पड़े रहने से बीमारियां फैलती हैं। कांग्रेस में गांधी जी ने यह प्रस्ताव पास किया है कि किसान अब किसी का नौकर नहीं रहेगा। वे अपने गांव की सफाई करें। सरकारी अस्पताल से मुफत में दवाई लेकर बीमारियों का नाश कर दो। यदि आप अपना ईलाज अच्छे से करवाओगे तो बीमारी किसी के पास नहीं रहेगी। बिना पैसा लिये लोगों की सेवा करना सभी धर्म से बढ़कर है। यह समझिये की जनता की सेवा करने से भगवान भी खुश हो जाते हैं। पढ़े लिखे भाईयों को तो दूसरों की सेवा करनी ही चाहिये। जब किसान खेत बाड़ी से घर वापस आकर आराम करता है । तब उनको गिनती और अक्षर का ज्ञान दो। चाहे वह किसी भी जाति का क्यों न हो। उनका मन बहलाने

के लिये कांगेस के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की वीरता की कहानियां बतलाया करो। कुछ दिन बाद तुम देखोगे की तुम्हारे गांव के लोग भी पढ़े लिखे हो जावेंगे। पढ़े - लिखे होने से लोग कई बातों को आराम से समझ जाते हैं। जिससे उनको दुख और रोग नहीं होंगे। अपने गांव में ग्राम पंचायत की स्थापना करो। अपने पंचों के न्याय का सम्मान करो। कम खर्च में अपना काम निकालो। तभी तुम्हारा कल्याण होगा। सभी लोग एक दूसरे से मिल जुलकर रहना सीख लो। तभी तुम्हारे ऊपर भगवान प्रसन्न रहेंगे। जिससे तुम सुखी रहोगे। यदि तुम हमारी बात को नहीं मानोगे और भाग्य के भरोसे रहोगे तो सरकार तुम्हारा क्या कर लेगी। सोते हुये बाघ के मुंह में हिरन कभी भी नहीं जाता। जब बाघ उछल कूंद कर मेहनत करता है । तभी उसे अच्छा शिकार मिल पाता है। इसलिये किसान भाई तुम भाग्य के भरोसे मत रहो। जब तुम मेहनत मजदूरी करोगे, तभी तुमको स्वराज का दुगना सुख प्राप्त होगा।

000000

हनुवा नंदा से पूंछता है भाई नंदा - तुम मुझे एक बात समझा दो । मैं बहुत दिनों से सोच रहा था। आज तुम उसका भेद खोल दो। गांधी जी गांव - गांव में जाकर कह रहे हैं कि हे किसान भाई तुम खादी के कपड़े पहनो अपने गांव में कपास के पौधे लगाओ। जब तुम अवकाश में रहो तो रहटा को रोज चलाओ। यदि तुमको हमारी बात समझ में नहीं आ रही है तो तुम ही बतलाओ - नंदा हनुवा से कहता है हनुवा सुनो - हमको अपने शरीर के लिये दो चीजों पर खर्च करना पड़ता है ,एक शरीर की रक्षा के लिये वस्त्र और पेट की रक्षा के लिये भोजन। चांवल और गेहूं की पैदावार हमारे देश में बहुत होती है। हमारे देश में आनाज इतना हो जाता है की हमारे खाने के बाद भी यह बच जाता है जिससे विदेशी फिरंगी अपना पेट भरते हैं। हम जो विदेशी कपड़ा खरीदते हैं। उससे हमारे देश का साठ करोड़ रुपया विदेश में चला जाता है। यदि कपड़े नहीं लोगे तो क्या नंगे रहोगे?तुम आठ माह खेती करते हो और चार माह आराम करते हो। इसलिये जब तुम आराम से घर में बैठो । तो कपास को धुनक कर उससे सूत कात लो। तुमको पंद्रह गज खादी के कपड़े के लिये कुछ काम करना ही पड़ेगा। तभी तुम कुरता ,धोती और बारह हाथ की चादर स्वतः बनाओगे, तो तुम्हारे मन में बहुत खुशी होगी। हम अपना जीवन स्वतंत्र होकर जियेंगे। इतने में हनुवा कहता है तुम्हारी बात ठीक है कितने काम करने वालों को आज भी काम की कमी है। तुम खादी की टोपी पहनो और मिल के कपड़ों का परित्याग करो। मैं आपको एक बात बता दूं कि खादी का कपड़ा मिल के कपड़ों से मंहगा पड़ता है। मिल वाले भाईयो तुम गरीबों का हक मत

मारो। तुम लोग धन के बल पर मिल लगा लेते हो। जिससे गरीबों की रोजी रोटी छिन जाती है। ऐसे पापी लोगों के कपड़ा कभी नहीं पहनो। खादी के कपड़ों में कुछ पैसा ज्यादा अवश्य लगता है पर देश का धन देश में ही रहता है।

चमार,घसिया,कतिया,मेहतर,भंगी,ड़ोम,महरा आदि ऐसी जातियां अपने देश में निवास करती हैं। ऐसे लोगों को हरिजन कहते हैं। इस समाज को यह नाम गांधी जी ने दिया है और गांधी जी इन जातियों के लिये क्या कहते हैं वह मैं आज आप लोगों को बतलाता हूं। हमारे भारत वर्ष में हिन्दुओं की जनसंख्या बाईस करोड़ है,ं इसी के भीतर हरिजनों की जनसंख्या करीब पांच करोड़ है। ईश्वर जो आनाज पैदा करता है, उसे सभी लोग खाते हैं, सभी के हाथ, पैर, छाती, सिर, नाखून, अंगुलियां, अंगूठा, आंख, कान, नाक, दांत, जीभ, चमड़ा, हड्डी , पीठ, पेट, खून और बाल हें। ईश्वर ने हम सभी को एक समान बनाया है और फिर सूरज, चंदा, धरती, पानी, हवा एवं धूप - छांव में ईश्वर ने किसी भी प्रकार का भेद नहीं किया है। जब ईश्वर सबको एक समान समझता है। जिसने हमें जन्म दिया है। तब ये हिन्दू लोग इन हरिजनों पर क्यों अत्याचार करते हैं। कथा, भागवत, हवन, पूजा - पाठ, देवी - देवताओं के स्थान तथा कुआं ,वावली, घाट में हरिजनों को क्यों निषेध है। इन लोगों को ऐसे स्थानों पर जाने से हिन्दू मना करते हैं। यदि हरिजन इन स्थानों पर पहुंच जाता है, तो हिन्दू उनको मारने को दौड़ते हैं। वे इनको कई प्रकार की गालियों और अपशब्दों से संबोधित करते हैं। हरिजन भाई इन सभी बातों को सिर झुकाकर सह लेते हैं। हिन्दू लोग कुत्ते - बिल्ली पालते हैं। उन्हें गोद में खिलाते हैं। तब ये लोग हरिजनों से क्यों नफरत करते हें। ये लोग ऐसा क्यों नहीं सोचते की ईश्वर ने मनुष्य योनि में जन्म दिया है। सभी मानव एक समान हैं। वेद शास्त्र कहते हैं कि मनुष्य की योनि सबसे श्रेष्ठ योनि है। तो क्या ये हरिजन लोग सम्मान के काबिल नहीं हैं। क्या ये प्रेम करने और छूने के योग्य नहीं हैं। चमार जब तक चमड़े का कार्य करता है मेहतर जब सुबह शाम हमारी गंदगी साफ करता है । उस समय तक वह र्स्पश करने के लायक नहीं रहता। ये लोग अपने कायरें से निर्वत होकर नहा - धोकर जब स्वच्छ हो जाते हैं तब इनको र्स्पश करने में कोई हानि नहीं है। जब किसी को चोट लग जाती है, शरीर में घाव हो जाता है। तब डाक्टर उस घाव को चीर - फाड़ करके दवा लगाकर तुम्हारा जीवन बचाता हैं उस समय डाक्टर तुम्हारे खून और मवाद से घृणा नहीं करता। उस समय डाक्टर को र्स्पश करना मना है। परंतु जब वह स्वच्छ हो जाता है, तो सभी लेग उसे छूने लगते हैं। सभी उसकी इज्जत करते हैं और उसे सम्मान देते हैं। हिन्दू लोग कहते हैं कि पत्थर, पीपल, लकड़ी, लोहा, जल - थल, पशु - पक्षी, सांप और कण - कण

में ईश्वर का वास होता हैं तब तो हरिजनों में भी वासुदेव भगवान का वास होता हैं आप अपनी तरफ से सभी को मान सम्मान दो और उनका आदर करो। आप भी जब पाखाना करके वापस आते हो या आपका शरीर गंदा हो तब आपको कोई नहीं छूता हैं तब आप स्नान काने के बाद शुद्व हो जाते हैं और मंदिर में पूजा करने चले जाते हो। हमारा सिर ब्राम्हण, भुजा क्षत्री, कमर वैश्य और पैर शूद्र जाति के हैं। ये सभी इस देह रुपी मंदिर में स्थापित हैं। आप अपनी भुजाओं कमर और सिर को जिस प्रकार सुंदर रखते हो । उसी प्रकार तुम अपनी कमर के नीचे भाग तथा पैरों को स्वच्छ रखो। तभी यह देह रुपी मंदिर बहुत दिनों तक आपके शरीर के साथ में रहेगा। हिन्दू भाई समय को देखते हुये अपने में सुधार लाओ। छुआ - छूत को कम करके सभी से एक समान प्यार करो। छप्पन और तिरेपन सन् में बहुत से हिन्दू मुसलमान हो जावेंगे। बहुत से लोग ईसाई हो जावेंगे। तब हमारे धर्म को बहुत हानि होगी। बचे - खुचे लोग हिन्दुओं से नाराज होकर उनसे अलग हो जावेंगे। तब ईसाई और मुसलमानों की संख्या देश में सबसे अधिक हो जावेगी। तब वे हिन्दुओं को लात मारकर राज्य करेंगे। हिन्दू धर्म के देवी - देवता, कथा - भागवत, पोथी - पुराण इन सभी को हरिजन मानते हैं। तब क्या ये हिन्दू नहीं हें। यदि दूसरे धर्म का कोई व्यक्ति आपके यहां आता है तो उसे हिन्दू धर्म में शामिल कर लो। हरिजनों के लिये कुआं, वावली और मंदिरों के द्वार खोल दो। सभी लोग आपस में मिलकर एक दूसरे को गले लगाकर मंगलाचार का गायन करो। दुनिया भर के मानवों में गांधी जी सबसे महान हैं। संपूर्ण देश की जनता बड़े प्रेम भाव से उनकी पूजा करती है। महात्मा गांधी छमा, दया की सत्य मूर्ति हैं। वे भारत माता की आत्मा हैं। गांधी जी दुखियों गरीबों और निर्बलों की सहायता करते हैं। वे हमेशा उनका ध्यान रखते हैं। गांधी जी ने गाय, भारत देश और हरिजनों के लिये फकीर का भेष धारण कर लिया है। गांधी जी के ह्रदय में लालच एवं गुस्सा लेस मात्र को नहीं है। वे बहुत बड़े पंड़ित ज्ञानी और चतुर इंसान हैं। वे समय देखकर लोगों के साथ व्यवहार करते हैं। वे जो सोच लेते हैं, उसे करके रहते हैं। बड़े - बड़े लोग पीछे हट जाते हें। इनको सच्चा साधू समझो, इन्होंने सभी सुखों को त्याग दिया है। चाहे आगी गिरे या बिजली गिरे या कितने भी कष्ट क्यों न आ जावें पर वे आह तक नहीं करते हैं। गांधी जी हमेशा एक ही बात सोचते हें कि मैं देश से अत्याचार मिटाकर देश की लाज बचाऊंगा। गांधी जी कहते हैं मैंने सरकार की जेलों में रहकर पूर्ण स्वराज पाया है। गांधी जी सबको यही मंत्र देते हैं कि अब सभी लोग अपने गांव को सुधारो । इसी आधार से देश में फिर से रामराज्य आ जावेगा। धन्य हो गांधी जी के माता - पिता जिनकी कोख ने ऐसे महान सपूत

को जन्म दिया। गांधी जी में किसी भी प्रकार की बुराई नहीं हैं जिसका मैं बखान कर सकूं। मैं सूर्य भगवान के चरण स्र्पश कर विनती करता हूं कि हे भगवान चरखा धारी गांधी जी का नाम अमर रखने का वरदान दें।

संकलनकर्ता - श्री पुरुषोत्तम लाल . अनुवाद - डॉ. विजय चौरसिया

## NÙkhlx<+h vkYgk lqjkt

दोहा : गांधी बाबा ला सुमर, सुमरो भारत माय।
सुमिरौ नेहरु वीर ला, जौन सुराज देवाय।।

माता - पिता के सुमरन करके,गुरु गनेश के चरन मनाय।
देवी - देवता ला फिर बन्दव, राम कृष्ण के चरण मनाय।।
सुमिरन करके नेता गण ला, अब सुराज के आल्हा गांव।
तिलक बाबा हर मंतर देंगे, जनम सिद्व अधिकार तुम्हार।।
ये सुराज लेके रहना है, मानिन गांधी बात तुम्हार।
देश में सब झन ला समझा के,बड़े परचार करिन संसार ।।
गांधी बाबा हर मनखे नो हैं, निचट देव अवतार।
जागिन भैया भारतवासी, होय गांधी के जय जयकार।।
धरे तिरंगा हाथ में सुंदर, बन्दे मातरम के जय जयकार।
खटकिस ये सब अंगरेजन ला, जेल में ठूंसिन बेसुमार।।
सभा बैड़ठका होन देवे, कानून के देवे फटकार ।
देश भरे में मचिस लड़ाई, रीता कोन्हों गांव न जाय।।
कहूं मेर कोड़ा मार सुनावे, कहूं मेर गोली आज चलाय ।
जय जयकार करन नहीं पावें, पकड़ के झंड़ा लेय नगाय।।
जीव छूटत ले मारे पापी,चिटको दया मया नहीं आय।
सतवादी झंड़ा नहीं छोड़ीन, कतको परान ला देव गंवांय।।

सत्य अहिंसा के अंगना मा, डटिगै सारी हिन्दुस्तान।
जीव जायके चेत भुलागे, उल्टा करे एक जबान।।
000ध्ध्ध्0
लूट रे पापी मार ले हमला, गांधी बाबा देहे समझाय ।
कतेक मारबे रे हत्यारा, चालीस कोटी जनमते जाय।।
लिखें लड़ाई धमतरी राज के, जतका मोला सुरता आय।
धमतरिहा मन बड़ चटपटिहा, सन् 20 मा गांधी ला लाय।।
गांधी के संग शौकत भैया, मोहम्मद अली विराजन आय।
भाषण काये मंतर फूंक दीन, धमतरी चेला लेइन बनाय।।
बड़े - बड़े नेता सब आइन,जनता दरस करे हरसाय।
डट रहिन सुराज लये बर, कभू धमतरी नहीं पछुआय।।
नरायण राव बाबा मेघा के , उनखर पांव मा मूंड़ मढ़ाय ।
इनखर कहना मंत्र एही है, जेला सुनहो धियान लगाय।।
हिम्मत कर आगे बढ़ भाई, विजय अवश्य है संशय नाहीं ।
मानिन बात सबै धमतरिहा, अपन पाव ला देइन आय।।
सुन्दर लाल जी राजिम वारे, खोलिन दुकान सुदेशी माल।
सन् सात औ बीस के भीतर, श्री नत्थू जी औ छोटेलाल ।।
चारों मिलके रद्दा खोजें, कैसे कटै देश के पाप ।
असहयोग आंदोलन खातिर, धरिन तिरंगा चरखा छाप ।।
सहकारी इस्कूल खादी के, घर - घर में पिरचार कराय।
छोटे लाल जी बाबू साहिब, पैसा पानी असन बोहाये।।
गांधी इस्कूल चरखा संग मा, घर बरबाद करिन हरसाय।
भारत में पहली सत्याग्रह, धमतरी तीर कण्ड़ेल बनाय ।।
नहर कानून के कर आंदोलन, एक्का के आवाज लगाय।
बाबू साहेब जी अगुआ होके, झंड़ा लेके खड़े तैंयार।।
बसती भर के गरु लाय ला , कांजी में लेगिन सरकार।
गोरुवा कोनो छोड़ाइन नाहीं, नीलाम में बोली बोलन जाय।।
सरकारी नौकर झक मारिन, नुकसानी देय घर पहुंचाय।
एही बार गांधी के दरसन खातिर, जनता बड़ अकुलाय।।
बड़े - बड़े नेता सब आइन, शहर उत्सव कहे न जाय।
लाल जी जैन डराइवर बन , गांधी जी ला शहर घुमाय।।
डॉक्टर मुंजे संगठन देखके, करे प्रशंसा कही ना जाय।

धन धमतरिहा हिम्मत वारे, सबै जात ला लेइन मिलाय।।
नत्थू जी जगताप के ईहां, नेता मन ड़ेरा देइन लगाय।
गांधी जी के गोठ सुने बर, अनगिनती मनखे जुरिजाय।।
छुआछूत मिटाओ एक्का करो, देश ला एही बात बताय।
गांधी जी हर कहिस के, हरिजन हवंय देश मा पांच करोड़।।
अपन देश मा सब हिन्दू मन, होथन बाइस करोड़ ।
ईश्वर के उपजाये अन्न सब, रखथैं बोहर एक समान ।।
तुम काबर इन ला दुरिहाथौ, सबे मने एके इनसान।
सब ला एक बरोबर देके, सिरजाये है एक्के भेस।।
कान नाक जीभ चमड़ा, हाड़ा पीठ पेट औ लोहू केश।।
औ फिर सूरज चंदा धरती, पानी पवन छांव औ घाम ।
हुवा भेद एहू मा नइये, देके करिस नियाय के काम ।।
झंड़ा के इज्जत के खातिर, धन जावे अउ जावे जान।
पर कुछु हो सुराज लेबर, रखबोन हम झंड़ा के सान।।
जय जयकार करिन सब जनता,सुनिन गुनिन सुन के पतियाय।
सुनता करके लड़े के खातिर ,रोज हजारों किरिया खाय।।
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0
सन् इक्कइस नागपुर में, झंड़ा सत्याग्रह करवाय।
धमतरी ले जत्था बना बना के, नागपुर के जेल में जाय।।
रामदुलारे मास्टर साहेब, परदेशी राम अमेठी काय ।
सत्याग्रह कर जेल भरीन है,दूसर सहर में नाव कमाय।।
सत्याग्रह कर जेल भरीन, सन् बाईस नगरी के मैदान ।
जंगल सत्याग्रह में भैया, नौकरशाही भये परेशान ।।
श्यामलाल जी सोम डटे जहां, लोगन तितर बितर नहीं जाय।
तन,मन,धन सब अर्पण करके, एक आवाज बुलंद कराय ।।
का गति बरनों आंदोलन के, दाई बहनी तक कोड़ा खाय।
कतको झन ला जेल मा बेड़िन, लाठी मार गनै नहीं जाय।।
सन् बाइस लै चौबीस ऊपर, सन् उन्तीस हर पहुंचिस आय।
रावी नदी के तीर जवाहर, पूर्ण स्वतंत्रता पास कराय।।
किरिया असहयोग आंदोलन ,सन् तीस में करन करार ।
अंगरेजी हर जिनिस मेटाइन, तब सोचन लागिस सरकार।।
धमतरी   तहसील वाला सोचिन, आश्रम यहां घलो खुल जाय।

फेर हजारों संग जहुंरिया, शिक्षा लेन लगिन हरसाय ।।
स्वयं सेवक कांगरेस के, शिक्षा ड़ॉ. शोभाराम निभाय ।
सन तीस में प्रांत के नेता, अपन बात ला देईन भेजाय।।
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0
रुद्री के सरकारी जंगल, जेहे महानदी के तीर ।
कांदी लयके काम बनाके ,जुरआइन बस्ती के वीर।।
नत्थू जी जगताप सेनानी ,नारायण राव जी पहली आय ।
गोविन्द राव जी ड़ाभावाले बाबू साहब जेल में जाय।।
परथम पकड़के जेल मा ठूंसिन, फिर तो कहूं ठिकाना नाय।
पांच - पांच के टोली बांधिन, जुलूस बनाके जंगल जाय।।
नौ तारिख सितंबर महिना, चलिस लुवई के कारोबार ।
कई हजारों भीड़ जहां ह,ै बतर कीरा असन कतार ।।
झंड़ा आगू बाजे बाजा, सुनते मन में जोश हमाय ।
भारत माता के जय बोले, धरती आसमान गुंजाय।।
जय गांधी जय वीर जवाहर, झंड़ा ऊंचा रहे हमार।
बंदे मातरम के गुन गूंजे, कांपे अंगरेजी सरकार ।।
पक्का गठन रहेन नेतन के, जंगल कानून देय बनाय ।
टोली बांधे रहीन बरोबर, बैंत जेहल में जाके खाय ।।
पं. गिरधारी लाल पुराणिक, छत्त्ीसगढ़ी मा कहे बताय।
कोहका पारे कन्हई ठाकुर, कई बेर ले जेल में जाय।।
जबरा काम रहे सब झन के, इनखर नांव ला कौन भुलाय।
मुकुंदराव शिव चरण राव जी, यशवन्त राव के काम सुहाय।।
तन,मन,धन,सब अरपन करके, स्वयं सेवक के नाम गिनाय।
गति बरनौं ओ बेरा के, बादर उमड़ - घुमड़ घरराय।।
गरज - गरज के पानी बरसे, मुंह लुकवा मन गईन लुकाय।
आ बरसात महिना ऐसन, पानी पूरा परा बोहाय।।
जंगल कानून टोरे खातिर, घर कुरिया देईन भुलाय।
पोलिस पकड़ हवालात में लाने, बेंत जेल के जा के खाय ।।
लाखों भीड़ कछेरी आगू , मार खाय नेता मुस्काय।
सांय - सांय जब बेंत उड़े तो, तरुवा में गुस्सा चढ़ जाय।।
देखत रहे सब जनता मन, आंखि ले आंसू बरसाय।
का बतान जी छटपटाय बर, बलदा लेके जीव जुड़ाय।।

शान्ति अहिंसा कहूं - कहूं हमला, नेता मन एकदम भुरियाय।
बड़ अनीत के काम करे वो, सहे चुप रहे नीत बताय।।
दारू माई के जलूस में भैया, बेंत धड़ाधड़ मारे नीच।
इज्जत हलका कर बेशरम, लेजे तिरत कछेरी बीच।।
लगिस चवालिस धारा भईया, नवागांव के सरहद आय।
कानून टोरे के तव ले भईया,कई हजार मनसे सकलाय।।
बजे जुझारुन बाजा घटके, जीव के मोह कोन्हों गाय।
कतको टोली जंगल भीतर, घुसके करत है जय जयकार।।
ऐती भर भर के मोटर में ,पल्टन पुलिस करे ललकार।
सारजन्ट कपतान हुकुम पा, पलटन बंदूक करिन तययार।।
हुये दनादन गोली भैया, खूब मचाइस अत्याचार।
कुछ तो तुरतई प्राण गवांइन, कतको हाय - हाय गोहराय।।
महतारी के ऐ सपूत माता बर ये तन सौंपे आज।
मीधू जी लमकेमी वारे , होईन शहीद देश के काज।।
गोली खाय गिरे रतनू जी, मोटर में जोर जेल पहुंचाय ।
लाठी गोली दोनों एक संग, बरसेले जत्था भिरराय।।
बाबू शंकर लाल जी तब्भे, लमकेमी ले जत्था लाय।
टेमासरा गंगरेल गांव ले, कतको मनखे तुरते आय।।
ये सुराज बर आंदोलन में, घर दुआर सब देइन भुलाय।
लइका,ड़ोकरी,ड़ोकरा मन के, जो गति भईस बताय न जाय।।
पानी में मुड़ भसरा गिरके, उपर परे ड़ंडन के मार।
उबुक - चुबुक होय नारिन के गति,मार में बहे खून के धार
इन्दिरा प्रसाद अऊ एक ब्रम्हचारी, खूनाखून चले महराज।
देख के इन ला धड़कन होवे है, विधि का करबे तै आज।।
पुलिस खेत के मुही उपर पटके मनखे मन ला ठोंक ।
निरदई दुशमन लात मारके, देखलाय बंदूक के नोक।।
मारके मार होश विकट है, केला कहे कौन समझाय।
भागो - भागो मचगे भईया, लेदे सब घर में आय।।
ढ़ाई तीन सौ स्वयं सेवक मन, न,मन, धन, ला देइन लगाय।
शिव रतनपुरी,ताराचंद जैसे,जालमपुरी जी हाथ बंटाय।।
बिसाहू सिंह भखारा वारे, जत्था जगह - जगह भेजवाय।
भोपाल रावजी,रामभरोसा,सोनी,मुकुन्दराव अऊ गोविन्द राव।।

गांव - गांव मा मंतर फूंके, बाबू साहेब नारायण राव।
लाठी पुलिस धमतरी रहीगे, अऊ आन्दोलन देइस दबाय।।
पुलिस के पहरा सब पारा में, जनता घर मा रहे लुकाय।
हजारों रुपया करे बसूली, और सब लोगन को घबराय।।
सत्याग्रह आश्रम के चीज सब, कागजात ला जब्त कराय।
गांधी एरविन ऐक्ट बनिस तब, पांछू ओला लेइन छोड़ाय।।
कपड़ा ओढ़ना छोड़ विदेशी, ये आंदोलन पकड़िस जोर।
होली जलिस विदेशी कपड़ा, रायपुर शहर में खोरे - खोर।।
जहां भाग लेय खातिर कतको, गेइन इहां ले कतको लोग।
जीहां बुलावे जावे संगी, कतको दुख सब लेने भोग।।
मेघावारे पंड़ित बाबा, तुंहर नाव ला कौन भूलाय।
जय जयकार करौ उन सबके, जउन धमतरी नांव जगाय।।
नत्थू जी जगताप बहादुर, अपन पांव ला देई अड़ाय।
कांग्रेस के लड़िन लड़ाई, लड़ते - लड़ते प्राण गंवाय।।
शंकर राव गनौद के अगुआ, अपन नांव ला देवन जगाय।
जागिस रुख नांव के तुंहरे, बरसे फूल न नांव मेटाय।।
जब इन भाषण देवै भैया, झकझोरे जनतन के परान।
आज के दिन फिरके कब आही, लोग कहे जाके मैदान।।
छत्तिसगढ़िया बोली में बोले, पं. सुन्दर लाल सुजान।
अड़हा तक ला समझ में आये, चाहे कतको रहे अजान।।
जनता के सेवा में रात दिन, अपन समय ल देय लगाय।
बाबू साहब छोटेलाल जी, रामलाल जी त्यागी वीर।।
देश के खातिर चिन्ता करके, देइन दान करेजा चीर।
पेट लुका कोई बात न रखे, खुल्लम - खुल्ला देई बताय।।
जम्मे नेतागण के अंदर, बघवा के बल हा मंड़राय।
जौन काम ला करे बरोबर, मुंह देखी इनला न सुहाय।।
भोपाल राव पवार अड़े हैं,जे रख देईन मराठी बात।
नाव मराठा मन के राख्ेा, धन मराठी कुल परभात।।
सन् उन्नीस सौ तैतीस में, धमतरी देखे बर बापूजी आय।
सबसे राज के जनता उमड़िस,तिल भर जगा न खाली जाय।।
जुलूस सभा झंड़ा तोरन सब, गली गली घर - घर फहराय।
का हिन्दू का मुसलमान, एक बरोबर हाथ बढ़ाय ।।

गांधी जी जब डहर किंजर के, हरिजन पारा में विलमाय।
फूलमाला के लेखा नइये, कौन कहां उनला पहराये।।
ठाकुर प्यारे लाल महंत जी ,बापू संग हांसे गोठियाय।
रविशंकर जी शुक्ल साथ में, कतको नेता स्वागत गाय।।
झंड़ा ऊंचा रहे हमारा, चरखा खादी के गुन गाय।
चरखा घर - घर रहे देश में, खादी के गुन अपरंपार ।।
छुआछूत मन से सब मेटो, तब सुख आही ये संसार।
गांधी के संदेश सुनिन सब, कोइस शहर भर बड़ उत्साह।।
कोन्हों जनम के पुण्य जागेंगे, जनता के मन लगिन थाह।
सत्य के खातिर मोह छोड़ दो, तब सुराज इंहां आही जी।।
पाप गुलामी के छॅट जाही, नवा सूरज उगाही जी ।
अमर बेल गांधी के सुन्दर, जनता बर अमृत बनगे।।
त्याग तपस्या के भुईयां, धमतरी शहर बड़ नाव कमाय।
ये सुराज आंदोलन रचना, लिखेव तरज आल्हा में गाय।।
भूल चूक ला माफी देहू ,मैं हर नोहो कोन्नों सुजान।
गलती ला सुधार के पढ़िहों आप सबे हो गजब महान।।
पांव परत हौं भारत मां के, जय हो वीर जवाहर लाल ।
गांधी बाबा के अशिश चाहे, धमतरी रहैया शंकर लाल।।

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थ -

गांधी बाबा का स्मरण कर लो, भारत माता का स्मरण कर लो,पंड़ित जवाहर लाल नेहरु का स्मरण करो। जिन्होंने देश को स्वराज दिलाया है। माता - पिता का स्मरण कर गुरु एवं गणेश जी के चरणों को र्स्पश कर सुराज का आल्हा गा रहा हूं।

लोकमान्य तिलक जी ने हमें जन्म सिद्व अधिकार का मंत्र दिया है। गांधी जी ने कहा कि हम स्वराज लेकर ही रहेंगे। देश के सभी लोगों में परचार हो गया है कि गांधी बाबा मानव नहीं देवता का अवतार हैं। भारतवासी जागे और पूरे देश में महात्मा गांधी की जय जयकार होने लगी। हाथ में तिरंगा झंड़ा लेकर सभी बंदेमातरम का गान करने लगे। अंग्रेजों को यह सहन नहीं हुआ। उन्होंने अनगिनित सत्याग्रहियों को जेल में ठूंस दिया। सत्याग्रही गांव - गांव में जाकर सभायें और बैठकें करने लगे। वे अग्रेजों के बनाये कानूनों का वहिष्कार करने लगे। पूरे देश

में स्वतंत्रता के लिये लड़ाई लड़ी जाने लगी। इस आंदोलन में देश कोई भी गांव अछूता नहीं रहा। अग्रेज आंदोलनकारियों के ऊपर अत्याचार कर रहे थे, वे कहीं पर कोड़ा चला रहे थे, तो कहीं पर सत्याग्रहियों के ऊपर गोली चला रहे थे। सत्याग्रही भारत माता की जयकार के नारा लगाते । उसी समय अंग्रेज उनके झंड़े छुड़ा लेते। वे सत्याग्रहीयों को बड़ी निर्दयता से मारते - पीटते थे। उन्हें बिलकुल भी दया नहीं आती थी। सत्याग्रही अपने हाथ से तिरंगा झंड़ा नहीं छोड़ते थे। इसके लिये न जाने कितनों ने अपने प्राण गंवा दिये। सत्य और अहिंसा के इस आंदोलन में पूरे भारतवासी एक हो गये। सत्याग्रहियों को अपने जीवन की चिंता नहीं थी। वे अंग्रेजों से कहते हे पापी हमें मार ले चाहे लूट ले । तुमको गांधी बाबा ही समझायेंगे। तुम कितने भारतवासियों को मारोगे। वे तो चालीस कोट तक पैदा होते रहेंगे।

मैं धमतरी राज्य के आंदोलन के बारे में लिख रहा हूं। जितना मुझे याद आ रहा है आपको बतला रहा हूं। धमतरी के लोग बहुत चटपटे हैं। वे सन् 1920 को गांधी जी को धमतरी लेकर आये। गांधी जी के साथ शौकत भाई तथा मुहम्मद अली जी भी आये। गांधी जी ने धमतरी में ऐसा भाषण दिया की उनके बहुत से अनुयायी तैयार हो गये। इस सभा में देश के सभी बड़े - बड़े नेता लोग आये थे। जिनको धमतरी की जनता देख देखकर प्रसन्न हो रही थी। सभी ने कहा हम भारत को स्वतंत्र करा कर ही रहेंगे। इसमें धमतरी के लोग कभी भी पीछे नहीं रहेंगे। नारायण राव बाबा ने गांधी जी के चरणों में अपना सिर रख दिया। गांधी जी के जो वचन हैं ध्यान लगाकर सुनो । सभी धमतरी वालों ने गांधी जी की बात सुनी और धमतरी के लोगों ने स्वतंत्रता के आंदोलन में अपने पैर बढ़ा दिये। राजिम वाले सुन्दर लाल जी ने स्वदेशी समान की दुकान खोल दी। श्री नत्थू लाल जी और छोटेलाल सोच रहे हैं, यह परतंत्रता का कलंक कैसे दूर हो। उन्होंने असहयोग आंदोलन के लिये चरखा छाप तिरंगा झंड़ा अपने हाथों में पकड़ लिया। वे लोग घर - घर में खादी का प्रचार कर रहे हैं। छोटेलाल जी पानी की तरह पैसा बहा रहे हैं। भारत में पहला सत्याग्रह धमतरी में हुआ। नहर के कानून पर आंदोलन कर एकता बना ली। बाबू साहब झंड़ा लेकर सबसे आगे खड़े हें। पूरे गांव के जानवरों को सरकार ने कांजी हाउस में बंद कर दिया। गांव वालों में से किसी ने भी अपने जानवर कांजी हाउस से नहीं छुड़वाये। तब सरकार ने उन जानवरों की नीलामी करनी चाही। इसके बाद भी गांव का कोई भी आदमी जानवरों को नहीं ले गया। तब झक मारकर सरकारी कर्मचारियों ने गांव वालों को जानवरों की नुकसानी देकर सभी के घर उनके जानवर पहुंचा दिये।

इस बार गांधी जी के दर्शन के लिये जनता व्याकुल हो रही थी। इस बार

गांधी जी के साथ सभी बड़े नेता आये। पूरे नगर में उत्सव का महौल पैदा हो गया। हजारी लाल जी ड्राइवर बनकर गांधी जी को शहर का भ्रमण करा रहे हैं। डॉ. मुंजे के सामाजिक संगठन की प्रशंसा हो रही है। धन्य हो धमतरी के हिम्मत वाले नागरिक जिन्होंने सभी जाति के लोगों को अपने में शामिल कर लिया। सभी नेतागण नत्थू जी जगताप के घर पर रुके। गांधी जी के भाषण सुनने के लिये हजारों लोग एकत्रित हो गये। गांधी जी का कहना है कि देश से छुआछूत मिटाओ और आपस में एकता बनाओ। देश में हरिजनों की जनसंख्या पांच करोड़ हैं अपने देश के पूरे हिन्दुओं की जनसंख्या बाईस करोड़ हैं ईश्वर का उपजाया आनाज सभी लोग अपने पास रखते हैं। आप लोग हरिजनों से दूर क्यों भागते हो। हम सभी ईश्वर के बनाये हुये मानव हैं। ईश्वर ने सभी को एक समान बनाया हैं कान, नाक, जीभ, चमड़ा, हड्डी, पीठ और पेट, खून और बाल सबके एक समान हैं और फिर सूरज, चंदा, धरती, पानी,हवा,धूप और छांव इनमें किसी भी प्रकार का भेद भाव नहीं हैं जब भगवान सबको एक समान समझता है, हम सब भगवान की संतान हैं। हम लोग तिरंगा झंड़ा के सम्मान के लिये अपना धन और प्राण तक दे सकते हें। कुछ भी हो हम भारतवासी स्वराज लेकर ही रहेंगे। जनता ने जब यह सब सुना तो सुनकर भारत माता की जय का जयकारा लगाया। सभी ने आपस में मिलजुलकर सौगंध खाई की भारत माता की रक्षा के लिये हम लोग अंग्रेजों से लड़ाई करेंगे।

0ध्.ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

सन् 1921 में नागपुर में झंड़ा सत्याग्रह हुआ।धमतरी से जत्था बना बना कर लोग नागपुर की जेल में चले गये। रामदुलारे मास्टर और अमेठी वाले परदेशी राम ने सत्याग्रह में जेलों में जाकर दूसरे शहर में अपना नाम रोशन किया। इस सत्याग्रह आंदोलन में बाईस शहरों के लाग लड़ाई के मैदान में कूंद गये। जंगल सत्याग्रह में सरकारी कर्मचारी परेशान हो गये। श्यामलाल जी सोम जहां पहुंचते हैं। वहां सभी लोग अपना तन,मन, धन अर्पित करके अपनी आवाज बुलंद करने लगे। मैं आपको इस आंदोलन के बारे में क्या बताऊं - इस आंदोलन में माता - बहनों तक ने कोड़े खाये। न जाने कितने लोगों को जेलों में कैद किया गया। उनको लाठियों से पीटा गया। सन् 1922 से 1924 के बाद जब सनृ 1929 आया तब रावी नदी के किनारे पंड़ित जवाहर लाल नेहरु ने स्वतंत्रता के लिये लड़ाई लड़ी। सन् 1930 में असहयोग आंदोलन की नींव रखी गई। जहां - जहां अंग्रेजी में लिखा था। लोग उसे मिटाने लगे। तब सरकार सोच में पड़ गई। धमतरी तहसील वालों ने सोचा की धमतरी में एक आश्रम खोला जावे। इसके बाद धमतरी वालों ने आश्रम खोल

लिया। जिसमें हजारों बचचे शिक्षा ग्रहण करने लगे। कांग्रेस के स्वयंसेवक डॉ. शोभारम जी ने शिक्षा की बागड़ोर अपने हाथों में संभाली। सन् 1930 में प्रदेश के सभी नेताओं को यह बात बतला दी गई।

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

रुद्री का सरकारी जंगल जो महानदी के किनारे हैं। वहां पर गांव के सभी नवजवान एकत्र हो गये। नत्थू जी और नारायण रावजी सबसे पहले आये। गोविंद रावजी ड़ाभा वाले बाबू साहब को जेल म्रें कैद कर दिया गया। सबसे पहले इन नेताओं को जेल भेजा गया। इसके बाद पांच - पांच लोगों की टोलियां बनाकर नवयुवक जंगल में पहुंचने लगे। सितंबर माह की नौ तारिख को हजारों लोगों की भीड़ एकत्र हो गयी। जैसे ही झंड़ा के आगे बाजा बजने लगता तो मन में जोश भर जाता था। जब भारत माता की जय का जयकारा होता, उसकी आवाज की गूंज सारे आकाश में फैल जाती । आंदोलनकारी गांधी जी और पंड़ित जवाहर लाल नेहरु की जयकार कर रहे थे।वे झंड़ा ऊंचा रहे हमारा तथा बंदे मातरम के गीत का गायन कर रहे थे।

इनकी आवज को सुनकर अंग्रेज सरकार कांप उठी। सभी नेताओं ने अपना पक्का गठन किया तो अंग्रेज सरकार ने जंगल कानून बना दिया। आंदोलनकारी टोली के टोली बनाकर जाते और अंग्रेज सिपाही उनको बेंतों से मारकर जेलों में ठूंस देते। पंड़ित गिरधारी लाल पुराणिक छत्तीसगढ़ी भाषा में सबको समझा रहे हैं। कोहका वाले कन्हई ठाकुर को अनेकों बार जेल में भेजा गया। अनेकों लोग इतने कठोर थे की उनका नाम नहीं भुलाया जा सकता। मुकुन्द राव, शिवचरण रावजी, यशवन्त राव,के काम प्रशंसनीय हैं। ये सभी लोग अपना तन - मन - धन सभी अर्पित करके कांग्रेस के स्वयंसेवक बन गये। उस समय के दृश्य का क्या बखान करुं। उस समय आकाश में बादल घुमड़ रहे थे। गरज - गरज कर पानी बरस रहा था। बरसात का माह था। सभी जगह पानी ही पानी था। परंतु आंदोलनकारी पानी की रवाह किये वगैर जंगल का कानून तोड़ रहे थे। पुलिस उनको पकड़कर जेल भेज रही थी। जेलों में आंदोलनकारियों को बैंतों की सजा दी जा रही थी। लाखों की भीड़ एकत्र हो गयी नेता लोग मार खाकर भी मुस्करा रहे थे। जब नेताओं को सांय - सांय बैंतों की मार पड़ती तो उनका गुस्सा एड़ी चोटी को आ जाता था। जनता अपनी आंखों में आंसु भरकर यह सब देख रही थी। जनता सोच रही थी एक न एक दिन जरुर ऐसा आयेगा जब हम इसका बदला लेकर रहेंगे। तभी हमारे मन को खुशी मिलेगी। पूरे देश में कहीं - कहीं शांति तो कहीं अहिंसा और आंदोलनकारियों पर हमला हो रहा था ।नेता लोगों के दिल में आक्रोश था। अंग्रेज

लोग अनीत का कार्य कर रहे हैं और भारतवासी उसे चुपचाप सह रहे हैं। जलूस में आई माता - बहनों की पुलिस द्वारा बैंतों से पिटाई की जा रही थी। लोगों को बेइज्जत करके उन्हें कचहरी ले जा रहे थे। नवागांव की सीमा में अंग्रेजी शासन ने 144 धारा लगा दी। फिर भी हजारों लोग कानून तोड़ने के लिये आगे आ गये। किसी को भी अपने जीवन से मोह नहीं था। नवजवानों की टोली जलूस लेकर जंगल के अंदर जाकर भारत माता की जय का जयकारा लगा रही थी। वहां मोटर में भर - भर कर पुलिस आती और आंदोलनकारियों को ललकारती उसने जंगल के भीतर आंदोलनकारियों पर लाठियों से प्रहार कर दिया। भीड़ में हाहाकार मच गया। कप्तान और सारजेन्ट के आदेश पर सेना ने बंदूकों से फायरिंग चालू कर दी। कितने लोग उनकी गोली खाकर तुरंत शहीद हो गये और न जाने कितने लोग हाय - हाय करके विलाप कर रहे थे। भारत माता के इन सपूतों ने मातृ - भूमि की गोद में अपना जीवन निछावर कर दिया। लमकेमी वाले गीधू जी इस आंदोलन में शहीद हो गये। रतनू जी को गोली लगी, वे गोली के लगते ही जमीन पर गिर गये, अंग्रेज सैनिक आये और उनको मोटर में बैठालकर जेल ले गये। अंग्रेज सैनिकों ने आंदोलनकारियों के ऊपर लाठियों एवं गोलियों से प्रहार किया। उसी समय बाबू शंकर लाल जी लमकेमी से अपना जत्था लेकर आ गये। टेमासरा और गंगरेल गांव से भी बहुत से लोग आ गये। स्वराज के इस आंदोलन में लोगों ने अपने घर - द्वार सभी को भुला दिया। लड़का - लड़की और बूढ़े - बूढ़ियां तक मार खाने जलूस में पहुंच गये। औरतों और लड़कियों के जो हाल हुये उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। आंदोलनकारी सिर के बल पानी में गिर रहे थे। उनके सिरों पर ड़ंड़े बरसाये जा रहे थे। महिलायें व्याकुल हुयी जा रही थीं। उनके शरीर से खून की धार बह रही थी। एक ब्रम्हचारी और इन्दिरा प्रसाद के शरीर से बहती खून की धार देखकर लोगों के दिल दहल गये। ईश्वर ने आज क्या कर दिया हैं पुलिस लोगों को खेतों में ले जाकर लात मार रही थी। उनको बंदूक की नोंक दिखला रही थी। सभी लोगों ने भागो - भागो की आवाज लगाई और सभी लोग अपने घर वापस आ गये। 250 - 300 स्वयंसेवक इस आंदोलन में कूंद पड़े। शिवरतन पुरी, ताराचंद और जालमपुरी जैसे लोगों ने इस आंदोलन में हाथ बंटाया। भाखरा वाले बिसाहू सिंह जी ने जगह - जगह अपने जत्थे भिजवाये। भोपाल राव जी,रामभरोसे सोनी, मुकुन्द राव और गोविंद राव के साथ बाबू नारायण राव जी ने गांव - गांव में जाकर स्वाधीनता का मंत्र फूंक दिया। धमतरी के इस आंदोलन को पुलिस ने लाठियों के बल पर दबा दिया। सभी मोीहल्लों में पुलिस का कड़ा पहरा था। लोग अपने घरों में छुपे हुये थे। पुलिस सीधे - साधे लोगों से हजारों रुपये वसूल कर रही थी। शहर के

लोग घबड़ाये हुये थे। पुलिस ने सत्याग्रह आश्रम की सभी वस्तुयें जप्त कर लीं। जब गांधी - इरविन एक्ट बना तब सभी वस्तुयें छुड़वायी गई। लोगों ने विदेशी कपड़ों को त्याग दिया। इस आंदोलन ने एक बार फिर जोर पकड़ा। रायपुर शहर के मोहल्ले - मोहल्ले में विदेशी कपड़ों की होली जलाई जाने लगी। मेघावाले पंड़ित जी का नाम कभी नहीं भुलाया जा सकता। उन सभी की जय जयकार करो जिसने धमतरी शहर का नाम पूरे देश में रोशन किया है। नत्थू जी एवं जगताप बहादुर ने स्वराज की लड़ाई लड़ी और लड़त -लड़ते अपने प्राण गंवा दिये। शंकर लाल गानौद वलों ने आगे आकर अपना नाम रोशन कर लिया। जब ये लोग मंच पर खड़े होकर भाषण देते उस समय लोगों का ह्रदय झकझोर देते भे। लोग मैदान में जाकर कहते आज का दिन कब फिर आयेगा। छत्तीसगढ़ी बोली में सुंदर लाल जी कहते हैं। चाहे कितना भी अनजान आदमी हो इतना तो समझ में आ गया कि उसे दिन रात जनता की सेवा करना है। छोटे लाल जी बाबू साहेब और रामलाल जी जैसे त्यागी आदमियों ने देश के खतिर अपना कलेजा चीर कर रख दिया। यह बात किसी से छुपाने लायक नहीं है। उस समय इन लोगों में बाघ की शक्ति आ गई। भोपाल राव पवार ने अपनी बात लोगों को मराठी में बतलाई। उन्होंने मराठों का नाम रोशन कर दिया। धन्य हो ऐसे मराठी कुल के सपूत ! सन् 1933 में महात्मा गांधी धमतरी देखने आये। सभी राज्यों की जनता गांधी जी को देखने उमड़ पड़ी। पूरे मैदान में तिल भर जगह खाली नहीं थी। गली - गली में जलूस निकल रहे थे। क्या हिन्दू क्या मुसलमान दोनों ने एक साथ आगे बढ़कर गांधी जी का स्वागत किया। गांधी जी सब जगह छोड़कर हरिजन मोहल्ला गये। सभी जगह झंड़े और तोरण लगाये गये। लोगों ने गांधी जी को इतनी फूल मालायें पहना दी की उसकी गिनती नहीं की जा सकती। ठाकुर प्यारेलाल महंत जी बापू के साथ बैठकर हस हस कर बातें कर रहे थे। रविशंकर शुक्ल जी के साथ कई लोगों ने गांधी जी का स्वागत किया। उन्होंने झंड़ा ऊंचा रहे हमारा गीत गाये और चरखा खदी के गुण भी गाये। उन्होंने कहा चरखा देश के घर - घर में हो। खादी में बहुत गुण हैं। लोग अपने मन से छुआ छूत को मिटा दें। तो यह संसार सुखी हो जावेगा। गांधी जी का संदेश सुनने के लिये पूरे शहर में उत्साह था। लोग कह रहे थे आज किस जनम के पुण्य जागे हैं।सत्य के लिये मोह - माया का त्याग करोगे। तभी स्वराज आयेगा। गुलामी के पाप छूट जायेंगे। इस देश में नया सूर्य प्रगट होगा। गांधी जी की अमर वाणी जनता के लिये अमृत बन गई। त्याग तपस्या की भूमि धमतरी शहर ने पूरे देश में नाम रोशन किया। मैंने इस सवराज आंदोलन को लिख कर आल्हा की तर्ज में गाया है। भूल चूक की माफी देना मैं कोई बड़ा वुद्विमान

नहीं हूं। गलतियों को सुधार के पढ़ना आप सभी बहुत महान हो। मैं भारत माता के चरण स्र्पश करता हूं। वीर जवाहर लाल जी की जय हो। धमतरी में रहने वाले शंकर लाल को गांधी जी का आशीष चाहिये।

लेखक - शंकर लाल सेन अनुवाद - डॉ. विजय चौरसिया

( साभार - सुराज - आदिवासी लोक कला परिषद )

छत्तीसगढ़ी लोक गीतों में ददरिया बड़ा लोक प्रिय है। ददरिया की दो पंक्तियों में अपनी बात कहने की बड़ी क्षमता है।ददरिया में श्रृंगार के अतिरिक्त राष्ट्रीय गीतों का बाहुल्य पाया जाता है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और देश के लाड़ले जवाहर लाल नेहरु जी एवं देश के अन्य क्रांतिकारियों को लेकर कई छत्तीसगढ़ी ददरिया बन गई हैं। ददरिया में मानव हनदय की स्वाभाविक वृतियों का मनोवैज्ञानिक आधार पर सुन्दर चित्रण होता है। वे रहस्य और जीव तत्वों से भरे रहते हैं।स्वराज की भावना को ददरिया में जिस मार्मिकता के साथ प्रस्तुत किया गया है। उसके कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं।

## पाबो सुराज मजा करवो

### ददरिया

पाबो सुराज मजा करवो।
भारत माता के पुकार सुना करबो।।1।

0 स्वराज प्राप्त करने के पश्चात खूब मजा करेंगे।

गोरी के अंचला, भुईयां मा लूरै।
गांधी जी के झंड़ा, दुनिया मा फिरै।।2।।

0 गोरी का आंचल जमीन में घिसट रहा है। महात्मा गांधी का झंड़ा पूरी दुनिया में फहरा रहा है।

लाये ला माटी, बनाये मटका।
गांधी बाबा के कहे ठडका ठडका।।3।।

0 मिट्टी लाकर घड़ा बनाते हैं और गांधी जी जो कहते है, ठीक - ठाक ही कहते हैं।

नानमुन छोकरा पहिरे ला पागी।
गांधी बाबा के केहे पहिरवो खादी।।4।।

0 छोटा सा लड़का है किन्तु धोती पहन रखा है।गांधी बाबा के कहे अनुसार हम सब खादी पहनेंगे।

नावा घर मा गड़ाये थुनिया।
नेहरु बाबा के केहे मा चलही दुनिया।।5।।

0 नये घर के निर्माण के लिये हमने खंबे खड़े कर दिये हैं। सारी दुनिया नेहरु बाबा के कहे अनुसार चलेगी।

नहाये खोरे खाये पकवान।
धरम के लड़ाई बर लड़े भगवान।।6।।

0 नहा - धोकर और भोजन करके तैयार हैं। यह तो स्वराज की लड़ाई है । उसके लिये

तो स्वयं भगवान लड़ रहे हैं।

खादी ला पहरौ अउ चरखा ला कातौ।
सुराज के झगरा ला सब्बो झन बांटो।। 7।।

0 खादी पहनो और चरखा कातो । यह स्वराज की लड़ाई है,इसे मिल बांटकर लड़ो।

धूंकी साही अंगरेज ,भुइयां मा छाइ गे।
मोर सोन के चिरैया माटी होई गे।।8।।

0 हमारे देश में अंग्रेजों का आगमन महामारी के प्रकोप जैसा हआ है। वे धरती पर छा गये हैं।हमारी सोने की चिड़िया (भारत) मिट्टी हो गई है।

तिवरा के दार मा वनायेंव भाजी।
फिरंगी होगे राजा ,नंदा गे खाजी।।9।।

0 तिवरा की दाल ड़ालकर भाजी बनाई है। फिरंगी राजा हो गया है। तब से अच्छा भोजन उपलब्ध नहीं है।

दिया मांगे बाती,बाती मांगे तेल।
सुराज लेबो अंगरेज कतका देबे जेल।।10।।

0 दीपक बाती मांगता है,बाती तेल मांगती है। अरे अग्रेज। हम स्वराज लेकर रहेंगे, चाहे तुम हमें कितनी भी बार जेल में ड़ाल दो।

ददरिया में गांधी जी ,तिरंगे झंड़े,नेहरु जी की कल्पनाओं का भारत बनाने में सहयोग, अंग्रेजी राज का विरोध जैसे विचार इन ददरिया में प्रस्तुत हुये हैं।

संकलन एवं अनुवाद : हरि ठाकुर

(संदर्भ ग्रंथः सुराजःम.प्र.आदिवासी लोक कला परिषद)

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

## दिल्ली के रंग हय गयीस लाल

दिल्ली के रंग हय गयीस लाल....
माचिस रकत होली के फाग।
आजादी के पहली राग।।
कांपिस अंगरेजी शासन।
डोलिस लंदन के
आसन।।
टूट परिस जब हमार जवान।
भगिन फिरंगी लेके परान।।
छत्तीसगढ़ भी ठौंकिस ताल।
अठरा सौ सत्तावन साल ।।
गरजीस वीर नारायन सिंह।
मिटिस सवै फिरंगी चिंह।।
दिल्ली के रंग हय गयीस लाल........

गीतार्थ - दिल्ली का रंग उसकी आभा से लाल हो गया था। पूरा देश खून की होली खेल रहा

था। ऐसा था स्वतंत्रता का पहला राग। अंग्रेजों का  शासन कांपने लगा था। लंदन का तखत ड़ोलने लगा था। जब हमारे जवान उन पर टूट पड़े ,तब अंग्रेज अपने प्राणों को बचाकर यहां से भाग गये। मंड़ला गढ़ के लोग भी अठारह सौ सन्तावन में ताल ठोंक कर युद्व के मैदान में आ गये। वीर नारायण सिंह ने जब अंग्रेजों के विरुद्व गर्जना की तब फिरंगियों का नामो निशान मिट गया।

अंग्रेजों द्वारा दिल्ली में खून की होली खेली गई। इस तरह आजादी का पहला राग गाया गया। भारतीयों ने अंग्रेजों को आंदोलनों से ड़रा दिया। सन् 1857 में छत्तीसगढ़ में भी आंदोलन फैल गया अ।ैर अंग्रेजों को मिटा दिया। लोक गीत में संघर्ष की चेतना व्याप्त है।

( संदर्भ ग्रंथ - सुराज. आदिवासी लोक कला परिषद )

## हमला काबर सताथव गा अंगरेजवा

हमला काबर सताथव गा अंगरेजवा
हमला काबर सताथव गा ।
गोबर के उसने चाउर लाये,
धुनहा गहूं थमाये।
पैसा झींके के रस्ता बनाये,
कंट्रोल के धक्का खवाथव गा।
मट्टी तेल दुइ पैसा के लाये,
तउनो ल दूना भाव लगाये।
झाला फाला कपड़ा लाये,
हावॅय अड़ानी छत्तीसगढ़िया
भोला भाला नाम धराये।
हर बात म बैकूफ बनाके,
हमला नंगरा बनाथव गा।
हमर देस के चीज लेगवाथ स,
लन्दन ला खूब सजबाथ स।
हमार देस ला खाख बनाथस गा,
अंगरेजवा हमला काबर सताथव गा।

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :**

ये अंग्रेजो तुम हम लोगों को क्यों सता रहे हो।तुम गोबर मिले चांवल लाये, घुन लगे गेहूं हमको दिया। यहां का पैसा ले जाकर अपनी राह बनाई। सभी जगह कंट्रोल की दुकान खोली। जिसमें हम लोग धक्का - मुक्का खा रहे हैं। तुमने विदेशों से दो पैसे में मिट्टी तेल मंगाया और यहां पर उसे दुगने भाव में बेच रहे हो। तुम भारत में विदेशी वस्त्रों को लेकर आये। हम छत्तीसगढ़िया बिलकुल अनाड़ी हैं। हम लोग बहुत ही भोले - भाले हैं।तुम लोग हमें हर बात में वेवकूफ बनाकर हमें नंगा कर रहे हो। हमारे देश की वस्तुओं को अपने देश में ले जा रहे हो और हमारे देश को गरीब बना रहे हो। तुम अपने देश लंदन को खूब सजा रहे हो और हमारे

देश को खाख बना रहे हो। ये अंग्रेज तुम हम लोगों को क्यों सता रहे हो।

संकलन - श्याम लाल चतुर्वेदी        अनुवाद -डॉ. विजय चौरसिया

## जागव,जागव गा मोर भईया

जागव,जागव गा मोर भईया, तुम गोरा के भगवईया।
देखव अभी अभी कुछ कर लव,
गांधी हवय बतईया।
सूते रइहव कबले भैया,
छत्तीसगढ़ के रहवईया।
बड़े - बड़े नेता चिल्लावत हैं,
जागव गा मोर भैया।
दूसर जिला म लाठी चलत हे,
गोली चलत है गा मोर भैया।
देस के खातिर प्रान देवत हैं,
चिंव नहिं करथव गा मोर भैया।
जेल जात हैं खुसी - खुसी म,
गद्दा तकिया के सुवईया।
देस के खातिर गाना गाथन,
सामिल होव्व गा मोर भैया।
मातृ भूमि के लाज बचावव,
सब भारत के रहवईया।।

0ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :**

ये गोरे अग्रेजों को भगाने वाले भाईयो जागो। जो गांधी जी बता रहे हैं उनकी बात सुनकर कुछ कर लो। हे छत्तीसगढ़ के रहने वाले भाईयो तुम कब तक ऐसे ही खाली बैठे रहोगे। देश के बड़े - बड़े नेता चिल्ला रहे हैं। हे भाई तुम जागो। हे भाई दूसरे जिलों में सत्याग्रहियों के ऊपर लाठियां बरस रही हैं। अंग्रेज उन पर गोलियां बरसा रहे हैं। सत्याग्रही देश के लिये अपने प्राण निछावर कर रहे हैं। वे मरने के समय चिंव तक नहीं करते। गद्दा, तकिया पर सोने वाले लोग खुशी - खुशी जेल जा रहे हैं। वे देश के खातिर गाना गा रहे हैं। हे भाई तुम भी इनकी टोली में शामिल हो जाओ। सभी भारतवासी अपनी मातृभूमि की लाज बचाने आगे आ जाओ।

संकलन - श्याम लाल चतुर्वेदी अनुवाद - डॉ. विजय चौरसिया

**संदर्भ ग्रंथ - चौमासा म.प्र.आदिवासी लोक कला अकादमी**

0ध्ध्ध्ध्0

## तैं हर लूट डारे हमला रे ! गोरा

तैं हर लूट डारे हमला रे! गोरा
तैं हर बिलायत ले भिखमंगा,
भिखारी बनके आये
पर के मुलुक म तैं रे नंगरा,
बैपारी बनके आए।
लोटा ना थारी फक्कड़ राम,
गिरधारी बनके आए
अउ राजा बने बर रे बुजापुत,
रोजगारी बनके आए
मुॅह के कौंरा ल हमर नॅगा के
पारे हमर पेट म फोरा
फेर हाड़ा गोड़ा ल टोरे
फोरे हमर माड़ी कोहनी
गरीब मन के हित करत हौं
कहि के दुनिया म पीटे ढ़िढ़ोरा
तैं हर लूट ड़ारे हमला रे गोरा।।

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :**

तुम विलायत के भीख मांगने वाले भिखारीअंग्रेजो तुमने हम लोगों को लूट लिया।तुम लोग हमारे देश में भिखारी बनकर आये। अरे नंगे अंग्रेज तुम दूसरों के देश में व्यापारी बनकर आये।जब तुम आये थे, तब तुम्हारे पास न लोटा था न ही थाली थी। तुम लोग तो बिलकुल फक्कड़ थे। तुम यहां पर नौकरी करने आये और राजा बनकर बैठ गये। हमारे मुॅह का भोजन तुमने छुड़ा लिया। तुमने हमारे पेट में फोड़ा उगा दिया। इसके बाद तुमने हमारी पिटाई भी की और हमारे हाथ - पैर भी तोड़ डाले। तुम कहते थे कि तुम गरीबों का हित कर रहे हो। इस बात का ढ़िढ़ोरा तुमने पूरी दुनिया में पीटा है। ये अंग्रेज तुमने विलायत से आकर हमको लूट लिया है।

संकलन - श्याम लाल चतुर्वेदी
संदर्भ ग्रंथ - चौमासा म.प्र.आदिवासी लोक कला अकादमी

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

## भइया भइगे सुराज,भइया भइगे सुराज

भइया भइगे सुराज,भइया भइगे सुराज
अब तो दसा ला सुधार रे।
गांव - गांव मा मेल करावा
सहर ले सुन्दर सोर लगावा

परजा के राज ल परजा सम्हारय
विनती विप्र हमारा रे।
0ध्ध्ध्0

गीतार्थ -

हे भाई हमारा देश आजाद हो गया है। अब अपनी हालत में सुधार लाओ। गांव - गांव में मिलजुल कर रहो। अपने शहर को सुंदर बना लो। अब प्रजा के राज्य को प्रजा ही संभालेगी, आपसे मेरा निवेदन है।

संकलन - श्याम लाल चतुर्वेदी
संदर्भ ग्रंथ - चौमासा म.प्र.आदिवासी लोक कला अकादमी
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

## अब आये हे सुराज तेला नइ छोड़ी

अब आये हे सुराज तेला नइ छोड़ी
घर - घर म सब बनव सिपाही
अब आये हे अपनेच पाही
कोन्नों बैरी देस मॉ आही
मारे बिगर नइ छोड़ी
0000ध्0

गीतार्थ :

अब हमारे देश में स्वराज आ गया है।अब घर - घर में सिपाही बनेंगे। अब हमारी बारी आई हैं अब हमारे देश में कोई दुश्मन आयेगा तो उसे बिना मारे नहीं छोड़ेंगे।

संकलन - श्याम लाल चतुर्वेदी
संदर्भ ग्रंथ - चौमासा म.प्र.आदिवासी लोक कला अकादमी

0ध्ध्ध्ध्0

## जय माटी जय जनम भूमि के

जय माटी जय जनम भूमि के,
जय हो भारत मैया के
बोलो जागौ जुरिया जावै
रुप धरौ बिर सैंया के
अरे नाग तैं काट नहिं त
जी भर के फुफकार तो रे !
अरे बाघ तै मार नहीं ता
गरज गरज धुतकार तो रे!
एक न एक दिन ये माटी के
पीरा रार मचाही रे
नरी कटाही बैरी मन के
नवा सूरुज फेर आही रे।

**गीतार्थ :**

जय हो भारत देश की मिट्टी की ! जय हो जन्म भूमि की , भारत माता की जय बोलो। सभी देशवासी जाग जाओ। बिरसा मुंड़ा का रुप धारण कर लो। अरे नाग तो काटता नहीं है, पर जी भर कर फुसकारता है। अरे बाघ तो मारता नहीं है पर गरज - गरज कर धुतकारता हैं, एक न एक दिन इस मिट्टी का दुख युद्व करा ही देगी। दुश्मनों का सर्वनाश होगा और नये सूर्य का उदय होगा।

संकलन - श्याम लाल चतुर्वेदी

(संदर्भ ग्रंथ - चौमासा म.प्र.आदिवासी लोक कला अकादमी )

## भड़किस आगी जहां तहां

कन्झागे आगी जिव के जिव म, भितरे - भितर गुंगवाइस।
अतियाचार घलो दिन्नो दिन, अंगरेजन के अकताइस।।
भड़किस आगी जहां तहां ,जर उठिस क्र्रांति के चिनगारी
जागिन माटी के बेटा,उमड़िन सब इक्के दारी।।
मारव काटव मचे लागिस,सब मथिन दही कस खदर - बदर।
तभे महतमा गांधी बोलिस ' अग्रेज छोंड़व देस हमार'।।

0ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :**

हमारा देश परतंत्र हैं हमारे ह्रदय में इसकी आग जल रही है। वह भीतर ही भीतर सुलग रही है। इन अंग्रेजों ने हम पर दिनों दिन अत्याचार किया है। जिसकी आग यहां - वहां भड़कने लगी है। क्रांति की चिनगारी सुलग गई है। इस भारत भूमि की मिट्टी के सपूत अब जाग गये हैं।सभी लोग एक ही बार में उमड़ कर आ गये। क्रांतिकारियों ने मार काट मचा दी है। उन्होंने दही के समान पूरे देश में खदर - बदर मचा रखी है। उसी समय महात्मा गांधी जी ने कहा अंग्रेजो हमारा देश छोड़ दो।

संकलन - श्याम लाल चतुर्वेदी

**संदर्भ ग्रंथ - चौमासा म.प्र.आदिवासी लोक कला अकादमी**

0ध्ध्ध्ध्ध्0

## चलव क्रांति तेवहार मनाये

चलव क्रांति तेवहार मनाये।
जांगर पेरव माटी कोड़व।।
होल्ले बारव भेद भाव के।
आपस मा झन मथा फोरव।।
चीन्हौं छत्तीसगढ़िया बैरी।
सोसन के सासन ला टारौ।।
गुगवावन हे कबले छाती।
लहू ड़ार के मसाल बारौ।।

0ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ -**

चलो भाई क्रांति का त्यौहार मनायें। मेहनत करो और मिट्टी खोदो। भेद - भाव की होली जला दो। आपस में एक दूसरे का सिर मत फोड़ो। छत्तीसगढ़ के लोगों अपने दुश्मनों को पहचानो। शोषण करने वालों को मार कर भगा दो। उनके खून से मशाल जला दो।

संकलन - श्याम लाल चतुर्वेदी

संदर्भ ग्रंथ - चौमासा म.प्र.आदिवासी लोक कला अकादमी

0ध्ध्ध्ध्0

## तुमला आज कसम हे संगी

तुमला आज कसम हे संगी
तुंहरे खेती खार के
चला देखादी आज लुटेरा मन ला
हम ललकार के
जउन मुसीबत आवै साथी
झेले बर तययार रहो
लहू के होली पड़ै खेलना
खेले बर तययार रहो।

0ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :**

हे मित्र तुमको आज मेरी सौगंध हैं तुम्हारे खेत - खलिहान में लुटेरे आ गये हैं। चलो आज उनको देखते हैं । उनको ललकारते हैं। हमारे ऊपर जो भी मुसीबत आयेगी ,उसे हम आपस में झेलने के लिये तैयार हैं। यदि इसके लिये हमको खून की होली भी खेलनी पड़े तो भी हम पीछे नहीं हटेंगे।

संकलन - श्याम लाल चतुर्वेदी

संदर्भ ग्रंथ - चौमासा म.प्र.आदिवासी लोक कला अकादमी

0ध्ध्ध्ध्0

## आवव गोहरावव सब संगी

आवव गोहरावव सब संगी
पांव बढ़वव हांथ चलावव
मिहनत के मारे तो पथरा
मन मा फूल घलो खिलथे गा
काम करव तम्भे जिनगी हे
ठेलहा बइठै जियन अकारथ
सदा काल के परिपाटी हे
बूड़व तो मोती मिलथै गा।

**गीतार्थ :**

आओ - आओ सभी संगी साथियों को बुलाओ। आगे कदम बढ़ाओ, अपने हाथ चलाओ। यदि तुम मेहनत करोगे, तो तुम पत्थर में भी फूल उगा सकते हो। काम करोगे तभी तुम्हारे इस जीवन की सार्थकता है। बिना किसी काम के अकेले बैठे रहना हमेशा काल की परिपाटी है। जब गहराई में डूबोगे तभी तुमको मोती प्राप्त होंगे।

संकलन - श्याम लाल चतुर्वेदी

संदर्भ ग्रंथ - चौमासा म.प्र.आदिवासी लोक कला अकादमी

0ध्ध्ध्ध्ध्0

होली के समय गाये जाने वाले फाग गीतों में मदनोत्सव की उमंग होती है, किन्तू आजादी के संघर्ष काल में इन फाग गीतों में स्वराज की उमंग फूट पड़ी थी। ऐसा ही एक फाग गीत प्रस्तुत है।

## गांधी तै कैइसे जूझ गे सभा में

अरै तै कैसे जूझ गये सभा में
तोर मंत्री, तोर मंत्री
तोर मंत्री जवाहर लाल
गांधी तैं कैसे जूझ गे सभा में

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ -**

गांधी जी तुम सभा में कैसे जूझ गये ? जवाहर लाल तुम्हारा मंत्री है। गांधी जी तुम सभा में कैसे जूझ गये।

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

संकलन एवं अनुवाद - हरि ठाकुर

( साभार - सुराज म.प्र. आदिवासी लोक कला परिषद)

## चलो सबो जन मिलके रंहटा ला कातिबो

चलो सबो जन मिलके रंहटा ला कातिबो
गांधी महात्मा बनाई सेना
जाति आति ,दिन रात हम सूतेल कातिवो
भईया हो पनिका बुलाई सेना
नरजी (तराजू) में तौलके गये बेचारा हो
लुंगड़ा का अच्छा बनाई सेना
रौंद - खौंद बच्छर दिन पहिने
तमोल अड़बड़ खटाई सेना

**गीतार्थ -**

चलो सब मिलकर चरखा कातेंगे।महात्मा गांधी ने ऐसे लोगों की एक सेना बनाई है।जाते आते दिन रात हम सूत कातेंगे और पनिका को बुलाकर अपनी सेना में मिलायेंगे। पनिका बेचारा तराजू में तौलकर सुन्दर साड़ी दे गया। जिसको हमने खूब रगड़ - रगड़ कर पहना है, फिर भी वह इतनी मजबूत थी कि अनेक वषरें तक चली।

इस लोक गीत में गांधीवादी विचारधारा के अनुरुप खादी के वस्त्र पहनने का संकल्प है।

लेखकः श्री भूखा सिंह

(संदर्भ ग्रंथः सुराजःम.प्र.आदिवासी लोक कला परिषद)

## अजी अंगरेज तै हमला बनाये कंगला

अजी अंगरेज तै हमला बनाये कंगला
सात समुंदर विलायत ले आके,
हमला बनादये भिकारी जी!
हमला नचाये तो बेंदरा बरोबर,
बन गये तैंहर मदारी जी!
चींथ - चींथ के हमर चौंथी के मांस ला ,
अपने बर तैंहर टेकाये बंगला!
अजी अंगरेज तै हमला बनाये कंगला!
चिथरा पहरथन कथरी बिछाथन,
पेज पसिया पीके अघातन जी!
चिरहा कमरा औ टुटहा खुमरी में ,
घिरल - घिरल के कमाथन जी!
हमरे रकत ला चुहुक के रे गोरा ,
लाल - लाल करे अपन अंगला!
अजी अंगरेज तै हमला बनाये कंगला!
हमरे चीज बस नंगा नगा के ,
बन गेये तै बजरंगा जी!
चांदी ला लेक कागद ला देये,
बना दिये भिकमंगा जी!
नंगत तैंहर भरमाये जी हमला,
जान ड़ारेन हम तोर रंग ढ़ंग ला!
अजी अंगरेज तै हमला बनाये कंगला।

0ध्ध्ध्0

**गीतार्थ -**

सात समुद्र पार कर विलायत से आकर तूने हमको भिखारी बना दिया जी,मदारी बनकर,तूने हमें बंदरों की तरह नचाया जी, हमारी चैंथी के मांस को चींथ - चींथ कर तुमने अपने लिये बंगला बना लिया, अजी अंग्रेज तूने हमें कंगाल बना दिया, हम चीथड़े पहनते हैं, गुदड़िया बिछाते हैं,पेज ,पसिया पीकर अपना पेट भरते हैं जी, फटे कंबल टूटी छतौड़िया में दुख भोग - भोग कर कमाते हैं जी रे गोरा, हमारी सामग्री छीन - झपट कर तू मजबूत बन गया जी, चांदी लेकर कागज दिया हमें भिखमंगा बना दिया जी, तूने हमें पूरी तरह भ्रमित किया जी, हम तेरे रंग ढंग को जान गये, अजी अंग्रेज तूने हमें कंगाल बना दिया।

इस लोक गीत में राजनैतिक ही नहीं बल्कि आर्थिक चेतना भी देखने को मिलती है। अंग्रेजों ने भारत को कंगाल बना ड़ाला।वे यहां की मूल्यवान वस्तुऐं अपने देश ले गये। धन - दौलत, सोना - चांदी सभी ले गये। देशवासी पूरे कपड़े तक नहीं पहनते।

लेखक - पं. कुंज बिहारी चौबे

संकलन एवं अनुवाद लाला जगदलपुरी

(संदर्भ ग्रंथः सुराज म.प्र.आदिवासी लोक कला परिषद)

# गांधी से लिये अवतार कलियुगी भाई

गांधी से लिये अवतार कलियुगी भाई।
मारे अगरेज सेना ,कांगरेसी राज बाना।।
घूम - घूम देस करे शांति कलियुगे ।
भाई गांधी से लिये अवतार कलियुगे भाई।।

0ddddd्dd्0

**गीतार्थ -**

इस कलियुग में गांधी जी ने अवतार लिया है।उन्होंने अग्रेज सिपाहियों को मार भगाया और अपने देश में काग्रेस राज्य की स्थापना की।

इस लोक गीत में गांधी जी को कलियुग का अवतार कहा गया है। यह गांधी जी के जीवन,आचार और कायरें के प्रति आदर है।

संकलन एवं अनुवाद - डॉ.कुन्तल गोयल

0dddddd्ddddd्0

# ते भारत के भाग ला फेरे

तें भारत के भाग ला फेरे।
अपन के साहबी बाना फेरे ।
घर - घर दुख दरिद्र के मारे ।
तें जिगानी देय सबन ला ।
तोला भुलावे कइसे।
तें घर - घर मा सत दिया बारे ।
पिरेम के ओमा तेल ड़ारे ।
मन मंदिर मा अंधियारी मा ।
जोत जलाये तें भारत मा ।

0dd्0

**गीतार्थ -**

हे गांधी बाबा, तुमने भारत की तकदीर बदल ड़ाली। अपनी साहबी वेशभूषा का पत्यिाग कर तुमने घर - घर में दुखी दरिद्र मानवों को नयी जिन्दगी दी। हम तुमको कैसे भूल सकते हैं। घर - घर में सत्य का दीपक जलाकर उसमें स्नेह का तेल ड़ाला। भारत माता के मन मंदिर में व्याप्त अंधकार को दूर कर तुमने उसमें प्रकाश भर दिया।

इस लोक गीत में गांधी जी को भारत का भाग्य बदलने वाला बतलाया गया है। गांधी जी ने गरीबों को नया जीवन दिया। सत्य और अहिंसा का विचार देकर आजादी दिलाई। उन्हें लोक भूल नहीं सकता।

संकलन एवं अनुवाद - डॉ.कुन्तल गोयल

0ddddd्dd्0

# उगे है अकासे में पुन्नी के चंदा

उगे है अकासे में पुन्नी के चंदा
अवतरे दुनिया में हवै गांधी देवता
अंगरेज में हवै फउद फटाका
ओ फउद फटाका
बन्दूक भाला के ओरी लगे है
गांधी मेर नइये फउद फटाका
ओ फउद फटाका
बन्दूक भाला कहां ले पाई दाई
ओला हवै अक सत के भरोसा
ओ सत के भरोसा
बन्दूक भाला कहां ले पाही दाई
उगे हवंय अकासे पुन्नी के चंदा
अवतरे दुनिया मा हवै गांधी देवता
0ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ -**

आज आकाश में पूनम के चांद का उदय हुआ है। दुनिया में गांधी जी का अवतार देवता के रुप में हुआ है।अंग्रेजों के पास लड़ाई के लिये फौज पलटन हैतथा बंदूक भाला आदि युद्व सामग्रीयां उपलब्ध हैं। किंतू गांधी जी के पास न तो फौज पलटन हैं न युद्व की सामग्रीयां हैं। उसे केवल सत्य का सहारा हैं भला उसे बंदूक भाला आदि युद्व की सामग्रीयां कहां से मिलेंगी।

यह है आजादी के पूर्व स्वतंत्रता - संग्राम में गाये जाने वाला सुराज गीत जो उन दिनों छुई खदान में जन - जन की जुबान पर था और आज भी मानस पटल पर अंकित हैं। गांधी जी अवतार बनकर आये और फौजी ताकत का मुकाबला उन्होंने सत्य के अस्त्र और अहिंसा की शक्ति से किया। यहां सत्य और अहिंसा के सिद्वांत की राजनैतिक चेतना दिखाई देती हैं

संकलन एवं अनुवाद - हुकुम दास अचिंत्य
(संदर्भ ग्रंथः सुराज म.प्र.आदिवासी लोक कला परिषद)

## हमर गरिबहा के परान बचइया

हमर गरिबहा के परान बचइया
धन गांधी बाबा परन तोर पइयां
गये अंगरेजवा देवाये आजादी
हमर बर है बाबा लावे गा खादी
चरखा अउ तकली के तहीं कतइया
धन गांधी बाबा परन तोर पइयां
सत अउ अहिंसा के तै हस पुजारी
भारत माता के तै करथस रखवारी
हिंदु मुसलमान संगे रेंगइया
धन गांधी बाबा परन तोर पइयां
खादी के कुरता अउ खादी के धोती

खादी के झंड़ा अउ खादी के टोपी
घर - घर तिरंगा झंड़ा फहरैया
धन गांधी बाबा परन तोर पइयां
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ -**

हम गरीब ओर कमजोर लोगों के प्राणों की रक्षा करने वाले हे गांधी बाबा हम तुम्हारे पैर पड़ते हैं। तुम्हारे ही कारण अंग्रेज यहां से चले गये और तुमने हमें आजादी दिलाई।गांधी बाबा तुमने हमारे लिये खादी के कपड़े दिये। चरखा और तकली के कातने वाले गांधी बाबा तुम्हारा चरण र्स्पश करते हैं। सत्य और अहिंसा के तुम पुजारी हो तथा भारत माता के तुम्ही रक्षक हो। हिन्दू और मुसलमानों को एक साथ चलाने वाले गांधी बाबा तुम्हारा चरण र्स्पश करते हैं। गांधी बाबा तुमने हमें खादी का कुरता ,खादी की धोती,खादी का झंड़ा और खादी की टोपी पहनने को दिया है। घर - घर में तिरंगा फहराने वाले गांधी बाबा तुम्हें शत - शत नमन है।
गांधी जी के विचारों सिद्वांतों और कायरें के प्रति आस्था प्रकट की गई है।सत्य और अहिंसा के महत्व को रेखांकित किया गया है।

संकलन एवं अनुवाद - हुकुम दास अचिंत्य
(संदर्भ ग्रंथः सुराज म.प्र.आदिवासी लोक कला परिषद)

## अपन देश आजाद करे बर, चलो जेल संगवारी

अपन देश आजाद करे बर, चलो जेल संगवारी
कितको झिन मन चल देईन ,आइरु अब हमरो पारी
जहां लिहिस अवतार कृष्ण,हर भगत मनन ला तारिस
दुष्ट मनन ला मारिस, अउ भुइयां के भार उतारिस
उहीं किसम जुर मिलके, हम गोरा मन ला खेदारी
अपन देश आजाद करे बर, चलो जेल संगवारी
कृष्ण भवन मा हमू मनन, गांधी जी साहीं इहिबो
कुटबो उहां केतकी ,तेल पिरावो,सब दुख सहिवो
चाहे निष्ठुर मारय पीटय, चाहे देवय गारी
अपन देश आजाद करे बर ,चलो जेल संगवारी
बड़ सिंधवा वेपारी बनके, हमर देस मा आइन
हम तुम्हार मा फूट ड़ालके, राज पाट हथियाइन
अब सब मन जानिस कि, आंय लुटेरा भारी
अपन देश आजाद करे बर, चलो जेल संगवारी
देख लिहिस जब हमार तुम्हार, कमजोरी अर ढ़िलाई
मुंसवा सांही बघवा मन ला, चपकिस भूरी बिलाई
अभी भागिहीं सब झन मिलके, बोला ललकारी
अपन देस आजाद करे बर, चलो जेल संगवारी
काम बूता सब छोड़ इनखर, अब एक बात सुन लेवंव
माते हवंय लड़ाई तेमा, मदद कभू झन देवव
इनखर पांछू पड़ो नंगत, घर - घर के तेज सुतारी

अब देश आजाद करे बर, चलो जेल संगवारी
उनखर मन के बम,बंदूक,तोप गोली औ ड़ंड़ा
सब हमार सत्याग्रह के आगू ,पड़ जाही ठंड़ा
होवत है बलिदान देस खातिर, कतको नर नारी
अपन देस आजाद करे बर, चलो जेल संगवारी
0ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ -**

साथी अपने देश की आजादी के लिये जेल में चलो ,दुष्टों को इस जमीन से भगाओ।कृष्ण के समान हम गांधी जी के साथ जेल में रहेंगे। दुख,कष्ट सहेंगे। अंग्रेज सरल व्यापारी की तरह हमारे देस में आया और हममें फूट ड़ालकर उसने देश हथिया लिया। चलो हम उन्हें ललकारें । सभी कामकाज छोड़कर देश की आजादी की लड़ाई में मदद करें। हे मित्र अपने देश को आजाद कराने के लिये जेल में चलो। जैसे कृष्ण जी जेल में रहे उसी प्रकार हम भी गांधी जी के साथ जेल में रहेंगे। वहां पर केतकी को कूटेंगे और तेल निकालेंगे। सभी प्रकार के कष्ट सहेंगे। चाहे अंग्रेज हमें मारे - पीटे या गाली दें, परंतु हम अपने देश को आजाद कराने जायेंगे। अंग्रेजों ने जब हमारी कमजोरी और सीधापन देखा तो हम जैसे बाघ मनुष्य को उसने चूहा समझकर वह बिल्ली बनकर हमारे ऊपर झपटा। अब सभी लोग मिलकर इनको भगा देंगे। सभी साथी अपना काम - धंधा छोड़कर एक बात सुन लो। इनकी बिलकुल भी मदद नहीं करना है। उनके पास बम,बंदूक,तोप, गोली और ड़ंड़ा हैं। परंतु हमारे सत्याग्रह के आगे वे सभी ठंड़े पड़ जायेंगे। इस देश को आजाद कराने में कितने ही नर - नारियों ने अपना बलिदान दिया हैं इसलिये मेरे साथी अपने देश को आजाद कराने के लिये जेल में चलो।

इस लोक गीत में स्वाधीनता की चेतना के दर्शन होते हैं। भारतीय लोक अपनी आजादी के लिये जेल जाने , बलिदान करने और गांधी जी के अनुगामी होकर स्वतंत्रता संघर्ष में शामिल होने की उत्कंठा तथा संकल्प को प्रदर्शित कर रहा है।

संकलन कर्ता - कोदू राम दलित        अनुवाद - डॉ. विजय चौरसिया

## बापू जी हमला पढ़ाइस अहिंसा के पाठ

बापू जी हमला पढ़ाइस अहिंसा के पाठ ।
छेरी बघवा ले पानी पियाथस एकै घाट।।
तहिंच सब हरिजन के हवस भगवान।
तोर नाम गा रटथें गा हिन्दू अउ पठान।।
आजादी खातिर भइस अवतार।
दुखी भारत के बेड़ा लगावे पार।।
सुनो गा भैया चिटिक देके धियान।
तकलीफ ला अपन सभो करिथी बखान।।
तरसथन भारत के आज हम किसान।
दुख - सुख ला सुनो हमार खोल कान।।
भारत के धरती हो जावै हरियर
सुख सुराज के खातिर बदी थी नरियर.

**गीतार्थ -**

**गांधी जी ने हमें अहिंसा का पाठ पढ़ाया है। वे बकरी और बाघ को एक ही घाट पर पानी पिलाते हैं।हिन्दू और पठान दोनों उनका स्मरण करते हैं। उन्होंने आजादी के लिये अवतार लिया हैं हम सभी तरस रहे हैं। हमारी यह कामना है कि देश आजाद हो,धरती हरी भरी हो ।सुख और स्वराज के लिये हम नारियल भेंट करेंगे।**

**गांधी जी के अहिंसा के सिद्वांत के प्रति निष्ठाव्यक्त करने वाले इस लोक गीत में स्वतंत्रता - संघर्ष के नायक के रुप में गांधी जी को लोक ने अपनी सर्वोत्तम श्रद्वा प्रदान कर उन्हें अवतार ही बना दिया है।**

लेखकः निरंजन लाल गुप्ता संकलन एवं अनुवाद केशरी बाजपेयी

(संर्दभ - सुराज म.प्र. आदिवासी लोक कला परिषद भोपाल)

## हमारो आए राज सुदेसा है

**चल हॉ हमारे आए राज सुदेसा है।**
**अरे आये राज सुदेसा हे हमारो**
**चला आवा, चला आवा**
**चला आवा मनावो तिहार।**
**चला आवा मनावो तिहार**
**हमारे आए राज सुदेसा हे।।1।।**
**अरे हां हमारे कइसे राज सुदेसा है**
**फेर कइसे मनावो तिहार,फेर कइसे मनावो तिहार**
**हमारे आए राज सुदेसी हे।।2।।**
**अरे हॉ हमारे परजा के परजा राजा**
**तेमा पनदरह अगस्त तिहार,तेमा पनदरह अगस्त तिहार**
**हमारे आए राज सुदेसी हे।।3।।**
**अरे हां हो गांधी लेके अहिंसा तै आए**
**अऊ खोले सुतंत्र दुवार,अऊ खोले सुतंत्र दुवार**
**हमारे आए राज सुदेसी हे।। 4।।**
**अरे हां सुराज के होरी घर - घर गांवा ग**
**अऊ करा सुदेसी पिरचार,अऊ करा सुदेसी पिरचार**
**हमारे आए राज सुदेसी हे।। 5।।**
**अरे हां देस ल दुस्मन झन डेरुवावै रे**
**चलो उठा जम्मा ललकार, चलो उठा जम्मा ललकार**
**हमारे आए राज सुदेसी हे।।6।।**

**गीतार्थ :**

**हमारे देश में हमारा स्वराज स्थापित हो गया हैं हमें स्वतंत्रता मिल गई है। चलो आओ अब मिलकर त्यौहार मनायें।**

**हमारा स्वराज कैसा स्वराज है? फिर हम किस तरह त्यौहार मनायेंगे?हमारे स्वराज में प्रजा के लिये प्रजा ही राजा है।हम सब मिलकर पंद्रह अगस्त का त्यौहार स्वतंत्रता दिवस**

मनायेंगे।

गांधी जी अहिंसा को लेकर आये और हमारे लिये स्वतंत्रता के द्वार खोले। स्वतंत्रता की होरी घर - घर गाओ। स्वदेशी वस्तुओं का प्रचार - प्रसार करो। सारे देशवासियो उठो और शत्रु को ललकारो। स्वराज हमें मिल गया हैं स्वतंत्रता हमें मिल गई है।

लोकगीत में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद का चित्रण है,जिसमें लोकतंत्रात्मक - व्यवस्था के प्रति आस्था व्यक्त की गई हैं स्वदेशी और अहिंसा के प्रति भसी आदर व्यक्त हुआ हैं

संदर्भ : फागुन गीत से साभार संकलनः जीवन यदु

## गांधी के विरवा

धरती के अंगना मा गांधी के विरवा,
फुलगे राजा फुलगे माटी के भाग।
अंधियारी के समै उजरगे,
चंदा अंजोरी भुंईयां उतरगे,
महर महर मोर अंगना महके
राम सिया के तन मन दहके
होईस बिहान हांसिस किसान
हिन्दू मुस्लिम बदिन मितान
धरती के अंगना मा गांधी के विरवा,
फुलगे राजा फुलगे,खुलगे माटी के भाग।
धरम करम के भितिहा बनगे,
पहरा हिम कस छाती तन के।
बादर विपत के बरस के झरगे
दया मया के रुख फरगे।
देवता आके होईस सियान
भागिस कपटी लेके परान।
धरती के अंगना मा गांधी के विरवा,
फुलगे राजा फुलगे,खुलगे माटी के भाग।
फुटगै बैरी के आंखी फटाफट
संभरिन भुईयां के बेटा खटाखट
समे के साध हर घर में आगे
दुख भुलागे भुईयां हांसे।
करिया गुरिया बदिन मितान
भागिस रतिया आइस बिहान।
धरती के अंगना मा गांधी के विरवा,
फुलगे राजा फुलगे,खुलगे माटी के भाग।

0ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :** इस धरती के आंगन में गांधी एक वृक्ष की तरह उग आये। इस गांधी रुपी वृक्ष में सुंदर - सुंदर सत्य, अहिंसा , प्रेम और सेवा के फूल खिले हैं जिससे धरती के सौभाग्य का द्वार

खुला।

अंधकार (गुलामी) का समय नष्ट हो गया। चंद्रमा की शीतल किरणें धरती पर बिखर गई।महर - महर घर आंगन महकने लगा। नर - नारी के तन - मन में स्वतंत्रता की आभा चमकने लगी। स्वराज मिला। नई सुबह का आगमन हुआ। किसान मुस्कराने लगा। हिन्दुओं और मुसलमानों में भाईचारा और एकता स्थापित हुई। गांधी जी के आने से इस धरती के भाग खुल गये। धर्म और कर्म की सुंदर दीवार बन गई। हिमालय का सुदृढ़ पहरा लगा हुआ है। सीना गर्व से फूल गया है।विपत्तियों के बादल बरस कर छंट गये। दया और प्रेम के वृक्ष फल से लद गये।आजादी के अगुवा गांधी जी देवताओं के समान पुजने लगे। उनके नेतृत्व के आगे कपटी दुश्मन अंग्रेज अपने प्राण लेकर यहां से भागे। गांधी जी के आने से इस देश का भाग्य खुल गया।

दुश्मनों की आंखें फूट गई। इस धरती के बहादुर बेटों ने शीघ्र मोर्चा सम्हाल लिया। अभिलाषा का पर्व प्रत्येक घर में आ गया। सारे दुख - दर्द दूर हो गये। रंगभेद समाप्त हो गया। काली रात बीत गई और नया सबेरा आया। गांधी जी के आने से इस धरती के सौभाग्य का द्वार खुल गया।

प्रतीकात्मकता का प्रयोग करते हुये इस लोक गीत में कहा गया है कि धरती एक विशाल आंगन है और गांधी जी उसमें एक वृक्ष के समान उत्पन्न हैं। स्वतंत्रता पश्चात् हिन्दू - मुसलमान एकता, विकास एवं सुव्यवस्था के प्रति गहरा अनुराग अभिव्यक्त किया गया है।

संकलन : लक्ष्मण मस्तुरिया अनुवाद - डॉ. विजय चौरसिया

## देवदूत बन आये गांधी

हाय रे हाय गांधी दुनिया में राम
देवदूत बन आये गांधी दुनिया में राम।
दुबला पतला मानो पुतला उज्जर खादी वाला
कोटि कोटि के दिल में बैठे एक निगोटी वाला।
गांधी दुनिया में राम।।1।।
पोरबंदर गुजरात प्रांत में ये हा जनम धरिस
देवदूत बन आके एहा सबके दुख ला हरिस
गांधी दुनिया में राम।।2।।
शांति स्वर में बाबा कहिस सांति म देश ला लेबो
यहू गाल ला मार देही य यहू गाल ला देबो।
गांधी दुनिया में राम।।3।।
कतको पढ़िस लिखिस तबले सबके सेवा करिस बाबा
सूत कात कपरा पहनाके, सबके दुख ला हरिस बाबा
गांधी दुनिया में राम ।।4।।
हिन्दू मुस्लिम सिख - ईसाई सबके नयनों के तारा
नाथूराम गोडसे ह धोका देके मारा
गांधी दुनिया में राम।।5।।

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थ :

गांधी जी इस संसार में देवदूत बनकर आये। उनका दुबला - पतला शरीर मानो वे पुतला हों। वह उज्जवल खादी वस्त्र वाले गांधी जी जो निंगोटी ( कम वस्त्र ) पहनते हैं। कोटि - कोटि लोगों के हृदय में विराजमान हैं। गुजरात प्रांत के पोरबंदर में गांधी जी ने जन्म लिया और देवदूत बनकर सबके दुखों को दूर किया। शांत स्वर में बापू ने कहा कि हम देश को अहिंसा और शांति से स्वतंत्र करायेंगे। अगर शत्रु ने हमारे एक गाल में चांटे लगाये तो हम उन्हें अपना दूसरा गाल भी दे देगें। गांधी जी खूब पढे लिखे थे, फिर भी उन्होंने सबकी सेवा की, चरखा चलाकर सूत कातकर सबको खादी पहनाया। गांधी जी ने सबके दुखों का निवारण किया। गांधी जी हिन्दू - मुस्लिम,सिख ईसाई सबके आंखों के तारा थे। सबको प्रिय थे। नाथूराम गोड़से ने उनको धोका देकर मारा। गांधी जी इस संसार में देवदूत बनकर आये थे।

गांधी जी ने भारतीय जनमानस को जिस तरह उद्वेलित किया उसके कारण भारतीय लोक ने उन्हें देवदूत का दर्जा ही प्रदान कर दिया है। नाथूराम गोड़से द्वारा उनकी कायरता पूर्ण हत्या करने की आलोचना की गई है।

सौजन्य : अघनू राम निषाद अनुवाद : ड़ाः विजय चौरसिया

## दीदी देखे,जाबो झंड़ा तिरंगा ला

चलो दीदी देखे,जाबो झंड़ा तिरंगा ला,
रे सुअना, पाये हैं देश सुराज।
उड़िजा रे सुअना,तैं दिल्ली शहर मा,
रे सुअना,गांव गांव मा झंड़ा फहराय।
कौन देवय मोर देश सुराज,
रे सुअना, कौन चलावथ राज।
गांधी देवाय मोर देश सुराज,
रे सुअना,जवाहिर चलावथय राज।

**गीतार्थ -**

एक सखी दूसरी सखी को संबोधन कर रही है कि दीदी ! चलो राष्ट्रीय तिरंगे झंड़े का दर्शन करें, हमारा देश स्वतंत्र हो गया है।ं आगे कल्पना करती हुयी कहती है कि हे सुग्गे! तू दिल्ली जा, जहां देश की राजधानी है, उड़कर जाकर देख आ कि कैसे गांव - गांव , घर - घर में स्वतंत्रता का परिचायक यह राष्ट्र - ध्वज, किस मस्ती से लहरा रहा है। एक सखी मानों पूंछती है कि ये स्वराज किसने दिलाया और राज्य की बागड़ोर कौन सम्हाले हुये है।इस पर दूसरी सखी समझाते हुये कहती है कि क्या तू नहीं जानती कि महात्मा गांधी ने हमें स्वराज दिलाया है और हमारे राष्ट्र नेता पं. जवाहरलाल नेहरु शासन की बाग डोर सम्हाले हुए हैं।

सामाजिक एवं राजनैतिक हलचलों का भी प्रभाव लोक गीतों पर पड़ा हैं यह गीत छत्तीसगढ़ी के प्रसिद्व लोक कवि श्री विप्र जी द्वारा रचित हैं

संदर्भ ग्रंथः तुलसी के विरवा जगाय. लेखकःअमृत लाल दुबे
-आदिम जाति अनुसंधान संस्था छिंदवाड़ा 1963

# सामाजिक चेतना से युक्त लोक गीत

## जयति जय जय छत्तीसगढ़ देस

जनम भूमि सुन्दर सुख खान
जहां के तिल ,सन,हर्रा ,लाख
गेंहू अर नाना विधी के धान
बनियां बेपारी के आधार
बढ़ाथैं देस राज के नाम
जहो के हम सब अन्न संतान
सत्ताधारी जन सरल किसान
हम्मन ला पाके होईस धन
हमार पियारा हिन्दुस्तान

**गीतार्थ -**

सुन्दर सुखों की खान है छत्तीसगढ़ देश, तुम्हारी जय हो,यहां तिल,सन,हर्रा,लाख, और विविध किस्म की धान पैदा होते हैं।जो बनिया व्यावारी कर्णधार हैं जिनसे राज्य का नाम ऊंचा होता है। हम सब यहां की अन्न की संतानें हैं और यहां के लोग सरल प्रकृति के हैं, इन्हें पाकर देश धन्य हो गया है।

इस लोक गीत में छत्तीसगढ़ की वंदना की गई है उसे सुखों का कोष बताया गया है। तरह - तरह की फसलें वहां होती हैं। वहां के लोग सरल प्रवृति के हैं। इसमें जन्म भूमि के प्रति आदर तथा कृतज्ञता का भाव व्यक्त हुआ है। जो समाज अपनी जन्म भूमि के प्रति कृतज्ञ नहीं रहता। वह समाज सांस्कृतिक और सामाजिक विकास भी नहीं कर पाता। इस रुप में यह लोक गीत सामाजिक चेतना के संदर्भ में अपना विशेष महत्व रखता है।

लेखक - पं. लोचन प्रसाद पाण्डेय
(संदर्भ ग्रंथः सुराजःम.प्र.आदिवासी लोक कला परिषद)

## चरखा चलावो संगी चरखा चलावो

चरखा चलावो संगी चरखा चलावो
गांधी बाबा के कहे मा
जुट मिल के सब जावो संगी
गीत सुराज के गावो संगी
चरखा चलावो संगी
0ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ -**

हे साथी गांधी बाबा के आव्हान पर हम चरखा चलायेंगे और मिलजुल कर एकत्र होकर स्वराज के गीत गायेंगे।

इस लोक गीत में स्वतंत्रता के बाद भारतीय राष्ट्रीय ध्वज के प्रति गहरा सम्मान प्रकट किया गया है। एक स्त्री अपनी सखी से तिरंगा झंड़ा देखने की इच्छा प्रकट कर रही है। महात्मा गांधी जी ने ही स्वतंत्रता दिलाई है।

संकलन एवं अनुवाद - डॉ.कुन्तल गोयल

## चला गिंया पढ़े जाबो खुले हैं मदरसा

चला गिंया पढ़े जाबो खुले हैं मदरसा,
रे सुअना, पढ़ि लिखि होवो होशियार।।
आदिम जाति कल्याण विभाग,
रे सुअना, कि नाम धरे है सरकार।।
खाये बर देथे अऊ पहरे बर कपड़ा,
रे सुअना, जीवन के होवथय सुधार।।
ठक्कर बापा के नाम अमर है,
रे सुअना,जश गावय सनसार।।

**गीतार्थ :**

चलो सखी पढ़ने चलें।पढ़ - लिखकर होशियार बनेंगे। सरकार ने आदिवासियों के लिये आदिम जाति कल्याण विभाग बनाया है। वहां पर पेट भर खाना और पहनने के लिये कपड़े भी देते हैं। पढ़ - लिखकर इस जीवन का उद्वार कर लो।ठक्कर बापा का नाम अमर हो गया है । रे सुआ! उनका यश पूरा संसार गा रहा है।

यह सुआ लोकगीत है। इसका लय इतना मधुर है कि शाला में पढ़ने वाले बालक भी इस छंद में नये गीतों की रचना कर रहे हैं। गीत में आदिम जाति कल्याण विभाग द्वारा जो आदिवासियों के सुधार के लिये कार्य हो रहे हैं, उनके बारे में वर्णन है। इसके साथ ही ठक्कर बापा का नाम भी स्वाभाविक रुप से लिया गया है। ठक्कर बापा ने शिक्षा का प्रसार प्रचार किया और विघालय शुरु कराये। युवतियां और किशोरियां पढने की लालसा व्यक्त कर रही हैं।

संदर्भ ग्रंथः तुलसी के विरवा जगाय.लेखक :अमृत लाल दुबे
-आदिम जाति अनुसंधान संस्था छिंदवाड़ा 1963

## दारु मांगे जूता पनही, मन लगे तो पी

दारु मांगे जूता पनही, मन लगे तो पी
भांग मांगे चना रे भइया, के गांजा मांगे घी
दारु मांगे जूता पनही,मन लगे तो पी
अरे सना नना रे सटाक दम
गांजा के पियइया सना नना रे
सना नना रे............
गाड़ी डोयले बइला डोयले,अऊ डोलेय खिवइया
तरी तरी ले चक्का निकरे ,देखा हे हंसिल
सना नना रे सटाक दम........
हांड़ी डोले परई डोले ,अऊडोले रंधइया,
तरी तरी ले पेज ढ़रे देख रे कुं ड़ेरा
सना नना रे सटाक दम..........

**गीतार्थ :-** भांग पीने वाले को चना चाहिये और गांजा पीने वाले को घी , शराब पीने वाले को जूता मिलता है इच्छा हो तो पी। गांजा पीने वाला आदमी सनका रहता है। नशा करने वाले को गाड़ी झूमती नजर आती है उसे बैल और बैल को जोतने वाला भी झूमता दिखाई देता हैं

उसे खाने की हंड़ी,उसके ऊपर का ढ़क्कन और खाना बनाने वाला भी झूमता नजर आता है। उसके पास भोजन रखा है, फिर भी वह दूसरी जगह देख रहा है।
यह लोक गीत विभिन्न प्रकार के नशा से होने वाले दुष्प्रभावों को रेखांकित करने के लिये व्यंगात्मक लहजे में लक्षणा -शक्ति का प्रयोग करते हुये' शराबी को जूता मिलता है' कहकर नशा से दूर रहने का संदेश देता हैं

संकलन एवं अनुवाद केशरी बाजपेयी

## छुआ छूत भरमा भूत

हमर बब्बा गांधी हा गोविन्द भगवान ल।
हरिजन लइका मा पाइस गा...........!
प्रेम सगाई जैसे रामजी,भिलनी के घर पाईस गा।
शबरी के जूठा बोइर खाईसभेद भाव नई लाइस गा।
हमार बब्बा गांधी हा.........
कोन जाही रोही दास के घर म,अइसन छुआ लगाये ग।
मन हे चंगा कठौती में गंगा,नेमहा मन पछताये ग।।
हमर बब्बा गांधी हा.................
निच्चट नीच कुल जेन कहिथे,जग में बिदुर कहाये ग।
जिंहा कृष्ण होगे भाजी म राजी,ऊंच - नींच नई चिन्हिस ग।।
हमर बब्बा गांधी हा........
ऊंच - नीच भेद - भाव छुत्ती के छुआ,मनखे ले मनखे घिनाइस गा।
आत्मा ला ' परमानंद ' नई चिन्हे,फोकट जनम तेहा पाइसे गा।।
हमर बब्बा गांधी हा.............
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :**

हमारे राष्ट्र पिता महात्मा गांधी ने हरिजन बच्चों में गोविन्द ( श्रीकृष्ण) भगवान के दर्शन किए।

जिस प्रकार से भगवान श्री रामचंद्र जी ने अस्पृश्य भिलनी के घर जाकर उनका प्रेम सहर्ष स्वीकार किया। उन्होंने मन में किसी प्रकार का भेद - भाव नहीं लाया और सबरी के जूठे बेर खाये।

रैदास को नीच जाति कहकर जो लोग छुआ - छूत मानते थे। उनके घर नहीं जाते थे। किन्तु जब उनकी ईश्वर भक्ति और ज्ञान को जाना ' मन चंगा तो कठौती में गंगा ' को प्रत्यक्ष परखा, तो ऐसे छुआ - छूत मानने वाले कट्टरपंथी लोग बहुत पछताये, लज्जित हुये।
जिन्हें सूत पुत्र , नीच कुल का कहा जाता था ,वे संसार में महात्मा विदुर के नाम से प्रसिद्व हुये। जिनके घर स्वयं श्रीकृष्ण ने ऊंच - नीच का भेदभाव त्याग कर भोजन किया। भोजन में भाजी खाकर प्रसन्न हुये ( द्दष्टव्य छत्तीसगढ़ी लोक गीत व लोकोक्ति दुर्योधन के मेवा त्यागे साग विदुर घर खाये जी व भाजी में भगवान राजी )।

ऊंच नीच का भेद - भाव , छुआ - छूत , मनुष्य - मनुष्य से घृणा कर रहा है। परमानंद

कहते हैं कि जिसने आत्मा में बसे परमात्मा को नहीं पहचाना, छूआ - छूत को माना उसका मनुष्य जीवन पाना व्यर्थ है। हमें गांधी जी ने यह समझाया और छुआ - छूत को मिटाया, गांधी जी ने हरिजन बालक में श्रीकृष्ण के दर्शन किये।
गांधी जी ने राजनैतिक नेतृत्व ही नहीं दिया, उन्होंने सामाजिक उद्वार और सुधार के लिये भी अभियान चलाया । हरिजन प्रेम और अस्प्रश्यता की भावना से लोक भी प्रभावित है।

संदर्भ : पिंवरी लिखे तोर भाग से साभार

संकलन : सुशील यदु

## पहली पंवारों गौरी ,फेर गावो देवी शारदा,

पहली पंवारों गौरी ,फेर गावो देवी शारदा,
काकर गावो, काकर बजाओ,काकर करौ परनाम,
गुरु के गावो, देव के बजाओ,सरसुती के करो परनाम।
कहां बैठे जोगनी, कहां बैठे देवी शारदा,
काहे मा गुरु बनाही,
मांदर बैठे मोर जगमोहन - जोगनी, जिभिया बड़ी शारदा,
काहे मा गुरु बनाही।।

**शब्दार्थ :** पंवारों - पैर लागौं, प्रणाम करुं। गावो - वंदना,गुण गाना, बजाओ - यहां पर सेवा करना।परनाम - प्रणाम।सरसुती - सरस्वती।

**गीतार्थ :**

सर्वप्रथम मैं गौरी देवी को प्रणाम करता हूँ। उसके बाद सरस्वती देवी का वंदन करता हूँ। गुरु का वंदन करता हूँ।इष्ट - देव की सेवा करता हूँ।मांदर में विश्व - मोहनी योगनी बैठी है और जिव्हा में सरस्वती देवी विराजती हैं। और गुरु का मंत्र कान में ग्रहण किया जाता है।

संदर्भ ग्रंथः तुलसी के विरवा जगाय.लेखक :अमृत लाल दुबे
-आदिम जाति अनुसंधान संस्था छिंदवाड़ा 1963

## हरे सुमिरन करौं रे

हरे सुमिरन करौं रे,यहीं अंगनइया मा सुमरन करौं।
एक सुमरन में चन्दा सुरुज, एक सुमिरो धरती आकाश
हरे सुमिरन करौं रे.......।।
एक सुमिरन चारों देवता ला,गांव के गंवठिया ठाकुर देवता रे।
हरे सुमिरन करौं रे.......।।
कलकत्ता के काली माई ,समलपुर के समलाई,
लाफा के बुढ़वा देव, छुरी के कोस गई।
हरे सुमिरन करौं रे.......।।

**गीतार्थ -**

आज इस आंगन में इस पुण्य बेला पर मैं सभी देवताओं का स्मरण कर रहा हूँ। चन्द्रमा, सूर्य, धरती एवं आकाश इनको मैं गांव के अन्य चार देवताओं के साथ , सबसे बड़े देवता ठाकुर देव का भी आवाहन कर रहा हूँ। कलकत्ता की काली देवी, संबलपुर की संबलाई देवी, लाफा के बूढ़ा देव एवं छुरी के कोसगई देवी का भी में आवाहन करता हूँ।

आदिवासियों में करमा त्यौहार मनाने के पूर्व सभी देवी देवताओं का आवाहन किया जा रहा है। कलकत्ता की काली माई तथा संबलपुर की संबलाई देवी इस क्षेत्र में काफी प्रसिद्व हैं।

ठाकुर देव आज भी प्रत्येक गांव के प्रमुख देवता माने जाते हैं। गांव में कोई भी त्यौहार एवं शुभ कार्य प्रारंभ करने के पूर्व ठाकुर देव की प्रथम पूजा की जाती हैं।

संदर्भ ग्रंथ - तुलसी के विरवा जगाय.लेखक : अमृत लाल दुबे
आदिम जाति अनुसंधान संस्था छिंदवाड़ा 1963

## नइ गिरय पानी  बूंदी, नइ पाके धान,

नइ गिरय पानी  बूंदी, नइ पाके धान,
नइ मिलय गढ़ा कुदारी,नइ बाचय परान,
देश दुनिया के अइसन,दुरदशा होगय ना।
आगू - आगू पानी चलय,पाछू मा गेजा,
कागज के नोट बनय,कड़ा के तेजा,
देश दुनिया के.............
वैपारी अऊ सूदखोरन करथंय अड़बड़ मजा,
हमर जान सांसत मा पड़ गय,हमर हो गय सजा,
देश दुनिया के..................

**शब्दार्थः** अड़बड़ -अत्यधिक, जान सांसत में पड़ना - कठिनाई

**गीतार्थ :**

इस वर्ष पानी नहीं गिरने से धान की फसल खराब हो गई है।चारों ओर आकाल सा पड़ गया हैं अतः कोई मजदूरी भी नहीं मिल पा रही है। चारों ओर इस दुर्दशा का कोई अंत नहीं है।ऐसा लगता है कि अब प्राण नहीं बचेंगे। कागज के नोट के प्रचार के साथ ही कपड़ों के भाव में भी तेजी आ गई है। हमारी इस दयनीय अवस्था का लाभ सूदखोर और व्यापरी अवश्य उठा रहे हैं और मजा कर रहे हैं। परंतु हमारे गले में तो मानो फांसी की ड़ोरी लटका दी गयी है।

इस लोक गीत में आर्थिक जीवन की झांकी प्रस्तुत की गयी है। वर्तमान मंहगाई, व्यापारी वर्ग की मुनाफाखोरी एवं सूदखोरी जन - जीवन को प्रभावित किये बिना नहीं रह सकी है।

संदर्भ ग्रंथ - तुलसी के विरवा जगाय.लेखक : अमृत लाल दुबे आदिम जाति अनुसंधान संस्था छिंदवाड़ा 1963

## हरे मैं तो गांव मा रहिहौं गा

हरे मैं तो गांव मा रहिहौं गा
बिरदा बसंती हां मोला नीक लागे गा।
तता - तता नागर जोते,तात कलेवा खाय
फटे पुराना कपड़ा पहिन,अपन दिन बिताय।
जैसे - जैसे घर बने हैं वैसे है फुलवारी
भाई - भाई सा मेल बने है, मालिक के बलिहारी।

**शब्दार्थ :** बिरदा बसंती - बैलों के नाम। नीक लगना - अच्छा लगना।

**गीतार्थ :**

कृषक कहता है कि मैं अपना गांव छोड़कर कहीं नहीं जाऊंगा अर्थात यहीं रहूंगा।उसके बिरदा और बसंती नामक दो बैल उसे अतयंत प्यारे हैं। उन्हें वह छोड़कर भला कैसे जा सकता है।उन बैलों से खेती करना,रुखा - सूखा जो कुछ प्राप्त हो उसे खा लेना, फटे - पुराने कपड़ों से काम निकाल लेना और उसी प्रकार जीवन के अपने सुंदर क्षण यहीं गांव में रहकर व्यतीत कर देना ,यही उसकी एक मात्र अभिलाषा है। गांव में सभी प्रकार एवं स्थिति के लोग निवास करते हैं। कोई धनवान है तो कोई गरीब भी हैं। परंतु आपस में ईश्वर की कृपा से इतना भाई - चारा है कि ऊंच - नीच , अमीर - गरीब का कोई भेद - भाव नहीं है।

इस लोक गीत में ग्रामीण वातावरण की विशेषताओं का चित्रण है। कृषक को अपने गांव से कितना प्यार है तथा अपनी स्थिति से कितना सन्तोष है, यह उपरोक्त गीत में स्पष्ट नजर आता है।

ंदर्भ ग्रंथ - तुलसी के विरवा जगाय. लेखक : अमृत लाल दुबे
आदिम जाति अनुसंधान संस्था छिंदवाड़ा 1963

## दुधवा के मोल छुटवइहा

जाय बर जाइहा बाबू तू तो जनकपुर,
दुधवा के मोलदे जइहा।हा हा जू............
साते धार दियेव दाई सात लाख बाटे,
दुधवा के मोल छुटवइहा..............
हा हा जू..............
तोर बर लईहा दाई जतन करइया,
दुधवा के मोल डुटवइहा...........
हा हा जू....................

**शब्दार्थ :** दुधवा के मोल - दूध का मूल्य।जतन करइया - सेवा करने वाली।

**गीतार्थ :**

घर से दुल्हा पालकी में बैठकर विवाह करने जा रहा है। माता उसे दूध की याद दिलाती है कि ऐसा न हो , घर में बहु के आते ही पुत्र माता को भूल जाय। पुत्र उसे वचन देता है कि माँ , मैं तुमको कभी नहीं भूलुंगा, तेरे उपकार कहीं भूलने योग्य हैं।मैं तेरी सेवा करने के लिये ही बहू लेने जा रहा हूं।

इस लोक गीत में माता के प्रति पुत्र अपने कर्तव्य की पूर्ति का वचन देता है।बड़ा ही मार्मिक प्रसंग है। मां के दूध का मूल्य सचमुच अनमोल है। क्या उसे चुकाया जा सकता है?

संदर्भ ग्रंथ - तुलसी के विरवा जगाय.लेखक : अमृत लाल दुबे
आदिम जाति अनुसंधान संस्था छिंदवाड़ा 1963

## दाई कहे जल्दी आहा बिटिया,

दाइ्र कहे जल्दी आहा बिटिया,
बाबा कहे छै मासे हा हा जू........।
भइया कहे साल भर मा आइहा,
भौजी कहे कौन कामे हा हा जू...........।
दाई मोर रोवे हमरि हमरि के,

बाबा देव थम जो हारे,
भइया के रोये अंगोछी फूल जावे,
भैाजी के नयन कठोरे,हा हा जू......।

**शब्दार्थ :** हदरि हदरि के - बेटी के वियोग में माॅ का हृदय फटा सा जा रहा है।

**गीतार्थः**

नवविवाहित कन्या की बिदा का समय आ गया है। माँ कह रही है कि बेटी तुम ससुराल से शीघ्र वापस आना। पिताजी कह रहे हैं बेटी चार छै माह रहकर आ जाना। भाई कह रहा है कि साल भर में मैं स्वयं लिवाने आ जाऊंगा। परन्तु भाभी कह रही है कि यहां का क्या काम ? अब तो ससुराल ही तुम्हारा घर - द्वार है। बिदा के क्षण में माँ का हृदय मानों हूक उठने से विदीर्ण हुआ जा रहा है। पिता बेटी के वियोग में गुहार मारकर रो रहा हैं। भाई अपना अंगोछा गीला कर रहा है। परंतु भाभी  की आंखों में विषाद की एक बूंद भी नहीं है।

इस लोक गीत में माता - पिता, भाई - भैाजाई, सभी के प्रेम का तुलनात्मक वर्णन है।

संदर्भ ग्रंथ - तुलसी के विरवा जगाय.लेखक : अमृत लाल दुबे
आदिम जाति अनुसंधान संस्था छिंदवाड़ा 1963

# गोंड़ जनजाति में प्रचलित सामाजिक एवं राजनैतिक चेतना के लोक गीत

# गोंड

जनसंख्या की दृष्टि से गोंड़ समुदाय न केवल मध्य प्रदेश बल्कि देश का सबसे बड़ा आदिवासी समुदाय है। ये नर्मदा के दोनों किनारों पर विन्ध्य तथा सतपुड़ा अंचल में निवास करते हैं। प्रदेश में ऐसा कोई जिला नहीं है, जहां गोंड न हों, मुख्यतः ये बस्तर, मंड़ला, ड़िंड़ौरी, सरगुजा, छिंदवाड़ा, शहड़ोल, अनूपपुर, उमरिया, बिलासपुर, बैतूल, दुर्ग , बालाघाट और रायगढ़ जिले में केन्द्रित हैं।भारत में गोंड़ सबसे प्राचीन, प्रभावशाली और व्यापक आदिवासी समुदाय है। प्राचीनकाल में प्रदेश के एक बड़े भाग में गोंडों का शासन था।जनजातीय आदेश संशोधन विधेयक 1976 के अनुसार गोंड़ की 53 उपजातियां हैं।इनमें माड़िया, मुरिया, मुड़िया, धुरवा, अगरिया तथा राजगोंड प्रमुख हैं। राजगोंड़ उंचे दर्जे के माने जाते हैं।

xksaM+ksa dks izd`fr ls cgqr izse gSA tgka rd laHko gks ldrk gS] ;s izd`fr dh xksn esa fdlh igkM+h ij ;k unh ds fdukjs jguk ilan djrs gSaA izkd`frd thou gh mudk vknZ'k thou gSa xksaM 'kCn rSyxw ds xksaM ls vk;k gS] ftldk vFkZ gS igkM+] vFkkZr igkM+ esa jgus okys xksaM dgyk;sA budh cksyh xksaMh gSa xksaM+h nzfo.k ifjokj dh Hkk"kk gSA eaM+yk ,oa fM+aM+kSjh dh xksaMh NÙkhlx<+h ls rFkk 'kgM+ksy] vuwiiqj] mefj;k dh xksaM+h c?ksyh ls izHkkfor gSAd`f"k budk eq[; is'kk gSA [ksrh ds vykok ouksit ,d= djuk Hkh budk vkenuh dk tfj;k gSA f'kdkj djus dh mudh lgt dq'kyrk vk'p;Ztud gSA xqysy vkSj xksQu ls ;s if{k;ksa dk f'kdkj djrs gSaA cM+s tkuojksa dks ekjus ds fy;s fo"k cq>s rhjksa dk iz;ksx djrs gSaA eNyh dk f'kdkj djuk xksaMksa dk fiz; 'kkSd gSA buds ?kj izk;% feÍh vkSj ?kkl & Qwl ls cus gksrs gSaAist xksaMksa dk fiz; Hkkstu gSA budk lokZf/kd fiz; ist egqvk dh 'kjkc gSA ftls ;s yksx vius ?kj esa gh rS;kj djrs gSaAxksaM leqnk; dks u`R; laxhr izd`fr dh nsu gSA bUgksaus ukpuk]xkuk]ok?k ;a= ctkuk izd`fr ds fofHkUu igyqvksa ls lh[kk gSAbudk djek] 'kSyk & jhuk u`R; eu dks vkYgkfnr dj nsrk gSa eknj] fVedh] ckalqjh]xqnqe ¼flax cktk½ ,oa uxkM+k buds izeq[k ok?k gSaAxksaM efgyk;sa iq#"k ds lkFk da/kk ls da/kk feykdj dke djrh gSaAnhokyksa ij fHkfÙk fp= cukuk xksaM efgykvksa dk fiz; 'kkSd gSAxqnus dks xksaM efgyk;sa LFkkbZ J`axkj ekurh gSaAxksaMksa esa dbZ is'ksoj lewg gSaAtSls vxfj;k] vks>k] c<+bZ] uxkjph] dksbyk rFkk ij/kku ;k pkj.k vkfnA ij/kkuksa ds }kjk gh bl tutkfr dh ohj xkFkk;sa yksd jhfr] feFkd & ikSjkf.kd dFkk;sa]nar dFkk;sa] jkek;.kh] iaMqokuh] xksaM+okuh] nar dFkk;sa ,oa laLd`fr ih<+h nj ih<+h ekSf[kd #i ls izlkfjr gksrs gq;s vkt Hkh lqjf{kr gSA xksaMksa esa ioZ & R;kSgkjksa dk cgqr egRo gSA buesa budh laLd`fr laLdkj rFkk ijaijkvksa dh >yd feyrh gSa xksaM+ leqnk; vkt Hkh vkfne ijaijkuqlkj lHkh ioZ R;kSgkj eukrk pyk vk jgk gSA xksaM+ leqnk; ds yksx jktuhfr esa Hkh vU; vkfnoklh leqnk;ksa dh vis{kk vf/kd lfdz; gSaA bUgsa vius nsoh & nsorkvksa ij vfM+x fo'okl gSaAxksaM+ jktk ,oa mudh xksaM+ lsuk esa Hkh Lora=rk izkfIr ds dk;Z vkSj Hkkouk;sa pje ij FkhaAxksaM+ jktk fczfVª'k lkezkT; ls eqfDr ds fy;s f'kÌr ls tqVs gq;s FksAmlh dky esa ij/kkuksa us lkekftd vkSj jktuSfrd psruk ds yksd xhrksa dh jpuk dh FkhA

## गोंड़ जनजाति में प्रचलित राजनैतिक एवं सामाजिक चेतना के लोक गीत -

इस शीर्षक के अंर्न्तगत मैंने 42 लोकगीतों को रखा है। लोक गीतों की गहरी पड़ताल करने और उनके अंदर सूक्ष्म चेतना तत्वों का विश्लेषण करने के लिये कुछ और उपशीर्षकों में उन्हें विभाजित किया है।

### 1. स्वाधीनता पूर्व की राजनैतिक - सामाजिक चेतना से युक्त लोकगीत -

### 1. मोर रामगढ़ के रानी केर पैंया लागूं रे

सफ्फा संसार मा तोर मान है।
मोर रामगढ़ के रानी केर पैंया लागूं रे।।
रानी आंवंती बहादुर रामगढ़ के शान रे।
मोर रामगढ़ के रानी केर पैंया लागूं रे।।
दान - दक्षिणा बाम्हन पाथैं,
जनता के हितकारी हो रानीं।
जनता केर रखवारी करथें,
जैसन पित - महतारी हो रानी।।
रानी केर दरबार मा का मान है।
मोर रामगढ़ के रानी करे पैंया लांगू रे।।
आवंती बाई के राज मा संगी,
सुख - संपत्ति अपार है।
जनता सुखी गोंड़वाना की चारों ओर बहार है।।
गंगा अर जमना जैसे रानी मोर महान के।
मोर रामगढ़ के रानी केर पैंया लागूं रे।।
वालिंगटन से लोहा लेकर अंग्रेजी सरकार मा।
अंग्रेजन के छक्के छूट गये मैदान में।।
रानी वीरांगनी आवंती बलवान के।

मोर रामगढ़ के रानी केर पैंया लागूं रे।।
घोड़ा चढ़ के लड़ी लड़ाई,
देवहार गढ़ के हार मा।
शत्रू दल मा पड़ी भगाई,
ड़ौंगर अर पहार मा।।
रानी केर हिम्मत अर ज्ञान के।
मोर रामगढ़ के रानी केर पैंया लागूं रे।।
सफ्फा संसार मा तोर मान है।
मोर रामगढ़ के रानी केर पैंया लागूं रे।।
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

## गीतार्थ -

संपूर्ण विश्व में आपका मान - सम्मान है। मेरे रामगढ़ की रानी आपको चरण र्स्पश करता हूं। हे रानी आपके राज्य में ब्राम्हणों को दान दक्षिणा मिलती है। आप प्रजा की हितकारी हो। आप माता - पिता के समान अपनी प्रजा की रखवाली करती हो। रानी के दरबार में बहुत मान सम्मान है। मेरे रामगढ़ की रानी मैं आपके चरण र्स्पश करता हूं। मेरे मित्र रानी आवंती बाई के राज्य में आपार सुख और संपत्ति है। जिससे गोंड़वाना की प्रजा सुखी है। चारों दिशाओं में खुशहाली की बहार है। रानी जी आप गंगा और जमना नदी के समान महान और पवित्र हो। इसलिये मैं आपके चरण र्स्पश करता हूं। आपने अंग्रेजों के सेनापति वाड़िंगटन से युद्व करके युद्व में अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिये थे। हे रानी आप वीरांगना और बलवान हैं। इसलिये मैं आपके चरण र्स्पश करता हूं। आपने देवहार गढ़ के मैदान में घोड़े पर सवार होकर युद्व किया, जिससे शत्रुदल के सैनिक भागकर जंगलों और पहाड़ों में छुप गये। मेरे रामगढ़ की रानी आपकी हिम्मत और ज्ञान के लिये आपके चरण र्स्पश करता हूं। संपूर्ण विश्व में आपका मान सम्मान है। मेरे रामगढ़ की रानी आपके चरण र्स्पश करता हूं।

यह लोकगीत स्वाधीनता के पूर्व की परिस्थितियों और घटनाओं पर केंद्रित है। रानी आवंती बाई ने अंग्रेज संनापति वैलिंगटन के साथ युद्व किया और अपनी स्वतंत्रता के लिये जान की बाजी तक लगा दी । ऐसी वीरांगनाओं के प्रति लोक अपनी श्रद्वा अर्पित करना नहीं भूलता।

**संकलनः ठाकुर धोकल सिंह भैंसवाही**

**अनुवाद - डॉ. . विजय चौरसिया**

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

## 2. दुर्गावती के राज मा खुशी के जीना रे

ओ हो हाय रे ,
खुशी के जीना आर।
दुर्गावती के राज मा भैया
खुशी के जीना रे।।
खूब पकै कोदों कुटकी ,
खूबई पकै धान।
दूर - दूर से पहुना आवैं
सबके होवै मान।।
दुर्गावती के राज मा भैया
खुशी के जीना रे.......
न कानो से लेना देना,
ना कानो से रार।
ओ हो हाय रे
खुशी के जीना यार।।
दुर्गावती के राज मा
भैया खुशी के जीना रे....
रानी दुर्गावती के हाथ मा
भैया अईसा जादू है ना।
माटी के छूतई भैया होत हय,
पल मा चांदी सोना।।
ओ हो हाय रे ,
खुशी के जीना आर।
दुर्गावती के राज मा
भैया खुशी के जीना रे।।

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ -**

रानी दुर्गावती के राज्य में गोंड़वाना की प्रजा प्रसन्नता से अपना जीवन यापन कर रही है। कोदों , कुटकी और धान की फसल चारों ओर पक कर तैयार हो गयी हैं । आपके राज्य

में दूर - दूर से मेहमान आते हैं। सभी को मान सम्मान मिल रहा है। हे भाई रानी दुर्गावती के राज्य में सभी प्राणी खुशी से जीवन यापन कर रहे हैं। रानी दुर्गावती के हाथ में ऐसा जादू है कि मिट्टी को छूते ही वह पल भर में सोना - चांदी का हो जाता है। हे भाई रानी दुर्गावती के राज्य में पूरी प्रजा प्रसन्नता से जीवन यापन कर रही है।

इस लोक गीत में गौंड़ रानी दुर्गावती के शासन काल में समाज की सम्पन्नता और धन - धान्य की प्रचुरता को महत्व दिया गया है। यह लोक में व्यवस्थित सामाजिक राजनैतिक व्यवस्था के प्रति जागरुकता का संकेत भी है। अरणय संस्कृति से उद्भूत गोंड़ लोक प्रशासनिक और सामाजिक सुव्यवस्था का पक्षधर है।

**संकलनः ठाकुर धोकल सिंह भैंसवाही**

**अनुवाद - डॉ. . विजय चौरसिया**

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

## 3. गढ़ मंड़ला की रानी दुर्गावती

रानी दुर्गावती बहादुर गढ़ मंड़ला के शान
जबलपुर गढ़ मंड़ला मा तोर मान है।
जय दुर्गा माता तोला मैं माथ नवाऊं रे।।
रानी दुर्गावती बहादुर गढ़ मंड़ला के शान के
मोर गढ़ मंड़ला के रानी के पैंया लागूं रे।।
दान दक्षिण बामन पाथैं
जनता के हितकारी हो दुर्गा...।
जनता के रखवारी करथै
जैसे पित महतारी हो दुर्गा।।
रानी के दरबार मा का मान है।
मोर गढ़ मंड़ला के रानी के पैया लागूं रे.....
शालिवान के टूरी ओखर ड़ौका दलपत शाह रे।
संग्राम सिंह के बहू वा गोंड़न के शान रे।।
मोर गढ़ मंड़ला के रानी के पैंया लागूं रे ...
दुर्गावती के राज मा संगी सुख संपत्ति अपार है।
जनता सुखी गोंड़वाना की चारों ओर बहार है।।
गंगा अर जमना ऐसे रानी मोर महान के ।
सुख - संपत्ति अपार है।
जनता सुखी गोंड़वाना की चारों ओर बहार है।।
गंगा अर जमना जैसे रानी मोर महान के।
मोर रामगढ़ के रानी केर पैंया लागूं रे।।
वालिंगटन से लोहा लेकर अंग्रेजी सरकार मा।
अंग्रेजन के छक्के छूट गये मैदान में।।
रानी वीरांगनी आवंती बलवान के।

मोर रामगढ़ के रानी केर पैंया लागूं रे।।
घोड़ा चढ़ के लड़ी लड़ाई,
देवहार गढ़ के हार मा।
शत्रू दल मा पड़ी भगाई,
ड़ौंगर अर पहार मा।।
रानी केर हिम्मत अर ज्ञान के।
मोर रामगढ़ के रानी केर पैंया लागूं रे।।
सफ्फा संसार मा तोर मान है।
मोर रामगढ़ के रानी केर पैंया लागूं रे।।

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थ -

संपूर्ण विश्व में आपका मान - सम्मान है। मेरे रामगढ़ की रानी आपको चरण र्स्पश करता हूं। हे रानी आपके राज्य में ब्राम्हणों को दान दक्षिणा मिलती है। आप प्रजा की हितकारी हो। आप माता - पिता के समान अपनी प्रजा की रखवाली करती हो। रानी के दरबार में बहुत मान सम्मान है। मेरे रामगढ़ की रानी मैं आपके चरण र्स्पश करता हूं। मेरे मित्र रानी आवंती बाई के राज्य में आपार सुख और संपत्ति है। जिससे गोंड़वाना की प्रजा सुखी है। चारों दिशाओं में खुशहाली की बहार है। रानी जी आप गंगा और जमना नदी के समान महान और पवित्र हो। इसलिये मैं आपके चरण र्स्पश करता हूं। आपने अंग्रेजों के सेनापति वाड़िंगटन से युद्व करके युद्व में अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिये थे। हे रानी आप वीरांगना और बलवान हैं। इसलिये मैं आपके चरण र्स्पश करता हूं। आपने देवहार गढ़ के मैदान में घोड़े पर सवार होकर युद्व किया, जिससे शत्रुदल के सैनिक भागकर जंगलों और पहाड़ों में छुप गये। मेरे रामगढ़ की रानी आपकी हिम्मत और ज्ञान के लिये आपके चरण र्स्पश करता हूं। संपूर्ण विश्व में आपका मान सम्मान है। मेरे रामगढ़ की रानी आपके चरण र्स्पश करता हूं।

इस लोकगीत में भी रानी दुर्गावती की वीरता और अपने सभी मंत्री की रक्षा के लिये प्रणपण से युद्व करने की भावना का चित्र प्रस्तुत किया गया है। लोक ने रानी की आन - बान और शान के प्रति आस्था अभिव्यक्त की है।

**संकलनः ठाकुर धोकल सिंह भैंसवाही**

**अनुवाद - डॉ. . विजय चौरसिया**

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

## 4. खूब लड़ी दुर्गावती रानी

गज मस्तक असवार लड़ी दुर्गावती रानी। टेक ।

दुर्गावती श्री दुर्गा का रुप धर ,
किये समर क्षत्राणी।
गोंड़ वंश दलपत शाह राजा,जिनकी थी महरानी।।
खूब लड़ी दुर्गावती रानी।1।
वीर सिरोमणी दलपत की रानी,
वीर नारायण पुत्र लसानी।
सात बार मुगलों को मारी,
महासती महरानी।।
खूब लड़ी दुर्गावती रानी । 2।
गढ़ा जबलपुर कटरा के रण में,
नैनन विध गये तीर कमानी।
उठा कटार सीना मा गारी,
र्स्वगवास महरानी।।
खूब लड़ी दुर्गावती रानी।3।
नाम अमर है तेरो जग में,
देव अशीश भवानी।
गाय रामसिंह तेरी महिमा,
फिर से आओ भवानी।।
खूब लड़ी दुर्गावती रानी।4।
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ -**

वीरांगना रानी दुर्गावती ने दुर्गा का रुप धर हाथी पर सवार होकर युद्व किया। रानी दुर्गावती गोंड़ वंश के राजा दलपत शाह की पत्नि थी। रानी ने मुगलों से भयानक युद्व किया। गोंड़ राजा दलपत शाह की पत्नि रानी दुर्गावती का एक पुत्र वीर नारायण था। रानी दुर्गावती ने सात बार मुगलों की सेना को पराजित किया। रानी ने जबलपुर के गढ़ा ग्राम के कटरा में युद्व किया। युद्व में दुश्मनों का एक तीर आकर रानी की आंख में लग गया। रानी ने अपनी कटार निकालकर अपने सीने में घुसेड़ लिया। रानी दुर्गावती आपका नाम सारे संसार में अमर रहेगा। आपको देवताओं का आशीष था। रामसिंह आपकी महिमा गा रहा हैं । हे रानी आप एक बार पुनः भारत भूमि पर अवतार लें।

इस लोक गीत में लोक कवि ने गौंड़ रानी दुर्गावती की वीरता का गुणगान किया

**संकलनः ठाकुर धोकल सिंह भैंसवाही**

**अनुवाद - डॉ. . विजय चौरसिया**

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

## 5. दलपत को चाहे दुर्गावती महरानी

स्वयंबर दलपत को चाहे,दुर्गावती महरानी।टेक।
शिवपाल देव की वो कन्या,अधिक रुप की खानी।।

दलपत को चाहे दुर्गावती महरानी।1।
गोंड़ वीर दलपत सिंह राजा,गढ़ा मंड़ला राजधानी।
श्रेष्ठ पुरुष प्रतापी नर थे,ये दुर्गावती ने पहचाना।।
दलपत को चाहे दुर्गावती महरानी।2।
राजपूत की मरयादा का ,कन्या पर लसानी।
क्षत्री वीर दलपत सा राजा ,ये दुर्गा ने पहचानी।।
दलपत को चाहे दुर्गावती महरानी।3।
कुल हीन समझकर चंदेलों ने ,युद्व सुर से ठानी।
दलपत शाह ने लिखकर भेजा,देखें हम कैसा है पानी।।
दलपत को चाहे दुर्गावती महरानी।4।
बिन ब्याहे हम न छोड़ैं,आगू होय भवानी।
कथन राम सिंह गोंड़ क्षत्री,,खेंचा तलवार में पानी ।।
दलपत को चाहे दुर्गावती महरानी।5।

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ -**

राजा शिवपाल देव की कन्या रानी दुर्गावती का विवाह राजा दलपत शाह के साथ हुआ था। रानी दुर्गावती अत्यंत सुंदर युवती थी। राजा दलपत शाह अपनी रानी दुर्गावती से अत्यंत प्रेम करते थे। राजा दलपत शाह श्रेष्ठ एवं प्रतापी राजा थे। उन्होंने रानी दुर्गावती की वीरता को पहचाना। रानी ने राजपूतों की मर्यादा निभाई । राजा दलपत शाह ने रानी की वीरता को पहचाना।

गोंड़ राजा दलपतशाह और रानी दुर्गावती के अनन्य प्रेम के प्रति इस लोक गीत में आदर व्यक्त किया गया है। गोंड़ वंश से इतर वंश की होते हुये भी रानी ने दलपत शाह की पत्नी बनना स्वीकारा , यह तथ्य गोंड़ जनजातीय लोकगीत में अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृदि का प्रतीक बनकर आया है।

संकलन - रामसिंह गोंड़ अनुवाद - ड़ॉ.विजय चौरसिया

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

## 6. गोंड़ ध्वजा फहराया

गढ़ सिंगौर किले के ऊपर,गोंड़ ध्वजा फहराया।टेक।
दिया चुनौती मुगल सेना को,सगा चांद डुबाया।
गोंड़ ध्वजा फहराया।1।
विजय वाहनी तलवार दाहिनी,दलपत वीर कहलाया।
कोल भील की भारी सेना ,मोहवे गद कराया।।
गोंड़ ध्वजा फहराया।2।
दुर्गावती को वर के लाया,अर्नाय वीर कहलाया।
धर्म अरिया पुत्री दुर्गा,सब राज धरम कहलाया।।
गोंड़ ध्वजा फहराया।3।
घनघोर युद्व मुगलों से कीना ,दुर्गा के श्रृण चुकाया।
समा भूमि में प्राण त्यागकर,वीर गति को पाया।।

गोंड़ ध्वजा फहराया।4।

सात बासर अकबर की सेना,दुर्गा ने खेद भगाया।
कथन रामसिंह मार कटारी,जग इतिहास बनाया।।
गोंड़ ध्वजा फहराया।5।

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ -**

सिंगौरगढ़ के किले के ऊपर गोंड़ राजाओं के ध्वज की पताका लहराने लगी। गोंड़ राजाओं ने मुगल सेना को ऐसी चुनौती दी , जिससे उनके चंद्रमा का अस्त हो गया। राजा दलपत शाह ने दाहिने हाथ में तलवार लेकर विजय प्राप्त की थी। राजा दलपत शाह की सेना में कोल एवं भील सैनिकों की बहुत बड़ी सेना थी। राजा दलपत शाह महोबा की रानी दुर्गावती को विवाह कर लाये। राजा - रानी ने राज धर्म को निभाया। रानी ने मुगल सेना से घनघोर युद्व किया। रानी ने युद्व भूमि में अपने प्राणों को त्याग कर वीर गति को पाया। गोंड़ राजाओं ने अपने झंड़े फहराये। रानी दुर्गावती ने सात बार अकबर की सेना को खदेड़ दिया। रामसिंह का कथन है कि रानी ने अपने सीने में कटार मार कर संपूर्ण संसार में इतिहास बना लिया।

इस लोक गीत में रानी दुर्गावती की वीरता और मुगलों की सेना से युद्व करते हुये रानी का वीरगति पाना आदर योग्य माना गया है। इस गीत में हम इस सामाजिक चेतना के दर्शन करते हैं। जो देश की रक्षा के लिये अपनी शहादत देने से उत्पन्न होती है। राजनैतिक चेतना भी इस गीत में विघमान है। जो स्वाधीनता और देश रक्षा को जीवन से भी ऊपर मानती है।

संकलन - रामसिंह गोंड़ अनुवाद - ड़ॉ.विजय चौरसिया

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

## 7. लड़ाई मा भैया भारत सरकार

गाइले - गाइले गांधी महात्मा ।
भारत सरकार गा लड़ाई मा ।
गोला रे गोला चांदी के गोला।
ऐसी गोली तुम तो मारो।
नई बचै अंग्रेज के चोला लड़ाई मा।
लड़ाई मा भैया भारत सरकार
गा लड़ाई मा।
गईला बजार रे लईला धोती ।
महात्मा तो लड़त है।
भारत के होती , गा लड़ाई मा ।
लड़ाई मा भैया भारत सरकार
गा लड़ाई मा।

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

## गीतार्थ -

महात्मा गांधी हमारी आजादी के लिये लड़ रहे हैं। उनके गुणें का बखान नहीं किया जा सकता। इसलिये जो आजादी का नारा उन्होंने दिया है, थोड़ी देर गा लैं और इस लड़ाई में कूंद पड़ें। यह पूरे भारत की लड़ाई है और अंग्रेजी सरकार के खिलाफ यह लड़ाई लड़ी जा रही है। हे चंद्रमा तुम आसमान से ऐसी गोलियां चलाओ, जिससे अंग्रेजों का यह गुलामी का चोला समाप्त हो जावे। बाजार में जाकर हमारे लिये एक धोती खरीदना ही पर्याप्त है। क्योंकी महात्मा गांधी केवल धोती पहनकर आजादी की लड़ाई लड़ रहे हैं। हम भी उन्हीं का अनुसरण करेंगे और भारत माता को आजाद करायेंगे।

भारतीय स्वतंत्रता के संर्घष के प्रतीक महात्मा गांधी जी का नायक रुप में चित्रण करते हुये यह लोक गीत अंग्रेज साम्राज्य से भिड़ने और उन्हें देश से निष्काशित कर देने की संकल्प - भावना की अभिव्यक्ति करता है। राष्ट्रीय आंदोलन का प्रभाव लोक गीतों ने भी ग्रहण किया और उसे अपना स्वर दिया।

संकलन - रामसिंह गोंड़ अनुवाद - ड़ॉ.विजय चौरसिया

0ददददधृदध्0

## 8. अंगरेजन ला मार भगावो

हम भारत के गोंड़ - बैगा, आजादी ख्यार।
अंगरेजन ला मार भगावो ,भारत ले रे।
हम भैया छाती अड़ावो,हम तो खून बहावो,
अंगरेजन ला मार भगावो भारत ले रे।
हम भारत के भाई बहिनें मिलके करवो रक्षा।
अंगरेजन ला मार भगावो ,करवो अपना रक्षा,
अंगरेजन ला मार भगावो भारत ले रे।
हम भारत के गोंड़ - बैगा ,कर देवो जान निछावर।
अंगरेजन ला मार भगावो भारत ले रे।

0दददधृदददधृदददधृदददध्0

## गीतार्थ -

हम भारत के रहने वाले आदिवासी गोंड़ और बैगा हैं। हममें भी आजाद रहने की लालसा है । इसलिये चाहे हमें अपनी छाती पर गोलियां झेलना पड़े, खून बहाना पड़े, हम सब भाई बहन भारत की रक्षा करेंगे। हम सभी गोंड़ बैगा भाईयों से निवेदन करते हैं कि अपने प्राण देश पर निछावर करने का अवसर आ गया है। एकता और साहस से अंग्रेजों को भगाना आज सबसे बड़ी आवश्यकता है और इसके लिये कोई भी गोंड़ बैगा पीछे नहीं हटेगा।

इस लोक गीत में स्वाधीनता के प्रति प्राणोत्सर्ग की भावना के दर्शन होते हैं। गोंड़ और बैगा जनजातियां भी अंग्रेजों से संर्घष करने की मानसिक तैयारी में हैं।

संकलन एवं अनुवाद -डॉ. महेश चंद्र शांड़िल्य

0ददददधृध्0

## 9. हे रे भारत लड़नी को जाय

हे रे भारत लड़नी को जाय ।
सन् पैतालिस तेरह तारिख सावन मा रे।
छुरी ले,तलवार ले अर लाठी ले कुल्हाड़ी।
अंगरेजन ला मार भगावो ,अर भारत ला बचावो।
रायफल की गोली धरे ,पांच फेर तक मारे।
अंगरेजन ला मार गिरावो मिट्टी मा मिलावो।
हाथ मा तो खाण्ड़ा लये, सीस उजाला काटे।
खून की तो धार बहावे ,भारत ला बचावे।

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ -**

आजादी की लड़ाई सबको लड़ना है। सन उन्नीस सौ पैतालिस की तेरह तारीख को कूच करना है। सावन का महिना है। सबको छुरी तलवार जिसको लाठी मिले कुल्हाड़ी मिले, उसे लेकर चलना है। किसी भी हालत में अंग्रेजों को भगाना है और भारत को बचाना है। अब हमारे पास पांच गोलियां चलाने वाली रायफलें हैं। हम अंग्रेजों को मार कर मिट्टी में मिला देंगे। हाथों में तलवार लेकर दुशमनों के सीस काट देंगे।

इस लोक गीत में अंग्रेजों का विनाश कर भारत को स्वतंत्र कराने का संकल्प प्रस्तुत किया गया है।

संकलन एवं अनुवाद - डॉ. महेश चंद्र शांडिल्य

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

## 10. भारत भैया अंगरेजन से करो लड़ाई

कुन धरे टंगिया, कुन धरे बलुआ।
कुन धरे तीर गुलेला।
मर्द तो धरे तोर अंगिया रे टंगिया।
नारी धरिन तोर फरसा।
जंगल में रहन वारे बैगा रे भैया।
वा धरे तीर गुलेला।
गोंड़ भैया धरे तोरे लपकी बंदुकिया।
ओ मै भरे जहर के गोलियां।
भारत भैया अंगरेजन से करो लड़ाई

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ -** हे मित्र अब हमको अग्रेजों से लड़ाई लड़नी है। कौन कुल्हाड़ी, बल्लम और तीर ,गुलेल चलायेगा। इसका निर्णय हमें पहले कर लेना चाहिये। आजादी की लड़ाई में पुरुष अपने कंधों पर कुल्हाड़ी रखेंगे। महिलायें हाथ में फरसा लेकर चलेंगी। घने जंगलों में रहने वाले बैगा भाई भी इस युद्व में तीर गुलेल चलाकर हमारा साथ देंगे। सभी गोंड़ भाई नई और तेज मार वाली बंदूक रखेंगे। जिनसे कोई भी अंग्रेज बच नहीं पायेगा। हमारी बंदूकों में ऐसी जहरीली गोलियां

भरी हैं। जिनके लगने से कोई भी दुश्मन बच नहीं सकता।

इस लोकगीत में आदिवासियो द्वारा अपने - अपने पारंपारिक अस्त्रों से ही अंग्रेजों की सेना से युद्व करने और देश को आजाद कराने का भाव प्रस्तुत हुआ है। पारंपारिक अस्त्र - शस्त्र यघपि अंग्रेजों के आधुनिक अस्त्र - शस्त्रों के सामने नगणय से हैं किंतु स्वाधीनता की उत्कट - चेतना उनका सामना करने को तत्पर है।

संकलन एवं अनुवाद - डॉ. महेश चंद्र शांड़िल्य

## 11. वीर जवाहर के तुम साथी

वीर जवाहर के तुम साथी,
अब सब्बो झन बन जाओ
जोश जवानी के तुम लेके,
युद्व नगाड़ा बजवाओ
गांव - गांव कांग्रेस कमेटी,
अऊ मेंम्बर सब बनवाओ
सब किसान अऊ मजदूरन ला,
अक भेंट मा करवावय
अपढ़ किसान हवंय ड़रपोकना,
तिनखर ड़र ला भगवावो
गांव - गांव मा भाषण देके,
अक - अक बातन ला समझावो
निर्भय, निड़र बनवावो सबला,
हिम्मत धीरज धरवावो
मरद जनम ला पाके जवानी ,
नाव कछू तो कर जावो
दाई , ददा अर बहनिन बेटीन,
के इज्जत ला बचवावो
वीर जवाहर लाल बहादुर ,
असले केसरी ला पाके
जेखर बरोबर ये दुनिया के
योद्वा सूर नहीं अांके,
छाती दहल गईस बैरिन के
गांव - गांव जब सभा करिन
लाल बहादुर मोती लाल के
दुश्मन ला ललकार मारिस
हवाई मा चढ़ी जौन समै
भारत भर के दौरा करन लागिस
विलायत मा तार पहुंच गैस ,
लनदन मा हड़कंप मचिस

जमींदार , पूंजीपति , राजा,
मन के धुर्रा उड़न लागिस
हिम्मत टूट गयिस बैरिन की
धक - धक छाती करन लागिस
अमृतसर, लाहौर, पेशावर,
लुधियाना वर चलिस विमान
दिल्ली , काशी, गया, बनारस,
जयपुर, मथुरा, राजस्थान,
कानपूर , मैसूर, बड़ौदा, अवध,
जोधपुर चले गयीस
शहर लखनऊ होत आगरा
गोरखपुर के राह लईस
राय बरेली, दरभंगा,
भागलपुर , पटना को जाना
पन्ना , रीवां अर प्रतापगढ़
चम्पारन नाभा आना
रामपुर मुंगेर, अलीपुर
अलवर , कुरुखेत्र, रतलाम,
कलकत्ता , बंबई, कराची,
विशखापटम किये विश्राम
पुरी अटके अर कटक विजयपुर
होत भरतपुर पहुंच गये
नासिक, हरीद्वार, रामेश्वरम,
काश्मीर , श्री नगर गये
शहर अहमदाबाद, अलीगढ़,
वर्धा, भंड़ारा मुकाम
कर्नाटक, गढ़वाल, टेहरी,
नागपुर ,मद्रास पयान
सोला पुर, चटगांव, जौनपुर,
बीजापुर, सूरत आये
सागर, दमोह, जबलपुर, मंड़ला,
खंड़वा, छिंदवाड़ा धाये
गुजरात,बराढ़, पेशवा, लंका,
अर आसाम को पार किये
चल बिहार, बंगला, उड़ीसा
फिर पंजाब निवास किये
दुरग,रायपुर अर बिलासपुर,
महासमुंद धमतरी गये

चांपा,कठघोरा,संजारी, भाटापारा पहुंच गये
सिमगा, नेवरा, तिलदा, हथबंध,
बेमतरा, मुंगेली ले
रोईरा माचा भाटा तरेंगा
बलौदा , पललारी ले
जहां गईस तहां वीर जवाहर
राष्ट्र पताका फहराईस
सोये हुये बहादुर वीरन ला
भारत के जगवाईस
दुश्मन मन ला जहां भिड़ाईस
झुमट उन्हें उनला धमकिन
बड़े - बड़े बुलवईया मनके
छक्का पंजा छूटन लागिस
देश धातिया देश कलंकी
मन के किसमत फूटै लागिस
बनिहार किसान गरीबन के
लुटवैयन के बल घटै लागिन
कांगरेस मेंम्बर सब जीतीन
देश धतिया मन हारिन
तब पापी मन बैर बांध के
रैयत ला पीटिन मारिन।

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

## गीतार्थ -

इस लोक गीत में कवि ने जवाहर लाल नेहरु जी के राजनीतिक मंच पर पदार्पण का स्वागत करते हुये सभी लोगों को आहनान किया हैं कि वे स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु नेहरु जी का साथ दें। नेहरु जी ने संपूर्ण देश का भ्रमण करके गांव - गांव में कांग्रेस पार्टी का गठन करवाया। उनकी निड़रता और बहादुरी से अंग्रेजों की छाती दहल उठी। जिससे लंदन में हड़कंप मच गया। अंग्रेजों के सहयोगी जमींदार, पुंजीपति और राजाओं में भी घबराहट फैल गई। इसके आगे कवि ने भारत के उन नगरों का जिक्र किया है। जहां - जहां नेहरु जी ने स्वतंत्रता आंदोलन के प्रचार - प्रसार हेतु यात्रायें की। जहां - जहां पंड़ित जवाहर लाल नेहरु गये। वहां - वहां उन्होंने सोये हुये वीरों को जगाया और राष्ट्र पताका फहराई। देशघाती, कलंकित लोगों के छक्के छूटने लगे और वायसराय गर्वनर जनरल की हिम्मत पस्त होने लगी।

इस लोक गीत में भारतीय स्वाधीनता के नायक जवाहर लाल नेहरु और उनके स्तर के ही अन्य राष्टीय नेताओं के द्वारा स्वाधीनता के पक्ष में किये गये जागरुकता तथा संर्घष के कायरें का विवरण है।इसके साथ ही आदिवासी साथियों से आव्हान किया गया है कि उनके साथी एवं अनुगामी बनकर उनके बताये रास्ते पर चलें । आदिवासी समुदाय पीछे नहीं रहना चाहता , वह भी राष्टीय अभियानों और आंदोलनों में बराबरी के साथ शिरकत करना चाहता है।

संकलन एवं अनुवादः श्री गिरधर दास वैष्णव
( साभार - सुराज म.प्र. आदिवासी लोक कला परिषद)

0ददददध्दध्0

## 12. पलाड़ी पाल तड़ा रेयो न अना

पालाड़ी पाल तड़ा रेयो ना अना।।
इमारो बैगा दाकी रो बेटा ।
इमारो बैगा दाकी रो।।
गांधी ना मदद ते दाका रो दाई।
गांधी न देशो ते दाका रो दाई।।
चुड़ो सो सिदो नोरेनी दाई।
गांधी न देशो ते दाका रो।।
इमारो बैगा दाकी रो बेटा।
इमारो बैगा दाकी रो।।
नेहरु ना देशो ते दाका रो दाई।
नेहरु ना देशो तो दाका।।
इमारो बैगा दाकी रो बेटा।
इमारो बैगा दाकी रो।।
गांधी ना देशो ते दाका रो दाई।
इमारो बैगा दाकी रो बेटा।
बेनायो मदद ते दाकी रो बेटा ।
चुड़ो सिदो नोरेनी दायो।।
विष्णू ना मदद ते दाका रो दाई।
घोड़ा ड़ौंगरी दाका रो दाई।।
पालाड़ी पाल तड़ा रेयो न अना।
पालाड़ी पाल तड़ा रेयो न अना।।
गंजन ना मदद ते दाका रो दाई।
बंजारी ढ़ाल दाका रो दाई।।

0ददददध्दददध्ध्0

**गीतार्थ -**

मां अपने बेटे से कहती है - हे बेटा तुझे कहां जाना है। हे मां मुझे आजादी की लड़ाई में गांधी जी की मदद करने के लिये जाना है। तुम मुझे सीधा (आटा,नमक,दाल,मिर्च )े बांध दो। हे बेटा तुझे कहां जाना है। हे मां मुझे आजादी की लड़ाई में नेहरु जी की मदद करने के लिये जाना है। इसी प्रकार पुत्र अपनी मां से स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की मदद करने के लिये कहता है।

हे मां मुझे सरदार विष्णू सिंह ( गोंड़ जनजाति के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, ग्राम घोड़ा ड़ौंगरी, जिला बैतूल के निवासी ) की मदद के लिये जाना है। हे मां मुझे गंजन सिंह ( कोरकू

जनजाति के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी ग्राम बंजारी ढ़ाल, जिला बैतूल के निवासी ) की मददके लिये जाना है । इसलिये तुम मुझे सीधा बांध दो।

यह लोक गीत गोंड़ी फारसी भाषा में रचा गया है। इस लोक गीत में स्वाधीनता संग्राम से प्रभावित एक बालक अपनी माता से रास्ते के लिये भोजन बांधने के लिये कह रहा है। क्योंकी उसे स्वाधीनता के वीर नेताओं और बलिदानियों का अनुगामी बनकर उनकी सहायता के लिये जाना है। राजनैतिक चेतना को अभिव्यक्त करता लोक गीत का यह रुप अत्यंत मार्मिक है।

संकलन एवं अनुवाद - डॉ. महेश चंद्र शांड़िल्य

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

## 2.

## स्वाधीनता पश्चात की राजनैतिक - सामाजिक चेतना से युक्त गोंड़ जनजाति के लोकगीत -

### 13. अपन भारत ला सुंदर बनावोगा

बनावो बनावो बनावोगा,
अपन भारत ला सुंदर बनावोगा
खोर गलिन मा चाकर करके,
सुंदर सड़क बनावोगा
गांव - गांव बिजली पहुंचा के,
सुंदर शहर बनावोगा
अपन भारत ला सुंदर बनावो।।
अपन भारत।।
आसपास के भेद मिटा के,
आपस मा प्रेम बढ़ावोगा।
ऊंच नीच केर भेद मिटा के,
पुरा मा प्रेम बढ़वोगा ।।
सुख शांती की रचना करके
रामराज लावोगा।
अपन भारत ला सुंदर बनावोगा।।
गांव - गांव मा आंगन बाड़ी
बच्चन ला खूब पढ़ावोगा।
पढ़ा लिखा के इनखर भाई
गांधी जवाहर बनावोगा।
अपन भारत ला सुंदर बनोवोगा।।
बनावो - बनावो - बनावोगा
अपन भारत ला सुंदर बनावो।।

0ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थ -

अपने भारत को सुंदर बनायेंगे। रास्ते पगड़ंड़ियों में काम करके रास्ते सड़क बनायेंगे। गांव - गांव में बिजली पहुंचाकर अपने शहरों को सुंदर बनायेंगे। आस -पास के भेद मिटाकर आपस में भाईचारा निभायेंगे। ऊंच - नीच के भेद मिटाकर आपस में प्यार बढ़ायेंगे। अपने गांव में सुख शांती की रचना करके रामराज्य लायेंगे और अपने भारत को सुंदर बनायेंगे। गांव - गांव में आंगन बाड़ी खोलकर अपने बच्चों को खूब पढ़ायेंगे। अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा देकर उन्हें महात्मा गांधी और नेहरु जी के समान महान बनायेंगे।

इस लोकगीत में राष्ट्र के ढ़ांचागत विकास, भेदभाव और ऊंच - नीच की भावना का निषेध, शांति - भाव, साक्षरता,आंगनबाड़ी,जैसे कार्यक्रमों के जरीये प्रगति की कामना की गई है।

लोकगीतों में इस तरह की आधुनिकता के दर्शन असल में लोकगीतों के भाव जगत् में एक नवीनता के सूचक हैं। नये विचारों और नयी धारणाओं ने लोक को भी प्रभावित किया है। अर्थात लोक जड़ नहीं है। उसमें प्रगतिशीलता की अन्र्तधारा निहत है।

संकलनः ठाकुर धोकल सिंह भैंसवाही

अनुवाद - डॉ. . विजय चौरसिया

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

## 14. लहर - लहर लहराये तिरंगा झंड़ा रे

अहा हे हाय भैया तिरंगा झंड़ा आर।
लहर - लहर लहराये तिरंगा झंड़ा रे।।
तीन रंग केर बने तिरंगा, केशर, हरा ,सफेद।
भैया केशर हरा सफेद...........
देश - देश मा मान होथै,नहीं रहीस कोई भेद।।
तिरंगा झंड़ा रे लहर - लहर लहराये तिरंगा झंड़ा रे....
सत्य अहिंसा पालन करके गांधी जी महराज।
बेड़ी काटी देश की अर भगीस बिदेशी राज।।
तिरंगा झंड़ा रे, लहर - लहर लहराये तिरंगा झंड़ा रे...
आजादी केर लड़ाई मां कूंदे मां के लाल।
अंग्रेजी सेना रे भैया हय गयसे बेहाल।।
हाय रे तिरंगा झंड़ा आर,।
लहर - लहर लहराये तिरंगा झंड़ा रे।।
आजादी की क्रांती में भैया भये वीर बलिदान।
शिवा,प्रताप,दुर्गावती अर पृथ्वीराज चौहान।।
हाय रे तिरंगा झंड़ा आर ।
लहर - लहराये तिरंगा झंड़ा आर।।

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थ -

हे भाई भारत का राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा लहरा रहा है।हमारे देश का ध्वज केशरिया, हरा और सफेद तीन रंगों का है। हमारे राष्ट्रीय ध्वज का सम्मान विश्व के सभी देशों में होता है।

महात्मा गांधी ने सत्य और अहिंसा के धर्म का पालन करके देश को आजादी दिलाई और अंग्रेजों के विदेशी राज्य को यहां से भगा दिया। आजादी की लड़ाई में देश की माताओं के सपूतों ने युद्व किया। जिससे अंग्रेजों के हाल बेहाल हो गये। इस आजादी की क्रांती में अनेकों वीरों ने अपना बलिदान दिया। वीर शिवाजी , महराणा प्रताप और पृथ्वी राज चौहान जैसे योद्वाओं ने देश को आजादी दिलाई।

इस लोकगीत में तिरंगा झंड़ा के प्रति आस्था और गांधीवाद के सत्य और अहिंसा की अवधारण को विषय बनाया गया है। इसे एक विषेशता के रुप में देखा जा सकता है।कि जो जनजाति आदिम काल से आज तक अरणय जीवन जीते हुये शिकार के माध्यम से भूख का विकल्प खोजता रहा है। वही अहिंसा के गौरव गान में भी पीछे नहीं है।

संकलनः ठाकुर धोकल सिंह भैंसवाही

अनुवाद - डॉ. . विजय चौरसिया

0ददददध्ददददध्0

## 15.भारत का पेड़ आखर भारत में कैसे आया

भारत का पेड़ आखर भारत में कैसे आया। टेक।
श्रद्वा भक्ति जिसकी जड़ है,
उसमें सौराज समाया।
कथा भगवान गीता पढ़के,
बन्दे मंत्र सुनाया।।
भारत में कैसे आया।1।
पेड़ी जिसकी कांग्रेस है,
सूबा बनकर आया।
मुलजिम भारत बना विदेशी,
मुक्ति देने नेहरु आया।।
भारत में कैसे आया।2।
ड़ाली जिसकी समाजवादी,
समाज बनाने आया ।
जिसकी ड़ाली जग में छाई,
जय प्रकाश नारायण कहलाया।।
भारत में कैसे आया।3।
पत्ती जिसकी जनसंघी है,
जिसकी घनी है छाया।
जिसके नीचे सारा भारत
विश्राम करने को आया।।
भारत में कैसे आया।4।

बने स्वतंत्र अवसर पाकर,
फूल गुलाबी आया ।
जिसकी खुशबू जग में छाई,
निकल पेड़ से आया।।
भारत में कैसे आया।5।
फल के अंदर भरा सोसलिस्ट,
जिसे जगत ने खाया।
देश के अंदर बुरी गरीबी,
उसे मिटाने आया।।
भारत में कैसे आया।6।
बीज के अंदर राम राज है,
परंपरा से आया।
कथन राम सिंह जगत गुरु हैं,
धर्मराज है आया।।
भारत में कैसे आया।7।
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ-**

भारत का पेड़ भारत में कैसे आया। भारत रुपी वृक्ष में श्रद्वा और भक्ति की जड़ है। जिसमें स्वराज समाया हुआ है। भगवान ने गीता पढ़कर बंदे मातरम का मंत्र सुनाया। इस भारत रुपी वृक्ष में कांग्रेस उसका तना है। भारत परतंत्र हो गया। भारत देश पर विदेशियों ने राज्य कर लिया। पंड़ित जवाहर लाल नेहरु भारत को परतंत्रता से मुक्ति दिलाने आये। समाजवादी पार्टी समाज बनाने आया। जिसने इस भारत रुपी वृक्ष की साखायें संपूर्ण संसार में पहुंचाई। वे जय प्रकाश नारायण कहलाये। भारत रुपी वृक्ष के पत्ते जनसंघ हैं।उन पत्तों की घनी छाया में भारत विश्राम कर रहा है। देश स्वतंत्र हो गया भारत रुपी वृक्ष से गलाब का फूल खिला। जिसकी खुशबू संपूर्ण विश्व में फैल गई। इस वृक्ष के फल के अंदर सोसलिस्ट पार्टी है जो देश की गरीबी मिटाने आगे आई। इस फल के बीज के अंद रामराज्य है। जो हमारी परंपरा से आया हैं रामसिंह का कथन है कि विश्व के गुरु धर्मराज आये हैं। भारत का पेड़ भारत में कैसे आया।

यह लोकगीत आधुनिक राजनीतिक विचारधाराओं को ' पेड ़' के प्रतीक के द्वाराप्रस्तुत करता है स्वराज की भावना के बीज गीता के ग्रंथ से आये और कांग्रेस, समाजवाद,जयपकाश नारायण की संपूर्ण क्रांति , नेहरु का नये भारत का सपना , जनसंघ की विसुद्व राजनैतिक - व्यवस्थाओं के संकल्प को लोकगीत में अभिव्यक्त किया गया है।

इस लोकगीत को हम समकालीन कविता की राजनैतिक - चेतना के समांतर रखकर भी देख सकते हैं। इस तरह लिखित साहित्य और लोकगीत में भावात्मक - विचारात्मक समानता देखने को मिलती है।

संकलन - रामसिंह गोंड़ ग्राम रंहगी वि.खं.अमरपुर जिला ड़िंड़ौरी
अनुवाद - ड़ॉ.विजय चौरसिया

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

## 16. मोर भारत देश महान

मोर भारत देश महान तोर दिन - दिन होही बखान,
मोर भारत देश महान तोर दिन - दिन होही बखान,
मोर भारत देश महान तोर दिन - दिन होही बखान,
संगवारी सेवा मा दे दो जान मया बांधी लेना,
चलो रे भैया चलो रे संगी सेवा में दे दो जान,
भारत मॉ के पावन भुँईया, मा बहें रे गंगा,जमुना,
काया ला तारै बर तेंहॉ डुबकी लगा ले दोंना जिंहा,
करथन गा इसनान,येही भूमि मा सोना - चांदी,
ऐही मा हवै हीरा ,येही भुईयां मा नरमदा मैया देथे निर्मल नीरा,
बड़े - बड़े कारखाना खुल बने कचहरी थाना,
जन समस्या निर्वारण खातिर होथै आना जाना,सेवा मा बने विधान,
मोर भारत देश महान ऐखर दिन - दिन होही बखान,

0ध्ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थ :

मेरे महान भारत देश आपकी कीर्ति का बखान हमेशा किया जाता रहेगा। मेरे साथी भारत माता की रक्षा करने के लिये अपने प्राणों की बाजी लगा दो। मेरी भारत माता की पावन भूमि में गंगा , यमुना जैसी नदियां हैं। जिसमें स्नान करने से सारे पाप धुल जाते हैं। इसी भारत भूमि में सोना, चोदी , हीरा , जवाहरात का भंड़ार है।इसी भारत भूमि में पतित पावनी नर्मदा मैया भी बहती हैं। नर्मदा मैया निर्मल जल प्रदान करती है।हमारे देश में बड़े - बड़े कारखाने हैं। न्याय के लिये न्यायालय हैं, जहां पर जाकर लोग अपनी समस्यायों का निदान पाते हैं। हमारे देश का संविधान महान है। मेरे प्यारे भारत देश की कीर्ति का बखान हमेशा होते रहेगा।

स्वाधीनता के पश्चात भारत की महानता में भी प्रतिदिन वृद्वि हो रही है। इस लोक गीत में कहा गया है कि उघोग - धंधों, न्यायालय और पुलिस थानों के माध्यम सेएक कुशल व्यवस्था चल रही हैं विधायिका सेवा के क्षेत्रों में सक्रीय हैं इससे निरंतर प्रगति हो रही है।

रचयिताः भगवान सिंह नंदा, ग्राम देवरी वि.खं. अमरपुर जिला ड़िड़ौरी
अनुवादः डॉ. विजय चौरसिया

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

## 17. धन्य - धन्य मोर भारत माता,

धन्य - धन्य मोर भारत माता,

भुईयाँ धन्य ईहाँ के नर - नारी,
अइसन बेटा ला जनम दये तैं
भारत मोर महतारी,
तोर दूध पिये हम दाई बने हैं जबर छाती,
सीना तान के खड़े हवें दाई तोर सेवा खातिर,
लहर - लहर लहरावत रहथे, तोर मया के फुलवारी,
बैरी दुश्मन आये के खातिर, कोशिश करथैं भारी,
सीमा पार में बैठे हवंय बड़े - बड़े जोधारी,
जुगुर - जुगुर बरत रहथे, आजादी के चिनगारी,

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थः**

हे भारत देश आप धन्य हैं।धन्य हो इस भारत भूमि का ,धन्य हो यहां के नर - नारियों का , जिसने वीर युवकों को जन्म दिया। जिन्होंने तुम्हारे आंचल का दूध पिया और आज देश की सीमा पर सीना तान कर खड़े हैं। भारत माता की कृपा दृष्टि से हमारा देश हरा भरा है। देश के दुश्मन हमारे देश में घुसने की कोशिश करते हैं पर सीमा पर खड़े देश के प्रहरी उनको खदेड़ कर भगा देते हैं।हमारे देश की आजादी को बचाये रखने के लिये देश की सीमा पर हमारी सेना सीना तान कर खड़ी है।धन्य हो मेरे भारत देश धन्य हो।

इस लोक गीत में भारत माता के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है कि हम भारत माता का दूध पीकर ही योद्‌वा बने हैं। अब अपने देश की स्वतंत्रता की रक्षा करने का दायित्व हम पर है। हमारी सेना सीमाओं पर डटी हैं। स्वाधीनता पा लेने से कर्तव्य की इति श्री नहीं हो जाती। उसकी निरंतर रक्षा भी करना अनिवार्य है। इस राजनैतिक चेतना को लोक गीत में अभिव्यक्त किया गया है।

रचयिताः भगवान सिंह नंदा, ग्राम देवरी वि.खं. अमरपुर जिला ड़िंड़ौरी

अनुवादः डॉ. विजय चौरसिया

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

## 18. फिर से आजा गांधी भारत मा रे ,

फिर से आजा गांधी भारत मा रे ,
गांधी भारत मा रे हाय गांधी भारत मा रे ,
तैंहा फिर से आजा गांधी भारत मा रे ,
जेल के अंदर सूखी रोटी नमक मिला के खाया,
देश आजाद कराके बापू नाम अमर कराया,
आजादी ला पाये के खातिर भारी आंदोलन चलाया,

मार के ड़ंड़ा अंगरेजन ला,सीमा पार भगाया,
सड़कन - सड़कन खंबा गड़े हैं खंबा के ऊपर तार,
तार - तार से बात करथै या भारत सरकार,
खादी पहरें खादी ओढ़ैं, खादी ला बिछायैं,
अपन हाथ से चरखा चलाय के सब ला ज्ञान बतायैं,
फिर से आजा गांधी भारत मा रे ,
गांधी भारत मा रे हाय गांधी भारत मा रे ,

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :**

हे महात्मा गांधी जी आप भारत में एक बार फिर से आ जाईये। आपने स्वतंत्रता के आंदोलन के समय जेल में रहकर सूखी रोटियों को नमक के साथ मिलाकर खाया। आपने अनेकों कष्ट सहकर इस भारत देश को आजाद कराया। आपका नाम देश में अमर हो गया। हे बापू आपने देश को स्वतंत्र कराने के लिये अनेकों आंदोलन किये। आपने अग्रेजों को ड़ंड़ा मारकर देश की सीमा के बाहर खदेड़ दिया। आज हमारा देश उन्नति कर रहा है। हमारे देश में सड़क के किनारे खंबे लगे हैं। उन खंबों में तार लगे हैं। इन तारों से भारत सरकार बात करती है और पूरे देश का ध्यान रखती है।हमारे देश के लोग खादी के वस्त्रों को पहनते,ओढ़ते और बिछाते हैं। गांधी जी ने अपने हाथ से चरखा चलाकर भारतवासियों को चरखा चलाना सिखा दिया।

इस लोक गीत में गांधी जी की प्रासंगिकता को रेखांकित करते हुये पुनः गांधीवादी विचार धारा और सामाजिक संरचना की जरुरत महसूस की गई है। पश्चिमी - संस्कृति भारत का भविष्य नहीं हो सकती। हमारा विकास गांधी जी की सादगी पूर्ण जीवन शैली में ही छुपा हुआ है। यह गहरी सामाजिक और राजनैतिक चेतना इस लोक गीत की अंर्तधारा है।

रचयिताः भगवान सिंह नंदा, ग्राम देवरी वि.खं. अमरपुर जिला ड़िंड़ौरी

अनुवादः डॉ. विजय चौरसिया

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

## 19.मोर भारत माता तोर सेवा मा आइन दाई,

मोर भारत माता, तोर सेवा मा आइन दाई,
तोर सेवा मा आइन ये दाई, तोर सेवा मा आइन,
तैं दै दे हमला सहारा, ओ तोर सेवा मा आइन,
तोर कोरा मा जनम धरे, हम तोरेच बेटा कहाथन,
तोर दूध ला पियेन हम दाई, पैंया तोर पखारन,
तोर गुन गावन ओ दाई़ , तोर सेवा मा आइन,
बड़े बिहिनया सुवे के उठेंव, तोर पैंया लागन,
सूरज जोत मा करेन आरती ,तोला तिलक लगावन,
महिमा ला तोर बखानन,सोन चिरैया तोला कहथैं,
सुघर है तोर बोली,पंदरा अगस्त छब्बीस जनवरी,

मनाथे तिहार होली,तोर रंग मा रंगायन,

0ҩҩҩҩ ҩҩҩҩ0

गीतार्थः

हे भारत माता हम आपकी सेवा में आये हैं। हमने आपके आंचल में जन्म लिया,हमने आपका दूध पिया है । हम आपके चरण र्स्पश करते हैं। हम सुबह - शाम आपके गुणगान गाते हैं। हम सभी आपकी आरती उतारते हैं।भारत माता आपको सभी लोग सोन की चिड़िया कहते हैं। आपकी वाणी बहुत मधुर है। हम लोग पंद्रह अगस्त और छब्बीस जनवरी का त्यौहार बड़े धूम - धाम से मनाते हैं।होली के त्यौहार में खूब रंग खेलते हैं।

इस लोक गीत में भारत माता के प्रति श्रद्वा और भक्ति प्रकट की गई है। राष्ट्र प्रेम की भावना बहुत स्पष्ट है।

रचयिताः भगवान सिंह नंदा, ग्राम देवरी वि.खं. अमरपुर जिला ड़िंड़ौरी

अनुवादः डॉ. विजय चौरसिया

## 20.पहिरे तिरंगा लुगरा माता,गरे मा पहिरे हार

पहिरे तिरंगा लुगरा माता,गरे मा पहिरे हार,
लहर - लहर लहरावत रहथै, झंड़ा तोर हाथ मा,
चम चमा चम चमकत हवै, बिंदिया तोर माथ में ,
पहिरे तिरंगा लुगरा माता,गरे मा पहिरे हार,
माथ मा संवारत हवॅय, बघवा तोर साथ मा,
जुगुर - जुगुर गहना दाई, बरथै संझा बिहनिया,
दिव्य रुप मा दिखत हवै हमर भारत माता,
करिया बादर सहीं लहरावत चूंदी,मॅुह मा हवॅय मुसकान गा,
देश ला तारेवर मैया, तैं हवस सबके साथ गा,

गीतार्थ :

हे भारत माता आपने अपने शरीर में तिरंगा धारण कर रखा है। आपने गले में हार धारण कर रखा है।आपके हाथ में तिरंगा झंड़ा है और आपके माथे की बिंदिया हमेशा चमकती रहती हैं आपके बाजू में बाघ बैठा हैं जो आपकी रक्षा करता है। आपके शरीर के जेवर जगमग - जगमग करते हैं। आपके बाल काले बादलों की तरह लहराते रहते हैं। आपके मुख पर मुस्कान है। हे भारत माता इस देश का उद्वार करने के लिये हम सभी आपके साथ हैं।

रचयिताः भगवान सिंह नंदा, ग्राम देवरी वि.खं. अमरपुर जिला ड़िंड़ौरी

अनुवादः डॉ. विजय चौरसिया

इस लोकगीत में भी भारत देश को भारत माता के साकार स्वरुप में देखते अभ्यर्थना की गई है और अपनी राष्ट्र - भक्ति अभिव्यक्त की गई है।

0ҩҩҩҩ ҩҩҩ0

## 21.जय होय रे मोर भारत माता जय होवे तोर

जय होय रे मोर भारत माता जय होवे तोर ,

जय होवे रे मोर भारत माता,जय होवे मोर भाग्य विधाता।।टेक।।,
एक तरफ तो वीर खड़े हैं, हाथ में लेके गोली।,
गांधी जी ने किया फैसला, मुंह में देके बोली।।
जय होवे रे मोर भारत माता, जय होवे मोर भाग्य विधाता।,
कहां गई तोर बारुद गोली, कहां गई तलवार।,
दुश्मन भागे ड़र के मारे मच गई हाहाकार।।
जय होवे रे मोर भारत माता, जय होवे मोर भाग्य विधाता।
सबकी धरती सबका पानी,सबको मिले सहारा।,
गांधी जी की जय बोलो,गुरुजनों का जय जयकारा,,
जय होवे रे मोर भारत माता, जय होवे मोर भाग्य विधाता।
बड़े भाग्य से जनम लिया है लाठी वाला गुंड़ा।,
गांधी जी ने अमर किया है, तीन रंग का झंड़ा।।
जय होवे रे मोर भारत माता, जय होवे मोर भाग्य विधाता।

0ध्ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थ :

मेरी भारत माता की जय हो मेरे देश के भाग्य विधाता भारत माता की जय हो। जब भारत देश परतंत्र था । तब भारत के वीर एक तरफ बंदूकें लेकर खड़े थे ,तो दूसरी तरफ गांधी जी ने अपनी मधुर वाणी से देश को आजाद करा दिया। गांधी जी के सामने गोली,बारुद और तलवार काम नहीं आई। गांधी जी की ललकार से अंग्रेज दुश्मन देश छोड़कर भाग गये। मेरी भारत माता आपकी जय हो। यह भारत भूमि हम सभी की है। यहां का पानी सभी को सहारा देता हैं आप सभी अपने - अपने गुरुजनों की जय बोलो। इस भारत भूमि का बड़ा भाग्य है। जिसमें लाठी वाले गांधी जी ने जन्म लिया। उनके कारण देश का तिरंगा झंड़ा अमर हो गया। मेरे भारत देश की जय हो। मेरे भाग्य विधाता भारत देश की जय हो।

भारतीय स्वाधीनता के लिये गांधी जी ने किस तरह आंदोलन चलाया इसका उल्लेख करते हुये स्वाधीनता - पुरुष के रुप में उनका स्मरण किया गया है। यहां स्वतंत्रता की राजनैतिक चेतना का स्पष्ट रुप मिलता है।

रचयिताः भगवान सिंह नंदा, ग्राम देवरी वि.खं. अमरपुर जिला ड़िंड़ौरी

अनुवादः डॉ. विजय चौरसिया

0ध्ध्ध्ध्ध्0

## 22.देश के राजनीति गा बैरनिया है गय रे,

आहा हे हाय गा बैरनिया है गय रे,
देश के राजनीति गा बैरनिया है गय रे।।टेक।।
सड़कन - सड़कन खंबा गड़े है,खंबा के ऊपर तार।
तार - तार से बात करथै, या भारत सरकार।।
देश के राजनीति गा बैरनिया है गय रे.....,
आगे चलै चांदी के रुपिया,अब चलथय रे नोट भैया।

आगे चलै लिखा पढ़ी,अब चलथयै वोट भैया।।
देश के राजनीति गा बैरनिया है गय रे.........
तरी - तरी मा गाड़ी चलय,ऊपर मा हवाई।
या खुर्सी के खातिर भैया मचे हवै लड़ाई।।
देश के राजनीति गा बैरनिया है गय रे.......
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थः**

हे भाई आज देश की राजनीति बैरी बन गई है। देश की सड़कों में खंबे लगे हैं, उन खंबों में तार लगे हैं। उन तारों से भारत सरकार बात करती है। इस देश में पहले चांदी के रुपये चलते थे। अब तो कागज के रुपये चलने लगे। पहले देश में लिखा पढ़ी से काम चलता था। परंतु अब देश में वोटों की राजनीति चलने लगी है। इस देश में कुर्सी पाने के लिये घमासान मचा हुआ है, इस देश में जमीन पर रेलगाड़ी चलती है और आकाश में हवाई जहाज उड़ता है। हमारे देश की राजनीति बैरी बन गई है।

स्वतंत्रता के पश्चात् जिस आर्दशवादी राजनीति की झलक दिखाई दी थी, बाद में उसमें कई बदलाव आये। इन बदलावों ने नैतिकता और त्याग की भावना को नष्ट कर दिया। स्वार्थ और लोभ ने राजनीति को दूषित बना दिया। लोकगीत राजनीति के सिद्वांतों और व्यवहार की समीक्षा करता है और संकेत देता है कि देश में जो गड़बड़ी हो रही है। लोक उससे बेखबर नहीं है।

रचयिताः भगवान सिंह नंदा, ग्राम देवरी वि.खं. अमरपुर जिला डिंड़ौरी

अनुवादः डॉ. विजय चौरसिया

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

## 23. आजादी के वर्षगांठ मा झंड़ा फहरावो गा

हमर आजादी के वर्षगांठ मा चलो झंड़ा फहरावो गा।
गली मुहल्ला इसकूलन मा जलसा लगावो गा।।
अमर शहीदों केर जयकारा लगावो गा।
सन सैंतालिस को हमार देश जवान भुईया होईन।।
सुघर भाषण अर राष्ट्रीय गीत गावो गा।
अमर शहीद ज्वान सत्ता ला लाईन।
जगह - जगह विजय के झंड़ा फहराईन।।
देश के कूटनीति दूर भगाईन,।
परेम भाव के जोती ला जगाइन।।
पीछे झन जावो कोनो आगे आवो गा
हमर आजादी के वर्षगांठ मा चलो झंड़ा फहरावो गा।
पंड़ित नेहरु ,सुभास बोस के,बापू गांधी सरदार वीरों के
देश भक्ति अर वीरता जगावो,।
झंड़ा फहरा के गलीन खोर मा घुमावो

हमर नेताओं ला सलामी देवो गा
हमर आजादी के वर्षगांठ मा चलो झंड़ा फहरावो गा।
इसकूल,कालेज,थानन मा झंड़ा फहरावो गा
होली कस गुलाल परेम भाव जगावो गा
बैंड़,नगाड़ा, ढ़ोल ,शहनाई बजावो गा,
नया जनम दिन मुबारक मनावो गा
नन्हें मुन्ने सब ज्वान भैयन गा,
कंधा से कंधा मिलावो गा
हमर आजादी के वर्षगांठ मा
चलो झंड़ा फहरावो गा।

0ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :**

हमारी आजादी की वर्षगांठ के उपलक्ष में चलो झंड़ा फहराते हैं। गली - मुहल्ला और स्कूलों में जलूस निकालेंगे। अमर शहीदों की जयकार करेंगे। सन् 1947 में हमारा देश आजाद हुआ था। हम लोग राष्ट्रीय गीत गायेंगे और भाषण देंगे। अमर शहीदों ने हमको यह सत्ता दिलाई हैं उस समय उन्होंने जगह - जगह पर विजय ध्वज फहराये थे। चलो, पंड़ीत जवाहर लाल नेहरु , सुभाष चंद्र बोस,मोहन दास करमचंद गांधी की वीर गाथायें गायें। चलो झंड़ा फहरायें और होली के समान रंग गुलाल लगायें। सबसे प्रेम भाव जगायें। चलो बेंड़, नगाड़ा, ढ़ोल ,शहनाई बजायेंगे। नन्हें - मुन्ने बच्चों के साथ कंधा से कंधा मिलाकर देश का जन्मदिन मनायेंगे। हम आजादी की वर्षगांठ पर झंड़ा फहरायेंगे।

यह लोक गीत स्वतंत्रता की वर्षगांठ पर राष्ट्रीय भावनाओं की प्रस्तुति करने और नयी पीढ़ी को अपने देश तथा उसकी स्वतंत्रता के प्रति जागरुक बनाये रखने की चेतना से संम्पन्न है।

रचयिता - राम लाल तरैना कोल ग्राम रंहगी वि.खं.अमरपुर जिला ड़िंड़ौरी
अनुवाद - ड़ॉ.विजय चौरसिया

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

## 24. ये वतन के कर लो जतन

रंग बिरंगी फुलबगिया कस देश ला हम सवरावो
ये वतन केर करले सेवा,अक दिन मर मिट जावे
ये तन है अनमोल रतन ऐखर नंई है कीमत
ये वतन के करलो जतन झन छोड़ो कोई हिम्मत
जनहित परहित देश के खातिर मरमिट जावो न
चोर ड़कैती अर लुटेरन के पहरा देते रहवो
हिन्दु,मुसलिम,सिख,ईसाई भाईचारा बनके रहवो
हमर सुमत के सरग रसेनी जग - मग जोत जलावो ना
ये वतन केर करले सेवा,अक दिन मर मिट जावे
हमी हन राजा हमी हन परजा हमी हन वीर सुपाही

ऐसन रक्षा हमन करवो जाय न ऐखर जवानी
सदा फूलत फलत रही सवो मिल खावो न
रंग बिरंग फुलबगिया कस देश ला हम सवरावो
ये वतन केर करले सेवा,अक दिन मर मिट जावे
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :**

रंग बिरंगे फूलों के बाग के समान इस भारत देश को हम संभालेंगे। हे भाई अपने वतन की सेवा कर लो। क्योंकी एक न एक दिन हमें मरना ही है। वतन की सेवा करने के लिये हिम्मत न छोड़ो। जनहित - परहित और देश की खातिर मर मिटो। हम चोर , ड़कैत और देश के लुटरों के लिये पहरा देते रहेंगे। हिन्दु, मुस्लिम,सिक्ख ,ईसाई सभी आपस में भाईचारा बनाकर रहेंगे।हम अपनी एकता की सीढ़ी से पूरे संसार को रोशन करेंगे। हम ही इस देश के राजा हैं और हम ही इस देश की प्रजा हैं और हम ही इस देश के वीर सिपाही हैं। हम अपने देश की ऐसी रक्षा करेंगे की इसकी जवानी बने रहे। हमारा देश सदैव फलता - फूलता रहे। सभी लोग आपस में मिल बांटकर खायें। रंग - बिरंगे फूलों के बाग के समान हम अपने देश को संवारेंगे। हे भाई अपने देश की सेवा कर लो। क्योंकी एक न एक दिन हमें मर जाना हैं

इस लोकगीत में अपने देश के हित में कार्य करने की संकल्प भावना दिखाई देती हैं सर्वधर्म - समभाव और एकता की भावना के प्रति निष्ठा भी सामाजिक चेतना के साथ अपनी राजनीतिक चेतना को प्रस्तुत करने में सफल हुयी है। यह एक गंभीर परिवर्तन है, जो लोक गीत में अवतरित हुआ है। जनजातीय समुदाय अपने समुदाय तक सीमित नहीं है, वह संपूर्ण राष्ट्र को एक बगीचे की तरह देखता है और उसमें रहने वाले विभिन्न जाति - धमरें के लोगों को भिन्न - भिन्न रंग के फूलों के प्रतीक से प्रस्तुत करता है।

रचयिता - राम लाल तरैना कोल ग्राम रंहगी वि.खं.अमरपुर जिला ड़िंड़ौरी
अनुवाद - ड़ॉ.विजय चौरसिया

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

## 25. मोर भारत देश के नेताओ भईया

मोर भारत देश के नेताओ भईया
युग - युग ले अमर होगे नाम
पहले रहीन पराधीन तब भारी मुश्किल झेलिन
कतको रहय वीर जुवान तभु कोनोला नंई सूझिस
नेहरु ,गांधी बापू जी के परथम हवय नाम
मोर भारत देश के नेताओ भईया
युग - युग ले अमर होगे नाम
सुभासचंद्र वीर बहादुर महराना परताप गा
दुर्गा ,लक्ष्मी,तात्या टोपे बड़े - बड़े सरदार गा
हवय बड़े सुरखी पननों पै गीत कहानी नाम गा
राष्ट्रसेवा देश - भक्ति अर कतका सुघर बानी
बीर - बीर कह गीत पुकारे फिल्म कविता कहानी

जगै - जगै पै छा गै प्रतिमा अर नाम गा
मोर भारत देश के नेताओ भईया
युग - युग ले अमर होगे नाम
अक अनेक सुविधा अर कई संस्था नाम गा
कोना - कोना मा दीप जलगै होगै नाम महान गा
जय भारत जय जिन्दाबाद धीर - वीर बलवान गा
मोर भारत देश के नेताओ भईया
युग - युग ले अमर होगे नाम

0ध्ध्ध्0

**गीतार्थः**

मेरे भारत देश के नेताओ तुम्हारा नाम युगों - युगों तक अमर रहेगा। पहले हमारा देश पराधीन था। उस समय हमने बहुत कष्ट सहे। उस समय के वीर जवानों को यह नहीं सूझा की देश को आजाद करा लें। पंड़ीत जवाहर लाल नेहरु और मोहन दास करमचंद गांधी का नाम देश को आजाद कराने में प्रथम रहेगा। मेरे भारत देश के नेताओं तुम्हारा नाम युगों - युगों तक अमर रहेगा। नेताजी सुभाषचंद्र बोस,वीर बहादुर महाराणा प्रताप,रानी दुर्गावती, रानी लक्ष्मी बाई और तात्या टोपे जैसे बड़े बड़े सरदारों का नाम देश के सुनहरे पन्नों अंकित हो गया है। इन नेताओं की वीर गाथा फिल्मों,कहानी और कविताओं में गायी जाती हैं जगह - जगह पर इन महापुरुषों की प्रतिमाए लगी हैं। मेरे भारत देश के नेताओ तुम्हारा नाम युगों - युगों तक अमर रहेगा। इन महापुरुषों के नाम से अनेकों संस्थायें हैं। जो हमें सुविधायें प्रदान कर रही हैं।देश के कोने - कोने में देश के नेताओं के नाम के दिये जल रहे हैं।लोग जय भारत , जय जिंदाबाद के नारे लगा रहे हैं।मेरे भारत देश के नेताओं आपका नाम युगों युगों तक अमर रहेगा।

लोकगीत में भारत की स्वतंत्रता के नायकों की अमरता का चित्रण करते हुये बताता है कि जो लोग स्वतंत्रता के लिये संघर्ष करते हैं। वे सदियों तक अमर रहते हैं। यहां यह प्रेरणा भी है कि आने वाली पीढ़ियों को भी अपनी स्वतंत्रता के लिये सदैव सजग रहना चाहिये। स्वतंत्रता की राष्ट्रीय चेतना इस लोक गीत की आत्मा में है।

रचयिता - राम लाल तरैना कोल ग्राम रंहगी वि.खं.अमरपुर जिला ड़िंड़ौरी

अनुवाद - ड़ॉ.विजय चौरसिया

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

## 26. देश के नेताओ वीर बहादुर

देश के नेताओ वीर बहादुर अपन सत्ता लेके आगे रे
हमला राज सौंप के हमार भाग जगगे रे
देश के खातिर बैरी बनके करिन कतका लड़ाई
अपन सत्ता ला लाये खातिर जेल के रोटी खाईन
वीर बहादुर नाम धरा के अपना नाम उजागर करगे रे
हमला राज सौंप के हमार भाग जगगे रे
दिन - दिन दूना रात चौगना देश खुशहाल होही
चिनता रहीस दूर भगगै सुख के बिहान होही

धन्य - धन्य हो बीर बहादुर देश ला गौव बना गे रे
हमला राज सौंप के हमार भाग जगगे रे
अपन देश अर जन के सेवा हमला ओमन सिखागे
जनता पंचायत राज आगे जन - जन जाग्रत छागे
देश गांव सग सुद्रण बनगे अनेक सुविधा आगे रे
देश के नेताओ वीर बहादुर अपन सत्ता लेके आगे रे
हमला राज सौंप के हमार भाग जगगे रे
0ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थः**

देश के वीर बहादुर नेता अपनी सत्ता लेकर आ गये। उन्होंने देश को आजाद करके हमें राज्य सौंप दिया। जिससे हमारे भाग्य जाग गये।देश के नेताओं ने सत्ता के लिये जेल की रोटियां खाई। अपने नाम के आगे वीर बहादुर कहलाकर देश में अपना नाम रोशन किया। हमारा देश दिन दूना रात चौगना खुशहाल होगा। हमारी चिन्तायें दूर होंगी और सुख का सबेरा होगा। धन्य हो वीर बहादुर जिन्होंने देश का गौरव बढ़ाया और हमें जनसेवा करना सिखलाया। जनता को पंचायती राज्य दिलाकर देश में जागृति फैलाई। हमारा देश और गांव सुदृढ़ हो गये हैं। हमें अनेकों सुविधायें मिल रही हैं। देश के वीर बहादुर नेताओं ने अंग्रेजों से अपनी सत्ता हथिया कर हमें सौंप दी हैं जिससे हमारे भाग्य जाग गये हैं।

इस लोकगीत में लोक इस बात के लिये अपने वीर स्वाधीनता सेनानी नेताओं का आभार मान रा है। जिनके त्याग और बलिदान से उन्हें स्वराज प्राप्त हुआ । स्वाधीनता और स्वराज की धधकती चेतना से सम्पन्न लोकगीत इसी की अभिव्यक्ति है।

रचयिता - राम लाल तरैना कोल ग्राम रंहगी वि.खं.अमरपुर जिला ड़िंड़ौरी

अनुवाद - ड़ॉ.विजय चौरसिया

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

## 27. महात्मा गांधी ना राज

महात्मा गांधी ना राज।
राज रो राज ताकता।।
चरखा परो ओना दिल बरसे माना।
राज रो राज ताकता।।
गुलाब परो ओना दिल बरसे माना।
राज रो राज ताकता।।
महात्मा गांधी ना राज पड़ा भारी ।
बिना कोंदा गाडा ताकी लाना।।
दिल्ली ताल गाडा ताकी लाना।
बिना कोंदा गाडा वाया लाना।।
नेहरु ना राज पड़ा भारी।
बिना कोंदा गाड़ा छोड़ें माना।।

काश्मीर ताल गाड़ा छोड़े माना।
कन्या कुमारी चले माना ।।
इन्नाल उन्नाले नेतालोड़ वायतोड़....
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ -**

महात्मा गांधी का राज्य बहुत बड़ा है। वे प्रतिदिन चरखा भी चलाते हैं। नेहरु जी का राज्य भी बहुत बड़ा है। वे गुलाब के फूल से बहुत प्रेम करते हैं।
हे भाईयो।महात्मा गांधी के राज में बिना बैल के गाड़ी चल रही है। काश्मीर से छूटी और कन्या कुमारी की ओर जा रही है। उत्तर से दक्षिण और पूरब से पश्चिम गाड़ी जा रही है। गांधी जी और नेहरु जी का राज्य बहुत अच्छा है।

यह लोकगीत स्वाधीनता संघर्ष के नायक महात्मा गांधी जी के विचारों की अबाध सत्ता का चित्रण करता है कि उनके राजनैतिक और भारत की स्वतंत्रता संबंधी विचार पूरे देश में फैले हुये हैं। सारा राष्ट्र उससे प्रभावित है।

संकलन एवं अनुवादः डॉ.महेश चंद्र शांड़िल्य
( साभार - सुराज म.प्र. आदिवासी लोक कला परिषद)

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

## 28. भारतवासी कठिन सूरमा

बिगड़ी बन जाही गा रे
तू धीरे बनावे
बिगड़ बन जाही गा रे
भारतवासी कठिन सुरमा
कठिन जात बलवान गा
मरना जीना नाहि डराबे
तेग दि हे परान गा
तू धीर बनावे - बिगड़ी बन जाही गा रे
पुरखा भोगें राज पाट
जो मनसब के सरदार
अंगरेजन के आए छिनिगा
बिगड़ी सबके कार
धीरे बनावे बिगड़ी बन जाही गा रे
तू धीरे बनावे।

बघेलखंड़ के शहड़ोल जिले में गोंड़ आदिवासियों द्वारा गाया जाने वाला गीत । निश्चित समय अज्ञातः

**गीतार्थ :** बिगड़ी बात फिर सुधर जायेगी। तुम हड़बड़ी और घबराहट को छोड़कर धीरज के साथ अपना नया भाग्य बनाओ।भारतवासी कठिन जोधा हैं। शक्तिशाली हैं। उन्हें न तो जीवन का अनावश्यक मोह है न मरने का भय हाथों में तलवार लिये जूझ जाते हैं। तुम्हारा राज -

पाट वैभव सब अंग्रेजों के आने से जाता रहा। तुम पुनः अपनी बिगड़ी तकदीर और अपना कार"कारोबार" सुधार सकते हो।

संकलन एवं अनुवाद : आदित्य प्रताप सिंह

(संदर्भ ग्रंथः सुराज म.प्र. आदिवासी लोक कला परिषद )

## 29. भारत माता खड़े हवै द्वार

भारत माता खड़े हवै द्वार ,भारत माता खड़े हवै द्वार ,
नेता के संग मा भारत माता खड़े हवै द्वार,
तिरंगा लुगरा पहिरे बघवा के असवार
मोर भाग्य विधाता भारत माता बघवा के असवार,
तीन रंग के लुगरा पहिरे माटी के महतारी,
जन - जन तोला माथ नावाथें,
तोर गोदी के दुलार,भारत माँ के लाड़ला बेटा,
नेहरु,गांधी,सुभास,दुगौ,लक्ष्मी,वीर बहादुर महराणा प्रताप,
देश गुलमी छुड़के, भारत के करिन उद्वार,
जनम - जनम तक अमर रही,देही स्वाभिवान,
भारत माता तोर चरण मा बरसे फूल अपार,
संझा विहनियॉ तौरे लैका चढा़वै फूलन के हार,
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थः-**

भारत माता अपने नेताओं के साथ दरवाजे पर खड़ी हुई हैं। मेरी भारत माता ने तीन रंगों की साड़ी पहनी है। भारत का प्रत्येक नागरिक आपको नमन करता है। आपकी गोद में हमारा पालन पोषण हुआ है। आपसे हमको प्रेम मिला है। हम सभी आपको नमन करते हैं। भारत माता के लाड़ले सपूत जवाहर लाल नेहरु, महात्मा गांधी, सुभाषचंद्र बोस, रानी दुर्गावती, महाराणा प्रताप और रानी लक्ष्मी बाई ने देश को गुलामी से छुटकारा दिलाया और भारत का उद्वार किया। भारत वर्ष का स्वाभिमान हमेशा अमर रहेगा। तुम्हारे सपूत तुमको सुबह - शाम फूलों का हार पहनायेंगे।

रचयिता - राम लाल तरैना कोल ग्राम रंहगी वि.खं.अमरपुर जिला ड़िड़ौरी

अनुवाद - ड़ॉ.विजय चौरसिया

## 30. मैया रानी दुर्गावती वीरांगना हो माय

मैया रानी दुर्गावती वीरांगना हो माय......
.उत्तर प्रदेश राठ महोबा रे कलिंजर के,
महराज कीर्तिसिंह चंदेल की , बेटी इकलौतिन संतान,
नवरात्री को जनम लै हो माय
मैया रानी दुर्गावती वीरांगना हो माय...
जनम से मॉ का दूध ना पिया रे,
न पाया मॉ का दुलार,पिता ने इनको पाला पोसा,
बड़े लाड़ से प्यार
करी बचपन से घुड़सवारी हो माय....

मैया रानी दुर्गावती वीरांगना हो माय...
भावुक सुशील सुंदरी हो ,
सब गुनों की खान,मंड़ला गढ़ में ब्याही ,
दलपत शाह के साथ
गोंड़वाना के रानी भई हो माय..
कुछ दिन सुख बिताये रे,जनमे अक ठन लाल।
नाम रखाया वीर नरायन,पिता के हय गै देहान्त।
राज तिलक सुत को दे दैई हो माय....
मैया रानी दुर्गावती वीरांगना हो माय...
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :-**

वीरांगना रानी दर्गावती उत्तर प्रदेश के राठ महोबा में कलिंजर राज्य के राजा कीर्ति सिंह चंदेल की इकलौती बेटी थी। रानी दुर्गावती का दिन नवरात्री के दिन हुआ था। रानी के जन्म लेने के बाद उनकी मॉ का देहांत हों गया। बचपन में रानी को मॉ का दूध पीने नहीं मिला। उनको अपनी मॉ का प्यार - दुलार भी नहीं मिला। रानी के पिताजी ने रानी को बड़े लाड़ - प्यार से पाला। रानी दुर्गावती ने बचपन में ीही घुड़सवारी सीख ली थी। रानी दुर्गावती अतयंत सुंदर , सुशील और भावुक स्वभाव की युवती थी। उनमें सभी गुणों का भंड़ार था।
रानी दुर्गावती का विवाह गढ़ मंड़ला के राजा दलपतशाह के साथ हुआ था। रानी ने कुछ दिनों तक राज सुख भोगा। उनको एक पुत्र रत्न की प्राप्ति हुयी। उसका नाम वीर नारायण था।

**रचयिताः रामलाल कोल ग्राम रंहगी माल वि.खं.अमरपुर जिला ड़िंड़ौरी**

**अनुवाद : डॉ. विजय चौरसिया**

## 31. दुर्गावती आल्हा

मातु सारदा चरण मनाके,गुरुदेव का धरुं मैं ध्यान।
मात - पिता के चरण किरपा से, लिखू कहानी दुर्गावती नार।
सुरता,वकता,कवि,सुग्यानी, बड़े - बड़े हों चतुर सुजान।
भूल - चूक सब माफी देना, मुझको अपना लैका जान।
लिखूं कहानी दुर्गावती के,ग्यान मोही देहो बतलाय।
ना मैं कवि ना में वकता,ना हूं मैं गायक कलाकार।
रानी दुर्गावती महरानी जनम लिया नवरात्री को।
कीर्ति सिंह की इकलौती बेटी, मॉ का सुख ना पाई वो।
उत्तर प्रदेश के महोबा में जनमी , रुप सुन्दरी की थी खान।
ब्याह भई दलपतशाह से , मंड़ला गढ़ है गये रनिवास।
सुत हुआ जब वीर नरायन,दलपत शाह का हय गै देहान्त।
देखा राजा विहीन हुआ,तब रानी सुत तिलक दिया सार।
कूप,वाटिका,ताल,सरोवर,जगह - जगह भर दिया सुवास।
र्स्वण युक्त गढ़ राज हुआ तब, राजा प्रजा में खुशी अपार।
रानीताल,चेरीताल,मदनमहल है ,जबलपुर में।

सोलह साल तक राज किया, रानी ने अपने जीवन में।
गढ़ मंड़ला संम्पन्न देख कर ,आक्र्रमन किया राजा दिल्ली ने।
अकबर ने भिजवाया आसफ खान को जाकर के।
उनसे कहदो भैया अधीन हो जाओ मेरे राज्य से।
खबर सुनी जब रानी दुर्गावती,आगबबूला छाई रोस।
बोली किरोध भरी सी बानी नहीं रहूंगी मैं आधीन।
जाओ कह दो अपने राजा से वो हो जाये मेरे आधीन।
यहां की बातें यहीं पर छोड़ो और आगे का सुनो बखान।
रानी दुर्गावती मन में सोचे ,नहीं रहूंगी मैं आधीन।
नहीं कर देगा सत्यानास, नाम डूब जायेगा क्षत्रीपन का।
मुल्क में बंधना ऐहसान नहीं, जो होगा सो देखा जायेगा।
बारह बरस तक कूकर जीवै, सोलह बरस तक सियार जाय।
तीस बरस तक क्षत्री जीवै,जादा जीना चाहिये नाय।
उमर के पट्टा कोई न लेवे ,रहेगा अमर हमेसा नाम।
अक दिन मरना हवै जरुरी ,काया कागद सी गल जाय।
नाम डुबाकर क्षत्रीपन का, मैं सूरमा कहाऊंगी नाय।
इतना कहकर मंत्री बुलवाई ,सारा हाल कह दिया सुनाय।
आसिफ खान किया चढ़ाई, आम सजग से रहना कह सुनाय।
ड़ंका बजाके रानी दुर्गा अपनी सेना लई्र सजाय।
मजबूत किले चुने सिंगौरगढ़ को ,जो दमोह में स्थित आज।
मोह के नैया पर चढ़ गये,आसिफ गरभ से गढ़ को घेरे आय।
दोहाः शत्रु सेना से कमजोर सेना था, फिर भी हिम्मत न हारी।
रानी दुर्गावती साक्षात दुर्गा होकर, सेना में ललकारी।।
आओ वीरो कह ललकारी, युद्व करुंगी में घमसान।
सारी सेना और राजा की, आज उतारुंगी मैं शान।
इतनी बात को सुन कर सेना ,चारों ओर से लिये है घेर।
मार - मार कर सब सेना को ,रानी बिछा दई सब ढ़ेर।
तुप, तुफान,पानी कस बरसें,खून बहैं नदिया कस धार।
ऐसा युद्व करी रानी ने बिवस उतारी सब घाट।
मुगल के सेना कुछ बचे तो, अपने आप में माने हार।
जीत के ड़ंका रानी के बज गये,सेना में हो गई जय जयकार।
सूखी नदी आगे पर था, जहां पर बाढ़ अचानक आय।
रानी सेना से घिर गई,फिर भी नहीं मानी वो हार।
नहीं बचा था अब तुप तुफान, तीर तरवार से लड़ी अपार।
नारी थी वो दुरगा रानी ,फिर भी युद्व करे घमसान।
तभी बीच में बांई आंख मे,ं आकर लगा अक बान।
बहोत पिरयास किया रानी ने, फिर भी न निकला वो बान।
इतने में सुत वीर नारायन का हो गया था देहान्त।

दोहा - रानी दुरगावती ने सुत सोक न मानी।
अपनी हार न दम तोड़े युद्व करे घमासानी।ं
वीर नारायन के मृत्यू से, हो गई सेना में हाहाकार।
फिर भी दम न तोड़े रानी, बरसा रही थी तीर तरवार।
एक आंख से धायल थी रानी, दूजे बान लगे गले में आय।
आस नहीं बची जीने की,तब छोड़ी जीने की आस।
रानी दुरगावती ने सोचा ,दुश्मन हाथ न मरुंगी आय।
न देखूंगी न सुनुंगी, कहकर मारा छाती में कटार।
वीर गति पाई रानी ने, जिनकी कथा अमर है आज।
अंतिम क्षण तक युद्व किया, अर मातृ भूमि की सेवा बजाय।
वीर वीरता अर साहस का, रन भूमि में परिचय दिखाय।
मातृ भूमि की आन बान पर, मर मिट अपना नाम कराय।
रानी दुर्गावती के गीत का आल्हा, रामलाल ने आय बनाय।
हाथ जोड़ पैंया परुं मै,ं गलती चूक ला देहो माफ।
बड़े - बड़े हो चतुर गयानी तुम , मैं तुम्हार बालक आऊं।
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थः

शारदा माता के चरण वंदन कर , अपने गुरु का ध्यान कर माता - पिता के चरणों की कृपा से मैं रानी दुर्गावती की कहानी लिख रहा हूं। इस कहानी को सुनने वाले श्रोता,वक्ता, कवि,ज्ञानी, और विद्वान मेरी भूल - चूक पर बच्चा समझकर माफ कर देना। रानी दुर्गावती मुझे ज्ञान दें, न मैं कवि हूं ,न ही वक्ता, नही मैं गायक कलाकार हूं।

महारानी दुर्गावती का जन्म नवरात्री के दिन हुआ था। वे राजा कीर्ति सिंह की इकलौती बेटी थी। रानी दुर्गावती की मां का देहान्त हो गया था। उनको मॉ का सुख नहीं मिला। उत्तर प्रदेश के महोबा में जन्मी रानी दुर्गावती अतयंत सुन्दर नारी थीं। उनका विवाह गढ़ा मंड़ला के राजा दलपत शाह के साथ हुआ था। विवाह के बाद रानी दुर्गावती को एक पुत्र हुआ। जिसका नाम वीर नारायण रखा गया। कुछ समय बाद राजा दलपत शाह का देहान्त हो गया। रानी दुर्गावती ने अपने पुत्र वीर नारायण का राजतिलक कर उसे गढ़ा मंड़ला का राजा बना दिया। रानी ने अपने राज्य में जगह - जगह कुंऐ,तालाब, बाग - बगीचे लगवाये। गढ़ा राज्य में सोना ही सोना हो गया। राज्य की प्रजा सुखी थी। जबलपुर का रानीताल, चेरीताल और मदन महल रानी दुर्गावती द्वारा बनवाया गया। रानी ने सोलह वर्ष तक शासन किया। गढ़ा - मंड़ला को संम्पन्न देखकर दिल्ली के राजा अकबर ने अपने सेनापति आसफ खॉ के द्वारा रानी दुर्गावती को संदेश भिजवाया की वह अपने राज्य को अकबर के राज्य में शामिल कर ले। परंतु रानी ने कहा मैं किसी के अधीन नहीं रहूंगी। रानी ने क्रोधित होकर आसफ खॉ से कहा कि अपने राजा से कह देना कि वो मेरे आधीन हो जावे। यहां की बात यहीं छोड़ो आगे का वृतांत सुनो-

रानी दुर्गावती ने सोचा मैं किसी भी हालत में अपना राज्य अकबर को नहीं सौंपूंगी। यदि मैं ऐसा करुंगी तो मेरे क्षत्रीय वंश का नाम डूब जायेगा। बारह वर्ष तक कुत्ता का जीवन रहता है ,सोलह वर्ष तक सियार जीवित रहता है। इसी प्रकार तीस वर्ष तक क्षत्रीय को जीना चाहिये। कोई भी इस संसार में अमर होकर नहीं आया हैं सभी को एक न एक दिन मरना ही

है। यह तन एक कागज के समान है।जो कभी भी नष्ट हो जाता है। मैं क्षत्रीय वंश का नाम डुबा दूंगी तो मुझे कौन सूरमा कहेगा। इतना सोचकर रानी ने अपने मंत्रियों को बुलाकर उनसे मंत्रणा की। रानी ने कहा सेनापति आसफ खॉ ने हमारे राज्य पर चढ़ाई कर दी है। सभी लोग सजग हो जावें। ऐसा कहकर रानी ने अपनी सेना को युद्व के लिये तैयार किया। रानी दुर्गावती का पहला युद्व दमोह जिला के सिंगौरगढ़ में प्रारंभ हुआ था।आसफ खान ने घमंड़ में आकर सिंगौरगढ़ के किला को घेर लिया। रानी की सेना शत्रु दल की सेना से कमजोर थी। फिर भी रानी ने अपनी हार नहीं मानी। रानी दुर्गावती ने साक्षात दुर्गा का रुप धर के मुगल सेना को ललकारा। रानी ने मुगल सेना से घमासान युद्व किया। रानी ने ठान लिया था की वे मुगल सेना के सभी सिपाहियों का सफाया कर देंगी। रानी के सैनिक मुगल सैनिकों को मार रहे थे। युद्व के मैदान में खून की नदीयां बहने लगी। मुगल सेना इस युद्व में हार गयी। बचे हुये सैनिक अपनी जान बचाकर भाग गये। रानी उस युद्व में विजयी हो गई । चारों ओर रानी की जय - जयकार होने लगी।

रानी जीत की खुशी में घोड़े पर सवार होकर आ रही थी। रानी जब एक सूखे नाले के पास पहुंची वहां पर मुगल सैनिकों ने रानी को चारों ओर से घेर लिया। रानी तलवार से युद्व करने लगी। उसी समय एक तीर आकर रानी की बायीं आंख में लगा। रानी ने उस तीर को निकालने की बहुत कोशिश की परंतु तीर नहीं निकला। उसी समय रानी का पुत्र वीर नारायण भी बुरी तरह से घायल हो गया था। जिससे उसकी मृत्यू हो गयी। वीर नारायण की मृत्यु से सेना में हाहाकार मच गया। परंतु घायल रानी फिर भी युद्व करती रही। रानी एक आंख से घायल थी। उसी समय एक दूसरा तीर रानी के गले में आकर धंस गया। रानी ने जीने की आस छोड़ दी। रानी ने सोचा में दुश्मनों के चंगुल में फंस जाऊंगी। इसलिये जीना व्यर्थ है। ऐसा सोचकर रानी ने अपनी कटार निकाली और सीने में घुसेड़ ली। जिससे रानी दुर्गावती की मृत्यु हो गई। रानी ने अंतिम श्वांस तक मातृ भूमि की सेवा की। उन्होंने अपनी वीरता का परिचय रण - भूमि में दिखाया। मातृ भूमि की आन - बान - शान पर मर मिटने वाली रानी दुर्गावती का नाम अमर हो गया। युगों - युगों तक रानी दुर्गावती की गाथा गायी जाती रहेगी।

रानी दुर्गावती के इस गीत को आल्हा में बनाया है राम लाल ने मैं आपके हाथ जोड़कर निवेदन करता हूं कि इस आल्हा में कुछ गल्तियां हों तो मुझे अपना बालक समझकर माफ कर देना।

**रचियता : रामलाल कोल ग्राम रंहगी माल वि.खं. अमरपुर जिला ड़िंड़ौरी**

**अनुवाद : डॉ. विजय चौरसिया**

## सामाजिक चेतना से युक्त गोंड़ जनजाति के लोकगीत

## 32. झन पियो दारु ला

मान ले तें कहना बोली धर ले ध्यान गा
या दारु के नशा बरबाद रे
छोड़ा लैका ज्वान भैया पड़त हों मैं पांव गा
या दारु के नशा बरबाद रे

रमकत है तेमे तन ला तोर चुरही गा
पीके चूर हय गै नशा मोर
जोश ला बढ़वावत हे तोर पोल ला खुलवावत हे
नशा मा बिगड़ जावे रे
मान ले तैं कहना बोली धर ले ध्यान गा
नंई है चिन्हारी तोर बेटी महतारी गा
नंई है चिन्हारी घर दुवारी रे
नशा में चूर हो गये घर लेते दूर हो गये
दूसर हो गये घर रखवारी रे,मान लेते कहना बोली धरले घ्यान गा
या दारु के नशा बरबाद गा
पानी जैइसे बहा जावे, लकड़ी जैइसे तन जल जाही रे
लाहनी फेंकथें जैसे तन फिक जाही गा
या दारु के नशा बरबाद रे
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :**

हे भाई मेरी कही बातों को मान लो।यह शराब का नशा आदमी को बरबाद कर देता है। लड़को और जवान भाईयो मैं आपके पैर पड़ता हूं। आप शराब पीना बंद कर दो। शराब पीने से शरीर का खून जल जाता है। शराब पीने से आदमी नशा में हो जाता है। जिससे उसकी बोल खुल जाती है। तुम नशा करके बिगड़ जाओगे। हे भाई ! तुम मेरी बात मान लो शराब पीने के बाद आदमी अपनी बेटी और मॉ तक को नहीं पहचानता। वह अपने घर - द्वार को भूल जाता है। नशे में मदहोश आदमी अपने घर से दूर हो जाता है। उसके घर की रखवाली दूसरे लोग करने लगते हैं।इसलिये हे भाई ! तुम मेरा कहना मान लो। शराब मत पियो शराब पीने से तुम इतने दुर्बल हो जाओगे जिससे तुम्हारा शरीर पानी जैसे बहने लगेगा। तुम्हारा शरीर लकड़ी के समान जल जायेगा। जिस प्रकार शराब बनाने के बाद उसका लाहन फैंका जाता है, उसी प्रकार एक दिन तुम्हारा शरीर नष्ट हो जावेगा। यह शराब का नशा तुमको बरबाद कर देगा।

जनजातीय समाज में शराब एक समुदाय - स्वीकृत पेय है। परंतु शराब की अधिकता शरीर और धन का विनाश भी करती है। इस लोक गीत में शराब के दुष्प्रभावों से बचने का आव्हान किया गया है।

रचयिता - राम लाल तरैना कोल ग्राम रंहगी वि.खं.अमरपुर जिला ड़िंड़ौरी

अनुवाद - ड़ॉ.विजय चौरसिया

## 33. हो जावे बरबाद नशा बाजी मा रे

ओ हो हाय नशा बाजी मा राम ।
हो जावे बरबाद नशा बाजी मा रे।।
गांजा पिये गंजेड़ी भैया,मंद पिये मतवार।
पिनक अफीमी अंखिया मूंदे,सफ्फा जग अंधियार।।
नशा बाजी मा हो जावे बरबाद........
मान गवायें पैसा खोये,सबमें बने लबार।

गली - गली मा धक्का खवै,आठों घड़ी गंवांये।।
नशा बाजी मा रे हो जावे बरबाद.......
आंखी चिमधी चोला ढ़ांढ़र का करिबे करतूती।
घर मा आके पेज मांगे हांड़ी हो गई छूछी।।

**नशा बाजी मा रे हो जावे बरबाद ............**

**लड़का रोवे लड़की रोवे घर मा नंई हां दाना।**

**हाथ मा बोतल मुंह मा छाका,तै तो पड़ा उताना।।**

**नशा बाजी मा रे हो जावे बदनाम.......**

**0ddddddd0**

**गीतार्थ -**

हे भाई नशा करने से तुम बरबाद हो जावोगे। गांजा का नशा गंजेड़ी करते हैं और शराब का नशा मतवाले लोग करते हें। अफीम पीने वाला आदमी हमेशा आंखों को बंद किये रहता है, उसके लिये सारा संसार में मानों अंधेरा हो। नशा करने से आदमी का सम्मान चला जाता है और धन भी, इसके बाद दूसरों के सामने झूठा बनना पड़ता है। पूरे दिन गली - गली में धक्का खाते फिरते रहते हो, कोई भी सम्मान नहीं देता। नशा करने वालों की आंख घुसी रहती हैं। उनके शरीर का ढ़ांचा ही दिखाई देता है। तुम यह कौन सी करतूत कर रहे हो। घर में लड़का - लड़की भूख के कारण रो रहे हैं, परंतु घर में खाने के लिये आनाज का एक भी दाना नहीं है, क्योंकी तुम्हारे तो हाथ में बोतल है और तुम नशे में कहीं भी पड़े रहते हो। नशा करने से तुम बदनाम हो जावोगे। इसलिये भाई नशा करना छोड़ दो।

संकलन एवं अनुवाद - डॉ. विजय चौरसिया

इस लोकगीत मे नशे से दूर रहने का भाव व्यक्त किया गया है। गांजा, अफीम, शराब आदि से किस तरह तन - मन और धन नष्ट होता है। यह बताते हुये लोकगीत सामाजिक चेतना से परिपूर्ण है।

0dddddddd0

## 34. अहा हाय रे सुधारो चोला रे

अहा हाय रे सुधारो चोला यार
अहा हाय रे सुधारो चोला यार।। टेक।।
बिन विदया बरबादी रे सुधारो चोला रे ।
गांव - गांव में खुले मदरसा शिक्षा के परचार।
आदिवासी हित के लाने खुले हैं शासन द्वार।
बिन विदया बरबादी रे सुधारो चोला यार।
छूटिस पढ़ाई लिखाई मा सरकारी मदद होय।
पढ़े लिखे ला नहि जाय तो भारी भूल होय।
विन विदया बरबादी रे सुधारो चोला यार।
पढ़े लिखे आदर पाथें धोखा नहीं खांय।
बिन विदया बरबादी रे सुधारो चोला यार

0dddddddddddd0

**गीतार्थ :**

**हे भाई अपने जीवन को सुधार लो। गांव - गांव में पाठशालायें खुल गई हैं। शिक्षा का प्रचार - प्रसार हो रहा हैं बिना विघा के मनुष्य बरबाद हो जाता है।आदिवासियों के हित के लिये शासन ने बहुत सी योजना लागू की हैं। जिनकी पढ़ाई लिखाई छूट गई है , वे फिर से पढ़ सकते हैं।जो पढ़ना - लिखना नहीं चाहते वे बहुत बड़ी भूल कर रहे हैं।विघा के बिना मनुष्य का जीवन बेकार है।पढ़े - लिखे लोग समाज में आदर पाते हैं।उनको कोई भी धोखा नहीं दे सकता। हे भाई पढ़ - लिखकर अपने जीवन को सुधार लो।**

**शिक्षा के बिना जीवन अधूरा है विकास का आधार यही है। शिक्षा के प्रति जागरुकता की चेतना इस लोकगीत में निहित है।**

रचयिताः भगवान सिंह नंदा, ग्राम देवरी वि.खं. अमरपुर जिला ड़िंड़ौरी

अनुवादः डॉ. विजय चौरसिया

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

# 35. शिलालेख हमें भूली याद दिलाते हैं

**लेखों से बढ़कर स्तंभ हमारे,**
**भूले याद दिलाते हैं। टेक।**
**शिला लेख है नाम नगर में ,**
**पूर्व कथा हम गाते हैं।**
**स्मारक इतिहास हमारा,**
**रोचक दृश्य दिखाते हैं।।**
**हमें भूली याद दिलाते हैं।1।**
**महल हमारे मंदिर हैं,**
**गुर्ज ध्वजा लहराते हैं।**
**आदि देव बड़ा देव भोला,**
**राजे श्री पुजाते हैं।।**
**हमें भूली याद दिलाते हैं।2।**
**हाथी के हथसार बने हैं,**
**घोड़न के घुड़सार हैं।**
**तोपों की भरमार किले में,**
**शाही फौज बनाते हैं।।**
**हमें भूली याद दिलाते हैं।3।**
**शिला लेख में लिखा है,**
**वंश परंपरा गाते हैं।**
**वेद पांचवां शिला लेख है,**
**पढ़कर याद दिलाते हैं।।**
**हमें भूली याद दिलाते हैं।4।**
**मढ़िया मंदिर,निशान जिनमें**
**अनगिनित देव बताते हैं।**
**कथन राम सिंह पूरा तत्व है,**

खोजे से मिल जाते हैं।।

हमें भूली याद दिलाते हैं।5।

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थ -

प्राचीन स्तंभ और शिला लेख हमें भूली बिसरी बातों की याद दिलाते हैं। नामनगर के शिलालेख हमें पुराने इतिहास के बारे में बताते हैं। वे हमें भूली - बिसरी बातों की याद दिलाते हैं। पुराने महल हमारे मंदिरों के सामान हैं। जिनके गुर्ज में आज भी ध्वज लहरा रहे हैं। हमारे राजा आदि देव बड़ा देव भोला भंड़ारी की पूजा करते थे। हमारे यहां हाथियों के हथसार और घोड़ों के घुड़साल बने हैं। महलों में तोपों की भरमार हैं, राजाओं के पास शाही फौज थी। इन शिलालेखों में राजाओं के वंश की परंपरायें लिखी हैं। जिसे हम गाते हैं। शिलालेख हमारे पांचवे वेद के समान हैं। जो हमें भूली बिसरी याद दिलाते हैं। शिला लेख हमें मंदिर,मस्जिदों तथा देवताओं के बारे में बतलाते हैं। रामसिंह का कथन है कि यदि हम खोज करें तो हमें पुराना इतिहास मिल जाता हैं शिलालेख एवं स्तंभ हमें भूली बिसरी याद दिलाते हैं।

यह एक आधुनिक लोकगीत है। भाषा के स्तर पर देखें तो इसमें आधुनिक कविता जैसा स्वरुप दिखाई देता है। लोक गीतों में यह परिवर्तन अटपटा तो लगता है। किन्तु नये गीतकारों ने आधुनिक मानबोध को ग्रहण करके लोकगीत के कलेवर में इस नवीनता को प्रस्तुत किया है।

लोकगीत शिलालेखों, स्मारकों और प्राचीन किलों की ऐतिहासिक धरोहर से काल की गणना और अभ्यर्थना करता है और अतीत गौरव की चेतना के तत्वों को प्रस्तुत करता है।

रचयिताः भगवान सिंह नंदा, ग्राम देवरी वि.खं. अमरपुर जिला ड़िंड़ौरी

अनुवादः डॉ. विजय चौरसिया

## 36. महल खड़े देखत है संसार

सूर्य वंश के महल खड़े हैं,
देखत है संसार । टेक।
पहिला भूम है गढ़ मंड़ला,
राज श्री दरबार।
बहुत पुरानी महिषमति है,
देवी के दरबार।।
महल खड़े देखत है संसार । 1।
दूजा भूम गढ़ा जबलपुर,
बड़ा देव दरबार।
मदन महल है मदनशाह का,
सूर वीर सरदार।।
महल खड़े देखत है संसार । 2।
तीजा भूमि गढ़ा नागपुर,
फनिपुर नाम कहाय।
बुढ़ान शाह ,मरदान शाह के,
हैं भारी दरबार।।

महल खड़े देखत है संसार । 3।
खैरागढ़ में खेर भवानी,
शक्ति के अवतार।
क्षत्री घराना है सिरनामा,
देव धर्म अवतार।।
महल खड़े देखत है संसार ।4।
राज कबछी राज गोंड़ के
जहां धरम के कार।
कीरत राम सिंह धर्मराज है,
गणपति के अवतार।।
महल खड़े देखत है संसार । 5।

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थ -

हमारे देश में सूर्यवंशी राजाओं के महल खड़े हैं। जिसे संपूर्ण संसार देख रहा है। पहली भूमि गढ़ मंड़ला के राज दरबार की है, मंड़ला की महिष्मती नगरी बहुत पुरानी हैं जिसमें देवी का दरबार है, दूसरी भूमि जबलपुर का गढ़ा है, जहां बड़ा देव का दरबार है। राजा मदन शाह का बनवाया हुआ मदन महल है। राजा मदन शाह सूरवीर थे। इनके महलों को संपूर्ण संसार देख रहा है। तीसरी भूमि नागपुर के गढ़ की हैं जिसे फनिपुर कहते हैं। वहां पर राजा बुरहान शाह और राजा मर्दान शाह का दरबार है। खैरागढ़ में खेर भवानी का मंदिर है। राज गोंड़ राजाओं ने अनेकों धर्म के कार्य किये। रामसिंह कहते हैं यहां के राजा धर्मराज हैं और गणेश भगवान के अवतार हैं। हमारे राजाओं के महल खड़े हें जिन्हें संपूर्ण संसार देख रहा है।

इस लोकगीत में भी कवि ने प्राचीन राजमहलों का वर्णन - चित्रण करके अतीत की गौरव गाथा से वर्तमान को परिचित कराने और उन्हें आत्माभिमानी बनाने की कोशिश की है।

रचयिताः भगवान सिंह नंदा, ग्राम देवरी वि.खं. अमरपुर जिला ड़िंड़ौरी

अनुवादः डॉ. विजय चौरसिया

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

## 37. बड़ा देव का महल हमारा

बड़ा देव का महल हमारा,
सब महलों से भारी है।टेक।
छटवां फाटक अनार्य वीर का,
पवन सुत रखवारी है।
भीम बली से योद्वा भारी,
सन्यासी वतन हमारी है।।
हमारा सब महलों में भारी है,
बरम देई चौरागढ़ भारी,
बड़ा देव बंजारा है,
बाघ ,भालू, वनराज वहां पर,

चौरागढ़ राज हमारा है।।
हमारा सब महलों में भारी हैं।।
पांच पंच ने खोज लगाये,
पांच पंच रखवारी है।
स्वेत ध्वज में बड़े देव हैं,
चौरागढ़ की तैयारी है।।
हमारा सब महलों में भारी है। ।
भोरम देव एक चिन्ह है,
चौरागढ़ में चिन्हारी है।
दिया बार परबत की शोभा,
सूरजगढ़ जोत नियारा है।।
खोज बिना चिन्हा नहीं मिलता,
चिन चिन्हारी दुनिया है।
बगैर चिन्ह के चिन्ह नहीं है,
दुनिया भोली भाली है।।

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थ -

हमारे बड़ा देव का महल सब महलों से विशाल है। जिसका छटवां दरवाजा अर्नाय वीर का है। जिसकी रखवाली पवन सुत हनुमान करते हैं। हमारे देश में बलशाली योद्वा भीम है। हमारे महल सभी महलों से विशाल हैं। चौरागढ़ में बरम देई है और बंजारा में बड़ा देव निवास करते हैं। जहां बाघ,भालू और वन का राजा शेर रहता हैं चौरागढ़ हमारा राज्य है। चौरागढ़ को पांच पंचों ने खोजा है और पांच पंच उसकी रखवाली करते हैं। बड़े देव के मंदिर में सफेद ध्वज लहरा रहा है। भोरम देव का मंदिर एक स्मृति हैं चौरागढ़ भी हमारी स्मृति है। जिसके पर्वत पर दीपक जलता है। सूरजगढ़ की ज्योति निराली है। बिना खोजे ये स्मृति चिन्ह नहीं मिलते। बिना स्मृति चिन्ह के स्मृति नहीं है। ये दुनिया बहुत भोली - भाली है।

यह लोकगीत भी अतीत गाथा तथा पारंपरिक धार्मिक जनजातीय आस्थाओं की स्मृति कराता है। लोकगीत यह संदेश देता है कि व्यक्ति को खोजी दृष्टि से संम्पन्न होना चाहिये, ताकि वह अपने चारों ओर की वस्तुओं और परिस्थितियों का आकलन - विश्लेषण कर सके।

रचयिताः भगवान सिंह नंदा, ग्राम देवरी वि.खं. अमरपुर जिला ड़िंड़ौरी
अनुवादः डॉ. विजय चौरसिया

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

## 38. छोटा परिवार राखे सुख हवें आपार

बढ़त अबादी ला रोको भैया या जीके जंजाल है
छोटा परिवार राखे सुख हवें आपार
एक नोनी एक बाबू दोनों हवें हीरा
दाई - दादा के लागे दोनों वर माया - पीरा
परिवार बढ़े ले संगवारीन न मिलही घर - द्वार

खाये वर भोजन मिलही,पहिरे वर कपड़ा
सुखी संतान होही ता नई होही कोई लफड़ा
इलाज आसान होही परही जब बीमार
परिवार नियोजन अपना ले अब है गैसी आसान
न टांका न चीरा लागे न होवे परेशान
चैन मिलही तोला संगी करले तैं बाजार
पढ़े लिखे वर पूरा होही पुस्तक काफी
गाना मा गलती होही तो देना मोला माफी
कहना ला मान लो नई तो होही दुख हजार

0ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :**

हे भाई बढ़ती हुयी जनसंख्या को रोको यह शरीर का जंजाल है। छोटे परिवार में अत्यंत सुख है। एक लड़का और एक लड़की दोनों हीरा के समान होते हैं।वे दादा - दादी के प्यारे होते हैं। परिवार में ज्यादा सदस्य रहने से रहने के लिये मकान की समस्या हो जाती है। खाने को अच्छा भोजन नहीं मिलता न ही पहनने के लिये अच्छे कपड़े , संतान कम रहेगी तो घर में किसी भी प्रकार का विवाद हीं होगा। आपके बच्चे जब बीमार पड़ेंगे तो आप उनका अच्छा इलाज करा सकते हो। इसलिये परिवार नियोजन अपना लो। यह बहुत ही आसान है। इसके आपरेशन में न तो टांका लगता है न ही चीरा लगाया जाता है। परिवार नियोजन कराने से तुम स्वस्थय रहोगे और बाजार से अच्छे - अच्छे सामान लेकर आओगे। तुम्हारे बच्चों के लिये पढ़ने - लिखने के लिये पर्याप्त पुस्तकें होंगी। इस गीत में मैंने कुछ गलत सलाह दी हो तो मुझे माफ कर देना। तुम लोग मेरी सलाह मानोगे तो हजारों दुखों से छुटकारा पा जाओगे।

इस लोकगीत में समय की सापेक्षता के साथ कदम मिलाकर चलने की लोक चेतना के दर्शन होते हैं।जनसंख्या वृद्वि से विकास की धारा अवरुद्व हो रही है। परिवार निर्धनता और आभाव में जी रहे हैं। कम संतान होगी तो उन्हें बेहतर जीवन शैली मिलेगी। यही परिवार कल्याण का भाव इस लोक गीत में प्रस्तुत हुआ है।

रचयिताः भगवान सिंह नंदा, ग्राम देवरी वि.खं. अमरपुर जिला डिंड़ौरी
अनुवादः डॉ. विजय चौरसिया

0ध्ध्ध्ध्ध्0

## 39. झिन काटो रुख राई रे संगी

झिन काटो रुख राई रे संगी, झिन काटो रुख राई
किसम - किसम के जरी - बूटी मिलथै हमला दवाई
ये ही जंगल मा शेर ,चीता, भालू करथैं बसेरा
कांदा,कुशा ला खाके गा,करत रहथैं गुजारा
चिरैय - चुनगुन चहकत रहथैं ताल देवें शहनाई
तेंदू पत्ता के बिड़ी बनाथैं चार गोटी चिरौंजी
मौहा के दारु बनथै पिथै मोरी भौजी

झिन काटो रुख राई रे संगी, झिन काटो रुख राई

0ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थः-** प्रिय मित्र पेड़ पौधों को मत काटो,इन पेड़ पौधों से हमको अनेकों प्रकार की जड़ी - बूटियां मिलती हैं। इन्हीं जंगलों में शेर, चीता, भालू निवास करते हैं।वे इन जंगलों के कंद - मूल और घास खाकर अपना गुजारा करते हैं।इन्हीं जंगलों में पक्षी जब चहकते हैं तो उनकी ताल शहनाई की मधुर धुन के समान रहती है। इन्हीं जंगलों के तेंदू पत्ता से हम लोग बिड़ी बनाते हैं। इन्हीं जंगलों से चार की चिरोंजी भी प्राप्त होती है।इन्हीं जंगलों के महुआ के पेड़ में जो फल लगते हैं उससे शराब बनती है। जिसे हमारी भाभी पीती है।इसलिये प्रिय मित्र! पेड़ - पौधों को मत काटो।

इस लोकगीत में पर्यावरण संरक्षण की चेतना निहित है। इसमें लोगों से पेड़ आदि काटने से बाज आने को कहा गया है। पेड़ों के अनेक लाभ भी गिनाये गये हैं।जनजातियां वैसे भी अरण्य - प्रेमी होती हें।उससे भी एक कदम आगे बढ़कर पर्यावरण के प्रति जागरुकता जनजातीय समाज की नई विशिष्टता को दर्शाता है।

रचयिताः भगवान सिंह नंदा, ग्राम देवरी वि.खं. अमरपुर जिला ड़िंड़ौरी

अनुवादः डॉ. विजय चौरसिया

0ध्ध्ध्ध्ध्0

## 40. नदिया के दूर सिर में धुतिया पछारो

नदिया के दूर सिर में धुतिया पछारो।
अरजाय अरझाय ओ जामुन के डार।।
वारे लाने ओ दाई ओ मोरे छुरी कटारी।
अर जाय काटो ओ जामुन के ड़ार।
नै जाय बाई तोर छुरी कटारी।।
अर नहीं काटस ओ जामुन के डार।।

0ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :**

बेटी तू ससुराल जा रही है,आज से तू हरे - भरे पेड़ - पौधों को नहीं काटेगी बिना सोचे बिचारे इन घातक हथियारों से वृक्षों को नहीं काटेगी। तुम जामुन के पेड़ों को नहीं काटोगी। आज तक जो गलती की भी है उसे नहीं दुहरायेगी।

इन पंक्तियों में कितना महान संदेश विघमान है। आज जो पर्यावरण की सुरक्षा एवं मानव जाति के अस्तित्व की रक्षा हेतु प्राकृतिक संतुलन बनाये रखने की मुहिम चलाई जा रही है। गीत में नदी से अलग कपड़े धोने और पेड़ों को न काटने का संदेश है।जल प्रदूषण और पर्यावरण संरक्षण की भावना का एक अत्युत्तम उदाहरण है। पर्यावरण चेतना के बीज लोक में अनादि काल से विद्यमान हैं। यह इस बात का प्रमाण है।

संकलन एवं अनुवाद : डॉ. प्रताप सिंह चंदेल ड़िंड़ौरी

## 41. पैली पवार तोला गावै हो देवी शारदा

पैली पवार तोला गावै हो देवी शारदा

पैली पवार हो रे............
खरना के गायौं भैया खरना के बजयौं।
ओ हो हाय लैंव ठाकुर देव के नाम।।
हो देवी शारदा हो..............
पैली पवार तोला कंठन बैठी भैया।
कंठा सुर माता ओ हो हाय।
बीच में बैठे गौरी गनेश।
पैली पवार रे देवी शारदा रे.......
जरवा के जड़ी बूटी छींदी चितावर।
ओ हो हाय खरना के गुरु बैताल।।
हो देवी शारदा रे पैली पवार रे......
कंठन बैठी भैया कंठासुर माता ।
ओ हो भूले अक्षर समझाय।।
हो देवी शारदा रे पैली पवार रे..........

गीतार्थ -

हे मां देवी शारदा मैं आपके गुणों का गान करता हूं। खेरमाई के लिये मैं गाता हूं और उन्हीं के लिये बजाता हूं। हे माता देवी शारदा में आपके ही गुणगान करता हूं। मैं ठाकुर देव का नाम लेकर उनको भी नमन करता हूं। गले में कंठासुर माता विराजमान हें। बीच में गणेश जी गौरी के साथ विराजमान हें। जरवा की जड़ी बूटी और छींदी चितावर को भी नमन करता हूं। हे देवी शारदा आप मुझे भूले अक्षरों को समझा दें।

संकलन एवं अनुवाद - डॉ. विजय चौरसिया

## 42. मैया शारद सिंग रे सवार

तरे हरे नाना रे तरे ना ना री हो।
मैया तरे हरे ना ना रीना।।
शारद शारद रे सिंग शारद हों।
मैया शारद सिंग रे सवार।।
पहले तो जनमे रे धरती माता।
मैया दूजे में खैर बहेर।।
तीजे में जनमे रे ठाकुर देवता,मैया चौथे में गौरी गनेश।।
पांचे में जनमे रे चंदा सूरज,मैया धरती में फैंके उजियार।।
छटवें में जनमे नागा बैगा रे नागा बैगिन ।
मैया उन हवैं धरती रखवार।।
कंठन बैठो ऐ रे कंठासुर ,मैया जिमियन गौरी गनेश।।
बाजा में बैठे ए रे सरसेती ,मैया संकट हो रजा सहाव।।
शारद शारद तोलाय हम गायेन,मैया जादू ला देवे भगाय।।

गीतार्थ :-

शारदा माता ,सिंह सवार मां दुर्गा पहले धरती माता का जन्म हुआ, दूसरेमें

खैर(कत्था),बहेरा वृक्ष उत्पन्न हुआ,तीसरे स्थान में उसी वृक्ष के नीचे ठाकुर देवता का जन्म हुआ,पांचवें स्थान में चांद व सूरज को जन्म लेते ही उनका प्रकाश फैल गया। जो आज भी अमर है,छटवें स्थान में नागा बैगा व नागिन बैगिन का जन्म हुआ मैया वे ही धरती का भार संभाले हुये हैं।

संकलन एवं अनुवाद -डॉ. विजय चौरसिया

# बैगा जनजाति में प्रचलित राजनैतिक एवं सामाजिक चेतना के लोक गीत

## बैगा

बैगा जनजाति मुख्यतः मंड़ला, ड़िंड़ौरी, अनूपपुर, शहड़ोल,उमरिया, सीधी,बालाघाट ,बिलासपुर कवर्धा और सरगुजा जिलों में केन्द्रित है।बैगा समुदाय अनेकों जातियों में बंटा हैं ये जाति को महत्व देते है गोत्र को नहीं। प्रत्येक जाति का एक टोटम होता है। ये टोटम की पूजा करते हैं।इस जनजाति के लोग अपना जीवनयापन बहुत कम साधनों से करते हैं। ये स्वभाव से भोले ,शर्मीले और ईमानदार रहते हैं। इस समुदाय में शिक्षा का प्रतिशतः नगण्य है। अब इनमें शिक्षा के प्रति कुछ रुचि देखने को मिलती है। इस जनजाति की मुख्य सात शाखायें इस प्रकार हैंः- भूमिया,बिंझवार,भरौतिया,नाहर या नरौटिया, भैना,कोड़वान, मुड़िया या मुरिया। बैगा अपने को भूमिया भी कहते हें।ये पहले बेवर खेती करते थे। अब शासन ने इस पर प्रतिबंध लगा रखा है। ये जंगलों से लकड़ी,वनोपज तथा महलोन के पत्ते एकत्र करते हें।इन्हीं चीजों के सहारे अपना जीवनयापन करते हें।बैगा अभाव,गरीबी और दुखों को नृत्य और गीतों में भुला देते हैं।बैगा जनजाति की महिलायें अतयंत गुदना प्रिय होती हें। ये अपने पूरे शरीर में गुदना गुदवाती हैं। इनके प्रमुख लोक नृत्य करमा, रीना - शैला, कहरवा, भड़ौनी, दशराहा हैं।

## बैगा जनजाति में प्रचलित राजनैतिक एवं

## सामाजिक चेतना के लोक गीत -

इस शीर्षक के अंर्न्तगत मैंने 3 लोकगीतों को रखा है। लोक गीतों की गहरी पड़ताल करने और उनके अंदर सूक्ष्म चेतना तत्वों का विश्लेषण करने के लिये कुछ और उपशीर्षकों में उन्हें विभाजित किया है।

1. स्वाधीनता पूर्व की राजनैतिक - सामाजिक चेतना से युक्त लोकगीत -

### 1. चालो के चालो हमार देश मा।

चालो के चालो हमार देश मा।
आली रे मैदान हमार देश मा।
आली रे मैदान मा भारी अस पीपर।
भारी अस पीपर तरे महिलान झार रे।
महिलान झार तरे गांधी जी के ड़ेरा।
गांधी जी के डेरा मा उलहई करला बांस।
पेड़ बोंगा बोले ,फूलों की बोंगा बोंगे रे ।
माझे बोंगा न के तकुआ बनाये।
तकुआ बनाये भैया पौनी बनाये रे।
ऐसन लुगरा बने भाई फटे न फटाय।

**गीतार्थ -** बैगा युवक कहते हैं। हे भाई हमारे देश में चलो। हमारे देश में बहुत बड़ा मैदान है। उस मैदान में बहुत बड़ा पीपल का वृक्ष है। उस वृक्ष के पास एक महलोन का वृक्ष है। महलोन के वृक्ष के नीचे गांधी जी आकर रुके हैं। गांधी जी के निवास में एक बांस का पेड़ ऊगा है। उस बांस के वृक्ष में नई - नई कोपलें निकल रही हैं। गांधी जी ने उसी बांस से सूत कातने वाला तकुआ बनाया है। उसी तकुआ से सूत काता है। उसके लिये रुई की पौनी बनाई हैं उसी सूत से ऐसी साड़ी बनी है की फाड़ने से भी नहीं फटती।

इस लोकगीत में गांधी जी के द्वारा चलाये गये खादी आदोलन की चेतना के दर्शन होते हैं।विदेशी वस्त्रों और विदेशी सत्ता के विरोध में राष्ट्रीयता की भावना इस गीत की आत्मा है।

संकलन एवं अनुवादः ड़ँा. विजय चौरसिया

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

### 2. डोंगरी पहार रे ,गांधी संग जावो रे।।

देश ला काम आवो बाय देश ला जितावो रे।
ड़ोंगरी पहार रे ,गांधी संग जावो रे।।
फिरंगी ला भगावो बाय देश ला जितावो रे।
ड़ोंगरी पहार रे,गांधी संग जावो रे।
सुभाष संग जावो रे,गांधी संग जावो बाय।।
देश ला काम आवो बाय, देश ला जितावो रे।
हिन ला न रहन देवो बाय, देश ला बचावो रे।
ड़ोंगरी पहार रे गांधी संग जावो रे।।

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थ -

बैगा युवक कहते हैं ऐ बाई मुझे देश को जिताना है। चाहे उसमें शहीद हो जाऊं। मुझे जंगलों और पहाड़ों में गांधी जी के साथ जाना है। अंग्रेजों को देश से भगाना है और देश को बचाना है। इसके लिये मैं जंगल और पहाड़ों में गांधी जी के साथ जाऊंगा। मैं सुभाष चंद्र बोस के पास जाऊं या गांधी जी के साथ जाऊं। परंतु मैं देश को आजाद करा कर ही रहूंगा। चाहे उसमें शहीद हो जाऊं। इन अंग्रेजों को अपने देश में नहीं रहने दूंगा। हमें अपने देश को बचाना है। उसके लिये जंगलों और पहाड़ों में गांधी जी के साथ जाना है।

गांधीवादी विचारधारा और गांधी जी के नेतृत्व में चलने वाले स्वाधीनता संग्राम में सक्रीय भागीदारी की राजनैतिक चेतना इस गीत में प्रस्तुत हुई है।

संकलन एवं अनुवादः ड्ँा. विजय चौरसिया

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

## 3. दुर्गा रानी जादू मारे कंवलगढ़ भुंजाये

दुर्गा रानी जादू मारे कंवलगढ़ भुंजाये।
लाखों सूरमे संग्राम जूझि गये।।
नहर बेली नहीं चलावे ।
नाहीं छूटे रानी के बोली।।
धनौ पापी अंग लगायो रक्त बीजो।
धंधागढ़ मा हवेली सुनाये।।

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थ -

रानी दुर्गावती ने जादू चलाया, जिससे कंवलगढ़ जल गया। राजा संग्राम सिंह लाखों सूरमाओं के साथ युद्व करने लगे। नदी नाले रोने लगे। उनका बहाव रुक गया। रानी दुर्गावती का वचन खाली नहीं गया। जितने धनी और पापी थे। सब जलकर मर गये और धंधागढ़ की हवेली सूनी हो गई।

बैगा जनजाती के लोग अपनी पूर्वज वीर रानी दुर्गावती की वीरता की स्मृति को बनाये रखने वाले इस लोकगीत में वंशीय स्वाभिमान की गरिमा की समाजिक चेतना की अभिव्यक्ति हुई है।

संकलन एवं अनुवादः ड्ँा. विजय चौरसिया

0ध्ध्ध्ध्ध्0

# Hkhy tutkrh; esa izpfyr jktuSfrd ,oa lkekftd psruk ds yksd xhr

## भील

भील नाम द्रविण भाषा परिवार के अंन्तर्गत कन्नड़ के " बील" शब्द से लिया गया है। जिसका अर्थ है धनुष । यह सच है कि आदिम विश्वासों में जीने वाली इस सरल स्वभाव जाति के लोग अपने धनुष कौशल में कोई सानी नहीं रखते । इसलिये इनका नामकरण भी इनके गुणों के आधार पर हुआ। रसेल और हीरा लाल के अनुसार सन् 600 ईसवी से ही यह शब्द प्रयोग में आया। जिसके पूर्व यह जनजाति संभवतः ' पुलिन्द ' तथा 'वन पुत्रादि ' नामों से विख्यात थी।

वर्तमान में भारत में भीलों का वास मध्य प्रदेश, राजस्थान, गुजरात व महाराष्ट्र राज्यों में प्रमुख रुप से हैं।

मध्य प्रदेश के पर्वतीय वनखंड़ों में भीलों का विस्तार अधिक है। यहां ये लोग विंध्य और सतपुड़ा के पहाड़ी भागों में नर्मदा तथा माही नदी के किनारे तथा झाबुआ, थांदला, पेटलावाद, अलिराजपुर, जोबट, नारकुंड़ी, बाग, छोटा उदयपुर, बड़वानी, खरगोन, तलोद, शाहदा, सिरपुर, अमझेरा, पश्चिम निमाड़, धार और रतलाम जिलों में प्रमुख रुप से बसे हुये हैं। यह एक तथ्य है कि भील आर्यों के आगमन के पूर्व ही इस समूचे क्षेत्र में फैल चुके थे । राजपूत, भीलों को क्षेत्र के सबसे पुराने निवासी मानते हैं एवं राजपूतों के राज्याभिषेक तब तक सम्पन्न नहीं होते थे , जब तक भील सरदार का अभिषेक न कर दें। भील अपनी मूल भाषा एकदम भूल चुके हैं, इसलिये उनकी पहचान के संदर्भ में भाषा का अधिकार भी हमारे पास नहीं है। मैंने उनके क्षेत्र के सर्वेक्षण के दौरान देखा कि उनकी रोजमर्रा की भाषा अनेक बोलियों में विभक्त है, जो कि विकास की दृष्टि से अपनी अलग पहचान रखती है।इस क्षेत्र में भीलों की चारों उप - शाखायें बारेला, भिलाला, पटलिया, और रॉठ भी निवास करते हैं।

भील जनजाती के लोग गुजरात, राजस्थान के सिरोही, उदयपुर,कोटरा,सरसों,दांता विलरिया,

ईडर,दुसारिया,बावलिया, चंदोर, कलवन, खैरवाड़ा, डूँगरपुर, बांसवाड़ा, मालपुर, बलसिमोर, कुरनो, सूंथ, लूणावाड़ा, झालोद आदि में तथा महाराष्ट्र के नंदुरवार,नांदेड़,नासिक, पोंन, खरगना आदि ग्रामीण क्षेत्रों में प्रमुख रुप से बसे हैं।

भील सदैव अपने साथ धनुष - बाण रखते हैं। धनुष बाण भीलों की प्रमुख पहचान हैं ये लोग अंधेरे में भी तीर का निशाना लगाने में कुशल होते हें। जंगलों में हिंसक पशुओं से बचने के लिये धनुष बाण भीलों की आत्म रक्षा का सबसे बड़ा शस्त्र है।स्वतंत्रचेता भील स्वावलम्बी और परिश्रमी है, इसलिये सम्मान पूर्ण जीवन उन्हें पसंद है। भीलों में कहावत है कि - ' जुग जैरी तो मुलक बैरी ' अर्थात कड़वी जुबान से ही सारा संसारा हमारा दुश्मन बन जाता हैं कुछ न मिले , किन्तु मधुर वाणी मिले,यह पर्याप्त हैं। आदिवासियों में भील जनजाति का विशेष महत्व है। भीली इनकी बोली है। जब भारत में गांधीवादी आंदोलन चला, तब देशव्यापी लहर ने भीलों के मानस को भी उद्वेलित किया। स्वतंत्रता आंदोलन ने जब सारे देश को मंथ दिया था। तब भील भाई भी इससे अछूते न रह सके। ऐसे ही देशप्रेमी और क्रांतिकारियों में टंट्या भील,भीमा नायक भी अमर नायक हैं। जिनके बलिदान ने हम मध्यप्रदेश - वासियों का मस्तक गौरव से ऊंचा कर रखा है।

## भील जनजाति में प्रचलित राजनैतिक एवं सामाजिक चेतना के लोक गीत -

इस शीर्षक के अंर्न्तगत मैंने 28 लोकगीतों को रखा है। लोक गीतों की गहरी पड़ताल करने और उनके अंदर सूक्ष्म चेतना तत्वों का विश्लेषण करने के लिये कुछ और उपशीर्षकों में उन्हें विभाजित किया है।

1. भील जनजाति में राजनैतिक चेतना से युक्त लोकगीत -

### 1. नोम सुणीं भीमा नो.....

नोम सुणीं भीमा नो
बोंड़ आखा नाहटी गोथा
इनी बोयड़ी तीर चोल्या
उनी बोयड़ी घेरों से
नोम सुणीं भीमा नो.......

0

इनी पोरे भीमो से
उनी पोरे बोंड़ खोड्या
नोम सुण्यो भीमा नो
बोंड़ आखा कांपी रुया
नोम सुणीं भीमा नो.....

0

बोंड़ को भागणें से

भीमा को आवणों से
ओबी राते नोय रोयसे
दुःख सोरा कोटी जोसे
नोम सुर्णी भीमा को..........
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थ :

इस गीत में भीमा के शौर्य का वर्णन किया गया है - भीमा नायक का नाम सुनकर समस्त अंग्रेजी सिपाही भाग खड़े हुये हैं।इस पहाड़ी पर भील सैनिक खड़े हैं और वे एक साथ अंग्रेज सिपाहियों पर तीर बरसा रहे हैं,दूसरी ओर पहाड़ी पर भील सैनिकघेरा ड़ालकर खड़े हुये हैं।इस ओर भीमा पूरी तैयारी से खड़ा हुआ है।उस ओर अंग्रेज सिपाही खड़े हैं।किंतुजैसे ही उन्हें मालुम पड़ा कि सामने भीमा है,वे सब एक साथ कांप उठे।गीत कीअंतिम पंकित में भील बालायें अपनी गरीबी और वर्तमान दुःख से निर्वति के लिये खुद ही समाधान ढूंढ़ रही हैं।तब उनका भावूक मन गा उठता है - एक बार फिर इस धरती पर भीमा को आना हैऔर अंग्रेजों को भगाना है। उनका अशिक्षित मन इस बात को स्वीकार नहीं करता की अंग्रेज यहां से चले गये। दुख भरी रात अब नहीं रहेगी। क्योंकि भीमा के आने से उनके सारे दुःख कट जायेंगे।

संदर्भ ग्रंथ - लोक साहित्य में भीमा नायक.

## 2. चोदंनी यो रोत से....

चोदंनी यो रोत से....
भीमा की बात से
रुपलो पोरियो घोड़ो बोणें
गुटियो पुरिया भीमों रे!
ओवरे पुरिया भीमो - भीमों खेलसां
0
खेड़ी पोरिया बोड़ बोणें
इनी पोखर तीर चोल्या
बड़वानी ना हाट से
बोन्दूक मांगवाणो से
ओवरे पुरिया भीमो - भीमो खेलसां
0
हाटे सिलावद का पोगड़ी रांगणो से
खा्रया ना जोंगल की कामठी बुलाणों से
तानो बाबा गांफड़ी चोलावगा
तिस्यो बाबो मोंदल बाजसे
ओवरे पुरिया भीमो - भीमो खेलसां
0
जोल्दी कोरो चोंद बोयड़ी भोग से

कोऽले सोभी पुरिया
वेगुऽल सा ओवजो
साथे सोभी ओपणों गोफणी भी लोवजा
ओवरे पुरिया भीमो - भीमो खेलसां
0ध्ध्ध्0

**गीतार्थ -**

गांव की सभी बालायें चांदनी रात में भीमा का खेल खेल रही हैं। इस अवसर पर रुपला नाम का लड़का घोड़ा बनेगा और गुटिया नाम का लड़का भीमा का स्वांग धरेगा। वे सबको आमंत्रित करते हुये कह रही हैं कि सब लड़के आ जाओ, हम सब भीमा का खेल खेलेंगे। इस खेल में खेड़ी के लड़के अंग्रेज सिपाही बनेंगे और हम इस पोखर से तीर छोड़ेंगे। बड़वानी के बजार से बंदूक भी बुलाना हैं सिलावद के बजार से पगड़ी भी रंगवाना है तथा खर्या के जंगल से तीर - कामठी भी बुलवाना हैं तानों नाम का बाबा गोफन चलायेगा और तिस्या नाम का बाबा मांदल बजायेगा। ऐसे सुन्दर खेल के अवसर पर तुम जल्दी करो। क्योंकी चांद पहाड़ियों की ओर भाग जायेगा। अंधेरा होने पर हम ठीक से खेल नहीं पायेंगे। वे सभी को हिदायत देते हुये गीत में कहती हैं - कल सभी लड़के जल्दी से आ जाना और अपने साथ एक - एक गोफन भी लाना। गीत की अंतिम पंक्ति में फिर वही पुनरावृति होती है।सभी लड़के आ जाओ, हम सब भीमा का खेल खेलेंगे।

संदर्भ ग्रंथ - लोक साहित्य में भीमा नायक.

## 3. कोंण भीमो बोणसे

सोबी दोगो दी रोया
दुःख नो सोंसार से
कोऽली - कोऽली रोत से
ओसा मा तारे कुणीं
कोंण भोया बोंण से
भीमो फिरी ओवसे
0
सोबी दोगा दी रोया
बोड़ी - बोड़ी वात छे
होमी सोबी रुय रोया
बोयरिया सोबी हुय गोया
कोंण भोया बुणसे
भीमों फिरी ओवसे
0
सोबी दोगा दी रोया
नेता सोगऽला हुय गुया

बोंड़ ने भोगाणां से
माणस्या जुगाणों से
कोंण भोया बोंण से
भीमा फिरी ओवसे
0
भोगवान नी दोय कोरे
सिमलो नींद ओयलो से
घोड़ा नी बोसी ने
बोन्दूक ने ताणी ने
ओनी बोयड़ी खोड़िया भीमा
भीमों फिरी ओवसे
0
सोबी दोगा दी रुया
मणस्या नी जोगीरिया
मॉ रुड़े शनिया पोर्या
भाग फिरी जोग से
कोंण भीमा बोण से
भीमों फिरी ओवसे
0ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ -**

अंधेरी रात है और सभी उन्हें धोखा दे रहे हैं। इस समय उन्हें कौन तारेगा? कौन भाई बनकर आयेगा? मन में एक आस है कि भीमा फिर एक बार जन्म लेगा। सभी जन बड़ी - बड़ी बातें कर रहे हैं और सब रो रहे हैं। सब बहरे हो गये हैं। नेता भी सभी सो रहे हैं।ऐसे में सभी आदिवासियों को एक बार फिर से जगाना है। ईश्वर भी इस समय तो उन पर दया नहीं कर रहा है। किंतु उन्हें एक स्वप्न आयाहै। भीमा घोड़े पर बैठा हुआ, बंदूक तानकर इस पहाड़ी पर खड़ा हुआ है। उन्हें एक बात का दुख हैकि आदिवासी नहीं जाग रहे हैं। वह अपने शनिया नाम के छोटे बालक को दिलासा देते हुये कहती है कि तू मत रो सबके भाग्य एक बार फिर जागेंगे और भीमा फिर से एक बार जन्म लेगा।

संदर्भ ग्रंथ - लोक साहित्य में भीमा नायक.

## 4. लाल घोड़ाऽ बोसी आयो

लाल घोड़ाऽ बोसी आयो,
सुरसी नो लोल से।।
बोंन्दूक सोणी इनी बोयड़ी,
सुरसी नो लोल से ।।
ठाकुर जैसो मूच्छों वाऽलो,

सुरसी नो लोल से ।।
बोंड़ देखी कोंपी रोया,
सुरसी नो लोल से ।।
सोबकी दोया जो कोरे,
सुरसी नो लोल से ।।
देवी मोय नो भोगत जो,
सुरसी नो लोल से ।।
नरा मोणस्या भोगत बोण्या,
सुरसी नो लोल से ।।
कोण सोदो योद रयसे,
सुरसी नो लोल से ।।
इनी पोरे कुण से,
सुरसी नो लोल से ।।
उनी बोयड़ी कुण से,
सुरसी नो लोल से ।।
0ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थः**

इस गीत में सुरसी के बेटे भीमा की समस्त विशेषतायें जो उन्हें गर्वोक्ति से भर देती है कि प्रस्तुति है।जो लाल घोड़े पर बैठकर आया हैं वह कौन है? प्रश्नोत्तर शैली में दूसरा दल उत्तर देता है - वह सुरसी का प्यारा बेटा है। यह प्रश्नोत्तर निरंतर जारी रहता है। इस प्रकार इस पहाड़ी पर बंदूक तानकर , ठाकुर जैसी बड़ी - बछ़ी मूंछों वाला, जिसे देखकर अंग्रेज सेना कांप रही है, जो सब पर दया करता है , जो देवी मॉ का भक्त है, जिसका सारा भील समाज भक्त है,जो सदा ही याद रखा जायेगा, जो इस नदी के पार खड़ा है और कभी उस पहाड़ी पर,कौन है ? इन सब का बस एक ही उत्तर है और वह है सुरसी का प्यारा बेटा भीमा ही है। भीमा के वीर साहसी व्यक्तित्व की यह सुन्दर बानगी और भील बालाओं की लयबद्वता सुनकर पांव भी थिरके बगैर नहीं रहते।

संदर्भ ग्रंथ - लोक साहित्य में भीमा नायक.

## 5.बोंड़नी मोरनो से भीमो बोन जाणों से

बाबो 1 नी घोड़ा लावे डाहल्यो 2 नी सुणें
काको 3 नी सुणे न फुई 4 भी नोय सुणें
मोामो 5 नी सुणें नी मोमी 6 नी सुणें
बोड़नी नी मोरनों से भीमों बोण जाणों से

0

दादो 7 नी घोड़ों लावे भोभी 8 नी सुणें
उना पारे बोड़ो दादा न दोदी नी सुणें
नाहली फुई 9 सुणें नी फुई 10 नी सुणें

बोंड़ नी मोरनों से भीमो बोण जाणों से

0

भोगवान नी घोड़ो लावे कोंय नी सुण्ी रोया

पोटेल नी घोड़ों लावे कोयनी सोणी रोया

कोसों म्हारों घोड़ों आवे कायनी सोणी रोया

बोंड़ नी मोरनों से भीमों बोंण जाणों से

0ध्ध्ध्0

**शब्दार्थ -**

1.पिता, 2 पिता का बड़ा भाई, 3 पिता का भाई, 4 पिता की बड़ी बहन, 5 मामा, 6 मामी, 7 बड़ा भाई, 8 बड़े भाई की पत्नी, 9 पिता की छोटी बहन, 10 पिता की बड़ी बहन।

**गीतार्थ -**

इस लोक गीत में माता अपने बेटे की ओर से बालक का घोड़ा प्राप्त करने की इच्छा को अभिव्यक्त करती है। चांदनी रात में आस - पास के टपरों की महिलायें एक बड़े आंगन में एक साथ गोल घेरा बनाकर गाती हैं। पिता भी घोड़ा लाकर नहीं दे रहा है और न ही पिता के बड़े भाई भी उसकी सुन रहे हैं।पिता के छोटे भाई भी उसे घोड़ा लाकर नहीं दे रहे है और न ही पिता की बड़ी बहन भी उसकी मांग को पूरा कर रही है। मुझे तो इस समय भीमा का रुप धारण करना है तथा अंगेजों को मार भगाना हैं बड़े भाई और भाभी भी उसे घोड़ा लाकर नहीं दे रहे हैं।पिता की छोटी बहन और बड़ी बहनें भी नहीं सुन रही हें।उसे तो भीमा बनना है और अंग्रेजों को मार भगाना है।ईश्वर भी इस समय मेरी नहीं सुन रहा है। कोई भी तो नहीं सुनता, मेरा घोड़ा किस प्रकार से आयेगा।मुझे तो भीमा बनकर अंग्रेजों को मार भगाना है।

*संदर्भ ग्रंथ - लोक साहित्य में भीमा नायक.*

## 6. यो चोंद जोगी गुयो....

यो चोंद जोगी गुयो

बोयड़ी बोयड़ी चोंदड़ी से

मोंदल पोर नांणू ने कूदणूं से

भीमा को ओवणू से

यो चोंद जोगी गुयो...

00

छोटली बोई याव से

बाना बठावणूं से

पावणां बुलावणों से

याव छोटली खुली उठे

भीमा को आवणूं से

00

मोंदल की भोरी थाप

बोयड़ी - बोयड़ी गूंजसे

कोतरो भी काम हूसे

भाया भीमो ओवसे

भीमा का आवणूं से
00
भीमो जो ओय गुयो
भागे सोभी जोगी गुयो
सुरसी ना लाल सुणों
तुमको तो आवणूं से
यो चोंद जोगी गुयो.......
0ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :**

चंद्रमा ऊग आया है, चारों ओर चांदनी फैली है आसपास की सभी पहाड़ियां चांदनी से प्रकाशवान हो उठी हैं और ऐसे में मांदल की थाप पर नाचना है, मस्ती में झूमना है।

इस अच्छे वातावरण में भीमा को आना ही है।यहां भोले मन का विश्वास फिर जाग उठा है कि वह जरुर आयेगा।इसी सुखद वातावरण में छोटी बहन का विवाह तय हो गया है। उसे बाने भी बैठाना है। मेहमानों को भी बुलवाना है। मेहमानों के आने से विवाह की शोभा दोगुनी हो उठेगी। ऐसे सुखद क्षणों में भीमा को तो आना ही है।

दूर - दूर तक पहाड़ियों पर मॉदल की थाप गूंज उठेगी। ऐसे समय भीमा ! को कितना भी काम क्यों न हो उसको आना ही पड़ेगा। गीत की अंतिम पंक्तियों में युवतियां आशान्वित होकर गा रही हैं - यदि ऐसे में भीमा आ गया तो समझो सभी के भाग्य जाग उठेंगे। इसलिये हे सुरसी के लाल तुम ध्यान से सुनो , इस समय तुम कहीं भी हो तुमको आना ही पड़ेगा।

संदर्भ ग्रंथ - लोक साहित्य में भीमा नायक.

## 7. घोड़ा नीऽ टोप गूंजे टोपऽ टोप

घोड़ा नीऽ टोप गूंजे टोपऽ टोप
मामो थारो कोमठी ताणें खोड़ो रेऽ
बोंड़ नी फोज खोड़ी देखणों छेरे लोल
हुय जारे! हुयजा, म्हारा रुंजा
0ध्ध्ध्.0

**गीतार्थ -**

मेरे लाल रुंजा तू सो जा, घोड़े की टाप यहीं कहीं आसपास टप - टप कर गूंज रही है।इस समय तेरा मामा भीमा तीर - कामठी तानकर खड़ा है और अंग्रेजों की सेना को देख रहा है।

इस तरह की लोरी भील महिला रात्री के समय अपने नन्हें शिशु को झोली में सुलाते समय गाती है। भील क्षेत्र में भील महिलायें प्रायः अपने बच्चों को रात्री में सुलाने के लिये इसी प्रकार की लोरियां गाकर उनको दुलारती हैं। इन गीतों में प्रलोभन और भय दोनों रहता है। यहां

मॉ बच्चे को मामा की व्यस्तता का संकेत दे रही है। इस गीत में भीमा के व्यक्तित्व की विशेषता का बखान किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ - लोक साहित्य में भीमा नायक.

## 7. भील जनजाति में सामाजिक चेतना से युक्त लोकगीत -

गांधी जी से प्रभावित कुछ लोक गीत उस समय इनके क्षेत्र में प्रचलित थे। इन लोक गीतों की प्राप्ति का स्त्रोत दत्त महराज कृत भिलोड़ी रामायण एवं फूलजी भाई भील हैं।जो इस प्रकार है -

## 8. रई ने केवॅ बोले रे गांधी हंई आवे।

रई ने केवॅ बोले रे गांधी हंई आवे।
धोली ने टोपी रे गांधी हंई आव रे ।
लावों ने कुरतो पेरियो गांधी हंई आवे रे।
अंगरेजर नॅू राज गांधी हंई आवे रे।
गुलामी नहीं करवी गांधी हंई आवे रे।
ऐम के तो आवे गांधी हंई आवे रे।

एक और भीली गीत जिसे फूलजी भाई भील ने गाया है, यहां प्रस्तुत है। इसका भाव यह है कि मन जी नामक भील सचमुच बड़ी दुविधा में पड़ गया है। उसने सोचा अभी मेरा समय ठीक नहीं है।मेरा कुंआ भी टूट - फूट गया है। क्षेत्र में आकाल पड़ गया है और ऐसे ही बुरे समय में पिताजी का देहान्त हो गया है। इधर आकाल का पड़ना उधर पिता का मरना उसे दोनों तरफ मौत दिखाई दे रही थी। क्योंकी पिता का मरना और कुंआ का गिरना दोनों घटना एक साथ हो गयी थी। मनजी ने फिर शांति और धैर्य धारण करते हुये कहा - मैं कुंआ खोदूं या मृत्यू भोज करुं पर उसने गांधी जी का उपदेश मानकर मन ही मन कहा मन जी मेरी बात सुन । भोज करेगा तो तेरे बाल बच्चे भूखे मर जायेंगे। पशु संपदा नष्ट हो जायेगी। इसलिये भोज का विचार छोड़ और अपना कुंआ खोद और उसकी मरम्मत कर । इससे बाल - बच्चे भी जियेंगे और पशुधन भी बचा रहेगा। जब समय बदलेगा तो भोज भी करा लेना। ऐसा सोचकर उसने मृत्यू भोज का विचार त्याग दिया और कुंआ खोदने लगा। प्रस्तुत लोक गीत में गांधी वादी विचार धारा को पोषण मिला है जो इस प्रकार है -

## 9.हांसु राईने केवें बोले मनजी नाल मांये रे।

समीयू ने पडज्युँ ने कूडो धरियो मनजी नाल मांये रे।
सभीयू रे पडीयू ने बापू मरीयू मनजी नाल मांये रे।
काल तू परनार ने बापन मरनार मनजी नाल मांये रे।
बापू रे मुओ ने कुडो धरियो मनजी नाल मांये रे।
नीयाते करु के कुडो खोदुं मनजी नाल मांये रे।
गांधी को केणो हांचल मारी वातां मनजी नाल मांये रे।
नीयाते करीने सोरां मरहैं मनजी नाल मांये रे।

सोरा रे मरतां हाँ पल मरहँ मनजी नाल मांये रे।
नीयाते सोडी ने कुडो खो दी मनजी नाल मांये रे।
कूडो खोदो हाँ ते सोरां जीवहँ मनजी नाल मांये रे।
सोरा रे जीवॅह ते नामरे है मनजी नाल मांये रे।
समीयू रे ल हें ते नीयाते कर हूं मनजी नाल मांये रे।
रे मन जी भाई कुडो खोदवे लागो मनजी नाल मांये रे।

संकलनकर्ता - डॉ. प्रहलाद जोशी

संदर्भः गांधी लोक गीत ग्रंथ म.प्र.शासन संस्कृति विभाग

विवाह के बाद वधु से भाई बहन, माता - पिता मिलाप करते हुये रोते हैं। ऐसे मांगलिक अवसर पर सभी की आंखों से अपने आप अश्रूधारा बहने लगती है। ऐसे ही क्षणों में वधु की मॉ और उसकी सहेलियां गीत गाकर उसको सीख देती हैं।

## 10. सासू बोलाड़े बणी जरा बोलजे।

सासु बोलाड़े बनी जरा बोलजे।
बनी बोल बिराणों लागे।
माई बोलाड़े बेगि बोल नानी बनड़ी।
बोल पियारो लागे।
सेसरो बोलाड़े, धीरे बोल नानी बनड़ी।
बोल बिराणों लागे।

**गीतार्थः**

वधु घर की महिलायें सीख देती हुयी कहती हैं - मायके वाले आवाज दें तो जल्दी और जोर से बोलना , क्योंकी माता - पिता को तेरी आवाज बहुत अच्छी लगती है। ससुराल में सास या ससुर बुलावें, तो धीरे व शांत स्वभाव से बोलना, क्योंकी ससुराल वाले पराये हैं, हो सकता है तुम्हारी आवाज ( जोर से बोलना) उनको पसंद न आये ।

संकलनःडॉ. महेश चंद्र शांडिल्य

## 11. सोना नौ ढुल्यो बेनी,रुपा ना पाया

सोना नौ ढुल्यो बेनी,रुपा ना पाया
सोना नौ ढुल्यो बेनी,रुपा ना पाया।
ढुल्यो छुड़ि देजी बेनी,माय झुणिं छुड़जी।
सोना नौ ढुल्यो बेनी,रुपा ना पाया।
ढुल्यो छुड़ि देजी बेनी,भाइ झुणिं छुड़जी।
सोना नौ ढुल्यो बेनी,रुपा ना पाया।
ढुल्यो छुड़ि देजी बेनी,बास झुणिं छुड़जी।
सोना नौ ढुल्यो बेनी,रुपा ना पाया।
ढुल्यो छुड़ि देजी बेनी,भेजाइ छुड़जी।
सोना नौ ढुल्यो बेनी,रुपा ना पाया।

ढुल्यो छुड़ि देजी बेनी,बहणिस् झुणिं छुड़जी।

**गीतार्थः**

वधु पक्ष की महिलायें अश्रुपूरित ऑखें लिये विदा कर रही हैं और कहती हैं कि तेरा पलंग सोने का है और उसके पाये चांदी के हैं । पलंग छोड़ देना, परंतु माता को मत छोड़ना। इसी प्रकार पिता,भाई, भैजाई एवं बहन को नहीं छोड़ने का आग्रह किया गया है।इस गीत में मुख्य रुप से परिवार से अच्छे सम्बन्ध बनाये रखने के लिये आग्रह किया गया है।

संकलन - महेश चंद्र शांड़िल्य

## 12. खेती खेड़ो हरि नाम की,

खेती खेड़ो हरि नाम की,
तेमा मिलसे लाभ।।
पाप ना पालवा कटाव जो,
धरमी हले अपार।।
एची खेचिन बायरा लावजो,
खेती कंचन थाय।।
खेती खेड़ो रे हरि नाम की,
तेमा मिलसे से लाभ।।
ओम - सोम दोउ वाल दिया,
हॉरे सुरता रास लगाय।।
रास पिराणा धरिन हातमा,
हॉ रे सूरा दिया ललकार,
खेती खेड़ो रे हरि नाम की,
तेमा मिलसे रे लाभ।।
सत कारे माला रोपजो,
धरमी पयड़ी बंधाव।।
ग्यान का गोला चलावणा,
हॉ रे पंछी उड़ - उड़ जाय,
खेती खेड़ो रे हरि नाम की ।।
ववन वकर जुपाड़ जो ,
सोवन सरतो बंदाय,
कुल तारण बीज रे बोवणा,
हॉ रे खेती लटा - लुम थाय,
खेती खेड़ो रे हरि नाम की।।
दावण आइ रे दयाल की,
पाछी फेरी नि जाय।।
दास कबिर की रे विणती न रे,
लज्जा राखो रे भगवान।।

खेती खेड़ो रे हरि नाम की ,
तेमा मिलसे रे लाभ।।
खेती खेड़ो रे हरि नाम की।
0ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थः**

भगवान के नाम की खेती करो। भगवान का भजन करो। उसमें लाभ मिलेगा।खेती में पाप के जो वृक्ष उगे हैं, उन्हें खुदवाओ। धर्म खूब करो और उन वृक्षों को खींच - खांचकर बाहर निकालो, जिनसे तुम्हारे जीवनरुपी खेती का सौन्दर्य बढ़ेगा। इसके बाद तुम्हारी खेती सोना हो जायेगी।

संकलनःडॉ. महेश चंद्र शांडिल्य

## 13.ओम - सोम दोनों बैल सुरता रास लगाये

ओम - सोम दोनों बैल सुरता रास लगाये
धर्म की रास व लकड़ी पिराणा
हात में ले, सुरा ने ललकार
सत्य की माला रोपना धर्म की पेड़ी बंधाकर।
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :**

धर्म का मकान सत्य की पेड़ी बॅधाकर बनाना। ज्ञान के गोले चलाना, जिससे पंक्षी उड़ - उड़ कर जायें। बोने के लिये सोवन सत्य का सरता बॅधाकर बक्खर चलाना। कुल को तारने वाला बीज बोना, जिससे खेती लटालूम हो। भगवान के पास से बुलावा आया, वह वापस नहीं फेरा जा सकता है। कबीरदास जी की विनती है भगवान लज्जा रखना।

संकलनः डॉ. महेश चंद्र शांडिल्य

## 14. सरग झोपड़ा रे बांदिया

सरग झोपड़ा बांदिया,ने बणा लिया रे दुवार,
सरग झोपड़ा रे बांदिया।।
घर ऊंचा रे धारण नीचा,धरे नेवा नीची रे निकास।।
बारी रे छ छ सब धरिया
बिच बारी रे लगाय, सरग झोपड़ा रे बांदिया।।
बिना टाकी का घर घड़िया,नहिं लाग्या रे सुतार।।
हीरा मुद्रिका जड़ाविया
घरे मेल बनिया केवलास, सरग झोपड़ा रे बांदिया।।
खम्बा रे दीपक जले हॉ रे जाका रे भया उजाला
तन की रे बत्ती बणाविया, सरग झोपड़ा रे बणाविया।।
धवला घोड़ा मुख हासन, हीरा जड़िया पलाण।।
चांद सूरी मन पेगड़ा, हॉ रे उड़ी हुया असवार।।
सरग झोपड़ा रे बांदिया।।

**गीतार्थः** तुम्हारा झोपड़ा स्वर्ग में बने, हमेशा इसका प्रयास करना। तुम्हारे झोपड़े का चौड़ा द्वार हो, घर ऊंचा हो,जिसके निकास का द्वार छोटा होना चाहिये।जिस घर के दरवाजे में हीरा - मोती जड़े हों। उस घर के सामने जलने वाले दीपक की रोशनी से सारा जग प्रकाशित हो। यह सब तुम्हारे आचरण से ही सम्भव है।

संकलनः डॉ. महेश चंद्र शांडिल्य

## 15. मयली गोदड़ी साधु धोई लेणा।

मयली गोदड़ी साधु धोई लेणा,उजली कर लेणा
उजली कर लेणा, मयली गोदड़ी साधु धोई लेणा।
चौक - 1 . गोदणी बणी रे गुरु ज्ञान की,हीरा लाल लगाया,
मयली गोदड़ी साधु धोई लेणा।
काय की बणी रे साधु गोदड़ी,कायन केरा धागा
कायन केरा धागा,
कोण पुरुष दरजी भया, कोण सिवण हारा,
मयली गोदड़ी साधु धोई लेणा,उजली कर लेणा
मयली गोदड़ी साधु धोई लेणा।
चौक - 2. जल की बणी रे साधु गोदड़ी, पवन केरा धागा,
हो पवन केरा धागा,आप पुरुष दरजी भया,
हंसा सीवण हारा,
मयली गोदड़ी साधु धोई लेणा,उजली कर लेणा
मयली गोदड़ी साधु धोई लेणा।
चौक - 3. काहॉ से पवन पथारिया,कांसे आया जल पाणी,
अरे कांसे आया पाणरी,कांसे आई सोवागणी
कब से धरती रचाणी
मयली गोदड़ी साधु धोई लेणा।
चौक - 4. आगम से पवन पधारिया, पीछे आया जल पाणी,
आरे पीछे आया पाणी,इन्द्र से आई सोवागणी,
तब से धरती रचाणी,
मयली गोदड़ी साधु धोई लेणा,उजली कर लेणा,
मयली गोदड़ी साधु धोई लेणा।
चौक - 5. धवलो छोड़ो रे खुर वाटलो मातया जड़ि रे लगाम
अरे मोत्या जड़ि रे लगाम,चांद सूरज बेड़ पेगड़ा,
उड़ि न हुयो असवार,
मयली गोदड़ी साधु धोई लेणा, उजली कर लेणा,
मयली गोदड़ी साधु धोई लेणा।
छाप - अकास से धारा उतरिया, धारा गई रे पयाल,
अरे धारा गई रे पयाल,कईये कबीर सुणो साधू
अरे हंसो गयो सत लोक,

मयली गोदड़ी साधु धोई लेणा,उजली कर लेणा,

मयली गोदड़ी साधु धोई लेणा।

0ध्ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थ :

हे साधु पुरुष! यह काया मैली हो गई हो तो इसे धोकर स्वच्छ कर ले अर्थात भक्ति करके उज्जवल करले। हे साधु पुरुष! गुरु के ज्ञान की गोदड़ी (बिछावन) बनी है,इसमें हीरे और लाल लगे हैं।यह काया वैसे ही प्राप्त नहीं हुयी हैं चौरासी लाख योनियों के बाद यह मानव काया प्राप्त हुयी है।इस काया को भक्ति के द्वारा उज्जवल कर ले। यह काया जल से बनी है और पवन के धागे से सी गई है। गोदड़ी सीने भगवान दर्जी बने। अरे हंसा(जीव)! भगवान इसके बनाने वाले हैं। पवन कहां से आया और जल कहां से आया ?कहां से सुहागन आई और यह काया (धरती) कब से बनी ?

आगम से पवन का आगमन हुआ और उसके बाद जल आया और इन्द्र के यहां से सुहागन आई,तब ये धरती बनी और जीव की उत्पत्ति हुई।सफेद घोड़ा उसका खुर कटोरेनुमा, उसकी लगाम मोतियों से जड़ी है। चंद्रमा और सूरज दोनों पेगड़े और उछलकर उस पर सवारी की। अरे जीव ( हंसा)! इस काया को भक्ति से उज्ज्वल कर ले , ताकि तुझे नरक का मुंह ना देखना पड़े।

संकलनः डॉ. महेश चंद्र शांडिल्य

## 16. सीता हो राम सुमर लेणा

टेक - सीता हो राम सुमर लेणा,भजि लेवो भगवान,
सीता हो राम सुमर लेणा।

चौक - 1. सपना की रे संपत भई , बांधिया गजराज।
भंवर भयो उठ जागीया,तेरा वही रे हवाल।
सीता हो राम.......................

चौक - 2. वाये सोनू नहिं नीबजे, मोती लाग्या डालम डाल।
भाग बिना केम पावसो, तपस्या बिन राज।
सीता हो राम.......................

चौक - 3. राजा दशरथ की अयोध्या है,नंदि सरजु का तीर,
जा घर बैठी राणी कौशल्या, जिनका जाया रघुवीर
सीता हो राम......................

चौक - 4. बिना रे पंख का सोरठा,उड़ि गया रे अकास,
रंग रुप वाहां को कछु नांही,नहिं भूख न प्यास।

सीता हो राम.....................

छाप - झिणि झिणि नोबत वाजसे,वाजे गरु दरबार,

सेन भगत की रे वीणती,राखो चरण आधार

सीता हो राम.....................

**गीतार्थः**

सीता राम का स्मरण कर लें अर्थात भजन कर लें। यह संसार क्षणिक स्वप्न के समान है। स्वप्न में मनुष्य मालदार हो जाता है। उसके घर में हाथी झूलने लगते हैं।भोर होने पर फिर वही हाल। हे मानव ! भजन कर ले। सोना बोने से नहीं उगता, न ही डाली पर मोती लगते हैं। भाग्य के बिना कुछ नहीं मिलेगा।तपस्या के बिना राज्य भी नहीं मिलता। सरयू नदी के तट पर राजा दशरथ की अयोध्या है। जिनके पास कौशल्या रानी हैं उनके पुत्र रघुवीर हैं। उनका भजन कर लो। यह जीव बिना पंख का पक्षी है। उसका रंग रुप कुछ भी नहीं है। न भूख लगती है न प्यास। हे मानव ! सीता राम की भक्ति कर ले तो पार उतर जायेगा।

संकलन एवं अनुवादः डॉ. महेश चंद्र शांडिल्य

## 17. हारे सतगुरु का भरम नी पाये रे

टेक - हारे सतगुरु का भरम नी पाये रे ,

लियो रतन कोख अवतार रे।

चौक-1. आठ मास नव गर्भ रयो रे।

हंसा कोन पदारथ लाये रे।

आरे हंसा कोन पदारथ लायो रे।

कितना पुनसे आयो मोरे हंसा,

ऐसो काई नाम धरायो रे।

लियो रतन कोख अवतार रे।

चौक- 2. दान पुन प्रणाम कियो रे हंसा,

वड़ काया संग लाया रे।

इतना पुन से आयो मोरे हंसा,

ऐसो हीरा नाम धरायो रे।

लियो रतन कोख अवतार रे।

चौक-3. तीनी पण तुन धुल म गमायो हंसा,

हजुव नि समझ्यो गंवार रे।

अरे हंसा हजुव नि समझ्यो गंवार रे।

बड़ण भाणिज तुन वलकी नी जाण्यो।

थारो रगीसर को अवतार रे।

लियो रतन कोख अवतार रे।

चौक - 4.जहाज पुरानी नंदी वव गयरी,

केवटियो नादान रे।

आरे हंसा केवटिया नादान रे।

धर्मी राजा पार उतरियो,
ऐसो पापी गोता खाय रे।
लियो रतन कोख अवतार रे।
कइये कमाली कबिर सा री लड़की ये निरबाणी।
अरे हंसा ये पथ है निरबाणी।
गऊ का दान तुम देवो मेरे हंसा हो,
तेरा धरम उतारेगा पार।
लियो रतन कोख अवतार रे।
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थः**

हे मनुष्य तूने सतगुरु का भेद नहीं पाया, तूने रत्न की कोख से अवतार लिया है।( मॉ की कोख को रतन कोख कहा गया है )

आठ नौ माह तू मॉ के पेट में रहा,कौन सा पदार्थ लाया ? अरे मानव! तू जान ले तू कितने पुण्य से मानव रुप में आया हैं ऐसा कौन सा नाम रखा है ?

तूने पूर्व जन्म में जो भी दान पुण्य अराधना की वही इस काया के साथ लाया है। इतने पुण्य से तू आया है और हीरा नाम रखा है। ( मानव को हीरा माना है ) जैसे धरती माता की कोख से बड़े प्रयत्न के बाद हीरा बाहर निकलकर संसार के लोगों के सामने आता हैं वैसे ही माता की कोख से मनुष्य आता है।

अब मनुष्य के बुढ़ापे को कहा है कि बालपन, किशोर, युवावस्था तीनों पन धूल में गमा दिये अर्थात तूने अपनी मुक्ति के लिये कुछ नहीं किया। अरे गॅवार! बुढ़ापा आ गया, तू अभी तक नहीं समझा। बहिन - भाणिजी को तूने नहीं पहचाना अर्थात तूने बहन - भाणजी को दान नहीं दिया।तेरा जन्म व्यर्थ गया। ( भजन में बहन और भानजी को दान देने की प्रेरणा दी गई है )

अरे मानव जिस प्रकार जहाज पुराना हो और नदी गहरी हो और नाविक नादान ( नासमझ) हो, उसमें धरम करने वाले राजा ( मनुष्य) पार हो जाते हैं और पापी लोग नदी में गोते खाया करते हैं।

कबीर जी की लड़की कमाली कहती है कि -अरे मानव! गौ का दान करो तो वह धरम तुझे पार उतार देगा। भजन में गौदान की महत्ता प्रतिपादित की गई है।

संकलन एवं अनुवादःडॉ. महेश चंद्र शांडिल्य

## 18. खोटो बेटो आज काम को

खोटो बेटो आज काम को
खोटो बेटो आज काम को
खोटो बेटो आज काम को,खोटो रुपयो आज काम को।
एक दिन खोलो बांधि लिजियो राम।।
खोटा रुप्या की ओरावणी करि दिजो राम्
खोटो रुप्यो आज काम को।।

खोटी बहू आज काम की राम,एक दिन भोजन बणाइ देवो।
खोटी बहू आज काम की राम।।
आज को वो भोजन जिमाड़ि देवो राम.....
खोटी बेटी आज काम की, एक दिन मसरु ओढ़ाई दीजो।
खोटी बेटी आज काम की राम।।
खोटो जवॉई आज काम को ,एक दिन काण मोड़ाइ देवो राम।
खोटो जवॉई आज काम को।।
0ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थः**

माता - पिता के अंतिम संस्कार के लिये खोटा पुत्र, खोटा रुपया, खोटी बहू , खोटी बेटी, खोटा जवाँई सभी काम के हैं। खोटा पुत्र भी अंतिम संस्कार के लिये आवश्यक है। क्योंकी माता - पिता का अंतिम संस्कार अगर पुत्र न करे तो उसकी आत्मा को शांति नहीं मिलती हैं खोटा रुपया भी शव पर काम आ सकता है। खोटी बहू भी काम की है। मृतक के लियेक भोजन बनाती है। बेटी भी मसरु शव पर ओढ़ा देती है। जवाँई भी अंतिम संस्कार के लिये काम का है। क्योंकी नुक्ते में काण भांजने के लिये बकरा लाता है। तात्पर्य यह है कि इनके बिना मृत्य आत्मा को शांति नहीं मिलती है।

संकलन एवं अनुवादः डॉ. महेश चंद्र शांडिल्य

## 19.पावो फाटियो ने सूरिमल उगियो रे भंवरा

पावो फाटियो ने सूरिमल उगियो रे भंवरा।
पावो फाटियो ने सूरिमल उगियो रे भंवरा
जीवता क तो नि दी रोटी रे भंवरा।
जीवता क तो नि दी रोटी रे भंवरा।।
मारिया पाछे बेटो लाडु उड़ाया रे भंवरा।
मारिया पाछे बेटो लाडु उड़ाया रे भंवरा।।
जीवता क तो बेटो कपड़ा नि पेराया रे भंवरा।
जीवता क तो बेटो कपड़ा नि पेराया रे भंवरा।।
मर्या पाछे बेटो मसरु ओढ़ाया रे भंवरा।
मर्या पाछे बेटो मसरु ओढ़ाया रे भंवरा।।
जिवता क तो बहू हिचके नि हिचाड़्यो रे भंवरा।
जिवता क तो बहू हिचके नि हिचाड़्यो रे भंवरा।।
मर्या पाछे बहु हिचके हिचाड़े रे भंवरा।
मर्या पाछे बहु हिचके हिचाड़े रे भंवरा।।
जिवता क तो बेटो कुद्या नि ऊँघलायो रे भंवरा।
जिवता क तो बेटो कुद्या नि ऊँघलायो रे भंवरा।।
मरया पाछे बेटो खुब ऊँघलावे रे भंवरा।
मरया पाछे बेटो खुब ऊँघलावे रे भंवरा।।
0ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थः**

महिलायें जन सामान्य को शिक्षा देती हैं- हे जीव ! प्रभात और सूर्योदय होता है। जीवित रहते माता - पिता को पुत्र ठीक से भोजन नहीं देता है और नुक्ते में लड्डू जिमाता है। जीवित रहते हुये पुत्र माता - पिता को ठीक से वस्त्र लाकर नहीं पहनाता और मरने के बाद मसरु ओढ़ाता है। जब तक सास - ससुर जीवित रहें, तब तक बहू ने उनको झूले पर नहीं झुलाया और मरने के बाद खूब झुलाती हैं।( इस क्षेत्र के आदिवासियों में मरने के बाद झूले पर खूब झुलाया जाता है। कुटुम्ब के लोगों के अलावा दूसरे मातम के लिये आने वाले भी मृत्य शरीर को झूला झुलाते हैं )

संकलन एवं अनुवादः डॉ. महेश चंद्र शांडिल्य

संदर्भ ग्रंथः भील जनजातीय गीत - म.प्र. आदिवासी लोक कला अकादमी

## 20. भगवान लेखो मांगे जी

पाप धरम की गाठड़ी रे दयाराम,
गाठड़ी काहाँ उतारां रे जी।।
गाठड़ी त ढोल्या नीचे उतारो रे,
दयाराम भगवान लेखो मांगेगा।।
भगवान लेखो त तुम पछ लीजो रे,
हम त भूखा चली आया।।
ताजा भोजन की थाली परसेली रे राम,
कोई के जिमाड्या होयत जीमो राम
निंहिं ते भूख्या चली जाओ राम।।
भगवान लेखो मांगे राम।।
पाप धरम की गाठड़ी रे राम,गाठड़ी काहाँ उतारां रे राम,
काठड़ी त ढोल्या हेट उतार दो राम,
भगवान लेखो मांगे राम।।
लेखो तो तुम पाछे लेजो, तीसा मरता आया जी।।
कोरा - कोरा मटका भरिया रे राम,
तुमने पिलाया होय तो पीवो जी।
नि तो तीस्या चली जावो राम।।
पाप धरम की गाठड़ी रे दयाराम,
गाठड़ी काहाँ उतारुं।।
गाठड़ी तो ढ़ोल्या हेट उतारो राम,
भगवान लेखो मांगे राम।।
लेखो तो तुम पाछे ले जोजी।
हम तो उघाड़ा आया जी।।
कोरा - कोरा कपड़ा गाठड़ा बंदिया पाड़िया राम,
कोई के पेहराया होय त पेरो राम,
नहीं तो उघाड़ा चल्या जाओ राम।।

भगवान लेखो मांगे जी।।

पाप धरम की गाठड़ी रे दयाराम,

गाठड़ी काहाँ उतारुं।।

गाठड़ी तो ढ़ोल्या हेट उतारो राम,

भगवान लेखो मांगे जी।।

लेखो तो तुम पाछे लीजो ,हम तो पायं बलता आया राम।।

नवी नवी मोजड़िया गाठड़ा मा बंधी

कोई के पेहराया होय त पेरो जी,

नहिं तो अलवाणा चल्या जाओ राम

भगवान लेखो मांगे जी।।

0

**गीतार्थ :**

मनुष्य इस देह को छोड़कर जब धर्मराज के यहां जाता है तो वहां क्या कहता है ? क्या उत्तर मिलता है ? यह इस गीत में बताया गया है।

मनुष्य इस संसार में खूब धन अर्जित करता है। कोई मेहनत करके कमाता है और कोइ्र चोरी, भ्रष्टाचार, मिलावट से धन अर्जित करता है। कोई अपनी मेहनत की कमाई से धर्म कार्य करता है। दान देता है, कोई दुनिया वालों के ऊपर प्रभाव ड़ालने के लिये पाप की कमाई को धार्मिक कायरें में लगाकर अपने को आदर्श और दानी कहलाता है। किन्तु इस संसार से जब जाता है, तो धन - दौलत, पुत्र - बहू आदि सभी यहीं रह जाते हैं, कोई भी साथ नहीं ले जाता । उसके साथ तो केवल पाप और धर्म की गठरी जाती है। जिसने अपने परिश्रम की कमाई से जीवनयापन करते हुये यथाशक्ति धर्म किया है, वही साथ जाता है। पाप की कमाई वाला पाप की गठरी ले जाता है। वहां जाकर विनय करता है कि दयालु पाप - धरम की गठरी साथ में लाया हूं इसे कहाँ उतारुं ? उसे उत्तर मिलता है - दयाराम गठरी तो पलंग के नीचे रख दो, भगवान हिसाब मांगेंगे। तुमने कितना धरम किया है और कितना पाप किया है ? मनुष्य वहां कहता है कि - हिसाब तो आप बाद में लेना , मैं दुनिया से भूखा आया हूं, मुझे भोजन चाहिये।उत्तर मिलता है ताजे भोजन की थाली परोसी हुयी है , तुमने अपनी मेहनत की कमाई से किसी अपंग , अनाथ, गरीब, साधू, ब्राम्हण को जिमाया हो तो जीम लो, नहीं तो भूखे चले जाओ। अरे राम! भगवान तो हिसाब मांगते हैं, तुमको पात्रता आती हो तो जीमो।

आगे इसी प्रकार प्रश्न करके कहता है कि - मैं प्यासा आया हूं, मुझे पानी चाहिये। उत्तर मिलता है किसी प्यासे को पानी पिलाया हो तो पी लो, नहीं तो प्यासे जाओ। यहां ठंड़े पानी के मटके भरे हें, तुममें पात्रता हो तो पी लो।

आगे जीव कहता है - मैं उघाड़ा आया हूं वस्त्र चाहिये ।उत्तर मिलता है यहां पर नये - नये कपड़ों के गाठड़े बंधे हैं। तुमने किसी गरीब, असहाय को वस्त्र दान किया हो तो पहन लो, नहीं तो उघाड़े चले जाओ। आगे कहता है कि मेरे पैर जलते हैं - मोजड़िया चाहिये ।उत्तर वही मिलता है कि तुने किसी को मोजड़िया पहनाई हो तो पहन लो, नहीं तो वैसे ही चले जाओ। भगवान तो हिसाब मांगते हैं।

इस गीत का मुख्य उद्‌देश्य यह है कि दुनिया में अपने परिश्रम की कमाई से जीवन - यापन करते हुये, उसमें से बचे तो यथाशक्ति गरीब, अपंग, ब्राम्हण, साधु को दान देना चाहिये।

इस प्रकार दान की ओर प्रेरित किया गया है।

संकलन एवं अनुवादःडॉ. महेश चंद्र शांडिल्य

संदर्भ ग्रंथः भील जनजातीय गीत - म.प्र. आदिवासी लोक कला अकादमी

भील जनजाति को सामाजिक एवं राजनैतिक चेतना को भाषा और साहित्य के माध्यम से नये संदभरें में जोड़ने का श्रेय भील जनजाति के प्रसिद्व कवि महिपाल भूरिया को जाता है। उन्होंने इन लोकगीतों के माध्यम से एक संपूर्ण प्रजाति को एक अभिनव क्रांति के लिये खड़ा कर दिया है। इनके द्वारा रचित चेतना गीतों में जो चिनगारी व्याप्त है। उसकी रचनात्मकता किसी भी क्षण भभककर नये समाज का संगठन कर सकती हैं लेखक ने इन गीतों के माध्यम से भीलों की आर्थिक एवं सामाजिक चेतना और रुढ़िगत प्रक्रिया पर प्रकाश ड़ाला है। जिसके लिये वे साधूवाद के पात्र हैं।कवि महिपाल भूरिया जी के कुछ लोक गीतों की बानगी इस प्रकार है -

## 21. काठूं आयुं रे भगवान, मारा देस मां।

तमुं सेतावो भगवान, मने देस मां।
हमूं भोला रे भगवान, मारा देस मां।
हमूं ठगाये भगवान, मारा देस मां।
नथी टालो रे भगवान, मारा देस मां।
करो उतावल भगवान, मारा देस मां।
करो उन्नति भगवान, मारा देस मां।
काठूं आयुं रे भगवान......

**गीतार्थ :**

भगवान हमारे देश में अनेकों कठिनाईयां हैं।तुम हमें जाग्रत करो।हम सब भोले भील हैं भगवान! ठगे जाते हैं विविध प्रकारों से भगवान हमें मत त्यागोजल्दी करो हम पर ध्यान दो हमारे देश का विकास हो जीवन का सही मार्ग लाओ!

संकलन एवं अनुवाद : महिपाल भूरिया संदर्भः भीली चेतना गीत 1977

## 22. यौवन की पीड़ा

की दे मारा मने मने कइनी दस्या जावुं रे
दनिया ना मनख सबे उन्नति करी र् यां रे
पड़ी ऊंड़ी खाई मॉ हुं ते, कहनुं पण नी काड़े रे
हूं पण सालूं आज इनी उन्नति नी वाटे रे
वापा मारा तूं नी देखे मारी दखी दस्या रे
सोकयारी मनख मने भोली देखी ठगे रे
नानी नानी ठगण वेठूं, करे इते पाप रे
जीवतां इंगारां ने गल लु नी गलाये पाप रे
तरवार नी धारें सालुं - एवो मारो कायदो रे
रुपया बे रुपया मां मारी लाज नी गमावुं रे
मारी से इजत येते मारुं धरम वाजे रे
हमाल करो मारा बापा एवां मोटां पापुं थी

जोवान देखी पान आले बजारी मनख रे
रुपाली जाणी मने रुमाल्यो वताड़े रे
रुपया बे रुपया ने लेदे मने ललसावे रे
एवुं नी गमे बापा करो   कई - कई कलें रे
भरया◌ृ सा जोवन मारा, हूं ते से जावनाड़ी रे
भरी नदी ना पूर थाम दूं, भर्या जोबन नी थमाए
लावो रे भांजगेड़ मामा, काका करो वात रे
हूं तड़्यालो लड़को मने , जोवी कइनुं आलो रे
भर्या से जाबन मारा हूं ते से जोवानड़ी रे
मने जावुं पड़े हाट , कामें कोटां ,आंखे रे
जोवान देखी ललसावे सोकयारी मनखरे
जीवता इंगारा ने गल नुं नी गलाए पाप रे
भरी नदी ना पूर थाम दूं भर्या जोबन नी थमाये
मने धण मनख ठगे, हूं ते अणभरी रे
भणी सोरी जाणे किकम, करवा से वेवारुं रे
बजारी बइरें भणेली करें मोटां कामुं रे
हूं पण बणी विधायक अने मास्तरण रें
डूंगरी पर से इस्कूल बापा मने भणवा जावा दे
हूं ते थाई होरियार मारी आत्मा समकहे
हूं पण देखी नवी दनियां करी मोटां कामूं रे
नवो भील समाज बणावा नुं मारुं हपनुं रे
भसील बइरें सबे भणे एवं मारुं हपनुं रे
कइनुं नी ठगे अने कइनुं भूखे नी मरे
मारुं भारत देस थाए एवुं वेगुं वेगुं रे
बोल काली सड़ी मारुं करम कैंवुं थाहे रे
मगरी ऊपर तूं हूं फुदके जाई बेहे डालें रे
मारां करम खोटां थाहे के हूं बणी कुंवरी रे
के मन रेवुं पड़हे   दुखी दरिया   मां डूबेली   रे
मारो जीव धोटाई - घोटाई   धीरो - धीरो नकलहे
मारो जीव केरें हुदी कलें - कलें रोवहे
बोल कालीसड़ी मारुं करम केवुं थाहे रे
मन नी मालम मारी बेन मत भरोहो   करे रे
हामलो रे भायो बेनो मारा दख ना गीतु रे
मारी दस्या वगड़ती जाए दने - दने रे
मारा दिल नी वातें भील सोरयुं नी वातें रे
की दे मारा मने कइनी दस्या जावुं रे
हूं पण साल आज इनी उन्नति नी वाटें रे।
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थः

कह दे मेरे मन किस ओर चलना है ? कर रहे जगत के लोग प्रगति तड़प रही गहरी खाई में मुझे निकाले कौन चलूं आज मैं उन्नति पथ पर कहो किधर बढ़ना है ? बापा ध्यान नहीं देते तुम मुझ दुखिया पर आज उच्च जाति वाले ठगते हैं मुझ भोली - भाली को छोटी बातें हो तो सह लूं पर वे करना चाहें पाप जलते अंगारे मैं निगलूं पर कठिन पाप का ताप तलवारों की धारों पर तो चलना मेरा काज चांदी के इन कुछ टुकड़ों पर नहीं गवाऊं लाज इज्जत मेरा धर्म कहाती इसे सम्हालो बाप संकट में आज पड़ा है,क्या सहलूं मैं चुपचाप देख जवानी इज्जत करते बाजारु हैवान जान सुकरी पान खिलाते देते हैं सम्मान रुपये - दो - रुपये के बदले , चाहें इज्जत का बलिदान ऐसा अप्रिय कांड़ हो रहा सोचो युक्ति निदान

मैं युवती हूं यौवन का रस मुझमें बहता भरी नदी का पूर थाम लूं पर यौवन का वेग ना थमता मेरी मंगनी मामा कर दो , काका करो विचार युवक सजीला शिक्षित चुन लो कर दो अब वर का विचार युवती हूं कारण मैं भरी जवानी में हूं जान पड़ता है मुझे सब तरफ जवान देख बजारी ललचाते हैं जलते अंगारों को निगल जाऊं मैं पर पाप गले नहीं उतरता भरी नदी का वेग थाम लूं पर यौवन का वेग न थमता

मैं हूं अपढ़ - निरक्षर नारी इसलिये जन - जन है ठगता पर शिक्षित युवती पर जग में नहीं किसी का वश चलता बाजारी नारीयां शिक्षित करती हैं बड़े कार्य नगर - नारियां पढ़ती - लिखती, जिससे वे सब कुछ हैं करती मैं भी पढ़कर बनूं विधायक अथवा कही शिक्षिका बापा! डुंगरी पर विघालय , पढ़ने मुझको तुम जाने दो जिससे मैं होशयार बनूंगी आत्मा को भी चमकाने दो अपना सपना देख रही हूं

भील समाज बनाने का भील नारियों को इस जग में अनुपम साज सजाने का और कल्पना करती निश - दिन , हो शासन ऐसा भारत का बोलो - बोलो काले पक्षी , कैसा भविष्य मेरा होगा कभी मुंडेरी कभी ड़ाल पर देख फुदकना तेरा होगा फूटे करम हमारे हैं या कभी बनूंगी या आश्रय बनने वाली है दुख की दरिया धार हमारी या मुझको दुखमय जीवन में घुल - घुल कर मरना होगा ?अपने बल पर बढ़ो बावली मुझ पर विश्वास न करना होगा सुन लो दुनिया के लोगो मेरे दुःख का गीत मेरी अवस्था बिगड़ती जा रही है धीरे - धीरे कह रही हूं मैं भील युवतियों की बातें कह दे मेरे मन मुझे किस दिश में जाना है चलूं आज मैं उन्नति के पथ पर भील युवतियों की मैं प्रतिनिधी सुन लो मेरी दुनिया वालो !मेरे दिल की बातें सुन लो जो हैं बहरे कानों वाले होती हूं बद से बदतर, बोलो तुमको क्या कहना?

काले पक्षी पर भील जनजाति के लोग विश्वास करते हैं कि सड़ी, एक तरह का काला पक्षी, भविष्य बतलाता है। भीली लोकगीतों में यह विशेषतः युवतियों को उज्जवल भविष्य बताता पाया जाता है।

संकलन एवं अनुवाद : महिपाल भूरिया
संदर्भः भीली चेतना गीत 1977

## 23. दुःखी गवरां

मने पालुं मा परणाबी रे पण बापा देजुं घण लेदां
करजो करीन मन ई लायां रे आं बापा हमुंते वगड्यां

मारी सासुड़ी गाल्यां बोले मने बापा गेणा नी लावी
जाजो वेगा सुनार्यां नी गलयी बापा ताना नीं वेठाए
मारे घर भूखें मरुं बेटी गवरां   माणी मक्की लायो
तड़वी ली ग्यो तिनो लाग मारी बेटी काका नी थोवाए
तारी भुवा आरतियुं ने भूखी बेटी   मामा नी सोड़े
कइनो पोगे नी बाइणे हामल बापा लाग नी आंलतो
दखुं देखवा कइनो नी आबे पण लागु लेवा ई ढुके
मारी जेठाणी वखा पाड़े मारी वावड़ सांदी का लावी?
रुपया भरी ने तने लायां खोडली रांड़ रे करजूं मां दे दां
परण्युं तागली वेंसी आयुं कई कूंत बापा लाते जबरुं मारे
गेणा गेणे मेलवा करे कई कूंत बापा डागे जबरुं मारे
सासरो आले भूंड़ी गाले मारा बापा रोकड़ा अबे वसूल करुं
तिने हजार आल्या तारा बाने रांड़ रे घणी मोहगी पड़ी
घेरे धोविन तने लायां मारी बावड़ हातें लोटी ते लावती
करो मारा घेर नां हगलां कामुँ वावड़ रुपया वसूल करु
दइणा दलोन , वेड बाहरो , मारी वावड़ पसें पाणिलां हांसरो
घेरे बाहरी न, रांजणा मेलो मारी वावड़ पसें रोटला रालो
रोटलारालीन मने आलो मारी वावड़ करो मारी सेवा
नणदी देवर्या ना ताना कड़वा लागे मारा बापा कइथा न लिजाए
एवां दखुॅ मां वेंसी खादी मारा बाप आणे कइनुॅत आवतुं
मारो जीवड़ो रोवे मारा बापा नानुं थां   परणायां
मारो वगर हमुॅ उसरया माड़ी खेरयां लाडुॅनी देखयां
पारको बोबो धाविन मोटां थायां कुण सेत अकल मने आले
मारी माहर्यीं घणा वेला पाड़या हाऊ ते हाहून पोगुंम पड़ी
वेला करीन ते मोटी थाई पसें मने खोड़ला धेरुं मल्यां
मारो जीवड़ो कलें कलें रोवे दखुं कुने केवा जाऊ
पाणी खींसती जाऊं न रोवुं मारा बाप आहंवा कुवा मां टपके
गवरां बेना हेड़ो झाापो तारो भायो मेहपाल आयो अणुले
झाापा बाहर नी नकलाए हाहू हाहरा ना से कायदा
कायदा तोड़ीन बाहर नकलो तारी जात नो भायो खबर लायो
तारी बापा नी कोइनी भूल रे येते खोटी समाज नी रीति
तारा सासरा नी कोई नी भूल मारी गवरां भीलुं ना से वेवार
आपडुं समाज बदलवुं पड़हे रे बेना तारां दखुं भागहे
कारण घणो उंडों से रे मारी गवरां हमजवा तू करजे
भीड़हा भागवा मां नी खूटे रे दखुं तारां साल्ुया करहे
देजुं ना कायदा तोड़वॉ पड़हे राजुं वाणियां ना तोड़हुं
हम कावणी राखजे मारी वातुं नी रे गवरां मारी बेन वाजे
तारी दस्या पर वश्यार करवा वालो बोले भरोहो रे करजे

हे मां कदी गले नी मलहूं ते गवरां हरगु मॉ ते मलहूं
मलहूं हरग मॉ आपुं ढोलें रमहूं गवरां बड़ी मोज्या करहूं
डोलुं ने ढमके हमसो लेहूं बैन गवरां घुघरा बांदी रहहूं।

**गीतार्थ :** पिताजी ! मेरा विवाह पलवाड़ में किया पर दहेज अधिक लिया ससुराल वाले कर्ज लेकर मुझे लाये, हम डूब गये। मेरी सास गंदी गालियां बकती है, कहती है गहने क्यों नहीं लायी? बापा! जाओ सुनार की दुकान पर ताने नहीं सुने जाते। " बेटी गवरां मैं घर में भूख से मरता था, तेरे दहेज से मक्का खरीदी पटेल ले गया अपना हिस्सा और काका भी नहीं माने तेरी बुआ भी हिस्सा की भूखी और मामा कहां छोड़ने वाले! " बापा! सुन लो , मेरे घर की देहली पर कोई नहीं पांव धरता ,दहेज ले उनका हिस्सा क्यों दिया? देखभाल करने कोई नहीं आता पर हिस्सा लेने को मरते हैं मेरी जेठानी दुख देती है कहती है बहू चांदी क्यों नहीं लायी ? दुष्ट रांड! रुपया भरकर तुमको लायें , पर तूने हमें कर्ज में ड़ाला प्रियतम हंसली बेच आया कुछ कहूं तो लातें जमाता है बाकी बचे गहने भी गिरवी रखना चाहता है शिकायत करती तो दनादन लाठी चलाता ससुर गंदी गालियों के बिना बात नहीं करता । कहता है अभी रुपया वसूल करुंगा।' रांड़ तीन हजार दिये हैं तू बड़ी मंहगी पड़ी तेरे कारण हम भिखारी बन गयेसाथ में एक लोटा तो लाती ?अब करो घर के सब काम इसी प्रकार वसूल होगा सब दाम चक्की चलाओ ,गोबर उठाओ और पानी लाओ घर की सफाई करो , रोटी बनाओ उसके बाद भोजन परोसो,इस तरह सबकी सेवा करो ,ननद और देवर के ताने कड़वे लगते हैं सुने नहीं जाते ,सारे परिवार के लोग मुझसे घिनाते हैं,घर से बाहर नहीं ले जाते ,ऐसे दुख सहने के लिये बेची गई,कोई तो घर से आये खबर लेने,मेरा जी खूब तड़फता है छोटी उम्र में विवाह कर दिया,मॉ के बिना बचपन बीता क्या होता माता का प्रेम नहीं देखा,पराये स्तन का दूध पिया फिर कौन पारिवारिक अकल सिखाता,सौतेली मॉ ने सताया अब सास रौंदती है पैरों तले,पीड़ा में बचपन बीता अब दुष्टों की शरण में आयी,मैं चुपके - चुपके रोती अपने दुखड़े किसको सुनाऊं,कूंएं पर पानी खींचती जाती और रोते जाती आंसू कुएं में टपकते मीठे पानी को खारा बनाते ।" बहिन गवरां खोलो द्वार पर तुम्हारा भाई महिपाल आया "" मुख्य द्वार के बाहर नहीं निकल सकती सास ससुर का है कायदा"" कायदा तोड़ो तेरा ही भाई आया है"फिर बहन ने सारा दुखड़ा सुनाया" बहन , तेरे पिता की नहीं भूल, दहेज प्रथा है सबसे बड़ा शूल सामाजिक परिवर्तन लाना होगा तब तेरे दुखड़े कम होंगे तेरे दुख की जड़ गहरी है समझने का प्रयास करना पंचायत करना इसका समाधान नहीं दुख बने रहेंगे इस दुखी दशा पर चिंतक का है कहना, आस्था रखना सुख में यदि पुर्नमिलन नहीं हुआ धरती पर तो स्र्वग में हम फिर मिलेंगे हम स्र्वग में अवश्य मिलेंगे,ढ़ोल बजा - बजाकर हम नाचेंगे, ढ़ोलों की लय पर मटकेंगे बहिन गवरां और घुघरु बांध नाचेंगे।

**संकलन एवं अनुवाद : महिपाल भूरिया**

**संदर्भः भीली चेतना गीत 1977**

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

## 24. लंगोटी प्रतीक है

लंगोटी पेरुं ते मनख अई देखे अई देखे
मंत्री जी दली ना थांदलया बजार मां
लंगोटी पेरुं ते मनख कुला देखी हेहे
लंगोटी पेरुं ते मनख घोदावे ने हीहे
बजारुं नी गलयी लंगोटी हले सालुं तेम

भजियॉ लेवा वाकों वलुॅत खीसे मनख लंगोटी
बांदरॉ नी गेड़ी वाणे ये हले लंगोटी
हले तेम तेम बजार्यां मन निसकावे सिड़ावे
दनियां बदली ग्यी पण मारी लंगोटी नी सूटी
अपोलो नो जुग साले लंगोटी नी सूटी
दनियां पेरे कोट पेंट लंगोटी नी सूटी
लंगोटी हेलाणी मारी दस्यानी  धन नी
धन होएत फेसन थाए लंगोटी सूटे रे
घेर भूखें मरुं किकम लंगोटी सूटे रे
करज बद्या करे किकम लंगोटी सूटे रे
लंगोटी हेलाणी मारा सोसण नी वांणयां ही
लंगोटी हेलाणी मारा वाणिया नी घेर मॉ
राज वाणियां करे मन पर लंगोटी वताड़े
लंगोटी इसारो करे मंत्रीजी नी देखे
हमजी जाए मंत्री टोपी ले ऑखुं ने
वणियां ही समके एतरे मंत्रीजी  कई नी के
मन मा वश्यारुं किकम लंगोटी सोड़ी दूं
तारी खुड़सी सुटहे तेरे लंगोटी सुअहे
तीस वरहूं उपर थायां लंगोटी नी सूटी
लंगोटी प्रतीक मारा देस नी गरीबी नी
मारुं धन मोटां ने खवाड्युं ते वर वर
सरकारी राहत कईं ग्यी पतानी सालया मन
मारे देस आवीन देख कुवा कॉ खोदाया
तलाबुं कॉ बंदायों ने कॉ नलली नेहरें
हिसाब लगाड़ सरकारी रुपयां नो गणती मॉ
पसें आव मारे देस देखवा एखलो
अफसर धुतवाड़ी देहे तन मोकलहे पासो रे
तेरें मानुं मन हा3ं करी र् यो राज रे
वा वर वोट लेवा सल्यो मती आवजे
हामली ले मारी वाणी सेहली दाण रे
हूं ते वेठी र्यो हजुं तक तारां खोटां राज रे
लंगोटी हेलाणी मारा दखुं नी रोवण नी

लंगोटी लंगोटी मारी लंगोटी लटके
लंगोटी लंगोटी मारी थंदलया हाट माँ।
0ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थ :

लंगोटी पहनूं तो मनुष्य मुझे आंखें फाड़कर देखते हैं
लोग मेरे कूल्हे देख हंसते हैं
उन पर चिकोटी काटते हैं
बाजार की गलियों में चलने पर मेरी लंगोटी हिलती है
कुछ मोल लेने नीचे झुकता तो कोई लंगोटी खींच लेता
बंदर की पूंछ के समान मेरी लंगोटी हिलती
जिसे देख बाजार वाले हंसते और चिढ़ाते
दुनिया का रुप बदल गया पर मेरी लंगोटी नहीं बदली
यह अपोलो का युग है,मनुष्य चंद्रमा पर पहुंच गया
दुनिया के लोग बेल बाटम और कोट टाई पहनते हैं
पर मेरी लंगोटी नहीं गई ,लंगोटी प्रतीक है मेरी दरिद्रता की
पैसा होता तो फैशन करता, लंगोटी स्वयं छूट जाती
घर में भूखों मरता हूं तो लंगोटी कैसे छूटे
करज दुगना होता चला जाता
लंगोटी प्रतीक है भुखमरी की
प्रतीक है बनियों द्वारा शोषण की
यह प्रतीक है मेरे घर में बनिये के प्रभाव की
लंगोटी इशारा करती है
बनिया मुझ पर शासन करता है
इसका इशारा मंत्री जी नहीं देखना चाहते
समझकर भी न समझ बनते
देखकर भी अंधे बनते
मंत्री जी बनियों का लिहाज करते हैं
मैं चिंतन करता हूं लंगोटी कैसे छूटे
शायद जब मंत्री जी की कुर्सी छंटेगी तब मेरी लंगोटी छूटेगी
स्वतंत्र भारत के तीस वर्ष बीत गये, पर लंगोटी नहरीं छूटी
वह मेरे देश की दरिद्रता की निशानी है
मेरी कमाई अधिकांश बड़े लोग हड़प जाते हैं

सरकारी राहत कहां जाती है पता नहीं चलता
मेरे देश में कुए कहां खुदे
तालाब कैसे और कितने बंधे, नहरें किसके खेत सींचती हैं
सरकारी रुपयों को अफसरों ने बांट लिया
मंत्री जी विकास का मूल्यांकन करना है तो अकेले आइये
अफसर साथ रहेंगे तो कागजी हिसाब बता देंगे
सही हालत का पता कैसे चलेगा
तब मानुंगा की मेरे लिये शासन चलता है
व्यर्थ में वोट देना हमें खलता है
सुनिये ये मेरी अंतिम चेतावनी है
इस शासन में घोर पीड़ा का अंत नहीं है
लंगोटी प्रतीक है मेरे दुख और तड़फन की
मेरी लंगोटी कमर में अब भी लटकती है
आह! हाय मेरी लंगोटी मेरा साथ नहीं छोड़ती।।

संकलन एवं अनुवाद : महिपाल भूरिया
संदर्भः भीली चेतना गीत 1977

00ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

## 25. अन्ध विश्वास

माराज मन ठगी ले औ धर्मी राजा1
जोतिसी जीव ने के
हात देखी न रुपया ले
खोटा हकुन वताड़े
वात हासी नी उतरे
मराज पेटु घणो
जोगी मन भेंट मांगे
तीरथ मन मोकले
तीरथ खावा नी आले
मानता मन लेवाड़े
अर्थो नी नकले
माताएं सब खोटयीं
कालका नी खाये बोकड़
शीतला नी खाए कूकड़
भवानी न नीं जोये दारु
हकरी नी मांगे बकरी

वाहदी मा◌ू घी बली जाए

घेर खाऊं ते काठो थाऊं

काठो रुं ते होल हांकुं

बकरी होएत विवा थाए

तारे नामे ठगे मन

वगर हूंदें अकल दे

तू ते वाजे धरमी रे

तॅू नी मांगे भोग रे

खतरीज नी आवे पासा

खतरीज खाहरा

आती ते बांदी मेल

खोटो से विसवाह

करदे इनाने हूदो

डाकण मां जोर नथी

अमथां इ वेला पाड़े

नजर नी लागे इनानी

वेह नी धराए इनाए

उडण उडाए नी

नी लागे वीर रे

जड़धा नो टेको लीन

मंदवाड़ घोले ई

मेहपाल भायो के

डाकणा ही डरो मती

मेरें आवादो नथी

नईं लो कई इनांही

पसें की सलाड़ो वीर

अने की लगाड़ो नजर

कई नी थाई इनाही

करो नी भरोही आदां मत बणजो

भणेली दनयां मा रो सोड़ो खोटो विस्वाह।

गीतार्थः

**ज्योतिषि महराज जी हमें ठग लेते**

**बहती गंगा में वे भी हाथ अपने धो लेते**

**ओ मेरे धर्मी राजा भगवान**

**ये स्वयं को ज्योतिषि कहते हैं**

**हाथ देख - देख रुपया ऐंठते हें**

उनके शगुन खोटे निकलते हैं
उनकी बात कभी सच्ची नहीं उतरती
महराज ज्योतिषि बड़ा पेटू है।
जोगी भेंट की मांग करते हैं
तीर्थ यात्रा पर भेजते हैं
पर तीथरें से मेरा पेट नहीं भरता
मुझसे मानते चढ़ाने की बात करते
यह सब बड़ा अनर्थ है
मानता की बातें सब खोटी हैं
कालिका बकरी नहीं खाती
शीतला को मुर्गी कहां भाती ?
भवानी दारु नहीं पीती
हकरी भी बकरी नहीं खाती
घी भी आग में जल जाता है
अगर खाता तो बल मिलता
बलवान रहूं तो हल चला सकता
बकरी रहेगी तो विवाह होगा
हे धर्मी राजा भगवान
यह अर्नथ तेरे नाम पर होता है
तू तो परम पावन
तू कभी भोग नहीं चाहता
पितरों का पेट नहीं भरेगा
तो वे हमें सतायेंगे शायद
यह ख्याल झूठा है
वास्तव में वे लौटकर नहीं आते
यदि आयें तो उनको बांध कर रखना
यहां अन्ध विश्वासों का जोर है
सत्य क्या है कुछ पता नहीं चलता
डायन में कोई तेंज नहीं
ये व्यर्थ में सताती
इनकी नजर में शक्ति नहीं
वेष बदलकर उड़ सकती नहीं

इन्हें उड़ना नहीं आता
जड़ी - बूटियों के सहारे कार्य करती
उन्हीं से सब रोग फैलाती
भाई महिपाल कहता है
डायनों से डरो नहीं
इन्हें निकट मत आने दो
इनके हाथों से कुछ मत लो
फिर चुनौती दो इन्हें वीर चलाने दो
और कहो की लगाओ नजर
इनका कुछ वश नहीं चलेगा
झूठे अंधविश्वास छोड़ो
आंखें रहते अंधे मत बनो
शिक्षित जगत के वासी हो
छोड़ो इन खोखले विश्वासों को

**शब्दार्थ -** 1. धर्मी राजा - भीलों के धर्म के अनुसार उनका भगवान धर्मी राजा कहलाता है। वह देवी, देवताओं और भूत - प्रेत तथा पितरों से ऊपर रहता है। उसने केवल जगत की दृष्टि की। दुनिया को चलाने का कार्य उसके अधीन जो शक्तियां हैं वे ही करती हैं।धर्मी राजा परम पावन है और मनुष्यों से कभी चढ़ावे की इच्छा नहीं करता पर उसके नीचे की शक्तियां देव , देवियां आदि बड़ी स्वार्थी हैं। उन्हें हमेशा तृप्त रखने के लिये पूजा मनौती भोग लगाना पड़ता है। यह भील ऐसे क्रिया - कर्मो से थककर धर्मी राजा को पुकार रहा है।

संकलन एवं अनुवाद : महिपाल भूरिया
संदर्भः भीली चेतना गीत 1977

## 26. दारु

दारुड़ो गाल्यो न कां मेल्यो मारा लाडा भाई
पींहूं पीहूंन आपुॅ रमहूं
दारुड़ो गाल्यो न कां मेल्यो मारा लाडा भाई
पींहूं पीहूंन आपुॅ गावहूं
दारुड़ो गाल्यो न कां मेल्यो मारा लाडा भाई
पींहूं पीहूंन मोज्या करहूं
हामलो दारुड़ो पीवा वाला मारा भायो
मेहपाल नी वात तमुॅ हामलो
दारुड़ो पीवीन तमुॅन हूं मले रे भायो
पीहो पीहोन तमुॅ मरहो
मांदेला थाहोन तमुॅ वेगा मरंहो भायो
आंतरॉ बलहेन तमुं दुबला थाहो भायो
लांकड़ां बलहेन तमुं कॉथा लांवहो भायो
मोवड़ा मोहगॉन तमुं कॉहतॉ लावहो भायो

हवाई जाहोत ड़ंड़ी थाहो कॉहतॉ लावहो रुपया
पीवो तो जरीक पीजो हेर मति करजो
मले ते पीजो ने गालीन मती पीजो।
दारुड़ो घेरुं बारुं भागे मारा भायो
बयरे सोरां वेला करहे आखा घेर ना
दारुड़ो घणा वेला पाड़े मारा भायो
दारु नी दोकान कदी रलजो मती भायो
दारुड़ो दारुड़ो घणों भूड़ो रे दारुड़ो।।

गीतार्थ :
दुल्हे! दारु बनाकर कहां रखा है ?
हम पीकर नाचेंगी
दुल्हे दारु बनाकर कहॉ रखा है ?
हम पीकर गीत गायेंगी
दुल्हे दारु बनाकर कहां रखा है ?
हम पी - पीकर मौज करेंगे
सुनो सब दारु के पीने वालो
महिपाल की बात पर विचार करो
दारु पीने से मिलता क्या,तुम इसे पीकर नष्ट हो जाओगे
तुम रोगी बनकर जल्दी मरोगे
अंतड़ियों में जलन होगी और कमजोर हो जाओगे
दारु बनाने को ईधन कहॉ है,महुये मंहगे,पैसा कहां है ?
और हंड़े भी दुर्लभ हैं,पकड़े जाओगे तो जुर्माना होगा
पीओ तो भले कुछ पीलो इच्छा मत करना
कहीं मिल जाये तो पीना बनाकर मत पीना।
दारु वाला घर बरबाद करता ,पत्नी और अपने बच्चों को पीटता
नशे करने वालों के दुखड़े दीर्घकालीन हैं
दारु की दुकान पर पैर नहीं रखना
दारु बड़ी खराब वस्तु है उसे मत चखना।।

संकलन एवं अनुवाद : महिपाल भूरिया संदर्भः भीली चेतना गीत 1977

## 27. धरती जोतकर

धरती खेड़ीन, हरियाली करी रे वांकड़ा,
मारा देसा मां घणो मोज रे ।
धान धानुं नो बड़ो मोज रावल वांकड़ा।
टापरी ने ठोड़ें हवेली बांदी रे वांकड़ा।
होल ने ठोड़ें हूं ते टेटरे खेडुं बावल वांकड़ा।
टेटरे खेड़ ने बड़ी मोज्या करुं वांकड़ा।

मारां खेत्या मां इंजिन पाणी फेरे वांकड़ा।
इंजिन ने जोरे नदी खाली करुं वांकड़ा
एवी रीतें भाटां मॉ पकाडुं गॉवड़ला रे।
उनाले हियाले रे ख्ेात्यां हरियां वांकड़ा।
धान धानुं गो बड़ो मोज रावल वांकड़ा।
गोरी तन परण्यो पण गो बनण वांकड़ा।
आवो तन लादूं गोरी हुना - रुपां वांकड़ा।
गोरी आज देह वोदया नुं हाट जाये वांकड़ा ।
देहवोदया मां पान बीड़ा खाहुं राल वांकड़ा।
पान बीड़ा खांहूं बड़ी मौज्या करहूं वांकड़ा ।
गोरी पोरया ने मेला इसकुंल भणवा वांकड़ा।
भणी - सणी ने थाहे हॉसियार वांकड़ा।
गोरी दारुड़ों पीवें मरें वालो वांकड़ा।
दारु पीहीने बेयर पोरयां कूटे वांकड़ा।
अरे त्यो थायो जोगी ,तूं हूं जाणे जोगड़ी।
गोरी रे हूं पण हतो खोड़लो वांकड़ा ।
सरकारुं ने कायदे साल्यो पसें हदरयो।
हदरी ने खेतर मानी मिनत करी वांकड़ा ।
आजे हरियाली बारे माह रावल वांकड़ा।
धरती खेड़ीन हरियाली करी रे वांकड़ा।
.0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थः

दोस्त मैंने खेतों को जोता और हरित क्रान्ति हुई
अब मेरे देश में आनंद ही आनंद है
विपुल अन्न,
टापरी की जगह एक शानदार हवेली
बैलों की जगह ट्रेक्टर से जुताई
बड़ा आनंद है ट्रेक्टर से काम लेने में
मेरे खेत सिंचते हैं
इंजिन समूची नदी फेर लाया मेरे खेतों में
इस तरह कंकरों में भी गेंहूं ऊगता है
गर्मी में भी हरे भरे रहते मेरे खेत
यहां अन्न ही अन्न है अब।
प्रिये ! ब्याहा तुझे , पर गहनों बिना
आ प्यारी !! तुझे अब सोना - चांदी से लाद दूं,
चल ! आज दोहद की हाट चलें
वहां पान चबायेंगे
बाजार का आनंद लेंगे

प्रिये! बच्चों को स्कूल भेजना पढ़ने
शिक्षित होकर अचछे नागरिक बनेंगे वे
प्रियतमे पड़ोसी शराब पीता है
नशे में चूर पत्नी और बच्चों को पीटता है
तू क्या जाने वह अब है भिखारी
मैं बेहाल था
अनुशासन में रहकर कुछ सुधरा
फिर खेतों में कठिन श्रम किया
और अब देख! यह बारहमासी हरियाली
दोस्त! मैंने धरती जोतकर हरित क्रान्ति कर दी।

संकलन एवं अनुवाद : महिपाल भूरिया

संदर्भः भीली चेतना गीत 1977

0ddddd्dddd्ddddd्dddd्0

## 28.सिक्सा टाली जीवड़लो किकम करी नकेल रे

सिक्सा टाली जीवड़लो किकम करी नकेल रे
सिक्सा वगर नी रेवाए नी रे ढोला मारु जी
हूं ते थाई जोबनयॉ पण सिक्सा लेवा जावूं रे
सिक्सा वगर नी परणुॅ रे नी रे ढोला मारुजी
सिक्सा वगर जीव कलपे जीव ढोला मारुजी
सिक्सा होएत दनियॉ जीत लुॅ दनियॉ ढोला मारुजी
सिक्सा वगर ढोलण वाजुॅ ढोलण ढोला मारुजी
सिक्सा होएत अपसर बणुॅ,अपसर ढोला मारुजी
सिक्सा केवाय आज नी दिवलया नी हेंग रे
सिक्सा केवाए बापड़ी पूनमयो सांद रे
सिक्सा केवाए आजनी परबातुॅ नो दन रे
सिक्सा केवाए आपड़ी वॉहलिया नी धार रे
सिक्सा केवाए आज़ नी रुप नो रे दर्पण
सिक्सा केवाए आज़ नी हुॅकेला वाड़ा मॉ हिंसण
सिक्सा केवाए आज़ नी जीवड़ा नी जेड़
सिक्सा केवाए आज़ नी रोहा नो मारग ने
सिक्सा केवाए आज़ नी वेलूॅ मॉ नी आव रे
सिक्सा केवाए तपण मॉ वड़लयॉ नी सॉयॉ रे
सिक्सा टाली जीवड़ला किकम करी नकले रे
बापा गाम ने हिमाड़े इस्कूल भणवा जावा दे
मारो जीवड़ो समकहे पूनमया सॉद जोग।।

**गीतार्थ :**

शिक्षा बिना नहीं रह सकती नहीं ,ढोला मारु ,मैं हुई जवान अशिक्षता, फिर भी शिक्षा ग्रहण

करुंगी, ढोला मारु शिक्षा बिना हाथ पीले नहीं करुंगी,नहीं कभी नहीं, ढोला मारु शिक्षा के बिना जी तड़पता है, ढोला मारु शिक्षित व्यक्ति दुनिया में सब कुछ कर सकता है, ढोला मारु डिग्री के बिना नौकरी कहां मिलती है?, शिक्षा बिना ढोलण के समान लगती हूॅ, शिक्षिता तो बड़ा अफसर बन सकती, शिक्षा है दीपक की ज्वाला, शिक्षा अंधेरी रात में चांद पूर्णिमा का, शिक्षा भोर में सूर्य का प्रकाश, शिक्षा वसूले की धार जो काट दे, शिक्षा है दर्पण जो सच्चा रुप दिखलाता, शिक्षा है सूखे वाड़ों में सिंचाई ,शिक्षा है जीवन का मूल, शिक्षा है विशाल चिंतामणी, शिक्षा है बालू में जल की धारा, शिक्षा है तीखी धूप में बरगद की छांव, और प्यासे के लिये बावड़ी का शीतल जल, शिक्षा बिना जीवन जटिल बन जाता, बापा! गांव की सीमा पर स्कूल पढ़ने जाने दो, जीवन पूर्णिमा के चांद के समान चमकने दो।

संकलन एवं अनुवाद : महिपाल भूरिया
संदर्भः भीली चेतना गीत 1977

# dksjdw tutkfr ds lkekftd ,oa jktuSfrd yksd xhr

# कोरकू

कोरकू मुण्डा या कोलोरियन जनजाति की शाखा है।कोरकू का अर्थ 'आदमियों की जमात ' है। कोरकू अपने को रावण का वंशज मानते हैं। महादेव को ये इनकी सृष्टि का रचयिता मानते हैं। ये सतपुड़ा तथा महादेव ( पचमढ़ी) पहाड़ियों के आसपास रहते हैं। मुख्यतः ये बैतूल, छिंदवाड़ा,खंड़वा,तथा होशंगाबाद जिले में केंन्द्रित हैं। अब ये देवास ,सीहोर , रायसेन तथा सरगुजा जिलों में भी रहने लगे हैं। इस जनजाति की आबादी दो लाख से अधिक है।पूर्व में यह जनजाति दो भागों में विभक्त हो गयी थी। - राज कोरकू तथा पोथरिया। राज कोरकू भूस्वामी होते हैं तथा सामाजिक मापदंड़ के अनुसार ये पोथरिया से अच्छे समझे जाते हें। अब यह जनजाति क्षेत्रीय आधार पर चार भागों में विभक्त है - मोवासी,बवारी,रुमा तथा बोडोया। अधिकतर कोरकू खेती करते हैं। इनका लगभग 25 प्रतिशतः कृषि मजदूर के रुप में कार्यरत है। बहुत ही कम भाग लगभग सात प्रतिशतः जंगल से लकड़ियां काटकर तथा वनोपज एकत्रित करके बेचता है। यह बहुत ही परिश्रमी जनजाति है। अधिकांश रुप से इनमें एकल परिवार है। इस समुदाय में महिलाओं का स्थान महत्वपूर्ण माना जाता है। शिक्षा की दृष्टि से ये बहुत पिछड़े हैं।इस जनजाति में राष्ट्रीय भावना एवं जनचेतना को लोकगीतों में में व्यक्त करने की एक सूदीर्घ परंपरा रही है।

## कोरकू जनजाति में प्रचलित राजनैतिक एवं सामाजिक चेतना के लोक गीत -

इस शीर्षक के अंर्न्तगत मैंने 16 लोकगीतों को रखा है। लोक गीतों की गहरी पड़ताल करने और उनके अंदर सूक्ष्म चेतना तत्वों का विश्लेषण करने के लिये कुछ और उपशीर्षकों में उन्हें विभाजित किया है।

1. कोरकू जनजाति में राजनैतिक चेतना से युक्त लोकगीत -

## 1.चोय मान्दीवेन,नेहरुगांधी जी चोय मान्दीवेन

चोय मान्दीवेन,नेहरु गांधी जी चोय मान्दीवेन।
इंधार - धोंधार राज सुबानकेन।
चोय मान्दीवेन, नेहरु गांधी जी चोय मान्दीवेन।
कोरो नो भोया वे राजो रटीवन,
चोय मान्दीवेन, नेहरु गांधी जी चोय मान्दीवेन।
कुमानो कपड़ा ते, राजो रटीवन,
चोय मान्दीवेन, नेहरु गांधी जी चोय मान्दीवेन।
आले टोटरा माथे पचना गाड़ा आड़ीवन,

चोय मान्दीवेन,नेहरु गांधी जी चोय मान्दीवेन।

**गीतार्थ -** हे भाई गांधी जी और नेहरु जी ने हमें पुकारा है । हमें आजादी की लड़ाई में जाना है। आजादी की यह पुकार , इधर - उधर सब दूर से उठ रही है। सभी आदमियों को इस लड़ाई में चलना है। हमें अपनी आजादी को पाने के लिये अपना सर्वस्य लुटा देंगे। विदेशी कपड़े छोड़ देंगे, चाहे हमारा गला कट जाय, चाहे सिर पर ड़ंड़े पड़ें, लेकिन हम भरी हुयी गाड़ियों के समान हमारे रास्ते पर अड़े रहेंगे। गांधी जी और नेहरु जी ने हमें पुकारा है।

( संदर्भ ग्रंथ - सुराज. आदिवासी लोक कला परिषद )

## 2. जीव उरा सुसुन ऐटा जेका सिरिंग रे

जीव उरा सुसुन ऐटा जेका सिरिंग रे।
बापूयेन खोबोर हेजेबा रे।।
आनंदोटेन कोयोके सुसुन जा रे।
एटा केण्ड़े बदड़ायेन डडाल जा रे।।
आले सब्बोकू सड़पेबा रे ।
हिम्मटो कामू ड़ायूबा रे।।
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ -**

हे भाई हम सब कोरकूओं का मन नाच उठा है। आओ रण भेरी के गीत गाओ। गांव - गांव में घर - घर में बापू का संदेश आया हैं यह संदेश अपने देश को अंग्रेजों से मुक्त कराने का है। हम सब एक जुट होकर स्वतंत्रता आंदोलन में गांधी जी का साथ दें।

अंग्रेजी रुपी काले बादलों को भगाकर ही रहेंगे। तब कहीं खुशी की हवा बहेगी। तब अपना देश स्वतंत्र होगा। अपना ही राज्य होगा। हम सब कोरकू आगे बढ़ें। गांधी जी का साथ दें। हिम्मत से काम लें।

( संदर्भ ग्रंथ - सुराज. आदिवासी लोक कला परिषद )

## 3. ड़ोंगरेन सत्याग्रह सेबेय कू

गांधी बाबा , गांधी बाबा
आले आरजो आयुमे।
आले सेबेय कोरकू नी,
माण्ड़ी आम आयुमे।
आमका आले आयोम बाबा,
ड़ोंगरेन सत्याग्रह सेबेय कू।
झट्टो - पट्टो इंगरेज कू नी,
आले डेसोन नामा हातरे।
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ -**

गांधी बाबा ,गांधी बाबा, हमारी विनती सुनो।हम सब कोरकुओं की बात तुम सुनो। हम सभी तुम्हारे साथ हैं। हे गांधी बाबा। जंगल सत्याग्रह में सभी एक साथ हैं। झटपट अंग्रेजों को अपने देश से अब भगाना है।

संकलन एवं अनुवाद- राधेश्याम शांडिल्य

## 4. इंगरेज कू गोजखे एटा कखब्बे

ड़ोंगरेन कूला बीड़े , ड़ोंगरेन कूला बीड़े।
आलेका ओटे इंगरेज आरागेज बा।।
इंगरेज जांगड़ी कू बांग संगोएन सोप्टी।।
ड़ोंगोरेन सत्याग्रह गांधी संगोएन सोप्टी।।
भाला बल्लम डो आखे दातरोम।
कोरा जफाय सब्बोकू बो संगोम।।
इंगरेज कू गोजखे एटा कखब्बे।
आलेका ओटे आन्टे लियेन आलेबी गोजखे।।
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थ -

हे जंगल के शेर वीर जागो। अपनी धरती से अंग्रेजों को भगाओ। हे साथी अंग्रेजों का साथ मत दो। जंगल सत्याग्रह में गांधी जी का साथ दो। भाला बल्लम कुल्हाड़ी और हंसिया उठाओ। अंग्रेजों से लड़ने चलो। अंग्रेजों को मारो और भगाओ। अपनी धरती की रक्षा के लिये अपना बलिदान कर दो।

( संदर्भ ग्रंथ - सुराज. आदिवासी लोक कला परिषद )

## 5.टाल टालाटोन, भारत माय जय माण्डीयेन

टाला टालाटोन, भारत माय जय माण्डीयेन।
टाला टालाटोन, गांधी आबा जय माण्डीयेन।।
सेबेयकू मिलांिटजटेन, डेसा सिरिज सीरिजवेन।
अजाडी लड़ाई लड़ाटिंजवेन,गोराकू हरांिटजयेन।।
डिजखे जोर जुलुम नाका बांग डाडायेन।
आले आलेका डेसोन अजाड़ी घटायेन।।
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थ -

गली - गली में भारत माता की जय बोलो। गली - गली में गांधी बाबा की जय बोलो। सब मिलकर वीर गर्जना के गीत गाओ। आजादी के लिये लड़ाई करो और गोरों को भगाओ।उनका जोर जुलुम और अत्याचार नहीं चलेगा। हम अपनी आजादी लेकर ही रहेंगे।

( संदर्भ ग्रंथ - सुराज. आदिवासी लोक कला परिषद )

## कोरकू जनजाति में प्रचलित सामाजिक चेतना के लोक गीत -

## 6. सूरज देवता तुम बड़ो रे भायु,

सूरज देवता तुम बड़ो रे भायु,
तुम सन की भई रे पुकार।
मंगा दो खाण्डे खेड़यो राखन।
गागर पानी तुम धरयो रे भायु,
युद्वन की भई रे पुकार,
मंगा दो खाण्डे खेड़यो राखन।
आ लइयो रे राजा, हो जइयो रे भायु,
तुम सन की भई रे पुकार,
मंगा दो खाण्डे खेड़यो राखन।
तरवलतो तरवाल हल रहयो रे भायु,
बरछी की लगी घमासान,
मंगा दो खाण्डे खेड़यो राखन।
कांसे की मटकी मा दूध धरयो रे भायु,
सोने की मटकी में भात,
मंगा दो खाण्डे खेड़यो राखन।
ले जइयो राजा,हो जइयो रे भायु,
तुम सन की भई रे पुकार, मंगा दो खाण्डे खेड़यो राखन।
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ -**

आजादी का सूरज उदित होने वाला है! बूड़े भाई अर्थात गांधी जी ने सबको पुकारा है, हमें अपने देश की रक्षा करना है चाहे इसके लिये हाथ में तलवार उठाना पड़े। हे भाई सागर का पानी खौल रहा है।हमें जोश के साथ स्वतंत्रता के युद्व में हाथ में तलवार लेकर कूंदना है, बरछी लेकर चलना है। स्वतंत्रता के युद्व में हम कुरबानी चढ़ा देंगे।हमारी कुरबानी से आजादी प्राप्त होगी। तभी कांसे की मटकी में दूध और सोने की मटकी में भात पकाने को मिलेगा। तभी हमें अच्छा - अच्छा खाना मिलेगा।

संकलन एवं अनुवाद : डॉ.महेश शांडिल्य

## 7. बारा जीरा खोदियो रे राजा मारे

बारा जीरा खोदियो रे राजा मारे
बारा झीरा डो खोदियो रे
बारा झीरा डो खोदियो रे
चोज सांटी बारा झीरा खोदियो जा राजा बोले
चोज सांटी बारा झीरा खोदियो जा राजा बोले
चोज सांटी बारा झीरा खोदियो रे
चोज सांटी बारा झीरा खोदियो रे
बारा जीरा गांजा बीजो बिडेवाडो रानी मारे

बारा जीरा गांजा बीजो बिडेवाडो रानी मारे
बारा झीरा गांजा बीजो बीडे बोले
बारा झीरा गांजा बीजो बीडे बोले
गांजा बीजो चोज कामू हाजेवाला राजा बोले
गांजा बीजो चोज कामू हाजेवाला राजा बोले
गांजा बीजो जा चोज सांटी हाजे बोले
गांजा बीजो जा चोज सांटी हाजे बोले
गांजा पाला मलाटीये वा डो रानी मारे
गांजा पाला मलाटीये वा डो रानी मारे
गांजा पाला मलाटीवा
गांजा पाला मलाटीवा
गांजा नासा नूनू वाड़ो रानी मारे
गांजा नासा नूनू वाड़ो रानी मारे
गांजा नासा डो नूनू बोले
गांजा नासा डो नूनू बोले
ढिका भेरे कजलीबन बिन्दराबन
ढिका भेरे कजलीबन बिन्दराबन
गिटीज केनजा राजा मारे ढिका भेरे
गिटीज केनजा राजा मारे ढिका भेरे
कजलीबनन बिन्दराबनन गिटिज केरे
कजलीबनन बिन्दराबनन गिटिज केरे

**शब्दार्थ -**

बारा - बारह, जीरा - कुइयां, खोदियो - खोदना, चोज सांटी - किसलिये, बिडे बाडो - बोना, हाजे - आना, मलाटिये - मसलना, नासा- नशा, नूनू -पीना, गिटिज केनजा-इस कारण।

**गीतार्थः-**

पति गांजा पीकर मर गया। इस बारे में पत्नि कह रही है - हे पति देव ! बारह गड्ढें क्यों खोद रहे हो। बताओ बारह गड्ढें क्यों खोद रहे हो ? बताओं किस कार्य के लिये तुमने बारह गड्ढे खोद ड़ाले हैं। पति ने कहा मेरी रानी इन बारह गड्ढों में गांजे के बीज बोयेंगे। पत्नि बोली - पति देव मेरे ! यह गांजे का बीज किस काम आयेगा ? बताओं किस काम आयेगा ? पति ने कहा मैं गांजे के पत्तों को मसल - मसल कर पियूंगा। मेरी रानी। गांजा मसल - मसल कर पियूंगा। मैं गांजे का नशा रोज करुंगा। मेरी रानी मैं तो रोज गांजे का नशा करुंगा। पत्नी ने कहा इसलिये तू सदा के लिये जंगल में सो गया है। ओ मेरे पति तू नशा करना छोड़ दे।

सौजन्य - सिटारा बाई, ग्राम रोशनी
संकलनकर्ता एवं अनुवाद - डॉ. धर्मेन्द्र पारे

## 8. धरती चोजा लियेन टेगेन

डेगेन केन इयां आयोम लियेन
धरती चोजा लियेन डेगेन केन इयां आयोम
धरती चोजा लियेन टेगेन

धरती शेषनागे फन लियेन टेगेन इयां बेटा
धरती शेषनागे फन लियेन टेगेन
शेष नागों टोलेमा डेगेन केन इयां आयोम
शेष नागों टोलेमा टेगेन
शेष नागों शंकर गला हार आरुकेन इयां बेटा
शेष नागों शंकर गला हार आरुकेन
शेष नागों टोलेमा टेगेन इयां आयोम
शंकर भगवान टोलेमा टेगेना इयां आयोम
शंकर भगवान टोलेमा टेगेने के
शंकर भगवान पर्वत टेगेन केन इयां बेटा
गंगा जमुना रे टोलेमा टेगेन केन इयां आयोम
गंगा जमुना टोलेमा टेगेने
गंगा जमुना शंकर भगवान ऊबा गोठी टेगेन
आसमा जे शक्ति टेगेन के इयां आयोम
आसमा जे शक्ति टेगेन
आसमा ऐजा शक्ति टेगेन इयां बेटा
आसमा ऐजा शक्ति टेगेन

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**शब्दार्थ -**

डेगेनकेन - खड़ा होना, इयां - मेरा, आयोम - मॉ, लियेन - ऊपर,, चोजा- किसका, शेषनांगे - शेष नाग, नागों - नाग, ओलेमा - किस जगह।

**गीतार्थ -**

धरती मॉ किसके ऊपर खड़ी है ? धरती शेष नाग के ऊपर खड़ी है। मेरे बेटे! क्या तुम नहीं जानते ? मॉ शेषनाग कहां रहते हैं ? शेष नाग शंकर भगवान के गले में रहते हैं। वहीं पर उठते बैठते हैं। मेरी मॉ मुझे बताओ कि शंकर भगवान कहां खड़े हैं ? शंकर भगवान पर्वत के ऊपर खड़े हैं। जहां से गंगा - जमुना निकलती हैं गंगा जमुना कहां है मॉ ? गंगा जमुना भगवान शंकर की जटा से निकल रही है। मॉ ! आकाश किसके ऊपर खड़ा है ? आकाश अपने आप ही खड़ा है।

( संदर्भ ग्रंथ - सुराज. आदिवासी लोक कला परिषद )

## 9. आजे डो कोन्जई आजे डो कोन्जई राजो

आजे डो कोन्जई आजे डो कोन्जई राजो
गद्दी संबाई आमा कोरा काकेड़ा पढ़ाई डो
कोन्जई रोचो न रोचो माराटेन बोचोवा डो
कोन्जइ्र आम नी इयां नी कोन्जई कोन्जई
आमा गाव नी एल्ले नी वाने डो कोन्जई

(स्रोत व्यक्ति : माखन,ग्राम - आमाखाल)

**शब्दार्थः**

आजे - आज, कोन्जई - बेटी, राजो - राज, सुबाई - बैठो, कोरा काकेडा - कोरा कागज, माराटेन- ऑसू , बोचोवा - गिरना/लरजना

ढउंपसजवरूगिरना/लरजनाझ, आम - तुम, इयां - मेरी,बाने - नहीं।

**गीतार्थः**

आओ बेटी आओ! राजगद्दी पर बैठो! तुम कोरे कागज लेकर पढ़ाई करने जाओ।बेटी मॉ की आंखों से बूंद - बूंद आंसु लरज रहे हैं।बेटी! तुम्हारा घर तो ससुराल ही है।बेटी यह गांव तुम्हारा नहीं है।

भारत की कितनी जातियां हैं जिनमें बेटी के जन्म का इस तरह स्वागत किया जाता है ? मेघालय की खासी जनजाति में अवश्य बेटी के जन्म पर खुशीयां मनाई जाती हैं। किन्तु वह जनजाति तो स्पष्ट रुप से मातृ सत्तात्मक जाति है।

संदर्भः कोरकू संस्कार गीत - डॉ.धर्मेन्द्र पारे

# 10. मिया नी दाना जोवन जा जगमा

मिया नी दाना जोवन जा जगमा
बारी नी दाना जोवन जा
बारी नी दाना जोवन जा जगमा
कन्या कुवरा डाखे
कन्या कुवराडाखे जा जगमा
हरदा शहरन बुढकी आरगे

(स्रोत व्यक्ति-लक्षमण ग्राम-मुरलीखेड़ा)

**शब्दार्थः** मिया - एक, दाना - अन्न/भोजन,जोवन ढउंपसजवरूअन्न/भोजन,जोवनझ - जीमना/खाना,जगमा ढउंपसजवरूजीमना/खाना,जगमाझ - माता - पिता,बारी - दो,डाखे - कर दिया, कन्या कुवरा - कुमारी/कन्या,हरदा ढउंपसजवरूकुमारी/कन्या,हरदाझ शहरन - हरदा शहर में,बुढकी - बंदूक,आरगे - छोड़ो /दागो,

**गीतार्थः**

मॉ का प्रसव सम्पन्न करने वाली दायन(दाई) माता - पिता से कह रही है कि - मैंने चाहे अन्न का एक दाना खाया।चाहे दो दाने खाये पर इस (नवजात) कुमारी को!कन्या को ( संसार में आने का) कार्य सम्पन्न किया है।( आशय इसे जीने का हक मिल गया है,प्रसव ठीक से सम्पन्न हो गया है) अब आप इस खुशी में हरदा शहर जाकर बंदूक छोड़ो!

कन्या के जन्म पर इस तरह के उत्साह और हर्ष की अभिव्यक्ति वही समाज कर सकता है, जहां स्त्री -पुरुष समान हों।कलान्तर में संस्कृतिकरण के चलते इस समाज में भी पुत्र लालसा बढ़ी है।किन्तु आज भी इस समाज में कन्या जन्म पर कतिपय हर्ष भरे गीत मिलते हैं।

संदर्भः कोरकू संस्कार गीत - डॉ.धर्मेन्द्र पारे

# 11. आला जड़का सायला रे राजा

आला जड़का सायला रे राजा सूखा जड़का सायला नहीं रे
आला जड़का सायला रे राजा सूखा जड़का सायला नहीं रे
इंजनी जेनोमा का बंझोटी जा राजा धामू टीसो सेने मारे
इंजनी जेनोमा का बंझोटी जा राजा धामू टीसो सेने मारे
आमा रानी ककोटा केनवेन्ज राजा आमा रानी झूला में झूल
आमा रानी ककोटा केनवेन्ज राजा आमा रानी झूला में झूले
आमा रानी बंझोटी जा राजा धामू टाला कामाय सेन
आमा रानी बंझोटी जा राजा धामू टाला कामाय सेने

(स्रोत व्यक्ति - पार्वती बाई,ग्राम - मातापुर)

**शब्दार्थः** आला - गीला, जड़ूका- जड़ का, सायला - सलाह, इंजनी - मैं तो, जेनीमाका - जन्म से, बंजोटी - बांझ, धमूटी सो - कड़ाके का घाम, सेने मारे - जाना पड़े, आमा - तेरी, ककोटा- बच्चा, कोन बेन्जा - बेटे को जन्म दिया,घामू - घाम, टाला - भीतर,कामाय - काम, सेने - जाना,

**गीतार्थः**

जैसे पेड़ की जड़ आली (गीली और नम)है तो सब कुछ है और यदि जड़ सूख जाये तो कुछ भी नहीं! उसी तरह बाल - बच्चे वाले पति - पत्नी ठीक हैं बिना बाल - बच्चे के रहना ठीक नहीं। बिना बाल - बच्चे वाली महिला को घाम (धूप) में काम करना पड़ता है और बच्चे वाली मॉ कुछ देर तो झूले में बच्चे के साथ झूल ही लेती है।अगर तुम्हारी पत्नी बांझ होगी तो सदा घाम में काम करना पड़ेगा।

संदर्भः कोरकू संस्कार गीत - डॉ.धर्मेन्द्र पारे

## 12. बालेमा बालेमा बालेमा जा

बालेमा बालेमा बालेमा जा
बालेमा बालेमा बालेमा जा
बालेमा जा सिलसिल पाटा नाइयो जा बालमा रे
बालेमा जा सिलसिल पाटा नाइयो जा बालमा रे
बालेमा सिर जगह सिर सोटकेन जा बालमा रे
बालेमा सिर जगह सिर सोटकेन जा बालमा रे
बालेमा जा सिलसिल पाटा नाइयो जा बालमा रे
बालेमा जा सिलसिल पाटा नाइयो जा बालमा रे

(स्रोत व्यक्तिः शांती लाल कासड़े,ग्राम - छुरी खाल)

**शब्दार्थ :** बालेमा - प्रिये का संबोधन, सिलसिल पाटा - कीचड़, नाइयो - नहाना,सोटकेन - गिर जाना,

**गीतार्थ :**

एक आदमी गंदे नाले में नहा रहा था। उसकी पत्नी ने उसे देख लियातो कहा प्रिये ! तुम्हें शर्म नहीं आती! ऐसे पानी में नहाते हो!मैं साफ पानी लेकर आती हूँ उससे नहाओ।

संदर्भः कोरकू संस्कार गीत-डॉ.धर्मेन्द्र पारे

## 13. गंगा जुमना डो सुबान केरे

ए माय डो ऐ माय डो माय
इंज सेनवा चारी कोना तीरथो
बारेन डो सेने बोले
ऐ कोन जा ऐ कोन आमानी उरगा टालान
गंगा जमुना डो सुबान केरे
ऐ कोन जा ऐ कोन चारी कोना
चोजा सांटी चारी कोना

तीरथो बारेन डो सेने बोले
ऐ कोन जा ऐ कोन आमानी उरागेन
गंगा जुमना डो सुबान केरे
( स्रोत व्यक्ति-गंगू बाई . ग्राम - टेमला बाड़ी )

**शब्दार्थ :**

माय - मॉ,डो - वो, इंज - में, सेनेवा - जाऊंगा,बारेन - के लिये, सेने - जाना, कोन - बेटा, अमानी - तेरा ही, उरगा - घर के, टालान - भीतर, गंगा जुमना - माता - पिता, सुबान केरे - बैठे हें रे, चोजा सांटी - किसलिये।

**गीतार्थ :**

माँ! ओ माँ ! मैं चारों कोनों में तीर्थ करने जाऊंगा । बेटा तुम्हारे ही घर के भीतर गंगा - जमुना ( माता - पिता) बैठे हें। बेटा! ओ बेटा! बताओ चारों कोने में तीर्थ करने क्यों जा रहे हो? बेटा तुम्हारे ही घर में गंगा जमुना (माता - पिता) हैं।

संदर्भः कोरकू संस्कार गीत - डॉ.धर्मेन्द्र पारे

## 14. कनयारी फूल डो माय

कनयारी फूल डो मायबेटा का जोवेना रे
कनयारी फूल डो मायबेटा का जोवेना रे
बेटी का डीयो माय
बेटी का डीयो माय
बेटी का डीयो माय टापी न पेला रे रे
बेटी का डीयो माय टापी न पेला रे रे
जंगेला चलो डो माय दुनिया न देखी से हो
जंगेला चलो डो माय दुनिया न देखी से हो
बेटी का डूकी डो माय
बेटी का डूकी डो माय
बेटी का डूकी डो माय भगवान जाने से हो
बेटी का डूकी डो माय भगवान जाने से हो

**शब्दार्थ -** कनयारी - फूल,डीयो - देनना,टापी - अच्छी तरह,पेला - पीले वस्त्र,डूकी - कुड भरना,

**गीतार्थ :**

इस समय पेड़ पौधों में फूल खिलने लगे। चारों तरफ हरियाली है। जो बहुत अच्छी लग रही है। मेरा मन जंगल घूमने का हो रहा है। वहां पर पशु पक्षी, नदी - नाले,कितने सुन्दर हैं।ईश्वर ने इनको किस तरह रचा होगा ? ईश्वर ही जाने। जंगल के समान खूबसूरत दुनिया मैंने नहीं देखी।

( स्रोत व्यक्ति - राधा,ग्राम-कुकड़ा पानी ) संकलनकर्ता - डॉ.धर्मेन्द्र पारे

## 15. ढोगजा गोमजा डोगेजा अंगा बन डो पगड़ी बान

ढोगजा गोमजा डोगेजा अंगा बन डो पगड़ी बान
ढोगजा गोमजा डोगेजा अंगा बन डो पगड़ी बान

कमय मेटे घट़ऊवा,कमय मेटे घटऊवा
कमय मेटे घट़ऊवा,कमय मेटे घटऊवा
इयां दया डोया मकान,इंज जिंदा ठाइवा
इयां दया डोया मकान,इंज जिंदा ठाइवा

(स्रोत व्यक्ति-परसराम पठारे,ग्राम - लखनपुर)

**शब्दार्थ** : ढोमेजा गोमेजा - हे प्रभु मुझ पर दया करो,अंगा बन डो पगड़ी - कमीज भी नही है और धोती भी नहीं है।, मय - काम करना, घटऊवा - फिर मिलेगा, इयां दया - मुझ पर दया करो, इंज जिंदा ठाड़वा - मैं जीवित खड़ा हूँ।

**गीतार्थ :**

हे ! देवता मुझ पर दया करो। मैं बहुत गरीब आदमी हूँ मेरे अंग पर कपड़े भी नहीं हें। मेरे सिर पर पगड़ी नहीं है। (उसके भाई कहते हैं कि) पहले काम करो तभी खाने और पहनने मिलेगा। यहां पर कोई दया नहीं करता काम नहीं करोगे,तो ऐसे ही जिन्दा मर जाओगे।

संदर्भः कोरकू संस्कार गीत-डॉ.धर्मेन्द्र पारे ,म.प्र. आदिवासी लोक कला अकादमी

# Hkrjh yksd xhr

## 1. भूमकाल गीत

सुना सजन हे, सान - सियान हे!
भूमकाल - गीत गाइ सुनाइबी।
किरपा करो मोके हे भगवान!
काई के ना जानी पीला लोक मुई।
सुना तमी बाप - भाई।
कायेरी कुचर ,पांगन - नासन
करले आचे काय लाभ।
रोजे दिनर अतेयचार ने चेत चेघला ।
मांवली माता के बंदना करलाय।
सेनवार दिने रुंढ़ा होई करि,
उलनार - माटा ने आसी आली - पाली,
धुरवा - माड़ेया मिसि लड़ई मुरायलाय।
धन - धन तिकर सोसा !

नेतनारे देबी मावली रला ।
कांड़की परगने कुड़ुमतुला ।
दुया देबी उठलाय आऊरी,
लकबीक गलाय गढ़ सहरे!
काय करके सकबाय साहेब चार।
नली बाटे जायसी पानी धार
ए परकार देवता - र सत।
धुरवा - माड़ेया मिसि लड़ई मुरायलाय।
दखि अचरित सबू होय लाय ।
लड़ई खेलबा काजे देबी उठलाय।
सबू - र देहें चण्डि देघिला!
गांव - गांव करि होयलाय रुंढ़ा!
गोटकी थाने बसलाय जुथा।
हयंती ले करलाय बिचार।
साहेब - र आचे कड़क सोसा।
धरि सबू के मारा!
अमता बलिला,उठला गुण्डा।
हाथे धरिला काबन - खांड़ा।
देहें ने पींधला लड़ई बाना।
जुद्व करबा काजे निकरि देला।
तार छू पंचकुती उठलाय रडी।
पटसयन के नेला गोहड़ी।
चाउर जाड़लाय भातया बलि।
सक ने पींधलाय पीतल माली।
मुण्ड़े पींधलाय कुकड़ा जाली।
आंची फटई आटा पाली।
एके सोर होई भूम कालेया।
गलाय जसन ठेला - ठेली ।
धुरवा - माड़ेंया सबू गलाय।
उलनार - माटा ने जमक करलाय।
कोनाड़ी मुण्ड़े ठूल।
आशा - आशा दखा पअसयन।
रुंढ़लाय माड़ेय - दल ।
एने सोनू मांझी बिचार करला ।
दुई ढ़ोल मंद के नई देला।
चाखना काजे बरहा पीला।
अतक जाक के रुंढ़ाई देला।
सेमली कोनाड़ी नेला।

सोनू मांझी - र अकल निरगम मारला।
पटसयन के देला।
मंद के दखि करि सरदा हेलाय।
बरहा पीला के पोड़ाई देलाय।
मंद संग काजे चाखना करलाय।
खाई देलाय हासि - माति।
गोठे बाती होइ निसा धिगला।
अदगर कुप राती।
निसा धरबा के पडला सोई।
तीर धनु - कांड़ भाटा ने ढ़ोई।
अतक गियान तिके ना रला।
मातलाय बुध गुपाई।
सोनूमांझी दखा सुसारे कांहा।
साहेब छम रे जाई।
धुरवा - माड़ेय भूमकालेया।
तोके मारबा काजे होयलाय सोर।
हई कथा मुई काने सुनिली।
दुइ ढ़ोल मंद नेई दिली।
चाखना संगे खायलाय सबू।
एबे तमी बेगे जाई।
तमी जसन विचार होई।
पोड़ा ओ नलि फुटाई !...
पादरी साहेब सुनिला खबरे।
तुरसे गला महल भितरे।
नलि करति खांड़ा बेचलाय आरी।
मोटल उपरे नेलाय भरी।
पुलुस जुआन पलटन मन।
मोटल उपरे बसलाय जसन।
बेढ़ि चारो बाटे खंजि पकायलाय ।
लाइट बिजली मारी।
लोहा - र झिलंगी पीधी करि।
पराय आयलाय मोटल चेघी।
पलटन जुआन माने।
पटसयन सबू सोई आचत।
सेमली सोनाड़ी थाने।
हई थाने साहेब उतरि गला।
एने - हाने बुलि दखला।
कांड़ - धनु सबे लुकाई देलाय !....

झाने मरलाय ,ठाने पड़लाय ।
आने उठलाय फाफड़ी होई।
कांड़ धुन तिकर लगे नाई।
एनके - तिनके दखि पलटन - बल।
बाचला लोक गलाय पराई !....
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थ -

ओ सुजन ! ओ छोटे - बड़े ! सुनो, मैं तुम्हें भूमकाल (क्रांति) के गीत सुना रहा हूं। हे भगवान, दया करो; नादान हूं। तुम्ही पिता हो; तुम्ही बंधु हो; ईर्ष्या, द्वोष, पांगन - नाशन या मारण - मंत्र प्रयोग से क्या लाभ है?

रोज - रोज के अत्याचारों से गढ़ेया1, ग्रामवासियों में चेतना आई; सती कुंड़2, घाटे एकत्र हुये; शनिवार को; मावली माता3, की वंदना कर ली; निर्णय ले लिया ;उलनार4, के मैदान पर; एक जुट; होकर ; धुरवा - माड़िया आदि ने कर दिया युद्वारम्भ ।

धन्य - धन्य उनका साहस; नेतानार 5, में थीमावली; कांड़की परगन6, मैं थी; कुड़मुतुला7, क्रुद्व हुई देवियां ; चढ़ बैठी गढ़ सहर 8, पर; क्या कर सकेंगे साहब दो - चार;, नलियों9, से निकलेगी पानी की धार; देवी - धामी की महिमा अपार; धुरवा माड़िया ने कर दिया युद्वारम्भ।

युद्व खेलने के लिये फड़क उठी देवियां; चढ़ गई चंड़ी सब की देहों में; जमा होने लगे गांव - गाव लोग; लगे बैठने; लगे सोचने; साहेबों का साहस कितना; मारो पकड़ो सबको; बोल उठा गुण्डाधूर10, लेकर काबना खांड़ा11, पहन ली युद्व की पोशाक; निकल पड़ा युद्व के लिये; बुजुर्ग कहते बित्ता भर थी उसकी पूंछ12, दिया सबने उसका साथ; क्रांति सेना तैयार की; गले में पहनी पीतल की हार; सिर पर ड़ाले मुर्ग - पंखों की जालियां13, कमर में बांधा आटापाली 14; एकमत हो चले क्रांति - सैनिक; धुरवा माड़िया आदि; उलनार भाटा में; कोनाड़ी15 ; मुण्डे; युद्व सामग्री इकट्ठी की ; आओ - आओ देखो ये क्रांति कर्मी हैं - माडिया दल ; उधर सोनू मांझी 16 ने विचार बांधा;

दो ढ़ोल मंद एक सुअर - बच्चा पहुंच आया; सेमली कोनाड़ी17; दुबुद्वि सोनू; क्रांति कर्मी; देखकर मंद; हुये प्रसन्न; भून लिया सुअर सावक को ; हंसी - खुशी में पी गये मंद; खा गये सुअर बच्चा; आधी रात ; बातो ही बातों में; कब्जे में आ गये; नशा और नींद के धनुष, तीर , फरसे , भाले आदि सब पड़े रहे अस्त - व्यस्त; ज्ञान न रहा उन्हें जरा भी; पड़ गये बेहोश ; चुपचाप पहुंचा ; सोनू मांझी; पादरी के पास ; बताया ; धुरवा - माड़िया भूमकालेया 18 हो गये एक जुट; तुम्हें मारने के लिये; सुनी है मैं ने यह बात; अपने कानों ; पहुंचा दिया मैंने दो ढ़ोल मंद; चाखना19 के साथ; पी खाकर पड़ गये वे अचेत; जाओ अब उन्हें तुम भून ड़ालो ; गोलियों से मौका अच्छा है ; दुबुद्वि सोनू; खबर पाकर पादरी साहेब20; तुरन्त गया; महल के भीतर ; बैठकर मोटर; पुलिस और पलटन के जवान; चल पड़े वन वेग से; लोहे की झिलंगी 21 पहनकर; भग आये; लाइट मारी; छेक लिया चारों ओर से ; बलवाई सब सोये पड़े हैं ; सेमली - कोनाड़ी ठाने; पहुंच गये साहेब सब; ठिकाने पर; इधर उधर देखा; घूम - फिरकर कब्जे में

कर लिये हथियार; चला दी गोलियां; दनादन ;कुछ शहीद हुये; कुछ गये भाग।

गीत संदर्भ :

1.गढ़या ग्रामःलोहंड़ीगुड़ा के आसपास स्थ्ति एक गांव,जहां दण्डामी माड़िया अधिक रहते हैं।इसी ग्राम में सन् 1910 के बलवे की पहली बैठक हुयी थी।

2.सती कुंड़ घाट : चित्रकोट के आसपास स्थ्ति इंद्रावती का कोई एक घाट,जहां लोक विश्वास के अनुसार कभी कोई रानी सती हुयी थी।

3. मावली माता : दुर्गा का एक रुप।

4. उलनारःजगदलपुर तहसील स्थ्ति पूर्वी भाग का एक गांव, जहां बलवाई मिल बैठे थे।

5. नेतानारः कोटमझर के समीप बसा एक विप्लवी गांव।

6. कांड़की परगनः दरमा - क्षेत्र में अबाद धुरवा परगना का एक पुराना नाम ।

7. कडुमतुलाः युद्व की देवी।

8. गढ़ सहरः जगदलपुर जो पहले गढ़ के अंदर था।

9. नंलियों : बंदूक की नलियों।

10. गुण्डाधूरः सन् 1910 के बस्तर विप्लव का एक तेजस्वी धुरवा नेता।

11. काबना - खांडा : गंडासा

12. पूंछ : बुजुगरें के अनुसार गुण्डाधर एक दुमदार आदमी था।

13. जातियांः मुर्ग पंखों से बनी एक युद्व टोपी।

14. आटा पाली : कमर में बांधने का  कपड़ा। 15. कोनाड़ीः तीन ओर जंगलों से घिरा खेत।

16. सोनू मांझी : एक धोखेबाज वनवासी नेता, जिसने र्स्वाथवश बलवाईयों को पकड़ा दिया था।

17. सेमली - कोनड़ी : उलनार की तत्कालीन कोई कोनाड़ी।

18. भूम कालेया : क्रान्तिकारी।

19. चखनाः शराब के साथ ली जाने वाली वस्तु।

20. पादरी साहेबः वार्ड नाम का एक तत्कालीन पादरी,जो दोहरी भूमिका अदा करता था।वनवासियों के बीच इसने ईसाईकरण का कुचक्र चलाया था,जिससे वनवासी उससे बहुत नाराज थे।

21. झिलंगीः कवच।

संकलन एवं अनुवाद - लाला जगदलपुरी

(भतरी में सन् 1910 के बस्तर विप्लव का एक गीत दस्तावेज)

( संदर्भ ग्रंथ - सुराज. आदिवासी लोक कला परिषद )

## 2. साग भाई नाई कोनी

नानी बड़े सब गोटकी माने
कोनी नाड्र भिने।।
सब चो जात में खून मिलू आत
न मिल दूध नी।
जीव गेला बेरा धनमाल नाई,
साग भाई नाई कोनी।।

**गीतार्थ-**

छोटे बड़े सब एक समान हैं, कोई भिन्न - भिन्न नहीं है। सभी के तन में रक्त प्रवाहित है, किसी के भी तन में दूध या पानी नहीं है।

मृत्यू के समय न तो धन साथ जाता है ओर न ही जाति बिरादरी के लोग।

संकलन एवं अनुवाद : निरंजन महावर

(साभार - सुराज- म.प्र.आदिवासी लोक कला परिषद )

**mjkao tutkfr esa izpfyr jktuSfrd vkSj lekftd psruk ds yksd xhr**

# उराँव

यह जनजाति मुख्यतः सरगुजा तथा रायगढ़ जिले में निवास करती है। यह जनजाति औराँव,कुरुख,धनका,धांगर,कुड़ा तथा किसान नामों से भी जानी जाती है।इनको ओंड वंशीय माना जाता हैं उरँव शब्द की उत्पत्ति ओंड से मानते हें।उराँव शब्द की उतपत्ति उरापे(मनुष्य)से भी मानी जाती है। मध्य प्रदेश की जनजातियों में गोंड एवं भील के बाद उराँव जनजाति का स्थान है। इनका परिवार पितृ - सत्तात्मक होता हैं उराँव मुख्यतः कृषक हें। हलांकि इनके पास बहुत कम जमीन हैं।कृषि के साथ ही पशुपालन,शिकार तथावनोपज द्वारा अपना जीवन - यापन करते हें। बहुत ही कम लोग कृषि मजदूर हैं। इस समुदाय के लोग बहुत मेहनती और मजबूत होते हैं। ये शराब के बहुत शौकीन होते हैं। इस जनजाति पर क्रिश्चियन तथा हिंदू संस्कृति दोनों का प्रभाव है। नृत्य - गान इनके जीवन का अभिन्न अंग है। इनकी अपनी पंचायतें होती हैं।बैगा या देवार इनका धार्मिक गुरु होता है। शिक्षा की दृष्टि से इस क्षेत्र की अन्य जनजातियों में ये अग्रणी हैं।

## . उरॉव जनजाति में राजनैतिक चेतना से युक्त लोकगीत -

## चींया चींया बाबारजिनिम चींया बाबा

चींया चींया बाबारजिनिम चींया बाबा
देशेनिम चींया बाबा किलसनिम चींया बाबा
राजा अंगरेज,हाकिम अंगरेज,जरीछार नना बाबा
रजिनिम चींया बाबा देशेनिम चींया बाबा

**गीतार्थ -**

उरांव जाति के लोग अपने इष्ट देव चींया बाबा का स्मरण करते हुये कहते हैं- अंग्रेज राजा को हटाओ,जनता का राज लाओ।

0ददददध्ददददध्ददददध्ददददध्दध्0

## 2. राजिर दुनिया सदर ननो

सदा रहो भईया सदा रहो भईया
गुलेची पूंप लेखा सदा रहो भईया
राजि दुनिया सदर नानो
तू भईया सदा रहो
महलरो नाचा बाजा मरललो सिंगार पतार
राजिर दुनिया सदर ननो
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ -**

वे स्वतंत्रता संग्राम में सहयोग देने हेतु लोगों का आव्हान करते हुये कहते हैं - हे भाई रंगीन वस्त्रों का परित्याग करो और गुलेंची (श्वेत पुष्प) की भांति श्वेत परिधान धारण करो।सारे आभूषण उतार दो और राग द्वेष को छोड़कर सभी का एक जैसा सम्मान करो। अपने देश के सभी लोगों का बिना किसी भेद - भाव के सम्मान करो।

संकलन एवं अनुवाद - डॉ. कुन्तल गोयल
(संदर्भ ग्रंथः सुराज, म.प्र.आदिवासी लोक कला परिषद)

# gYch yksdxhrksa esa jktuSfrd ,oa lkekftd psruk

## हल्बा

हल्बा जनजाति समुदाय रायपुर ,दुर्ग और बस्तर जिलों में निवास करता है। एक किवदंती के अनुसार महाभारत के रुकमणी हरण प्रसंग में जब ये श्रीकृष्ण का पीछा कर रहे थे। तब बलराम के पराक्रम से ये इतने प्रभावित हुये कि इन्होंने हल और मूसल को अपना लिया और हल - बाहना नाम से जाने जाने लगे बाद में हल्बा कहलाये। कृषक होने के कारण हल वाहक कहलाये। जो हल्बा के नाम से लोकप्रिय हो गये। हल्बा एक शक्तिशाली और महत्वपूर्ण जनजाति है। इस जनजाति पर स्थानीय लोगों की संस्कृति का प्रभाव पड़ा है जैसे रायपुर और दुर्ग जिले के हल्बा परिवारों ने छत्तीसगढ़ी संस्कृति को,छिंदवाड़ा तथा बालाघाट जिले के हल्बाओं ने बुंदेलखंड़ी तथा महाराष्ट्र में रहने वाले हल्बा समुदाय ने महाराष्ट्र की संस्कृति को आत्मसात कर लिया है।हल्बा समाज को स्थानीय नाम से जाना जाता है जैसे छत्तीसगढ़िया (कबिरहा तथा गैर कबिरहा), बस्तरिया तथा मरेथिया। जो हल्बा कबीरपंथी समुदाय से संबद्ध हो गये उन्हें कबीरहा कहा जाता है। छत्तीसगढ़ के शेष हल्बा गैर कबीरहा कहे जाते हैं। ये देवी दुर्गा को मानते हैं।हल्बा समाज आर्य - संस्कृति तथा आरण्यवी - संस्कृति के बीच सामन्जस्य स्थापित करता है। कुछ समाजशास्त्री हल्बा का संबंध कन्नड़ के हल्बाह शब्द से जोड़ते हैं। जिसका अर्थ होता है प्राचीन। बस्तर अंचल में हल्बा जनजाति दो वगरें में बंटी है। पुरित या नेखा तथा सुरित या नायक। पुरित वर्ग के हल्बे अपने को सुरित वर्ग के हल्बों से श्रेष्ठ मानते हैं। ऐसी धारणा है कि हल्बा समुदाय घुमक्कड़ था तथा ये चल कृषि करते थे। ये सैनिक बनना भी पसंद करते थे। हल्बा समुदाय के लोग न्याय प्रिय होते हैं। ये विश्वास पात्र भी होते हैं।बस्तर के हल्बा दशहरा पर्व के अवसर पर अपनी अहम भूमिका निभाते हैं। राजा के छत्र को हल्बा नाइक संभालता था तथा राजा के अंगरक्षक भी हल्बा हुआ करते थे। रथ के आगे पीछे भी हल्बा अपने करतब दिखाते चलते थे। आज भी बस्तर के दशहरा के प्रारंभ में प्रथा के अनुसार जगदलपुर के सीसासार के भीतर जोगी (हल्बा जनजाति की एक उपजाति) बैठता है। रियासत के समय में हल्बों के तीन मुख्य ओहदे होते थे। नाईक, चालकी तथा भंड़ारी। नाईक की नियुक्ति राजा करता था। नाईक पद के लिये वंशानुगत , पारंपरिक उत्तराधिकारी होना बस्तरियाओं की प्रतिष्ठा का

परिचायक है। हल्बा जनजाति की बोली को हल्बी कहा जाता हैं आजकल हल्बा जनजाति के लोग संगठनों में अधिक रुचि लेने लगे हैं। ये शिक्षा के प्रति सजग हें।हल्बा जनजाति के लोगों में राष्ट्रीय भावना को ,जनचेतना को , लोक गीतों में व्यक्त करने की एक सुदीर्ध परंपरा रही हैं अपने देश के प्रति प्रेम और वीरत्व की भावना जाग्रत करने की यह परंपरा हल्बी लोक गीतों में बहुतायत देखने को मिलती है।

यहां इस महत्वपूर्ण कविता के बारे में जानकारी देना आवश्यक प्रतीत होता है। यह कविता स्वः .श्री ठाकुर पूरन सिंह द्वारा रचित हल्बी साहित्य की महान निधी है। स्व. ठाकुर पूरन सिंह जी स्वतंत्रता सैनिक और हल्बी भाषा के मर्मज्ञ थे।उनका हल्बी पर आसाधारण अधिकार था। हल्बी के लोक गीत "छेर छेरा'" एवं "लेजा" गीतों के छंद पर इस लम्बी कविता की रचना की गयी है। ड़ा हीरा लाल शुक्ल द्वारा संकलित बहुत से छेर छेरा गीत इस रचना से लिये गये हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि इस कविता की रचना के पीछे ठाकुर साहेब का दृष्टिकोण यह रहा होगा कि इसे युवक युवतियां सहजता से गा सकें और यह लोक में प्रचलित हो सके,ताकि राष्ट्रीय जनजागरण का कार्य इस पिछड़े हुये क्षेत्र में भी संभव हो सके। ठाकुर पूरन सिंह जी ने कुछ और कवितायें भी छत्तीसगढ़ी एवं हल्बी भाषा में लिखी थी, किन्तु अब उनके परिवार जनों के पास उपलब्ध नहीं है, जो नारायणपुर में रहते हैं। राष्ट्रीय भावनाओं से पूरी तरह सराबोर हल्बी एवं छत्तीसगढ़ के इस महत्वपूर्ण कवि ने धमतरी तहसील के नगरी - सिंहावा क्षेत्र ,कांकेर एवं बस्तर रियासतों जैसे सुदूर पिछड़े हुये अंचल में अपनी रचनाओं से राष्ट्रीय आंदोलन में महत्वपूर्ण योगदान दिया था।

## . हल्बा जनजाति में राजनैतिक चेतना से युक्त लोकगीत -

छत्तीसगढ़ के दक्षिण भाग के वनवासी ' हलबी ' बोलते हैं। स्वराज संग्राम और गांधी जी के प्रभाव से वे अछूते नहीं रहे। उस समय गाये जाने वाले कुछ हलबी लोक गीतों के नमूने प्रस्तुत हैं।

### 1. भारत माता चो कहानी

स्वतंत्र रलो आमचो भारत,एक हजार बरख आगे।
हरिक पदिम देश थेरलो, तेबेले कहानी जागे।।1।।
सत धरम ले लोर रला,रजो धरम चो छाप।
सरसुन ने गोटी धान ने पोल,निकरते रला पाप।।2।।
पोरस ने पानी घीव ने मिगड़ा,जसन करसत एबे।
इरखा बईर फिचर कजेमा,नि होते रला तेबे।।3।।
उपज होते रहे सकल बानी,उपजे भारी धान।
बतरने होय बरसा पानी,साहा रला भगवान।।4।।
भुख दुख के जानते निरला,लोग रला धरमकारी।
ठग,चोर निरला हुच जुगने,सज धरम रला भारी।।5।।
आउर देस ले मुगुल पठान,चढ़नी करला भारी।
राज के जितला धन के लुटला,खूबे होली मारा मारी।।6।।
राजा राजा आमचो मिलुन,करुन दखला लोर।
मुंगल पठान लड़ाई जितला,करला भारी जोर।।7।।

दिल्ली वादी ने मुंगल दखला,टोड़ला देस चो बल।
भारतवासी थाकुन गेला,करसा कितरो छल।।8।।
सात सौ बरख राज करला,निला देसेले भारी धन।
आमचो राजमन थाकुन बसला,टुटली सबचो मन।।9।।
इंग्लैंड़ देस ले फिरंगी निकरला बांधुन बनेया भेख।
सात सामदुर जहाज बसला,इसा आमचो देश।।10।।
हाथ जोड़ला ,पांय पड़ला,मांगला दुकान काजे ठान।
आमचो राजामन मानन गेला,फिरंगी पावला मान।।11।।
भितरा - भितरी बल बांधला,गुपत करला जोर।
खुद भेद ने राजा फुटकला,कफन नी सकला सोर।।12।।
गम नहालो राज के धरला,साहेब बोला राजा।
फउद होली पलटन होली, बाजबी साहेब बाजा।।13।।
दिल्ली गादी ने साहेब बसला,बांधला भारी बल।
हिन्दू पठान दबुन गेला ,बुड़ला मुंगल दल।।14।।
साहेब पादी एते गेला,बखला गांव - गांव।
आमचो लोर के ईसाई बनाला,किरीस्तानी नाव।।15।ं
कंपनी नाव के साहेब घुचाला,बनाला अंगरेज सरकार।
भारतवासी दुबुन गेला,राजमन मान ला यार।।16।।
पटी बढ़ाला मासुल बढ़ाला,झिकते गेला धन।
भेख बोली के सिखावा आपलो,झिकला सबचो मन।।17।।
पाठ अंगरेजी करला जारी,धुचाला देव बानी।
नाना साहेब तात्या टोपी ,बसला झांसी रानी।।18।।
अंगरेज राज के भेटतो बाजे,करला सपाय लोर।
हाथ हथयार जुहाला सबे,गुपत बांधला जोर।ं19।।
अठारा सौ संत्तावन बरख इली,देस ने षुमुक होली।
मारा मारी ,पूजा - पूजी,ठाने - ठाने गोली।।20।।
कितरो साहेब मारे गेला,कितरो बायले पिला।
मारा पेट धरा झमा,मरते - मरते दिला।।21।।
हिन्दू, पठान मिलन संगे,सुलाम भुमुक होला।
तो,तरवार,बंदूक,भाला,मारला गोली ,गोला।।22।।
चेघली घोड़ी झांसी रानी,बांधली वीर चो बाना।
बायले लेकी चो लड़ई दखन,साहेब ताना नाना।।23।।
फउद मंगाला बल बांधला,जितला ठाने ठाने।
भुमकलिया हारते गेला,परला राने बने।।24।।
कितरो धरला फांसी दिला,कितरो मारला गोली।
ठाने ठाने भुमुक दवली,सपाय सितर होली।।25।।
कितरो बरख असने गेली,देख चो टुटली बल।
देस चो कितरो फांसी गेला,करुन थाकला छल।।26।।

नोरोजी,तिलक,गोखले,लाला देस ने जनम इला।
पटेल, ठाकुर, बोस, नेहरु,आमचो देस चो पिला।।27।।
बाढ़ला पढ़ला दखुन दखला,फिरंगी हाते राज।
मिलुन मिसुन सोर करला,कसन बचावा लाज।।28।।
ह्मूम नावचो फिरंगी छलो,बोपड़ा धरम कारी।
देस चो ड़ंड के दखुन साहेब,दिन्ता करलो भारी।।29।।
मुखेयामन के ह्मूम बल्लो,बनावा कांग्रेस दल।
देस भर चो गोटकी सुतुर, तेबे पावासे बल।।30।।
गोटकी सुतुर सत,मारग ने भारी पड़आय जोर।।31।।
कांगरेस जोड़ला जुहला सबे,मिलुन बसला संगे।
दुख ड़ंड के लिखुन पठाला,अंगरेज सरकार लगे।।32।।
हिन्दू पठान मिलला संगे,बाढ़ली कांगरेस दल।
बरसानी बसला कांगरेस सभा,बांधते गेला बल।।33।।
धीरे - धीरे गोठ उठाला,फिरावा आमचो राज।
साहेब सुनला हांसला बल्ला,तुमके निहाय लाज।।34।।
कितरो साहेब मारे गेल,कितरो खादल गोली।
दुख ड़ंड के पहलु गुंजे,राज आमचा होली।।35।।
आमी देस के छोड़ नोहाव,लड़ई लड़क सकुं।
आमचो जोर के दखा तुमी,तुमचो जोर के दखूं।।36।।
कठियावाड़ राज जो देवान रलो गांधी करमचंद ।
हुनचे घर बेटा जनमलो गांधी मोहनचंद,।।37।।
बाढ़ लो उड़लो पाठ पढ़ लो,मनुख धरम कारी।
साहेब मनचो गोठ सुनुन,धक्का लागलां भारी।।38।।
सत धरम मानू बीता,करे पूजा पाठ।
लंद फंद ने जाए नहिं,सादा हुनचो ठाठ।।39।।
धर के गेलो रेल बस लो,बेल्लो गुलाय देस।
ठाने ठान मान करला,दखुन हुनचो भेस।।40।।
अस्तिर नहिं देस के कहांय,भूखे मरसत लोग।
झगड़ा - किबर राज - राज ने,साहब करसत भोग।।41।।
कहांय देखे से जात झगड़ा,कहांय धुकी रबी।
छिया लाता चो किसर गुलाय,कितरों के सांगे कबी।।42।।
पेट धंधा ले मातला सबे,आपने झिंका टाना।
सोर नहीं सुतुर नहीं,सपय ताना ना ना ।।43।।
भाई भाई ने झगड़ दखलो,काय के कर दे सोर।
मन्द खासत हापु खासत,काय के कर दे जोर।।44।।
देस भर चो दुख के दखुन ,गांधी भिलो धरे ।
पेट भितरे चिनता ढापली,आइगी असन बरे।।45।।
कआट करलो कांगरेस जुहालो,गांधी सांगलो सोर।

भुमुक गोठ के आमी छांडूं,आमे निहाय जोर।।46।।
साहेब लगे हथयार,कितरो गोला गोली।
मारुन आमके भुंजन देदे,सुना मोचो बोली।।47।।
तिंहचो जीव के धरलु जाले,आमचो जीव के धरदे।
लड़ई लड़न जितुक नि सकुं,आमके चरपट करदे।।48।।
देस भर चो कांगरेस बसुं,एका करु आगे।
घर झगड़ा घरे बुतो ,देस झगड़ा आगे।।49।।
आमी सबे भाई - भाई,गोटकि देस चो लोग।
छियालाता झगड़ा मेहुं,सपाले भारी रोग।।50।।
मंद सुर के छांड़ा तुमी,मोचो गोठ के माना।
निसा खादले लछमी नि पायें,सत गोठ के बाना।।51।।
मंद खादले चेत गुपेले,लोंडा पाडा़ मारा मारी।
नाता पता केंव जागसे,किबर झगड़ा भारी।।52।।
मंद ने मनुख फंद होसत ,करेजा भंवरा जरेसे।
मुंह होय से फुंलाहा फुलाहा,काल नि पुरु पुरु मरेसे।।53।।
जसन मंद हुसने सुराम,हुसने आय मोह पास।
ताड़ो सलपी लन्दा हापू,करसत मनुख चो नास।।54।।
कांगरेस बसा होआ गोटकि सोर,जाउक छांड़ा भाटो।
मंद राधुमन चो करम फुटे दे,ड़ांक दे फटकी टाटो।।55।।
देवमन के अरज करा,खावत सुकुल भोग।
जीव हत्या के देवता छांड़त छांड़त मंद चो रोगा।।56।।
मंद हापू के खाउक छांड़ा,देहें ने चेघो बल।
तुमी बरकस रलास खाले,डरदे साहेब दल।।57।।
देस काजे जिउक सिखा,देस काजे मरा।
आपलो देस के बचातो काजे,धरम बाना धरा।।58।।
सत गोठ के टेकूं आमी,सत गोठ के सांगु।
आपलो देस के आपलो राज के , एक सोरने मांगु।।59।।
सत ने रिले भात मिरदे, सत ने होय जीत।
इत मारग ने रलु जाले,बयरी होदे मीत।।60।।
भया परेम ने रहा सबे,गोटकि सरेर ने रहा।
देस काजे ड़ंड दुख के, हांसते - हांसते सहा।।61।।
हाथ हथयार धरा नहिं,मारा मारी नि करा।
सत बाटे भगवान होदे,मोचो गोठ के धरा।।62।।
सत मारग ने पलास जाले,पड़ेदे धरम छाप।
मारा मारी करला जाले,तिहिंके पड़ेदे पाप।।63।।
भारतवासी भाई सबे,भारत आमचो देस।
खादी टोपी खादी कुड़ता,बनाऊं आमचे भेस।।64।।
साहेब भेस के छांडूं आमी,पिंधु आपलो बाना।

चरखा कातूं कपड़ा बिनु,जोड़ सुत चो ताना।।65।।
पैसा करले लाज नोहायं पैसा नोहाय जात।
पेसामन के जात मानुन,होली धिनधिने भात।।66।।
गोंदा गोंदा तुमी होलास,टुटली देस चो सोर।
अलग - अलग जात होली,घटली तुमचो जोर।।67।।
गोटकि माय बाप चो चार बेटा,अलग - अलग नाव।
पेट काजे पेसा धरला,गेला आउर गांव।।68।।
लोहो पेसा ने लोहोरा होला,माटी पेसा ने कुंभार।
सोन पेसा नो सोनार होला,कातई बिनई ने महार।।69।।
असने - असने जात बाढ़ली,"बुंद रंहुन बाना"।
" मैं बड़े तुई नानी "एड्र ने देस होली ताना नाना।।70।।
घड़वा माहरा हाड़ी चमरा,काचोय पेसा नोहात नानी।
चलेदे संवसार कसन? पेसा,निरखो ने बारा बानी।।71।।
पेसा नहोत नानी बड़े,सपाय पेसा बात समान।
मनुख चोला ने जसन इंद्री,हाथ, पांय, नाक, कान।।।72।।
जात भात चो झगड़ा छांड़ा,छियालात करा।
मनुख मनुख के भेद निहाय,सत गोठ के धरा।।73।।
गोटकि माटी गोटकि चोला,उआट करोबने।
हुनि भगवान हुनि देव धानी,कसन भिने भने।।74।।
गोठ के सुनला एक मन ने,हारिक होला सबे।
गांधी बाबा होलो मुखेया नेता,संगे कांगरेस दल।
सत सारग चो गोठ जल्लो,सुना हो साहेब दल।।76।।
आमर माटी ले तुमचो पुरखा,बैपारी होउन इला आमचो पुरखा।
दया करला,तिहिंके ठान दिला।।77।।
खुद भेद के पेटे धरुन,लड़ा भिड़ा करला।
गत नाहलो मालिक हाकला,देस के आमचो धरला।।78।।
अंगरेज सरकार नासं पावला,फउद पलटन होला।
हाथ हथयार तुपुक बंदूक,जुहाला गोली गोला।।79।।
हरखा बईर ने राजामन फुटला,होला ताना नाना।
आंईख रहन काना होला,बुद रहुन बाना।।80।।
आपलो देस के छांड़न तुमी,आमचो देस ने हलास।
नाई बलु बलु जोजई होलास,आमचो धन के निलास।।81।।
आमके ठगुन आमके ड़ांटुन,तुमी होलास मोट।
मूसा बिल में साप राजा,कितरो अधरम गोठ।।82।।
आमी करेया तुमी पंड़रा,ड़ाहा सोत चो भूमि।
हुनि भगवान हुनि चोला,मनुख आमी तुमी।।83।।
तुमी कसन बड़े होबास,आमी कसन नानी?
राजा होउन तुमी आमके,ड़ंड दिया साहास करन बानी।।84।।

सीत असन डरुंसे तुमके,दखुन साहेब ठाठ।
तुमचो मोटर बातो काजे,आमी बनाऊं से बाट।।85।।
तुमी असा कुरची गादी,आमी रहुंसं ठिआ।
मन मन चो कानून बनावन,आमचो धन के निआ।।86।।
सत धरम चो गोठ माना,जाहा आपलो देस।
आपलो राज के आमी चलाऊं दे,छांडुं तो तुमचो भेस।।87।।
आपलो देस के तुमी जिया,आमचो देखने आमी।
मया परेम दे जिऊं सबे,सुना धरम चो बानी।।88।।
तुमी राजा आमी रैयत,सत गोठ के माना।
रैयत होथे बल आसे,ए गोठ के जाना।।89।।
" मान ले देवता नाइले पखनां" हुसनें आय सरकार।
रैयत गोठ के भी मान ले ,जाहासे धारे धार।।90।।
असहयोग करुंन दे सत्याग्रह करुन दे,लडुंन दे बिगार हथयार।
जहेल निश्रा फांसी दिआ,सहुंदे तुमचो मार।।91।।
धरम लड़ई आमी लडुंदे,देखेदे संवसार।
धरम बाट भगान होदे,होयदे तुमचो हार।।92।।
तुमचो इजित महत बाचो,आपलो मने गुना।
आमचो अजित धरम हाथे,सत गोठ के सुना।।93।।
धरम हांक के सुनन साहेब,आइग असन होला।
तुमो गवांर भारतवासी,आले दुखंदे भला।।94।।
गोठ गोठ ने गोठ बाढ़ली,साहेब टाकुन दिला।
हाथ हथकड़ी पांव मा बेड़ा,सबके जहेल मिला।।95।।
कांगरेस लोग के गांधी बल्लो,जहेल चो नोहाय डर।
जहेल भितरे भगवान अनमलो,जहेल आमचो घर।।96।।
चोरी करले दारी करले,हांसदे सबे लोग।
सत धरम ो गोठ काजे ,भोगू जहेल भोग।।97।।
धरम हांक के सुनन भाति,चेतला भारतवासी।
आपला देस चो भलाइ काजे,जाऊंदे जहेल फांसी।।98।।
जहेल काटला कांगरेस बसला,हुनो गोटकी सोर।
अंगरेज सरकार के मानु नहीं ,गांधी करलो जोर।।99।।
छैसौ राजा देस ने रक्षा,मिसला साहेब बाटे।
कांगरेस दल के दावते गेला,गुलाय बाटे घाटे।।100।।
गांधी बल्लो सुना राजामन,गोटकि आमी तुमी।
जुग जुग चो तुमी राजा,गोटकी आमची भूमि।।101।।
रैयत बल के जानास नाजुन,साहेब होला मीत।
सत काजे आमी लडुंसे ,आमचो होय दे जीत।।102।।
साहेब हाथ ले राज धरले,तुमचो उआट करा।
रैयत हांक के पेला नहीं ,सत गोठ के धरा।।103।।

हेव अंगरेज दल इसु कांगरेस दल ,राजा मन पड़ला सांदी।
मिलन इसला बल बांधला,काय करदे लेगटेया गांधी।।104।।
जहेल निला फांसी दिला,दखाला अधरमी बल।
सत टेक ने गांधी टेकलो,भभकला कांगरेस दल।।105।।
कितरो जहेल कितरो फांसी,कितरो काला पानी।
मरला कितरो गोली चे मार ने ,ड़ंड दिला बरन बारी।।106।।
भितरा भितरी खुद ड़रला,भड़कला देस चो पठान।
हिन्दू मन के राज दिलो ने आमको मिरो पाकिस्तान।।107।।
देस बाटला पाकिस्तान बनाला,हरिक होला पठान मन।
फउद पलटन बाटा करला,बाटला देस चो धन।।108।।
जहेल देउन डंड देउन,साहेब थाकला जेबे।
कांगरेस दल के जितुक नी होय ,चेत चेघलो तेबे।।109।।
जहेल ले निकराला सभावसाला,करुन दखला सोर।
गांधी महातमा मान लो नहीं ,भारी कांगरेस चो जोर।।110।।
जवाहर लाल नेहरु गांधी चो चेला,झोकलो राज चो भार।
डरा धमका करुन थाकन गेला,साहेब मानला हार।।111।।
राज के सोपला मिसो मिसो होला,साहेब फिरुन गेला।
कितरो मुखेया भार उठाला,गांधी महात्मा चो चेला।।112।।
सपाय राजा राज सोपला ,बुड़लो राज तंत्र राज।
रयतवारी राज बनाला,होली जनतंत्र राज।।113।।
राजा घुचला जमींदार घुचला,घुचला ठेकेदार ।
रयत मचोयतलेया नहीं ,बनलो स्वतंत्र सरकार।।114।।
डराउन थकला हराउन थाकला ,खेलन थाकला छल।
एत मारग ने गांधी जितलो ,दखा सत चो बल।।115।।
औनाइस सौ सैतालिस पंदरा अगस्त अंगरेजी राज बुड़ली।
दिल्ली गादी ने आमचो नेता तिरंगा झंड़ा उड़ली।।116।।
नेहरु होला प्रधानमंत्री,गर्वनर जनरल होला राजा।
अउर मुख्यमंत्री मन होला,बाजली भारत सरकार चो बाजा।।117।।

## नवा जुग

गांधी दखलो अस्तिर होलो ,बल्लो जय जय भगवान।
तुई महाप्रभु साहा होलिस,रखलिस सत चो मान।।118।।
देस सेवा काजे आपी धरलु,धरम चो ढ़ाल सत चो तरवा।
सवंसार चो लोग काबा होला,अंगरेज सरकार मान ली हार।।119।।
धरम अधरम चो लड़ई होली,सत चो होली जीत।
देस सवंसार कहनी लिख दे,जुग जुग चो होली गीत।।120।।

जय भगवान जय परमेसर,बिनती काय करुदे आमी।
जुग जुग ने तुई अवतार होलिये ,एइ आय भारत भूमि।।121।।
सतजुग ने तंई मछरी होलिस,वालिस वेद चो बानी।
संखासुप के मारलिस तुर,खोजलिस सात समुंदर पानी।।122।।
धरलिस कचीम चोला तुई ,सुनलिस समुंदर चो गुहार।
देव असुर चो मान काजे,उठालिस मंदराचल चो भार।।123।।
धरलिस भगवान बारहा चोला,दाते टेकलिस पिरथी चो भार ।
हिरणाक्ष असुर के मारलिस,बचालिस तुई सवंसार।।124।।
महाविकट रुप नरसिंह तुचो,राखलिस भगत चो मान।
डेरी पितरले परगट होलिस तुई,हरलिस असुर चो परान।।125।।
बली राज महादानी,मांगलिस तीन पांय पिरथी चो दान।
राज दिलिस हुंनके पातालपुर चो,जय जय रामन भगवान।।126।।
फरसा धरुन फरसराम होलिस,वंस बुड़ालिस अधरमी राजा।
बाप चो हुकुम ने माय के पूजलिस,बाजली धरम चो बाजा।।127।।
तिरथया जुग ने तुई महापरभू,धरलिस राम अवतार।
बुड़लिस वंस रावन चो,कालिस असुर दल के नारखार।।128।।
कृष्ण अवतार धरुन दुआ पोथरे,सांगलिस गीता चो गियान।
धरम लड़ई महाभारत लड़लिस,मारे गेला अधरमी सियान।।129।।
बऊद चोला तुचो एकक जुग ने ,धपदुर पठा ठाकुर दुआर।
जानु लोग के तुई सबे ठाने ,करेसे गांधी तोसे जोहार।।130।।
विन्ती सारलो आईख उघड़ालो,बल्लो गांधी महराज।
ए नवा जुग के भाई मन,बनाऊं भारत ने रामराज।।131।।
पंच राज के राम राज बल्दे"पंच पनमेसर" चो बनो सरकार।
पंच पाछुन वोट भरा तुमी,जुआन सियान मनुख आरु मेहदार।।132।।
मनुख के जाना तुमी गन के जाना,होओ तुमी सपा सोर।
तुमचो मन ले मन निहाय,तुमचो वोट तुमचो जोर।।133।।
अड़तिस करोड़ भारतवासी चो दमने, पाउल आपलो देस।
सबे आवं आमी गोटकी पुखर ,करुं सबे भारतिया भेस।।134।।
रीति नीती होओ गोटकी सबचो,रहूं आमि सबे समान।
सभासद सबै मुखिया नेता,बनावा राम राज चो विधान।।135।।
इत के बनावा जड़ राम राज चो,धरम के बनावा रुख।
सत धरम चो राज होलोसे,पदायते भारत चो दुख।।136।।
अहिंसा पाठ के सिखा सबे,सपा जीव उपरे रहो दया।
धरम रुख चो पाक फिर बनो ,सबे सगे रहो मया।।137।।
सपा के मिरो जबंरेया सुख,सपा के मिरो पेट भर भात।
सपा के मिरो पहकुछ धोती पाटा,निरहो झिवर जात पात।।138।।
लाचरु सपत आओ सबे - ए आय महा अधरम काम।
अधरम के नि सहे भगवान,सबे ठाने देखेस राम।।139।।

जसुन तुमचो धन हुसने अउर चो धन,दुनों आत समान।
सोउ लोग के ठगतो बेरा,दखते रहुआय भगवान।।140।।
अधरम धन नि थामे,उल्टा आय जीव चो काल।
लोभ लालच ने फंसा नहिं,ढकि होय दे अधरम चो जाल।।141।।
सत ने कमावा सत ने खाहा,हरीक हो दे भगवान।
अधरम करले सवंसार ने, अरितर नि रहे पधान।।142।।
माना सपा के आपलो असन,निकरा सहर भवंली चो भेद।
मनुख के घिनयावा नहिं,निकरा धरम के छेद।।143।।
गवंरेयामन के दखलो ,बल्लो सत रुप आत भगवान।
सत ने रमो ने सुख मिरे दे,बढ़ दे धन आरु मान।।144।।
तुमी गवंरेयामन तुमी देस चो धन ,एबो चो भारत माता।
तुमचो दम ने आमी जितल,जागली जुग जुग चो नाता।।145।।
हजार बरख ले देस जाउरली,पर हाथे रलो राज।
सत धरम चो बल होलिगुके फिरल आमचो लाज।।146।।
नवे बरख आगे देस चो लोगमन,परुन दखला भूमकाल।
खुद भेद ने लोग हारला,जानुक नि सकला फिरंगी चाल।।147।।
देस चो कितरो लोग मारे गेला,कितरो पावला ड़ंड।
सत मारग के छांड़ला गुने ,होली सपा अंढवड।।148।।
बासठ बरख कांगरेस के लागली,देस ले बाढ़ली सोर।
सत्ताइस बरख असन आमके लागली,जागली सत चोर।।149।।
सवंसार चो गुरु आमचो,भारत जुग - जुग ले रलो मान।
परहाथ पड़ुन बड़ुन गेली नसली आमचो जुना विधान।।150।।
गेलो गोठ के झुलंकू एबे,पुरे चो सुरता करु।
नवा भारेने नवा जोर ने,नवा घाट के धरुं।।151।।
भुकेला के दखा दुखेला के दखा,रामराज होय दे तेबे।
गांव सोर राज देस सोर,गोटकी सोरे रहे एबे।।152।।
पंच बसा गांव - गांव ने ,गोठयावा धरम चो बानी।
धरम बसन गोठ टुटावा,कोनी होआत बड़ नानी।।153।।
दोसी चिता के ड़ांड करा तुमी,पैसा निजाओ भाटी सार।
अधरम बाट ने रेंगा नहिं ,बिहोआ तुमी नारखार।।154।।
गांव काम के लगाला तुमी,मंड़ई बजार आरु हाट।।155।।
रयतवारी राज जनली,रयत मुंड़े पड़ली भार।
राज काज के चलावा तुमी,तुचोय आय सरकार।।156।।
तुमचो राज पाट तुमचो सरकार,लाज भय निकरा।
दुख ड़ंड के सांगा तुमी,भुमुक गोठ के नि धरा।।157।।
लोग सिखदे तुमके न सादे,बाढ़ला सत ठग चोर।
तुमके ठगन आपन खा दे, भुरला दे तुमचो सोर।।158।।
पीलामन के पाठ पढ़ावा,नि होआ लाज निरवान।

खूब पढ़त अफसर हो ओत,बाढ़ो तुमचो इजित आरु मान।।159।।
आगे जुग के गांव - गांव इस्कूल,सुना जनतंत्र राज चो पुकार।
पढ़ातो काजे भय नि धरा,फुकट ने मिरसे सपा वानी।
भात काजे रुपया मिरे,घेना कुड़ता कोट बरन बानी।।160।।

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ -**

इस कविता के आरंभिक भाग में बताया गया है।कि एक हजार वर्ष पहले हमारा भारत एक स्वतंत्र देश था। जिसमें सत्य और धर्म का राज्य था। समय पर वर्षा होती थी और भरपूर फसलें पैदा होती थीं। भूख एवं दुख को यहां के लोग नहीं जानते थे।

उस युग के बाद मुगल ,पठान आदि मुस्लिम शासकों का राज्य हो गया। उन्होंने फूट ड़ालकर देश को कमजोर बना ड़ाला और दिल्ली में सल्तनत बनाकर छल कपट के जरिये सात सौ वषरें तक राज्य किया और यहां का बहुत सा धन बाहर ले गये।

इसके बाद इंग्लैंड़ से फिरंगी व्यापारी के वेश में आये और सात समुंदर पार करके यहां हाथ पांव जोड़कर व्यापार करने की इजाजत मांगी। उन्होंने भीतर ही भीतर अपनी शक्ति को बढ़ाना जारी रखा और अपनी फौज पलटन बना ड़ाली तथा दिल्ली की गद्दी पर अधिपत्य जमा लिया।

उन्होंने गांव - गांव में अपने पादरी छोड़ दिये और हमारे भाईयों को अपने धर्म में परिवर्तित कर लिया।कंपनी नाम के साहबों ने यहां अंग्रेज सरकार बना ड़ाली और भारतवासियों का दमन किया।

उन्होंने अनेक महशूल और कर लगाये और जनता का धन इनके जरीये खींच लिया। अंग्रेजी भाषा लोगों को सिखाई और हमारी देव वाणी को नष्ट कर दिया।इनके शासन के प्रति झांसी की रानी और तात्या टोपे ने विद्रोह किया उन्होंने देश भक्तों को गोलियों से उड़ा दिया।

इस कविता के सत्ताइसवें पद के आगे राष्ट्रीय आंदोलन के दूसरे चरण का चित्रण किया गया है।जिसमें नौरोजी, तिलक, गोखले, लाला लाजपत राय, सरदार पटैल, रवि ठाकुर, सुभाष बोस, नेहरु जी,आदि नेताओं का जिक्र आता हैं

राष्ट्रीय आन्दोलन के इस उभार को दबाने के लिये अंग्रेजों ने चिंतित होकर काग्रेस दल का गठन करवाया।हिन्दू और मुसलमानों के सहयोग से कांग्रेस की शक्ति बढ़ी और धीरे - धीरे स्वतंत्रता की मांग उठने लगी।

छत्तीसवें पद के आगे महात्मा गांधी द्वारा स्वतंत्रता आंदोलन की बागड़ोर अपने हाथों में लेने का वर्णन किया गया है। मोहन दास करमचंद गांधी काठियावाड़ के दीवान के बेटे थे। वे धर्म के मानने वाले और नित्य पूजा पाठ करने वाले थे,उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ शांतिपूर्ण अहिंसात्मक आंदोलन आरंभ किया। गांव - गांव घर -घर घूमकर जन जागरण पैदा किया। उन्होंने स्वदेशी का प्रचार किया और विदेशी चीजों का वहिष्कार किया। खादी कुरता,खादी टोपी धारण करने की सलाह दी। उन्होंने विदेशी वस्त्रों को त्याग कर चरखे को अपनाने की सलाह दी। वे

कांग्रेस दल के प्रमुख हो गये और स्वतंत्रता के आंदोलन का संचालन करने लगे। उन्होंने अंग्रेजों द्वारा भारत में धन की लूट के प्रति लोगों को जाग्रत किया। उन्होंने गोलमेज सम्मेलन में जाकर भारत का पक्ष प्रस्तुत किया। उन्होंने अंग्रेजों से कहा हे अंग्रेजो हमारे देश में तुम लोग युग - युग से राज्य कर रहे हो। अब हम सत्य के लिये अपनी रैयत का राज्य मांगते हैं।अंग्रेजों ने जब देखा की गांधी जी के आंदोलन को फांसी या जेल से दबाया नहीं जा सकता तो उन्होंने भारतीय जनता के साथ भीषण दमन करना चालू कर दिया। कितनों को फांसी दे दी। कितनों को काला पानी भिजवा दिया। कितने ही लोगों को गोलियों से उड़वा दिया। जब दमन के बाद भी गांधी जी के नेतृत्व में स्वतंत्रता आंदोलन को अंग्रेज नहीं दबा पाये तो उन्होंने हिन्दू और मुसलमानों के बीच फूट ड़लवा दिया एवं मुसलमानों के लिये पाकिस्तान की मांग उठवाई। पाकिस्तान बन गया,देश का धन जन,पलटन सभी चीजें बंट गई और देश दो टुकड़ों में विभक्त हो गया।

एक सौ पंद्रह पद के आगे इस कविता में पंद्रह अगस्त 1947 को भारत के स्वतंत्र होने का वर्णन किया गया है और दिल्ली की गद्दी पर तिरंगा झंड़ा लहराने की बात कही गई है। आगे नेहरु जी के प्रधान मंत्री बनने तथा राजा जी के गर्वनर जनरल बनने का उल्लेख है। अंत में कवि ने गांधी जी को राम और कृष्ण की तरह अवतार पुरुष मानकर भारत को स्वतंत्रता दिलाने अपनी कृतज्ञता प्रकट की है।

संकलन एवं अनुवाद - निरंजन महावर

## 2. माडीपाटा गीत

मनपाटा मन बेसोड़ , पाटा बेसोड़ केवाड़।
मन देसेम मनाल पुत्ताल,
मानल राज कियाकाल।
मनवा मर्रा मेटा,मनवा जब्बा रोंड़ा,
मनवा दैयाम,
मनवा भैरोम ,मनवा बुत्ताम,दन्तेसरी।
मनपाटा मन बेसोड़ , पाटा बेसोड़ केवाड़।
इंजे मन देसेम,गोरा साइबिर बत्तोर।
मन राजान पोर्रो,उद्दी महराजा अत्तूर।
लोन मुन्दाड़ पुट्टीकीस,मन राजतीन वृहत्तोर।
मन राज पाट लेचि अत्ता,
मनवा पिसवार अरूयो।
मनपाटा मन बेसोड़ , पाटा बेसोड़ केवाड़।
नेतानार तिना गुन्ड़ाधुर कबोर इत्तोर।
आंबा आकते मिरियाम कुट्टी।
मन रैत तुन कुर्ग तोर।
परसू तिना कलमू ड़ारा,

कुप्पे हुंगा -
ओर गो पेरसा एत्तोर।
मनपाटा मन बेसोड़ , पाटा बेसोड़ केवाड़।।
नेतानार , गंगामुंड़ा,अग्गा कुमेटि अत्ता।
काड़ी विल्क गोरका,परसी गोड़ेल्क मत्ता।
अच्चो वेड़ रेन गोरा साइबिर -
तुपाक पोइस वत्तोर।
उर कुमेटी उद्दतग, तम तुपाक रेहतूर।
मनपाटा मन बेसोड़ , पाटा बेसोड़ केवाड़।
मनाल डोल्लि डोल्लि,पिसवार आयकाल।
मन राजतुन,गोरा साइबिर हवाल।
मनाल उरा रासतिन,डोल्केवेडे केजवाल।।
मनपाटा मन बेसोड़ , पाटा बेसोड़ केवाड़।
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ -**

हमारा गीत, हमारी कहानी। अब गीत में ही कहानी सुनो। अपने देश को हम जानते हैं - हम लोग ही राज कर रहे हैं, हम ही राज करेंगे। हमारे पहाड़, हमारे वृक्ष - वल्लरी, हमारे सरीसृप, हमारी दूर्वा - सब कुछ हमारा है। हमारे ही देव भूत हैं। हमारे भैरम देव है - हमारी दन्तेसिरी माई है। हमारा गीत, हमारी कहानी। अब गीत में ही कहानी सुनो। अब हमारे देश में अंग्रेज लोग आ गये हैं। वे हमारे राजा से ऊंचे, महाराजा बन बैठे हैं। राज परिवारों में , घर - घर में फूट डालकर उन्होंने हमारा राज्य तहस - नहस कर दिया है। अब हमारा राज - काज ठप्प हो गया है। हमारा जीवन - यापन दुष्कर हो गया है। नेतानार से गुंडाधुर ने यह संवाद फैलाया है। आम के पत्तों की शाखाओं में लाल मिर्च - खोंसकर उसने राज्य की रैयत को बुलाया है। फलसपाल से कलमूम डारा गये, कुप्पे हुंमा गये, ओरग परमा गये। यह हमार गीत हमारी कहानी है, भाई हमारी कहानी सुनो - नेतानार, गंगामुडा में विचार परामर्श की बैठक हुई । धनुष - बाण,

भाला - फरसा, टंगिया लेकर , राज्य के आदिवासी परस्पर जमा हुये। उसी समय अंग्रेज लोग बंदूक - तोप लेकर पहुंचे। उन्होंने विचार बैठक के क्षणों में ही बन्दूक - तोप चला दी। यह हमारा गीत हमारी कहानी है। भाई हमारी कहानी सुनो - हम लोग मर - मर कर भी जियेंगे। परन्तु अपना राज किसी को हम नहीं देंगे। हम लोग उनकी लिखी बात नहीं मानेंगे। हमारी माझी - मुकड़दम की रैयतवारी हमारी है। हम मर मिटकर भी स्वाधीन रहेंगे। मर मिटकर भी हम जियेंगे। यह हमारा गीत हमारी कहानी है। भाईयों हमारी कहानी सुनो।

श्री मुंडरा डारा माझी तथा माझी परिवार फरसपाल से संकलित।

( संदर्भ ग्रंथ - सुराज. आदिवासी लोक कला परिषद )

## 3. मनाल दायकाल दादा, गांधी बाबाल

मनाल दायकाल दादा, गांधी बाबाल
तोड़ मनाल दाकाल।
मन देसेम गांधी बाबाल वक्तोड़
तन संगे रैयतवारी राज गल ततानोर,गांधी बाबाल मनमानी,
मन लेकेन गिसिड़ पोड़िया, कैदे वड़ियो।
मनाल दायकाल दादा,गांधी बाबाल तोड़ मनाय दायकाल।
गांधी बाबाल मन नेताल,गोरा साइविर्क पुड़ितोर
मनाल ओनतोड़, आस उरकिन पुड़काल।
मनाल दायकाल दादा,
गांधी बाबाल तोड़ - मनाय दायकाल।
मनतोड़े कबाड़ किसोर,मोट कुसीर,आसोर मनाल तिनजोर।
मनाल पिसवार गोरा साइविर वात
बनकाड़ लेचि किसोर।
मनाल दायकाल दादा
गांधी बाबाल तोड़ मनाय दायकाल।
मन बिरियोर माझी - मोकड़दम, मन तोड़े मुड़ि मानी।
मनाल जगाय गांधी बाबाल
इंजे जोहार कियाकाल।
मनाल दायकाल दादा,
गांधी बाबाल - तोड़ मनाय दाकाल।।

0ददददध्ददददध्ध्0

**गीतार्थ -**

**हम लोग चलेंगे,गांधी बाबा के साथ चलेंगे। हमारे देश में गांधी बाबा आये हैं। वे अपने साथ रैतवारी राज्य भी लायेंगे। गांधी बाबा हमारे बीच के मनुष्य हैं। हमारे ही समान लंगोटी पहनते हैं - और हाथ में लाठी रखते हैं। हम लोग उनको साथ लेकर अंग्रेजों को भगायेंगे।हे दादा हम लोग चलेंगे।गांधी बाबा के साथ चलेंगे। गांधी बाबा हमारे बड़े मुखिया हैं।अंग्रेजों को वे भगायेंगे। हम लोग उनके साथ होकर अंग्रेजों को भगायेंगे। हे दादा - हम लोग चलेंगे,गांधी बाबा के साथ चलेंगे।**

**हम लोग स्थिर शांत चित्त से कंद - मूल खाकर अपना जीवन यापन कर रहे थे। अंग्रेजों ने आकर हमारी जीवन चर्या नष्ट कर दी।हे दादा हम लोग चलेंगे ,गांधी बाबा के साथ चलेंगे। हमारे मुखिया मांझी, मुकड़दम - हमारे लिये ढ़ाल के समान हैं।हम उनकी बात मानेंगे। हम सब मिलकर गांधी बाबा के साथ चलेंगे,और गांधी बाबा की जय - जयकार करेंगे।**

- श्री महेन्द्र करमा फरसपाल से संकलित

( संदर्भ ग्रंथ - सुराज. आदिवासी लोक कला परिषद )

## 4. मुरिया पाटा गीत

**<u>चैको. जिलमिली. मुल्की. मोटियारी</u>**

**दीदी री दीदी,दुलोसा दीदी, बेलोसा दीदी -**
**रानी री रानी, बेलोसा रानी ,**
**दुलोसा देवनिन**
**दादा मन सांगला सत् ए थाने -**
**छीता माय एउन रहोत,**
**राम एउन रहोत,**
**राम एउन रहो, हुन चो भाई -**
**लाल लक्ष्मन बले एउन रहोत।**
**हुनमन चो संगे, हामचो आया - बूबा**
**आया बूबा आया - बूबा मन चो**
**आया - बूबा**
**गुलाय लोक मन संगे,**
**हुन मन चो मेल रली, मिलाप रली**
**एबे भानुपुर तापपुर अन्तागढ़ बाटले**
**नारायन युद्व ने इलासत खादी फटई**
**गांधी टोपी पीधुन लोकमन ,**

हुन मन काप हामचो घोटुल ने बले
एउन हामको काई बलु आव ड़ंड़ाऊ आंत ।
हामके भय लागे से दीदी बेलोसा रानी
हामको भय लागे से दुलासा देवनिन।
बेलोसा - दुलोसा मोटियारिन,रानी - देवनिन
हामी बले दखलूसे चैका,
जिलमिली तिलोका,मलको,
कौन मन ईलासत ए मन मन ,
काय काजे इलासत
ए मन मन कोंड़ा गांव ने बले इलासत
आरु जगदलपुर,सुकमा
दन्तावाड़ा ने अमर लासत।
हामके बले भय लागेसे ,
काय ए मन मन काय काजे इलासत ।
हामी बले नि जानूं मोटियारिन लेकी मर्न
आले जों ता चेलिक मन लगे जों,
माझी - मुखिया लग जो देवान लगे जो,
सिंगा लगे जों,।
आरु पचारचा,काय सुटुर करसत,
काय करु आत।
<u>माझी - मुखिया देवान, सिंगा चेलिका</u>
काई नि आय लेकी, मन काई भय नि आय बेलोसा दुलोसा।
ए मन गोरा मन के पराउक बलसत।
हामको नीक खेती - खाड़ा कमाड़क बलसत।
गांधी ,जवाहर एम मन मन के ,
दुख डंड ने बले
असन उआढं पसराउक चितालासत।
मारा - काटा नि जानोत एमन मन,
लाटा - फांदा काइॅच नि जानोत।
देव मन एउ रहोत ए थोन
ऋवि- मुनि एउन रहोत।
दशरथ चो बेटा,राजा राम एउन रहोत।
हुन चो बायले छीता माता ,
आरु भाई लक्षमन बले एड रहोत।
हुन चो संग हामचो
मेल रली - मिलाप रली।
एमन बले हामचो मीत आत,दुसमन नो आत।
आ3 गांधी सियान,नेहरु जवाहर बले हामचो मुखिया।

आले तिरदुदी आना,मांदर हिटावा।
अस्थिर ने रहा, हरिख ने रहा।
भय नि आय काई बेलोसा - दुलोसा,
भय नि आय चैको रानी देवनिन जिलमिली मुल्की - मोटियारी।

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

## गीतार्थ -

चैको ,जिलमिली,मुल्की,मोटियारी

दीदी री दीदी, दुलोसा दीदी, बेलोसा दीदी, रानी री रानी, बेलोसा रानी,दुलोसा देवनिन, दादाओं ने कहा है, यहां सीता माता आई थी, राम आये थे आ।ैर उनके भाई , लाल लक्ष्मण भी आये थे,उन सबके साथ हमारे माता - पिता ( आया बूबा ), आया बूबा के आया बूबा, सब लोगों के साथ, उन लोगों का मेल मिलाप हुआ था। अब भानुप्रतापपुर, अंतागढ़ के मार्ग से, नारायणपुर में खद्दर पहने, गांधी टोपी लगाये कुछ लोग आये हैं। वे लोग क्या हमारे घोटुल में भी आयेंगे और यहां आकर वे हमसे, कुछ बोलेंगे तो नहीं ? हमें दंण्ड तो नहीं देंगे ? हमें भय लगता है दीदी बेलोसा रानी, हमें भय लगता है दुलोसा देवनिन।

बेलोसा - दुलोसा मोटियारिन, रानी - देवनिन

हमने भी देखा है , चड़को जिलमिली, तिलोका मलको, ये लोग कौन लोग हैं,क्यों आये हें। ये लोग कोंड़ागांव में भी आये हैं और जगदलपुर,सुकमा,दंतेवाड़ा भी पहुंचे हें। हमें भी लगता है ये लोग क्यों आये हैं,हम भी नहीं जानते मोटियारिन लड़कियो अच्छा चलो,हम लोग चलें।मांझा मुखिया के पास चलें, दिवास के पास चलें - सिंगा के पास चलें और पूंछें क्या सलाह करते हैं ये लोग , क्या करेंगे ये लोग।

माझी मुखिया देवान,सिंगान चेलिका

कोई बात नहीं लड़कियो, कोई डर नहीं है बेलोसा दुलोसा ये लो गोरा साहबों को खदेड़ने के लिये आये हैं। ये हमें अच्छी खेती - पाती कमाने की सलाह देते हैं। गांधी, जवाहर ने इन लोगों को दुख दंड़ सहकर भी ऐसा प्रयत्न करने को समझाया है कि ये भाग जायें। ये खद्दरधारी मारकाट नहीं जानते। ये छल - छंद भी नहीं जानते। देवता इस इलाके में आये थे। ऋषि मुनि भी आये थे। दशरथ के बेटे राजा राम भी आये थे। उनकी पत्नि सीता माता आई थी और उनके भाई लक्ष्मण भी आये थे। उनके साथ हमारे पुरखों का मेल था, मिलाप था। ये खद्दरधारी भी हमारे मित्र हैं, दुश्मन नहीं हैं और गांधी बाबा, नेहरु जवाहर भी हमारे मुखिया हैं, अच्छा भाई तिरदुदी लाओ , मांदर उठाओ, स्थिर मन से रहो, प्रसन्न रहो, भय नहीं है, कोई बेलोसा दुलोसा, भय नही है, चैको, जिमिली, मुल्की मोटीयारी।

संकलन एवं अनुवाद - पं. सुन्दर लाल त्रिपाठी

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

## 5. देस काजे जिउक सिखा,देस काज मरा

आपलो देस के बचातो काजे,
धरम बाना धरा।
हो धरम बाना धरा। छेर छेरा।
बिन्ती सारलो आइंख उधाड़ लो
बल्लो गांधी जी महराज
ए नवा जुग ने भाई मन ;
बनाऊं देस ने राम राज
हो बनाऊ देस ने राम राज।। छेर छेरा।

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ -**

छेर छेरा या छेरटा गीत फसल कटने पर युवक गाते हुए सभी घरों से नवान्न एकत्रित करते हैं। इन गीतों में दो - दो लाइन के दोहे सदृश्य पद होते हैं जिनमें आपस में कोई संबंध नहीं होता, ऐसे अनेक छेर छेरा पदों में राष्ट्रीय भावना,गांधी बाबा तथा शराब बंदी, पंचायत व्यवस्था, खादी, जातीय एकता आदि विषयों का उललेख मिलता हैं ये सभी तत्व राष्ट्रीय आंदोलन के प्रभाव से इन लोक गीतों में आए हैं। जिन्हें लोक कवियां ने तात्कालिक प्रभावों के अनुरुप अभिव्यक्ति प्रदान की है।

संकलन एवं अनुवादः ठाकुर पूरन सिंह
( संदर्भ ग्रंथ - सुराज. आदिवासी लोक कला परिषद )

## 6. जय जय भारत माता चो

जय जय बलुन इया हों
महात्मा गांधी बाबा चो,
सपाय बलुन दीया हो।।
सपाय पिधवी फटई खादी,
ए मन महात्मा चो आय गादी ।
धन धन आमचो ए भारत,
जय जय चो धुन भरन दिया हो।।
जय जय भारत माता चो,
जय जय बलुन इया हो।
महात्मा गांधी बाबा चो ,
सपाय बलुन दिया हो।

0ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ -**

जय जय भारत माता की , जय जय बोलो हो भाई - महात्मा गांधी की जय सभी लोग मिलकर जय बोलो हो। सभी जन खादी पहनो, ये महात्मा गांधी का दिया हुआ वस्त्र है। धन्य धन्य हो हमारी भारत माता, जय जयकार की ध्वनि से वातावरण गूंज रहा है।

( संदर्भ ग्रंथ - सुराज. आदिवासी लोक कला परिषद )

## 7. कठियावाड़ राज जो देवान रलो गांधी करमचंद

कठियावाड़ राज जो देवान ,रलो गांधी करमचंद -
हुनचे घर बेटा जनमलो गांधी मोहनचंद,
हो गांधी मोहन चंद।।
बाढ़ लो उड़ लो पाइ पढ़ लो,
मनुज धरम कारी।
साहेब मनचो गोठ सुनुन
धक्का लागला भारी।।
सत धरम मानू बीता,करे पूजा पाठ।
लंद फंद ने जाए नहिं,
सादा हुनचो झाठ।,
हो सादा हुनचो ठाठ
धर के गेलो रेल बस लो,
बेल्लो गुलाय देस।
ठाने ठान मान करला,
दखुन हुनचो भेस।।
हो दुखु हूनचो भेस........
अस्तिर नहिं देसने कहांय
भूखे मरसत लोग।
झगड़ा - किबर राज - राज ने
साहब करसत भोग।।
हो साहेब.............
कहांय देखे से जात झगड़ा,
कहांय धुकी रबी।
छियालाता चो किवर गुलाय,
कितरों के सांगे कबी।।
हो कितरो..........
पेट धंधा ले मातला सबे,
आपने झिंका टाना।

सोर नहीं सुतुर नहीं,
सपय ताना ना ना ।।
हो सपाय ताना ना ना..........
भाई भाई ने झगड़ दख
लोकाय के कर दे सोर।
मन्द खासत हाप खासन,
काय के कर दे जोर।।
हो काय के कर दे...........
देस भर चो दुख के दखुन ,
गांधी फिरलो घरे ।
पेट भितरे चिनता ढापली,
आइगी असन बरे।
हो आइगी असन बरे.........
गांधी महात्मा चो बाय ले बीती,
नांव कस्तूरबा माता।
ए दोनों चो परेया जोड़ी,
सिजुन सिरजला विधाता।।
भारी माया ,भारी दया,
भारी दया बीती।
मुनिस संग के नी छांड़ली,
राखली पुरखाचो रीति।।
जेल गेले डंड पावली,
देस चो सेवा करे।
जुग जुग काजे अमर होली,मरली जहेल घरे।।
जसन मुनिस हुसने बायले ,
धरमकारी चोला।
देस चो सेवा ने परान दिला ,दुन्नों अमर होला।।
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ -**

कठियावाड़ राज्य के दीवान करमचंद गांधी के घर में मोहन चंद ने जन्म लिया। हो मोहन दास करम चंद गांधी ने जन्म लिया। गांधी जी सत्य धर्म का पालन करने वाले हैं। अंग्रेजों की छल - कपट पूर्ण बातें सुनकर उन्हें अघात लगा। वे रेलगाड़ी में बैठकर संपूर्ण देश की यात्रा पर निकल गये। उन्होंने लोगों को समझाया कि तुम आपस में क्यों लड़ते हो ? हमारी आपस की ही फूट से अंग्रेज यहां पर राज्य कर रहे हैं । गांधी जी सपूर्ण देश की जनता के दुख से दुखी होकर देश का भ्रमण कर रहे थे। उनके मन में चिंता व्याप्त थी। जो आग की तरह जल रही थी। महात्मा गांधी की पत्नि का नाम कस्तूरबा माता था। इन दोनों की जोड़ी कबूतर की जोड़ी के समान थी। इनका सृजन विधाता की अमूल्य कृति थी। दोनों एक दूसरे से बहुत प्रेम करते थे और दोनों की धर्म में पूर्ण आस्था थी। पुरखों की रीति के अनुसार दोनों हमेशा साथ रहे। उन्होंने देश सेवा के लिये लाठियां खाई और साथ - साथ जेल गये। दोनों ने देश को स्वतंत्र करने हेतु साथ - साथ अपने प्राण त्याग दिये और अमर हो गये।

लेखक - ठाकुर पूरन सिंह

( संदर्भ ग्रंथ - सुराज. आदिवासी लोक कला परिषद )

## हल्बा जनजाति में सामाजिक चेतना से युक्त लोकगीत -

स्वराज के आंदोलन के समय मघ निषेध का बहुत जोर था। इसके साथ ही ब्रिटिश हुकूमत से असहयोग तथा स्वावलम्बन का भी सघन प्रचार किया गया था। सूदूर वनवासी अंचलों में भी इसका प्रभाव पड़ा।

### मंद के छांड़ा तुमी

मंद चो जोर ने धरा-धारी
मंद चो जोर ने मारा - मारी
मंद चेघाय से तुमके कछेरी
मंद के छांड़ा तुमी
गांव के झगरा गाएँ टूटो
कछेरी जातोर तुमचो छूटो

**उकील मन चो संगत बूटो**
**मंद के छांड़ा तुमी**
**गांधी बाबा बलगे सुना रे गबरेया**
**मंद के छॉड़ा तुमी**
**नंगत गोठ के धरा हो गंवरेया**
**मंद के छॉड़ा तुमी**
**करेजा फोंफसा जरुन जायसे**
**दहें के चटपट चरुन खए से**
**धन सरेसे धरम जाए से**
**मंद के छांड़ा तुमी**

**गीतार्थ -**

**शराब के कारण झगड़े और मार पीट होती है। उसके कारण अदालत जाना पड़ता है। इस शराब को छोड़ो। अपने गांव के झगड़े गांव में ही निपटाओ, अदालत जाना छोड़ो। वकीलों के फंदों में मत पड़ो। शराब छोड़ दो।**

**ओ ग्रामवासियों,**

**गांधी बाबा का कहना सुनो और शराब छोड़ दो। इस बात को गांठ से बांध लो। इसके पीने से कलेजा और फेफड़े जल जाते हैं, देह जीर्ण हो जाती हैं धन तो नष्ट होता ही हैं धर्म भी चला जाता हैं भाई! शराब छोड़ दो।**

संकलन और अनुवाद - हरि ठाकुर
( संदर्भ ग्रंथ - सुराज. आदिवासी लोक कला परिषद )

## 9. सत ने रले भात मिरदे,

**सतने हो एदे जीत।**
**सत मारग ने रलू जाले,**

बयरी होय दे मीत।।
धरम अधरम लड़ाई होली,
सतचो होली जीत ।
देव संसार कहानी लिख दे,
जुग - जुग चा होली गीत।।
जय भगवान जय परमेश्वर,
विनती काय करुं दे आमी।
जुग - जुग ने तुई होलिस,
एइ आय भारत भूमि।।
कृष्णावतार धरुन दुआपर ने,
सांगलिस गीता चोगिआन।
धरम लड़ाई महाभारत लाड़ली,
मारे गोला अधरमी सियान।।
बउद चोला तुची ए कलंजुगने,
समदुर कठा कठा दुआर।
जानु लोक के तुई सबे ठाने,
करे से गांधी तुके जोहार।।
गांधी दख ला अस्तीर होलो,
बल्लो जय जयकार।
तुई महा प्रभु सदा होलिस,
राखलिस सतचो लाज।।
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ -**

हे भाई हमेशा सत्य बोलो। सत्य की ही जीत होती हैं सत्य के मार्ग पर लो। सत्य बोलने से दुशमन भी मित्र बन जाता हैं यह धर्म और अधर्म की लड़ाई हैं सत्य की ही जीत होगी। ईश्वर ने संसार की रचना कर उसकी कहानी लिख दी हैं युगों - युगों से हम ईश्वर की प्रार्थना करते आ रहे हैं।जय भगवान जय परमेश्वर मैं आपसे प्रार्थना कर रहा हूं। युगों से आप हमारे

साथ हैं। यह भारत भूमि है । इस भूमि पर द्वापर युग में कृष्ण जी ने अवतार लिया। सब को गीता का ज्ञान बतलाया। महाभारत की लड़ाई धर्म की लड़ाई थी। उसमें अधरमी लोगों का नाश हो गया। यह कलयुग है इस युग में गांधी जी ने अवतार लिया हैं। सभी लोग गांधी जी की जय बोलो। महा प्रभु सत्य की लाज रखेंगे।

( संदर्भ ग्रंथ - सुराज. आदिवासी लोक कला परिषद )

0ध्ध्ध्ध्0

## 10. तुचो जय जय गाऊं माता

इरखा बइर कुचुर नहीं,
मारा - पेटा किबर नहीं,
मया - प्रेम ने रहूं माता।
तुचो जय - जय गाऊं माता
भारत माता, भारत माता
तुचो जय जय गाऊं माता ।।
देस काजे जिउक सिखूं,
देस काजे मरुक सिखूं
देस सेवा करु माता।
तुचो जय जय गाऊं माता,
भारत माता - भारत माता
तुचो जय जय गाऊं माता।।

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ -**

हे भारत माता, ईर्ष्या, बैर, मार - पीट आदि त्याग कर हम प्रेम से रहें। हम सदैव तुम्हारी जय जयकार करते रहें। हे भारत माता हम देश के लिये जीना मरना सीखें, देश सेवा ही हमारे जीवन का उद्देश्य हो। सदा तुम्हारी ही जय गाऊं भारत माता।

( संदर्भ ग्रंथ - सुराज. आदिवासी लोक कला परिषद )

## 11. जेचो सेवा ने सब आसत

जेचो सेवा ने सब आसत
नांगर धरसत बीज पकासत
जे माटी के सोन बनासत
मुरलों ने देहें गड़ियासत
जे माटी चो किरिया खासत,
हुन माटी जेचो धन आय
देस हुनी के बलसत आय।।

0ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ -**

जिस की सेवा के लिये तुम जो सब उपक्रम करते हो हल जातते हो बीज बोते हो। जिस माटी को इतनी मेहनत करके सोना बनाते हो, मृत्यू होने पर जिसमें दाह संस्कार करते हो , जिस मिट्‌टी की सौगन्ध उठाते हो, वही माटी ( धरती ) जो हमारा धन है, उसी का नाम देश है। उसे ही देश कहते हैं।

संकलन एवं अनुवाद : ठाकुर पूरन सिंह

( संदर्भ ग्रंथ - सुराज. आदिवासी लोक कला परिषद )

## 12. ए हिंड़तो बीता झपके - झपके

ए हिंड़तो बीता झपके - झपके,
पांय बढ़ाउन जा,पांय बढ़ाउन जा।।
चढ़तोर आय पाहाड़ माला रे,
काय कर सीस मोहर माला रे,
पवन वेग ने जा।
ए हिंड़तो बीता झपके - झपके,
पांय बढ़ाउन जा।
गुड़ - गुड़ धुन बदरी सुनंदे,
गुड़ - गुड़ धुन बदरी सुनुन, धीरज धरके माने।
धन गरब ने मन के राख ले ,
हकली जीविस राने,सत सुमरन जा।
ए हिंड़तो बीता झपके - झपके,
पांय बढ़ाउन जा।
मतवार भाई मन्द चो भाटी,देहें चो भाटी काजे
धुरुन पड़ले धसरी जीविस,जीव माया चो राजे,भगति भाव ने जा।
ए हिंड़तो बीता झपके - झपके,
पांय बढ़ाउन जा।

संकलनः ठाकुर पूरन सिंह

## 13. गोटक खुंटे गांधी बाबा,गोटक खुंटे जवाहर

आठ इन खुंट, आठ इन खुंट,
माकोड़ा चो जाली
कुदुन फादुन माकोड़ा दखा
एके बनाली।।
गोटक खुंटे चटक मटक
गोटक खुंटे रीता।
गोटक खुंटे राम रहू आत,
गोटक खुंटे सीता ।।
गोटक खुंटे गरु रहू आत,
गोटक खुंटे नाहर
गोटक खुंटे गांधी बाबा
गोटक खुंटे जवाहर।।

**गीतार्थ -** आठों दिशाओं में खूंटें गड़े हुये हैं। ऐसा ही मकड़ी के जाले के समान हमारा भारत देश है। कूंद - फांद करके मकड़ी ने यह जाल बनायाहै। एक खूंटे पर चटक - मटक है, एक खूंटा खाली है, एक खूंटे पर रामजी रहते हैं और एक खूंटे पर सीता जी का स्थान है । एक खूंटे पर गाय रहती है और एक खूंटे पर शेर। एक खूंटा महात्मा गांधी जी ने सम्हाल रखा है और एक खूंटा जवाहर लाल जी ने।

संकलन एवं अनुवादः ठाकुर पूरन सिंह

( संदर्भ ग्रंथ - सुराज. आदिवासी लोक कला परिषद )

## 14. मंद के छाँड़ा तुमी ,गांधी बब्बा बल्लो

गांधी बाबा बल्लो सुना हो गंवरेया -
मंद के छाँड़ा तुमी।
नंगन गोठ के धरा गंवरेया-
मंद के छाँड़ा तुमी
करेजा फोफसा जरुन जाय से,
देहें के चरपट चरुन जाय से,
धन सरे से धरम जाये से,
मंद के छाँड़ा तुमी।।
गांधी बाबा बल्लो...
कितरो उडरा गंदे से मंद,
भकसनायं हुनचो गंद,
मनुख के मंद करे से फंद,

मंद के छाँड़ा तुमी।।
गांधी बाबा बल्लो...
मोहू संगे संगे कितरो चाटी,
कीड़ा थापो कितरो माटी,
रस सपाचो ण्किे से भाटी,
मंद के छाँड़ा तुमी।।
गांधी बाबा बल्लो...
मातुन पहले बूता जाए से,
उमजा होले फेरभाए से,
तुमचो धन के मंद खाए से,
मंद के छाँड़ा तुमी।।
गांधी बाबा बल्लो...
माती होसत बाटे पड़सत,
गुलाय देहें चाटी झोमसत,
म हं कुकूर मूतन जासत,
मंद के छाँड़ा तुमी।।
गांधी बाबा बल्लो...
मंद के छोड़ा पैसा बाचो
मंद के छाँड़ा तुमी।।
गांधी बाबा बल्लो...
सत मारग मा रेंगा तुमी,
पढुक लिखुक सीखा तुमी
हित चो गोठ के धरा तुमी,
मंद के छाँड़ा तुमी।।
गांधी बाबा बल्लो...
ठोटा माआ जितरो आसत,
गांव सुतुर ने राहा सबे,
मंद के छाँड़ा तुमी।।
गांधी बाबा बल्लो...
गांधी बाबा बल्लो - सुना हो गंवरिया
मंद के छांड़ा तुमी।
नंगत गोठ के धरा हो गंवरिया
मंद के छाँड़ा तुमी।।
गांधी बाबा बल्लो...
0ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थः**

ये गांव वालो सुनो तुम शराब पीना छोड़ दो गांधी बाबा ने कहा है।यह बात तुम गांठ में बांध लो की शराब पीना छोड़ना है। शराब पीने से कलेजा जल जाता है। शरीर खोखला हो जाता है। शराब पीने से धन भी जाता है और धर्म भी चला जाता है। शराब की खुशबू कितनी खराब हैं जब महुआ को सड़ाते हैं , तो उसमें कीड़े पड़ जाते हैं। शराब पीने के बाद तुम काम के लायक नहीं रहोगे। तुम्हारा सारा धन शराब में खतम हो जायेगा। जब आदमी पर शराब का नशा चढ़ जाता है, तो वह कहीं भी गिर जाता है। कुत्ता उसके मुंह में पेशाब करके चला जाता है। इसलिये तुम शराब पीना छोड़ दो, गांधी बाबा ने कहा है। तुम सत्य के मार्ग पर चलो। पढ़ना - लिखना सीख लो। यह बात तुम अपनी गांठ में बांध लो। गांव में सभी एकता बनाकर रहो। गांधी बाबा ने कहा है। यह बात तुम अपनी गांठ में बांधकर रखो।

संकलन एवं अनुवाद - ठाकुर पूरन सिंह

संदर्भ : सुराज - आदिवासी लोक कला परिषद

# c?ksy[kaM

# lkekftd ,oa jktuSfrd psruk ds

# yksd xhr

## बघेल खंड

जनजातीय एवं जनपदीय लोक गीतों में सामाजिक एवं राजनैतिक चेतना के लोक गीतों के संकलन करने के उद्‌देश्य से मैंने संपूर्ण बघेलखंड़ का भ्रमण किया। वहां के बुद्‌वजीवियों,बुर्जुगों एवं लोक संस्कृति में रुचि रखने वाले अनेकों महानुभावों से मिला। इस भ्रमण के दौरान मैंने पाया की बघेलखंड़ का रीवां राज्य सामंती जनजीवन से प्रभावित था। राजनैतिक चेतना के लोकगीत सभ्रांत परिवारों में लगभग नहीं के बराबर मिले। लेकिन मध्यवर्ग में तथा उनसे भी अधिक वहां निवास कर रही आदिवासी जनजातियों में सामाजिक एवं राजनैतिक चेतना पर केन्द्रित अनेकों लोक गीत मिले। जिनमें से कुछ लोकगीत तो वाचिक परंपरा के हैं, तो कुछ स्वरचित लोक गीत हैं। जो समय की धारा के साथ लोक में प्रचलित हो गये हैं। इनमें से कुछ लोक गीत लोकगाथा का स्वाद और रचित लोक गीतों की शैली भी सुख भी प्रदान करते हैं।

इस भ्रमण के दौरान मुझे विभिन्न विधाओं और रागों के जो करमा, बनरा, सोहर, कोलदहका, हिंदुली, कजरी, गारी, भगत आदी लोक गीत तथा डॉ. भगवती प्रसाद शुक्ल द्‌वारा संकलित एवं अन्य ग्रंथों में प्रकाशित सामाजिक और राजनैतिक चेतना के कुछ लोक गीत प्राप्त हुये हैं ।

इस शीर्षक के अंर्न्तगत मैंने 31 लोकगीतों को रखा है। लोक गीतों की गहरी पड़ताल करने और उनके अंदर सूक्ष्म चेतना तत्वों का विश्लेषण करने के लिये कुछ और उपशीर्षकों में उन्हें विभाजित किया है।

### बघेलखंड़ में प्रचलित राजनैतिक चेतना के लोक गीत -

बघेली लोक गीतों में राष्ट्रीयता की स्पष्ट अनुगूंज है। बघेलखंड़ के सपूत ठाकुर रणमत

सिंह और रणजीत राय दीक्षित का भारत की आजादी में अपूर्व योगदान रहा है। उनका त्याग और बलिदान लोकगीतों के माध्यम से प्रसिद्व है-

रणमत बाबा नहीं देखाय
डेरि लागत हबै तिलंगन से

बघेली लोक चेतना में स्वतंत्रता आंदोलन की झलक गांधी के समय में ही दिखाई देने लगी थी। स्वतंत्रता की बलिवेदी पर न जाने कितने बघेली वीर शहीद होकर लोकगीतों में अमर हो गये -

रोज सकन्ने फूल चढ़ी
संजा कइ जारी दिया बाती
रणमत के नाम बघेलखंड़ कइ
फूलि उठी चाकल छाती।।

संकलन - ड़ॉ. अंशुबाला मिश्र

## 1. अंगरेजन के राज मा केवादा व्है गा रे

अंगरेजन के राज मा केवादा व्है गा रे
नये - नये कानून कायदा देश मा चलाइस गा
सोना - चांदी देश का लेके,विलाइत मा पहुंचाइसि गा
अंगरेजन के राज मा केवादा व्है गा रे
चलो सुराजी लेके झंड़ा,नामी नामी देश के नेता
जेहलन मा बेड़वाइसि रे,केवादा व्है गा रे
अंगरेजन के राज मा केवादा व्है गा रे

0ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :** अंग्रेजों के राज्य में जनता के ऊपर हर किस्म की मुसीबतें आईं - नये - नये कानून कायदे बाकर उन्हें देश में लागू किया गया। देश भर का सोना चांदी ले जाकर विलात में पहुंचाया गया।आन्दोलनों के दौरान स्वराज की मांग करने वाले जब जब चले तब तब लाठी चलावाया, गोली चलवाया - इतना ही नहीं बड़े - बड़े नेताओं को पकड़कर जेलाों में बंद करवा दिया। अंग्रेजों के राज्य में जनता के ऊपर हर किस्म की मुसीबतें आई और केवादा होती गई।

यह लोकगीत स्वाधीनता के पूर्व गाया जाता था। इस लोकगीत में राजनैतिक ही नहींबल्कि आर्थिक चेतना भी देखने को मिलती हैं अंग्रेजो के ने इस देश का सोना ,चांदी विलायत पहुंचा

दिया। उन्होंने अपना कानून चलाया। अंग्रेजों के राज्य में अनेकों प्रकार के कष्ट हो रहे थे।

( संदर्भ ग्रंथ : सुराज म.प्र. आदिवासी लोक कला अकादमी )

## 2. इन गुन्ड़ों ने होरिका रचाये दिहे गा

इन गुन्ड़ों ने होरिका रचाये दिहे गा
तुमने पहिरा मोजा पतलून
ऊपर बढ़िया कोट
पावन पहिरि विलयती जूता
शिरे विलइती टोप
इन गुन्ड़ों ने होरिका रचाये दिहे गा
बम्बई वाले शूट पहिनवे
काम चलावे पूरा
बिलइत के सब बोली बोलें
हिन्दुस्तानी टूरा
होरिका रचाये दिहे गा
इन गुन्ड़ों ने होरिका रचाये दिहे गा
एक हाथ में बढ़िया हंटर
बढ़िया घड़ी कलाई
मुंह में सिगरेट धुंआ उड़ाई
पाकेट दिया सलाई
पतरैं - पतरैं खाना खावे
पतरैं कपड़ा पहिरैं
व्यंकटनगर के छोटा बाबू
बनगे साहब मेम
टामी कुत्ता साथ चलैं
औ घड़ी बतावै टैम
होरिका रचाये दिहे गा
इन गुन्ड़ों ने होरिका रचाये दिहे गा
00ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :**

परम्परा से चली आ रही सभ्यता का स्थान ग्रहण करती विदेशी पाश्चात्य् सभ्यता के प्रचलन को देखकर गीत के बोल उभरते हैं -

इन गुन्ड़ों ने समाज की मर्यादाओं को भंग कर होली त्यौहार जैसा रुप खड़ा कर रखा है- तुमने मोजा पतलून पहन लिय ऊपर से बढ़िया कोट पहिन लिया, पैरों में बिलायती जूते पहिन लिया और सिर पर बिलायती टोप लगा रखा है।कभी बम्बई वाले जूते बूट पहनते हैं और अब हिन्दुस्तानी छोकरे बिलायती बोली बोलते हैं - इन लोगों ने समाज की मर्यादाओं को भंग कर होली का त्यौहार मचा रखा हैं हाथों में बढ़िया हंटर लेकर लते हैं कलाई में घड़ी बंधी है। मुंह से सिगरेट का धुंआ निकल रहा है जेब में दियासलाई पड़ी है। पतले - पतले खाना खाते

हैं,पतला कपड़ा पहिनते हें। इस प्रकार की वेश - भूषा बनाकर व्यंकटनगर स्टेशन के छोटे बाबू खुद साहब बनते हैं पत्नी मेम साहब बनती है,उनके साथ टामी कुत्ता चलता है और घड़ी में समय देखते चलते हैं। इन गुन्ड़ों ने समाज की मर्यादाऐं भंग कर होली का त्यौहार मना रखा है।

इस लोकगीत में परंपरा से चली आ रही सभ्यता का स्थान ग्रहण करती विदेशी पाश्चात्य् सभ्यता के प्रचलन को दर्शाया गया है। इसमें अंग्रेजों को गुंड़ा दर्शाया गया है। जिसने भारतीय समाज की मर्यादाओं को भंग कर होली के त्यौहार जैसा माहौल खड़ा कर दिया है। इस लोकगीत में सामाजिक रुप से अत्यंत व्यापक दृष्टिकोण एवं चेतना के दर्शन होते हैं।

(संदर्भ ग्रंथः सुराज म.प्र. आदिवासी लोक कला परिषद)

## गांधी केर आई बहार

जब से आई अनीति केर आंधी
जनम लिहीन तब नेहरु गांधी
गांधी केर आई बहार
जूझि गे हंई सैनिक हजार
भारत मइया दह दे दया केर दान
मनवा झूमि झूमि जाय,देसवा झूमि झूमि जाय
हिमगिरी शीश मकुट भल सोहिन
संत मुनिन आसमान मन मोहिन
रुप केर छवि हई अइसन अपार,
मनवा झूमि झूमि जाइ,
भारत मइया दह दे दया केर वरदान
गांधी केर आई बहार
जूझि गे सैनिक हजार
पतित पामनी गंगा तोहसे,निकरी सींचि सींचि जल बरसें
पग पछारिन हइ सागर तोंहार
भारत माता दय दे दया केर वरदान
जब से आई अनीति केर आंधी,जनम लिहीन तब नेहरु गांधी
गांधी केर आई बहार
जूझि गे सैनिक हजार
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थः

जब से इस देश में अन्याय का वबंड़र उठा,इस देश में तभी पंड़ीत जवाहर लाल नेहरु और मोहन दास करमचंद गांधी ने जन्म लिया। गांधी जी ने देश को आजाद कराने का रास्ता दिखलाया,उनके बतलाये रास्ते पर हजारों स्वतंत्रता संग्राम सैनानियों की भीड़ चल पड़ी और वे इस आजादी की लड़ाई में जूझ गये।

" हे भारत माता " हमें दया का ऐसा दान दो जिससे हमारा मन देश के लिये झूम उठे। पूरा देश गांधी जी के पद चिन्हों पर चलने लगे।

भारत के उत्तर में हिमालय मुकुट के समान शोभायमान है। वहां पर साधू - संतों के आश्रम हैं। जो मन को मोह लेते हैं।वहां पर सौंदय की छटा ऐसी छाई है कि मन मयूर के समान झूम उठता है।भारत माता दया का दान दो , जिससे हम लोग गांधी जी के बतलाये रास्ते पर चल सकें। हजारों सैनिकों की भांति जूझ सकें।

भारत माता , पापियों को पवित्र करने वाली गंगा तुम्हारे प्रदेश से ही निकली हैं वह अपना पावन जल सींच - सींचकर सभी को पवित्र करती हैं समुद्र आपके चरण पखारता है। भारत माता दया की दान दो जिससे मन झूम उठे। गांधी जी के मार्ग पर हम चल सकें।हजारों सैनिकों की तरह जूझ सकें।

यह बघेल खंड़ में स्त्रियों द्‌वारा गाया जाने वाला सामूहिक लोकगीत दादरा है। यह लोक गीत विभिन्न उत्सवों पर या देवी पूजा के अवसर पर गैलहाई दादरा के रुप में गाया जाता हैं । किसी समारोह में भोजन बनाते समय या पुड़ी बेलते समय यह दादरा गाया जाता है । इसलिये इसे बेलनहाई दादरा भी कहा जाता है। यह दादरा आजादी के आंदोलन के समय बघेलखंड़ की महिलाओं द्‌वारा गाया जाता रहा है। इसमें राजनैतिक और सामाजिक चेतना के दर्शन होते हैं।

संकलन : श्रीमति कलावती मिश्रा, श्रीमति मंजुला मिश्रा

अनुवाद - : ड़ॉ. विजय चौरसिया

## 4. भारतवासी बड़े सूरमा कठिन जात बलवान गा

रेल मांगई कोइला पानी, मोटर मांगई गा तेल,
दउआ,मोटर मांगइगा तेल।
ठेला मांगई लाल झंड़ी,भागइगा मुड़पेल,
दउआ भागइ मुंड़पेल,
मोटर मांगइगा तेल।
गांधी महतमा मांगइ सुराज कै झंड़ा गजबेल,
जवाहर भागई मुड़पेल,
तिनखे पाछे भागई, पटेल
गांधी मंगाइ्र सुराज के झंड़ा गजबेल,
भारतवासी बड़े सूरमा,कठिन जात बलवान गा,
मरना जीना नहीं डेरामंइ,तेंगि देंइ परान गा।
गांधी मांगइ राज पाट अउ मनसब मांगई सरदार
जवाहर छीनइ अंगरेजन से ,सलगै कारोबार।
धीरे बनाबा,बिगड़ी बन जइया रे,
बिगड़ी बन जाइगा रे,तैं धीरे बनाबा
गांधी महराज धीरे चला भई रेल, भागइ मुड़पेल।

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :**

**रेलगाड़ी कोयला पानी मांगती है। मोटर तेल (पेट्रोल) मांगता है। भाईयो मोटर तेल मांगता है।रेल गाड़ी लाल झंड़ी मांगती है और रेल तेज गति से अपने मार्ग पर चलना चाहती है। इसलिये तेल - पानी मांगती है।महात्मा गांधी स्वराज मांगते हैं।जिससे स्वराज का शानदार ध्वज चारों दिशाओं में फहराये और लहराये। जवाहर लाल नेहरु और पटेल भी स्वराज मांगते हैं। भारत वर्ष के नौजवान बड़े सूरवीर और बलवान हैं। वे मरने - जीने से नहीं ड़रते। वे देश को आजाद कराने के लिये अपने प्राण भी दे सकते हैं। महात्मा गांधी स्वराज मांगते हैं। सरदार पटेल मंत्री पद मांगते हैं।जवाहर लाल नेहरु अंग्रेजों से राज्याधिकार छीनना चाहते हैं। धीरे - धाीरे बनाओ काम बन जायेगा, बिगड़ी बात बन जायेगी। महात्मा गांधी धीरे - धीरे स्वराज के पथ पर चल रहे हैं।लेकिन उनकी आंदोलन रुपी रेलगाड़ी तीव्रता से भागी जा रही है।**
**यह लोकगीत व्यौहारी जिला शहड़ोल के गोंड़ जनजाति में स्वाधीनता संघर्ष के समय गाया जाता रहा है।**

संकलन : दद्दी बाई व्यौहारी जिला - शहड़ोल
अनुवादः डॉ. विजय चौरसिया

## 5. चार सौ बरिस मा सुराज मिला हो

**चार सौ बरिस मा सुराज मिला हो,सुराज मिला**
**आगे - आगे गांधी लड़ैं,पाछे लड़ा थे सुभास**
**चार सौ बरिस मा सुराज मिला हो,सुराज मिला**
**न तो लिहिन भाला - बरछी, न लिहेन तरवार**
**उंय तो अहिंसा मा कर दिहेन देशवा के बेड़ा पार**
**सुराज मिला हो चार सौ बरिस मा सुराज मिला हो,**
**हांथी ढ़के आमई जवाहर,घोड़वा चढ़ीके आमई सरदार**
**द्नउ उदकत जाइ,पइदल - पइदल आमइ महतमा गांधी**

दिहिन बोझा उतार,चार सौ बरिस मा सुराज मिला हो,सुराज मिला

**गीतार्थ :** हे भाई चार सौ वर्ष की लड़ाई के बाद हमें स्वतंत्रता मिली है। स्वराज की लड़ाई के अगुआ महात्मा गांधी थे। उनके पीछे - पीछे सुभाष च्रद्र बोस थे। इस स्वराज की लड़ाई तो महात्मा गांधी ने लड़ी पर इस लड़ाई में न तो भाला - बरछी का प्रयोग हुआ न ही तलवार का - महात्मा गांधी ने तो अहिंसा के बल पर स्वराज का बेड़ा पार लगा दिया। पंड़ित जवाहर लाल नेहरु हाथी पर सवार होकर आ रहे हैं और सरदार पटेल घोड़े पर दोनों उछल रहे हैं किंतु महात्मा गांधी पैदल - पैदल चले आ रहे हैं। सत्ता के बोझ को उन्होंने सिर से उतार कर फैंक दिया। चार सौ वर्ष में स्वराज मिला है। स्वराज मिल गया है।

यह लोक गीत बघेल खंड़ के आदिवासियों द्वारा स्वतंत्रता प्राप्ती के पश्चात् गाया जाने वाला करमा लोक गीत है। इस लोकगीत में राजनैतिक चेतना के दर्शन होते हैं।

सौजन्य- ललिता बाई ग्राम कपूरी जिला - सीधी

अनुवाद - डॉ. विजय चौरसिया

## 6. गांधी नीति तोहार देश को आजाद करायो रे

गांघी नीति तोहार देश को आजाद करायो रे ।
चाल, ढ़ाल,आचार नियम,जनगनमन भायो रे ।।
सरबस होम किहा आपन ,पै सत्य साधना ना छोड़ेया।
समय मा धाक जमायो रे,जन गन मन भायो रे।।
कमर कसे तययार न मानइँ  हार,अहिंसा केर शस्त्र चलायो रे।
बरबस आगी मॉ कूंदे जब ,अपुनइ गई जुडाइ रे।।
सीस कबहु नइ झुकायो रे ,समय मा धाक जमायो रे।
सत्यागरह उपास धरना धरिन,दाड़ी यात्रा किहेन।
गजब के चल चलायो रे , जन मन गन भायो रे ।।
महतारी कइ लाज बची ,घिउ केर दिया लायो रे ।
मोर जलदी लड़ आयो रे ,समय मां धाक जमायो रे।।
गांधी नीति तोंहार देस अजाद करायो रे।
सम मां धाक जमायो रे ,जन गन मन भायो रे।।

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :**

गांघी जी आपकी नीति ने देश को आजाद करा दिया हैं आपका रहन - सहन रीति ,नियम जन - जन को अच्छे लगे। आपने अपना सर्वस्य देश पर निछावर कर दिया ,किन्तु सत्य की साधना नहीं छोड़ी।समय - समय अंग्रेजों के ऊपर अपनी धाक जमाई । जिससे जन - जन के मन को अच्छा लगा। आजादी के आंदोलन में अहिंसा का शस्त्र लेकर देश को आजादी दिलाने के लिये तैयार हो गये। आपने कभी हार नहीं मानी। स्वराज की आग में कूंद पड़े और अपना सिर नहीं झुकने दिया। इसलिये आपकी धाक बनी रही। आपने सत्याग्रह किया, अनशन किया, दाण्ड़ी यात्रा की। आपकी सभी रणनीतियां और चालें सफल रहीं । आपने भारत माता की लाज रख ली। देश को जल्दी ही स्वतंत्रता दिला दी। आपकी नीति के कारण देश शीघ्र आजाद हो गया।

यह लोक गीत बघेल खंड़ में गाया जाने वाला बनरा लोक गीत है। लोकगीत स्वतंत्रता संघर्ष के नायक महात्मा गांधी जी के विचारों की आबाध सत्ता का चित्रण करता है कि उनके राजनैतिक और भारत की स्वतंत्रता संबंधी विचार पूरे देश में फैले हुये हैं। सारा राष्ट्र उससे प्रभावित है।

संकलन : श्रीमति कलावती मिश्र     अनुवाद : डॉ. विजय चौरसिया

## 7. जब जब उठी बड़ेरा जोरगर देस मा छाई रे

जब जब उठी बड़ेरा जोरगर देस मा छाई रे।
तब - तब मानउता गई कचरी,दया ना आई रे।।
हइ इतिहास गवाही,जनमे गांधी - नेहरु रे।
हाथ करोड़न एक मॉ तवहिन, ऑधी भागी रे।।
जब - जब अपने अंतस जागी, बरखा आगी रे।
कोसन रहा सुभास,कहिन गांधी अपनी बानी रे।।
फुट्ट फैलि तो देस के अपने ,खोखल कीन्हिस रे।
एखे बदले रकत मांगी,धरती जब मांगिस रे।।
जे जे गरम विचारे केर,बारुद बिछावाइन रे।
ते ते भारत माता केर ,सपूत कड़बाइन रे।।
जब जब विपत्ति केर नाग,डसई का हीं मुंह बाइस रे।
तब तब गांधी खड़े भईन,सब विख पी डारिन रे।।

जब जब उठी बड़ेरा जोरगर,देस मा छाई रे।
तब तबानवता गई कचरी,दया न आई रे।।
हइ इतिहास गवाही,जनमे नेहरु गांधी रे।
हांथ करोड़न इक मां तवहिन आंधी भागी रे।।
जब जब उठी बड़ेरा जोरगर देस मा छाई रे।
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थ :

जब जब देश में आंधी - तुफान जोरों से उठा मानवता निर्ममता पूर्वक कुचली गईं,इस बात का इतिहास साक्षी है कि गांधी - नेहरु ने जन्म लिया। करोड़ों हाथ उनके साथ हो गये । तुफान छंट गया जब जब हम लोगों के भीतर ईर्ष्या की अग्नि प्रज्वलित हुई, तब - तब स्वराज दूर होता गया। गांधी जी की वाणी ने शीतल जल छिड़का आपसी विरोध ने देश को खोखला कर दिया। उसको शांत करने के लिये देश की धरती ने खून मांगा। उस समय कुछ गर्म दल के क्रांतिकारियों ने भी बारुद फूंकी और भारत माता के सपूत कहलाये।

जब - जब विपत्ति के सर्प ने देश को ड़सने के लिये अपना मुंह फाड़ा, तब - तब महात्मा गांधी ने विषपान किया और देश की विपत्ति दूर की। जब - जब देश में आंधी - तूफान उठा मानवता निर्ममता से कुचली गई । इतिहास साक्षी है कि महात्मा गांधी और पंड़ित जवाहर लाल नेहरु ने जन - जन के करोड़ों हाथों का सर्मर्थन लिया और देश से तूफान छंट गया।

यह लोकगीत स्वाधीनता के पश्चात् बघेलखंड़ में गाया जाने वाला लोकगीत है। इस लोकगीत में यह बात दर्शायी गई है कि पंड़ीत जवाहर लाल नेहरु और गांधी जी ने किस प्रकार देश को आजादी दिलाई। पंड़ीत जवाहर लाल नेहरु और महात्मा गांधी ने भारत की करोड़ों जनता का सहयोग लेकर देश को आजादी दिलाई। इस लोकगीत में राजनैतिक चेतना के दर्शन होते हैं।

संकलन : सरोज कुमार मिश्र
अनुवादःडॉ. भगवती प्रसाद शुक्ल

## 8. आज देस आजाद त हंई पइ मन नहीं मानई रामा

हरे रामा , गांधी केर सुकृति, जन - जन मां छाई रे हारी,
ग्राम सुराज केर सपना,बापू केर मन मा घेरे रामा,
हरे रामा,पढ़ई, लिखंई सब होंय,सुमित छाई रे हारी,
शिक्षा सगले देश मां जब तक एक न होई रामा
हरे रामा, तक तक करम पवित्र न आपन होई रे हारी,

आज देस आजाद त हंई मन नहिं मानई रामा,
हरे रामा , अपन देस कइ चीज जो अपनाही रे हारी,
हरे रामा , गांधी केर सुकृति, जन - जन मां छाई रे हारी,
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :**

गांधी जी के कायरें की कीर्ति जन - जन में व्याप्त है। ग्ारम स्वराज का सपना उनके मन में व्याप्त था। वह देश में फैल गया है।पढ़ लिखकर लोगों में सुमिति व्याप्त हो गई है शिक्षा जब तक पूरे देश में नहीं होगी तब तक लोगों के कर्म पवित्र नहीं होंगे। उनकी समझ न बदलेगी। अब तो देश स्वतंत्र हो गया है पर अभी मन नहीं मानता। जब तक गांधी जी का स्वदेशी का स्वप्न का उपयोग पूरे देश में नहीं हो जाता।

यह कजरी लोक गीत है। कजरी के प्रारंभ में हरे रामा तथा पंक्ति के अंत में रे हारी लगाते हैं।इसमें गांधी जी द्वारा किये गये सामाजिक चेतना के कायरें को दर्शाया गया है। इसमें यह बताया गया है कि जब तक देश में शिक्षा का व्यापक प्रचार - प्रसार नहीं होता तब तक गांधी जी के ग्राम स्वराज का सपना पूरा नहीं होगा।

संकलनः श्रीमति कलावती मिश्र

अनुवाद : डॉ. भगवती प्रसाद शुक्ल रीवा से प्राप्त

## 9. नइ चमक मॉ लोक रीति बिसराइने हो

सोवति जनचेतना जे कोउ जगावइ हो -
गांधी केर रस्ता पर चलि जे आवइ हो -
ओही केर इं देश ओही केर धरती हो -
ओही केर इं नदी पहार अउ परती हो -
गरीबन से जे हॉथ मिलावइ हो -
भ्रष्टाचार अनिति कइ जरि कटवावइ्र हो -
आजु समय कुछु टेढ़ मेढ़ अस आवा हो -
मंहगाई भुखमरी को कोउ बुझावा हो -
खेत अउर खलिहान बटे अब भाई हो -
गांधी लागइ ऊबि खूब सुधि आई हो
सांप छंछूंदर कस गेति अइसन आई हो
आजादी कइ घेंमनि मची लुटाई हो
हम सब लोगन देह तोंहार दुहाई हो
खद्दर के भितरे अंतस लुकवाई हो
धूप दीप कइ मची सांसति भारी हो
धरम करम सब चढ़े अकाश अंटारी हो
गांउ शहर जे आएं गली न पाइिन हो
" नई चमक मां लोक रीति बिसराइनि हो"
ग्राम सुराज सुधि तवहिन आई हो
गांधी होते आजु त होति निकाई हो

गाउ समसया गामइ जब सुलझाई हो
पंचाइती राज पाई अगंआइ्र हो
सरकारउ सुविधा सकेलि पहुंचावइ हो
सब जन जो एकौटि कइ हाथ बढ़ावा हो
भेद भाउ मिटि जाइ न दुश्मन आवा हो
लड़ी हारन से हम सीना ताने हो
कुलुकि उठी ध्रती सब फर सिरहाने हो
नन्दनवन महकी तव गामन - गामन हो ।
बहुरी तइ बसंत हंसी तव सामन हो ।।
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :**

गांधी जी के रास्ते पर जो चलेगा ,वही सुसुप्त जन - चेतना को जग्त करेगा। उसी का यह देश होगा,उसी की यह धरती होगी। उसी की ये नदियां होंगी। पहाड़ और धरती होंगी। जो गरीबों के साथ मिलकर लेगां उनसे हाथ मिलायेंगे,वही भ्रष्टाचार और अन्याय की जड़ काट सकेंगे।

आज का समय जटिल है। टेढ़ा - मेढ़ा हैं मंहगाई भुखमरी बढ़ी है। खेत - खलिहान बंटे हैं। ऐसे अवसर पर गांधी जी की बहुत याद आती हैं हमारी स्थिति सांप - छछूंदर के समान हो गयी हैं आजादी में भी कष्ट हैं इसलिये हम सब गांधी जी की दुहाई देने लगे हैं।खादी के अंदर मन का संकट छिपाये हुये हैं।धूप-दीप का संकट है,धर्म - कर्म आकाश में टंगे हैं।गांव उठकर

शहर आ गये पर उन्हें वहां रास्ता नहीं मिल रहा हैं सभी लोग नई चमक में खो गये हैं।सब लो रीतियां विस्मृत हो गई। तभी गांधी जी आपके ग्राम स्वराज की याद आती हैं गांव की समस्या को गांव में ही सुलझाने की याद आती हैं पंचयती राज्य की याद आती हैं सरकार शहरों की सुविधा गांव में टुकड़े - टुकड़े में पहुंचा रही हैपर सब यह सुविधा आती है तो सी ा ी के हाथ उठ जाते हैं।भेद - भाव मिट जाता हैं धरती कुलक उठती हैं फल की आशा जाग जाती हैं गांवों में नंदन वन महक उठता है। बसंत आ जाता है। सावन हँस उठता है।

इस लोकगीत में देश को आजाद होने के बाद की परिस्थितियों को दर्शाया गया है। ऐसे अवसर पर गांधी जी की याद आती है। इस लोकगीत में सामाजिक चेतना के दर्शन होते हैं।

संकलन - सरोज कुमार मिश्रा

अनुवादःडॉ. भगवती प्रसाद शुक्ल

## 10. भारत माता के पूत भे गांधी,

भारत माता के पूत भे गांधी,काटिन कठिन कलेश, हो मा ।
गोरा हटाबा लाजि बचाबा देश क दिहिन संदेश हो मा ।।
सत्य से हारे ,अहिंसा से मारे,भागे हैंइ छोड़ि के देश हो मा।
लाठी मोटी,कमर लंगोटी, चप्पल चश्मा भेख हो मा।।
ई चरखा, गूंजई देसबा उन्हीं पूजई, लाखन नमन देय हो मा ।
भारत माता के पूत भे गांधी, काटिन कठिन कलेश हो मा ।।

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थ :

भारत माता के सुपुत्र गांधी हुये ,जिन्होंने भारत माता के कठिन कष्टों को काट ड़ाला। उन्होंने परतंत्रता की बेड़ियों को काटा, गोरों को इस देश से भगाया। देश का सम्मान बचाया, देश को सत्य - अहिंसा का संदेश दिया। इन हथियारों से अंग्रेज हारे और भागे।हाथ में मोटी लाठी,कमर में लंगोटी ,पैरों में चप्पल और आंखों में चश्मा यही गांधी जी का भेष था। उनके चरखा की धुन देश भर में गूंजी,उसे पूजा गया। उस देश ने गांधी को प्रणाम किया। नमन् किया। ऐसे भारत माता के पुत्र महात्मा गांधी हुये जिन्होंने भारत माता के कष्टों का हरण किया। स्वाधीनता के बाद गाया जाने वाला बघेलखंड़ के इस लोकगीत में बतलाया गया है कि गांधी जी ने सत्य - अहिंसा के मूल मंत्र से देश को आजाद करा दिया। इस लोकगीत में राजनैतिक चेतना के दर्शन होते हैं।

संकलनः श्री रामनरेश तिवारी

अनुवादः डॉ. भगवती प्रसाद शुक्ल

## 11. दुखः दरिद्र हरा तू गांधी, घटाटोप अंधियार

हिरदय केर बनी हइ मेढ़ुली,मन है खुला किमार -
परछांही फफकति हइ घर मा,कउन सजावइ थार -
कउन कउन अब काम होई रहें, देखतिउ नैन उधार -
गांधी कस बिटवा पुनि जनमइ, देश कइ करइ सुधार -

मन्नुख मन्नुख पर सवार हइ,मची भितरही रार -
मन - मन फूटी रहै कंकरी कस,जुरते जो एकदार -
कहां गये बापू अउते, दिया तरे अंधियार -
बारिन खेत जाति हइ खाए,करितिउ कुछु उपचार -
दुखः दरिद्र हरा तू गांधी,घटाटोप अंधियार -
इया शहीदन कइ हइ धरती,मारे हउइ गोहार -
सब कुछु हरा भरा हिंयन मांगत मां लागति लाज हजार -
आमा ,महुआ जमती कहुआ,तुलसी अउ कचनार -
गोंहू,धान,तिली,कोदौं,काकुन सामा कइ बहार -
जोन्हरी बजरी,सरसों,राई केरी हवइ भरमार -
ओड्डा,टमस मजीरा लिन्हे,करति हमा झंकार -
है कैमोर कहेंजुआ,केकल बिंझ क अगम पहार -
कजरी, हेंदुली, फगुआ,बिरहा गामन कर गलहार -
कालदहका अउ भगत बघेली गीत है भरे हजार-
लो, ताम ,कोयला, हीरा कस दौलत कर भंड़ार -
सीत सकोरोपातन पर गति जाइ नौलखा हार -
कढ़ी,रसाजी,इन्दर हरि,सेंमई वगजा अउर अचार -
बरी, फलौरी, बरा ,मगौरा,हिंयन केर जेउनार -
बरी कोंसि जहां जब वनि मा फूलइ,धरती कर सिंगार -
कोइली जब बसंत मा कुहकइ बहित हबइ रसधार -
उज्जर शेर केरिई धरती सबका दिहिस उधार -
समय आज लंगड़ात हवइ कोहिरा घेरे भिनसार -
पुखइया रहि - रहि कइ खांसई फिरइ दुआर - दुआर -
जब से गये गांधी तुम नींदक टूटिगें तार -
दुसरेन कइ जरि खोदवा एतनइ बना हबइ व्यउपार -
चरिउ कैत गड़ी हइ आंखी, मिलति रहति फटकार -
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :** हृदय की मेंढुली,मन का किवाड़ बन गये पर शरीर की परछाई सिसक रही है, कौन थाल सजाकर स्वागत करे। कैसे - कैसे काम हो रहे हैं, क्या - क्या हो रहा है - देश में ? अब फिरसे गांधी जैसे बेटा पैदा हो, तब कहीं देश का सुधार हो सकता है ,उद्वार हो सकता है।आज का मनुष्य, मनुष्य पर ही सवारी गांठ रहा है। भीतर ही भीतर संघर्ष है। प्रत्येक मन में कंकड़ फूट रहे हैं।एकता नहीं है। बापू' तुम कहां हो, आओ देखो यहां पर दिया तले अंधेरा है।

यहां पर तो बाड़ी ही खेत को खाये जा रही है। कुछ उपाय करो । दुख - दरीद्रय को मिटाओ। गांधी जी आइये। यहां पर घना अंधकार है। शहीदों की यह धरती चीत्कार कर रही है। अब आपसे कुछ मांगते हुये लज्जा आ रही है।आम, महुआ, कहुआ (अर्जुन), तुलसी, कचनार, गेंहूं, धान, तिली, कोंदौ , काकुन, सामा की बहार है। मकई ,बाजरा, सरसों, राई पंचुर मात्रा में है। नदियों में टमस,ओड्डा,झरनों के मजीरा लिये झनकार कर रही है। कैमोर, केहुंजुआ, मेकल के विन्ध्याचल अगम है।

यहां कजली, हिंदुली, फगुआ, गांवों में गलबॉही ड़ाले घूम रहे हैं। कोलदहका, भगत लोकगीत हजारों हवा में तैरते हैं। लोहा, तांबा, कोयला, हीरा, के भंड़ार बघेलखंड़ में हैं।सबेरे पत्तों पर ओस के नौलखा हार बन जाते हैं। कढ़ी, रसाज, इन्दरहर, सैंमई, बगजा, आचार, बरी, फलौरी, बरा, मुगौरा के जेवनार हैं।

कांस वन में फूलती है,तो रसधारा बहने लगती हैं ,सफेद शेर की यह धरती सबको कुछ न कुछ लुटाती है। आज यहां पर भिनसार के कुंहरे ने घेर लिया हैं समय लंगड़ा रहा है। पुरवईया (हवा) घर - घर खांस रही है, रोगणी की तरह। गांधी जी जबसे आप गये नींद के तार ही टूट गये। सभी लोग एक दूसरे की जड़ खोदने में लगे हैं। दूसरों की नजर हमारे देश पर लगी है,चारों ओर से फटकार मिल रही है।

लोकगीत में स्वाधीनता संघर्ष के नायक गांधी जी का स्मरण किया जा रहा है।देश में एकता नहीं है। सभी लोग एक दूसरे की बुराई बता रहे हैं। देशवासी सोचते हैं एक बार फिर से देश में गांधी जी जैसा सपूत पैदा हो,तभी देश का उद्वार होगा।

संकलनः सरोज कुमार मिश्र

अनुवाद : डॉ. विजय चौरसिया

## 12. देसवा अबई न संभरी तो फिर,
## देश संभल न पाई

देसवा अबई न संभरी तो फिर,
देश संभल न पाई कबहूं.
गांधी कै संदेश न कउनउ फिर,
गामन मां पहुंचाई कबहूं।
तुम जौ नहीं भर पाया अबहूं
जाति पांत केर खाई का ,
गांधी कै संदेश न कउनउ फिर
गामन मां पहुंचाई कबहूं।

कइसे नमन् करी कोऊ फिर कबहूं,
गांधी कै परछाई का,
मजहब कइ धधक रही आगी
कइसे कउन बुझाई कबहूं
गांधी केर संदेश न कउनउ फेर,
गामन मा पहुंचाई कबहूं।
जरी अगर फेर से बहनें।
पापी दहेज केर आगी मा
जुरां नहीं रहत है भारत जो
एक सूत्र केर माला मां
अऊ रही जो गंगा मइली
कउन नहामइ अइंहइॅ कबहूं
गांधी के संदेश न कउनउ फिर,
गांमन मा पहुंचाई कबहूं।
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थः**

अगर देश अभी नहीं संभल पायेगा, तो फिर कभी नहीं संभल पायेगा। फिर कोई महात्मा गांधी के संदेश को ग्राम्य तक पहुंचाने वाला भी नहीं बचेगा। तुमने अभी तक जाति - पांत की खाई को नहीं भरा है। फिर गांवों तक गांधी के संदेश को कैसे पहुंचा सकोगे। गांधी जी की परछांई को कौन कैसे प्रणाम करेगा। अगर मजहब की आग धधकती रही। उसे बुझाया नहीं गया। फिर गांधी जी के संदेशों को कौन ले जायेगा? अगर फिर से बहनें दहेज की चिता में जलेंगी,अगर भारत एक माला के सूत्र में नहीं बंधा - अभी भी मौका है। अगर अभी भी गंगा मैली बनी रही,तो फिर गांधी जी के संदेशों को गांव तक कौन पहुंचायेगा?
स्वतंत्रता संग्राम के बाद लोककंठ से गाया जाने वाला लोकगीत।

संकलन : साबिर असलम खान मऊगंज जिला रीवा से प्राप्त।
अनुवादः डॉ. विजय चौरसिया

## 13. हमका निकही लागइ गांधी केर चलनिया,

हमका निकही लागि गांधी केर चलनिया

आंढ़निया उनकरि खादी कइ रही।
साबरमती नदी के तीरे आसरम सुघर बनाईन,
भजन,कीर्तन संझ सकारे ,चरखा खूब चलाइनि
भिनसारे कड़ पहरा ताजी बहइ बयरिया
आदतिया उनखर जांगई कइ रहजई।
लाला चुंदेया बाला मुरगा,भोर भरे जब बोलई
बरहम महूरत आबा ओही बीचन मा ड़ोलई,
राम राम जपि जग्गि करा अंहि बीचन,
एगल उमिरिया खोट बचाइन उनके एकउ नहिं।
निंकही देह उहइ जउन मां,निकहे मन केर बास,
मीलन घूमि अहिल कइ निशि दिन करत रहे अभ्यास ,
कउनउ अरझारन मसलन का लखड़ नजरिया,
दया त रोम - रोम उनखे मां राही।
चाकल रहा लिललार,लगाये तन पर सदा लंगोटी,
उनखर कद देखि बैरी कांपई,झुकइ हिमालय केर चोटी।
माटी खातिर छोड़िन मखमल केर सेजरिया,
गोरन केर उंइ कइ दिहिन तेरही,
गीता जइसन पोथी पढ़ि पढ़ि,अमल फुरिन फुरि कीन्हिन,
करम जोग कर हिन साधना,फल कइ आसन कीन्हिन,
आई शांति देश मां भागी सकल विपतिया,
ऐहिन से सब खुशहाली होइ रही।
हर धरमन के आर्दशन केर सार - सार गहि लीन्हिन,
परहित सबसे बड़ा समझि कइ,सेवा व्रत लइ लीन्हिनि,
गांधी कै जन सेवा केरि कहनिया,
गांमइ कइ होड़ गइ देस मां सही।
केतनी केतनी जेल यातना भोगिन हार न मानिन,
इया मेरि संकल्प शक्ति प्रभु के मनशा से पाइनि,
रस्ता रोकि ने पाइसि ऊंची बड़ी पहरिया,
सरल होय कठिन हई सही,
बारिनि खेत खाइ जब कउनउ जुगुति न सूझय भाई,
आंखी सगली दुनिया देखई,खुद काना लख पाई,
एक ठे पापी गोडसे मारिस चलत डगरिया
राम उंई जिमिया से कह।
हमका निकही लागइ गांधी केर चलनिया,
ओढ़निया उनखर खादी कै रही।
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थ :

हमें गांधी जी का रास्ता बहुत अच्छा लगता है। उनकी वेशभूषा खादी की है। वह भी अच्छी लगती थी। उन्होंने साबरमति के तट पर सुंदर आश्रम बनाया है। जिसमें सुबह शाम भजन कीर्तन होते हैं। चरखा चलता था, सुबह ताजी हवा बहती है। उनको सुबह उठने की आदत थी। सुबह होते ही ब्रम्ह मुहूर्त में जब मुर्गा बोलता है। तब गांधी जी राम - राम जपते हें।सारी उम्र वे बुराइयों से बचे रहे।

अच्छा मन अच्छे शरीर में निवास करता है। गांधी जी इसके लिये सुबह मीलों टहलने जाते थे। वे उलझे मसलों को सुलझाते हुये,दया पूर्ण व्यवहार करते थे। गांधी जी का मस्तक चौड़ा था। शरीर में वे लंगोटी लगाये रहते। उनका कद देखकर दुश्मन ड़रते थे। हिमालय की चोटी झुक जाती।गांधी जी ने देश की मिट्टी के लिये मखमली शैया छोड़ दी। गोरों का कर्म कांड़ कर दिया।

गीता जैसी पुस्तक को रोज पढ़ते थे। उस पर आचरण करते। सदैव कर्म योग की साधना की पर कभी भी फल की आशा नहीं की।इसलिये देश में शांति आ गई। विपत्ति भागी। प्रसन्नता छा गई। प्रत्येक धर्म के आदर्श और उसके तत्व गांधी जी ने ग्रहण कर लिये। 'परहित' को ही सबसे बड़ा धर्म माना।सेवा का व्रत लिया गांधी जी की सेवा भाव की कहानियां देश में कहने - सुनने पढ़ने के लिये हो गयीं।जेल में कितनी यातनायें सहीं पर पस्त नहीं हुये। उनमें ईश्वर की कृपा से आपार संकल्प शक्ति थी। ऊंचे - ऊंचे पहाड़ भी उनका रास्ता नहीं रोक सके। सहजता जीवन में आना कठिन है ,पर उनमें सब कुछ था।

बाड़ी को यदि खेत ही खा जाये तो क्या उपाय करें। अपने देश के नाथूराम गोड़से ने ही उनकी हत्या कर दी। राम - राम कहकर वे र्स्वग धाम चले गये।

गांधी जी ने भारतीय जनमानस को जिस तरह उद्वेलित किया। उसके कारण भारतीय लोक उन्हें देवता स्वरुप मानने लगा। गीत में कहा गया है कि हम गांधी जी के समान दिनचर्या बनायें और उनके बताये रास्ते पर चलें।

संकलनः श्री मति शकुंतला मिश्र रीवा से प्राप्त

अनुवादः ड़ा. विजय चौरसिया

## 14. जहँ जहँ गांधी सम्भारि पग ढ़ारिन हो

जहँ जहँ गांधी सम्भारि पग ढ़ारिन हो -
उंह उंह धूधरि बनति गई रे सोनमा हो
जहँ जहँ गांधी सम्भारि पग ढ़ारिन हो -
कहिन गुलमी केर घिउ मा रहंई हलाहल
आजादी के चारा निकहा ,इहेन मां देय धत्ल हो

जहँ जहँ गांधी सम्भारि पग ढ़ारिन हो -
धार के बदली बदली के गांधी चेतना जगाइनि
जुगनबा लइ आइन,सुदेश ता बचाइन हो
जहँ जहँ गांधी सम्भारि पग ढ़ारिन हो -
देश परेम इनके सुभाउ मां बसा रहा,
सत्य अउ अहिंसा के रुप मां धंसा रहा हो,
जहँ जहँ गांधी सम्भारि पग ढ़ारिन हो -
अंगरेजी दांव पेंच, बार न किहिस बांका
सत्याग्रह गोरन के दान नीति केर मा हांका हो
जहँ जहँ गांधी सम्भारि पग ढ़ारिन हो -
तहँ तहँ धूधिुर बनति गई रे सोनमा
आगी मा घिवपरा त क्रांति केरि होली,
धधकि जर उठी,उठाई दहिस ड़ोली हो
जहँ जहँ गांधी सम्भारि पग ढ़ारिन हो ।

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

(कोलदहका लोक गीत)

**गीतार्थः**

जहां - जहां गांधी जी के चरण पड़े, धूल भी सोना बन गई। जहां गुलामी के घी को देखा,हलाहल हो गया। आजादी की घास भी चमकदार बन गई। आंदोलन की धार को गांधी जी ने बदल - बदल कर प्रयोग किया और स्वदेश की परिकल्पना को साकार किया।

गांधी जी के कारण देश - प्रेम जन - जन का स्वभाव बन गया। सत्य अहिंसा के भीतर धंस गया। अंग्रेजों के दांव - पैंच नहीं चले। सत्याग्रह सफल हुआ। दमन नीति विफल हो गई। आग में घी की भांति क्रांति की होली धूं - धूं करके जल उठी।

स्वाधीनता के पश्चात् बघेलखंड़ में गाया जाने वाला कोलदहका लोकगीत।

संकलित - समना कोल रीवा से प्राप्त

अनुवाद - डॉ. विजय चौरसिया

## 15. गांधी भे अइसन लाल अहिंसा केर लइ के ढ़ाल

गांधी भे अइसन लाल, अहिंसा केर लइ के ढ़ाल,
अहिंसा केर ढाइ हो।
(आबा)
नींदी से सबका जगाइन,गोरा भगाइन,
गोरा भगाइन हो।
जब भइ भारत भुंइया बेहाल,हिमालय छाल,
हिमालय घालइ हो।
(आबा)
उपजी हइ गुलामी केर पूजा ,धरइ न मन धीरा,
धरइ न मन धीरा हो।
हइ कोउ बंधन काटइ,जे दुख में बांटइ,
जे दुख कें बांटइ हो ।
(आबा)
छावा हइ घन अंधियार,देखाइ न अंजियार हो।
गांधी भे अइसन लाल, अहिंसा केर लइ के ढ़ाल,
अहिंसा के लईके ढालइ हो ।
कीन्हिन देस के आजाद,बहुत धन्निवाद,
बहुत धन्निवादउ हो।
(आबा)
गांधी के कइल परनाम,गये सुरधाम,
गये सुरधामहि हो।
फदकई सोन चिरइया,हंसइ गंगा मैया।
(आबा)
ताने हैइ छाती हिमाला,पहिरि गिरिमाला,
पहिरि गिरिमाला हो।
लहरइ लहर तिरंगा,रहइ मन चंगा,
रहइ मन चंगा हो।
( आबा)
बोला भारत माता केर जय हो,
सादा विजय हो।
गांधी भे अइसन लाल, अहिंसा केर लइ के ढ़ाल,
अहिंसा केर ढालइ हो।
(आबा)
नींदि से सबका जगाइन,गोरा भगाइन,
गोरा भगाइन हो।
0ध्ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थ :

गांधी जी ऐसे सपूत पैदा हुये की अहिंसा का अस्त्र लेकर , भारत - माता के सभी पुत्रों को जगाया। अंग्रेजों को इस देश से भगाया।जब भारत माता व्याकुल हुई,हिमालय घायल हुआ,देश में परतंत्रता की पीड़ा व्याप्त हुई। तब गांधी जी का मन अधीर हो गया। देश के बंधन काटने और दुख बांटने के लिये वे प्रगट हो गये। घनघोर अंधकार के बीच गांधी जी ऐसे सपूत निकले ,जिन्होंने पूरे भारत देश में चेतना का प्रकाश फैलाया।

गांधी जी ने देश को स्वतंत्र कराया।इसके लिये सभी भारतवासी उनको धन्यवाद देते हैं।उनको प्रणाम करते हें।अब तो देश की सोन चिरैया फुदकने लगी है। गंगा जी सती हैं। हिमालय सीना ताने खड़ा ह,ैं तिरंगा झंड़ा लहरा रहा है, सभी का मन प्रसन्न है।

अब आप सभी भारत माता की जय बोलें। वह सदा विजयी रहे।गांधी जी जैसे लाल सदा उसकी कोख से जन्में। अहिंसा को हथियार बनायें।देश को समृद्व बनायें।

स्वाधीनता के पश्चात् गाया जाने वाला लोकगीत जिसमें देशको स्वतंत्रकराने के लियेगांधी जी का आभार किया जा रहा हैं

संकलन - रामनरेश तिवारी ग्राम तिवनी जिला रीवा से प्राप्त

अनुवाद :डॉ. विजय चौरसिया

## 16. धरती के सरग बनयेंगे बापू

धरती के सरग बनयेंगे बापू
नेह के नगरी बसायेंगे बापू
घटाटोप घेरिस गुलामी केर बादर,
आसूं से भींजई भुंइया के चादर।

आजादी के सूरज उगायेंगे बापू
धरती के सरग बनयेंगे बापू।
बिना तोप तरवार थांग मनंगा,
लाल किला लहराइन तिरंगा।
माता केर मुक्ति देबाइगे बापू,
धरती के सरग बनयेंगे बापू
सीना में गोली खायेंगे बापू,
जिनगी केर अरथ बतायेंगे बापू।
पीर पराइ गायेंगे बापू।
जीवन अमर बनायेंगे बापू,
धरती केर सरग बनायेंगे बापू।
0ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :**

गांधी जी ने भारत वर्ष की धरती को स्वर्ग बना दिया है।इस धरा पर प्रेम का संसार बसा दिया है। जब देश में गुलामी के बादल छाये आंसूओं की बूंदों से धरती की चादर गीली हो गई।तब देश में आजादी का सूर्य बापू ने उदय किया। जिससे धरती स्वर्ग बन गई। बिना तोप,तलवार के लाल किले में तिरंगा फहरा दिया। भारत माता को गुलामी से मुक्ति दिलाकर ,इस धरा को स्वर्ग बना कर बापू हम सभी को छोड़कर चले गये। बापू ने अपनी छाती में गोली खायी और जिंदगी को अर्थ दे गये। भारतवासियों को जीवन का मर्म समझा गये। वे सभी को पर दुख को निज दुख समझने का मंत्र दे गये।

संकलन- रामनरेश तिवारी
अनुवाद- डॉ. विजय चौरसिया

## 17.कइले परनाम जोर दूनउ बांहीं

कइले परनाम जोर दूनउ बांहीं।
मोहन दास करमच्रद गांधी कांहीं।
पिता तो तन मां शक्ति भरिन।
माता तो मन मा मस्ती भरीन

0

कीरतन भजन धरम के गाही।
कइले परनाम जोर दूनउ बांहीं।
मोहनदास करमचंद गांधी कांहिं।

0

देउतउं से बढ़ि के मन्नुख रहा,
दूसर के खातिर उन्मुख रहा।

0

निन्च बादे बिरबा मॉ अउचट छांहीं।
करले परनाम जोर दूनउ बांहीं।
मोहनदास करमचंद गांधी कांहिं।

0

बागत रहा बस लगाये लंगोटी,
बोलइ तौ हांइ पहाड़न के चोटी।

गोड़े मा परबत ढ़किलत जांहिं।
कइले परनाम जोर दोनउ बांहीं।
मोहनदास करमचंद गांधी कांहिं।

0

गुलामी से मन शरमिंदा रहा
देश के खातिर जिंदा रहा।

0

कूंदा आजादी के आगी मॉहीं।
कइले परनाम जोर दोनउ बांहीं।
मोहनदास करमचंद गांधी कांहिं।

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थः**

दोनों हाथ जोड़कर मोहनदास करमचंद गांधी को प्रणाम करो।उनके पिता ने गांधी जी के तन में शक्ति और माता जी ने मन में भक्ति भरी।वे हमेशा कीर्तन भजन करते रहते थे। उनको प्रणाम करो।वे देवताओं से बड़े हैं।वे हमेशा दूसरों के काम आये हैं।उनके छोटे से कद में विपुल छाया थी। आप उनको दोनों हाथ जोड़कर प्रणाम करो। गांधी जी लंगोटी लगाकर घूमते रहे, परंतु जब वे बोलते थे तो बड़े - बड़े पर्वत हिल जाते थे। बड़े - बड़े पहाड़ उनके चरणों में लोटते थे। ऐसे महात्मा गांधी जी को प्रणाम करो। वे हमेशा हमारे देश की स्वतंत्रता के लिये संघर्ष करते रहे। इसलिये वे आजादी की आग में कूंद गये। उनको प्रणाम करो । दोनों हाथ जोड़कर प्रणाम करो।

संकलनः श्री मोतीलाल ग्राम खटकरी जिला सीधी
अनुवाद : डॉ. विजय चौरसिया

## 18. गांधी कै इतिहास बना सब

गांधी कै इतिहास बना सब झुकि - झुकि बांचइ हो।
पढ़ि -पढ़ि जांचइ हों,जना सब अंगुरी मा नांचई हो।
जना सब अंगुरी मा नांचई हो,जना सब अंगुरी मा नांचई हो।
गांधी कै इतिहास बना सब झुकि - झुकि बांचइ हो।
"बा" से बापू केर बिआह बना सब झूम के नांचइ हो।
जना सब अंगुरी मा नांचई,पगड़ी का झांकइ हो।
मोहन मोह न जाइ सिखाइन सबका सोंचइ हो।
सिखाइन सबका सोचई हो,सिखाइन सब का सोचई हो।
गांधी कै इतिहास बना सब झुकि - झुकि बांचइ हो।
करमचंद कै घोल मिटाइन मन केर आंचई हो।
मिटाइन मन के आंचई हो,मिटाइन मन के आंचई हो।
हइ होरी कजरी तिजि,सदा नगमांचइ हो।
सदा नगमांचइ हो,सदा नगमांचइ हो।
बापू कै इतिहास बना सब झुकि - झुकि बांचई हो।

**गीतार्थ :** गांधी जी के जीवन और उनके इतिहास को सभी लोग बार - बार झुक - झुक कर पढ़ते हैं।सभी अंगुलियों में नाचते हैं।"बा" से बापू का विवाह हुआ तो सभी लोग झूम - झूमकर नाचने लगे। उनकी पगड़ी में अपना भविष्य पढ़ने लगे। मोहन दास करमचंद गांधी ने मोह से मुक्ति और चिंतन के नये - नये द्वार खोल दिये। सभी को सोचना - समझना सिखलाया।गांधी जी के बोलों ने सभी के मनों की पीड़ा का हरण कर लिया। होली, कजलियां,तीज और नागपंचमी को त्यौहारों का रुप दिया। त्यौहार हमेशा होते रहे। बापू ने सभी को यह शक्ति दी। बापू के इतिहास को सभी झुक - झुक कर पढ़ने लगे।

संकलनः वंशमणि तिवारी रीवा से प्राप्त ,अनुवादः डॉ. विजय चौरसिया

## 19. सुलुग उठा पंजाब सगल, आंदोलन भूत सवार

गांधी जी आंदोलन छेड़िन,जन चेतना जगाइन।

शंका मा सरकार जो पकरै,भा विरोध तब जाइ।।
अमिरितसर के गलियन - गलियन,धूम मची तकरार।
सुलुग उठा पंजाब सगल,आंदोलन भूत सवार।।
जलिया वाले बाग में एक ठे,सभा किहिन सब जाइ।
बीस हजार लोग तब जुटगे,भा विरोध बरिआइ।।
शांतिपूर्ण ओही चलत सभा मां,डायर पहुंचा जाय।
साथ सिपाही लिये सैकड़न,गोली दिहिस दगाइ।।
सभा निहत्थे लोगन कइ जब,गोली बरसन लागि।
केतनेन के परान केर पनक्षी उड़िगे,तव उदया नहीं जागि।।
केतनेन घायल भुंइ लइलीन्हिन, केतनन चलें पराइ।
लुका - छिपी जब कइना पाइनि,मउत कुकर कस पाइ।।
फउजी शासन लागू होइगा,नीति दमइ केर आइ।
क्रांति केर जब लपट बढ़ी,कोन - कोने गई छाइ।।
गांधी जी आंदोलन छांड़िन जन चेतना जगाइ........
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थः**

गांधी जी ने देश में जन चेतना जगाई और आंदोलन छेड़ दिया। अंग्रेजों की सरकार ने लोगों को शंका में पकड़ना आरंभ किया,तो उनका विरोध और बढ़ गया। अमृतसर की गली - गली में दंगे होने लगे। सारा पंजाब जल उठा। सभी पर आंदोलन का भूत सवार था।

सभी लोगों ने सलाह करके पंजाब के जलियावाले बाग में एक सभा की। उस सभा में लगभग बीस हजार लोग एकत्र हो गये। सभा शांति पूर्वक चल रही थी। तभी सभा स्थल पर जनरल डायर पहुंच गया। उसके साथ सैकड़ों अंग्रेज सिपाहियों की फौज थी। डायर के आदेश पर गोली दाग दी गयी। कितनों के प्राण पखेरु उड़ गये। इसके बाद भी उनको जरा भी दया नहीं आयी।

कितने घायल हो गये और कितने लोग कुत्तों की मौत मारे गये। फौजी शासन लगा दिया गया ,दमन की नीति आ गयी।

तब क्रांति की चिंगारी लपट बनकर देश के कोने - कोने में छा गयी। जन चेतना जागृत हो गयी। गांधी जी ने आंदोलन छेड़ दिया।

संकलनः रुकमनी बाई व्यौहारी जिला शहड़ोल
अनुवादः डॉ.विजय चौरसिया

## 20. गांधी कै जब आई आंधी

गांधी कै जब आई आंधी।
जन - जन केर खुली तब आंखी।।
देस भगति के जागे पांखी।
खोदी भभरि भिन्नाई,
सुनि रे मोरे भाई।।
जगह जगह झुरसी अमराई।
केतनउ में शहीद तव भाई।।
आंखिंन मारकती भाई।
खोदी भमरि भिन्नाई।।
सुना मोर भाई...
गांधी कै जब आई आंधी ।
चरिउ कइत लगी जब आगी
गोरन केरि जुगत नहिं लागी।
बीचड़ मची धुनाई निकही कचराई
सुना मोर भाई...
गांधी कै जब आई आंधी।
माटी अपन बदला लीन्हिस
आजादी अपने वस कीन्हिस।।
पुनि कइ महक देस मा आई
सुना मोर भाई ...
गांधी कै जब आंधी आई ।
जन - जन केर खुली तब आंखी
देस भगति के जागे पांखी
सुना मोर भाई गांधी कै जब आंधी आई।
0ददददधध0

गीतार्थ :

जिस समय गांधी जी के आंदोलन की अांधी आई। उस समय जन - जन की आंखी खुल गयीं।देश भक्ति के पंछी जाग्रत हो गये। जैसे मधु मक्खी के छत्ते को कोई छेड़े,तो वे काटने को दौड़ैं।हमारे भारत देश की जनता भी उस समय वैसी ही हो गई।

मेरे भाईयो सुनो - जगह - जगह पर अमराई झुलस गई है, न जाने कितने देशभक्त शहीद हो गये हैं।जनता की आंखें क्रोध से लाल हो गयी हैं।जनता क्रुद्व मधुमक्खियों की तरह भन्ना गई। जब देश में गांधी की आंधी आई।

देश की चारों दिशाओं में जब आंदोलन की अग्नि भड़की ,अंग्रेजों का कोई भी उपाय नहीं चला। उनकी अच्छी तरह से पिटाई हो गई। मेरे भाईयो सुनो!जब देश में गांधी की आंधी आई तब ऐसा ही हुआ था।

इस भारत भूमि ने अपना बदला ले लिया। हमारा देश आजाद हो गया। देश में फिर से आजादी की महक आ गई। भाईयो सुनो गांधी जी की जब आंधी आई ,तब देशवासियों की आंखी खुल गई,देश भक्ति के पक्षी जाग गये।

संकलनः सरोज कुमार सतना से संकलित

अनुवादः डॉ. विजय चौरसिया

## 21. रघुपति राघव राजा राम,पतित पावन सीता राम

कईले याद महात्मा गांधी
रघुपति राघव राजा राम,
लाठी लिहे लंगोटी पहिरे
मुंह पर मन्द - मन्द मुस्कान
चरखा - तकली केर कतइया.
पतित पावन सीता राम
रघुपति राघव राजा राम,
मिलि जुलि सब कोउ रहां एक होय,
खून पसीना केर फल खायं
सबका मिले पेट भर रोटी
मिलै हाथ का सबके काम
रघुपति राघव राजा राम
नहीं उपर बमगोला गरजई
धरती पर ढरकइ न लोहू
झंड़ा ऊंचा रहइ तिरंगा
भारत माता का परनाम
रघुपति राघव राजा राम,
पतित पावन सीता राम

0ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :**

**रघुपति राघव राजा राम का कीर्तन करने वाले महात्मा गांधी का स्मरण करो। गांधी का परिधान अदभुत है।उनके हाथ में लाठी,तन पर छोटी सी खादी और अधरों पर मंद - मंद मुस्कान थिरकती हैं चरखा - तकली चलाने वाला महापुरुष सदा पतित पावन सीताराम का स्मरण करता हैं**

**लोकोपकारी गांधी जी की मंशा है कि देश के लोग एक होकर रहें। अपने परिश्रम की कमाई खायें। सब लोगों को भर पेट भोजन और हाथ के लिये काम मिले। शान्ति रहे।युद्व न हो। अकाश में विनाशकारी बमों की वर्षा न हो। धरती पर मार काट बंद हो। मानव के रक्त प्रवाह से धरती लाल न हो। स्वतंत्रता का प्रतीक भारतीय राष्ट्रीय तिरंगा ध्वज ऊंचा रहे। भारत माता को नमन्।**

**गायिका - आशा द्विवेदी**

**संकलन : गोमती प्रसाद विकल रीवा**

## 22. मिलै वाली हइ सुराज सुना भाई

**मिलै वाली हइ सुराज सुना भाई**
**गांधी के संदेश सुराजी, गांव - गांव पहुंचाई रहै हइ**
**भूखे आउर पियासे बपुरे गांव - गांव में धाइ रहे हइ,**
**अंगरेजन कई कजानियराइ आई**
**मिलै वाली हइ सुराज सुना भाई**
**आपन होई खेत - पात सब आपन होई दाना**
**कारीगर सब आपन होहहीं बड़े - बड़े बनहीं कारिखाना**
**गरीबी न घरे नियराई पाई**
**मिलै वाली हइ सुराज सुना भाई**
**भारत मात केर दिन बहुरी हंसी खुशी घर - घर मा होई**
**जाति - पांति म साहुति होई,दुख से कहौ केउ न रोई.**
**खई न बिलार, अब दूध कइ मलाई**

मिलै हइ सुराजि सुना भाई.

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थ :

भाईयो सुनो! स्वराज मिलने वाला है। गांधी जी का ऐसा सन्देश स्वराज प्रेमी गांव - गांव में पहुंचा रहे हैं। स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक भोजन पानी की परवाह किये बिना गांवों में दौड़ रहे हैं। उनका देश प्रेम महान है। अंग्रेजों की मृत्यू बहुत निकट आ गई है। अब अपना देश शीघ्र ही स्वतंत्र होने वाला है।

स्वतंत्रता मिल जाने पर खेतों पर अपना स्वामित्य होगा। खेतों की पैदावार अपनी होगी। देश में विकास के लिये बड़े - बड़े कारखाने स्थापित होंगे। जिसमें अपने ही देश के कारिगर और मिस्त्री काम करेंगे। जिससे देश की गरीबी और भुखमरी दूर हो जायेगी।

भारत माता का सौभाग्य लौटेगा। घर - घर में आनन्दोत्सव होगा। देश की सभी जातियां भेद भाव भुलाकर एक होंगी। अंग्रेजी बिलार अब भारतीयों के हक की दूध मलाई नहीं खा पायेंगे। अपना देश और अपना शासन होगा।

संदर्भ :स्वतंत्रता संग्राम के समय लोक कंठ से गाया जाने वाला लोक गीत

संकलन एवं अनुवाद : गोमती प्रसाद विकल रीवा से प्राप्त

## 23. जालिया वाले बाग मा एक ठे सभा किहिन सब जाइ

गांधी जी आंदोलन छेड़िन, जन चेतना जगाइन

शंका मॉ सरकार जो पकरै, भा विरोध तव जाइ।

अमिरितसर के गलियन गलियन, धूम मची तकरार

सुलुग उठा पंजाब सगल,आंदोलन भूत सवार।

जालिया वाले बाग मा, एक ठे सभा किहिन सब जाइ,
बीस हजार लोग तब जुटिगे, भा विरोध बरिआइ,
शांतिपूर्ण ओहि चलत सभा मॉ,डायर पहुंचा जाय,
साथ सिपाही लिये सैकड़न, गोली दिहिस दगाय,
सभा निहत्थे लोगन कइ जब , गोली बरसन लागि।
केतनेन के परान केर पंछी उड़िगे,तवउदया नहीं जागि।
केतनेन घायल भुंइ लइलीन्हिन,केतनेन चले परइ,
लुका - छिपी जब कइना पाइनि,मउत कुकर कस पाइ।
फउजी सासन लागू होइगा,नीति दमन केर आइ।
क्रांति केर जब लपट बढ़ी,कोन - कोन गइ छाइ।
गांधी जी आंदोलन छांड़िन,जन चेतना जगाइ।
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :**

गांधी जी ने देश में जनचेतना और जागृत का आंदोलन छेड़ दिया। ब्रिटिश सरकार ने लोगों को शंका में पकड़ना आरंभ किया। तो उनका विरोध और बढ़ गया। अमृतसर की गली - गली में झगड़े उठ खड़े हो गए।

सारा पंजाब जल उठा। सब पर आंदोलन का भूत सवार हो गया। सभी लोगों ने पंजाब के जलियावाले बाग में सभा की। लगभग बीस हजार जनमानस एकत्र हो गया। विरोध का निश्चय हुआ। सभा शांतिपूर्वक चल रही थी। तभी जनरल डायर पहुंच गया। उसके साथ सैकड़ों फौजी सिपाही थे। सिपाहियों ने जनमानस के ऊपर गोली दाग दी। कितनों के प्राण पखेरु उड़ गये। तब भी उनको दया नहीं आयी। कितने घायल हो गये। कितने कुत्तों की मौत मारे गये। फौजी शासन लगा दिया गया। दमन की नीति आ गयी।

तब क्रांति की चिनगारी ,लपट बनकर। देश के कोने - कोने में छा गई। जन चेतना जागृत हो गई। गांधी जी ने आंदोलन छेड़ दिया।

संदर्भ :स्वतंत्रता संग्राम के समय लोक कंठ से गाया जाने वाला लोक गीत

संकलनः श्रीमति रुकमनी बाई ग्राम व्यौहारी जिला शहड़ोल से प्राप्त

## 24. सब जन बोला महात्मा गांधी केरि जय

सब जन बोला गांधी केरि जय
गांधी मोर महात्मा आय
दुखी गरीबन केर संग भाय
कम पहरै अर थोरै खाय
बड़े बिहन्ने ऊ उठि जाय
दुनिया गाय रही हे जय - जय
सब जन बोला गांधी केरि जय
करम धरम केर पाठ पढ़ावै
निकही निकही बात बतावै
जाति पाति केर भेद मिटावै
छुआ - छूत देखि के दुख पावै.
हरिजन गाय रहे हइ जय - जय.
सुनि ले गांधी केर पुकार
गांधी देइही पार उतार
आपन - आपन लई हथियार
धावा सुनि कै गाव गोहार
गाबा रघुपति राघव जय - जय
सब जन बोला गांधी केर जय.

0ध्ध्ध्0

गीतार्थ :

देशवासियो सब लोग गांधी जी की जय - जयकार करो। गांधी जी महात्मा हैं। दुखी और गरीब लोगों के सच्चे हितैषी हैं। वे अपने लिये सस्ते वस्त्र धारण करते हैं और सादा भोजन ग्रहण करते हैं। गांधी जी एक साधक की भांति प्रातःकाल उठ जाते हैं।उनका यश लोक में फैला हुआ है। दुनिया गांधी जी का जय - जयकार कर रही है।

गांधी जी देशवासियों को धर्म - कर्म की सच्ची शिक्षा देते हैं। जीवनोपयोगी बातें बतलाते हैं। गांधी जी की दृष्टि में छूत - अछूत कोई नहीं है। जाति - पाति का भेद भाव गांधी जी नहीं मानते। वे उदारमना हैं। हरिजन वर्ग गांधी जी की जय - जयकार कर रहा है।

देशवासियो गांधी जी की पुकार सुनो। उनका अनुगमन करो। गांधी जी देश को स्वतंत्र करा देंगे। सब लोग अपने अस्त्र - शस्त्र लेकर स्वतंत्रता संग्राम में गांधी जी के साथ चलो। भारत माता दुखी है। आर्त स्वर में पुकार रही है। अपनी माटी की पुकार सुनकर आजादी की लड़ाई के लिये चलो। " रघुपति राघव " गाते - गाते स्वतंत्रता संग्राम में कूंद पड़ो।

संदर्भ :स्वतंत्रता संग्राम के समय लोक कंठ से गाया जाने वाला लोक गीत

संकलन एवं अनुवाद : गोमती प्रसाद विकल रीवा से प्राप्त

## 25. पहिलै तो फिरंगी आंए बनिकै रहै व्यापारी

पहिलै तो फिरंगी आंए बनिकै रहै व्यापारी,
सुना मोरे भाई
हीरा लूटिन, मोती लूटिन,सोना , चांदी सब कुछ लूटिन
गांधी केर होइगै लड़ाई,सुना मोरे भाई।
नील केर खेती करवाइन
पका पकाबा बल भर खाइन
जनता कै मति छितराइन
सुना मोरे भाई -
गांधी केर होइगै लड़ाई, सुना मोरे भाई -
फूट डारि के राज चलाइन
पाक साफ बनि नाउ कमाइन
किन्हीन बड़ी चतुराई
सुना मोरे भाई-
गांधी केर होइगै लड़ाई, सुना मोरे भाई।

0ध्ध्ध्व0

**गीतार्थ :**

अंग्रेज पहले तो व्यापारी बनकर भारत में आये। सुनो मेरे भाई!

फिर हीरा, मोती, सोना, चांदी सब कुछ लूट लिया।इस पर गांधी जी से उनका झगड़ा हो गया। वे अन्याय कैसे सहते। सुनो मेरे भाई!

अंग्रेजों ने नील की खेती करवाई, पका पकाया खाया,भारत की जनता को दगा दिया। सुनो मेरे भाई! तभी तो गांधी जी से झगड़ा हो गया।

फूट ड़ालो और राज्य करो ? का सिद्‍वांत अपनाया। लेकिन दुनिया को दिखलाने के लिये वे न्याय प्रिय बने रहे।उन्होंने बड़ी चतुराई से काम लिया। इसलिये गांधी जी से उनका झगड़ा हो गया। सुनो मेरे भाई!

संदर्भ :स्वतंत्रता संग्राम के समय लोक कंठ से गाया जाने वाला लोक गीत

संकलनकर्ता : श्रीमति करुणा शुक्ला

## 26.अगड़ बम्म बगड़ बम्म महादेव

अगड़ बम्म बगड़ बम्म महादेव
तरी बहै पानी ऊपर पान बरेज
गांधी बाबा आइ रहे, धाई रहे गाई रहे
जय हिन्द - जय हिन्द
काहे काल हइ खरन तइ भाग अंगरेज
सोन चिरैया,मोरि माटी पियार
भाग - भाग अंगरेज निकरु छोड़ मोर देश.
मोर बाग बगिया का फूल न उजार
भाग अंगरेज भाग दइ एउ मार
नेता सुभाष देइही खोंपा उजार
अगड़ बम्म बगड़ बम्म महादेव
तरी बहै पानी ऊपर पान बरेज.

**गीतार्थ -**

अगड़ बम्म बगड़ बम्म महादेव, की टेक पर बघेली वीर बालक कहते हैं गांधी जी दौड़ते हुये चले आ रहे हैं।वे जय - हिन्द जैसा गीत गा रहे हैं।बच्चे कहते हैं अंग्रेजो तुम क्यों अपने को काल के गाल में ड़ाल रहे हो। हमारे देश से भाग जाओ। हमारा देश अतीत में सोने की चिड़िया रहा हैं हमारी मातृ भूमि हमें प्यारी है। अंग्रेजो हमारा देश छोड़कर भाग जाओ। हमारे देश के बाग - बगीचों के फूल मत उजाड़ो। अभागे अंग्रेजो भाग जाओ। नेताजी सुभाष चंद्र बोस तुम्हारा सर्वनाश कर देंगे।

संकलन एवं अनुवाद : गोमती प्रसाद विकल रीवा से प्राप्त

## 27. बापू अपने भारत को तुम पहचान नहीं पाओगे

बापू अपने भारत को तुम पहचान नहीं पाओगे
हरित क्रांति की हरियाली है,
नदियां नहर बनीं
लेकिन तुलसी के गमलों में उग आई नागफनी।।
अन्धकार का पहरा है तुम दिन मान नहीं पाओगे
बापू अपने भारत को तुम पहचान नहीं पाओगे
नहीं मिलेगा चरखा - तकली
खद्दर है बदनाम
रातनीति के मकड़जाल में उलझ गया हे राम।।
मंदिर , मस्जिद के अंदर तुम भगवान नहीं पाओगे।
बापू अपने भारत को तुम पहचान नहीं पाओगे।
झोपड़ियों के दिये दब गये
महलों की बुनियाद में।
संसद में हो रहा कीर्तन,
ड़ंकल जी की याद में।।
गिरह कटौं का लोक तंत्र है,तुम सम्मान नहीं पाओगे।
बापू अपने भारत को तुम पहचान नहीं पाओगे
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :**

बापू जी यह दुनिया बहुत बदल गई है। आप अपने चिर परिचित भारत को पहचान नहीं पाओगे।नदियों से नहरें निकाली गई हैं।कृषि के क्षेत्र में हरित क्रांति आ गई है। किन्तु गमले की पवित्र तुलसी को उखाड़कर नागफनी का कंटीला पौधा रोप दिया है। सर्वत्र अनीती का अंधकार पसरा है। बापू न्याय का दिनमान अपने देश में नहीं पाओगे।

चरखा - तकली का यज्ञ बंद हो गया है। खादी की पवित्रता कलंकित हो गई है। संम्प्रदायवाद का अजगर मर्यादा पुरुषोत्तम राम को राजनीति के जंगल में घसीट ले गया। बापू ! अब मंदिर - मस्जिद में ईश्वर - खुदा की उपस्थिति का बोध तुम्हें नहीं होगा।

पुंजीवादी सोच ने निर्धनों को कुचल दिया है। झोपड़ियों को उजाड़कर उच्च अट्टालिकाओं का निर्माण हुआ है। भारतीय संसद में ड़ंकल की अर्थनीति का गुणगान हो रहा है। तस्करों, दलालों और घोटाला वालों का अपना लोकतंत्र देश में जड़ जमा लिया हैं बापू ! आपको इस प्रदूषित परिवेश में सम्मान नहीं मिलेगा।

संकलन एवं अनुवाद : गोमती प्रसाद विकल रीवा से प्राप्त

## बघेल खंड़ में प्रचलित सामाजिक चेतना के लोक गीत -

नशीली वस्तुओं का सेवन एक बहुत बुरी सामाजिक बुराई है। जिसका आज व्यापक प्रचार है। इस बुराई से आज समाज त्रस्त है पीड़ित है और परेशान है। समाज के सभी वर्ग में किसी न किसी रुप में मादक वस्तुओं का प्रचलन है। धनवान, र्निधन, पंड़ीत, मूर्ख, शिक्षित, अशिक्षित, बाल - वृद्व सभी इसके शिकार हें। यघपि समाज में इसको घृणित और हेय दृष्टि से देखा जाता है और इसकी निंदा भी की जाती है। परंतु इसके साम्राज्य की जड़ों को उखाड़ फेंकना सरल नहीं है। पूज्य महात्मा गांधी जी के आदेशों के अनुसार मादक वस्तुओं के निषेध का अपनी राष्ट्रीय सरकार की ओर से प्रयत्न भी किया गया था। परंतु उसमें विशेष सफलता नहीं मिली है। केवल कानून से ही यह बुराई रुक जाय यह कठिन बात है,इसके लिये तो जब राष्ट्रीय चरीत्र बहुत ऊंचे और सांस्कृतिक ढ़ंग पर विकसित होगा और जब समाज में आंतरिक चेतना जागृत होगी। तब यह बुराई अपने आप र्निमूल हो जायेगी और यदि र्निमूल न भी हो सकी तो उसका विकास तो निश्चित रुप से रुक जायेगा। हमारे लोक गीतकार इस बुराई के प्रति जागरुक हैं। लोक जीवन में यह कितनी बहुरुपणी होकर व्याप्त है। इन लोक गीतों में इसकी झांकी देखिये -

### 28. ये नशाबाजी मा गा रे

ये नशाबाजी मा गा रे
तू हो जावे खराब - ये नशाबाजी मा गा रे
पान सुपारी मुंह भर खावे,घरी - घरी उठ थूंके
गांजा - भांग खाये से बाबू ,घरी - घरी मुंह सूखे
ये नशाबाजी मा गा रे
तू हो जावे खराब - ये नशाबाजी मा गा रे
गांजा पिये करेजा जरि गा,मदक पिये तन मट्टी
दारु पिये का लेखा नांहीं,ऊपर व्है गै टट्टी
ये नशाबाजी मा गा रे
तू हो जावे खराब - ये नशाबाजी मा गा रे
बिकी अटारी महल खजाना,धन दौलत सब माया
नशा के लाने सब बिकि जइहै,गिरै सुन्दर काया
ये नशाबाजी मा गा रे

तू हो जावे खराब - ये नशाबाजी मा गा रे

0ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थ :

नशाबाजी में तुम खराब हो जाओगे। पान सुपारी खाकर तू दौड़ - दौड़ कर थूकेगा। गांजा - भांग खाने से हर घड़ी मुंह सूखता रहेगा। तू नशाबाजी में खराब हो जायेगा। गांजा पीने से शरीर मिट्टी हो जायेगा और शराब पीने से ऊपर टट्टी हो जायेगी। तू अपने होश - हवास खो बैठेगा। नशाबाजी में तू बरबाद हो जायेगा। नशा के लिये तेरा मकान, धन - दौलत सब बिक जायेगा और तेरा सुन्दर शरीर बिगड़ जायेगा। नशाबाजी में तू बरबाद हो जायेगा।

संकलनः धन्ना सिंह बघेल अनुवादः डॉ.विजय चौरसिया

## 29. अमवा लगाये के बड़ा फल जउ

अमवा लगाये क बड़ा फल, जउ अम्वा बउरइं हो।
आवा अमवा मं लगि गई टिकोरिया, सुगन फल गदरइं हो।
सगरा खनाये क बड़ा फल,जउ जल ओगरइ हो।
आवा गउवा पियइं जूड़ पानी ,त पुरइनि हलकई हो।
पुतवा पजाने का बड़ा सुख,जउ घर सम्पत्ति हो।
आवा सुसुर बइठे चउपारी, त पटना लुटामैं हो।

0000ध्ध्ध्0

गीतार्थ :

आम का वृक्ष लगाने का बहुत पुण्य है। आम में बौर आते हैं और छोटे - छोटे कच्चे आमों को सुआ कुतरते हैं। तालाब खोदना बहुत पुण्य का काम है। यदि उसमें पानी आ जाये, जिसमें कमल खिलें और गायें पानी पियें। पुत्र पैदा करना सुखदायी होता है, यदि घर में सम्पत्ति हो। बहू के ससुर नाती पैदा होने पर पुरस्कृत करने लगे।

## 30.पांच पेड़ आमा लगाये केर बड़ा फल

पांच पेड़ आमा लगाये केर बड़ा फल
जो आमा कहराय
जो आमा कहराय हो
अब सागर खनाये केर बड़ा फल
जो जल औगारै
जो जल ओगारै हो
आमा लगी है टिकोरिया
सुआ गल गोदरै
सआ गल गोदरै हो
अब गउआ जुरैं पानिया पीवैं
ता पुरइन हालैं
ता पुरइन हालैं हो
पांच पेड़ आमा लगाए केर बड़ा फल
जो आमा कहराय
जो आमा कहराय हो
अब सागर खनाये केर बड़ा फल
जो जल औगारै
जो जल ओगारै हो
पुतवा पूजन केर बड़ा फल
जो घर जनमै जो घर जनमे हो
अब पुतवा तो घर के सम्पतियाँ
ता घर के सम्पतियाँ
ता घर के सम्पतियाँ हो
0ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :**

आम फल के पेड़ लगाने से धर्म की प्राप्ती होती है। यदि आम के पांच पेड़ कोई लगाता है और वे पेड़ फूलने - फलने लगते हैं तो लगाने वाले को बहुत पुण्य की प्राप्ति होती है। इसी प्रकार तालाब, झील, कुआँ आदि खुदवाने पर भी पुण्य की प्राप्ति होती है।

आम के वृक्षों में जब छोटी - छोटी टिकोरी (छोटे फल) लग जाती है तभी से तोते आदि

पक्षी उसे खाने लगते हैं। खुदाये गये जलाशय में जब जल ओगरने ( रिसने) लगता है, तो गायें एकत्र होकर पानी पीने जाती है। उनके पानी पीने से तालाब में लगे कमल के पत्ते हिलने लगते हैं।

इसी प्रकार घर में जन्म लिये हुये पुत्र का पूजन ( बरहों संस्कार ) करने से भी पुण्य की प्राप्ति होती हैं वह घर की संपत्ति तो है ही अपितु पुत्र जन्म से मॉ की कोख पवित्र हो जाती है। आशय यह कि परोपकार करने से पुण्य एवं फल (अर्थ, धर्म, काम , मोक्ष) की प्राप्ति होती है।

यह एक ऐसा लोकगीत है जिसमें वृक्षारोपण तथा जल संवर्धन पर विशेष रुप से प्रकाश ड़ाला गया है। तात्पर्य यह है कि लोक जीवन में भी पर्यावरण का विशेष महत्व रहा है और ग्ारमीणों ने भी इसकी अहमियत को समझा है। इस लोकगीत का अनुवाद तथा संकलन बाबूलाल दाहिया के द्वारा किया गया है।

संकलन एवं अनुवाद : बाबूलाल दाहिया

संदर्भ ग्रंथः जनपदीय संस्कार गीत,म.प्र.आदिवासी लोक कला अकादमी

## 31.करम गति कोई नहिं बांच सुनाबयं

करम गति कोई नहिं बांच सुनाबयं
करम गति कोई नहिं बांच सुनाबयं
तैंरे गंगा काहे धीमे बहत है
जमुना काहे गहराई
करम गति कोई नहिं बांच सुनाबयं
पोथिया हो तो सब बांच सुनाबयं
करम के लेख न सुनाबयं।

0ध्ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थ :

कर्म की गति कोई नहीं जानता। उसे कोई पढ़कर नहीं सुना सकता। हे गंगा जी! तुम क्यों धीमी गति से बह रही हो,इसी प्रकार जमुना जी क्यों गहराती हुयी बह रही हैं? यह तो अपने - अपने कमरें का फल है। पुस्तक हो तो सभी लोग पढ़कर सुना सकते हैं। परन्तु कर्म की गति को कोई भी पढ़कर नहीं सुना सकता अर्थात कर्म की गति कोई नहीं जानता।

संकलन एवं अनुवाद : बाबूलाल दाहिया

संदर्भ ग्रंथः जनपदीय संस्कार गीत,म.प्र.आदिवासी लोक कला अकादमी

# ekyok vapy ds yksdxhrksa esa lkekftd jktuSfrd psruk

## मालवा जनपद

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में मालवा ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इत चंबल उत बेतवा मालवा सीम सुजान, दक्खिन दिसि नरबदा, यह पूरी पहचान वाले शस्य श्यामला मालवा प्रदेश का अधिकांश भाग छोटी - बड़ी देशी रियासतों के अधीन रहा है। अंग्रेजी हुकूमत से सीधे संर्पक और संघर्ष के अवसर विरल रहे हैं। गांधी जी ने भी देशी रियासतों में प्रजा परिषदों के माध्यम से जनमन तक स्वातन्त्रय - चेतना का संचार किया था।

मालवा में जहां - जहां अंग्रेजों की छावनियां थी, वहां - वहां छुटपुट घटनायें घटती रहती थी और जनमानस आंदोलित होता रहता था। इसके साथ ही अंग्रेजी हुकूमत और अंग्रेज सामान्यजन के लिये एक अजूबे की तरह रहे और यही भावना लोकोभिव्यक्तियों में दिखाई् देती हैं यह प्रवृत्ति बालिकाओं और महिलाओं द्‌वारा गाये जाने वाले पारम्परिक गीतों में विशेष रुप से परिलक्षित होती है।

मालवी बोली के कुछ लोक कलाकारों की रचनाओं में भी अंग्रेजी राज के खिलाफ आम आदमी की संघर्ष चेतना के स्वर सुनाई देते हैं।ब्रिटिश शासन से सीधा संघर्ष न होने पर भी

मालवा का संवेदनशील लोक जीवन राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन की मुख्यधारा से जुड़ रहा है। यही कारण है की मालवा लोक गीतों में सुराजी चेतना की छाप कहीं - कहीं गहरी है, तो कहीं सुराज रंग के कुछ छींटे दिखाई देते हैं।

भारत को अंग्रेजी राज्य से मुक्ति दिलाने में लाखों - लाख देशवासियों ने अपने प्राण न्यौछावर किये हैं।ऐसे ही देश प्रेमी क्रांतिकारियों में टण्ट्या भील भी एक अमर नायक है।जननायक टण्ट्या भील 1857 के स्वाधीनता महासमर के समय निमाड़ एवं मालवा के विस्तृत इलाके में क्रांतिकारी गतिविधियों में सक्रिय रहे और अपनी शहादत के दिन तक बल्कि उसके बाद भी काफी समय तक अंग्रेज शासकों को चौन की सांस नहीं लेने दीं । जिनके बलिदान ने हम मध्य प्रदेश - वासियों का मस्तक गौरव से ऊंचा रखा है। टण्ट्या मामा को आज भी भील समाज में एक सिद्व पुरुष के रुप में पूजा जाता है।उनके जीवन पर आधारित लोकगीत व गाथाओं को मालवा एवं निमाड़ क्षेत्र में रात - रात भर गा - गा कर जनरंजन करते हैं।

## मालवा अंचल में प्रचलित राजनैतिक एवं सामाजिक चेतना के लोक गीत -

इस शीर्षक के अंर्न्तगत मैंने 23 लोकगीतों को रखा है। लोक गीतों की गहरी पड़ताल करने और उनके अंदर सूक्ष्म चेतना तत्वों का विश्लेषण करने के लिये कुछ और उपशीर्षकों में उन्हें विभाजित किया है।

### 1. स्वाधीनता पूर्व की राजनैतिक - सामाजिक चेतना से युक्त लोकगीत -

#### 1. वात टण्ट्या मामा की

सुण लो सुण लो बात पुरानी,
सुण लो लोग लुगाईं।
टण्ट्या मामा खुल्लो खेले,
फोंजा पकड़ नी पाई।।
दुश्मण को ऊ पक्को दुश्मण,
गरीबां को सगो भाई।
छोरा होन को मामो लागे,
बेना को सग्गो भाई।।
तान्यो - मान्यो ,बीजन्यो,
बीको, दोल्यो छे खासऽ।
ले तलवार भिड़े भीड़ पऽ,
कोई न फटके पासऽ।।
तीर - कटार बंदूक चलावे,
कुरड़ाली लट्ठ चलावेऽज।
पटला खऽ चुण - चुण कै मार,
थोड़ी दया न लावेऽज।।

मन पड़े असो भेस बणा ले,
कोई न सके पिछाणऽ।
कितना तो सिपाई काट्या,
कितना काट्या पटेलऽ।।
कितना तो रजवाड़ा तोड़्या,
कितना तोड़ जेल।
लूट मचा देऊं चौंड़े धाड़े,
टण्ट्या म्हारो नामऽ।।
जो बी सामे पड़े उड़ा देऽं,
कर देऊं काम तमामऽ।
भरी दुपेरी लूट मारे,
सके न कोई पिछाणऽ।।
एक सरीखा चार टण्ट्या,
गोरा करे अचम्बाऽज।
कान काट ले,नाक काट ले,
कर दे पूरा नंगाऽज।।
पांच तो पाण्डव जुड़ने झपटे,
कोई न आवे सामाऽज।
बीजन्या तो भीम सरीखो,
टण्ट्या अर्जुन जानोऽज।।
एक बीजली गजब करे,
दन में हांके छे तांगोऽज।
राते ले अपणी टोली के,
लूटे कर दे नीगोऽज।।
कद आवे कद लूट भाग ले,
कोई न पावे पारऽ।
टण्ट्या की गत टण्ट्यो जाणे,
नी जाणे सरकारऽ।।
आखिर दम तक डट के लड़्यो,
कोई पकड़ नी पायोऽज।
धोको करयो गण्पत दोगले,
न्हार ने पकड़ायोऽज।।
भाई चारा को नास करी द्यो,
रजपूती पऽ बट्टो लगाओऽज।
धिकरे गणपत जयचंदयो,
आच्छो पाप कमायोऽज।।
टण्ट्या ने पण हिमत राखी,
कर्या वार - पऽ वारऽ।

ठण्ड़ी पड़ी बंदूख देख,
झट खींच ली तलवारऽ।।
खीर खड़ी मऽ मिलो हुओ थो,
जोरदार कोई नस्सोऽज।
चककर खा अनेऽ पड़ो जमीं पऽ
हो गयो परबस्योऽस।।
मुस्कां बांध नऽ धर्यो पींजरे,
खींच नाख दिया जेलऽ।
फांसी पर लटकायो जालम,
नी तो तोड़तो जेलऽ।।
मामो मर ग्यो, मामो मर ग्यो,
आई खबरां मोरीऽज।
हाय रे मामो, हाय रे मामो,
रोवे छोरा अनऽ छोरीऽज।।
मॉ जायो सो वीरो मारग्यो,
थारो जावे नासऽ।
जसुदा चानण रड़ऽ जमीं पऽ,
थी टण्ट्या की खासऽ।।
चानण तू क्यों रोवे बावली,
टण्ट्या थारे पासऽ।
अतरो तो बतला ए पोमली,
बगी छे थारो वासऽ।।
खुद तो मर ग्यो टण्ट्या मामो,
कर गयो नरां जतीमऽ।
गरीबां को रखवालो टण्ट्या,
हो गयोऽज गुपत मुकीमऽ।।
बैर तो पूरो पक्को निकालयो,
शिवा पटेल को वंश मिटायोऽज।
सऊकारां - जमदारां ने ,रे टण्ट्या,
अच्छो सबक सिखायोऽज।।
घर में लग गयो तालो,
मोवनया को करयो नास।
पड़यो वंश पऽ काल सरीखो
,बिछी लास पऽ लासऽ।।
अग्रेजां से डटनऽ लड़यो,
कर द्यो चेन - बेचेनऽ।
कद्दया तो ठाकर बन पोंचे,
कट्या सुमंत्यो सेनऽ।।

एक सपनो रई गयोऽज अधूरो,
अपणो होवे राजऽ।
आपणी होवे जमीन - जोरु,
अपणा काम अनऽ काजऽ।।
अपणो खावां,अपणो गावां,
अपणी करां कमाईऽज।
अपणो सोवां अपणो जागां,
अपणी करां निराईऽज।।
मरयो कोनी टण्ट्या मामो,
अमर कर ग्यो नामऽ।
जग लूटयां के लूट - मारकेऽ,
कर ग्यो नींद हरामऽ।।
कर ग्यो मिसल मशूर,
तर्मी पऽ कर ग्यो ऊजल नामऽ।
कै तो राखे टण्ट्यो मामो,
के राखे गा रामऽ।।
सुणवा में असो भी आयो,
पकड़ायो कोईनी टण्ट्योऽज।
खुद जगदम्बा परगट व्हीगी,
बाजयो शंख अनंऽ घंटोऽज।।
गणपत्यो माथे काट्यो,
करयो नीच खऽ ठण्ड़ोऽज।
टण्ट्या खऽ नाख्यो न्हार के ऊपर
पड़यो करम पर ड़ंडोऽज।।
ले चाल्यो न्हार टण्ट्या खऽ,
अम्बा खड़ग चलावेऽज।
जो भी सामे पड़े खड़ग के,
अपणो माथ कटावेऽज।।
बीच पहाणा नदी किनारे,
टण्ट्यो गुजर गुजारेऽज।
अम्बा माता की सेवा सेवे,
शीबा जी की आरती उतारेऽज।।
टण्ट्या सरखा चार मील था,
जाणे कुण पकड़ायोऽज।
कण पै चालयो मुगम मुगदमो,
कुण फांसी चढ़वायेऽज।।
भैरव बण गयो टण्ट्यो मामो,
भील तेल चढ़ावेऽज।

पड़े मुसीबत हेलो करदो,दौड़ो दौड़ो आवेऽज।।

0ध्ध्ध्0

**लोकगीत संदर्भः**

यह रचना ' वात टण्ट्या मामा की 'ठाकुर दलेल सिंह जी यादव ग्राम - संधारा तहसील - भानपुरा म.प्र. को आज से लगभग पैंसठ वर्ष पूर्व सुनने को मिली थी। जो उनके संग्रह में सुरक्षित है। टण्ट्या के विषय में इनके पास अनेकों संस्मरण हैं।

**गीतार्थः**

## बात टण्ट्या मामा की

सुन लो सुन लो बहुत पुरानी बात है।सुन लो लोग लुगाई! टण्ट्या मामा बेधड़क घूमते थे। उसे कभी भी फौज पकड़ नहीं पाई। वह दुश्मनों का पक्का दुश्मन था और गरीबों का सगा भाई था। वह लड़कों का मामा और लड़कियों का सगा भाई था। तान्यो, मान्यो, बीजन्यो,बीको और दोल्यो उसके परम मित्र थे। वे तलवार लेकर भीड़ में घुस जाते थे। उस समय उनके पास कोई नहीं आ पाता था। वे तीर, कटार, बंदूक, कुल्हाड़ी और लट्ठ चलाने में निपुण थे। वह पटेलों को चुन - चुनकर मारते थे। वे उन पर थोड़ी भी दया नहीं दिखाते थे। वह जब चाहे अपना रुप बदल लेता था। उसे कोई नहीं पहचान पाता था। उसने न जाने कितने सिपाहियों और पटेलों का कत्ल किया। उसने न जाने कितने रजवाड़े लूटे और जेलें तोड़ी। वह चाहे जहां लूट - पाट कर देता था और कहता था मेरा नाम टण्ट्या है। मेरे सामने जो भी आयेगा उसे मैं उड़ा दूंगा। वह भरी दोपहरी में लूटपाट करके चला जाता था। उसे कोई भी नहीं पहचान पाता था। कभी - कभी तो एक ही रुप में चार - चार टण्ट्या दिखाई देने लगते। अंग्रेज आश्चर्यचकित हो जाते। वह दुश्मनों की नाक काट लेता था। उनको नंगा कर देता था। उसके पांच मित्र थे । जो कभी भी पांड़व के समान भिड़ जाते थे। उनके सामने आने की हिम्मत किसी में भी नहीं थी। बीजन्या तो भीम के समान शूरवीर था। तो टण्ट्या अर्जुन के समान बलवान था। वह कब आकर लूट - पाट करके चला जाता, किसी को भी पता नहीं चलता। टण्ट्या का हाल टण्ट्या ही जाने । सरकार तक उसे नहीं पहचान सकी। वह आखिरी दम तक ड़टकर लड़ा। उसे कोई नहीं पकड़ पाया।

गणपत ने उसके साथ धोखा किया। उसने टण्ट्या जैसे शेर को पकड़वा दिया। उसने भाई - चारा के रिश्ते को बदनाम कर दिया। उसने राजपूतों के नाम पर कलंक लगा दिया। धिक्कार है गणपत तुझे तूने जयचंद बनकर अच्छा पाप कमाया। इसके बाद भी टण्ट्या ने हार नहीं मानी। वह वार पर वार किये जा रहा था। गणपत ने उसकी बंदूक में पानी ड़ाल दिया था। उसने बंदूक को ठंड़ा देखा तो उसने तलवार निकाल ली। गणपत ने उसे खीर में नशा मिलाकर दे दिया था। खीर खाते ही उसे चक्कर आने लगे। वह बेबस हो गया। अंग्रेज पुलिस ने उसके हाथ पैर बांध दिये और उसे जेल में ड़ाल दिया। उन जालिमों ने उसे फांसी पर चढ़ा दिया। इस बार उसने जेल नहीं तोड़ा। मामा मर गया, मामा मर गया, हाय रे मामा , हाय रे मामा   कहकर लड़का - लड़कियां विलाप करने लगीं। मॉ का वीर लाल मर गया। मारने वाले तुम्हारा नाश हो जावे। जसोदा टण्ट्या की खास थी। टण्ट्या ने जसोदा से कहा - जसोदा तुम क्यों रो रही हो। टण्ट्या तो तुम्हारे पास है।

टण्ट्या मामा तो मर गया । वह लोगों को अनाथ कर गया। गरीबों का रखवाला टण्ट्या

कहीं खो गया। उसने अपने बैरी से बदला लिया । शिवा पटेल के वंश को समाप्त कर दिया। साहूकारों और जमींदारों को टण्ट्या ने अच्छा सबक सिखलाया। उसने मोवनया का नाश कर दिया उसके घर में ताले लग गये। उसके खानदान पर काल आ गया। उसके घर पर लाश पर लाश बिछी थी। टण्ट्या ने अंग्रेजों से ड़टकर मुकाबला किया। उसने उन्हें बैचेन कर दिया। उसका एक सपना अधूरा रह गया। उसकी इच्छा थी की उसका राज्य हो । सभी जमीन अपनी हो। यहां की प्रजा पर अपना शासन हो। अपने गांव हों अपनी मर्जी से खाना हो, सोना हो , जागना हो। मरने को तो टण्ट्या मामा मर गया, पर अपना नाम अमर कर गया। उसने पूरे क्षेत्र में लूटपाट करके सबकी नींद हराम कर दी थी। उसने पूरे क्षेत्र में एक कहावत मशहूर कर दी। भीलों की रक्षा या तो टण्ट्या मामा करते हैं या भगवान श्री राम।

सुनने में ऐसा भी आया है कि टण्ट्या मामा की जगह अंग्रेज पुलिस ,किसी दूसरे को टण्ट्या मामा समझ कर ले गई। उस समय मॉ दुर्गा स्वयं प्रगट हो गयी थीं। वहां पर घंटे और शंख अपने आप बजने लगे थे। उसने गणपत का सिर उसके धड़ से अलग कर दिया। टण्ट्या को दुर्गा जी का सिंह उठाकर ले गया। मॉ दुर्गा तलवार चलाते जा रही थी। जो भी उनके सामने आता उसका सिर धड़ से कटकर अलग हो जाता।

टण्ट्या ने जंगलों के बीच सुगता नदी के किनारे अपना बाकी जीवन व्यतीत किया। वह प्रतिदिन मॉ दुर्गा की सेवा करता और शीबा बाबा की आरती उतारता। टण्ट्या के समान चार लोग थे। उनमें से न जाने कौन पकड़ाया गया, न जाने किस पर कचहरी मुकदमा चला और किसे फांसी पर चढ़ाया गया। टण्ट्या मामा भैंरव बन गये हैं। भील लोग उनको तेल चढ़ाते हैं। किसी पर भी मुसीबत होती है। तो टण्ट्या मामा दौड़े - दौड़े चले आते हैं।

**संग्रहकर्ता -** ठाकुर दलेल सिंह यादव ग्राम - संधारा, तहसील - भानपुरा.

**संदर्भ ग्रंथ** - टण्ट्या भील बड़ो लरैया. लेखक - डॉ. पूरन सहगल. संपादक - डॉ. श्री राम तिवारी. प्रकाशक - स्वराज संस्थान संचालनालय भोपाल म. प्र.

मालवा में स्वातन्त्रय भावना गांधी जी की खादी ग्रामोघोग और अन्य रचनात्मक प्रवृतियों के माध्यम से बलवती हुई। सन् 1942 में जब बापू ने अंग्रेजी हुकूमत को "भारत छोड़ो" का ऐलान किया था।तब मालवा के लोक कंठों में यह चरखा गीत एक उद्दामवेगी झरने की तरह फूट पड़ा थाः

## 2.चाल चा म्हारा चक्र सुदरसन

चाल चा म्हारा चक्र सुदरसन
चाल्या सरसी -रे , कि चरखा चाल रे ।।टेक।।
अणी देश में बापू जी ने ऐस अलख जगाया रे
तार तार में गांधी जी संदेस सुराजी लाया रे
कि चरखा चाल रे।।टेक।।
एक सरीको चल म्हारा चरखा,तूहो सबका आगे रे
अणी मालवा का वीर हठीला सूता जागे रे
कि चरखा चाल रे।।टेक।।
थने चलवो मार भगावे अबे फिरंगी दूरा रे
आज भाबरा को भेड्डो खाय मुड्डा रे
कि चरखा चाल रे।।टेक।।

**गीतार्थ :**

मेरे प्रिय सुर्दशन चक्र निरंतर चलता रह। सरर , सरर करते हुये ऐ मेरे चरखे तू चलता रह। अपने देश में बापू ने स्वतन्त्रय चेतना का जागृति मंत्र फूंक दिया है। चरखे के तार - तार से वे स्वराज - संदेश सुना रहे हैं। अपनी गति को एक जैसी रखकर चलते हुये मेरे चरखे तू सबसे आगे है।इस मालवा के हठीले वीर सुप्तावस्था से जाग उठे हैं।तुझे लाकर वे अंग्रेजों को खदेड़ रहे हैं। भावरा के स्वातन्त्रय वीर (चंद्रशेखर आजाद) ब्रिटिश साम्राज्य से टक्कर लेने के लिये देखो कैसे मचल रहे हैं।सुर्दशन चक्र्र की तरह मेरे प्रिय चरखा तू चलता रह। आजादी की लहर ने मालवा के बालहृदयों को भी र्स्पश किया था। जिनके प्रमाण छल्ला- भोला के गीतों में बिखरे पड़े हैं। बालकों और किशोरों द्वारा अपने मनोविनोद के लिये पारिवारिक संबंधों और निकट परिवेश की विसंगतियों को तुकबन्दियों की विषय वस्तु बनाया जाता है।

स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में विदेशी शासक के रुप में अंग्रेजों की हंसी ठिठोली करके उन्होंने अपनी भावनाओं को बेलाग ढ़ंग से अभिव्यक्त किया है।लोक जीवन का आशुकवित्व कुछ पुरानी चीजों को छोड़ता चलता है, तो कुछ नई चीजों को जोड़ता भी चलता है इसलिये लोक गीत कभी बासी नहीं होते, वरन् चिर नवीन बने रहते हैं।

सरल प्रवाहमान छन्द विधान और गायन शैली के लिये प्रसिद्व मालवी छल्ला- भोला के ये छंद प्रस्तुत हैंः

## 3. छल्ला भोलक की भोलकी रे

छल्ला भोला,छल्ला रे।।टेक।।
छल्ला भोलक की भोलकी रे, भेंस को पालो सींग,
जिनमें बैठयो रामो दरजी, तो टोपी सीवे तीन।।टेक।।

छल्ला भोलका की भोलकी रे, भेंस को पोलो सींग।
सींग में भरी दारु , तो फोड़े भगतसींग।।टेक।।
कुवा माय को कबूतरो रे, चुगो पानी नी खाय।
सिपरा माता को पानी पीवे तो न्हार सामै जाय।।टेक।।
छल्लो डाड करवा बेठी रे, गोड़ा फूटे।
अंगरेजों के राज में तो ,तोपा छूटे।।टेक।।
छल्लो डाड करवा जाय रे, गोलियां फूटी।
तो मालवा की छावनी ,ठेसन लूटी।।टेक।।
कुवा माय की करेली रे, तीखा तीखा पान।
फिरंगी धरे छोरो हो, तो सूपड़ा सा कान।।टेक।।
ऊपरी पे ऊपरी रे, अंगरेज पकावे दाल।
अंगरेज की दाड़ी जल गयी तो मेम तोड़े टांग।।टेक।।

सुराज का संदेश एक व्यक्ति से दूरे व्यक्ति तक फिर दूसरे से तीसरे और इस तरह जन - जन तक लोक गीतों के माध्यम से पहुंचता हैं जनसंचार हेतु मानवी माध्यम और पारम्परिक लोक कला रुपों के प्रभावी उपयोग की बानगी सन् 1940 के आसपास मालवा में गाये जाने वाले कई लोक गीतों में देखने मिलती है।सामायिक सन्दभरें का र्स्पश पाकर ये गीत नई उर्जा, नया तेवर पाते हें।

मालवा के पारंपारिक कान ग्वालिया गीतों में भी घुमन्तु गायक कलाकार नये - पुराने छन्दों को गाकर अपनी उदर सेवा भी करते थे और देश सेवा भी, उर्दू गजल के हर शेर की तरह कान ग्वालिया गीतों के हर छंद का अपना स्वतंत्र अस्तित्त्व भी है और समग्र लड़ी में गुंथी एक कड़ी का रुप भी।

## 4. आलकी के पालकी, जै कन्हैया लाल की

धीरे आन दे रे जरा धीरे आन दे।।टेक।।
आलकी के पालकी, जै कन्हैया लाल की
सिरी नंदलाल की,गोवरर्धन गोपाल की।।टेक।।
दे दे म्हारी रम्बाबाई,दे दे री कामेरी बाई
गाय की गुवाली दे दे,दे दे झालर गाय की।।टेक।।
छोरी छोरा रोटी मांगें, परन्यो माँगे लपटो
घरवाली ने झापड़ मारी,मुंड़ो हुइग्यो चपटो।।टेक।।
चूला पे नणदोई बेठा, लंबी लंबी मूंछ
पतली रांदी राबड़ी तो खइग्या हांड़ी पूंछ।।टेक।।
म्हारी तो छापूड़ी हे दीखवा में स्याणी
फिरंगी की मेम साब,एक आंख से काणी।।टेक।।
काची काची लीम्बोली ने पाका पाका पान
भाबरा का वीर काटे फिरंगी का कान।।टेक।।
लालमुंड़ा का बंदर खावे टिटोड़ी का अंड़ा
रामघाट पे रगड़ा छाने,उज्जैनी का पंड़ा।।टेक।।

मालवी लोकाभिव्यक्तियों में कुछ ऐसे स्वतंत्र छंद और गीत टुकड़े प्राप्त हैं, जिनमें एक ओर अंग्रेजी साम्राज्य के प्रति असंतोष और विद्रोह की भावन निहित है, तो दूसरी ओर देशी रियासतों के राजा महाराजाओं के प्रति आस्था और आदर की भावना मुखरित है। ग्वालियर रियासत के महाराजा माधवराव सिंधिया (प्रथम) की लोकप्रियता और अंग्रेजों को मार भगाने की भावना इन चार पंक्तियों में देखियेः

5. अगड़ बम,नीचे खंब,देवी बन में गाजे
चढ़ता सिंदूर गले में देखो हार बिराजे
भाग रे अंगरेजन तेरी,मोत क्यों आई
भागू माधू म्हराज,मेरी टोपी नी पाई

मालवा के पूर्वी छोर पर नृसिंहगढ़ रियासत के राजपूत योद्वा कुंवर चैनसिंह ने अंग्रेजी सत्ता को सीधी चुनौती दी थी। नृसिंहगढ़ के राजा सौभाग्यसिंह के सुपुत्र थे। बचपन से ही वे स्वाभिवानी भावना से ओतप्रेत थे। जिनके कई किस्से आज भी ग्रामीण अंचलों में लोक कथाओं की तरह प्रचलित हैं। अंग्रेजी साम्राज्य की बेड़ियों से भारत माता को मुक्त कराने का जो सपना उन्होंने बचपन में संजोया था, उसे साकार करने के लिये मालवा के इस रणबांकुरे ने अपनी ओर से कोई कसर नहीं छोड़ी। हिम्मत खाँ और बहादुर खाँ नामक अपने दो वीर साथियों के साथ अंग्रेजी सेना की एक टुकड़ी को सिहोर छावनी तक खदेड़ दिया।अंग्रेजों ने धोखा देकर उन्हें गिरफ्तार करने के लिये बड़ी संख्या में धावा बोल दिया तीनों स्वातन्त्र वीर लड़ते - लड़ते वीर गति को प्राप्त हुये, कहते हैं कि सिर कट जाने के बाद भी मुंड़विहीन कुंवर चैनसिंह का धड़ अपने हाथों की दोनों तलवारों से अंग्रेज सिपाहियों के छक्के छुड़ाता रहा। जब सामने कोई नहीं बचा,तब निढ़ाल होकर सिहोर छावनी में जिस स्थान पर मालवा के इस वीर सपूत का अंत हुआ, वहां उनकी छत्री ( समाधी )बनायी गयी। छत्री के निकट ही उनके दो मुसलमान वीर - साथियों के शवों को दफनाया गया और कब्रें बनवायी गयीं। अंग्रेजी सत्ता के खिलाफ हिन्दू - मुस्लिम एकता की इस जिन्दा मिसाल कुंवर चैनसिंह की शौर्य गाथा लोक गीतों में प्रतिध्वानित है। इस क्षेत्र में गाये जाने वाले गीतों में हिम्मत खाँ और बहादुर खाँ लोक गीतों की मुख - सुख प्रवृति के कारण हिदर खाँ और बिदर खाँ बन गये हैं।

6. सीस कटायो ने घाट बंधायो, मुख पै उड़े रे गुलाल
राजा सोवलसिंग का चेनसिंग मुलक में राज करयो
कचेरिया बेठन्ताजी साब वरजा,
नी हो कुंवर तमारी लड़वा की वेस
भैंस्या दुवारता भाई बोल्या,
नी हो दादा जी तमारी लड़वा की वेस
पालणा पे बेठन्ता माजी बाई बाोल्या,
नी रे बेटा त्यारी लड़वा की वेस
सेज्यां संवारता गोरी हो बोल्या
नी ओ आलोजा थांकी लड़वा की वेस
हिदर खाँ बिदर खाँ यूँ कर बोल्या, एकला सो पड़ ग्यो है काम
भाई भतीजा धरे रे रथा चेनसिंह, एकला से पड़ ग्यो है काम

सीस कटायो ने घाट बंधायो, मुख पै उड़े रे गुलाल
सीवर में डेरा डाल्या, तो धड़ से करयो है जुवाब
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थः**

राजा सोबलसिंह के सुपुत्र चैन सिंह ने अपने मुल्क में राज्य किया। कचहरी में बैठे हुए महाराजा साहब से मना किया कि राजकुमार तुम्हारी उमर अभी लड़ने की नहीेंं है। भैंसो को दुहते हुए भाई ने कहा दादा भाई आपकी यह उमर अभी युद्व करने की नहीं है। पालने पर बैठी राजमाता बोली कि बेटा तुम्हारी यह उमर संग्राम में जूझने की नहीं हैं रनिवास में सेज संवरती गोरी ने कहा कि अलीजा ( प्रियतम ) आपकी यह उमर रणभूमि में जाने की नहीं है।हिदर खाँ और बिदर खाँ यूं बोले कि देखो इस युद्व में कुँवर चैनसिंह अकेले पड़ गये हैं। अपनी आजादी के कारण सूरवीरों ने हँसते - हँसते अपने शीश कटा दिये। इनके मुख मंण्डल आत्मोत्सर्ग की आभा (गुलाल) से मंड़ित हैं। सिहोर की छावनी में इन वीरों ने जैसे ड़ेरा जमा लिया हैं शीश कट जाने पर भी मुंड़विहीन धड़ से कुंवर चैनसिंह फिरंगी फौज के हमले का मुंह तोड़ जवाब देते रहे।

संकलन एवं अनुवाद ड़ाँ. शिवकुमार मधुर
(संदर्भ ग्रंथ : सुराज म.प्र. आदिवासी लोक कला परिषद )

## 7. अंगरेज ऊतरियो काली टोपी रो

डुँचली मगरी रो पाणी।
पेले ढ़ाल ऊतरियो।
आबूजी रा पहाड़ पे

अंगरेज ऊतरियो काली टोपी रो।
काली - काली टोपियो।
अंगरेजी बाजा बाजे है।
राजाजी रा राज में नंगारो बाजे हो।
महराज थारो राज लूटेलो, यो काली टोपी रो।
महराज थारो डेरो बांदले अंगरेज लूटेलो।
पीली झंड़ी ना तम्बू महाराज न कहिये।
थारो राज लूटेला।
लीख ने परवानो जोधपुर ने दीजो रे
जोधपुर रा महाराज।
थारी तरवांरा हुदराम लीजो रे।
फौज नो धम्मेड़ो लेने लड़वा चाल्यो।
झगड़ो आदिरियो।
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थः**

ऊँची बल्ली का पानी, उस पार के ढ़ाल पर उतरा,आबूजी के पहाड़ पर,अंग्रेज उतरा काली टोपी वाला,काली - काली टोपी हैं अंग्रेज बाजा बज रहा रहा है, राजाजी के राज में नगारा बज रहा है, महाराजा तेरा राज लूटेगा,ये काली टोपी वाला,महाराज तेरा ड़ेरा बांध ले ,अंगरेज लूट लेगा।पीली झंड़ी के तम्बू महाराज के कहिये, नीली झंड़ी के तम्बू अंगरेजों के कहिये, तेरा राज लूटेंगे।लिखकर के रवाना जोधपुर को देगा रे, जोधपुर के महाराज, तेरी तलवार सुधरा लेना रे,

फौज की आंधी लेकर लड़ने चला, झगड़े को आदर दिया।

संकलन एवं अनुवादः चंद्रशेखर दुबे

(संदर्भ ग्रंथ. सुराज आदिवासी लोक कला परिषद)

भारत की आजादी के पचासवें वर्ष के अवसर पर देश में आजादी का स्वर्ण जयंती समारोह मनाया गया।इस अवसर पर मध्य प्रदेश की महात्मा गांधी एक सौ पच्चीसवॉ जन्म समारोह समिति राज्य शासन की आदिवासी लोक कला परिषद् के सहयोग से मध्य प्रदेश की लोक बोलियों में गांधी जी और आजादी के महासमर के गाये लोकगीतों पर आधारित एक ग्रंथ "गांधी लोक गीत" मध्य प्रदेश शासन संस्कृति विभाग द्वारा प्रकाशित किया गया था। उसी ग्रंथ के कुछ मालवी लोक गीतों को यहां पर प्रस्तुत किया गया है। इन मालवी लोकगीतों का संकलन भावार्थ एवं संदर्भ : श्री नर्मदा प्रसाद गुप्त जी द्वारा किया गया था।

## 8. अवतार महात्मा गांधी का भारत का भार उतारन को

अवतार महात्मा गांधी का,
भारत का भार उतारन को।
सिरी राम के कपड़े पीले हैं।
सिरी कृष्ण के कपड़े नीले हैं।
गांधी जी के वस्तर खादी के,
भारत का भार उतारन को।।1।।
सिरी राम के हाथों धनुस है।
सिरी किसन के हाथों में बंसी है।
गांधी जी के हाथ में चरखा है।
भारत का भार उतारन को।।2।।
सिरी राम ने रावन मारा है।
सिरी किसन ने कंस पछाड़ा है।
गांधी जी ने अंगरेज भगाया है।
भारत का भार उतारन को।
अवतार महातमा गांधी का।
भूमि का भार उतारन को।।3।।
सिरी राम की सेना वानर है।
सिरी किसन की सेना ग्वाले है।
गांधी जी की सेना पबलिक है।
भारत का भार उतारन को।।4।।

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**संदर्भः**

मालवा की वधूटियों ने अपने लोकगीतों में पूज्य महात्मा गांधी जी को अवतारी रुप में प्रस्तुत किया है। किसी महापुरुष की ऐसी भव्य तुलना लोक हृदय की धड़कन में ही सुनी जा सकती है।

**गीतार्थः** महात्मा गांधी जी का अवतार भारत का भार उतारने के लिये हुआ है। श्री रामचंद्र जी के वस्त्र पीले हैं। तो श्री कृष्ण जी के वस्त्रों का रंग नीला है। तो गांधी जी के वस्त्र खादी

के हैं। उन्होंने भारत का भार उतारने के लिये अवतार लिया है।1।

श्री रामचंद्र जी के हाथों में धनुष - बाण विराजमान रहता है। तो श्री कृष्ण जी के हाथों में बांसुरी सुशोभित होती है। तो गांधी जी के हाथों में चरखा है। भारत का भार उतारने के लिये। 2।

श्री रामचंद्र जी ने रावण का वध किया। तो श्रीकृष्ण जी ने कंस को पछाड़ा है।तो गांधी जी ने अंग्रेजों को भगाया है। भारत का भार उतारने को। महात्मा गांधी जी ने भारत का भार उतारने के लिये अवतार लिया है। उन्होंने इस भूमि का भार उतारने के लिये अवतार लिया है।3।

श्री रामचंद्र जी की सेना में बंदर थे। तो श्री कृष्ण जी की सेना में ग्वाले थे। तो गांधी जी की सेना में भारत का जन - जन था।भारत का भार उतारने के लिये।

गायिकाः श्रीमति दुर्गावती जोशी सुसनेर अनुवाद : डॉ. विजय चौरसिया

गांधी जी के सत्याग्रह के संबंध में लोक गायकों ने अपनी वाणी दी है। वे मन के बड़े संकल्पी थे। उनके संकलपित कार्य की पूर्ति न होने तक वे उसी के पीछे पड़े रहते थे। सन् 1930 की 12 तारीख को गांधी जी ने सावरमती आश्रम छोड़कर दांड़ी यात्रा की थी। उन्होंने अपने अनुयायियों के साथ रावी के तट पर गोरों की हुकूमत को उखाड़ फैंकने का संकल्प किया। 29 दिसंबर 30 को लाहौर अधिवेशन में घूम - घूम कर यह संदेश प्रसारित किया कि जब तक भारत स्वतंत्र नहीं हो जाता उसका स्वतंत्रता दिवस 26 जनवरी को ही मनता रहेगा। विदेशी सत्ताधीशों से हिंसा के बजाय अहिंसक तरीके से उनका मन परिवर्तित करना होगा। इन घटनाओं को संक्षिप्त लेखा - जोखा लोकगीत गायक श्री मोती लाल पटेल एवं उनकी मंड़ली में सुनकर लिपिबद्व किया है।

## 10. गांधी मातमा ने जदी करी सत्यागिरे की तइयारी

गांधी मातमा ने जदी करी सत्यागिरे की तइयारी।
खई कसम ने कमर कसीली - साबरमती आसरम नीजउवां।
चाये मोत मरुं कुतरा बिल्ली की तोबा हूं वां नीरउवां।
जेल करेगी बंद गोरी सरकार तो वां जइने म्हँ रउवां।
सन तीस की बारा तारीख के आसरम छोउ दांड़ी कूँ ग्या।
रावी कनारे भेलावाइने गोरा होण भगावा का संकल्प व्या।
उण्तीस दिसंबर आयो तो अधिवेसन था लाहोर किया।
सारा देस में घूमी घूमी ने कागरेस का संदेसा दया।
सुतंतरता जद तलक नी मले छब्बीस जनवरी मनती रेगी।
नमक सत्याग्रे करवाकी भी जोर सोर से त्यारी वेगी।
आगे आगे गांधी बाबा पाछे हुवो सत्याग्रे दल।
माथे कंकू गले सूत की माला हाथ में लाठी लइके पल।
शराब बंदी को बीड़ो तोक्यो दारु की दुकान पे द्यो पेरो।
बिदेसी वस्तर की होली बालदी चरखा को लागग्यों डेरो।
वणी टेम मायां - बायां ने तिरंगो हाथ उठायो थो।
केसरिया साड़ी बांधी ने कस्तूरबा को साथो थो।
भारत का इतिहास की घटना ने यो रस्तो बतलायो थो।

गांधी जी का व्यक्त्वि बहुरंगी था। लोक जीवन में उनके विविध आयामी चित्र भरे पड़े हैं। एक लोक गीत में गांधी जी के व्यक्तित्व को चित्रचत्मक शैली में उकेरा गया हैं प्रस्तुत गीत मोहन लाल , विजय कुमार एवं बालूसिंह भजन मंड़ली में कायरा से सुनकर लिपिबद्व किया गया है जो इस प्रकार है -

## 10. हात लकड़िया पांव पावड़िया,

हात लकड़िया पांव पावड़िया,
आंख पै चिस्मा चांदी को।
सुबे - सबेरे हरिजन मंदर,
नत उइ पिरथाना पे जावे।
गीता पे राखे ध्यान अने,
कस्तूरबा के भजन हुणावे।
ईस नाम की करे बंदगी,
जनता को दुख गावे।
जेल जावे पण उपास नी तोड़े,
नंगा भूखा केज ध्यावे।
भारत मॉ की करे बंदगी,
नत उठी दरसण पावे।
भारत मॉ को नाम लई ने ,
रुखी सूखी पावे।

ऐसो कूण हे अजब महान।
योतो गांधी प्यारो इनसान।
भारत की आजादी वाते,देवे अपणी जान,
ऐसो गांधी बड़ो महान।

अंग्रेजों के राज्य में पाठशालाओं की बड़ी दुरावस्था थी। पढ़ने लिखने के उतने साधन नहीं थे। जितने आज हैं। समग्र भारतीय जनजीवन में निरक्षरता व्याप्त थी। ऐसे में लोकगीतकारों ने गांधी जी से पाठशालायें खुलवाने का आग्रह इस लोक गीत में किया है। इसके गायक हैं कायरा निवासी दंलेसिंह जी सरपंच और इनके साथीं लोक गीत इस प्रकार है-

## 11. सुणलो दुखियों की आवाज

सुणलो दुखियों की आवाज,
दयालू गांधी बाबा दो ध्यान ।
बालक म्हांका कोसों दूर हे भणवाजावे।
स्कूल फीस वी दई नी पावे,
नगर गांव मांस स्कूल कोइनी, तम देन्ओनी ध्यान।
दयालु गांधी बाबा महान।।1।।
अंगरेजा का राज में म्हां की सिट्टी - पिट्टी होवे।
गिटर - पिटर अंगरेजी बोलता - हेड़ मास्टर आवे।
हे बापू! तुम हिन्दी - उरदू का मदरसा खोलो।
फीस कमी करवाई दो, गांधी बाबा महान।।2।।
तीस दिना नित नई फीस दे ,हुई गया मात - पिता हैरान
गांधी बाबा हो बड़ा दयालू।
रखो म्हांका तम भणवा पर ध्यान।
दयालू गांधी बाबा महान।।3।।
संकलनकर्ताः डॉ. प्रहलाद चंद्र जोशी सुसनेर जिला शाजापुर
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

उन दिनों लोग भारत को क्रिस्तान में बदलना चाहते थे और अपने धर्म तथा खान - पान को भारतवासियों पर लादने की कोशिश करते थे। वे पान चबाते और बिलायती कंद खाते थे। विदेशी दवाईयों का आम जनता में प्रचार करके भारतीय मुद्रा को इंगलैंड़ में ले जाते थे। इस पर व्यंग्य करती एक रचना "विलायती कंद"गोगांव निवासी शायर पं. शोभा राम जी ब्राम्हण को हस्तलिखित तुर्रा पोथी से प्राप्त हुई है। जो इस प्रकार है -

## 12. (विलायती कंद)

लाट साहब ने किरस्तान करने को बता कब चखता पान।
अपने आपी किरस्तान सब होता चला ये हिन्दुस्तान।
(टेक)
देख गोर कर इधर ध्यान धर,गांधी सत्य समझावे हे।

अपनी समझ से नावाकिफ कुल बेईमान बन जावे हे।
किरस्तान किसकूं बतलावो - यो अंगरेज बनाते हे।
कंद विलायत से आवे हे अपणी खुशी सब खावे हे।
(मिलान)
नहीं किसी का कसूर इसमें समझो जो तुम हो इंसान,
( चोक - 1 )
डॉक्टर की खास दवाईयां - लंदन की बनी हे दिलजानी।
उसे मजा में खावो हो तुम बड़ा बनी चतर ग्यानी।
क्यावो तुम खिलाते हें - तुम अपने आप खावो आनी।
बईमान ओरां के बतावो - गांधी भी केवे बईमानी।
(मिलाप)
दवाई से खली कूण रहना‌ो - खवाती जग में हो नादानी।
( चोक - 2 )
खुराक दवाई खीवीली आपने फेर अरक की ठेराई।
चल्या डागदर से लेवाने - एक मोल की सीसी मंगाई।
बीमारी जद बड़े तो पीली - दवा खुश्क ऊपर खाई।
जदी दरद मिट गयो तो केवा लाग्यो घणी उत्तम भाई।
(मिलपन)
जमी एक ने खाई सबने - जात वाला ने खाई आन।
( चोक -3 )
चन्दण की चुटकी हे मली - किस काम का गाड़ी भरा कबाड़ ।
तूने अपणा इस खयाल में - झूठी करी उखाड़ - पछाड़।
तीन चोक धडील्या हे नाहक, दुनिया में करवाने राड़।
सात चोक में मतलब तेरा म्हांने सारा दिया उखाड़।
( मिलान)
जंग करी अंगरेजों से गांधी - थोंय दियो नाहक खफखान।
गांधी के हिन्दू सोई मुसलमान उठे मुसलमान सोई ईसाई।
खावा पीवा का विचार में कूण बचइदे बतलाई।
हिन्दू - मुसलीम के संग मेंगुपत मुंसलमां हो भाई ।
जो हे आपके सामिल डूबी चतर तामारी चतराई।
बंदोबसा नी हुवा अंचके घर में नीचका गड़ा निसाण।
( चोक - 4 )
मगर धरम वो ओर चीज हे खावा पीवा सेन्यारा ।
गगांधी जी केवे उणे बी समजो - जाणेगा जानन हारा ।
नाहक बम बम करते हो - खेल के ठाकुर गुर द्‌वारा।
मुसलमान मज्जित में जाके - अल्ला - अल्ला करे पुकार।
( मिलाप )
दया धरम को छोड़ा जिसने उसको समझो वो हे बईमान।

( चोक - 5 )

गांधी केवे कहूं ये दोहे नादान लोग झूठा मत के।
सच को समझो , झूठ - झूठ को , कहे वचन ये हें सत के।
गुनी लोग के अग्यानी लागे हे इज्जत हुरमत के ।
इसी सबब गांधी से लोगना रसिया इनकी उल्फत के।

(मिलाप)

जिस चोक का ख्याल किया सुखलाल ने सुणलो गांधी गुणगान । तुर्रा की एक और हस्त लिखित पोथी , इस लेखक के संग्राहालय में सुरक्षित है। जिसमें पं. शोभा राम जी ने " गांधी जी का पुवाड़ा " नामक ख्याल लिखा है। भाषा उर्दू प्रधान मालवीय ही है। रचना काल सन् 32 से 34 का है। इसमें पूज्य बापू के दीर्घायू होने की कामना के साथ कर्म पर भी प्रकाश ड़ाला है। गांधी जी के परोपकारी रुप , भाषण कला , क्षमा भाव, चरखा, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार आदि विषयों का सुंदर चित्रण किया गया है।

जो इस प्रकार से है -

## 13. गांधी जी का पुवाड़ा

सुनो भारतीयो सब मिलके नमो सदा विशृंवभर को।
हे जगदीश करो दीर्घायू गांधी धर्म धुरंदर को।

( टेक )

परोपकार पे कमर जो कसके सदा खड़े रेते तइयार।
भासण सबसे करें मनोहर,गंभीरता है तन में आपार।
गर जो कोई करे अनीत,देते तरास उनको बदकार।
तो लेकर वो छमा खड्ग, करते बेग ही उसे लाचार।

(शेर)

कहता जिन्हों का भारतियों से दिल यही हर बार हे।
बंधुओं अब जागिये ,सोने में कुछ न सरार हे।
चरखा चलावो सब यही ही एक उन्नति का द्वार हे।
जिसके बिना कुछ ओर सें ना देश का उद्वार हे।

(मिलान)

देसबको यों सिच्छा प्यारी ऐसे ग्यान समुंदर को।

(चोक -1 )

ओर उनी के कहे मुताबिक बढा के आपस में सब प्यार।
जोर सोर से इस भारत में करो खादी का खूब परचार।
ओर तन पे जो ठाठ विदेशी हाये तो उसको देय उतार।
ओर करो परन विदेशी वसतु करांगानी कभी स्वीकार।

(शेर)

जात करोड़ों हे रुपिया इस देस से परदेस को ।
बुद्वी तुमारी हेनकोड़ी आनी पर लव लेस को ।
था सिरोमणी जो देश जो वो टिक चुका अंदेस को ।

मगर तजते हो न तुम तो जेंटेलमेनी भेस को।
(मिलाप)
ग्यान जोत से करो परकासित साफ हिरदा से निज मंदर को।
(चोक - 2)
देखो कितनी मार चुके गो,बूचड इस भारत के अंदर।
रुक जाती है कलम गरचे,हिसाब करे जो एकन्दर।
रेम जरासानी खाते मन में,चलारये झर झर खंचर।
विलाप कर सब रो इई गउवें, दुख से होकर के पंचर।
(शेर)
इस दुख से ही तो देस हित - अहमद अली शैकत अली।
ओर गांधी जी की गई थी जेल को स्वारी चली।
हाल जिनका कहते होती हे खडी ये रोमावली।
आंसु बहते आंखियान से अर दिल में मची हे खलबली।
(मिलान)
हे मंगल सूरत क्या प्यारी पड़े तेज ज्यौं चंदर को।
(चोक - 3 )
सच हे जननी जने कदाचित सो गांधी सा लाल जनें।
धरमवान वो नीतवान ग्यानी जन भगत दयाल जनें।
नीतो रेवे जनम निपुतरी ज्यूं केसू फूल घनें।
होते भी सुगंधना देवे क्या ऐसा उनसे कार बनें।
(शेर)
जनम ले निज देस की सेवान जिसने की खरी।
जगत में उसने विरथा ही देह मानव की धरी।
मातृ भूमि ही हे तारण सिरफ एक परमेसरी।
जिसकी सेवा में तिलक , गांधी ने देह खुद अरपन करी।
(मिलाप) कहते शोभाराम इन्हों को दे एश्वर्य पुरन्दर को।
0ददददध्ददध्0

गांधी जी का सत्याग्रह रुपी अस्त्र देश में विख्यात हुआ। 31 दिसंबर 1929 को रात्री 12 बजे तिरंगे की छत्र छाया में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेताओं , कार्यकर्ताओं और लाखों भारतीयों ने लाहोर में रावी नदी के तट पर जो संकल्प लिया था । उसमें कहा गया था कि भारत को जब तक संपूर्ण स्वायत्ता नहीं मिलेगी , वह बिट्रीश हुकूमत से जूझती रहेगी। इसी भाव को संजोया है। बामन्या खेड़ी ग्राम के मांगीलाल बारोठ ने इन पंक्तियों में -

**14.** ये देस गुलामी का पंजा से हुईग्यो आंको बांको थो।
यां उनी टेम पे बिदयारथी ने गांधी को पकड्यो नाको थो।
उज्जेणी का पुस्तकेजी ने सन् इक्कीस में चरखा संघ सजायो थो।
सन् तैंतीस में यांजे बेठके हरिजन संघ बणायो थो।
कृष्णराव दाते बण्या था सेवक,खादी पे रंग लक्ष्मीनराण चढ़ायो थो।

गोखले जी ने खोल्यो भंड़ार खादी को जो सबका मन के भायो थो।
सन् तैंतीस में लीलाधर ओर तखतमलजी ने
राजनीति को पकड़यो पायो थो।
गांधी केणा में इनने उणकोई पकड़यो सायो थो।
देस सुतंतर होणे पर गांधी ने लीलाधर के मुख मंत्री बणायो थो।
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

स्वतंत्रता संग्राम की बलिदानी परंपरा पर एक बहुत ही सुंदर वीर काव्य "तुर्रा " की एक और पोथी में अंकित है। जिसके शायर शोभा राम जी हैं। इसमें शहीदों की उत्सर्गी भावनाओं का गुंफन हुआ हैं स्वतंत्रता संग्राम की बलिदेवी पर कई क्रांतिकारियों ने अपने जीवन का उत्सर्ग किया है। उनमें से अनेकों का वर्णन इस काव्य में गुंफित हुआ है -

## 15. सिरपे बांध के कफन चली थी जांवे सहीदों की टोली

सिरपे बांध के कफन चली थी जांवे सहीदों की टोली।
तड़फ उठयो पंजाब नी मूल्यों जलियांवाला की गोली।
भगत सिंह की बुझी चिता पे राख लुटावा आयो हूँ।
हुआ देस का खंड़ - खंड़  बस याज सुणावा आयो हूँ।।1।।
बरमा के मेदान के नीचे सिंगापरती जई बुझो।
कितरा सोया लाल तरई में नेताजी से जई पूछो।
याज दुहाई बार - बार दइरी हे, लाल किला की दीवारां।
देखी लो फिर जंग न लाग,े नेताजी की तरवारां।
कितरा ने माथा काट - काट, भरदीमॉ की खाली झोली।
होटां पर वण के हंसी खेलती, जब लगी कलेजा पे गोली।
अमर सहीदों की समाध पे, फूल चढ़ावा आयो हूँ।
हुआ देस का खंड़ - खंड़  बस, याज सुणावा आयो हूँ।। 2।।
लुटी गई कितराई स्वागइणां, विदेसी तुफानां में।
विधवा आण का दुखीनाद, चारी मेर दिखा वीराणा में।
जलीरयो अपणो र्स्वर्ण देस, छइरी चारी मेरु ती बरबादी।
टपकायो खूनी आंसु मा ,जद आज मली हे आजादी।
सच्ची सुतंतरता की ज्वाला के हूँ ,फिर फिर भड़कावा आयो हूँ।
हुआ देस का खंड़ - खंड़  बस याज सुणावा आयो हूँ।। 3।।
सिक्खा,गोरखा,जाटां की, हुंकार घणी हे पाणी पाणी क्यूं।
आज मराठा की तरवारां को उतरयो हे यो पाणी क्यूं।

राजपूतनी का जोहर की आज रईनी निसाणी क्यूं।
मोर्य ओर समराट गुप्त की भूलां आज कहानी क्यूं।
जदी वी जली क्यूं नी तड़फी इन आर्य वीर संतानों में।
लछमी बाइ को गई जो मरद बनी मरदांना में।
गांधी को यो देस जगत में,यो सिर मोर के वायो हे।
बापू काही इना देसको मनख - मनख बिलमायो हे।
संकलनःडॉ. प्रहलाद चंद्र जोशी सुसनेर जिला शाजापुर

0ध्ध्ध्ध्ध्0

गांधी जी का बहुआयामी व्यक्तित्व था। उनका अपना लिखा विशाल साहित्य है। उनकी अपनी विपुल अध्यात्मिक देन है।बापू ने शिक्षा दी थी , बुरे मनुष्यों का सााि न करना,पर अपनी बुराई दूर करना, अंधविश्वासों को दूर भगाना, मृत्यू भोज न करना आदि। इन्हीं भावों की अभिव्यक्ति में श्री भावसार बा जैसे ख्यात गीतकार एवं व्यंगकार ने अपने गीतों में की है।

## बड़ा काम की बात बतइग्या - अपने अपना बापू

सुन रे नाना सुन रे कानहा सुन ओ नानी धापू।
बड़ा काम की बात बतइग्या - अपने अपना बापू।
बुरा मनक के साथ नी करनो - ऐसी रीति चली हे
पण अपना में से बुरई के हेड़ो - तो जादा बात भली हे।
अबके पानी खूब पड़यो तो आंखों कुवो भरइग्यो।
कालूजी का कुवा में कुतरो पड़यो ओर मरी ग्यो।
सभी लोग ना बंद करीदयो उनमें पानी भरनो।
सुक्कल जी का पास गया के सुद्‌वि केसे करनो।
सुक्कल बोल्या - सो दो सो बालटी पानी हेडो।
सुद्‌वि तो जद होय,जरा सो गंगा जल भी रेड़ो।
यो सब काम करयो कालू ने।

फेर सुक्कल जी से बोल्यो - अब भी नी पीवे हे कोई।
नवरो पानी ढोलयो।
सुक्कल पूछे - बताओ, कुतरो कां हेड़ी ने फेक्यो।
कुतरो ! कुतरो तो कुआ में होगा, कीं - ने हेडया देख्यो।
जो मन कुआ में बिसन - कुतरा पड़या गले जुँहार।
इनके जद जक नी हेडो - तो केसे हो उद्वधार।
खिचडी के पंगत में परसों कॅस्या पेट में टापू।
बड़ा काम की बात बतइग्या अपने अपना बापू।

**संकलनः**डॉ. प्रहलाद चंद्र जोशी सुसनेर जिला शाजापुर

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

समाज सुधार आंदोलन में बापू के बहुतेरे उपदेश भरे पड़े हैं।जिस देश की माटी से हमारा तन विकसित हुआ,जिसका फल - मेवा और अन्न खाकर हम पुष्ट हुए - उसी के गीतों का गुण गान कर हम गौरव का टीका अपने मस्तक पर क्यों न लगायें। जिस देश में गंगा, यमुना, सोना और चांदी बरसाती है और जिस देश में गौतम और गांधी की वाणी शांति के पुष्पों की वर्षा करती है। उसकी महिमा का हम क्यों न गुण - गान करें। ऐसा ही एक सुमधुर समाज सुधारवादी लोकगीत   मालवी की एक विधा " तुर्रा किलंगी " की तर्ज पर प्रस्तुत है।जिसे स्वर दिया है ख्यात मालवी कवि शिवनारायण उपाध्याय ' तराना 'ने गीत कुछ इस प्रकार है -

## 17.जिना देश की गौरव गाथा रोज जवानी गइरी हे

जिना देश की माटी से यो बन्यो हमारो तन मोटो।
जिना देश की माटी से यो तन्यो हमारो तन मोटो।
जिना देश का फल मेंवा ओ फसल खेत की खाई है।
जिना देश की गौरव गाथा रोज जवानी गइरी हे।
के - प्यारो प्राण से जादा - बड़ी भारी है मरजाद।
के गइलां गीत हमई का ,लगइलां गोरव का टीका।
जिना देश की गंगा जमना सन्नो चोदी बरसावे।
जिना देश का गोतम गांधी शांति सुमन के सरसावे।
जिना देश मा गोफन वाली मतवाली रानी रेवे।
जिना देश   में नई नवेली खड़ा खेत सगला सेवे।
मेहनत करने वाला लोग भगइ दे जड़ से सारा रोग।
सभी के वी तो सुख देवे केई से कंई भी नी लेवे।
जिना देस में कोयल तोता मोर पपीहा भी गावे।
जिना देस की शोभा सामें नंदन सदा लजइ जावे।
जिना देस का जंगल में हे भांत - भांत का पाना।
जिना देस का पेटा में हे भरी पूरी सब खानां।
कुदरत को हे ऐसो ठाट लगावे सदा सरग की बाट।
सुहानों सूरज भी जागे चांदनी चंदा भी जागे।
जिना देस में तानसेन स्वर की देवी पूजा थी।
जिना देस को साधन की भी बात निभाने वाला हे।
जिना देस में प्राण चढ़ाने वाला भी मतवाला है।
सत्य की जीत सदा होवे हरिचंद अपनी सब खोवे।
बतावें ऐसी उजली बाट झूठ की जड़ से देवी काट।

संकलनःडॉ. प्रहलाद चंद्र जोशी सुसनेर जिला शाजापुर

0ध्ध्ध्ध्ध्0

## 18.भारत की तकदीर बनई दो

उठो जवानो भारत की तकदीर बनई दो।
फूलां के इस गुलशन से कांटा के हटई दो।
तोड़ी के सारो जाल विदेशी करो देस के अपनो।
री-नी जाय देखो कंई अधूरो अपणो सुंदर सपनो।
अपने साथे रेगा बड़ा - बड़ा बलवानां के सक्ति।
श्री जवाहर लाल के हिम्मत बापू जी की भगती।
हे नोजवानों इठो ने भारत की तकदीर बनई दो।
फूलां के इनी गुलसन सें कांटा हटई दो।

**गीतार्थ :**

हे भारत के नोजवानो उठो जागो,इस भारत की तकदीर बना दो।फूलों के इस गुलशन से कांटे को निकालकर बाहर कर दो। अंग्रेजों के सारे जाल तोड़ दो और देश को अपना बना लो। देखो अपना सुंदर सपना अधूरा न रह जावे। अपने साथ बड़े - बड़े बलवान क्रांतकारियों की शक्ति है।तो पंड़ीत जवाहर लाल नेहरु  की हिम्मत के साथ बापू जी की भक्ति भी है। हे नवजवानो ! उठो और भारत की तकदीर बना दो। फूलों के इस गुलशन से कांटों को निकालकर बाहर कर दो।

संकलन एवं अनुवाद : डॉ. प्रहलाद चंद्र जोशी

## 19. झंड़ा तिरंगा हिंद में आजाद हो लहरा गया

आनंद भारत में हुआ रवि,
तो प्रगट हर इंधेरा गया।
झंड़ा तिरंगा हिंद में ,
आजाद हो लहरा गया।।1।।
भारत हमारा सौंपकर,
पश्चिम को उठ डेरा गया।
पर फूट डाली रुठ मन,
ओर दुवेश भर गेरा गया।।2।।
विभाजन थे हिन्दुस्तान का,
जिन्ना के सा सेरा गया।

दिल की तसल्ली न हुई,
लालच कुजाल पेना गया।।3।।
धन्य हो श्री गांधी जी जग में,
सबका प्रकाश हो चेहरा गया।
जयकार भी श्री नेहरु की हो,
पंदरा अगस्त ढेरा गया।।4।।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद लिखा गया यह ख्याल गीत है।जिसे सुसनेर के स्व.शायर भेरुलाल ने अपनी तुर्रा की पोथी में लिखा है। इसमें तिरंगा झंड़े का वर्णन,स्वतंत्रता प्राप्ति की खुशियाली एवं हिन्दुस्तान के विभाजन का सेहरा जिन्ना के माथे पर बांधने आदि विषयों का सुंदर चित्रण मिलता हैं।

गीतार्थः

हमारे भारत देश में आनंद के सूर्य का उदय हो गया है।देश की गुलामी का अंधेरा छंट गया और आजाद हिन्दुस्तान का तिरंगा लहराने लगा। अंगेजों ने हमको हमारा भारत सौंपकर अपना ड़ेरा पश्चिम की ओर ले गये पर वे हमारे बीच में आपस की फूट ड़ाल गये। जिससे भारत का विभाजन हो गया। इस विभाजन का सेहरा जिन्ना के सिर पर बांधा गया। धन्य हो महात्मा गांधी जी का जिनके कारण हर भारतवासी का चेहरा प्रकाश से जगमगाने लगा। पंड़ीत जवाहर लाल नेहरु की भी जय हो । जिनके कारण पंद्रह अगस्त का पर्व मनाया जाने लगा।

संकलनकर्ताः डॉ. प्रहलाद चंद्र जोशी सुसनेर जिला शाजापुर

## मालवा अंचल के लोकगीतों में सामाजिक चेतना -

## 20. करम करो रे करमी लोगां

करम करो रे करमी लोगां
करम की वेरा आवी रे।
करम करो तो करजो सपाई
सबके मन में भाई रे।आओ दादा सा आओ काका सा
अपनी करां भलाई रे।
अपनी भलाई सबकी भलाई आवो लोग लुगाई रे।।
करम करो रे.............
ई तो म्हारा गिरदर गांदी
आखो देस बचाओ रे।।
करम करो रे........

**गीतार्थ :**

अरे कर्म करने वाले लोगो कर्म करो। अब कर्म का समय आ गया हैं कर्म करना तो सफाई का कार्य करना जो सबके मन को सुहाता हैं आओ पिताजी आओ काका जी हम सफाई करके अपनी ही भलाई करें। क्योंकी अपनी भलाई में ही सबकी भलाई हैं आओ सभी नर नारियो। कर्म करो। देखो ये गांधी जी तो मेरे गिरधर हैं। जिन्होंने पूरे देश को दासता से बचा लिया। कर्म करो।

संकलनः मांगीलाल फरनाखेड़ी

## 21. मत पियो पियाजी दारुड़ी

फोड़ो बरतन तोड़ो प्याला
मत पियो पियाजी दारुड़ी।
चालो म्हारा सायब साथे
उन लाठी वाला साथे आज।
चालयों सगलो समाज आपणो
घर को हुओ विनास।
अब तो तारे म्हारा बाबा
आवो सायब सात।
अपणो होवेगो उद्‌वार।
चालो सायजी अब सात।।
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :**

अरे प्रियवर बरतन फोड़ दो, प्याले तोड़ दो,। शराब मत पियो। मेरे स्वामी आप आज उस लाठी वाले के साथ चल दो। अपना तो पूरा समाज ही उधर चल दिया। घर का विनाश हो गया। अब तो मेरे गांधी बाबा ही उद्वार करेंगे। अरे स्वामी आप साथ आओ। अपना उद्वार हो जावेगा। स्वामी अब मेरे साथ चलो।

संकलनकर्ता : दुले सिंह खरसोद

## 22. आवो सब मिलकर कदम बढई दो रे।

आवो सब मिलकर कदम बढई दो रे।
मॉ का खांतर अपणी आवाज उठई दो रे।
बिस्व सान्ति फेला - वांगा ने दुस्मन से टकरावां गां।
अब सतरु की हुई ललकार कमर में बांधली तलवार।
रण भूमि में मारा - मार,दुस्मन कर दांगा बेकार।
सीस हतेली परलइ के हम प्राणों की आहुति दांगां।
रणभूमि में खून बहई के दुश्मन से टकरा वांगां।
शेर शिवाजी की शान लईने परताप को मान लइने।
गांधी - सुभास की आन लइके म्हां दुस्मन से टकरा वांगां।

**गीतार्थ :**

आओ भाई हम सभी एक साथ मिलकर कदम बढ़ाते हैं। भारत माता के लिये हम लोग आवाज उठायेंगे। हम संपूर्ण विश्व में शांती लायेंगे।हम दुश्मन से टकरायेंगे। हमने अपनी कमर में तलवार बांध ली है। हम युद्व के मैदान में दुश्मनों के दांत खट्टे कर देंगे। हम भारत माता की रक्षा के लिये अपना सिर हथेली पर लेकर चलते हैं।हमने रणभूमि में अपने प्राणों की आहूति दी है। हमने रण भूमि में दुश्मनों से टकराकर,वहां खून की नदियॉ बहा दी हैं।हम लोग वीर शिवाजी की शान और महाराणा प्रताप का मान - सम्मान के लिये कुछ भी कर सकते हैं।गांधी जी और सुभाष चंद्र बोस की आन में दुश्मनों से युद्व करेंगे।

संकलन एवं अनुवाद : डॉ. प्रहलाद चंद्र जोशी

## 23.साग भाई नाई कोनी

नानी बड़े सब गोटकी माने
कोनी नाड्र भिने।।
सब चो जात में खून मिलू आत
न मिल दूध नी।
जीव गेला बेरा धनमाल नाई,
साग भाई नाई कोनी।।

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ-**

**छोटे बड़े सब एक समान हैं, कोई भिन्न - भिन्न नहीं है। सभी के तन में रक्त प्रवाहित है, किसी के भी तन में दूध या पानी नहीं है।**

**मृत्यू के समय न तो धन साथ जाता है ओर न ही जाति बिरादरी के लोग।**

**संकलन एवं अनुवाद - निरंजन महावर**

**(साभार - सुराज- म.प्र.आदिवासी लोक कला परिषद )**

# fuekM+h
# yksd xhrksa
# esa lkekftd ,oa jktuSfrd
# psruk

# निमाड़

निमाड़ क्षेत्र में धार, झाबुआ, पश्चिमी निमाड़ तथा रतलाम जिले के आदिवासी क्षेत्र आते हैं। जिसमें सम्पूर्ण झाबुआ जिला, धार जिले की सरदारपुर, धार, कुक्षी तथा मनावर तहसील, पश्चिमी निमाड़ की महेश्वर, राजपुर, बड़वानी, सेंधरा, खरगोन एवं भीकनगांव तहसील और रतलाम जिले की सैलाना तहसील आती है। धार, महेश्वर तथा खरगोन तहसील में आदिवासियों की आबादी कुल आबादी की 50 प्रतिशतः से कम है। फिर भी भारत के संविधान के अन्तगर्त इन्हें आदिवासी क्षेत्र घोषित किया गया है। इस परिक्षेत्र में आबादी का घनत्व एक समान है। यहां के गांव छोटे होते हैं तथा बसाहट बिरली है। इस परिक्षेत्र में भील तथा उसकी उपजातियां बरेला, भिलाला, और पटलिया निवास करते हें। झाबुआ प्रदेश में सबसे बड़ा आदिवासी जिला है। इस जिले में 85 प्रतिशतः भील हैं। निमाड़ क्षेत्र में देश के प्रति प्रेम और वीरत्व की भावना जाग्रत करने की परंपरा यहां के लोक गीतों में बहुतायत देखने को मिलती है।

स्वतंत्रता आंदोलन ने जब सारे देश को मंथ दिया था। तब भील भाई भी इससे अछूते न रह सके। ऐसे ही देशप्रेमी और क्रांतिकारियों में टण्ट्या भील भी एक अमर नायक हैं। जिनके बलिदान ने हम मध्यप्रदेश - वासियों का मस्तक गौरव से ऊंचा कर रखा है।

## निमाड़ अंचल में प्रचलित राजनैतिक एवं सामाजिक चेतना के लोक गीत -

इस शीर्षक के अंर्न्तगत मैंने 45 लोकगीतों को रखा है। लोक गीतों की गहरी पड़ताल करने और उनके अंदर सूक्ष्म चेतना तत्वों का विश्लेषण करने के लिये कुछ और उपशीर्षकों

में उन्हें विभाजित किया है।

## 1. भारत वंदना

जन-जन थारा गुण गावऽ मईया, जन - जन थारा जस गावऽ।।टेक।।
'भारत माता' नाम छे थारो,सुण सुण मन हरखावऽ हो मईया।।
गंज बड़ो री मईया,थारो अंगणा,ओमऽ गंगा जमना लयराय हो मईया।
ड़ोंगर को तू मुकुट लगावऽ, बरखा जो बरखावऽ हो मईया।।
पोथी पतरा थारा जस गावऽ,रिसि मुनि मन भावऽ हो मईया।
किशनचंद थारा धूल मऽ लेट्या, जसमत गोद खेलावऽ हो मईया।।
गांधी महातमा हुआ अवतारी,ऊतो नाम कमावऽ हो मईया।
गंज बरसा तुखऽ, परबस राखी, गोरा नखऽ मार भागावऽ हो मईया।।
काईस थारी, करां आरती, काईसऽ, जोत जलावऽ हो मईया।।
सिख्छा स थारी, करां आरती,ग्यान की जोत जलावऽ हो मईया।

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

### गीतार्थः

हे भारत माता जन - जन आपके गुण गाता है। जन - जन आपके जस गाता हैं भारत माता का नाम लेते ही मन में खुशी की लहर दौड़ जाती है।आपका आंगन बहुत बड़ा है जिसमें गंगा और जमना नदी लहरा रही है। आपके सिर पर पहाड़ों का मुकुट सुशोभित है, जिससे आप वर्षा कर रही हो मॉ!सभी ग्रंथ एवं पोथी आपके गुण गान करते हैं । आप श्रृषी मुनियों के मन को भाने वाली हो। भगवान कृष्ण आपकी गोद की धूल में लोटकर बड़े हुये। उनको यशोदा माता ने खिलाया है।

महात्मा गांधी आपने भारत भूमि पर अवतार लिया है।उन्होंने पूरे संसार में अपना नाम कमाया है मॉ। अनेकों वषरें तक आपको पराधीन रखा, गांधी जी ने उन गोरों को मार कर भगा दिया है मॉ।मैं आपकी आरती किस प्रकार करुं और किस प्रकार आपको ज्योति जलाऊं हे मॉ!शिक्षा

से आपकी आरती करता हूं और ज्ञान की ज्योति जलाता हूं मॉ।

संकलन - राधेश्याम शांड़िल्य हरदा
अनुवाद - डॉ. विजय चौरसिया गाड़ासरई

सन् 1857 के बाद के वपरें में जननायक टण्ट्या भील ने दमन और अत्याचार के प्रतिकार की ज्वलंत अभिव्यक्ति दी। टण्ट्या भील ने गांवों और कस्बों में दूर - दूर तक फैले अंगरेजी हुकूमत के शोषण तथा शासन तंत्र को बड़ी हद तक छिन्न - भिन्न कर दिया था। टण्ट्या भील जहां ब्रिटिश तंत्र के लिये एक आतंक का प्रतीक था, वहीं औरतों, बच्चों, गरीबों, असहायों के लिये एक मददगार और रक्षक भी था और इसलिये टण्ट्या समूचे निमाड़, झाबुआ, अलिराजपुर, धार और होल्कर राज्य में आम जन के आदर और श्रद्वा का केंद्र बन गया था। टण्ट्या भील की वीरता के लोक गीत संपूर्ण निमाड़ में प्रचलित हैं। जन नायक टण्ट्या भील पर आधारित कुछ लोकगीत निमाड़ क्षेत्र में प्राप्त हुये हैं, वे इस प्रकार हैं -

## 2. गाथा टण्ट्या देवत की

।। श्री भैरवाय नमः।। कुल देवताय नमः।।
हिरदे राखूं सांच, शारदा गणपत नमन करुँऽ।
मात नरबदा खऽचरण पखारुँ, शिव शंकर खऽ ध्यान धरुँऽ।।
कुल देवत मखऽ जग्गत मामो, जेकी विरद वखाणं करुँऽ।
ढ़ोलक की कसना तान करुं, शब्दां मा हीमत मान भरुँऽ।।
गायां मायां खऽ रखवाळो , जकऽ टण्ट्या नाम कहावे छे।
सतियां खऽ सांच बचावे छे, दुखियां खऽ दुख मिटावे छे।।
जोऽ अमर व्है गयो जग भीतर, ओऽ सिद्व देवत केहवावे छे।
जवं वकत पड़े हेलो पाड़ो, झट दौड़यो - दौड़यो आवे छे।।
जेकी विरद खाणूं नमन करुं, घर - घर माऽ पूज्यो जावे छे।
दुखियारो भाऊसिंग बड़ो, जको मां अनेऽ बाप कहावे छे।।
मर गई मायण दुखियारी, जेने मरद टण्ट्यिो जायो छे।
मरदाणी थी भीलणी पूरी, सतियां खऽ सांच बचायो छे।।
जेन मंजूर करयो मरणो लेकिन , सत राख्या लाज बाई छे।
बाळक का मोह नहीं राख्यो, अम्बा नऽ लाज रखाई छे।।
रड़योऽ घण डाणा कर टण्टयो, केऊँ मरी गई माँ नऽ समझ पड़ी।
भाऊ मन - मन मां रड़ी उठियो, मर गई जीवणी जीव जड़ी।।
शिवा खऽ पाप कमायो छे, सत लूटण कपट रचायो छे।
केतरई सतियां पऽ लूट पड़ी, सतियां खऽ सत्त मिटायो छे।।
जीवणी पऽ घात करण आयो, झट झूमा झूट करणऽ लागो।।
तेकी आंखां से झालां फूटी, ओका रोम - रोम मऽसत जाग्यो।।
जीवण नऽ झट तंग्यो उठायो, झट तन कऽ खड़ी रही सामऽ।
जाणे अम्बा मां खऽ रुप धर्यो, कोई राकस खड़ो हुओ सामऽ।।
शीवो तो थर - थर कांप उठ्यो, झट प्राण बचई नऽ भाग पड़यो।
पाछां पलटी नऽ नई देख राक्यो, असो भाग्यो कोई हवा चढ़यो।।

थी काली रात अमावस की, हाथां पऽ हाथ न सूझ पड़े।
सत चढ़ी जीवणी ने धारयो , शीवा के पीछयां टूट पड़े।।
कुल पांच बरस का टट्या खऽ , घर छोड़ कालका दौड़ पडीं।
कै मरुं मार देऊ राकस खऽ, ले हाथ तंग्या जुद्व चढ़ी।।
पटलो तो हाथ नहीं आयो, घिर गई जीवणी घेरा मऽ।
घायल सिंघनी तलफ रई, शिवल्या खऽ बंद चुम्बेरा मऽ।।
सती मी राकस जीत्यो, घर भाऊसिंग खऽ टूट गयो।
दी फैंक सती खऽ,कुंड़लई, भाऊ खऽ धीरज खूट गयो।।
टण्ट्या खऽ नानपणो देख्यो, कालजा पऽ भाटो मेल लियो।
टण्ट्या खऽ गोद उठा रोयो, कुल देवत कसोऽ खेल कियो।।
मखऽ माफी दो कुल देवत जी , मखऽ हीमत दो उछाह भरो।।
मन का दुख मन मंऽ राख लियो ,जसा जहर पी गया सिव संकर।
ले टण्ट्या खेऽ घरनेऽ आयो, घर खऽ देख्यो आंखां भर - भर।।
बद्ला को रक्त उकळ उट्ठयो,  थारो बंस निपूतो कर देऊंगा।
तुखऽ काट - काट टुकड़ा कर देऊं, गिद्व अने कुतरां धर देऊंगा।।
सौगन उठा ली टण्ट्या की , टण्ट्या खऽ माथे हाथ धर्यो।
ई बालक काल बणे थारो, असो पूरो पक्को कोल कर्यो।।
छो भाऊसिंग तो गुणी घणो, छते गरीबड़ो भोलो थो।
थो जाणकार मवेशीनऽ खऽ, सस्तर खऽ बहुत कमेलो थो।।
टण्ट्या को पालण - पोसण, असो भाऊसिंग करवा लागो।
दी बण राड़ लोखन जसीऽ, न्हार ओसेऽ डरवा लागो।।
दांय - दांय कऽ जुत्थ बणां, टण्ट्यो सिकार पऽ जावे छे।
अस्तर - सस्तर की मार करे, एक दूजा खऽ सिखलावे छे।।
गामत्यो सस्तर सिखलावे, सब दाव घाव सिखलावे छे।
टण्ट्या पट्टी बांध आंख, अण चुक्यो तीर चलावे छे।।
कामठा खुद बणावे छे, खुद तीर कटार बणावे छे।
खुद कूद डूण्डया ऊंचा छे, नद्दी मऽ गोत लगावे छे।।
मछली जसीऽ नद्दी मऽतैंरऽ, लम्बी गुप गोत लगावे ले।
चढ़ घोड़ा पऽ मीलोमील, अंधड़ जसो उड़ जावे छे।।
भेस बदलवा को ओनऽ, गजब तरीको आवे छे।
नित नवी - नवी रंगत करले, नित अड़भंग स्वांग रचावे छे।।
अम्बा माता कऽ ध्यान करे, संकर का ध्यान लगावे छे।
अपनी मायड़ खऽ याद करे ,नवगजा खऽ जोत जलावे छे।।
भक्ति से पाग्यो शक्ति बहुत, उकेऽ कोई जाण न पावे छे।
टण्ट्यो तो कोई अवतरयो छे, उकेऽ मनखऽजाणा न पावे छे।।
भाऊसिंग पटेल खऽ हाली थो, रात दिवस बेगार करे।
खुद की खेती रहण रखके, पटेला खऽ कारोबार करे।।
खेती तो सबकी सब रेहण थी, सब सरदार अनऽ शिवाखऽ चाकरथा।

घर, घरवाली, छोरा - छोरी, सब पटेलां की दया मया पर था।।
सरकारी अफसर आ जाता तो , कुकड़ा बोकड़ा कट जाता था।
मऊड़ा की खालस दारु खऽ, पी - पी अनऽ रंग दिखाता था।।
इज्जत लुट जाती गरीबां की ,सतियां की लाज मिटाता था।
खा - पी अनऽ मोजां करता, मस्ती अनऽ रंग जगाता था।।
टण्ट्या की टोली घात लगा, मस्तयां पे हल्लो बोल दियो।
काली रात अंधीरी गऽ, माल घूस को खोल दियो।।
जवं दाव पड़े लूटण घाले, धन - धान लूट भग जावे छे।
कुण लूटे अनऽ कुण घात लगावे, कोई जाण बूझ नई पावे छे।
जवं शिवा पटेल खऽ खबर पड़े, टण्ट्यो सब गरद मचावऽ छे।।
छोंरां की जूथ बणाई के, डूंगर जंगल छुप जावऽ छे।।
मूंछा की रेख बणीजऽ कोनी, पण हल्लो बड़ो मचावऽ छे।
जंगल मऽ सुअर मारेइखऽ, न्हार खऽ भरी डरपावऽ छे।।
भाऊसिंग के हुकुम दियो, हाजर हो जाओ कचेरी मऽ।
कै तो रोको तमऽ छोरा खऽ, कै कोड़ा पड़े दपहरी मऽ।।
टण्ट्या नेऽ हुकुम सुणी लियोज गारी, आंखां फूटी झाल भुजा फड़की।
कानां सुदी ताणल्यो कामठो, जसऽ बादल बीजली कड़क पड़ी।।
भाऊसिंग पौहच्यो कचेरी मऽ , भर हाजरी दीन पुकारऽ छे।
भीलां का छोरा - छोरी तो , जंगल में जनम गुजारऽ छे।।
जंगल का कंद फल खावे अनऽ, जंगल का जनावर मारऽ छे।
तीर कमठो कांधे राखेऽ , जंगल मंऽ मौजा मारऽ छे।।
शिवा पटेल के झाल पड़ी, भाऊसिंग पऽ झट कीमड़ी चाली।
भरी दुफेरी जेठ मइनो, ताबड़ का मऽ कठबेड़ी ड़ाली।।
टण्ट्या खऽ खबर पड़ी फौरन, जा भाऊसिंग के छुड़ा लिया।
जो सामे पड़यो नी बच पायो, मार - कूट अनेऽ गुड़का दिया।।
आधी रात घर मऽ धंस ग्यो, बहियां पोटली बांधी छे।
भैंसा की गल दावां खोली, उनखऽ जंगल मऽ हकला दी छे।।
होळी बाळी दी बहियां की, राख नदी मऽ नरवादी।
धन नई चोर्यो,अन्न नई चोरयो, पण कर गयो पक्की बरबादी।।
छोरा - छोरी खऽ उक्सान दियो, बेगारी अब मत करजोरे।
अपणी - अपणी करो कमाई, अपणी खेती तमऽ करजोरे।
अपणी गावां अपणी भैंसा, अपणी गाड़र अनऽ बोकड़ी छे।
अपणी खेती हांको जातो, अपण धन अपणी रोकड़ी छे।
असोऽ सुणताऽज कमंठे तान चढ़ी, टण्ट्या की जै - जै कार हुई।
अम्बा माता को कौल हुवो, टोली झट से तैयार हुई।।
टण्ट्या सब खऽई समझायो, नइ इतरो जोश दिखाणो छे।
जब हम पे कोई जुलम करऽ, तवं एकठ हो डट जाणों छे।।
शिवाकी जसुदी, चानण बेटी, टण्ट्या का संग मऽ खेले छे।

बाळपणा की भोली उम्मर, दुख - सुख दोनई साथ छेले छे।।
उम्मर बढ़तांऽज प्रीत बढ़ी, जवं प्रीत बढ़ी परवण चढ़ी।
शिवा पटेल खऽ भान पड़्यो, तन मन अंगारा झाल पड़ी।।
ई खास बात अग जग जाणे, जसोदा रखेल की बेटी थी।
थी असल भीलणी की जाई थी, भीलण तवंऽभी बेटी थी।।
शिवा पटेल खऽ पाप चढ़यो, जसोदा पऽ खोटी नजर करे।
थी हिमत नई सुगती में, शिवा पटेल पऽ उजर करे।।
टण्ट्या जसोदा की जोड़ी थी, जसी अर्जुन अनऽ सतभाम्बा की।
जसुदा असी जस बीजल - चानण, जसी शिवजी अनऽ अम्बा की।।
शिवा पटेल खऽ खबर पड़ी, तो भाऊसिग खऽ पकड़ायो।
दे कोड़ा खूनाझार कर्यो, डाट्यो डपट्यो अनेऽ दुत्कारयो।।
नीच भीलड़ा की कई हिमत, पटलां खऽ घर पऽ नजर करे।
मर - मार खऽ खाल उधेड़ूँ, जो अवंऽ भीतर पांव धरे।।
बहती नद्दी कै रुक सकती, कै रुक सकती नरमदा माई।
सतपुड़ा पहाड़ कै नम पातो, तो नम जातो टण्ट्या कृष्ण कन्हाई।।
चानण खऽ घर पऽ कैद कर्यो, पहरो लगा दियो पक्को।
पहरा खऽ तोड़ टण्ट्यो घुस गयो, शिवो हुओ हक्को - बक्को।।
खूब मार लगी चावण खऽ, मुश्कां बांध दी काल कोठड़ी।
भाऊसिंग खऽ पकड़ जालमनऽ, बांध लगा दी कठबेड़ी।।
उतमाणा भैंसा खऽ दारु पिला, टण्ट्या का ऊपर छोड़ दियो।
टण्ट्या का आंगन खोद - खोद , खपरैल झोपंड़ो तोड़ी दियो।।
टण्ट्यो कूंद चढ़ गयो ओटले, भैंसा पऽ पूरी घात करी।
कूद झपट पकड़ लिया सींग, भिड़ गयो गजब की बात करी।।
सींग मरोड़ अनऽ गरदन मोड़ी, जमीन पऽ आड़ो ड़ाल दियो।
दो घड़ी मरद नऽ टक्कर ली, भैंसा नऽ गोड़ो ड़ाल दियो।।
ले तीर कमंठा चानण नऽ, भैंसा पड़ तीर झड़ी कर दी।
मर ग्यो ऊ उतमाणु भैंसो, सबने मिल घात बड़ी कर दी।।
भैंसो तो मर गयो मरयो नी, शिवा पटेल को गरब गरुर।
एलकार खब्बर ले पोंच्यो, थो पटेल दारु मऽ चूर।।
आग लगा दो नास पीट दो, पूरो मोइलो बरबाद करो।
मारो काटो रक्त बहा दो, कोई से भी नई डरो।।
भीला खऽ जा खब्बर कर दे, जा करऽ पूरी हिमत से।
जा बोले ओनऽ मोळ चुकानो, अपनऽ प्रान की कीमत से।।
भैंसो होयो ढ़ेर टण्ट्या खऽ, जै - जै कार होवा लागी।
बायरियां शिवा पटेल की, छाती पीट रोवां लागी।।
अब नी छोड़े टगील टण्ट्यो, रापारोल मचावेगा।
जो भी आवऽ सामे उनकेऽ, धूलम - धूल चटावेगा।।
अल्यांग खुशी मनावे भीलड़ा, ढ़ोल ढ़माके बाजे छे।

नाचे कूंदे गेरां गावे, किल्लकारी कर गाजे छे।।
भैंसो जसा कोई हाथी पड़यो, कै पहाड़ कोई टूट्यो छे।
कै तो कोई नखतर टूट्यो, आ जमीन पऽ फूटयो छे।।
मौज खुशी मऽ छोरा - छोरी, जम कै जश्न मनावे छे।
टण्ट्या चानण की जोड़ी की, अम्बा से कुशल मनावे छे।।
एतरा मऽ गामत्यो आयो, बोल्यो भाऊ बीमार पड़यो।
थर - थर कांपे बेसुध पड़यो, कोई जाणे जूड़ी ताप चढ़यो।।
घर के चांदे,पड़यो उगाड़ो, जसी कोई लहास पड़ी।
कोई पी गयो के मउड़ी, छक ने दारु खूब घड़ी।।
हमचार सुण दौड़ पड़या, गाऊ के काई होवे छे।
टण्ट्यो दौड़यो चानण दौड़ी, दाजी - दाजी कर रोवे छे।।
बेसुध्यो भाऊसिंग पड़यो, कोई समजे जीव निकल ग्यो वे।
बोले कोनी,हाले कोनी,................................।।
टण्ट्यो कुरड़ावे,दाजी - दाजी, आख्यां उघाड़ अनऽ बात करो।
ढ़ाड़स राखो टण्ट्यो आयो, अब तम कोई से नई ड़रो।।
आंखां उघाड़ी भाऊनऽ,टण्ट्या खऽ बिसूर -बिसूर देख अनऽ रोबऽ छे।
मूं तो चाल्यो रे बेटा टण्ट्या, अवं तो काई नी होवऽ छे।।
चानण ने ले संग टण्ट्या, गुप होजा डूंगर जंगल मऽ।
नई फंस जाजे रे फंस टण्ट्या, शिवा पटेल खऽ चुंगल मऽ।।
हीमत जोड़ अनऽ मुड़ने आवजे, पांछां अपणाज घर गाम मऽ।
पूरो बदलो लीजो नीच से, करेजऽज खतम हराम नऽ।।
एतरी वातां बोलतांऽज भाऊ, चुप होयो फेर नईच बोल्यो।
टण्ट्या के हिवड़ा मऽ बदला की, बीजू कड़की अनेऽ अंधड़ डाल्यो।।
मर गयो भाऊसिंग जणीज घड़ी, टण्ट्यो रोयो कुरला उठ्यो।
चानण खऽ हाथ कटार पड़ी......................।।
उठ गया हाथ सौ ऊपर झट, शिवा पटेल पऽ टूट पड़ो।
मत देर करो हल्ला कर दो, गोफण भाटा ज्यों छूट पड़ो।।
टण्ट्या नऽ झट हुंकार करी, मखऽ जावा दो हूं घात करुं।
मऽ शिवल्या से आमे - सामे, दो वार करुं, दो हाथ करुं।।
मखऽ दाजी को करज करवा दो, फिर मिल अनऽ सोच विचार करां।
कट - काट सबका माथा, चौगट्टे चौड़े जाय धरां।।
सबने झट कारज जोड़ ल्यो, भाऊसिंग की चिता चुणी।
कर दियो आग के जिम्मे सब,भाऊ थो जात को खूब गुणी।।
टण्ट्यो अवतारी भाणस छे, इ अटल भरोसो थो सब खऽ।
अम्बा इनखऽ इस्ट बड़ो, टण्ट्या तो नायक थो सब खऽ।।
अपण मायड़ खऽ हेलो दे, झट प्रगट सरग से हो जावे।
माथा पे फेरे हाथ मारुणी, अलाय - बलाय मिटा जावे।
एक ठौ भैंसो कई,दस भैंसा का बल वीर टण्ट्या मऽ।

दस ठो तुरंग की तेज गति, अनऽ गुरंड़ वेग छे टण्ट्या मऽ।।
सब चसल्या गया अणे - अपणे, टण्ट्या नऽ मरणे धार लियो।
चानण खऽ घर मजऽ रोक दियो, खुद पटलां का नऽ घर कूद गयो।।
कर दियो धूल धाणी सगलो, दी आग लगा आड़े - बाड़े।
शिव पटेल खऽ ललकारयो, आ जा सामे चौड़े धाडे।।
दी ठोकर सब खऽ  जगा दिया, सब कऽ  पग माथा फोड़ दिया।
सूरज ऊगे ओसेऽ  पेयलऽ ,ले चानण टाण्ड़ा छोड़ दिया।।
नाम बदल लियो भेस बदल लियो,जा पहोंच्यो देस पराये मऽ।
दोनईऽ पोमली पोमल्यो, जा पउंच्या एक सराय मऽ।
अम्बा माता का मंदर मऽ,कर लयो कोल पूरो पक्को।
शिवां खंऽ वंश मिटा देवांऽज जवं लेवांऽज झक पूरो नक्को।।
कुछ बरस गुपचुप रहकर ,अपणो इक जुत्थ तैयार करां।
धन, लूट करी, सत लूट लियो, उनखऽ लूटा अनऽ मार करां।।
जा पहुंच्या जंगल खोहा में, नदी तीर रहबा लाग्या।
पांच बरस गुपचुप रह अनऽ, आ बसयो अपणे गांव तले।।
न्हार सरीखो टण्ट्या ड़ोले, बस गयो आपणी छांव तले।।
खेत हांकवां की टण्ट्या नऽ, जोड़ी जुगत भंड़ाण करी।
शिवा पटेल का एलकार,जा पोइच्या अनऽ टंटाण करी।।
चाल्या लट्ठ तलवार चली, टण्ट्यो झट टूट पड्यो गाठो।
सग भाग गया कुट्या - पिट्या, टण्ट्यो तो हो गयो छे रांठो।।
तीन फसल कमाई टण्ट्या खऽ, अपणे खेता पर डट्यो रहो।
जोर जबरनी चाल सक्यो,तवं कपट चलायों पटलां ने।
रपट लिखा अनऽ कैद करा दी एक बरस की पटलां ने।।
कैद भोग अनऽ टण्ट्यो लौट्यो, जा पोखर गांव बस्यो खुदके।
थी खेती भाऊ की पोखर मऽ, ली हांक भरोसे से खुदके।।
खेती थी कब्जे जमींदारां कऽ, जोर जबर पण नी होयो।
विरदा को किसो सब जाणे, सरदार शिवाजी कई नई होयो।।
खेती हांक मजूरी करके, गुजर अपणे करतो थो।
निडरयो नीचीत्यो होके, हल कांधे उठा निकरतो थो।।
जमींदारां के झालां पड़ती, ई भीलड़ो मूंटां वट घाले।
तीर कमंठा कांधे रखे, रजपूतां जसो तन के चाले।।
रजपूतां ने कर ली एकठ, टण्ट्या से गांव छुड़नो छै।
खेती से बेदखल करके,एखऽ सतपुड़ा से गुड़कानो छे।।
टण्ट्या ने बैर नहीं ठान्यो, हीरापुर गांव चल्यो गयो।
राजपूत बांवला यों समझया, टण्ट्यो डर के भाग गयो।।
टण्ट्यो समय की राह तके, एकट की तैयार मऽ थो।
सब करनी करवा दो उनखेऽ, ऊ तोऽ अपनी बारी में थो।।
रांड़ रैड़ापो काटे छे, पण रांड़्या नी काटण दे।

दुशमण टण्ट्या खऽ चुपचाप,जिनगी खऽ नी काटण दे।।
वल्यांग जुत्ाि चानण, राणी, गांव - गांव तैयार करऽ।
अपणी करणी की सब खब्बर, टण्ट्या खऽ दे हुसियार करऽ।।
चानण गुप एक गुफा भीतर, भेस बदलकर रहती थी।
टण्ट्या से बहुत देर थी ऊ, जल्यांग सुक्ता नदी बहती थी।।
बसता था गुरु सीबा बाबा, सब देख रेख बाबा करता।
टण्ट्या - चानण दोई को , शीबाजी, रक्षा ध्यान करता।।
गुरु की कंठी कंठ मऽ धारी थी, अम्बा माता खऽ नेम लियो।
जुल्म्या को जुल्म मिटावा को,बाबा ने पक्को नेम दियो।।
बाबा ने कहयो सुणो बेटा, पाप बढ़ गयो छे भारी।
सूरज सत घिर गयो बदलां से,हो गयी छे रात अंधियारी।।
गरीबां पऽ दुख पड़ो भारी, सब जुल्म करे सतावे छे।
गरीब नंगा भूखा छे, धनवान धाप ने खारे छे।।
तमखेऽ अपणो जुत्थ जोड़, घर - घर मा अलख जगाणे छे।
अपणी रक्षा खुद आप करो, असो सबखऽ समझाणो छे।।
शीवा बाजी को हुकुम झेल, चल पड्या धरम जुद्व करवाने।
गरीबां खऽ जाग जगवा खऽ, सत - धर्म की रक्षा करवाने।।
टण्ट्यो रहगो चुपचाप, नजर सबकी टण्ट्या पर सटी रही।
चानण मरद को वेश धरे, काला तुरंग पर डटी रही।।
ले तीर कमंठो खांदा पर, गाम - गाम मऽ जावे छे।
शीवा बाबा परवाणो, ओका पूरो कर आवे छे।।
टण्ट्या चानण दोनाई,गुपचुप जंगल ,डूंगर मा मिल जावे
तवं तक तो मन मसोसणो छे, जवं तक सुरज न निकल आवे।।
सब टण्ट्या मा उलझाया था, टण्ट्यो तो अपणो काम करे।
चानण रानी गुपचुप उल्यांग, अपणा काम करे।।
हीरापुर मऽ चोरी को कलंक, टण्ट्या पर साबित हो न सक्यो।
सुभान के घर की चोरी में, जालिम सिंह के बयान पऽ कैद हुयो।।
चानण संदेश भेज्यो, कुछ बरस गुपत हुई जाणो छे।
अंग्रेजी पुलिस खऽ चुंगल से , कुछ बरस दूर हुयी जाणो छे।।
टण्ट्या ने छोड़ दियो निमाड़, होल्करी राज्य मऽ जा पोइच्यो।
गुपचुप रह के करनो धरनो, अपणे मन से जा सोच्यो।।
कुल बरस चार गुप रहयो मरद, एक जुथ जोड़यो जोरदार।
मौको देख चढ़ टूट पड़े, कर लेवे थोड़ी मार धार।।
होल्करी राज्य मेऽ आन मिल्या शीवा जी साँचा गुरु देव।
कह गया न होजे परगट, भेस बदल के करजे करम सेव।।
पड़ गयो काल बड़ो भारी, अन्न जल मिलनो दुश्वार हुयो।
टण्ट्या खऽ भारी डाक चूक, साहूकारां खऽ हाहाकार हुयो।।
लूटयो अन्न गरीबां खऽ, बांटे छे टांड़े गाम गाम।

कै पेट भरे टण्ट्यो मामा, कै जग खऽ पाले श्री राम।।
टण्ट्या की जै - जै कार हुयी, दुशमण हुयी गयी सरकार बड़ीऽज।
सब दिन में अपणे घर जावे, जुण रात करे फटकार बड़ीऽज।।
थो गदर मच्यो संतावन को, फिरंगी खऽ मारा - मार पड़ी।
लच्छमी बाई झांसी वाली, बण मरदानी तुरंग पर जंग चढ़ी।।
दग्गा से भर गयी मरदानी, जुत्थ रानी को बिखर गयो भारी।
तात्या टोपे भाग्यो - भाग्यो, होल्करी फौज पर होयो भारी।।
तात्या टण्ट्या की मुलाकात, ओ गदर काल में खूब बणी।
टण्ट्या मदानी हिमत से ,तात्या की जोड़ी खूब बणी।।
तात्या होल्कर से निकल पड़यो, कर मार - काट निमाड़ गयो।
कर पार नर्मदा नदी के, कुछ काल ओहऽ खरगोन रहयो।।
नौ ग्रह का मोटा मंदर मऽ, नब्बे दिन तक मुक्काम करयो।
टण्ट्या ने मदद करी भारी, खुट गयो खजानो खूब भरयो।।
लूब् - पाट के भग जानो, दुशमण के हाथ नहीं आणी।
छापामारी युद्व कला, टण्ट्या ने तात्या से जाणी।।
दक्खिन ने तात्या जा न सक्यो, लियो फिरंगी ने घेरो।
टण्ट्या ने दियो भरोसो बड़, हउ पार लगा देऊं बेड़ो।।
तात्यो घबरा उठ्यो भारी, टण्ट्यो कोई मारग खोज करो।
संगी साथी घबराई गया, हीमत अनेऽ थोड़ी ओज भरयो।।
टण्ट्या ने छाती ठोंक कहयो, तूखऽ घेरा से पार करा देऊंगा।
बेड़र हों चाल पड़ो फौरन, तूखऽ सीपुरी तक पहुंचा देऊंगा।।
जय बोल नरमदा मैया की, अम्बा माता की आन करी।
मायड़ खऽ शीश नमयोऽ ने, शीबा बाबा सो अरदास करी।।
बंसवाड़ा जंगल पार करा, मेवाड़ी सीमा तक साथ रहयो।
टण्ट्यो पलटयो नीमाड़े, पांचों साथी खऽ साथ करयो।।
केवेछे कोई दगाबाज ने, दग्गा से तात्या पऽ घात कराई थी।
कोई रजपूतो थो मानसींग, अंग्रेजा ती वात धराइ थी।।
भारत मऽ जितरा वीर मरया, सब दगा बाज नऽ मार्या छे।
अभिमन्यु सरखा महारथी, दग्गा बाजां नऽ संधार्या छे।
टण्ट्या पोइची गयो सुक्ता तीर, शीबा जी खऽ करयो नमन।
अम्बा खऽ बली चढ़ाईज, भैरव जी खऽ करयो नमन।।
फिर मगाम - गाम मा जा पहुंचया, ले संग पोमली राणी खऽ।
हर गाम बणाया जूथ, करया तैयार पोमली राणी खऽ।।
छोरा- छोरी अनऽ मुटियार सबखऽ, हर तरह लिया तैयार बणा।
जणऽ गाम मचाणो होय हल्लो, जा पहुंचै दो खऽ तीन जणा।।
झट जुड़े जुवाना को जमघट, लूटे छे पटलां सउकारां खऽ।
अंग्रेजा का लुटे छे दलाल, छूटे छे पापी जमींदारां खऽ।।
सब माल लूट के जठईऽज बांट, गरीबां खऽ कर दे मालो - माल।

अणाधाप्या खऽ धाप्यो कर दे, अघाया का कर दे कंगाल।।
पूरा निमाण का गाम घणा, कतरा गणवाऊ हद करीऽज।
जा लुटया हल्लो कर करके, लूटण मारण की हद करीऽज।।
निमाड़ कई होल्कर लूट्यो, बैतूल होशंगाबाद तलक।
भीमा नायक से जोड़ जमा, लूटण की सोची चार मुलक।।
खान देश को खाज्या नायक, टण्ट्या खऽ संग वचन करयो।
मेवाड़ मऽ अरावली डूंगर सब, भील जात पऽ कौल धरयो।।
यों करताऽज करतांऽज लूटपाट, देह थकवा मऽ होयो।
दुशमण सगळा मर खुट ग्याऽज, शिवा को वंश खतम होयो।।
उमर को भी आयोऽज उतार, संगो साथी सब छूट गया।
बीजन्या खऽ फाँसी हो गी, दोल्यो कालेपाणी टूट गया।।
तान्या, मान्या,टीपन्या,नरसिंगो,हरलयो,हरबोलो,बच्या रहयाऽज।
मालगुजार अनेऽ हीमन पटेल को गोविंदो, गोली कटार की धार गयाऽज।।
बेगारी सगलां की छूट गई, खेती सबकी अपणी रहइ गईज।
सब अणो घान कमावे छे,मन मौज आपणी रहइ गईज।।
बामण गावां अनऽ गरीबां खऽ, रक्षा सदा करीऽज।
तिरिया दुश्मण खऽ भी थी तवं, तेकी लाज धरीऽज।।
जमींदार,साउकार फीरंगी खऽ, नकेल नाक में ड़ाली।
मायड़ - दाजी खऽ वचन निभायो, पटलां की............।।
थी पोमल की फौज बड़ी, सब खऽ आगे चालेज।
खुद की लाज खुद ही राखेज,सब खऽ....।।
एक बात न हो सकी पूरी, अपणो राज जमाणे की।
एक घात जो हो न सकी, फिरंगी राज मिटणे की।।
एक बात जो सोची थी, भील राज कायम करनोज।
अल्यांग लगाई नऽ वल्यांग तलक, भील कौम को जस धरनोज।।
देश बने आजाद फिरंगी, सात समंदर पार भगोड़ोज।
छीना छपटी अने,बेगारी सू भील जात आजाद कराणोज।।
साऊकाएं जमींदारां खऽइ, जोर जुळम नित - नित होताऽज रहया।
भील अपणों हक अनऽ इज्जत पीढ़ी - पीढ़ी खोताऽज रहया।।
तवं आजादी खऽ मकसद, टण्ट्या खऽ समझ न आवऽ छे।
भील गुलामी मऽ जनमे, गुलामी मऽ मर जावऽ छे।।
फीरंगी भग जावेइ तो बात समझ मऽ आवऽ छे।
भील कौम बेगार करे क्यों, इ कोई नई समझावऽ छे।।
जो हो सक्यो कर दियोज् घणो, संग थक्यो उमर थकी।
अगली पीढ़ी पर आस धरी, अपणी मन की मनमऽ रही।।
गण्पत्यो सालो धर्म भाव, राखी को बंधन पक्को थो।
बइना के राखी बंधन खऽ, हर बरस वचन इ पक्को थो।।
करी मेहमानी पूरी - पूरी, दारु को शीशो खोल दियो।

टण्ट्यो दारु नी पीवे, दारु को शीशो बंद कियो।
खीर मऽ जहर मिला रखी, नशा को दूणो घोल कियो।
हो गयो नसा मऽ बेसुधो, टण्ट्यो खातां बेबोल हुयो।।
गणपत खऽ दगो करयो पूरो, बंदूक में पाणी डाल दियोऽज।
तलवार कमर से काढ़ ली, तीर कमठो वां से हटाई लियोऽज।।
जा बाहर हाथ इशारा से, थाणेदार खऽ चेतावनी करीज।
घेरो पुलिस को पक्को थो,.......................................
गणपत अनऽ मुंह बोली बेना ने , टण्ट्या की मुश्कां बांधी थीऽज।
फीरंगी अरु गणपत रजपूत नऽ, पाप खीचड़ी रांधी थीऽज।।
पण टण्ट्या की टोली थी चौकस थी, चारु मेर छुपी खड़ी।
पलटण पऽ टूट पड़या सगळा, पळटण पऽ गोली तीर की मार पड़ी।।
कर मार काट भरपूर बहुत, टण्ट्या बिग्रेड़ की फौज डटी।
मारम मार तो खूब मची,ण फौज फीरंगी नई घटी।।
मरदानी पोमल राणी झट , कर मारकाट अंदर घुसगीऽज।
खिड़की से कूंद पड़यो तान्यो झट, टण्ट्या सरखी बरदी सलीऽज।।
पड़ गयो जमीं पऽ तान्यो झट, टण्ट्या को पूरो रुप किरयो।
पोमल नऽ  ठाल्यो टण्ट्या खऽ झट से तुरंग में ड़ाल लियो।।
एक बार करयो कसी नऽ खड़ग को ,गणपत को माथे उड़ा दियो।।
पोमल तुरंग मऽ यो शोभे, जस सिंग विराजी जगराणी।
झांसी - राणी जसी हीमत से, निकल भाग गई पोमल राणी।।
कद आई कद निकल गई पोमल, बिजली अंधड़ जस आयो छे।
तान्यो फौज का हाथा मऽ, जाणी बूझ के पकड़ाण्यो छे।।
सब खेल खतम होते दिख्यो, सब हार जीत खतम दीखी।
अपणी इज्जत बचावण खऽ खातर, तान्या खऽ टण्ट्या मान लियोज।
टण्ट्यो पकड़ा गयो,रपछ करी, फीरंगी ने असऽ मान लियोज।।
टण्ट्या खऽ कोई न पेइचाणऽ, जो पेइचाणऽ चुप चाप रहयोऽज।
टण्ट्या खऽ संगी साथी ने, जा टण्ट्या की पहचान करीऽज।।
जबलपुर में चल्यो मुकदमो, फांसी को पक्को हुकुम करयोऽज।
धन्'य रे ताना वीर मारुणी धन्य हुयी, मरबा सी तू नी ड़रयोऽज।।
टण्ट्या खऽ मौत की खबर सुणी, सब ओर हाहाकार मची गयोऽज।
बेना को तो भाई मर ग्यो, पण भीलां को इतिहास रच गयो।।
सूत्या के भाग जगा ग्यो छे, भीलां के मान बढ़ा गयो छे।
सतियां खऽ कर ग्यो मान, जालमा खऽ सबक सिखा गयो छे।।
पण टण्ट्यो तो पेमल के संग, खोहमऽ विश्राम करे छे।
नित शिवा की समाध खऽ नमन करे, अम्बा खऽ सेवा सेवे छे।।
भेरु खऽ सेवे भाव करे, सुक्ता नदी में न्हावेऽ छे।
मायड़ दाजी की याद करे, दुख मऽ आंखो भर आवेऽ छे।।
साधु बण खऽ गुमनाम रहयो, टण्ट्यो संग पेमल राणी खऽ।

कर भेस साध को टाण्टमऽ, आयो कई बार मिजवानी खऽ।
मर गया समय - परवाण दोई, बेटो सुकतन्योपतो चाल्योऽज।
भीलां के नायक ने उनकऽ, अपणोऽज् मान खऽ पालयोऽज।।
टण्ट्या तो आज भी जींदो छे, हेलो करता आ जावेऽ छे।
घरोघर मान धरावे छे, कुल भेरु पुज्यो जावेऽ छे।।
व्हे रोग ,शोक,डाकण परेत,टण्ट्या की तांत भगावेऽ छे।
टण्ट्या पोमल सत राखेऽ छे, सतियां खऽ मान बढ़ावे छे।।
कोई भूल चूक पड़ जावे जद ,टण्ट्या की आन लगावे छे।
गायां की चोरी हो जावे,टण्ट्यो घेर अनेऽ लावे छे।।
मत गरजे टण्ट्या जती सती, भटक्यां खऽ राह बताजे तू।
जद हेलो करो मुसीबत मऽ, झट पट परगट हुइ जातेऽतू।।

0ध्ध्ध्ध्ध्0

यह रचना निमाड़ी बोली में रची गई है। इसका रचना काल 1957 वि. है। यह रचना लगभग बीस वषरें तक वाचिक परंपरा में जीवित रही। इस रचना के रचयिता अम्बा लाल भुवाई नायक हैं। इस गाथा के प्रारंभ में स्तुति छंदों को देखने पढ़ने से यह आभास भी होता है कि इसका सृजक निश्चित ही लोक गायक रहा होगा। प्रथम शारदा वंदन और फिर गणपति वंदन की परंपरा वंश परंपरा के काव्य सर्जक चारणों, भाटों,भोपों व भुवाई रचनाकारों में ही रही है। यह कृति भीकम जी मोरे के पास बिजलोई,धार में उपलब्ध है। यह कृति टण्ट्या के जीवन चक्र का सही - सही बखान करती है। इसमें वर्णित घटनाओं की पुष्टि उन संस्मरणों से भी होती है। जो पूरे निमाड़ मालवा और उधर झाबुआ,बैतूल, होशंगाबाद और सुदूर राजस्थान के कई अंचलों में जन - जन में थोड़े बहुत अंतरों से आज भी सुने सुनाये जाते हैं। इसलिये यह गाथा अधिक प्रमाणिक लगती है।

गीतार्थ :

मैं हृदय में सच्चे मन से शारदा एवं गणेश जी का नमन करता हूं। माँ नर्मदा जी के चरण पखारकर भगवान शिवशंकर का ध्यान धरता हूं। मैं कुल देवता और जगत मामा के वृतांत का वर्णन करता हूं। ढोलक की रस्सी को तानकर,शब्दों का संयोजन कर,अपने परिवार के रखवाले जिसका नाम टण्ट्या है। जिसने सतियों के सत्य की रक्षा की, दुखियों के दुख हरे। जो इस संसार में अमर हो गया। वह सिद्व देवता कहलाने लगे। जब किसी पर मुसीबत पड़ती है तो वह दौड़कर आ जाते हैं।मैं उन्हीं के वर्णन का बखान कर रहा हूं। जो घर - घर में पूज्यनीय हैं। जिनके पिता भाऊसिंग हैं। जिस मॉ ने टण्ट्या को जन्म दिया था। उसकी मृत्यू हो गयी थी। उसकी भील मॉ वीरांगनी थी। जिसने सतियों के सत्य की रक्षा की थी। जिसने सत्य के लिये मरना स्वीकार किया, लेकिन सत्य की लाज बचा ली। उसने अपने पुत्र का मोह नहीं रखा। उसकी

मॉ जगदम्बा ने लाज रखी। टण्ट्या की मॉ की जब मृत्यू हुई तो उस समय टण्ट्या को कुछ समझ नहीं आया। टण्ट्या के पिता भाऊसिंग अपनी पत्नी की मृत्यू से बहुत दुखी थे।

शिवा पटेल नाम के पापी राक्षस ने क्षेत्र में भयानक अत्याचार मचा रखा था। उसने सतियों के सत्य को लूटने का कपट रचाया था। उसने न जाने कितनी अबलाओं की इज्जत लूट ली। टण्ट्या की मॉ जीवणी पर शिवा ने अघात किया ,दोनों में झूमा - झपटी हो गई। उसकी आंखों से आग की चिंगारी निकल रही थी। टण्ट्या की मां जीवणी ने हाथ में कुल्हाड़ी उठाई और साक्षात दुर्गा का रुप धारण कर उस राक्षस के सामने खड़ी होकर ललकारने लगी। शिवा जैसा राक्षस उसे देखकर थर - थर कांपने लगा। वह अपने प्राण बचाने के लिये भागने लगा। शिवा पीछे मुड़कर देखता और हवा के समान दौड़े जा रहा था।

उस दिन अमावश्या की काली रात थी। हाथ को हाथ नहीं सूझ रहा था। जीवणी शीवा राक्षस के पीछे दौड़ रही थी। वह पांच वर्ष के टण्ट्या को घर में छोड़कर कालका का रुप धारण कर शिवा के पीछे दौड़ रही थी। उसके हाथ में कुल्हाड़ी थी ,उसने आज प्रण कर लिया था की आज मैं उस राक्षस का वध करके ही रहूंगी। इसके लिये मुझे चाहे अपनी जान क्यों न देनी पड़े। परंतु अंधेरी रात में वह राक्षस जीवणी के हाथ में नहीं आया और वह दुश्मनों से घिर गयी। वह घायल शेरनी की तरह तड़फ रही थी। राक्षसों ने उसे चारों तरफ से घेर लिया था। उस राक्षस ने सती जीवणी का वध कर दिया। सती मर गई और राक्षस जीत गया। जिसके कारण भाऊसिंग की घर गृहस्थी टूट गई।सती को कुंड़ में फैंक दिया। जिसके बाद भाऊसिंग का धैर्य जबाव देने लगा। नन्हें टण्ट्या को देखकर उसका कलेजा फटने लगा। वह टण्ट्या को गोद में लेकर रोने लगा। और कहने लगा हे कुल देवता आपने यह कैसा खेल रचा है। हे कुल देवता मेरी भूल - चूक को माफ करो। आप मेरे वंश को बचा लो। हे देवता मुझमें हिम्मत दो। टण्ट्या के पिता ने दुख को अपने हृदय में धारण कर लिया। जिस प्रकार शंकर भगवान ने जहर का सेवन किया था।

भाऊसिंग टण्ट्या को गोद में लेकर घर आ गया। वह आंखों में आंसू भर - भर कर अपने घर को देखने लगा। टण्ट्या के पिता का रक्त बदला लेने के लिये हिलोरें मारने लगा। उसने कहा मैं इस राक्षस के वंश को नष्ट कर दूंगा। उसके शरीर के टुकड़े - टुकड़े कर दूंगा। उसके मांस को गिद्वों के सामने खाने के लिये रख दूंगा। उसने अपने पुत्र टण्ट्या के सिर पर हाथ रखकर कसम खाई और कहा यही बालक उसकी मौत का कारण बनेगा। टण्ट्या के पिता भऊसिंग गुणवान व्यक्ति थे। परंतु अतयंत भोले और गरीब थे। वे पशुओं के अच्छे जानकार थे।

भाऊसिंग अपने पुत्र टण्ट्या का पालन पोषण करने लगा। इस प्रकार टण्ट्या बड़ा होने लगा। वह जंगल में शिकार खेलने जाने लगा। उसके मित्र युद्व कौशल एक दूसरे को सिखलाने लगे।टण्ट्या ने युद्व कौशल के सभी दांव - पैंच सीख लिये। वह अपनी आंखों में पट्टी बांधकर अचूक निशाने लगाने लगा। वह धनुष - बाण स्वतः तैयार करता था। वह बहुत ऊंचाई से नदी में गोता लगा लेता था। वह नदी में मछली के समान गोता लगाकर तैरता था। वह घोड़े पर सार होकर आंधी के समान उड़ जाता था। वह वेश बदलने में प्रवीण था। वह नित्य नये - नये वेश बदलता था। वह माँ दुर्गा और शंकर जी की अराधना करता था। उसको भक्ति करने से बहुत शक्ति प्राप्त हुयी। जिसे कोई नहीं जान पाया। टण्ट्या के पिता भाऊसिंग गांव के पटेल के यहां नौकरी करते थे। उनकी जमीन पटेल के पास गिरवी रखी थी। वह पटेल के कारोबार

में हाथ बंटाता था।घर के सभी लोग पटेल के घर में नौकरी करते थे। वे पटेल की दया कृपा पर निर्भर थे।

उस समय गांव में कोई सरकारी अधिकारी आ जाता था। तो उसकी सेवा के लिये मुर्गे और बकरे काटे जाते थे। सरकारी अधिकारी महुआ की शराब पीकर गांव वालों पर रौब जमाते थे। अंग्रेज अधिकारी गरीबों की इज्जत से खेलता था। वे सतियों की लाज मिटाते थे। टण्ट्या के मित्रों की टोली ऐसे अधिकारियों की घात में रहती थी । अधिकारी जैसे ही नशा में मदहोश होते टण्ट्या की टोली उस पर धावा बोल देती थी। काली रात के अंधेरों में इनकी टोली घूसखोरों का सारा धन उड़ा कर ले जाती थी। इनको जहां भी लूटने का मौका मिलता वे धन लूटकर भाग जाते थे।

जब शिवा पटेल को यह बात मालुम पड़ी की यह सब लूट - पाट का काम टण्ट्या भील का है, उसने अपने हम उम्र के लड़कों की टोली बनाई है और वे रात को लूट कर जंगलों में छिप जाते हैं।टण्ट्या की टोली में सभी नवयुवक थे। जिनकी मूंछों की रेख तक नहीं निकली थी। उन नवयुवकों ने पूरे क्षेत्र में आतंक मचा रखा था। वे जंगल में जा कर सुअर का शिकार करते ,वे शेर से भी नहीं ड़रते थे। शिवा पटेल ने टण्ट्या के पिता भाऊसिंग को आदेश दिया कि वह पटेल की कचहरी में हाजिर हो जावे तथा अपने लड़के को ऐसे कृत्य करने से रोके नहीं तो उसे कोड़ों की सजा दी जावेगी। टण्ट्या ने जैसे ही यह आदेश सुना । उसकी आंखें और भुजा फड़कने लगीं। उसने अपना तीर कमान निकाला और बिजली चमकने की तरह दहाड़ने लगा। टण्ट्या के पिता भाऊ सिंग हाजरी देने कचहरी में पहुंचे तो उन्होंने पटेल से कहा भीलों के लड़के - लड़कियां तो जंगल में ही अपना जीवन गुजारते हैं । वे जंगलों के कंद - मूल खाते हैं और जानवरों का शिकार करते हैं। वे अपने कंधों में तीर कमान रखकर मौज मनाते हैं।शिवा पटेल ने एक चाल चली। उसने टण्ट्या के पिता के पैरों में भरी दोपहरी में लकड़ी की बेड़ियां ड़ाल दी। जैसे ही टण्ट्या को इस बात की खबर मिली। वह अपने साथियों के साथ अपने पिताजी को छुड़ाने पहुंच गया। उसके सामने जो भी आया उसे बुरी तरह मारा - पीटा। टण्ट्या और उसके साथी आधी रात को पटेल के घर में घुस गये। उसने पटेल के बही - खातों में एक पोटली में बांधा। उसने पटेल की भैंसो के गले से रस्सीयां छोड़ दी और उनको जंगल में भगा दिया। उसने पटेल के बही - खातों की होली जला दी। उसकी राख को नदी में बहा दिया। जिससे उसकी पक्की बरबादी हो गयी। उसने अपने क्षेत्र के लड़के - लड़कियों को उकसा दिया कि वे पटेल की बेगारी न करें। वे अपने - अपने खेतों में काम करें और अपनी ही खेती में ध्यान दें। वे अपनी खेती, गाय, बैलों, भैंसों और गाड़र, बकरियो को जोतें हांकें। अपने धन को अपने पास रखें। इतना सुनते ही भीलों ने अपने धनुषों में तीर चढ़ा लिये और टण्ट्या की जय - जयकार करने लगे। सभी भील युवक अम्बा माता की जयकारा करते हुये उन्होंने अपनी टोली तैयार कर ली। टण्ट्या ने सबको समझाया कि आप लोग अभी इतना जोश मत दिखलाओ। जब हम लोगों पर कोई जुल्म करेगा तब सभी लोग एकत्र हो जाना।

शिवा पटेल की रखैल की एक बेटी थी। जिसका नाम जसोदा था। वह बचपन में टण्ट्या के साथ खेली थी। बालपन की भोली उम्र के सुख - दुख दोनों ने एक साथ झेले थे। जैसे - जैसे दोनों की उम्र बढ़ी तो उनका आपस का प्रेम भी बढ़ा। जब वे दोनों आपस में प्रेम करने लगे।तो यह बात शिवा पटेल को मालुम पड़ी। तो उसके तन - मन में आग लग गई। एक खास बात यह थी जिसे सभी जानते थे कि जसोदा रखैल की बेटी है। उसकी मां सच्ची भीलनी थी।

जसोदा उसकी पुत्री थी। शिवा पटेल के मन में पाप आ गया। वह अपनी ही पुत्री पर बुरी नजर रखने लगा। परंतु शिवा पटेल में इतनी हिम्मत नहीं थी कि वह यह बात किसी के सामने कह सके। टण्ट्या और जसोदा की जोड़ी ऐसी थी जैसे की अर्जुन और सत्य भाभा, शिव और पार्वती की जोड़ी ! जब शिवा पटेल को इस बात का पता चला की टण्ट्या उसकी बेटी से प्रेम करता है तो उसने टण्ट्या के पिता भाऊसिंग को पकड़वा कर उसे बहुत ड़ॉटा और कोड़ों से मारा। उसने कहा की नीच भील की यह हिम्मत की वह पटेलों के घर की तरफ हिम्मत कर सके। उसने अब मेरे घर की तरफ देखा भी तो मैं मार - मार कर टण्ट्या की खाल उधेड़ दूंगा।

क्या बहती नदी रुक सकती है,क्या सतपुड़ा पर्वत झुक सकता है,क्या नर्मदा जी का बहाव रुक सकता हैं यदि यह सब हो सकता है तो टण्ट्या भी पटेल के समक्ष झुक जाता। शिवा पटेल ने जसोदा को घर में कैद कर दिया। उसने घर के सामने पहरेदार बैठाल दिये।इसके बाद भी टण्ट्या पहरा तोड़कर घर में घुस गया। जिसे देखकर शिवा पटेल हक्का - बक्का हो गया। जसोदा को खूब मार पड़ी। उसे बंदी बनाकर काल कोठरी में ड़ाल दिया गया। शिवा ने भाऊसिंग को पकड़कर उसके पैरों में लकड़ी की बेड़ीयां पहना दी। उसने एक उन्माद भैंसा को शराब पिलाकर टण्ट्या के ऊपर छोड़ दिया। उस उन्मादी भैंसा ने टण्ट्या के आंगन को खोद ड़ाला।उसने टण्ट्या की खपरे वाली झोपड़ी को तहस - नहस कर दिया। टण्ट्या ओटले पर चढ़ गया। उसने भैंसे पर नजर रखी और वह उचक कर भैंसे के ऊपर चढ़ गया । उसके दोनों सींग पकड़ लिये। टण्ट्या भैंसे से युद्व करने लगा। उसने भैंसे की सींग और गर्दन मरोड़ दी और उसे उठाकर पटक दिया। दो पल में टण्ट्या मर्द ने भैंसा को अपने पैरों तले ड़ाल दिया। जसोदा की मॉ चानण ने तीर कमान उठाकर भैंसा के ऊपर तीरों की बरसात कर दी। उन्मादी भैंसा मारा गया। भैंसा तो मरने को मर गया पर शिवा पटेल को अपने भैंसा पर बहुत घमंड़ था। उसके मरने की खबर जब शिवा पटेल को मिली उस समय वह शराब के नशा में चूर था। उसने अपने करिंदों से गुस्से में कहा जाओ इनके घरों में आग लगा दो। पूरा मोहल्ला जला दो। किसी से मत ड़रो मारो काटो खून की नदियां बहा दो। जाओ भीलों को खबर कर दो की उनको अपने प्राणों की बली देकर भैंसा का मूल्य चुकाना पड़ेगा।

भैंसा के मरते ही टण्ट्या की जय जयकार होने लगी। शिवा पटेल के परिवार के लोग छाती पीट - पीट कर रोने लगे और कहने लगे ,अब टण्ट्या किसी को भी नहीं छोड़ेगा। वह भयंकर उपद्रव मचायेगा। जो भी उसके सामने आयेगा उसे धूल चटायेगा। भैंसा के मरते ही भीलों ने अतयंत खुशी मनाई। सभी जगह ढ़ोल - ढ़माके बज रहे थे। लोग खुशी से नाच कूंद रहे थे। वह विशाल भैंसा जमीन पर मरा पड़ा था। वह हाथी के समान दिख रहा था। उसकी मृत देह देखकर ऐसा लगता था कि जैसे कोई पहाड़ गिर गया हो। सभी लड़के - लड़कियां मौज - मस्ती मना रहे थे। सभी लोग टण्ट्या और चानण की जोड़ी बनी रहे ,इसके लिये मॉ दुर्गा से प्रार्थना कर रहे थे।

इतने में गामत्यो आया और उसने बोला भाऊ की तबियत खराब हो गयी है। वह थर - थर कांप रहा है और बेसुध हो गया है। उसे ठंड़ देकर बुखार चढ़ी है। वह घर में निवस्त्र बेसुध पड़ा है। इतना सुनते ही सभी लोग भाऊ के घर की तरफ भागने लगे। टण्ट्या और चानण भी अपने घर की तरफ दौड़े। टण्ट्या ने घर में आकर देखा तो भाऊसिंग बेसुध पड़े थे। ऐसा लग रहा था जैसे उनकी मृत्यू हो गई हो। टण्ट्या ने उनको हिलाया डुलाया। टण्ट्या ने कहा पिताजी आपका बेटा टण्ट्या आ गया है। अब तुम किसी से मत ड़रो। तब भाऊ ने अपनी आंखें खोली

और टण्ट्या को गौर से देखने लगे। उसने टण्ट्या से कहा बेटा मैं तो चला तुम अपनी पत्नी चानण को लेकर किसी जंगल में छुप जाना,नहीं तो शिवा पटेल फिर से कोई मुसीबत खड़ी कर तुमको फंसा देगा। तुम वापस घर पर तभी आना जब तुम्हारे पास शक्ति हो। तब तुम इस नीच से अपना बदला लेना और उसे खतम कर देना। इतना कहते ही भाऊसिंग शांत हो गये। इसके बाद वे फिर कभी नहीं बोले।भाऊसिंग मर गया। टण्ट्या छाती पीट - पीट कर रोया चानण ने अपने हाथ में कटार उठा ली। उसके साथ ही अनेकों हाथ ऊपर उठ गये।सभी कहने लगे चलो शिवा पटेल के घर पर हल्ला बोल दो। इसमें देर मत करो। टण्ट्या ने भी ललकारते हुये कहा मैं शिवा पटेल से इसका बदला जरुर लूंगा। आप लोग पहले मेरे पिताजी का अंतिम संस्कार करवा दो। इसके बाद मैं शिवा पटेल सहित उसके खानदान के सिर काटकर उसे चैराहे में रखवा दूंगा। सभी लोगों ने मिलकर टण्ट्या के पिताजी का अंतिम संस्कार किया। भाऊसिंग के मृत शरीर को चिता में लिटाकर उसका अंतिम संस्कार कर दिया गया। भाऊसिंग बहुत बुद्विमान और नेक दिल इंसान थे।

गांव के सभी लोगों को विश्वास था कि टण्ट्या कोई अवतारी पुरुष हैं उस पर माँ दुर्गा की कृपा हैं वैसे भी टण्ट्या तो उन सब का सरदार तो था ही। वह कहीं भी प्रगट हो जाता था। वह किसी के शरीर में हाथ फेरता तो उसके सभी दुख - दर्द दूर हो जाते। एक भैंसा क्या टण्ट्या में दस भैंसा के बराबर ताकत थी। भाऊसिंग का अंतिम संस्कार करके सभी अपने - अपने घर को चले गये। टण्ट्या ने अपनी पत्नी  को घर में छोड़ा और वह पटेलों के घरों की ओर चला गया। उसने पटेल के घरों में आग लगा दी। उसने शिवा पटेल को ललकारते हुये कहा यदि तुम में हिम्मत हो तो आमने सामने युद्व करो। टण्ट्या ने सोते हुये पटेलों को लात मार - मार कर जगा दिया। उसने कईयों के सिर फोड़ दिये और सबेरा होने के पहले गांव छोड़कर भाग गया।

उसने अपना वेश बदल लिया और दूसरे देश में चला गया। दोनों पति - पत्नी जाकर एक सराय में पहुंचे। वहां दोनों ने मॉ दुगौ की सौगंध खाई की वह शिवा पटेल के वंश को मिटा देगा। टण्ट्या कुछ वर्ष्र तक शांत रहा, इस बीच उसने युवकों की एक टोली तैयार कर ली। वह अपनी टोली के साथ अमीरों के घरों में लूटपाट करता और लूट का माल गरीबों में बांट देता था। वह जंगल की खोहों में नदी के किनारे रहने लगा। वह अपना वेश बदल कर गांव वालों को संदेश देने पहुंच जाता था। वह पांच वषरें तक अज्ञातवास में रहा । उसके बाद अपने गांव में आकर रहने लगा। शेर की तरह दहाड़ने वाला टण्ट्या अपने गांव में आकर रहने लगा। टण्ट्या ने शिवा पटेल को ललकारा और उसके खेतों में जानवर घुसेड़ दिये जिससे उसकी पूरी फसल नष्ट हो गई। इस पर टण्ट्या अ।ैर शिवा पटेल के आदमियों के बीच बहुत झगड़ा हुआ। टण्ट्या ने अपने खेतों में तीन फसले उगाई। वह अपने खेतों में ड़टा रहा। उसने सभी भील किसानों से कहा वे अपने - अपने खेतों में ड़टे रहें।इस पर पटेलों की जोर जबरदस्ती नहीं चली तो पटेलों ने एक चाल चली। उन्होंने पुलिस वालों से मिलकर टण्ट्या के खिलाफ एक शिकायत दर्ज करा दी । जिसके कारण टण्ट्या को एक साल तक जेल में रहना पड़ा।

एक साल की सजा काटकर टण्ट्या जब अपने घर वापस आया तो वह पोखर गांव में रहने लगा। उसके पिता भाऊसिंग की खेती पोखर गांव में थी। वह उनकी खेती करने लगा। परंतु वह खेती जमींदार के कब्जे में थी। जमींदार ने जोर जबरदस्ती करके खेती अपने नाम करवा ली थी। टण्ट्या गांव में खेती और मजदूरी करके अपने परिवार का पालन पोषण करने

लगा। वह निड़र होकर अपने कंधों में हल रखकर खेतों में जाता। जब टण्ट्या जमींदार के घर के सामने से निकलता तो अपनी मूंछों में ताव देने लगता। वह अपने कंधों में धनुष - बाण टांगकर राजपूतों के समान सीना तानकर चलता था। जिसे देखकर वहां के राजपूत टण्ट्या से जलने लगे। राजपूतों ने एकता करके टण्ट्या को गांव से बाहर निकाल दिया।

टण्ट्या ने उस समय राजपूतों से बैर करना उचित नहीं समझा । वह वहां से हीरापुर गांव चला गया। जिससे राजपूतों ने समझा की टण्ट्या उनसे ड़र कर भाग गया है। टण्ट्या समय की ताक में था । कुछ समय बाद उसने फिर से अपनी टोली तैयार कर ली। वह शांती से अपने घर में रह रहा था। किसी ने सही ही कहा है कि विधवा स्त्री अपना विधवापन तो काट ले पर विधुर उसे काटने दें तब ? ऐसा ही टण्ट्या के साथ हुआ। वह शांति प्रिय ढ़ग से अपना जीवन काट रहा था। उसके दुश्मनों को यह नहीं भाया। टण्ट्या की पत्नी गांव - गांव जाकर उसकी खबर लेती रहती। वह टण्ट्या को होशियार करती रहती थी। टण्ट्या की पत्नी चानण भी एक गुफा के भीतर वेश बदलकर रहती थी। वह टण्ट्या से बहुत दूर सुक्ता नदी के किनारे रहती थी। उसके साथ शीबा बाबा रहते थे। वे चानण की देखभाल करते थे। टण्ट्या और चानण दोनों की रक्षा शीबा बाबा करते थे। टण्ट्या ने अपने गले में मॉ दुर्गा के नाम की कंठ माला धारण कर रखी थी। एक दिन बाबा ने टण्ट्या से कहा टण्ट्या इस संसार में पाप बहुत बढ़ गया है। सूर्य का सत्य बादलों में छिप गया है। जिससे चारों तरफ अंधेरा छा गया है। गरीबों पर बहुत अत्याचार हो रहा हैं सभी लोग उन पर जुल्म कर रहे हैं, उन्हें सता रहे हैं। गरीब नंगा और भूखा है। धनवान धन एकत्र किये जा रहा हैं तुम अपनी टोली बनाओ और घर - घर जाकर लोगों में जगृति लाओ।

शीबा बाबा ने टण्ट्या से कहा वह जाकर लोगों को जागृत कर सत्य और धर्म की रक्षा करने का उपदेश दे। इतना सुनते ही टण्ट्या चुप हो गया। सबकी नजर टण्ट्या पर लगी थी। टण्ट्या की पत्नी मर्द के वेश में काला लबादा ओढ़े खड़ी थी। वह अपने कंधों में तीर - कमान रखकर गांव - गांव जाती और शीबा बाबा के संदेशों को गांव - गांव तक पहुंचाती थी। टण्ट्या अपनी पत्नी चानण से गुपचुप किसी जंगल में मिल लिया करता था। वे मन मसोस कर रात भर जंगल में पड़े रहते थे। जब तक सबेरा न हो जाता। टण्ट्या और चानण अपने - अपने काम में लगे थे।

एक दिन हीरापुर गांव में चोरी हो गई। वह चोरी टण्ट्या पर साबित न हो सकी। तब सुभान सिंह के घर की चोरी में जालिम सिंह के बयान पर टण्ट्या को कैद करने के लिये उसकी खोज होने लगी। चानण ने टण्ट्या को संदेश भेजा की वह कुछ वषर्ोंा तक अज्ञातवास को चला जावे। वह अंग्रेज पुलिस की चुगंल से कुछ वषर्ोंा तक दूर रहे। तब टण्ट्या निमाड़ क्षेत्र को छोड़कर होलकर राजाओं के राज्य में चला गया। वह वहां पर शांति प्रिय ढ़ंग से अपना जीवन व्यतीत करने लगा। टण्ट्या वहां पर कुल चार वर्ष तक अज्ञातवास में रहा। वहां पर उसने अपने साथियों की एक टोली बनाई और मौका देखते ही कभी - कभी मार - धाड़ करने लगता था। टण्ट्या होलकर राज्य से आकर शीबा गुरुजी से मिला। शीबा गुरुजी ने टण्ट्या से कहा तुम अभी प्रगट मत होना। तुम अपना वेश बदलकर अपने काम में लगे रहो। उसी वर्ष क्षेत्र में अकाल पड़ गया। जनता को दाना - पानी मिलना मुश्किल हो गया। टण्ट्या ने सेठ - साहूकारों को लूटना चालू कर दिया।साहूकारों में हाहाकार मच गया। टण्ट्या लूटे हुये अनाज को गरीबों में ले जाकर गांव - गांव बांट रहा था। वह गरीबों का पेट पाल रहा था। टण्ट्या की जय जयकार होने लगी।

टण्ट्या और उसके साथी दिन में अपने घर में रहते और रात होते ही लूट - पाट करने निकल जाते।

सन् 1857 की गदर में अंग्रेजों को मार खानी पड़ी। झांसी की रानी लक्ष्मी बाई अंग्रेजों से मुकाबला लेने मर्द बनकर सीना तान कर खड़ी हो गई। उन्हीं के लोगों ने रानी के साथ विश्वासघात कर दिया। तात्या टोपे होलकर के राजाओं की फौज में भारी पड़ने लगे। तात्या टोपे की मुलाकात टण्ट्या से गदर के समय हुयी थी।

टण्ट्या की वीरता के कारण तात्या टोपे से उसकी अच्छी मित्रता हो गई थी। तात्या टोपे होल्कर राज्य में मारपीट करते हुये निमाड़ क्षेत्र में आ गया।वह नर्मदा नदी को पार कर कुछ वषरें तक खरगोन में रहा। उसने खरगोन के नौ ग्रह मंदिर में नब्बे दिनों तक निवास किया। टण्ट्या ने तत्या टोपे की बहुत मदद की जिससे तत्या टोपे का खजाना भर गया। टण्ट्या लूट - पाट करके भाग जाता था। वह दुश्मनों के हाथ कभी नहीं आता था।छापामार युद्व की कला टण्ट्या ने तात्या टोपे से सीखी थी। तात्या टोपे दक्षिण दिशा में न जा सका। उसे अंग्रेजों की सेना ने घेर लिया। तब टण्ट्या ने तात्या टोपे को वचन दिया की वह उसे इस मुसीबत से बचा कर ले जावेगा। उस समय तात्या टोपे घबड़ा गया था । उसने टण्ट्या से कहा टण्ट्या तुम मुझे यहां से निकालने के लिये कोई रास्ता खोजो। तात्या के साथी भी घबड़ा गये थे। तब टण्ट्या ने छाती ठोंककर कहा मैं तुमको इस घेरे से बाहर निकाल दूंगा। मैं तुमको निधड़क सीपुरी तक पहुंचा दूंगा। टण्ट्या ने नर्मदा जी को नमन कर मॉ दुर्गा जी का जयकारा लगाकर शीबा बाबा का ध्यान किया। उसने तात्या टोपे को साथ लिया और उसे बांसवाड़ा के जंगलों को पार कराकर मेवाड़ की सीमा तक उसके साथ रहा। उसके बाद उसने अपने पांच साथी तत्या टोपे के साथ कर टण्ट्या निमाड़ वापस आ गया।

तभी किसी दगाबाज ने तात्या टोपे के साथ विश्वासघात कर दिया। वह कोई मानसिंग नाम का राजपूत थां वह अंग्रेजो से जाकर मिल गया। भारतवर्ष में जितने भी वीर शहीद हुये,सभी को दगाबाजों ने मरवाया है। अभिमन्यू जैसे महारथी की भी दगाबाजी में मृत्यू हुई थी।

टण्ट्या ने सुक्ता नदी के किनारे पहुंचकर शीबा बाबा के चरण र्स्पश किये। मॉ दुर्गा को बलि चढ़ाकर ,भैरव बाबा की अराधना की। इसके बाद टण्ट्या पोमली रानी को साथ लेकर गांव - गांव पहुंचा। प्रत्येक गांव में पोमली रानी ने टोलियां तैयार की,उसने गांव के लड़के - लड़कियों और मोटियारों को तैयार किया। टण्ट्या की टोली के दो तीन लड़के गांव में पहुंच कर हल्ला बोलने लगे। वे गांव के पटेल और साहूकारों को लूटने लगे। वे अंग्रेजों को भी लूटते थे। लूटपाट करके वे गांव में आते और लूट का माल गरीबों में बांट देते थे। उन्होंने अमीरों को गरीब बना दिया और गरीबों को अमीर। वे निमाड़ क्षेत्र के गांवों में लूट - पाट करते रहे।कितने गांवों के नाम गिनायें। वे गांव में जाते वहां हल्ला बोलकर लूट - पाट करते। उन्होंने निमाड़ और होल्कर राजाओं के राज्य में भी लूटपाट की

टण्ट्या ने भीमा नायक के साथ मिलकर लूट की योजना बनाई। खान देश का खाज्या नामक युवक टण्ट्या के साथ हो गया। मेवाड़ और अरावली के सभी भील टण्ट्या के साथ हो गये। इस प्रकार लूटपाट करते - करते टण्ट्या का शरीर थक गया। उसने अपने सभी दुश्मनों को मार दिया। शिवा पटेल के वंश को समाप्त कर दिया। उसकी उम्र में उतार आने लगा । उसे बुढ़ापा आने लगा। उसके सभी सहयोगी और साथी बिछड़ गये। उसके परम मित्र बिजन्या को फांसी की सजा हो गई। दोल्यो को काला पानी की सजा हो गई। तान्या, मान्या, टीपन्या,

नरसिंगो, हरलयो, हरबोलो बच गये थे। सभी किसानों की बेगारी छूट गई थी। सभी अपनी - अपनी खेती कर रहे थे और मौज से रह रहे थे।

टण्ट्या ने ब्राम्हण और गरीबों की हमेशा रक्षा की ! औरतों के जो दुश्मन थे। उनसे उन औरतों की लाज बचाई। उसने जमींदारों, साहूकारों और अंग्रेजों की नाक में नकेल ड़ाल रखी थी। उसने अपने माता - पिता के वचन को निभाया।

पोमल रानी के पास एक बड़ी फौज तैयार हो गई। वह सबसे आगे चलती थी। वह कहती थी अपनी इज्जत खुद बचाओ दूसरों के सहारे मत रहो। टण्ट्या की एक बात पूरी न हो सकी । वह पूरे राज्य में राज करना चाहता था। वह देश से अंग्रेजों को भगाना चाहता था। फिर देश आजाद हो गया, अंग्रेज सात समुंदर पार अपने देश लंदन चले गये। छीना - झपटी और बेगारी से भील जाति मुक्त हो गई। इन पर साहूकारों और जमींदारों के नित्य जुल्म होते थे। भील जाति के लोग अपना अधिकार और इज्जत पीढ़ी दर पीढ़ी खोते जा रहा था। तब आजादी का मकसद टण्ट्या को समझ में आया। उस समय भील गुलामी में जीते थे और गुलामी में ही मर जातें थे। अंग्रेज इस देश को छोड़कर चले गये ! यह बात तो समझ में आती है।परंतु भील जनजाति के लोग दूसरों की गुलामी क्यों करते हैं । यह बात समझ में नहीं आती। टण्ट्या को अपनी जाति के हित के लिये जो करना था उसने कर दिखाया। अब उसकी उम्र ज्यादा होने लगी। उसे अगली पीढ़ी से आस है कि वह भी अपनी जाति की रक्षा के लिये संघर्ष करे।

रक्षाबंधन के त्यौहार में टण्ट्या अपने साले गणपत के घर रक्षाबंधन का त्यौहार मनाने गया। वह हर साल अपनी मुंहबोली बहन से राखी बंधवाने को आता था। इस वर्ष भी वह राखी बंधाने अपनी बहन के घर पहुंचा। उसके साले ने टण्ट्या को शराब परोसी, टण्ट्या शराब नहीं पीता था। उसने शराब की बोतल अपने सामने से हटा दी। तब उसके साले ने टण्ट्या को खीर परोसी । उसने उस खीर में जहर मिला दिया था। टण्ट्या ने उस खीर को खाया जिससे टण्ट्या को नशा आ गया। वह अधिक नशा हाने के कारण बेहोश हो गया। गणपत ने उसके साथ विश्वासघात किया। उसने टण्ट्या की बंदूक में पानी ड़ाल दिया। उसके कमर से तलवार निकाल ली। उसके पास से तीर - कमान हटा दिये। तब गणपत ने बाहर आकर अंग्रेज थानेदार को इशारा किया। थानेदार ने सिपाहियों के साथ टण्ट्या को चारों ओर से घेर लिया। गणपत और उसकी मुंह बोली बहन ने टण्ट्या के हाथ - पैर बांध दिये। यह योजना अंग्रेजों और गणपत राजपूत ने टण्ट्या को पकड़ने के लिये बनाई थी। परंतु टण्ट्या की टोली ेके लोग चौकन्ने थे। वे घर के चारों ओर छुपकर खड़े थे। टण्ट्या की टोली के लोग अंग्रेज सिपाहियों की फौज पर टूट पड़े। उन्होंने अंग्रेजों की फौज पर तीर - कमान और गोलियों से वार किया। टण्ट्या बिग्रेड़ की फौज ने वहां पर भयंकर मार - काट की। दोनों में भयंकर युद्व हुआ। परंतु अंग्रेजों की फौज बहुत ज्यादा थी। पेमल रानी मर्दागनी दिखाते हुये, हाथ में तलवार लेकर मार - काट करते हुये अंदर घुस गई। टण्ट्या का मित्र तान्यो उसी समय खिड़की से कूंद गया। उसने टण्ट्या के समान अपने शरीर में वर्दी पहन रखी थी। वह टण्ट्या का पूरा वेश धारण कर जमीन पर गिर गया। पोमल रानी ने टण्ट्या को उस घर से बाहर निकाल लिया। उसने तलवार के एक ही वार में गणपत का सिर उसके धड़ से अलग कर दिया। कपटी बहन भागने के लिये खिड़की से कूंदी उसी समय पोमल ने उसको भी मार गिराया। पोमल रानी उस समय सिंहवाहनी लग रही थी। उसने झांसी वाली रानी की तरह हिम्मत दिखलाई और वहां से भाग गई। पोमल कब आई और कब चली गई किसी को पता नहीं चला। वह बिजली के समान आई और आंधी के समान चली

गई। तान्या अंग्रेज सिपाहियों के हाथ में जानबूझकर गिरफ्तार हो गया। उसे सब खेल खतम होते दिखा । सब हार - जीत खतम हो गईं पोमली - पोमल को लेकर भाग गई। अंग्रेज फौज सिर धुनकती रह गई। अपनी इज्जत बचाने के लिये अंग्रेजों ने तान्या को टण्ट्या मान लिया। अंग्रेज पुलिस की नजर में टण्ट्या पकड़ा गया। पुलिस ने रिर्पोट लिखी और अंग्रेजों ने उसे मान लिया। टण्ट्या को कोई नहीं पहचान सका ,जो पहचानते थे, वे भी चुप रहे। टण्ट्या के साथियों ने तान्या को टण्ट्या ही मानकर पहचान करा दी। इसका मुकदमा हाईकोर्ट जबलपुर में चला और अंग्रेज सरकार ने टण्ट्या को फांसी की सजा सुना दी। टण्ट्या की जगह तान्या फांसी पर चढ़कर अपने मित्र के लिये शहीद हो गया। तान्या जैसे वीर का धन्य हो जो मरने से भी नहीं ड़रा। सब जगह खबर फैल गई की टण्ट्या को फांसी की सजा दे दी गई। इतना सुनते ही सब जगह हाहाकार मच गया। बहिनों का तो भाई चला गया। भीलों ने एक इतिहास रच दिया।

टण्ट्या ने महिलाओं को सम्मान दिलाया और भीलों का मान बढ़ाया। उसने जालिमों को उनके करतूतों की सजा दी। परंतु टण्ट्या तो अपनी पोमल रानी के साथ किसी गुफा में विश्राम कर रहा था। वह प्रतिदिन सुबह उठकर सुक्ता नदी में स्नान करता और शिबा बाबा की समाधी में नमन् करता और मॉ दुर्गा की सेवा करता। वह भैरव बाबा का परम भक्त था। वह अपने माता - पिता की याद करता और दुखियों को देखकर उसकी आंखों में आंसू आ जाते थे। टण्ट्या पोमल रानी के साथ साधू का वेश धारण करके अज्ञातवास में रहा। वह साधू के वेश में कई बार अपने रिश्तेदारों के यहां मेहमानी करने चला जाता था। समय आने पर दोनों की मृत्यू हो गई।भीलों के नायक ने उसके बेटों का पालन पोषण किया।

टण्ट्या तो आज भी जीवित है। उसे याद करो वह आ जाता है। उसका घर - घर में सम्मान है! उसे कुल देवता भैरव के समान पूजा जाता है।कोई्र भी रोग,शोक,ड़कैती पड़े तो टण्ट्या की आत्मा उसे भगा देती है।टण्ट्या और पोमल के सत्य के कारण सतियों को सम्मान मिला है। जब किसी से कोई भूल - चूक हो जाती है । तो टण्ट्या की आन लगाते हैं। गायों की चोरी हो जाती है तो टण्ट्या उन गायों को घेरकर वापस ले आते हैं। टण्ट्या भूलों को रास्ता दिखाते हैं।जब किसी पर अचानक कष्ट आ जाता है तो टण्ट्या उसके कष्ट को निवारण करने तुरंत प्रगट हो जाते हैं।

अनुवादः ड़ॉ. विजय चौरसिया

(संदर्भ ग्रंथ :टण्ट्यो भील बड़ो लरैया. लेखक - पूरन सहगल, संपादक - श्री राम तिवारी. स्वराज संस्थान संचालनालय भोपाल)

## 3. वारता टण्ट्या भील अंण पोमल भीलणी की

टण्ट्यो रांट्यो रण बांको,लूटे छे चारुमेर।
डपटे ,कूटे लाठ के ,रपटे चढ़ी फेर।।
नाक काटे छै थाणादार की।
कान कतरे अण गावे गेर।।
भेस बदल ले, देश बदल ले,
जगदम्बा के सेवे।
बीच पहाड़ं गेरा जंगल में,
गुफा खोह में रेवे।।
धन पतिंण,राजा,रजवाड़ा,
पटेलणं का घर लूटे।
सामें पड़े तो खाल खींच ले,
सोट - गोट सू कूटे।।
अंगेजण को भारी दशमण,
देस का दशमण जाणे।
टण्ट्या सरीखा नराई लड़ाकू ,
टण्ट्या के पैछाणो।।
पकड़ नी पावे,जाण नी पावे,
पुग्लसिया काग्य घबरावे।
गांव लखा दे नगद गणादे,
जो टण्ट्या के पकड़ावे।।
ईनामी मुलजिम के जसो,
टण्ट्या के बतलावे।
टण्ट्या चौड़े धाड़े घूमे,
जाणे कोई नाहर धमकावे।।
विरदा में तो जनमयो समझो,
बाप भाऊंिसग जाणों।
मूंछण की तो रेख बंधी छी,
मरयो बाप निमाणो।।
ढ़ांढ़ेटिया जूं लग्यो नोचबा,
विरदा को शिवो पटेल।
टण्ट्या तो जाणयो कोनी,

पटलणं को कालो खेल।।
म्हारी धरती कण हांकले,
कण असो नारड़ी जायो।
जो बी सामे पड़यो भील के,
लट्ठ ताण मारयो ढलकायो।।
मालगुजार के रिश्वत दैंण,
शिवा पटेल ने करयो मेल।
झूठ कपट सू रपट लखा दी ,
टण्ट्या के मेल्यो जेल।।
बरस एक की जेल काट,
टण्ट्यो बस ग्यो पोखर - हीरापुर गॉव।
अंग मजूरी करे भीलड़ो,
पाले पेट बढ़ावे नांव।।
सब जाणे यो मरद टुण्डरो,
बदलो लेणं ही माने।
घणो जिद्दीलो भील जुवन्यो,
जनम दशमणी ठाणे।।
चोरी को जोड़यो जुलम,
पुलस ने मशक बांधी।
पटेल - साऊकारणं पोखर,हीरापुर,
भेलां हो, पाप खीचड़ी रांधी।।
छूट जेल सू तीन महिना में ,
टण्ट्या बाहणे आयो।
गयो होलकर के देस,
निमाड़  को जामण जायो।।
रजपूतं - पटेल - साऊकारण,
टुण्डरा को पीछो करायो।
जबर जुलम में फांस,
ऊंपर सू ,चोरी को जुलम लगायो।।
सात बरस की जेल सुणी,
तने धुजणी फूटी।
जाण एकलो, भील पूत की हीमत टूटी।।
गुपतो,चुपतो संगत में,साधुणं की आयो,
सारो जुलम जो बीत्यो,
रो - रो खोल बतायो।।
आपणे लारे संगत में,
कर ल्यो साधने।
आपणो हक खुद छीन,

ले काढ़ो कहयो साधने।।
लारे ले चल्यो निमाड़,
नद्दी सुगतां के जाई पोहच्यो।
दियो मुकाम गुफा में,
करणो - धरणो सोच्यो।।
कंठे - कंठो पेहर,
उठायो तीर कमंठयो।
लिया सात संगाती लारे,
रण में चाल पड़यो यूं टण्ट्यो।।
एक हाड़ का एक राड़ का,
सात न्हार क्या सरपट चाल्या।
गांऊ -गांव नौबत को ड़ंको,
चढ़ी दफेरी डाका डाल्यां।।
एक बेणां आयो कोई,
थाणादार जबर जबरीलो।
टण्ट्या के मशक बांधूंण,
कठबेड़ी में ठोकूं खीलो।।
भेस बदलणं पोंच्यो टण्ट्यो,
मगन्या खवास कासे भेस बणायो।
डाढा करवा पेअी लेणं,
थाणादार के थाणे आयो।।
डाड़ी करतां धीरप सू,
गुचुप यों बोल्यो।
एक हजार नगद दवादो,
दो इ्नाम को पक्को कोल्यो।।
टण्ट्या के झट - पट पकड़ा देऊं
जंगल के गेलो बतला देऊं।
सब संग्यां काठ जड़ा देऊं,
खुल्ला में मशक बंधा देऊं।।
सुणताई थाणादार घणोंई राजी होयो,
पेहर लियो पतलून,झट सू मोंड़ो धोयो।।
दे झांसो जंगल में ले ग्यो,।
अपापढ़ पढ़यां के चक्कर दे ग्यो।।
सतरा तो सिपाई लारे,
सिद्वो थाणादार।
पकड़ बांध लो, टण्ट्यो बोलो,
कर लो गिरफ्तार।।
अणचूत्या के मार्यो,

थाणादार के धक्कों
पड़यो खाई में आंखां काढ़े ,
हो ग्यो हक्को - बक्को।।
ले तरवार घुमावा लाग्यो,
कर्या वार पर वार।
घणा जणा की फाड़ ओझड़ी,
आंत कर दी बाहर।।
घण का काट्या हात,
घणा के कर दिया खूनाझार।।
थाणादार की पतलून फाड़ दी,
का दियो नंग धड़ंग।।
कोई जाणे तेरस खेली,
नाख्यो रातो रंग।।
वाह रे टण्ट्या भील ,
गजब कर दियो थें कमाल।
सऊकारंणं के मंगत कर दिया,
नीमाणांण के कर दिया माला माल।।
बइयां फाड़ बाळं दी होलीं।
अंग्रेजण के मार्या दलाल।।
पट्टा परवाण सब खोस्या,
अण फाड़ दिया इसटाम।।
जमींनंण का हक दवाया,
पटेलंण को तोड़या चाम।
भीलंण के जीणों सखायो,
पक्को कर दियो काम।।
गाऊं - गांव जुथ बणाया,
फौज करी तय्यार।
आपणी - आपणी रकशा कर लेवो,
खुद होयो होश्यार।।
तीर - कमंठा फरसा बरछी,
ले बंदूक चढ़े।
घेरा ड़ाले ओले - दोले,
आधी रात चढ़े।।
भरी दफेरी हल्ला कर दे,
ले मरदां के साथे।
तरवार हांथंण में राखे,
मौत मेल ले माथे।।
सात भीलणी मरद भेश में,

तीर कमंठो ताणे।
बाण जण की चूके कोनी,
दशमण के पैछाणे।।
अंधड़ सरीखा धंसे गांव में,
का लूट - पाट भग जावे।
माल लूटणं,जां को जाई,
गरीबंण के दे जावे।।
बणी बणाई रोटी - बोटी,
गांव - घरंण ती पोंचे।
संगी साथी खबबर राखे,
डेरो ऊंचो, छै के नीचे।।
मामो भूखो तपे तरासे,
भूखा छै मामा का भाई।
गुपचुप रोटी मेल पोटले,
झट - पट दे पोंचाई।।
गाऊं - गांव का तीर कमंठ्या,
लारे - लारे जावे।
पकड़ नी पावे,जाण नी पावे,
टण्ट्यों कण कहावे।।
टण्ट्या के टण्ट्या बलावे, टण्ट्या हेला पाडे।
चारई खूंटे टण्ट्या मामो,
कसतर घाले धाड़े।।
धराऊ टण्ट्यो, लंकाऊं टण्ट्यो
टण्ट्यो ऊग्गम पच्छम चालें।
लाठ साब की फौज भटके,
थाणा घेरा डाले।।
पकड़ नी जावे,जाण नी पावे,
कण छै टण्ट्यो मामो।
कण छै तान्यो,टीपन्यो,दोल्यो,
कण छै हरल्यो,कण बीजन्यो,
कण बणजारो - मान्यो।।
कण जसुदा,कण बिजली।
कण शीबो कण रामो।।
मामा को छै पक्को होकम।
मनछतां सब करजो।।
चोर - चकारी करणी कोइनी,
धरम - शरम सू रहणोणं,
राम देवत ती डरजो।।

लूटण्यां के लूट पाटंण,
पेली पार निकरजो।
गायां - बायां दशमण की हो,
तो बी रक्षा करिजो।।
यो टण्ट्या को कोल सदांई,
थें याद राखजो भायां।
जगत सताण्यां के ढलकाजो,
बाकी सब मां जायां।।
गो - बामण के मती सताजो,
धरम - करम पर रीजो।
बामण बी सतनेम छोड़ दे,
खाई में धक्का दीजो।।
राज हटा देऊ फीरंगिण को,
पटेलंण को गरब मिटणू।
सगलोई अल्टो पलटो कर देकुं,
जब मॉ जायो जाणॅू।।
मॉ का दूध बा परसीनो,
धरती मॉ को करजो।
मदद करो रे सगल साथी,
टण्ट्या होयो गरजो।।
एकलां सूं चूके कोनी,
करज घणो टण्ट्या पर ।
सगलां मदद करो रे बीरां,
ढाड़ करो जग मॉ पर।।
हे जगराणी, हे शीबा जी,
थारी ही मेहर जाणॅू।
अतरे नी तो मरुं,नी गेरी नींद सोऊं,
बिना बिछावण धरती सोऊं।।
सुआद भोग नी माणूं।
सब के हक पूरा दिलवा दॅू।
चढ़यो करज चुकाणूं।।
अंग्रेजण के लंदन हांक देऊ,
जसुदां के परणी नी जाणूं।
भील, भिल्लाला अण बणजारां,
टण्ट्या के नायक जाणे।
एक दूसरा के दुख - सुख के ,
जीव घाल पैछाणे।
तान्यो , मान्यो, टीपन्यो कण,

कण तो हर लो कण नरसिंगो।।
जात नीं जाणे भांत नी राखे,
एक सरीखा लागे।
अपणो राज जमाणो हल - मल,
सबके यो ही लागे।।
पटवारी मर गयो भोगांव को,
मर गयो गोविंद पटेल्यो।
दगो कर्यो दगाबाज ने,
बीजन्या के कैद धकेल्यो।।
सुण्यो नी जावे, खम्यो नी जावे,
आंख सू आंसू फूटे,
टण्ट्या को खौले रगत,
डील की नसणं तड़ - तड़ फूटे।।
तोड़ बेड़िया भाग जैल नै,
कर देऊं खून खराबो,
असी मन में आवे।
म्हारे जींदो,रेतां - रेतां,
बीजन्यो मर जावे।।
टण्ट्या सू, सरदार पटेल को दगगी,
सहयो नी जावे।।
भरी दफोरी,बीज बजारां,
बीजन्यो फांसी चढ़ग्यो।
मॉ को दूध जमीं को करजा,
मरद चुकारो का गयो।।
बदलो लेण अंण घर चढग्यो।
हीमन पटेल के गाम।
दगा बाज दगो मिड़यो,
कर दियो काम तमाम।।
बीजन्या के फांसी लग्गी,
जणी रात के फेरे।
चिचगाठी के साऊंकार को,
घर टण्ट्या जा घेरे।।
दर - दर को माताज बणा,
टण्ट्या ने लूट मचा दी।
चुगली खोरणं की मदद,
करवा की बात सगळी समझा दी।।
दोल्या हीरा दोनुई साथी,
चुगली सू पकड़ा ग्या।

काले पाणी सजा सुणा दी,
बेड़ी सू जकड़ा ग्या।।
चिचगाठी सू चालयो टण्ट्यो,
पोंच्यो हीमन के गाम।
इमली लास लटकती देखी,
करयो राम सलाम।।
चिता चिणाई बीजन्या की,
कर्यो दाग करम ती।
पाणी भरन करी परिकमा,
कर दी दीवा - बाती।।
अ ने अब मरणो धारयो,
बढ़ -चढ़ धाड़ा घाले।
जो बी सामे पड़े बीर के,
तीथी 'दाव' अंण बरछी चाले।।
गणपत्यो रजपूत नीचलो,
धोको गजब कमायो।
राखी का दन टण्ट्या के,
जीमण के काज बलायो।।
खीर - भात में कपट कर दियो।
नस्सा को जेर मलायो।।
'दाव' हात सू लियो,
भर दियो बंदूक में पाणी।
कट्टा काढ़ अंण दूर फैंक दी,
टण्ट्या के गाफिल जाणी।।
कर दियो इसारो गणपत जा बाहर,
घेर लियो चारुं मेर।
पुलिस - फिरंगी देशी - फेसी,
कर ली घेरम घेर।।
चारई खूंटे डट्या भीलड़ा,
फोजड़ सू जा भिड़िया।
भीलड़ी सब तीर कमंठा,
ले ड़ट,झाड़ण,कोठे चढ़िया।।
फौजां को जबरो जमघट,
मार मार नी खूटे।
जबरो घेरो फिरंगिण को,
तोड़या कोनी टूटे।।
तीर कमंठो फैंक काढ़ तरवार,
घोड़लो कस लियो।

हिम्मत की हुसियार जसूदी,
कम्मर में यूं फैंटो कस लियो।।
घोड़ा के घुड़काती घड़ - धड़,
अंदर कोठे धसंगी।
पेहरा ऊपर डरी फौजंण की ,
सांसां भीतर फंसगी।।
चमक बीजली जाणे कोई ,
भीलंण की तरवार बरसगी।
झटका - बटका होगी फौजंण,
पानी - प्यास तरसगी।।
टण्ट्या के घोड़ा पा लाद्यो,
कूद बैठगी काठी।
दग्गाबाद नीच गणपत की गाबड़,
एक झटका में काटी।।
कब आई कब कूद निकलगी,
पोमलणी मरदानी।
टण्ट्या की तो जीवजड़ी,
भीलंण की महराणी।।
असो खेल रचायो भीलंण,
कोई जान - समझ नी पायो।
खिड़की से कूदयो झट तान्या,
टण्ट्या सरीखो दीखे।।
सांस रोक पड़ गयो जमी पर,
जाणे नस्सा पीके।।
दोल्या हीरा तो चल्या ग्या छा,
काले पाणी के देस।
मान्यो जंगल में जा धस्यो,
पलट लियो छै भेस।।
जसुदा पोमल अण टण्ट्या,
मरतां जीतां,पोंच्या सुगता नदी।
फेर निजर नी आया दोनाई,
खुले खेल में कद्दी।।
सतपुड़ की नद्दी के घाटंण पर,
साधू बणंण बेठ्या।
दशमण सगळा मरेठया।।
देस - देस में घूमें दोनोई,
हर तीरथ अलख जगावे।
गरीबंण के बाटे रोट,

भगवान के भोग लगावे।।
पटेलण को तो खोज निकल ग्यो,
चुगली खोरंण हार्या।
धारया सारा काम खुटाया,
पण पूरा कुण का होया धार्या।।
अपणी मौत मर ग्यो मामो,
मरी पोमली राणी।
डील मर्यो माने नी मर्यो,
जस दे गयो सेनाणी।।
अंग्रेजण के पाठ पढ़ा ग्यो।।
पटेलंण के सबक सिखा ग्यो।।
सूता जण के जाग जगा ग्यो।।
दुश्मणंण की नींद उड़ा ग्यो।
बेदखल्यां के दखल करा ग्यो।।
हांको करो झट आ जावे छे।
दुखियां को सगलो दुख मिटावे छे।।
अब मामो निजर नी आवे छे।
जद धूप ध्यान कर दां तो,
झट झूम प्रगट हो जावे छे।।
अरजी सुण न्याय बतावे छे।
गायां की रक्षा करे करवावे छे।।
बेंना - बायां की सरम बचावे छे।।
नवगजा पीर को इस्ट सदां से,
मौके पावे झट मजार पर आवे छे।।
चूके कोनी कोई इस्ट धरम,
सगलो नेम धरम निभावे छे।।
शीबा जी का गुर देवल में,
अम्बा का चरणां रवे छे।।
माता के भेंट चढ़ावे छे।।
अम्बा की सेवा सेवे छे।।
जबे हांको दो आ जावे छे।।
मके कुल भैरव केहवावे छे।।
जद झूंठ कपट कोई बोले तो,
सांचो सांच कर जावो छे।।
टण्ट्या की आन लग जावे तो,
झट नेम धरम पर आवे छे।।
मामो तू मरे मती रे।
तू रइजे जती - सती रे।।

हमारो हेलो सुणतो रईजे।
हमारी रक्षा करतो रईजे।।
टण्ट्या मामा की जै। पोमल राणी की जै। शीबा बाबा की जै।....

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

इस वारता के रचयिता कौन है,यह कहना कठिन है। बंजारा समुदाय में यह रचना अंश - अंश बखानी जाती है। यह संकलित रचना डॉ. पूरन सहगल जी को खंड़वा के पास बंजारा बस्ती गम्भीरपुरा में एक वृद्व बंजारा नायक लाल जी गरसिया से प्राप्त हुयी है। इसकी बोली बंजारी है। किन्तु कहीं कहीं इसमें राज्स्थानी शब्दानुभूति भी होती है। बंजारों और टण्ट्या का संबंध बहुत निकट रहा था।

गीतार्थ -

## वारता टण्ट्या भील और पोमल रानी की

टण्ट्या एक रणबांकुरा वीर युवक था।जो चारों दिशाओं में लूट - पाट करता था। वह थानेदार के नाक कान काट देता था। वह वेश और देश बदलने में निपुण था। वह मॉ दुर्गा की अराधना करता था। वह घनघोर जंगलों के बीच गुफाओं में रहता था। वह धनवान राजाओं के रजवाड़े और पटेलों के घरों को लूटता था। यदि कोई पटेल या धनवान उसके सामने आता था तो वह उसकी खाल खींच लेता था। वह उनको बुरी तरह से मारता पीटता था। वह अंग्रेजों का भारी दुश्मन था। वह अंग्रेजों को देश का दुश्मन मानता था। उसके जैसा लड़ाकू आज तक नहीं हुआ। वह आज तक नहीं पकड़ाया गया। टण्ट्या  से पुलिस वाले घबड़ाते थे। पुलिस वालों ने घोषणा की थी की जो टण्ट्या  को पकड़ा देगा उसे एक लाख रुपये इनाम मिलेगा। पुलिस उसे इनामी ड़ाकू बतलाती थी। जिस प्रकार जंगल में शेर घूमता था।उसी प्रकार टण्ट्या पूरे क्षेत्र में खुले आम घूमता था।  उसके पिता भाऊसिंग बचपन में ही स्र्वगवासी हो गये थे।उस समय टण्ट्या की मूंछ भी नहीं निकली थी। विरदा गांव का शिवा पटेल टण्ट्या के परिवार को परेशान करता था। टण्ट्या शिवा पटेल के काले कारनामों को जानता था। टण्ट्या कहता था - हमारी खेती को दूसरे लोग जोतते हैं। टण्ट्या को जो भी परेशान करता वह उसे लाठियों से धराशायी कर देता। शिवा पटेल ने गांव के मालगुजार को रिश्वत देकर अपने साथ मिला लिया और छल - कपट करके टण्ट्या के खिलाफ थाने में रिपोर्ट लिखा दी। जिससे टण्ट्या को जेल हो गई। उसने जेल में एक वर्ष की सजा काटी। जेल से सजा काटने के बाद टण्ट्या हीरापुर गांव में आकर बस गया। वह गांव में मजदूरी करके अपना पेट पालने लगा। सभी जानते थे की एक न एक दिन टण्ट्या शिवा पटेल से बदला लेगा। वह बहुत ही जिद्दी स्वभाव का भील युवक था। पटेलों ने फिर से

आपस में सलाह करके टण्ट्या को चोरी के जुल्म में तीन माह की सजा करा दी। तीन माह की सजा काटने के बाद टण्ट्या जेल से बाहर आया और होल्कर राज्य में चला गया।

राजपूत , पटेलों ओर साहूकारों ने फिर से आपस में सलाह करके उसके ऊपर चोरी का जुल्म लगाकर उसे फिर से सात वर्ष की जेल की सजा करा दी। जिसके कारण इस भील पुत्र की हिम्मत जबाव दे गई। जेल से छूटने के बाद टण्ट्या साधुओं के संर्पक में आया। उसने साधुओं से अपने जीवन की कहानी बतलाई। तब साधुओं ने टण्ट्या से कहा अपना अधिकार किसी को मत दो। कोई तुम्हारा अधिकार छीनता है तो तुम उससे अपना अधिकार छीन लो। तब टण्ट्या निमाड़ क्षेत्र में सुक्ता नदी के किनारे एक गुफा में रहने लगा। वह अपने सात साथियों के साथ तीर - कमान लेकर युद्व करने निकल पड़ा। उसके सातों साथी शेर के समान सरपट दौड़ते थे। वह अपने साथियों के साथ गांव - गांव जाता और भरी दोपहरी में ड़ाका ड़ालकर वापस आ जाता था।

एक दिन एक थानेदार टण्ट्या के घर आया उसने सोचा की टण्ट्या के हाथ पैरों में बेड़ियां ड़ालकर उसे जेल में ड़ाल दें। टण्ट्या अपना वेश बदलकर थानेदार के पास पहुंचा। उसने मगन्या नाई का वेश बनाया था। वह थानेदार के साथ थाने में आ गया। उसने थानेदार से कहा तुम मुझे एक हजार रुपया इनाम दो। मैं टण्ट्या को अभी पकड़ा दूंगा। वह किस जंगल में रहता है, मैं उसका रास्ता बतला दूंगा। मैं उसके हाथ पैर बंधवा दूंगा। ऐसा सुनते ही थानेदार टण्ट्या को पकड़ने के लिये तैयार हो गया। टण्ट्या उस थानेदार को जंगल में ले गया। उसने जंगल में अपने साथियों को बुलाया और कहा इस थानेदार को गिरफ्तार कर लो। उसने अचानक थानेदार को धक्का मारा जिससे थानेदार एक खाई में गिर गया।वह हक्का - बक्का हो गया। टण्ट्या ने अपनी तलवार निकाली और थानेदार पर वार करने लगा। उसने तलवार से थानेदार की आंतें निकाल दी। उसके हाथ - पैर काट दिये और उसकी पतलून फाड़ दी। उसने उसे नंगा कर दिया।

वाह रे टण्ट्या भील तुमने गजब का कमाल कर दिया। तुमने गरीबों को माला - माल कर दिया। तुमने अंग्रेजों के दलालों को मारा। सेठ - साहूकारों की बहियां फाड़कर उसकी होली जला दी। उनके स्टाम्प और पट्टों को फाड़ दिया। पटेलों के घमंड़ को चकनाचूर कर दिया। भीलों को जीना सिखाया। गांव - गांव में जत्थे तैयार किये और अपनी फौज बना ली। उसने लोगों से कहा अपनी रक्षा स्वतः करो। वह तीर - कमान, फरसा , बंदूक और बरछी लेकर आधी रात को घेरा ड़ालकर धावा बोल देता था।वह अपने साथियों के साथ दोपहर में भी हल्ला बोल देता था। एक दिन सात भील युवतियां मर्द के वेश में तीर - कमान लेकर आंधी के समान गांव में घुस गयीं।वे लूट - पाट करके उस धन को गरीबों में बांट देती थीं। गांव वाले टण्ट्या और उसके साथियों के लिये अपने - अपने घरों से रोटी बनाकर पहुंचा देते थे। उसके साथी यह खबर रखते थे की टण्ट्या का ड़ेरा कहां पर है।गांव वाले सोचते थे की कहीं टण्ट्या मामा भूखा तो नहीं हैं ,कहीं उसके भाई भूखे तो नहीं हैं। वे उसे चुपचाप भोजन पहुंचा देते थे। गांव - गांव में लोग तीर - कमान बनाकर उनके पास पहुंचा देते थे। टण्ट्या को कोई पकड़ नहीं पाता और पुलिस वालों को यह पता नहीं चलता की टण्ट्या कौन है। सभी लोग एक दूसरे को टण्ट्या कह कर बुलाते थे। घर में टण्ट्या, लंका में टण्ट्या , आगे टण्ट्या , पीछे टण्ट्या ,अंग्रेजों की फौज टण्ट्या को पकड़ने के लिये भटकती रहती थी। उसे कोई नहीं पकड़ पाया। कोई नहीं जान पाया की टण्ट्या मामा कौन है। कौन है तान्यो, कौन है टिपन्यो, दोल्यो कौन है, हरल्यो और बीजन्यो कौन है ओर कौन है बणजारो और मान्यो ? कौन जसोदा,कौन बिजली,कौन शीबो

और कौन रामो है ?   मामा का पक्का आदेश था जो मन में आये करो। चोरी,लूट - पाट करो पर अपने धर्म पर कायम रहो। राम देवता से ड़रो। लूट - पाट करके उस गांव से तुरंत निकल जाओ।

हे भाई टण्ट्या   की यह बात याद रखो - सताने वाले को धराशायी कर दो। बाकी सब मॉ दुर्गा पर छोड़ दो। गाय और ब्राम्हण को कभी मत सताओ। धर्म - कर्म करो । यदि ब्राम्हण अपने सत्य के रास्ते से भटक जाये तो उसे खाई में गिरा दो। अंग्रेजों के राज्य को हटा दो। पटेलों के अहंकार को चकनाचूर कर दो। सब उलट - पुलट कर दो। तब मैं जानूंगा की तुमने अपनी मॉ के पेट से जन्म लिया है। मॉ के दूध का कर्ज है,धरती माता का कर्ज है। अपने साथियों की मदद करो। टण्ट्या   अपने साथियों से ललकार कर कहता है। सभी साथी एक दूसरे की मदद करो।

हे जगत की रानी, हे शीबा बाबा जी आपकी मेहरबानी है। मैं अभी न मरुं, न ही मुझे गहरी नींद लगे। बिना बिस्तर के मैं धरती पर सोऊं,        मैं आपसे अच्छा भोजन नहीं मांगता। मैं चाहता हूं, सबको अपना हक दिलवा दूॅ। अपनी मातृ - भूमि पर चढ़ा कर्ज उतार दूॅ। अंग्रेजों को यहां से लंदन भगा दूॅ। भील, भीलाला और बन्जारा टण्ट्या   को अपना नायक मान लें। लोग एक दूसरे के दुखों को पहचानें। तान्यो, मान्यो , टीपन्यो के दुख हर लो। भोगांव का पटवारी मर गया। गांविंद पटेल मर गया। उस दगाबाज ने विश्वास घात किया था। उसने बीजन्या को सजा दिलाई थी। उससे न तो खाया जा रहा था न ही उसे सुनाई दे रहा था। उसकी आंखों से आंसू टपक रहे थे। टण्ट्या   का खून खौल रहा था। उसके शरीर की नसें तड़क रही थीं। उसके मन में आया की जेल की दीवारें तोड़ कर भाग जाऊं। खून - खराबा कर दूॅ। मेरे रहते बीजन्या घुट - घुट कर मर गया। टण्ट्या   को सरदार पटेल की दगाबाजी सही न गई। भरी दोपहरी में बीजन्यो को फांसी पर चढ़ा दिया गया था। मॉ के दूध और पृथ्वी का कर्ज उसने चुका दिया। वह बदला लेने हीमन पटेल के गांव गया। उसने उसका काम तमाम कर दिया। जिस दिन बीजन्या को फांसी लगी उसी रात को टण्ट्या ने चिचगाठी के साहूकार के घर को घेर लिया। उसे दाना - दाना   के लिये मोहताज कर दिया। टण्ट्या   ने उसके घर पर जम कर लूट मचाई। उसे चुगलखोरी का सबक सिखा दिया। दोलिया और हीरा दोनों साथी इसकी चुगलखोरी के कारण पकड़े गये। उनको काले पानी की सजा सुना दी और बेड़ियों से जकड़ दिया। चिचगाठी से चला टण्ट्या   हीमन के गांव पहुंच गया।उसने इमली के पेड़ में बीजन्या की लटकती लाश को देखकर उसे प्रणाम किया। उसने बीजन्या की चिता सजाकर उसका अंतिम संस्कार किया। टण्ट्या अब बुरी तरह गुस्से में था। उस वीर के सामने जो भी पड़ता वह उसे अपनी बरछी से मार देता।

गणपत राजपूत ने नीचता दिखाई। उसने रक्षाबंधन के दिन टण्ट्या को अपने घर भोजन के लिये आमंत्रित किया। उसने टण्ट्या को खीर में जहर मिला कर खिला दिया। उसकी बंदूक में पानी ड़ाल दिया। उसकी बंदूक और तीर - कमान को दूर फैंक दिया। गणपत ने बाहर जाकर अंग्रेज पुलिस को इशारा कर दिया। अंग्रेजों ने उसे चारों ओर से घेर लिया। टण्ट्या भील चारों दिशाओं की फौज से भिड़ गया। भील युवतियां तीर - कमान संभाल कर घर के ऊपर चढ़ गईं।फौज का जमघट हो गया । चारों ओर से फौज ने टण्ट्या को घेर लिया। जसोदा ने तीर - कमान फैंककर तलवार निकाल ली। वह घोड़े पर सवार हो गयी। उसने अपनी कमर में फैंटा कस लिया। उसका घोड़ा धड़ - धड़ करते कमरे के अंदर चला गया। घर के ऊपर पहरा देती फौज आश्चर्यचकित हो गयी। उस भीलनी की तलवार चमक उठी। अंग्रेजों की फौज अकबक हो गयी। उस भीलनी

ने टण्ट्या को उठाकर अपने घोड़े पर लाद दिया। उसने दगाबाज नीच गणपत की गर्दन अपनी तलवार से एक झटके में काट दी।

बहादुर पोमलणी कब आई और कब चली गई किसी को पता नहीं चला। वह तो टण्ट्या की पत्नी और भीलों की महरानी थी। उस भीलनी ने ऐसा खेल रचा की उसे कोई जान समझ न पाया। उसी समय खिड़की से तान्या कूंदा। वह टण्ट्या के समान दिख रहा था। वह जमीन पर सांस रोककर लेट गया जैसे उसने कोई नशा किया हो। दोल्या और हीरा को तो काला पानी की सजा हो गई थी। मान्यो जाकर जंगल में छिप गया। उसने अपना वेश बदल लिया। जसोदा पोमली और टण्ट्या मरते जीते सुक्ता नदी के किनारे पहुंचे। उसके बाद वे किसी को कभी नजर नहीं आये। टण्ट्या सतपुड़ा की नदी के किनारे साधू बनकर अपना जीवन व्यतीत करने लगा। उसका शरीर थक गया था, उसके सभी साथी बिछड़ गये थे। इसके बाद टण्ट्या और जसोदा ने देश के सभी तीथरें के दर्शन किये। वे गरीबों को भोजन देते और भगवान को भोग लगाते। टण्ट्या भील और पोमली रानी जसोदा की मृत्यू अपने आप स्वाभाविक रुप से हो गई। टण्ट्या भील ने अंग्रेजों को नसीहत दी। उसने पटेलों को सबक सिखलाया। भील लोगों को जाग्रत कर उसने दुश्मनों की नींद उड़ा दी। टण्ट्या निराश्रितों को आश्रित कर गया। उसे याद करो तो वह तुरंत आ जाता हैं दुखियों का दुख मिटा जाता है। टण्ट्या मामा की पूजा पाठ करो तो मामा झूम - झूम कर भक्तों के शरीर में प्रगट हो जाता है।अरजी सुनकर उनको न्याय दिलाता है। वह गायों की रक्षा करने और मॉ बहनों की लाज बचाने आ जाता है। मामा नवगजा पीर की मजार पर आ जाते हैं। वे शीबा बाबा जी के देवालय में मॉ दुर्गा के चरणों में विश्राम करते हैं। जब भी उनको बुलाओ वे आ जाते हैं। जब कोई झूठ बोलता है और कपट करता है तो मामा उससे सच - सच बुलवा लेते हैं। जो नियम धर्म से रहता है, उस पर टण्ट्या की कृपा रहती है। मामा तुम मरे नहीं हो तुम आज भी सतियों और अबलाओं में वास करते हो। मामा तुम हमारा ध्यान रखना,हमारी रक्षा करना, टण्ट्या मामा की जय,पोमल रानी की जय,शीबा बाबा की जय।

संकलनः डॉ. पूरन लाल सहगल

अनुवादः ड़ॉ. विजय चौरसिया

(संदर्भ ग्रंथ :टण्ट्यो भील बड़ो लरैया. लेखक - पूरन सहगल, संपादक - श्री राम तिवारी. स्वराज संस्थान संचालनालय भोपाल)

## 4. पोमली बोल रईऽज छे ललकार

पोमली बोल रईऽज छे ललकार।

टण्ट्या मत खा जाजे हार।।

तीर कामठा मखऽ सौंप दे।

तू लेले तरवार ।।

जसूदा बोल रईऽज छे ललकार .

टण्ट्या मंतऽ खाई जाजे हार .

दोल्या खऽ फरसो पकड़ा दे .टण्ट्या खऽ तरवार .

बीजन्या खऽ 'दाव' थमा दे .करे वार पे वार

बीजली बोल रईऽज छे ललकार

टण्ट्या मत खाई जाजेऽ हार

बीजली चमकेगी गाजे गा बद्दल,घटा घनघोर चढ़े छा जावेगी

अंधड़ चालेगा जोरती जोर

नदियां तोड़ किनारा आवेगी

पीछने मुड़ मत जाईऽज न्हार

पोमली बोल रईऽज छे ललकार।

घेरो गाठो घेर चुफेरी मरदां रे

फीरंगी खऽतोड़ो हाड़,रपेटो मरदां रे

घेरो गाठो घेर चुफेरी मरदां रे

यो मोको  मत चूक लगा दे धार

पोमली बोल रईऽज छे ललकार

लूट सके सब लूट खोश कऽ लै जारे

एक पोमली मरे हजांरा जन्मेगी

फेरे मले तोखऽ आन भरोसो लै जा रे

तोखऽ जगदम्बा की आण न खाजेऽ हार

बिजली बोल रईऽज छे ललकार

गाम गाम हो गयो भरोसो गाठो रे

बखर गयो छे शिवा पटेल को ठाठोरे

काठा बेड़ी तोड़ बाल दी होली में

ड़र भो नई छे रहयो आपणी टोली में

पाव अधेली खातर हमखऽ खूब करी छे बेगार

अबके हिम्मत जोड़ ले खूब करी छे तकरार

पोमली बोल रईऽज छे ललकार, टण्ट्या मत खाईऽज जाजे हार

0ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :** पोमली ललकार कर कहती हैं टण्ट्या तुम हारना मत!तुम तीर - कमान मुझे दे दो और तुम तलवार उठा लो। जसोदा ललकार कर कहती है टण्ट्या तुम हार मत मानना।दोल्या को फरसा पकड़ा दो। टण्ट्या को तलवार,बीजन्या को दाव थमा दे। जिससे वे वार पर वार करें। बीजली ललकार कर कह रही है - टण्ट्या तुम हार मत मानना, बिजली चमकेगी और बादल गरजेंगे।आकाश में घनघोर घटायें छा जायेंगी। जोरों से आंधी चलेगी। नदियों में इतनी बाढ़ आयेगी की वो किनारों को तोड़ देंगे। ये मेरे शेर टण्ट्या तुम युद्व से पीछे मत भागना। पोमली ललकार कर कह रही है। पटेलों को चारों तरफ से मजबूती से घेर लो। वे भागने न पायें। अंग्रेजों की हड्डी पसली तोड़ दो।नके सैनिकों को चारों तरफ से घेर लो । ऐसा मौका चूकना मत। पोमली ललकार कर कह रही हैं जितना लूट - पाट कर सकते हो तो कर लो। उस लूट के धन को गरीबों में बांट दो। एक पोमली मरेगी तो हजारों पोमली जन्म ले लेंगी। मुझे विश्वास है कि तुम फिर मिलोगे। तुम पर जगदम्बा की कृपा हैं गांव - गांव के लोगों को तुम्हारे ऊपर पक्का भरोसा है। तुम ने शिवा पटेल की पूरी घर गृहस्थी तहस - नहस कर दी। उसके घर की लकड़ियों को तोड़कर तुमने उसकी होली जला दी। टोली के किसी भी सदस्य को थोड़ा भी ड़र नहीं लगा। हम लोगों ने पटेलों के घर बहुत बेगारी की हैं परंतु अब हिम्मत करके उनसे टक्कर ले रहे हैं। पोमली ललकार कर कह रही है। टण्ट्या तुम हिम्मत मत हारना।

( सौजन्यः स्व.मगन बा. भानपुरा एवं देवी सिंह जी देव भानपुरा )

**अनुवाद . डॉ. विजय चौरसिया**

(संदर्भ ग्रंथ :टण्ट्यो भील बड़ो लरैया. लेखक - पूरन सहगल, संपादक - श्री राम तिवारी. स्वराज संस्थान संचालनालय भोपाल)

## 5. बोलो काई करनो छे मरदां

बोलो काई करनो छे मरदां
टाण्ट्यो पूंछ रहयो सब खऽ
हलो एक कर्यो सब मरदां
मारनो मरनो धार्यो छे सब खऽ
अंग्रेजां खऽ मार भगाावांऽज
रजवाड़मऽ खऽ दूर हटावांऽज

पटलां की पटलाई तोड़ांऽज
राज की जालिम सत्ता मोड़ांऽज
लावां अपणो राजऽ
करां गा राम धरम को राजऽ
टाण्ट्या खऽ समझा्ायो जसोऽज
सब टूट पड़ा ज्यों बाजऽ
लूटां उनऽ लुटेरा खऽ
जो कोठियां भरे अनाज
पकड़ नी पावे लाट खऽ राज
साथ मऽ जीवांऽज साथ मऽ मरांऽज
बोल दियो छे बोलऽ
टाण्ट्या खरी - खरी समझा ग्योज्य
टाण्ट्या  ख खांदे बंदूक जमा ग्योऽज
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :**

टण्ट्या अपनी टोली के युवकों से पूंछ रहा है ? बताओ अब क्या करना है। तुम लोग अंग्रेजों को मारकर भगा दो।रजवाड़ों  को खतम कर दो। पटेलों के घमंड़ को चकनाचूर कर दो। राज्य की जालिम सत्ता को उखाड़ फेंको। अंग्रेजों से अपना राज्य वापस ले लो। राम राज्य की स्थापना करो। जसोदा टण्ट्या को समझाती हैं सभी युवक बाज के समान धावा बोल दो। उन लुटेरों को लूट लो जो गरीबों को लूटते हैं।जिन्होंने अपनी कोठियों में आनाज भरकर रखा है। तुम लोग लूट - पाट करके भाग जाओ। तुमको कोई भी नहीं पकड़ पाये। हम लोग साथ जियेंगे और साथ मरेंगे।

टण्ट्या ने जो बोल दिया तो बोल दिया। टण्ट्या ने अपने कंधे में बंदूक टांग ली है।

**(सौजन्यः स्व.मगन बा. भानपुरा एवं देवी सिंह जी देव भानपुरा)**

**अनुवाद . डॉ. विजय चौरसिया**

(संदर्भ ग्रंथ :टण्ट्यो भील बड़ो लरैया. लेखक - पूरन सहगल, संपादक - श्री राम तिवारी. स्वराज संस्थान संचालनालय भोपाल)

## 6. टण्ट्या कर ग्यो छे रापारोल

टण्ट्या कर ग्यो छे रापारोलऽ
टण्ट्या खऽ उलझा ा ग्योऽज
खुद तो कर ग्यो छे बिस्तर गोलऽ
टण्ट्या खऽ उलझा ा ग्योऽज
उखऽ अटपट गेट बतला ग्योऽज
टण्ट्या तू तो मुड़ग्यो पांछां खऽ
अब टण्ट्या काई करे
कै तासे मारे अंगेज खऽ,कै अपनी मौत मरे
आगे बढ़े कऽ पाछयां जावे
नई पड़े छे कोई तोल रे टण्ट्या
तू कर ग्यो छे रापारोल
कह रे अब टण्ट्या कई करे
तू अधं बिच मऽ उलझाग्यो
सब खऽ कठबेड़ी चढ़वाग्यो

**गीतार्थ :**

टण्ट्या ने उथल - पुथल मचा दी।वह खुद उलझ गयां अब वह क्या करे या तो वह अंग्रेजों को मारे या खुद मर जाये। वह सोचने लगा की वह आगे बढ़े या पीछे जाये। उसे कुछ समझ में नहीं आ रहा था। अरे ूने तो उथल - पुथल मचा दी। अब टण्ट्या क्या करे। वह सबको मझधार में छोड़ गया। सबको अंग्रेजों ने लकड़ी की बेड़ियां पहना दी।

**(सौजन्यः स्व.मगन बा. भानपुरा एवं देवी सिंह जी देव भानपुरा)**

**अनुवाद . डॉ. विजय चौरसिया**

संदर्भ ग्रंथ :टण्ट्यो भील बड़ो लरैया. लेखक - पूरन सहगल, संपादक - श्री राम तिवारी. स्वराज संस्थान संचालनालय भोपाल

## 7. मरद टण्ट्यो

मरद टण्ट्यो धाड़ा ड़ारे साऊंकारा रजकारां पऽ
हल्लो करके खऽ करे चढ़ाई अंगेजी एलकारां पऽ
लूट्यो माल गरीबां खऽ बांटे,
हल्लो करे बजारां पऽ।
ले तलवार मरद एकलो,भारी पड़े हजारों पऽ।
टण्ट्यो आग्यो, टण्ट्यो आ ग्यो
मच ग्यो छे हाहाकार।
चौड़े धारड़े,आग लगा दी
कर्या छे वार पऽ वारऽ।
घणा तो भाग गया,औले दौले,
घा मौत की धारऽ।

साऊंकारां की सांसां रुकगी,
सकपकया सरदारऽ।
पटलां खऽ तो पड़ पड़ होगी,
मरग्यो थाणेदार।
गरीब मनख बेचिंत्या बैठ्या,
बंद कर लिया छे घर बारऽ।
मामो आग्योऽज मामो आग्योऽज,
हो रई छे जै - जै कारऽ।
पलटन राड़ी डूंगर भगगीऽज।
लाअ करे छे फटकारऽ
आग लंगाताऽज
धूल उड़ाताऽज
घुस ग्या जंगल बीचऽ।
थारी उमर तो खतम जाण लेऽ,
शिवा पटेल का घर हा - हा मचगीऽज,
टण्ट्या खऽ हो रई छो जे - जै कारऽ।
0ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थ :

वीर पुरुष  टण्ट्या ने साहूकारों और राजाओं के यहां ड़ाका ड़ाला। उसने उनके यहां धावा बोल दिया। वह अंग्रेजों को ललकारने लगा। वह अपने साथियों से कहने लगा - ल्ूट का धन गरीबों में बांट दो। बाजारों में धावा बोल दो। हाथ में तलवार ले लो। एक भील युवक हजारों में भारी पड़ता हैं टण्ट्या  आ गया, टण्ट्या  आ गया! चारों ओर हाहाकार मच गया। कुछ तो ड़रकर भाग गये और कुछ तो मौत के घाट उतार दिये गये। साहूकारों की सांस रुक गई। पटेलों में भगदड़ मच गई। थानेदार मारा गया।

गरीब मनुष्य निश्चिंत होकर घर में बैठा है। उसने घर के दरवाजे बंद कर दिये हैं। मामा आ गया ,मामा आ गया सभी गांव वाले कह रहे हैं और सभी टण्ट्या की जै कारा कर रहे हैं।

अंग्रेजों की सेना पहाड़ों में भागकर छुप गई है। उनके अधिकारी उनको ड़ांट रहे हैं।टण्ट्या आग लगाकर धूल उड़ाते जंगल में घुस गया है। शिवा पटेल जैसे नीच का अंत हो गया है। गांव के सभी लोग टण्ट्या की जय कारा कर रहे हैं।

**सौजन्य - स्वः देवी लाल बौराना ग्राम संधारा, तहसील- भानपुरा जिला मंदसौर**

.

**संकलन कर्ता - प्यारेलाल रांगोठा, ग्राम ओसरना शारदा सदन, तहसील भानपुरा**

(संदर्भ ग्रंथ : टण्ट्यो भील बड़ो लरैया. लेखक - पूरन सहगल, संपादक - श्री राम तिवारी. स्वराज संस्थान संचालनालय भोपाल)

## 8. आयो जाबर टण्ट्यो

आयो जाबर टण्ट्यो
हात में हारो डण्ट्यो

टण्ट्या ने करयो हाको
पटेल को फटयो बाको
साऊकारा के व्हैगी तड़
लाट के व्हैगी तड़
उठ ग्यो लाट को खाटलो
मरग्यो लाट टाटलो
गोरयां के मारो डण्ट्या चार
मारकूट के करो समंदर पार
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :**

जबरदस्त टण्ट्या आया।सबको हराते आया। टण्ट्या ने किया हाका,पटेल का फट गया बाका।साहूकार की मुसीबत हो गई। लाट साहब भी मुसीबत में पड़ गये। लाट साहब की खाट उठ गई। अंग्रेजों को चार ड़ंड़े मारे और उनको मार - कूट कर समुद्र के पार विदेश में भगा दिया।

**सौजन्य : विश्ना जी ग्राम - गफार्ड़ा, मालवा राजस्थान सीमा पर स्थित एक ग्राम**

**अनुवाद - डॉ. विजय चौरसिया**

(संदर्भ ग्रंथ : टण्ट्यो भील बड़ो लरैया. लेखक - पूरन सहगल, संपादक - श्री राम तिवारी. स्वराज संस्थान संचालनालय भोपाल)

## 9. टण्ट्या म्हारो भायो

भील रे भील
थारो कारो कट्ट ड़ील
थारा माथा ऊपरे मोरी
थारी कूकड़ी खा ग्यों टेगड़ो
थारी झोपड़ी में होगी चोरी
थारी भीलण देखे आगरो
भीलणी को फट ग्यो घाघरो
भीलणी के भांग्यो कांटो
भील हो ग्यो रांटो
भील के लागी रीस
भील ने घींची ईस
आरे म्हारो टण्ट्यो
लगा ढ़ेड़ के ड़ण्ट्यो
टण्ट्यो म्हारो भायो
म्हारो जामण जायो

**गीतार्थः** भील रे भील तेरा काला शरीर,तुम्हारे माथे पर मुकुट,तेरी मुर्गी खा गई टेगड़ो,तेरी झोपड़ी में लग गई चोरी। तेरी भीलनी देखने गई आगरा,भीलनी का फट गया घाघरा,भीलनी

के भाग्य में कांटा,भील स्वभाव से टेढ़ा,आ जा रे मेरा टण्ट्या,टण्ट्या मेरा भाई , मेरे यहां भोजन करने जायेगा।

**सौजन्य : विश्ना जी** **अनुवाद - डॉ. विजय चौरसिया**

(संदर्भ ग्रंथ : टण्ट्यो भील बड़ो लरैया. लेखक - पूरन सहगल, संपादक - श्री राम तिवारी. स्वराज संस्थान संचालनालय भोपाल)

## 10. टण्ट्यो भील बड़ौ लरैया

टण्ट्यो भील बड़ौ लरैया, अंग्रेजन ते ठानी रार।
इतकूं - उतकूं हल्लों बोलै, पुलिस न पावै जाको पार।।
लाट की फौजाँ घेरो ड़ालै, भील लगावै वार पै वार।
तीर चलावे तक - तक मारै, भीलन की कर ली सेना तैयार।।
हल्ला बोलै, हांक लगावै, लड़िबे मरिबे कूं तैयारं
राज बनावैं मैं भीलन कौ, तू चल जा लंदन के पार।।

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :**

टण्ट्या भील बहुत साहसी और वीर पुरुष था। उसने अंग्रेजों से युद्व किया।उसने यहां - वहां हल्ला बोलकर लूट - पाट की ,पर अंग्रेज पुलिस उसे पकड़ नहीं पाई।अंग्रेजों की फौज ने उसको पकड़ने के लिये घेरा ड़ाला,भील धावा पर धावा बोले जा रहे थे। वे ताक - ताक कर तीर चला रहे थे। भीलों ने अपनी सेना तैयार कर ली। वे हल्ला बोलकर धावा कर देते थे। वे लड़ने मरने को तैयार रहते थे। टण्ट्या कहता था मैं भीलों का राज्य कायम करुंगा और अंग्रेज तुम लंदन चले जाओ।

**अनुवाद - डॉ. विजय चौरसिया**

(संदर्भ ग्रंथ : टण्ट्यो भील बड़ो लरैया.)
लेखक - पूरन सहगल, संपादक - श्री राम तिवारी.
(स्वराज संस्थान संचालनालय भोपाल)

## 11. जरमन तोर लड़ाई जिया न बाचै रे

ऊपर चलै हवाई
नीचे चलै रेलबाई
गोन होइगा सोन
जरमन तोर लड़ाई
जिया न बाचै रे

(1939 -40 के आसपास रचा गया गीत)

**गीतार्थ -**

**ऊपर से हवाई बमबारी और नीचे सैनिकौं को ढ़ोनेवाली रेल मंहगायी की मार नोन 'नमक' तक सोना जैसा मंहगा हो गया है। यह जंगखोर जर्मन युद्व का कुपरिणाम हैं दुनिया भर में जनजीवन असुरक्षित हो गया है।**

संकलन एवं अनुवादः आदित्य प्रताप सिंह
संदर्भ ग्रंथः (सुराज म.प्र. आदिवासी लोक कला परिषद)

## 12. गांधी थारी जोत स जोत जली

**गांधी थारी जोत स जोत जली।।टेक।।**
**जोत से थारी, जगमग हुई गई ,**
**गांव होण की, हर गली - गली,**
**गांधी थारी जोत स जोत जली।।1।।**
**सत,अहिंसा, प्रेम शंति अरु,मानवता का धाम तुमई।**
**बुद्व,मसीहा, मुहम्मद तुमई,**
**कृष्ण तुमई था राम तुमई।।2।।**
**करुणा का अवतार तुमई न ,**
**दीन का उद्वार करी।**
**हिंसा की तलवार खऽ तुन,**
**फूल का ये हार करी।।3।।**
**थारी याद अमर रयेगी,अम्मर थारी, बलिदानी।**
**सब खेऽ, मन मऽ खिल्या करेगी,**
**अम्मर जोत की अम्मर कली।।4।।**
**0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0**

गीतार्थ :

गांधी जी आपकी ज्योति से देशवासियों की ज्योति जली,जिससे संपूर्ण भारतवर्ष जगमग हो गया।गांव हो या गलियां , सभी जगह आपके नाम के ज्योति जली।आप सत्य, अहिंसा,प्रेम,शांति और मानवता की मूर्ति हो।गौतम बुद्व, ईसामसीह,मोहम्मद पैगंबर आप ही थे। कृष्ण और राम के अवतार भी आप ही थे। आप करुण के अवतार थे। आप दीन - दुखियों के उद्वार करने वाले थे। आपने हिंसा की तलवार से भारत माता पर फूलों की हार चढ़ा दी। आपकी याद हमेशा रहेगी, भारतवासी आपका बलिदान कभी भी नहीं भूलेंगे।सभी भारतवासियों के मन में अमर ज्योति की अमर कली खिलती रहेगी।

संकलन - राधेश्याम शांड़िल्य हरदा

**अनुवाद - डॉ. विजय चौरसिया गाड़ासरई**

## 13. गांधी इक महातमा हुई गया

गांधी इक महातमा हुई गया,कलजुग मऽ अवतारी रे।
जेकि तिरिया पतिबरता छे, कसतूरी जग नऽ जाणी रे।।1।।
चरखा संग रमाई धुणी,दुई मनखळ उपकारी रे।
सच्ची बात धरम की जाणी,अरु अहिंसा ठाणि रे।।2।।
धणी - लुगई लड़ी - जड़ी न सत्याग्रह खऽ जाणी रे।
अंगरेज होण सु जबर जोर हुइ,हार उन्नई न ऽ मणी रे।।3।।

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थः**

महात्मा गांधी जी इस कलयुग में एक अवतारी महापुरुष हो गये। उनकी पत्नी कस्तूरबा गांधी बहुत पतिव्रता है। यह संसार को भली प्रकार से ज्ञात हुआ। ये दोनों पति - पत्नी मानव हित में परोपकार की भावना के लिये कार्य कर रहे हैं। चरखा, सच्चाई और अहिंसा इनके प्रमुख मंत्र और साथी हैं। जिसके बल पर अंग्रेजी हुकूमत से लड़ रहे हैं।अंत में अंग्रेजी शासन की हार हुयी और महात्मा गांधी की विजय हुयी।

संकलन - राधेश्याम शांड़िल्य हरदा
अनुवाद - डॉ. विजय चौरसिया गाड़ासरई

## 14. ई खोटो पैसो नी खरी चांदी आयऽ

ई खोटो पैसो नी हई, खरी चांदी आयऽ
ई हवा अंधोल नी,गांधी आय ऽ।
ई आसमानी बादली नी,सत्याग्रही न की,टोलई आय ऽ
ई तो गरीब के लेण ऽ
फैलायेल गांधी बाबा की,झोलई आय ऽ।
ई मारन की नी , मरन की बात करज ऽ।
एकाग सी एख ऽ अंग्रेज भी डरज ऽ।

**गीतार्थ :**

ये खोटा पैसा नहीं खरी चांदी है। यह हवा आंधी नहीं गांधी है। यह आसमानी बादल नहीं ,सत्याग्रहियों की टोली है। यह तो गरीबों के लिये फैलाई गई महात्मा गांधी की झोली हैं ये मारने को नहीं , मरने की बात करता है,इसी से इससे अंग्रेज ड़रता है।

(संदर्भ ग्रंथ : सुराज म.प्र. आदिवासी लोक कला परिषद)

## 15. आगे - आगे गांधी, पीछे - पीछे सुभास

चरका घोड़ चरत हरिअर घास हो
आगे आगे गांधी छेंकत, पीछे पीछे सुभास हो
चंसेखर भगत लोहिया जुरे जय प्रकास हो

रुख होइ एक दिन खेते के कांस हों
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थः**

चरका 'सफेद' घोड़ा हरी भरी जनता को चरता है। गांधी जी उसे आगे से और सुभाष चंद्र जी पीछे से रोकते हैं।इस कार्य में सभी जुड़े हैं। चंद्रशेखर आजाद से लेकर नेहरु, जयप्रकाश तक सबका योगदान है। फलतः हमारे खेतों की घास "कांस" एक दिन सूख "ईख" में बदल जायेगी बदल गई है।

संकलन एवं अनुवादः आदित्य प्रताप सिंह
संदर्भ ग्रंथः (सुराज म.प्र. आदिवासी लोक कला परिषद)

## 16. म्हारा चरखा का टूटऽनी तार

म्हारा चरखा कै टूटै न तार
चरखा चालू रहै
गांधी महातमा दुलहे बने है
दुलहिन बनी सरकार
म्हारा चरखा का टूटे न तार
चरखा चालू रहै
चन्दन काठ का बना है म्याना
खादी कै पड़ी है औहार
सगले सुराजी बने हैं बराती
पुलिश बनी है कहार- रखा चालू रहै
म्हारा चरखा के टूटै न तार - चरखा चालू रहै।

**गीतार्थ :**

मेरे चरखे के तार न टूटें - मेरा चरखा चालू रहे। महात्मा गांधी दूल्हा बने हैं और सरकार दुलहिन बनी है।चन्दन की लकड़ी का म्याना बना है और खादी का औहार यानी परदा पड़ा है।सभी

सुराजी बराती बने और पुलिस कहार बनकर म्याना यानी पालकी कन्धे पर उठा कर चल रही है। मेरे चरखे के तार न टूटे और मेरा चरखा चालू रहे।

संकलन एवं अनुवाद लखन प्रताप सिंह 'उरगेश'

संदर्भ ग्रंथः (सुराज म.प्र. आदिवासी लोक कला परिषद)

## 17. भैया सोवणऽ को नहीं हंई जमानो,

भैया सोवणऽ को नहीं हंई जमानो,
देश आजाद अपणो वणवुण।
जुल्मी ड़ायर ने गोलई चलई थी,
बूढ़ा बच्चा की करदी सफई थी।
दूध माता को हंई नी लजाउणुऽ
देश आजाद अपणो वणावणु।

गीतार्थ :

भाईयो यह सोने का जमाना नहीं है। हमें तो अपने देश को आजाद बनाना है। ड़ायर जैसे जुल्मी अत्याचारी ने गोलियां चलाकर , बूढ़े और बच्चों को भून ड़ाला। हमें अपनी माता का दूध नहीं लजाना हैं हमें तो अपने देश को आजाद बनाना है।

संकलन एवं अनुवादः रामनारायण उपाध्याय

(संदर्भ ग्रंथः सुराज म.प्र. आदिवासी लोक कला परिषद)

## 18. जाग रे किरसाण भाई

जाग रे किरसाण भाई ,
ई जागणऽ की बेला छे।
जेका साथ मऽ गांधी जी होय,
कुण कयेज ऊ अकेला छे।
गांधी बाबा न अलखऽ जगई दी,
सत्याग्रह की धूम मचई दी।
हरिजन नखऽ गलऽ लगई न,
दारु बन्द करई दी।
सत्य - अहिंसा को व्रत धारो,
जोर जुलुम सी कदी नी हारो।

मातृ - भूमि का लेणऽ,
अपनो तन - मन वारो रे ,
जागो रे किरसाण भाई ,
ई जागणऽ की बेला छे।
जेला साथ मऽ गांधी जी होय
कुण कयेज ऊ अकेला छे।
0ध्ध्ध्0

**गीतार्थः**

हे किसान भाईयो जागो। यह जागने का मुहुर्त है। जिसके साथ गांधी जी हो, कौन कहता है कि वह अकेला है।गांधी महराज ने अलख जगा दी है। सत्याग्रह की धूम मा दी है।उन्होंने हरिजनों को गले लगाकर, शराब बंद करा दी है। सत्य - अहिंसा का व्रत धारण करो। जोर और जुल्म के सामने कभी नहीं झुको।मातृभूमि के लिये अपना,तन,मन,धन,निछावर कर दो। हे किसान भाईयो जागो,यह जागने का मुहुर्त है।

संकलन एवं अनुवादः रामनारायण उपाध्याय,
(संदर्भ ग्रंथः सुराज म.प्र. आदिवासी लोक कला परिषद)

## 19. द्वापर मऽ मोहन हुआ, कलयुग मोहनदास

द्वापर मऽ मोहन हुआ,कलयुग मोहनदास।
एक था जलम्या जेल म,एक रहे कारावास।

एक ने बंशी मधुर बजाई,एक न रखो सुधर चलायो।
एक न चक्र सुर्दशन फेर्यो,एक न गोरा नखऽ गेर्यो।
एक न गोवर्धन ख धारयो,एक न जन - जन ख उबार्यो।
एक न जुल्मी कंस पछाड़्यो,एक न जालिम राज उखाड़्यो।
एक न मोही द्वारका,एक न सेवाग्राम।
एक को बल थो गीता - माता,एक को बल थो राम।
द्वापर मऽ मोहन हुआ, कलयुग मोहनदास।

गीतार्थ :

द्वापर युग में मोहन हुये और कलयुग में मोहनदास ।एक का जन्म जेल में हुआ दूसरे का जीवन जेलखाना में बीता। एक ने मधुर बंशी बजाई ,दूसरे ने सुन्दर चरखा चलाया। एक ने सुर्दशन चक्र घुमाया, दूसरे ने अंग्रेजों को भगाया। एक ने अत्याचारी कंस का अंत किया,दूसरे ने जालिम विदेशी राज्य को उखाड़ फैंका। एक ने द्वारका को मोह लिया,दूसरे ने सेवाग्राम को।एक का बल गीता माता थी,दूसरे को बल, राम। द्वापर में मोहन हुआ,और कलयुग में मोहनदास गांधी।

संकलन एवं अनुवादः रामनारायण उपाध्याय
(संदर्भ ग्रंथः सुराज, म.प्र.आदिवासी लोक कला परिषद)

## 20. चढ़ी गया निरमल धाम गैलवै बैकुंठ की सीधी पकड़ी

चढ़ी गया निरमल धाम गैलवै बैकुंठ की सीधी पकड़ी
पूज्य बापू तमन् माया या तोड़ी रे प्रीत माया तोड़ी।
चढ़ी गया निरमल धाम गैलवै बैकुंठ की सीधी पकड़ी।
हंऊ तो बापू गुण वरणन करता हो जी गुण वरनणन करता।
ऊ अपण देस की सेवा में सदा व्यस्त रयता।।
अमन चमन क छोड़ दुख सयता हर वकता।
देस सेवा का खातिर जेल गया कई वकता।।
बापू जी हंसमुख हर बखत रयता था।
ऊ दुखी जन की सदा सुद लेता था।।
उनका दुख हरदम हरता।
आजादी का लेणऽवो करता मयनत जीव तोड़ी।
चढ़ी गया निरमल धाम गैलवै बैकुंठ की सीधी पकड़ी।।1।।
सन् 42 में आजादी को आंदोलन हुयो बड़ो भारी।
नर - नारी सब जेल मॅ गया था,अंगरेज बड़ा अत्याचारी।।
देस परेम में सब डटी रया, नी करी जरा भी ख्वारी।
देखी न बुलंद हौसला,अंगरेज गयो हारी।।
सबनऽ आजादी का नारा लगाया।

पंदरह अगस्त 47 का दिन आया।।
भारत छोड़ी नऽ अंगरेज बड़ा भागी गया।
घर - घर में तिरंगा लहराया।।
आई आनंद की घड़ी,गुलामी की बेड़ी दी तोड़ी।
चढ़ी गया निरमल धाम गैलवै बैकुंठ की सीधी पकड़ी।।2।।
तीस जनवरी अड़तालीस खऽ एक दुष्ट नऽ गोली मारी।
राम राम हा राम करीनऽ जान बिसारी।।
हुयो देस में अंधकार भारत को सूरज अस्त हुयो।
मची गयी हाहाकार जगत में सब कऽ दुख हुयो।।
बूढ़ा वान नऽ बालक - बालक रोवऽ जसा पाणी बिन मच्छ हुआ।
सुध बुध तन की भूल गया नऽ भोजन पाणी जहर हुआ।।
बापू भी तमन हमारा सी प्रीत जोड़ी।
काइ कसूर हुयो हमारा सी काय माया तोड़ी।।
सरदार जवाहर कऽ बीच मॅ क्यों गया छोड़ी।
चढ़ी गया निरमल धाम गैलवै बैकुंठ की सीधी पकड़ी।।3।।
हत्यारा तू नाग कालियो काल रुप कॉ सी आयो।
ली बापू की जान तूनऽ जनता खऽ भरमायो।।
अपणा स्वारथ का लजेण तूनऽ दूसरा नऽ कऽ रड़ायो।
निरदयी हत्या करनऽ मॅ तू  जरा नी सरमायो।।
अरे दुष्ट तूनऽ दगों करयो अति भारी।
तू जनम जनम होयगा नरका चारी।।
अरे हत्यारा तून दया नी दिल मॅ धारी।
कॉ की मंथरा आई नऽ थारी मति गई मारी।।
अपणी काली करणी सी तू - चड़्यो नरक पयड़ी।
बापूनऽ निरमल धाम गैल बैकुंठ की सीदी पकड़ी।।4।।
मार्या करुणा का बाण, हिया मा तीर गया फसी।
बाण को घाव नजर नी आवऽ अतर भाल धसी।।
दवा - दारु तो कॉ लगाऊ नऽ का बांधू दोरा दसी।।
करुणा रस को जयर गयो,रग - रग मॅ फसी।।
बापू जी तमारी याद आवगऽ हमकऽ।
गरीब का मसीहा,हम ऊंसांस लेवा दम - दम पऽ।।
हमारी पऽ बड़ी रहम - फिकर थी तम कऽ।
अवॅ धीरज देगऽ कुण हमकऽ।।
हा हमकऽ एकदम छोड़ी गया नऽ गया मुंड़ो मोड़ी।
चढ़ी गया निरमल धाम गैलवै बैकुंठ की सीधी पकड़ी।।5।।
म्हारो कसो परेम थो बापू सी, हऊॅ जाणॅू कि ईश्वर जाणऽ।
आग जाण की लुहार जाण,वो धम्मण वालो काइ जाणऽ।
झुठ बणइ न बात करुॅ तो भगवान मखऽ ताणऽ।

वो तीन लोक का करता धरता,घट - घट की जाणऽ।
बापू जी एक सोक समुंदर,भरयो ड़ोला का कोन्या।
जसो धरती मऽरम सूम को सोना।।
बापू जी जनता पुकारऽ जबाव देता जाणा।
हमकऽ रस्तो बतावण ख फिर सी तुम आणा।।
हाथ जोड़ अरदास करुं पॉय धरुं पागड़ी।
चढ़ी गया बैकुंठ धाम गैलवै बैकुंठ की सीदी पकड़ी।।6।।
0ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थः

दिनांक 30 जनवरी 1948 की संध्या प्रार्थना में जब बापू शहीद हुये ,तो लोक कवि की वाणी इस तरह प्रस्फुटित हुई। हे पूज्य बापू! आपने हम सभी से माया ममता तोड़कर 'निर्मल धाम बैकुंठ' को जाने वाली राह पकड़ ली है। मुझे आपके गुणों का स्मरण आता है। उनका वर्णन करता हूं।

आप सुख चैन की जिंदगी से दूर रहकर दुखों को सहते हुये भी देश सेवा में सदा व्यस्त रहते थे। आप हर स्थिति में प्रसन्न चित्त रहते थे। आप दूसरों को सुख प्रदान करते थे। आपने देश को गुलामी की जंजीरों से मुक्त कराने के लिये जी तोड़ प्रयत्न किये। ।ं1।।

सन् 1942 में आजादी के लिये बड़ा भारी आंदोलन ( भारत छोड़ो ) हुआ, तब अत्याचारी अग्रेजों ने अनेकानेक देश प्रेमियों को जेलों में ठूंस दिया, आपकी प्रेरण से देशवासी अपने उद्वेश्य के लिये डटे रहे। किसी भी ने थोड़ी सी भी उपेक्षा नहीं की,आपके बुलंद हौसले देखकर अंग्रेज चकित हो गये। वे आपसे हार गये, सभी अजादी के नारे लगाते रहे। इसी प्रकार संघर्ष करते हुये 15 अगस्त 1947 का शुभ दिन आजादी लेकर आ गया। आपने गुलामी की जंजीरें तोड़ दीं।हम विदेशी दासता से मुक्त हो गये। अत्याचारी विदेशी शासक भाग गया। उस दिन देश घर - घर में तिरंगा झंड़ा लहराया गया।। 2 ।।

इसके बाद 30 जनवरी 1948 को वह काला दिन आया , जब एक दुष्ट ने आपको गोली मारी थी और आपने हे राम का उच्चारण करते हुये नश्वर देह त्याग दी थी। , आपका आवसान क्या हुआ मानों भारत का सुर्य अस्त हो गया और अंधेरा छा गया। सर्वत्र हाहाकार मच गया। सारा संसार दुखी हो गया। आबाल वृद्व सब रोते हुये जन बिन मीन की तरह तड़फने लगे। सभी लोग तन - मन की सुधि भूल गये। भोजन पानी सभी के लिये जहर हो गया। सभी कहने लगे बापू आपने हमसे अपनी प्रीत क्यों तोड़ दी , हमसे क्या कसूर हुआ जो आपने माया ममता तोड़ दी, आप जवाहर लाल जी और सरदार वल्लभ भाई पटेल को मझदार में छोड़कर निर्मलधाम बैकुंठ की राह पर चले गये। ।।3।।

( हत्यारे के प्रति आक्रोश व्यक्त करते हुये लावणीकार कहता है) अरे हत्यारे ! तू कालिया नाग के समान काल बनकर कहॉ से आ गया। तूने बापू की जान ले ली , तुझे जरा भी दया नहीं आई! तूने अपने स्वार्थ के लिये दूसरों को रुलाया हैं दुष्ट तूने बहुत बड़ी दगाबाजी की तू जन्म

जन्मांतर तक नरक भोगेगा, यह तो बता वह कौन मंथरा थी जिसने तेरी बुद्वी पलट दी थी। अपनी काली करतूत के कारण तूने नरक की राह पकड़ी हैं हमारे बापू तो निर्मल धाम बैकुंठ की राह पर चले गये हें।।4।।

(अंत में लावणीकार कहता है) हमारे हृदय में करुणा रस के तीर ऐसे धंस गये हैं, कि ऊपर से घाव नजर नहीं आते हें। परंतु हृदय में भाले की तरह चुभ रहे हैं । हृदय के इस घाव को भरने के लिये मैं कौन सी दवा - दारु या गंड़े - तावीज करवाऊं। हमारे रग - रग में करुणा का जहरि व्याप्त हो गया हैं हे बापू! हे गरीबों के मसीहा ! तुम हमें हमेशा याद आते रहोगे। आपने हम पर हमेशा मेहरबानी की है। हम रह रह कर सांसें ले रहे हैं। आप हमसे मुंह मोड़कर निर्मलधाम बैकुंठपुर की राह पर चले गये हो। अब हमें कौन धैर्य बंधायेगा।

हे बापू! मैं तुमको कितना प्रेम करता था, यह तो मैं ही जानता हूं या आप जानते हो। अग्नि और लोहार के रिश्ते को धम्मन देने वाला क्या जाने ? मैं यह बात यदि झूंठ कहता हूं तो भगवान मुझे दंड़ देंगे। क्योंकी वह तीनों लोकों का कर्ता धर्ता और घट - घट की जानने वाला है। हे बापू! जिस प्रकार धरती के गर्भ में सूम का धन समाया रहता है।उसी प्रकार मेरी आंखों के कोनों में शोक का सागर समाया हुआ है। मैं आपके चारण कमलों में पगड़ी रखकर हाथ जोड़कर प्रार्थना करता हूं। आप जनता की यह पुकार सुनते जाओ। आप हमें मार्ग दर्शन देने के लिये पुनः अवतरित होना।

ज्योतिषाचार्य श्री बलवन्त डालके. ग्राम - जोसपुर, धार से प्राप्त

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

## भील जनजाति में प्रचलित सामाजिक चेतना के लोक गीत -

### 21. जिस दिन याद करोगा उस दिन बहुत झुरोगा रे

जिस दिन याद करोगा उस दिन बहुत झुरोगा रे ।। टेक।।
रुखे - सूखे भोजन करना,जहां तहां पड़े रहना रे।
कोई भली कहे कोई बुरी कहे क्या दलगिरि लाना।।1।।
काल पड़े विकराल जगत में ,ऐसी चबेनी चाब रे।
भूख लगे जब चाब जायेगा,ककड़ी सरीखा कच्चा रे।।2।।
अगम जाना पश्चिम जाना,पूरब की सुध लाना रे ।
तनक जनकपुर और रामेश्वर,गंगा सागर नहाना रे।।3।।
साधू संत के अधीन रहना,हाय कभी न करना रे ।
कह जन सिंघा जी सुनो भाई साधू जम का धक्का।।4।।

**गीतार्थ :** हे मनुष्य! तूने मान सम्मान प्राप्त करने में ही अपना जन्म खो दिया हैं जिस दिन प्राण इस शरीर से निकलने

लगेंगे, उस दिन तुम परमात्मा को प्राप्त करने के लिये बहुत तड़पोगे। इस जीवन को मान सम्मान की भावना से दूर रख रुखा - सूखा भोजन कर , जहां भी तुझे जगह मिले वहां पड़े रह , तुझे कोई भला कहे या बुरा कहे, इन दोनों को एक समान समझना,सहनशील बनकर इन्हें स्वीकार करना। जीवन मरण का चक्र तो चौबीस घंटों चलता रहता है। इसे कोई रोक नहीं सकता।काल के सामने किसी की नहीं चली है। जब भी काल को भूख सतायेगी, वह ककड़ी के समान तुझे कच्चा चबा जायेगा। चारों दिशाओं, चारों तीथरें,चारों कोनों में चले जाओ। तब भी तुम्हारे अन्दर जो मैल है,वह नहीं धुल सकता। वह तो ज्ञान रुपी गंगा में स्नान करने से ही धुल सकता है। साधू संतों के साथ रहना,हाय कभी मत करना,अर्थात आराम से रहना। सिंगाजी कहते हैं, कि जो नर सांसारिक विषय में लिप्त रहता है ,वही काल के अर्थात जीवन मरण के धक्के खाता है। काल के धक्के खाने से बचने का एक मात्र माध्यम निर्गुण ब्रम्हा को प्राप्त करना हैं इससे ही तो जीवन सफल हो सकता है।

संकलन एवं अनुवादः अनिता राजपूत

संदर्भ ग्रंथःचौमासा,म.प्र.आदिवासी लोक कला अकादमी **वर्ष 23 अंक 70**

## 22. कुदरत की गत न्यारी साहेब

**कुदरत की गत न्यारी साहेब**
**आप ही धरम धारी मोरे साहेब,**
**आप ही खेल खिलाड़ी साहेब।।टेक।।**
**तम्बू तो आसमानी कहिये,जमी दुलीचा भारी।**
**चंदा सूरज दो लगी मसालें,**
**कुदरत की गत न्यारी साहेब।।1।।**
**जग संसारी यो बाग लगायो,लख चौरासी क्यारी**
**एक बूंद की सृष्टि रची है,**
**ऊपजे नर अरु नारी साहेब।।2।।**
**पंचतत्व की चौसर मांड़ी,तुम पासा हम सारी।**
**पासा चाहे वाहे जितावे,सारी कौन विचारी रे साहेब।।3।।**
**छक्का पंजा की नरद बचावे, बीजू कंठ न करारी।**
**जो वो सार पक्की घर आवे,**
**वो ही चतुर खिलाड़ी रे साहेब।।4।।**
**सूरत सुहागन भई मतवाली,ठाड़ी रुप निहारी।**
**अनहद ऊपर भई है गरजना,**
**सोहम की असवारी रे साहेब।।5।।**
**सांचे साहेब जिनके सिर पर,उनका जगत भिकारी।।**
**कहे जन सिंगा सुनो भाई साधू,**
**हर दम जीत हमारी रे साहेब।।6।।**

**0ध्ध्ध्ध्ध्0**

**गीतार्थ :**

**हे ईश्वर! आप ही धर्म को धारण करने वाले हो । यह सृथ्ष्ट आप ही की लीला है। इस सृष्टि का खेल आपने ही खेला है।आप ही इसके खिलाड़ी हें। इस सृष्टि में आसमानी रुपी तंबू कहिये या धरती रुपी गलीचा,यह आपने ही रचा है। चांद और सूरज रुपी दो मसालें आपने ही रोशन की हें।सृष्टि की यह लीला अपरंपार है। आपने संसार रुपी बाग लगा दिया हैं जिसमें चौरासी लाख यौनियां बना दी हैं। यह सृष्टि एक बूंद की हैं जिससे नर और नारी उत्पन्न हुये हें।आपने पंचतत्व रुपी चौसर बनायी हैं जिसके 'पासे' आप हैं और हम तो केवल 'सार' हैं।इस चौसर के खेल के छक्के पंजे चल रहे हैं।प्राणी इसमें उलझा है लेकिन सार रुपी मनुष्य जो पूरे खेल में कठिन परिक्षाओं से , चुनौतियों से पार पाकर अपने घर अर्थात अंतिम लक्ष्य को जरुर पहुंचता हैं वही सच्चा खिलाड़ी होता है। 'सूरत' रुपी सुहागन बहुत मतवाली है। जो खड़ी रुप निहार रही है। ऊपर अनहद नाद् की गर्जना हो रही है। जिस पर 'सोहम' ने सवारी गांठी है। जिसके सिर पर सच्चे साहब का हाथ है।उनका जगत भिखारी हैं संत सिंगा जी कह रहे हैं कि इस मार्ग पर चलने से जीत हमारी होगी।**

**संकलन एवं अनुवादःअनिता राजपूत**

**(संदर्भ ग्रंथःचौमासा,म.प्र.आदिवासी लोक कला अकादमी वर्ष 23 अंक 70)**

## 23. रतन को पिंजरो रे,जतान करी राखतो

**रतन को पिंजरो रे,जतान करी राखतो**
**पंखेरु का सुअला रे,बन्दो रे म्हारा उड़ी हो गया।**
**तोहे उड़ तन लागी रे वार।।टेक।।**
**रखा लाल चोंच तो रे,हरी रे थारी पांखुड़ी।**
**तू जाई बैठ्यो आमूलारी डाल,पखेरु का सुअला रे।।1।।**
**रतन को पिंजरो रे,जतान करी राखतो।**
**असो लेतो कंठ लगाय,पखेरु के सुअला रे।।2।।**
**असो तो मन में रे,बन्दो रे म्हारा में जानतो।**
**असो कर लेतो दो दो बात, पखेरु के सुअला रे।।3।।**
**मनरंग स्वामी तो रे ,बन्दो रे,म्हारा यो कहता गया।**
**असा सिंगाजी अमरापुर जाय,पंखेरु का सुअला रे।।4।।**

**गीतार्थ : प्राण रुपी पक्षी उड़ गया है,अब तुम्हारी उड़ने की बारी है। एक समय था कि शरीर में लाल चोंच और हरे - हरे पंख थे,अर्थात शरीर में प्राण थे। प्राण रुपी यह पक्षी उड़कर दूसरी ड़ाल पर बैठ गया। अर्थात मनुष्य एक पक्षी के समान है। जो माया मोह रुपी रत्न जड़ित पिंजरे में बंद रहता है, और सारी चीजों को अपने गले से लगाकर रखता है। भक्त कहता है कि यदि मैं इस वास्तविकता को जानता तो दो घड़ी दो अच्छे काम कर लेता। मेरे गुरु मनरंगगिर स्वामी**

ने मुझे यह उपदेश दिया था कि जिस तरह पंक्षी उड़ जाता है, वैसे ही 'सिंगाजी ' मनुष्य भी स्र्वग चला जाता है।

संकलन एवं अनुवादः अनिता राजपूत

संदर्भ ग्रंथःचौमासा,म.प्र.आदिवासी लोक कला अकादमी वर्ष 23 अंक 70

## 24. काया नहीं सुहानी भजन

## बिना काया नहीं सुहानी

काया नहीं सुहानी भजन बिना काया नहीं सुहानी रे।
जैसे लोन बिन दाल अलोनी।।टेक।।
हाड़ मांस को बन्यो है पिंजरो ऊपर चाम लपेटी।
हाथ ,पांव मुख, मस्तक लाई न ऽ पायो उत्तम निशाणी।।1।।
तू कहां मैं कहां रेवन लाग्यो,साये तो भूमि सिराणी।।2।।
भाई ,बन्धु मिल कुटुम्ब कबीलो,जुड़ बैठ्या सब नाती।
राम नाम की गत नहीं जानी,घर में बैठया सेठ सेठानी।।3।।
कहे जनसिंगा सुनो भाई साधू, यो पद है निरबानी।
यो पद की कोई करो खोजना, नहीं तो काल करेगो चाबनी।।4।।

**गीतार्थ :**

भजन के बिना यह शरीर सुहावना नहीं लगता। जिस प्रकार नमक के बिना दाल में कोई स्वाद नहीं रहता। हाड़ - मांस से बने इस पिंजरे पर चमड़ी लिपेट दी गई है।हाथ - पैर, मुख, मस्तिष्क लेकर तूने उत्तम निशानी पायी है।गर्भ में जब तक रहा तब तक खुब अराधना की। प्राणी जब तू बाहर आया तो सब कुछ भूल गया। तू कहां और मैं कहां यह सोचकर तू रोने लगा। जब तू सोया तो भूमि तेरी तकिया बनी। भाई - बन्धुओं से मिलकर कुटुम्ब कबीला बनाया, सभी रिश्ते जुड़ बैठे।नातों - रिश्तों में तू राम नाम को भूल गया। इसकी महिमा को भूल गया। तेरे अंदर तो सांसारिक रुपी सेठ - सेठानी बैठे हैं।सिंगाजी कहते हैं कि यह पद तो निरमानी है, अर्थात जिसका महत्व वाणी के द्वारा व्यक्त नहीं किया जा सकता है। इस पद के महत्व को नहीं समझा तो काल तुझे चबा जायेगा। अपने अंदर विघमान उस परमात्मा को खोज ले। जिससे तेरा जीवन सफल हो जायेगा।

संकलन एवं अनुवादः अनिता राजपूत

संदर्भ ग्रंथःचौमासा,म.प्र.आदिवासी लोक कला अकादमी वर्ष 23 अंक 70

## 25. भवर खेलन मत जाइयो,आगऽ जम की वास

भवर खेलन मत जाइयो,आगऽ जम की वास
खेल लऽ दुल्हन बाई खेल लऽ , बाई थारो राज।
भवर खेलन मत जाइयो,आगऽ जम की वास।।टेक।।
सतगरु लगन लिखाईयाँ, गया पूरब देश।
ना ऊगे ना आधवे,ऐसा अपरम देश।।1।।
सतगुरु आवन वे चल्या,सत् सुकत् साथ।
पांच पच्चीस बरातियाँ,दुल्हो बनो निरबाण।।2।।
छोटी कलश छोटी ड़ंड़िया,छोटो है रे आकार।

डोलाई उतारी चंपा बाग में,मांडो दसवा द्‌वार।।3।।
प्रेम का पलंग बिछाईयाँ, पिया करो विश्राम।
मन मऽ बसी रानी दुल्हन,लज्जा राखो भगवान।।4।।
उलझो सुत जनम को ,सतगुरु सुलझावे।
सतगुरु के परताप से ,सिंगा जी पद गावें।।5।।
00ध्ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थः

आत्मा शरीर से कह रही ह कि अब तुझे जितना भोग विलास करना है भोग ले , तू दुल्हन की तरह खूब खेलकूंद ले, पर एक बात ध्यान रख आगे इस भंवर अर्थात पुनः जन्म के चक्कर में मत पड़ना, क्योंकी आगे यम को निवास हैं सदगुरु ने लिखवाया है कि सूर्य रुपी परमात्मा का देश ऐसा है जो न कभी ऊगता है न अस्त होता हैं वह अपरंपार हैं सदगुरु के मिल जाने से सारे सुकृत साथ चलते हैं। पांच - पच्चीस बराती रुपी पुण्य साथ चलते हैं।अच्छे कर्म करने से जिस तरह दुल्हन की ड़ोली जाती है।उसी तरह मनुष्य भी जाता है। इस आत्मा का आकार भी छोटा सा हैं अपने सुकृत्यों के द्‌वारा ही मनुष्य मृत्यू के द्‌वार के बाद ईश्वर का प्रेम रुपी पलंग प्राप्त करता है। जहां अनंत विश्राम हैं, माया मोह में उलझा मनुष्य सदगुरु के उपदेश से सुलझ जाता हैं सदगुरु के प्रताप से ही सिंगा जी यह पद गा रहे हैं। अर्थात उपदेश दे रहे हैं।

संकलन एवं अनुवादःअनिता राजपूत

## 26. मन मेरे नजरों मोती आया

मन मेरे नजरों मोती आया
सदगुरु साहब ने परखाया,
मन मेरे नजरों मोती आया।।टेक।।
बारीक झिना नजर नहीं आवें,
जित देखूं रे उत छाया।।1।।
कंकर पत्थर की मत कर आशा ,
गुरु हीरा लाल परखया।।2।।
भरा दरियाव थाह नहीं आवै ,
कोई मरजीवा होकर आया।।3।।
लाखन ऊपर लाखन जड़िया,
वो गगन मंड़ल में छाया।।4।।
कहे जनसिंगा सुनो भाई साधू,
गुरु अटल खजाना पाया।।5।।

**गीतार्थः** सतगुरु साहब ने बताया है कि तेरे अंदर श्वांस रुपी मोती आया है, यह इतना बारीक और पतला है कि यह दिखलाई नहीं देता। लेकिन फिर भी जिधर देखो उधर इसकी ही छाया छाई हुयी हैं इसे सिर्फ ध्यान के द्वारा ही अपने अंदर खोजना होगा। तु इन कंकर - पत्थर अर्थात सांसारिक मोह माया में मत पड़ । तुझे तो सदगुरु ने पर ब्रम्हा रुपी हीरे तक पहुंचने का मार्ग बताया हैं संसार रुपी सागर प्रपंचों से भरा पड़ा है। कोई संर्घषशील व्यक्ति ही इससे पार जा सकता हैं लाखन ऊपर लाखन जड़े हैं।परंतु वह परब्रम्हा तो आकाश मंड़ल में छाया है।सिंगाजी कहते हैं। कि गुरु ने इस अटल खजाने का राज बताया है।जो कभी खतम नही होता।

संकलन एवं अनुवादःअनिता राजपूत

## 27. आधीनता जब आवै जन को

आधीनता जब आवै जन को,
काल कभी नहीं सतावे जन को ।।टेक।।
औरन को ऊंच कर माने , वो आप ही नीच कहावै।
क्या कहूं वो जन की महिमा,शेष पार नहीं पावै ।।1।।
आती अधीन प्रेम मन लावे,दुविधा को दूर बहावे।
सात पांच का तोड़ सनेहा , सोई सदगुरु मोहे भावे।।2।।
क्या कहूं मैं सकल गुण उनके,शिल में आन समावे ।
ज्ञान बैरागी भक्त पुररणता,फिर भक्ति की कौन चलावै।।3।।
गुरु की सेवा साधू की संगत् , बनत - बनत बन जावै।
कह जन सिंगा सुनो भाई साधू,ओई नरम परम पद पावै।।4।।

**गीतार्थ :**

जो नर मान सम्मान के अधीन नही रहता, सांसारिक माया - मोह के पीछे नहीं दौड़ता है, उसको

काल कभी नहीं सताता है। औरों को अपने से उच्च मानता हैं ऐसे व्यक्ति की महिमा का वर्णन नहीं किया जा सकता। मन में प्रेम रहेगा तो सभी दुविधायें दूर हो जायेंगी। सात - पांच अर्थात काम, क्रोध, मोह, माया से अपना नाता तोड़कर ही ईश्वर की प्राप्ति हो सकती हैं ऐसा सतगुरु ही परमात्मा को अच्छा लगता हैं जिनके सभी गुण शील में आकर समा जाते हैं। ज्ञान ,वैराग , भक्ति इन तीनों की पूर्णता होने पर मुक्ति की जरुरत नहीं होती है। गुरु की सेवा और साधू की संगत जो नर करते हैं, वे ही परम पद को प्राप्त करते हैं।

संकलन एवं अनुवादः अनिता राजपूत

संदर्भ ग्रंथःचौमासा,म.प्र.आदिवासी लोक कला अकादमी - जून 2006

## 28. ठंड़ा लीमड़ा री छाया,वसी माता - पिता की माया

ठंड़ा लीमड़ा री छाया,वसी माता - पिता की माया
माया तोड़णूं पड़से,कि सासरऽ जाणू पड़से।
जसो कुवा मऽ को डोलऽ वसा ससरा जी का बोल
बोल सुणऽ पड़से कि सासरऽ जाणूं पड़से।
ठंड़ा लीमड़ा री छाया,वसी माता - पिता की माया
जसो कुवा मऽ को रस्सो वसो सासु जी को ठस्सो,
ठस्सो सइणूं पड़से कि सासरऽ जाणू पड़से।
जसा तवा पर का रोटा,वसा जेठ जी मोटा,
शरम करनूं पड़खे कि सासरऽ जाणू पड़से।
जसी मही मऽ की खई ,वसी जेठाणी छे मोरी,
काम करणू पड़से,कि सासरऽ जाणू पड़से ।
जसो गोदी मऽ को बालो, बसो देवर हो प्यारो,
लाड़ऽ करनू पड़से,कि सासरऽ जाणू पड़से।
जसी साथ मऽ की सई ,सी देराणी छे बइण,
निमावणू पड़से,कि सासरऽ जाणू पड़से।
जसी कणियर की सोटी,वसी नणद बाई छे मोटी,
पॉय लागणू पड़से कि सासरऽ जाणू पड़से।
जसो कम्मर मऽ को छल्लो ,वसो सायब जी को पल्लो,
पललो बाँधणू पड़से,कि सासर जाणू पड़से।
ठंड़ा लीमड़ा री छाया, वसी मात - पिता की माया,
माया तोड़णू पड़से, कि सासरऽ जाणू पड़से।

0ध्ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थः

नीम की छाया सुखद होती है। वैसे ही माता - पिता के स्नेह और ममत्व की छाया भी

सुखद होती है। इस सुखद स्नेह भरी छाया को छोड़ना पड़ेगा,इस माया मोह के बंधनों को तोड़ना होगा,ससुराल पक्ष से नाता जोड़ना पड़ेगा। जिस प्रकार कुए में बाल्टी ड़ालने से गूंजदार आवाज होती है। ऐसे ही तुम्हारे ससुर जी की आवाज है ,उसे सुनना पड़ेगा
जिस प्रकार बाल्टी के साथ रस्सा बड़े मौज मस्ती के साथ 'ठसक' के साथ चकरी (घिरनी) पर आता है।उसी प्रकार तुम्हारी सासु जी का ठसका सहन करना पड़ेगा। तवे पर ज्वार की रोटी मोटी होती है,उसी प्रकार तुम्हारे जेठ जी भी मोटे हैं।हंसी मत करना ,शर्म करना,जिस प्रकार मथनी मटकी के अंदर घुसकर घूमकर दही को बिलोकर छाछ बना देती है। ऐसी तुम्हारी जेठानी है। जो घर के सारे कामों को व्यवस्थित करती हैं घूम - घूम कर उनको काम छुड़ाना पड़ेगा,उनका काम तुमको करना ही पड़ेगा। जिस प्रकार एक बच्चा जिद करता है। बच्चे की जिद को माता ही पूरा करती है। ऐसा ही तुम्हारा देवर है,उसे स्नेह देना। तुम्हारी देवरानी को बहन के समान समझना या बहन सा प्यार देना। तुम्हारी ननद रानी का मान - सम्मान करना। अपने पति का आदर सत्कार करना।एक बार जो इस अटूट बंधन में बंध गया,उसे जीवन पर्यन्त निभाना पड़ेगा अथवा निभाना ही है। लड़की को खूब लाड़ - प्यार किया हो, सब ध्यान में रखा हो तो भी उसे एक दिन ससुराल जाना ही पड़ेगा। ये कुछ बातें ध्यान रखने वाली ब्याहता लड़की जीवन में सदैव सुखी रहती है।

संकलन एवं अनुवाद :रमेश चंद्र तोमर 'निमाड़ी'

## 29. कौन की माया, कौन की काया

उतार सिर का भार, बोझा क्यों भरता - भरता।।टेक।।
कौन की माया, कौन की काया,किन का है धनमाल।।1।।
कौन की माता किनके पिता,किनका है घर बार।।2।।
किनका भाई ,किनकी बहू ,किनकी सुन्दर नार।।3।।
कहे जन सिंगा सुनो भाई साधू ,झूठो है रे संसार।।4।।
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थ :

हे मन तू सांसारिक बंधनों का बोझा अपने सिर पर लादकर क्यों फिर रहा है,व्यर्थ ही अपना समय नष्ट कर रहा है।इस भार को उतारकर अपना घ्यान ब्रम्हा को प्राप्त करने में लगा।जिससे तेरा जीवन सफल हो जायेगा। यह माया आज तक किसी की होकर रही है ,जो तेरी बनकर रहेगी। आज तेरे पास है तो कल किसी दूसरे के पास चली जायेगी।यह शरीर भी तेरा कितनों दिनों तक साथ देगा। एक दिन नष्ट हो जायेगा। धन - धन्य किसका है। माता - पिता घर द्वार यह सब कुछ समय तक तेरे साथ रहेंगे। भाई - बहू यह सुन्दर नारी भी कुछ समय के बाद तेरा साथ छोड़कर चले जायेंगे।यह संसार झूठा है सभी नाते रिश्ते झूठे हैं।तू इनमें

भ्रमित मत हो। ब्रम्हा को प्राप्त करने के लिये अपना ध्यान लगा। यह संसार मिथ्या है।

संकलन एवं अनुवादः अनिता राजपूत

संदर्भ ग्रंथःचौमासा,म.प्र.आदिवासी लोक कला अकादमी वर्ष 23 अंक 70 मार्च - जून 2006

## 30.यहां कोई नहीं तेरो सगा

मन तू करी लऽ अपनी जगहा,
यहां कोई नहीं तेरो सगा।।टेक।।
भाई बन्धु अरु कुटुम्ब कबीला,
वो दिसे एक दिन दगा।।1।।
कौंड़ी कौंड़ी माया जोड़ी,
तेरे हाथ कछु नहीं लगा।।2।।
त्रिया जात बुद्वी की ओछी,
ओनऽ दियो श्रंगी ऋषि को दगा।।3।।
कहे जन सिंगा सुनो भाई साधू ,
तू गुरु के चरण में मन लगा।।4।।

**गीतार्थ :**

हे मन! तू अपने लिये सही जगह ढूंढ़ ले । क्या तू सांसारिक प्रपंचों में पड़कर जनम - मरण के फेर में पड़ना चाहता है,या ब्रम्हा को प्राप्त करके इन बंधनों से छुटकारा पाना चाहता हैं क्योंकी यहां तेरा अपना कोई नहीं है। भाई बन्धु ,कुटुम्ब, कबीला ये सभी एक दिन तुझे धोखा दे देंगे। कौंड़ी - कौंड़ी जोड़कर तूने माया को एकत्रित किया है, लेकिन अंत समय में तेरे हाथ कुछ नहीं लगा, त्रिया जात तो बुद्वी की ओछी है। जिसने श्रृंगी जैसे ऋषि को भी दगा दे दिया। सिंगाजी कहते हैं कि तू गुरु के चरणों में अपना मन लगा, वे ही तुझे उस परब्रम्ह तक पहुँचने का माध्यम बतायेंगे।

संकलन एवं अनुवादः अनिता राजपूत

संदर्भ ग्रंथःचौमासा,म.प्र.आदिवासी लोक कला अकादमी वर्ष 23 अंक 70 मार्च - जून 2006

## 31. नर अहंकार क्यों मरा

नर अहंकार क्यों मरा,
उस घर की खबर कर जरा।।टेक।।
धन दौलत अरु माल खजाना,
ये सब यहीं जायेगा धरा।।1।।
भाई बन्धु अरु कुटुम्ब कबीला,
ये सब हुई जाएगा परा।।2।।
धर्म पुन्न की राह नी जानी,
सिर पाप का बोझा धरा।।3।।
कहे जन सिंगा सुनो भाई साधु,
हरि चरण चित धरा।।4।।

उस घर की खबर कर जरा....

**गीतार्थः**

**हे नर! तू अपने पर क्यों अहंकार करता है? घमंड़ में ही तू मरा जा रहा है।जिस घर में तुझे जाना है उस घर की जरा खबर रख।ब्रम्हा को प्राप्त करने में यह अहंकार रास्ते का कांटा है। अतः तू इस घमंड़ को छोड़ दे। धन - दौलत, माल - खजाना, यह सब कुछ यहीं रखा रह जायेगा, कुटुम्ब कबीला सब कुछ पराए हो जाएंगे। धर्म और पुण्य का रास्ता तूने नहीं जाना और सिर पर पाप का बोझा बढ़ाता गया और उसे ढ़ोता रहा। सिंगा जी कहते हैं कि हे मनुष्य! तू हरि के चरणों में अपना ध्यान लगा। इससे तेरा जीवन सफल हो जायेगा।**

संकलन एवं अनुवादः अनिता राजपूत

संदर्भ ग्रंथःचौमासा,म.प्र.आदिवासी लोक कला अकादमी वर्ष 23 अंक 70 मार्च - जून 2006

## 32. हाऊ तो रंग भरी दिवलों संजोवली

हाऊ तो रंग भरी दिवलों संजोवली
हाऊँ तो अगवाड़ऽ लगाऊॅ अम्बा - आमली,
पिछवाड़ऽ हो नागर वेल।
हाऊ तो रंग भरी दिवलों संजोवली।
वो तो हँसी रलई पियु पूछऽ वातुली,
म्हारी गोरी वो थारो वालईया वो कुण।
राजा प्रथम वालइया म्हारा दादा जी
दुसराण वो म्हारी माय सुहाय,
हाऊ तो रंग भरी दिवलो संजोवली।।

0ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :**

मैं अपने घर के आगे वाले हिस्से में आम और इमली का पेड़ लगाऊंगी और घर के पीछे खाने वाले पान की बेल लगाऊंगी। उन्हीं पेड़ों के नीचे प्रतिदिन दीपक जलाकर अपने आंगन और घर को रोशन करुंगी।

हंसी - हंसी में पति ने पूंछ लिया - हे प्रिये तुम्हारा पालन पोषण किसने किया है? तब पत्नी अपने पीयर की बढ़ाई करते हुये कहती है - हे राजा जी! मेरे प्रथम रक्षक तो मेरे पिताजी हैं।जो आम के वृक्ष की तरह छायादार हैं। दूसरी मेरी पालनकर्ता मेरी माताजी हैं, जो इमली के पेड़ की तरह घनी और ऊंची हैं। उन्हीं पेड़ों के नीचे प्रतिदिन दीपक जलाकर अपने आंगन और घर को रोशन करुंगी।

टीपः यह लोकगीत जीवन और वनस्पति यानी पेड़ - पौधे के प्रतीक का अद्भुत उदाहरण है। आम और इमली की तरह पिता और माता हैं।जो बहुत गहरे और खट्टे और मीठे हैं। उन्हीं की छाया में एक बेटी का जीवन सुखी रहता है।वह पति से संकेत में यह कहना भी नहीं चूकती मैं आपके घर के लिये एक कुल दीपक अपने कोख से जनूॅगी, जिससे आपका घर , कुल,वंश परिवार सब कुछ रोशन हो जायेगा। पत्नी की यह बात सुनकर पति अति प्रसन्न हो जाता है और पत्नी को अंक में भर लेता है।

संकलन एवं अनुवाद : वसन्त निरगुणे

संदर्भ ग्रंथः चौमासा,म.प्र.आदिवासी लोक कला अकादमी

## 33. कोई नी मिलऽ रे म्हारा देश को

कोई नी मिलऽ रे म्हारा देश को,
केखऽ कऊं म्हारा मन की।
सतगुरु शरणे सेविया,
आनन्द घड़ी उनकी।।टेक।।
चौदिसा मन को छोड़िया, साहेब ढूंढ़ी लावो।
बाहेर भटके सो नहीं मिले,अंत मं लै लावे।
कोई नी मिलऽ रे म्हारा देश को,।।1।।
लाल कहो लाली नहीं,कुछ जरद भी नॉहीं।
देह कहो सब झूठ है,व्यापक जग मॉही।
कोई नी मिलऽ रे म्हारा देश को,।।2।।
पवन पाणी से धणी पातला,जेऊं सुरिया रो घाम।
जेऊं शशि केरा चॉदणा,ऐसा मेरा राम।
कोई नी मिलऽ रे म्हारा देश को,।।3।।
पग रे धरण की ठौर नी,मानो की मति मानो।
मुकति सुधारो सिंगा आपणी,जीवता पइचाणो।

कोई नी मिलऽ रे म्हारा देश को,।।4।।

0ध्ध्ध्0

गीतार्थ :

संत सिंगाजी अपने ह्रदयोदगार प्रगट करते हुये कहते हैं कि यहॉ ( पृथ्वी लोक में ) मेरे देश का कोई भी व्यक्ति नहीं है।जिसे में अपने मन की बात कह सकूॅ।इसलिये मैंने सदगुरु की शरण ले ली है,जिसमें आनंद ही आनंद है।

ईश्वर की खोज में मन को चारों दिशाओं में दौड़ाया,किन्तु ईश्वर तो हमारे अंदर ही विघमान है।बाहर या इधर - उधर भटकने से क्या फायदा ? उसे प्राप्त करना है तो निर्विकार हो हमें अपने अंदर ही ध्यान लगाना होगा। तभी सच्चे अथर्ोंा में परमात्मा की प्राप्ति होगी। ।1।

ईश्वर का न कोई रंग है न कोई रुप, न ही उसमें कोई लाली या पीलापन है और न ही उसका कोई देह आकार है।वह परब्रम्ह तो सचराचर जगत के अणु - अणु में समान रुप से व्याप्त है।2।

परमात्मा की सूक्ष्मता का बखान करते हैं कि वह पानी एवं हवा से पतला है। वह मेरा परम पिता राम तो सूर्य की रोशनी एवं चंद्र - रश्मियों के समान संपूर्ण जगत में समाया हुआ है।3।

अखिल ब्रहमाण्ड में पांव रखने को थोड़ा सा भी स्थान नहीं मिलेगा।जहां ईश्वर नहीं हो, चाहे उसकी सर्व व्यापकता को कोई माने या नहीं माने। संत सिंगा जी कहते हैं कि आवागमन के चक्र से मुक्ति के लिए इस जीवन में ही अपने अंदर स्थित ईश्वर से साक्षात्कार करो।4।

गीतकार - गबडू गप्पल

संकलन एवं अनुवाद - सुरेश कुशवाहा

(संदर्भ ग्रंथः चौमासा,म.प्र.आदिवासी लोक कला परिषद जून 1985)

## 34. हारे मन भंवरा तू लोभिया

हारे मन भंवरा तू लोभिया, माया फूल लोभाणा।
दिन रे चारका पेखणा, माटी मं मिल जाणा।।टेक।।
ऊग्या सो दिन अधम्या,फुल्या कुम्हलाय।
चढ़या कलश मंदिर ढलै गया,जलम्या मारे जाय।।
हारे मन भंवरा तू लोभिया, माया फूल लोभाणा।।1।।
किनका छोरा किनकी छोकरी,किनका माय न बाप।

अंत में जाय प्राणी एकलो,संग पुन्न और पाप।ं
हारे मन भंवरा तू लोभिया, माया फूल लोभाणा।।2।।
यहि रे माया का फन्द मं,भरमी रह्यो दिन रात।
म्हारो - म्हारो करतऽ प्राणी मरि ग्या,माया मिठड़ी के साथ।
हारे मन भंवरा तू लोभिया, माया फूल लोभाणा।।3।।
लखपति छत्रपति चला गया,चली गया लाख करोड़।
राज करन्ता नहीं रहया,जल - बल हुई गया खाक।
हारे मन भंवरा तू लोभिया, माया फूल लोभाणा।।4।।
पीण्ड काचो काया झरझरी, तीनों करो रे जतन।
बिन सतगुरु पार न पावोगा,नीरमल करि लेवो मन।।
हारे मन भंवरा तू लोभिया, माया फूल लोभाणा।।5।।
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थ :

हे मन भ्रमर तू इन मोह माया के फूलों में मोहित हो गया है।चार दिन के इस जीवन को निरर्थक कायरें में लगा व्यर्थ ही मेरा - मेरा करते रहना है, जबकी यह सब एक दिन मिट्टी में मिलकर नष्ट हो जाना है।

प्रातः सूर्य उदय होता है वह भी स्थाई नहीं होता ,पुनः वह शाम को अस्त हो जाता है। खिले पुष्प कुम्हला जाते हैं। बड़े - बड़े विशाल मंदिरों पर चढ़े शीर्षस्थ कलश भी समय आने पर ढह जाते हैं।

इसी प्रकार प्रकृति के नियमानुसार जो जन्म लेता है,वह मरता भी है।1।

इस संसार में हे मन कौन किसका लड़का एवं कौन लड़की है, ये सब रिश्ते झूठे हैं।अंतिम समय में प्राणी को अकेले ही जाना पड़ता है।उसके साथ सिर्फ जाते हैं उसके अच्छे और बुरे कर्म।2।

इस माया चक्र में हे मन तू दिन - रात उलझाा रहा। इस प्रपंची माया का स्वरुप इतना मोहक एवं मीठा है कि इसके साथ कितने ही प्राणी मेरा - तेरा करते हुये मर गये। 3।

इस संसार में लाखों लखपति और करोड़ों छत्रपति आये। अनेकों राजा भी ,किन्तु समय आने पर जल कर राख में मिल गये।4।

आत्मा अपरिपक्व है तथा शरीर जर्जर एवं नश्वर । अपने अंत और विवेक के लिये कोई यत्न कर लो। आत्मा का परिष्कार एवं भवसागर के पार, बिना सदगुरु के नहीं हो सकते।इसलिये सबसे पहले मन को निर्मल कर सदगुरु की शरण ग्रहण करें।5।

गीतकार - गबडू गप्पल

## 35. सीताराम सुमर लेवो तजि देवो सब काम

सीताराम सुमर लेवो तजि देवो सब काम।
सीताराम सुमर लेवो तजि देवो सब काम।
अरे सीताराम सुमर लेवो तजि देवो सब काम।।टेक।।
वायो सोनु नहीं उपजे,मोती लागे न ड़ाल।
भाग बिना कुछ नहीं मिलऽ,तपस्या बिनऽ राज ।।चौक1।।
सपना मं बहु धन मिल्यो,बांध्यो गजराज।
फजर भई उठ जागिया; तेरो वही रे हवाल ।।चौक2।।
राजा दशरथ की अयोध्या,जनम्या रघुवीर।
माता जिनकी कौसल्या,लक्ष्मण बलबीर।।चौक3।।
आस करे बैकुंठ की ,करणी मं हो काचो।
धन हो सिंगा जी अरज करे,कई गया शब्द मं साचो।।चौक4।।
0ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :**

हे मन ! व्यर्थ के सांसारिक कामों को छोड़कर परमात्मा का नाम स्मरण कर।

गलत कायरें को करने से हाथ कुछ नहीं लगता जैसे यदि सोने को जमीन में बोया जाय तो वह वृक्ष रुप में होकर फलेगा - फूलेगा नहीं। इसी प्रकार मोती वृक्ष की ड़ाल पर नहीं लगता उसे पाने के लिये सद्प्रयत्न ही करना पड़ेगा।तपस्या किये बिना किसी को अनायास ही राज्य प्राप्त नहीं हो जाता। हमारे कमरें पर आधारित भाग्य के बिना हम कुछ भी प्राप्त करने में असमर्थ हैं।

यह सांसारिक सुख - सुविधायें व धन संम्पन्नता ठीक वैसे ही हैं जैसे कि रात्री में स्वप्न में बहुत धन का मिलना एवं वैभव के प्रतीक हाथी का घर में बंध जाना, किन्तु सुबह नींद खुलने पर यथार्थ में कुछ नहीं। तो हे मन ! जो सत्य एवं यथार्थ है, उस हरि नाम को प्रतिपल स्मरण करना नहीं भूल।

राजा दशरथ की राजधानी अयोध्या में मॉ कौशल्या की कोख से ईश्वर ने रामचंद्र के रुप में अवतार लिया,जिनके छोटे भाई लक्ष्मण जी थे। यह सब तपस्या और कमरें का ही प्रभाव था।

हे मन तू स्वर्ग लोक की चाह करता है जबकी तेरे कर्म अभी कच्चे एवं अधूरे हैं , धन्य है संत सिंगाजी को अपने शब्दों में इन सच्ची बातों को कहकर हमें सन्मार्ग दिखा गये।

संकलन एवं अनुवाद - सुरेश कुशवाहा

(संदर्भ ग्रंथःचौमासा,म.प्र.आदिवासी लोक कला परिषद जून 1985)

## 36. दुख सुख मन मं नी लावणा

दुख सुख मन मं नी लावणा,रघुनाथ न घड़िया।
कोई का टाल् या प्रभु न टले,साहेब जी न घड़िया।।
दुख सुख मन मं नी लावणा,रघुनाथ न घड़िया।।टेक।।
हरिसचंद्र सरिका हो राजवै,जिनकी तारामती राणी।
नीच का घर में बिकी गया,हरिसचंद्र भरे पाणी।।1।।
नल राजा सरिका हो राजवै,जिनकी दमयन्ती राणी।
कड़ रे वस्त्र जिनको न मिले, न मिले अन और पाणी।।2।।
सीता सरीकी हो लाड़ली,जिनका रामचंद्र स्वामी।
आयो रावण सीता लई गयो,सुन्दर बिलखाणी।।3।।
दुरपता सरिकी हो महासती,सत में सतवन्ती।
कौरों ने चीर चोराविया,सत दुरोपती की राखी।।4।।
सदा शिव पर भीड़ पड़ी,सुमेर अन्तर जामी ।
भीड़ पड़ी न बहुं डर भंजिया, गावे नर स्यानो स्वामी।।5।।
दुख सुख मन मं नी लावणा,रघुनाथ न घड़िया.............

0cccccध्0

**गीतार्थ :**

कैसी भी परिस्थितियां आयें चाहे वे सुखद हों अथवा दुखद मन में उनके प्रति राग - द्वेष नहीं लावैं। क्योंकी सुख - दुख ईश्वर प्रदत है और किसी के टालने से टलते नहीं हैं। अतः प्रत्येक स्थिति में मन में समता का भाव रखें।

हरिश्चंद्र जैसे सत्यवादी राजा एवं उनकी पत्नी तारामती को भी नीच के घर बिकना पड़ा एवं उनकी चाकरी करनी पड़ी। रानी दयमन्ती एवं नल जैसे प्रतापी राजा के जीवन में भी ऐसी परिस्थतियां आयीं। कि उनके अधोवस्त्र तक नहीं रहे एवं वे भूख प्यास से पीड़ित भी थे।

सीता जैसी साध्वी जिनके पति रामचंद्र जैसे प्रतापी मर्यादा पुरुष थे, विधि के विधान के अनुसार उन्हें भी रावण हर कर ले गया और उन्हें विरह व्यथा झेलनी पड़ी।

सतियों में महासती एवं सत्यवादी द्रोपदी का भी परिस्थतियों वश कौरवों की सभा में चीर हरण का प्रयास हुआ वहां ईश्वर ने उनकी लाज रखी।

स्वयं सदाशिव शंकर पर एक बार भस्मासुर द्वारा विपत्ति आ पड़ी थी। तब विष्णु भगवान का स्मरण करने पर उन्होंने शंकर जी को दुख से मुक्ति दिलाई।

संकलन एवं अनुवाद - सुरेश कुशवाहा

(संदर्भ ग्रंथःचौमासा,म.प्र.आदिवासी लोक कला परिषद जून 1985)

## 37. सोई पूछे सोई बावरा, क्या है उमर हमारी

हम तो सदा महासुर हैं,खेला जुग चारा।
सोई पूछे सोई बावरा, क्या है उमर हमारी।।टेक।।
पद्म गणेशा हुई गया,हुया मुहम्मद चारी।
अधमाया को गम नहीं,सृष्टि रचि कंई बारी।। चौक1।।
कोटि - कोटि ब्रम्हा हुई गया,दस कोटि कन्हैया।
शब्द कोटि शम्भू भये,मेरी एक पलैया।।2।।
लंका प रावण हुई गया,हुया लाखा बारी।
देवा - देवा की गिनती नहीं,सो बी परलय कारी।।4।।
नहीं बुड़ा नहीं बालका, नहीं हम करम भिकारी।
कहे वो कबीर सुन गोरखा,ऐसी उमर हमारी।।5।।

0ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :**

जो हमारी उमर के विषय में जानना चाहता है। वह बावला पुरुष है। हम तो चारों युगों में यह उम्र का खेल खेलते आये हैं।इस बीच एक पद्म गणेश एवं कई बार मुहम्मद हो चुके हैं।हमें इस लौकिक माया का दुख नहीं है तथा इस सृष्टि की रचना में कई बार हम आते - जाते रहे हैं।कोटि - कोटि ब्रम्हा, दस करोड़ कृष्ण एवं करोड़ों शंकर हमने अपने एक पल में प्रकट लुप्त होते देखे हैं।इस सृष्टि में लाखों बार रावण हो गये हैं।अनगिनत देवी - देवता एवं कई बार लक्ष्मण ने अवतार धरे हैं।लाखों करोड़ों बलि, कौरव दल एवं विनाशकारी राक्षस होते रहे हैं।जिनकी कोई गिनती नहीं हैं

कबीर दास जी गोरखजी को अपनी (आत्मा की) उमर की अनन्तता के विषय में बताते हैं कि न हम वृद्व हैं न बालक और न ही हम कमरें के अधीन हैं। निष्कर्ष यह है कि , आत्मा अजर अमर है तथा उसका कोई स्वरुप नहीं होता। आत्मज्ञान को प्राप्त व्यक्ति कमरें के अधीन नहीं रहते हैं और अनासक्त भाव से इस जगत में विचरण करते रहते हैं।

संकलन एवं अनुवाद - सुरेश कुशवाहा

(संदर्भ ग्रंथः चौमासा,म.प्र.आदिवासी लोक कला परिषद जून 1985)

## 38. अरे बणजारा हो मित्र सुण - सुण बातां प्रेम की

अरे बणजारा हो मित्र सुण - सुण बातां प्रेम की
अरे बणजारा हो मित्र,सुण - सुण बातां प्रेम की।।टेक।।
जो रे गया जो वणिज को,वणिज करि आया।
पूंजी विराणा साहू की, जामें जश कर देणा।।1।।
धरती का चौपट किया,चंदा ,सूरज का पांसा।
खेले गोरख राजा भरथरी,आलम देख तमाशा।।2।।
बारा मांग्या वहां नौ पड़्या,किनसे करे हो पुकारा।
सार हमारी काची है,घर दूर हमारा।।3।।
छक्या,पंज्या नरत गई,इसमें तू क्या लेगा।

इस बाजी के दाव में,सिर अपणा तू देगा।।4।।
कहे वो कबीर सुण सन्त जण,जरा करो हो विचार।
हलव हलव तरी गया,निगुरा रहया सिर भार।।5।।
0ध्ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थ :

आत्मा मन को सम्बोधित कर कहती है कि हे मुसाफिर मित्र ! कुछ प्रेम की बातें सुनो-

जो व्यक्ति व्यापार को जाते हैं एवं व्यापार कर अपने देश लौटते हैं, तो श्रेष्ठ व्यापारी वही माना जाता है, जो अपने साहूकार की पुंजी में वृद्वि करके लौटता है। उसी प्रकार तुमको भी कमरें का व्यापार करने ईश्वर ने पृथ्वी पर भेजा है, तो तुम भी अपने सदज्ञान एवं सद्कमरें के द्वारा ईश्वर के नाम की यश कीर्ति फैलाओ।

इस पृथ्वी को चौसर बनाया तथा चांद और सूरज को पांसे। राजा भरथरी एवं गोरखनाथ जी चौसर खेल रहे हैं और सारा संसार यह खेल देख रहा है।

इन्द्रियों से सम्बन्धित तात्विक बात है कि बारह चाहे थे वहां नौ प्राप्त हुये। इसकी पुकार किससे करें।( हम स्वयं भी जिम्मेदार हैं ) क्योंकी हमारी सार ( कर्म ) कच्ची है और घर ( ब्रम्हलोक) बहुत दूर हैं

यह पंचभूत देह एवं मन की झूठी उड़ाने यह सब निरर्थक है। इनसे कुछ भी मिलने वाला नहीं।अपितु इनकी सुख सुविधाओं को जुटाने में तू अपने आप को ( आत्म ज्ञान ) को भी नष्ट कर लेगा।

कबीर दास जी कहते हैं कि इन बातों पर गम्भीरता से विचार करो। जिन्होंने इस विषय में सोचा वे धीरे - धीरे इस संसार सागर ही पार हो गये।

संकलन एवं अनुवाद - सुरेश कुशवाहा

(संदर्भ ग्रंथःचौमासा,म.प्र.आदिवासी लोक कला परिषद जून 1985)

## 39. म्हारो साई बसे अगमपुरी,चलणा वही देश

म्हारो साई बसे अगमपुरी,चलणा वही देश।

गुरु बिन पंथ सूझे नहीं,मिलणा कब होय।।टेक।।
सास कुंवारी बहू पन्नेल,घर नातणी को ब्याव।
सगा साही की मुण्डन करि , उलटी मत जाणो।।1।।
सास पठाई बहू पाणी गई ,गई औघड़ घाट।
भरी गगरिया ढुलक गई,घर काई लई जाय।।2।।
रतन कुवों मुख साकड़ो,कसी पद भरुं झकोल।
पणिहारी जल मं खड़ी,जाको कैसो संजोग।।3।।
गांठ गठीला केवड़ा,मोड़ू थारी डाल।
थारा मं म्हारो पिहू बसे, क्यों नहीं करी पुकार।।4।।
छोटो चंदन मोटी ड़ालियॉ, लाम्बा लाग्या ताक।
घड़ी एक टटिया उतारि धरो,खोजा दसवूं दुवार।।5।।
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :** मेरा ईश्वर अगमपुरी में बसता है,जहां किसी प्रकार का दुखः चिन्ता एवं डर नहीं होता। हमें भी उसी देश में जाना है।किन्तु बिना सदगुरु के वहां का मार्ग नहीं मिलेगा। पता नहीं उनसे मिलना कब होता है। इस शरीर रुपी घर में आत्मा क्वांरी है तथा मन विवाहित,तात्पर्य आत्मा का संबंध अभी तक ईश्वर से नहीं जुड़ पाया।जबकी मन सांसारिक विषय भोगों में लिप्त है। ' नातणी ' शब्द से अभिप्राय तृष्णा से है जो अपने रिश्ते नित नई वस्तुओं से जोड़ती रहती हैं धर्म जो इस शरीर का सबसे समीप का रिश्तेदार है उसका इस सांसारिक प्रलोभनों में मुण्डन कर दिया है अथवा धर्म के मार्ग को भुला दिया है।परमात्मा ने आत्मा को शरीर का आवरण देकर इस संसार में इसलिये भेजा है कि अपने सतकमरें से पुण्य अर्जित कर सके।इसमें स्थित मन अपने मार्ग से भटककर अन्यत्र विषयोपभोगों में लगा हुआ है। इस प्रकार भगवद्विमुख हो इस शरीर रुपी गागर के जल को ( पूर्व संचित सतकमरें के पुण्य को ) व्यर्थ में ही गंवा दिया। अब इसके पास इस जन्म के सुफल बिल्कुल भी नहीं है। जिन्हें अपने साथ वापस ले जा सके। यह शरीर रुपी कुंआ अनेक अनमोल रत्नों से भरा पड़ा है। किन्तु इस कुंऐ का मुंह बहुत छोटा है। इस छोटे से मुंह में से इसके जल को कैसे भरें।यह भी कैसा संयोग है कि पनिहारिन इस कुंऐ के अंदर ही खड़ी है। इस मन की चाल बहुत ही टेढ़ी - मेढ़ी है। इसमें कई गांठें बंधी हैं।इस केवड़ा रुपी मनमोहक मन की उनमुक्त उड़ानों पर नियंत्रण रखना चाहिये। संयमित होकर

मन को वश में कर लेने पर ही आत्म दर्शन की स्थिति में पहुंचा जा सकता है। एकाग्र चित्त हो मन को वश में करना ही ईश्वर प्राप्ती के मार्ग की प्रथम एवं महत्वपूर्ण सीढ़ी है। आत्मा का स्वरुप बहुत ही सूक्षम है।जो इस शरीर रुपी वृक्ष में चंदन की सुगंध के समान स्थित है। जिसे सिर्फ जाना जा सकता है। उसी आत्मा के कवच इस शरीर रुपी वृक्ष की शाखायें एवं पत्ते( इंन्द्रीयॉ,हाथ - पैर आदि ) काफी बड़े - बड़े हैं।यदि इन इंन्द्रीय सुखों एवं आशा तृष्णा के प्रलोभनों से विरक्त हो इस माया के आवरण को दूर कर सकें तो दसवें द्वार की खोज में सफल होकर परब्रम्हा परमात्मा को प्राप्त कर सकते हैं।

संकलन एवं अनुवाद - सुरेश कुशवाहा

(संदर्भ ग्रंथःचौमासा,म.प्र.आदिवासी लोक कला परिषद जून 1985)

## 40. करम की गति न्यारी

करम की गति न्यारी
बगल्या तो रुप दियो
असी कोयल छे सुध - बुध कालई
उद्वव जी करम की गति न्यारी
सूम को तो पइसो दियो
दातारी फिरऽ भिखारी
उद्वव जी करम की गति न्यारी
मूंछ मुंड़ा घरऽ अबला नार असा सा
कुंवर फिर उफाणजी
उद्वव जी करम की गति न्यारी
पतिव्रता तो पुत्र बिन झूरऽ
फोड़ तो जण - जण हारी
उद्वव जी करम की गति न्यारी
0ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थः**

हे प्रभु ! आपने यह क्या किया? कैसा अन्याय किया? बगुले को उजला रुप दे दिया। मधुर गान करने वाली कोयल को काली बना दी है? उद्‌वव जी करम की गति सर्वथा अलग ही है। हे प्रभु लालची कंजूस को आपने पैसों का ढ़ेर दे दिया है? लालची को पैसों की कोई कमी नहीं रहने दी, लेकिन दानी बेचारा भीख मांगते देखा गया। दाता को धन देते तो वह दान पुण्य करता। हे प्रभु! आपने ऐसा क्यों किया? उसके भाग्य में ऐसा क्या लिखा था? इतना उलट फेर क्यों होता है? उद्‌ववजी कर्म की गति सर्वथा अलग है। हे प्रभु! आपने कैसे अजीब खेल किये हैं? नपुंसक को सुंदर स्त्री दी है और पौरुषवान ऐसे ही घूम रहे हैं। पतिव्रता नारी बच्चे के बिना तरस रही हैं ,बिना बच्चे के वह कितना कष्ट उठा रही है और एक फूहड़ स्त्री के घर में बच्चों की कतार लगी है। हे प्रभु! आपने पतिव्रता के साथ ऐसा अन्याय क्यों किया? उसे भी पुत्र दे देते तो वह तरसती तो नहीं। आपने उसके भाग्य में ऐसा क्यों लिखा? हे उद्‌वव जी ! कर्म की गति बिलकुल अलग होती है।सबको भाग्य और कर्म के कारण जीवन फल मिलता है।

संकलन एवं अनुवादः वसंत निरगुणे

( संदर्भ ग्रंथः जनपदीय संस्कार गीत - आदिवासी लोक कला अकादमी )

## 41. घर बरजऽ छे नार चतुर ज्ञानी

घर बरजऽ छे नार चतुर ज्ञानी।
घर बरजऽ छे नार चतुर ज्ञानी।।
लकूड़ की नाव पर मती बठो सायबाजी।
व्हां छे वयतल पाणी।।
घर बरजऽ छे नार चतुर ज्ञानी।
लूहा की नाव पर तम बठो सायबाजी।
व्हाँ छे रे थावर पाणी।
घर बरजऽ छे नार चतुर ज्ञानी।
परायी हथई पर मती बठो सायबाजी।
व्हाँ बोल रे तुकारी बोली।
घर बरजऽ छे नार चतुर ज्ञानी।
घर की हथई पर तम बठो सायबाजी।
व्हाँ बोल रे अमरीत वाणी।
घर बरजऽ छे नार चतुर ज्ञानी।
परई तिरिया सी हँसी मत करो सायबाजी।
वा बोलीऽ कचेरी जाई।
घर बरजऽ छे नार चतुर ज्ञानी।

घर की तिरिया सी हँसी तम करो सायबाजी।
वा बोलऽ मयला मऽ जाई।
घर बरजऽ छे नार चतुर ज्ञानी।
0ध्ध्ध्0

**गीतार्थः**

घर में चतुर सुजान रुप गुण शीलान पत्नी है, फिर भी महाशय अपनी आदतों से बाज नहीं आते हैं। पति महाशय रसिक हैं। इस आदत से तंग आकर पतनी अपने पति से कहती है - हे स्वामी! आप लकड़ी की नाव पर मत बैठिये, यह नाव आपको बहते हुये पानी में ले जायेगी।यानी उस शराब रास्ते पर मत चलो। एक दिन बिगड़ जाओगे। हे स्वामी! आप तो लोहे की नाव पर बैठना,वह नाव स्थिर पानी में भी तैरती रहेगी। यानी मजबूती के साथ एक स्त्री,पत्नी में अपना मन लगाओ।वह भटकने नहीं देगी। हे स्वामी! आप पराई स्त्री के कारण पराये घर में जाकर बैठते हैं, वह स्त्री कभी भी आपको अच्छे संबोधन से नहीं पुकारेगी।वह तू - तकारे की भांड़ सी बोली बोलेगी। पई स्त्री से कभी भी तू-तू मैं - मैं होसकती है । इसलिये वहां मत जाईये। हे स्वामी ! आप अपने घर की स्त्री से ही इतना प्रेम कीजिये , जितना आप पराई स्त्री से करते हैं। तो आपकी पत्नी खुस हो जायेगी और वह अमृत के समान मीठी बोली बोलेगी। हे स्वामी! पराई स्त्री से क्या हँसना बोलना? कभी उसका हॅसना बोलना आपको कचहरी तक ले जा सकता हैं वह स्त्री आपको कचहरी चढ़ा सकती हैं हे स्वामी! यदि आप अपनी पत्नी से ही हॅसी मजाक करोगे,तो वह अपने महल में जाकर आपके गुणगान करेगी। घर में आपकी तारीफ करेगी।

संकलन : श्रीमति हेमलता उपाध्याय खंड़वा

अनुवादः वसंत निरगुणे

## 42. काया जीव से येऊ कहे

काया जीव से येऊ कहे, जीव सुणे म्हारी बात।।
हॉऊं जाणू संग कई जसे,काया मलमल धोये।।
जवऽ रे हॅसा उड़ी गयो, काया रई रे पछताय।
काया जीव से येऊ कहे, जीव सुणे म्हारी बात.........
भाई बन्धु का कारणा,उल्टा लोभ कमाया।
हरि जी का सुमरण नहीं किया,हीरा जलम गमाया।
काया जीव से येऊ कहे, जीव सुणे म्हारी बात..........
माता रोवे जलम जोगणी,बेन्या वार तिवार।
तिरिया रोवे रे तीन दिन, दूजा कर घरवास।

काया जीव से येऊ कहे, जीव सुणे म्हारी बात..............
हाड़ जले जैसी लकड़ी, बाबा नंद को घास।ं
कंचर सरीकी काया जले,कोई आवऽ नहीं पास।।
काया जीव से येऊ कहे, जीव सुणे म्हारी बात...........
अणहद बाजा बाजिया,बाजा गरु दरबार।।
सेन भगत की बिनती,राखो शरण लगाय।।
0ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :**

जीव काया ( शरीर) से कहता है। तेरा अन्त समय आ गया है। आत्मा अमर है। मैं अमर हूँ और शरीर तेरा नाश हाने वाला है। तू नष्ट हो जावेगा। जब आत्मा रुपी हॅस उड़ जायेगा। तो तेरा क्या होगा? तब तू पड़ा रहकर पछताता रहेगा। हे प्राणी! तूने अपने कुटुम्ब परिवार के कारण उल्टा - सीधा काम करके धन कमाया, एक पल भी भगवान का ध्यान नहीं किया, जिस परमात्मा ने तुझे हीरे जैसा जन्म दिया, उसे तूने व्यर्थ ही गॅवा दिया। तेरा परिवार भी तेरे कुछ काम नहीं आयेगा। तेरी मॉ तो जन्म भर रोयेगी, बहन पर्व त्यौहारों पर रोयेगी, और तेरी पत्नी तीन दिन के बाद रो धोकर, दूसरा घर कर सकती है।तेरा शरीर मृत्यू के बाद लकड़ी के समान जल जायेगा। तेरे सिर के बाल घास की तरह जल जायेंगे।तेरी कंचन जैसी काया जलेगी, तब तेरा कोई भी रिश्तेदार तेरे पास फटकने वाला नहीं हैं सेन भगत विनती करते हैं - नश्वर काया पर घमण्ड़ न कर , प्राण निकलने पर शरीर को जला दिया जायेगा।

संकलन एवं अनुवादः वसंत निरगुणे

( संदर्भ ग्रंथः जनपदीय संस्कार गीत- आदिवासी लोक कला अकादमी )

## 43. राजपाट छोड़ी गया छोड़ा कुटुम्ब परिवार

राजपाट छोड़ी गया छोड़ा कुटुम्ब परिवार
राजपाट छोड़ी गया छोड़ा कुटुम्ब परिवार।।टेक।।
तो नवरंग थारी गेली सजाई, हीरा लाल मऽ लाल।।
डोली मऽ पिताजी बैठिया,उड़ी रया लाल गुलाल।।चौक
माय रोवे थारी जलम जोगणी, बेन्या वार तिवार।।
तिरिया रोवे थारी तेरा दिन,लागी सयसर पार।।चौक
भाई रे बन्दू थारा आसपास,कहां लाग्यो संगात।।
सारो कुटुम छोड़ी गया,पहुंचा सरग द्वार।।चौक
न्हाई धोई सब घर वो आया, सब मिल भगती उपजाया।।
बईण भाणिज सब रोवण लाग्या,उनकऽ ग्यान बताओ।।चौक
अणहद बाजा बजीया, वाजा गरु दरबार।।
सेन भगत की बिनती, राखो शरण लगाय।।
वध्धध्धध्0

गीतार्थ :

मृत्यू के बाद सारी धन - दौलत, राजपाट, माल - असबाब सब यहीं छूट जाता है। सारा कुटुम्ब परिवार सब यहीं रह जाता है। आदमी के मरते ही शवयात्रा के लिये नवरंगी ड़ोली सजाई जाती है। उसमें पिताजी यानी शरीर को बैठाया गया। उस पर अच्छा अबीर गुलाल उड़ाया जाता है।

हे प्राणी ! तेरी माता तेरे नाम से जन्म भर रोयेगी और तेरी पत्नी तेरे नाम लेकर केवल तीन दिन ही रोयेगी, तेरी बहन तुझे याद करके प्रत्येक त्यौहार पर रोयेगी।तेरी तो जिंदगी पार लग गई। लेकिन तेरी पत्नी की जिंदगी किस प्रकार बसर होगी? भाई - बन्धु तुझे शमशान घाट तक लेकर जायेंगे।इन लोगों का बस यहीं तक साथ है। सभी पारिवारिक जनों को छोड़कर

तुझे अकेले ही जाना है।श्मशान घाट से आने के बाद वे स्नान करेंगे और सब ज्ञान - ध्यान की बातें करेंगे। बहन भानिज सब रोते रहेंगे। यदि तूने अच्छे कर्म किये होंगे तो उनकी भी चर्चा करेंगे। इसलिये हे प्राणी! तू अच्छे कर्म कर , जिससे तुझे दुनिया याद करे। सेन भगत विनती करते हैं- गुरु कृपा से उस परम तत्त्व के दर्शन हो गये, जहां निरंतर अनहद नाद अमर संगीत बजता रहता है। मैं तो उसी की शरण में सदा लगा हूँ।

संकलन एवं अनुवादः वसंत निरगुणे

( संदर्भ ग्रंथः जनपदीय संस्कार गीत- आदिवासी लोक कला अकादमी )

## 44. मन सागर दरिया बहे, उड़े रंग फुहारा

मन सागर दरिया बहे, उड़े रंग फुहारा
मन सागर दरिया बहे, उड़े रंग फुहारा।।
ब्रह्म बीज निच बोवजो, अंत - तंत का क्यारा।।
प्रेम पिरथ जल छिचजो,खड़ा बाग तुम्हारा।।
मन सागर दरिया............
कलक बीज करता रहे ,मोती लागे रे जाला।।
जग - मग मोती हुई रय,जे को निरमल जल।।
मन सागर दरिया..........
हाऊं जाणू भाव भात है, भात रंग उतारो।।
नाना बीज फूल फूलिया, लग्या देव का अंग।।
मन सागर दरिया.................
अणहद बाजा बजिया, वाजा गरु दरबार।।
सेन भगत की बिनती, राखो शरण लगाय।।
0ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ -**

**हे प्राणी तेरे शरीर में सातों समुद्र और अनेक तालाब हैं। जिसके अनेक रंग हैं। तू इस शरीर रुपी खेत में ब्रह्म का बीज बो। अपनी आत्मा की क्यारी में ब्रह्म ज्ञान रुपी बीज बोकर प्रेम - प्रीति के जल का सिंचन कर। जिससे तुम्हारा बाग लहलहा उठेगा। वह ब्रह्म बीज भगवान की कृपा से फूलेगा फलेगा। जिसमें फल रुपी मोती लगेंगे, सद्भावना के ये मोती गुच्छों के रुप में लगेंगे और तुम्हारी कीर्ति बढ़ेगी। यघपि मोतियों का रंग अनेक प्रकार का होता है और फूलों का रंग भी जुदा - जुदा होता है, पर फूल खिलने के बाद अन्त में देवता के चरणों में चढ़ता है। उसी प्रकार दया, ममता दान, प्रेम के रंग भी अलग हैं। सेन भगत कहते हैं - इनमें से किसी एक को अपना लेना तो तेरा जीवन धन्य हो जायेगा। अन्त में परमेश्वर के अंग लगकर तेरा आवागमन मिट जायेगा। तेरा उद्वार हो जायेगा।**

संकलन एवं अनुवादः वसंत निरगुणे

( संदर्भ ग्रंथः जनपदीय संस्कार गीत - आदिवासी लोक कला अकादमी )

## 45. अन्त मिलऽ नी कोई आपणा

**अन्त मिलऽ नी कोई आपणा, समझी लेवो रे भाई।।**
**अन्त मिलऽ नी कोई...............उड़ान**
**बहुत बिकट गढ़ चलना, दूर हे रे पैयाल।।**
**घड़ी का घड़याला बाजता, बाजा गरु दरबार।।**
**अन्त मिलऽ नी कोई...............**
**भवसागर अन्धा घोर है, जैसी अंधियारी।।**
**आपको तो सूझे नहीं , मन तू क्यों गोता खाय।।**
**अन्त मिलऽ नी कोई...............**
**भवसागर का रयणा, कैसा पार उतरणा।।**
**बिना नाव बिना हो ऑवली, अटकी गयो रे दिन।।**
**अन्त मिलऽ नी कोई...............**
**अणहद बाजा बाजिया,वाजा गरु दरबार।।**
**सेन भगत की बिणती,राखो शरण लगाय।।**
**अन्त मिलऽ नी कोई...............**

**0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0**

गीतार्थ :

हे प्राणीः तेरी आत्मा का कोई अन्त नहीं है। यह बात समझने की है। प्रत्येक व्यक्ति को इसे अच्छी तरह से समझ लेना चाहिये। आत्मा अमर है। शरीर नश्वर है। परमात्मा को पाने का मार्ग बहुत कठिन है। उसका ठिकाना बहुत दूर है। वह आकाश में सात लोक पार करने पर मिलता हैं उसका वहीं स्थाई निवास हैं समय की घड़ी निरंतर गति की घड़ियाल बजाती रहती हैं समय कभी रुकता नहीं । धीरे - धीरे पूरा जीवन निकल जाता हैं शरीर का अन्त समय आ जाता है, तब याद आता है कि हमने किसी गुरु के पास पहुंच कर वह ज्ञान प्राप्त नहीं किया।

इस संसार रुपी सागर में घनघोर अंधकार छाया है। किसी को कुछ दिखाई नहीं देता जो मन में प्रकाश की एक किरण भी देख लेता है तो उसका मन फिर कभी कहीं भटकता नहीं। मन इधर - उधर गोता नहीं खाता। इस संसार रुपी सागर में रहकर किस तरह से पार कर लेना , इसका उपाय कोई सतगुरु ही बता सकता है। जब एक छोटी सी नदी को भी बिना नाव और बिना पतवार के पार नहीं किया जा सकता , तब तो संसार रुपी सागर जिसमें अथाह और अन्नत जल ही जल हो, उसको कैसे पार किया जा सकता है? इसलिये सतगुरु की शरण में जाना उत्तम है। नहीं तो एक दिन तेरी नाव अटक जायेगी। सेन भगत कहते हैं - बिना गुरु के कोई सच्चा मार्ग नहीं दिखा सकता ,इसलिये गुरु की शरण ही साधक के लिये सही ठिकाना है।

गीतः श्री तरुवर दास महंत, दवाना

संकलन एवं अनुवादः वसंत निरगुणे

( संदर्भ ग्रंथः जनपदीय संस्कार गीत- आदिवासी लोक कला अकादमी )

# बुंदेली लोक गीतों में सामाजिक एवं राजनैतिक चेतना

## बुंदेलखंड़

राष्ट्रीयता की भावना हरेक भारतीय के मन में विघमान है। चाहे वह ग्रामीण हो या शहरी - हर क्षेत्र में हर अंचल में राष्ट्रीयता से ओतप्रोत गीत मिलेंगे। बुंदेलखंड़ में भी ऐसे अनेकों लोकगीत हैं। उन गीतों का अध्यन करने से हमें विदित होता है कि लोक में भी देश के प्रति सम्मान हमारे शहीदों की स्मृति महात्मा गांधी, पंड़ित जवाहर लाल नेहरु, चंद्रशेखर आजाद, भगत सिंह एवं लोकमान्य तिलक जैसे आजादी के जनक के प्रति सच्ची भावना हमें लोक में ही देखने को मिलती है। हमने देखा कि देश में कोई हलचल हुयी नहीं कि कवि हृदय की भावना कविता के रुप में प्रकट हुयी।

भारत गीतों की भूमि है। इस पावन धरा का कण - कण संगीतमय है। गीतों की मधुरिम स्वर लहरी से इस देश का प्रत्येक अंचल गुंजायमान है। विभिन्न अंचलों और प्रांतों में प्रचलित ये सुमधुर लोकगीत अपनी - अपनी क्षेत्रीय बोलियों को महिमा मंड़ित करते हैं । इनकी अपनी विशिष्ट पहचान है। इनमें न तो किसी रचयिता का नाम होता है और न ये किसी व्यक्तित्व से संबंधित होते हैं,बल्कि इनका संबंध संपूर्ण लोक से होता है और प्रत्येक व्यक्ति को ऐसा अनुभव होता है कि इसमें तो उसका ही जीवन मुखरित हो रहा है।

भारत की हृदयस्थली बुन्देलखंड़ में विविध अवसरों पर विविध भावों से अपूरित अगणित

गीत गाये जाते हैं, जो यहां की संस्कृति, प्रथाओं, परम्पराओं, आचार व्यवहार, चिन्तन, स्वभाव और जनमानस की संवेदनाओं को तो मुखरित करते ही हैं,तत्कालीन समाज के रीति - रिवाजों, विश्वासों तथा ऐतिहासिकता का भी आभास देते हैं। बुन्देलखंड़ अंचल में गाये जाने वाले इन गीतों में मनुष्य जीवन के विभिन्न सोपानों की सजीव अभिव्यक्ति दृष्टिगत होती है।

बुंदेलखंड़ के लोक गीतों में उस समय की राष्ट्रीयता का चिंतन झलकता है और उसका मूल तत्व है - अंग्रेजों के विरुद्व संघर्ष और दासता से मुक्ति। पूरे देश की प्रतिष्ठा अंग्रेजों को विजित करने में है।इसलिये इन लोकगीतों के गायक " जात हती हिन्दूवान की राखौ सबको रुप " अर्थात हिन्दूवान या हिन्दुस्तान की रक्षा में प्राणों की बाजी लगा देते हैं।इनको मृत्यू से कोई भय नहीं- "मरनै खॉ नई ड़रनै करबे कों रार में" कुछ भी हो जाय, पर ये टोपी वाले जीवित न जाने पावै - " न जियत जान पावै जौ टोपी वालो "। लोक कवि तो अपनी जन्मभूमि पर बुरी निगाह रखने वाले एक को जरा भी सहन नहीं कर पाता -"जो झांसी की लटी तकै सुन ताय कालका खाई"। इस तरह लोक काव्य की यह धारा मध्ययुग के अंतिम दशकों की राष्ट्रीय चेतना का प्रतिनिधित्व करती है और इसमें कोई संदेह नहीं कि इतने प्रखर स्वरों में बाद की राष्ट्रीय काव्य धारा भी बहुत कम गूंजी ,देश प्रेम के अलावा युद्व के वीर नायकों का यशगान और देशद्रोही का तिरस्कार दोनों को बीड़ा इन लोक गायकों ने उठाया था। आजादी की पहली लड़ाई में जनता की भागीदारी तो थी और उस समय की परिस्थितियों में बुंदेलखंड़ में लोक जागरण का जैसा रुप उभरा,उसमें प्रमुख योगदान था हरबोलों का। देश का सच्चा इतिहास और उसका नैतिक और सामाजिक आदर्श इनके लोकगीतों में सुरक्षित है।लोकगीत राष्ट्रीय संतुलन बनाये रखने और विश्वबन्धुत्व की भावना स्थापित करने के परम साधन हैं। राष्ट्रीय भावना को ,जन चेतना को लोकगीतों में व्यक्त करने की एक सुदीर्घ परंपरा रही है।अपने देश के प्रति प्रेम और वीरत्व की भावना जाग्रत करने की यह परंपरा बुंदेलखंड़ के लोकगीतों में बहुतायत देखने को मिलती है।

## बुंदेलखंड़ में प्रचलित राजनैतिक एवं सामाजिक चेतना के लोक गीत -

इस शीर्षक के अंर्न्तगत मैंने 99 लोकगीतों को रखा है। लोक गीतों की गहरी पड़ताल करने और उनके अंदर सूक्ष्म चेतना तत्वों का विश्लेषण करने के लिये कुछ और उपशीर्षकों में उन्हें विभाजित किया है।

इन लोकगीतों के माध्यम से स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं ने जो भागीदारी निभाई है वह अतयंत महत्वपूर्ण है।गांधी युग की अनपढ़ और ग्रामीण स्त्रियों के रचे लोकगीतों में स्वतंत्रता आंदोलन और राष्ट्रीयता की सौंधी गंध मिलती है।

### 1. हुकुम गांधी का निभा प्यारे बन्ने।

मेरी बन्नी पहनो सुदेसी साड़ियां ।।

विदेशी को वापस करो प्यारे बन्ने।
ले लो तिरंगा झंड़ा हात सुराजी बन्नी।।
खादी प्यारी सब जात सुराजी बन्नी।
चरखा चलाओ दिन रात सुराजी बन्नी।।

इसी तरह बुंदेलखंड़ के राई लोकगीतों में भी स्वतंत्रता के स्वर प्रतिध्वनित होते हैं - ' गेंहूँ चना दगा सब दे गये ,महुवन देश सम्हारो ' और यह ' देस सम्हारो ' इसी राष्ट्रीयता की भावना का प्रतीक है।बुन्देली लोक साहित्य तो वीरता के आख्यानों से भरा पड़ा है। बुंदेलखंड़ का प्रसिद्व आख्यान काव्य ' रैया ' वीर रस से परिपूर्ण है। इसे बुंदेलखंड़ की औरतें जॉत ( घट्टी ) में गेंहूँ पीसते समय गाती हैं -

## 2. बदलो लीनो है मलखे को,

बदलो लीनो है मलखे को,
रईया मारो भरे दरबार।
थाल उठाया है ऊदल ने ,
सिर रईया को दयो धराय।
जड़ित पिछोरा से शिर ढाको,
पहुंचो पृथ्वीराज को जाय।।

बुंदेलखंड़ के लोकगीतों में सन् अठारह सौ सत्तावन के विद्रोही स्वर ,छप्पन के अकाल उद्गार और अंग्रेजों के प्रति विरोध बन स्वाधीनता आंदोलन को उद्घटित करने वाले क्रांतिकारी भाव और बुंदेलखंड़ के लोक गायकों की अद्भुत कल्पना सब कुछ समाहित है।

# हरबोलों के गायन की एक पुरानी कृति

हरबोलों के गायन की एक पुरानी कृति

### 3. पारीछत कौ कटक : पाठ और ऐतिहासिक संकेत

श्री गनेशजू नमः। श्री सरसुती जू नमः।।
अथ पारीछत जू कौ कटक लिखते ।
दोहा - पंती प्रबल पहारे1 के ,सब राजन सिरताज।
जाहिर जम्बूदीप2 में,पारीछत महराज।।1।।

सोरठा - बुड़वामंगल3 कीन, श्री रतनेस4 नरेस नें।
जुड़े सकल परबीन5, कौल6 भगौती 7, सीस पै।।2।।
दोहा - बुड़वामंगल में जुरे राजन सहीत नबाव8,।
रह ना जाबै देस में, कलकत्ते को साब9।।3।।
जब दीछत10 विनती करै,सुनौ नाथ इक बात।
कैनो11 कितनो आपकें, पैसा कितनो हाँत12।।4।।
सोरठा - तुरत उठे खिसयाय , तुम मरबे को डरत हो।
गौरी नाथ सहाय13,कैऊ14 खजाने15 हाँत16 हैं।।5।।
दोहा - दीछत कहैं जू17 कीजिये,जैसे आप दिखाय।
हम हारे हर भँात हू18, अपनी समझ लखाय।।6।।
सैर - समझ कहीं दीछत नई आन तोड़ियो।
कलकत्ता में बखेड़ा19 अपनो घर न छोड़ियो।।
कलकत्ता से हुकुम गिरै जोन20 बांटियो।
अंगरेज मुलक मालिक तासों न गोटियो21।। 7।।
लाहौर धनी केते22 कछु नई23 करत हैं।
होलकर समेत सिंधिया हियै24 डरत25 हैं।।
राजा रईस बड़े - बड़े डंड26 भरत हैं।
गोरन की कठिन मार जो टारे न टरत हैं।। 8।।
दोहा - दीछत डगरे27 ड़ाँग को,इत बंधो मजकूर28।
राव साब नोनेर29 के,दाखिल हाल हुंजूर।। 9।।
सैर - कर पास रची30 राजा31 फौजैं हराबली32।
धौंसा33 पै हुआ धौंसा पकरी सुगम34 गली।।
बगमेला उठी रार35 कटीला36 की अत भली।
पनवारी के नगीच37 राव साब सें घली।।10।।
सब कहै चलो चलिये का38 अजब दांव हैं।
ललकार सुनी लौट परे धन्य राव है।।
राजपूत जे सपूत जौन जो उछाव है।
लर गये मरद मर गये नाहीं बचाव हैं।11।।
दोहा - गिरी डाक अंगरेज की, लियो खजाना लूट।
मन भाई सी39 कर गये,गये तिलंगे40 फूट।।12।।
सैर - हुरदंग हुल्ल41 हल्ला कछुअये42 घाट में।
अंगरेज चला झांसी से का करना हाट में43ं।

पैला मुकाम आन किया मऊ सहार44 में।
दिन रात दौर दाखल में45 कुल पहार में।।13।।
तियै46 रतन सिंह लिखी किलो छोड़ दीजियो।
जो लड़ना मंजूर अगर जंग लीजियो।।
हुँसियारी से अपनो बंदोबस्त किजियो।
भली कहैं डँगई47 के नाहक48 न सीजियो।।14।।
जा खबर सुनी49 किलो छोड़ निकर परे हैं।
सजे साज बाज तोप ज्वान जोस भरे हैं।।
समझ50 लई जिनने जे51 करम करे हैं।
कोई पंचम पारीछत क्या रन52 में भरे हैं।।15।।
इक खबर पाई फौज परी काई ठौर पै53 ।
रमपुरिया हें दौरे बढ़े चढ़े छोर54 पै ।।
बंद हुआ55 लाम लसकर साहब56 की गौर57 ना।
महराज किया कूच परै मोदो58 जोर ना ।।16।।
दोहा - आई फौज अंगरेज की, लियो जैतपुर घेर।
खड़ा छबीना59 साह का, इकट विकट चहूं फेर ।।17।।
सेर - चारऊँ फेर चमचमाती किरचें नंगी।
चकबंदी सा घेर लिया किला फिरंगी।।
लाला दिमान60 आन मिला उनका अंगी।
कोई बिगड61 बगौरा में पराबंका जंगी।।18।।
अंगरेजन की फौजें आई बहुतई घनी।
दोनऊं62 दल दंगल की जुर रही अनी।ं
कालका63 उर जोगनीं आन्नद की सनी।
छत्रसाली खुसयाली64 काली रहै बनी।।19।।
आ गई लिखी लाट 65 की पाती बिलात66 से।
इत कुछ किया सरजंट दो पहर67 रात से।।
बांधे हें विकट नाका महराज घात68 से।
पैरी पसार क्लांत69 भई सिपाही हैं सात70 सै।।20।।
थैली का ज्वान गाफिल छरीदा71 दिया72 लगा।
ने बेर73 दई बत्ती अपन हिया74 दगा।।
आया हरीफ75 हरबल76 तब छोड़ कै भगा।
तासें77 हुसैन बगस तोप नें दई दगा।।21।।

इत फौज डगमगानी जित78 दिया चाल79 कौ।
अंगरेजन80 की लोथें गई लाल पाल कौ।
नैंचें81 जिमी में पुरा देत जियत घाल82 कौ।
जे जखमी जस भागे ते83 असपताल को।। 22।।
दोहा - खप्पर भरती कालका84 , संभू भरते बैल।
बिकट बगौरा85 समर में,जो गिरतो86 जनरैल।। 23।।
सैर - जरनैल कहूं गिरतो87 नदी बहै रुछ्छी88।
तरवार89 तुबक90 तीर चलै बल्लम91 बरछी।।
जा मगर तोप ढ़ाल कछ्छ तेगा मछ्छी।
रुंड़ मुंड़ सुंड़92 बिना हो गये कछ्छी।। 24।।
लाखौं ज्वान पूरब93 कौ सब सुख94 भरतो95।
जरनैल जंग जंगी सौ96 कैसें लरतो।।
पंचम नरेस97 नख भर नाह यासे दरतो।98
देती न दगा तोपें99 तौ भौ भारथ100 परतो।।25।।
दोहा - काट छबीना101 कट102 गये,उन क्षत्रिन103 कौ रंग।
पारीछत महराज कौ दओ पारीछत संग।। 26।।

सैर - जिन संग दियो104 उनकौ जिन करी नौन105 की106।
राखी न खबर आपर अपने भवन भौन107 की।।
अंगरेज जिर्मी जप्त108 करी जाजलौन109 की।
पारीछत की सुमी110 करै गम111 कौन की।। 27।।
दोहा - लड़ई मड़ई सी फूट कैं, देस नकयाऊ फांस112।
लिंडुआ113 पैलें पार के,गये राजा को गॉस।। 28।।
मजबूत सींध मंत्र का झांसी में किया है।114
छत्री न115 होई छत्री को सौंप दिया है।116
अंगरेज लिखा तीन महिना कौ टिया117 है।
दुरजन विचार भजौ राम सिया है।। 29।।
इति श्री महाराजा पारीदत जू कौ कटक संपूरन पहलौ समापत।।
(दूसरे पाठ में एक पृष्ठ छूटने से पांच छंद लुप्त हो गये हैं।
दोहा - कैसो दिन कैसी घरी,, लओ बाम नें पूंछ।
बन मृगया को मिस करो ,राजा कर गये कूच।। 6।।
सैर - कर कूंच जैतपुर सैं बगौरा में मेले।

चौगान पकर गये मंत्र118 अच्छौ खेले।
बगसीस भई ज्वानन खां पगड़ी सेले।
सब राजा दगा दै गये नृप लड़े अकेले119।। 7।।
का कुमुक जैतपुर पें चढ़ आयो फिरंगी।
हुसयार होओ राजा दुनिया है दुरंगी120।
जब आन परी सिर पै कोऊ न भये संगी।
अरजंट खतॅ जफॉॅ है121 राजा ( है ) जंगी।। 8।।

दोहा - एक कोद अरजंट गओ,एक कोद जनरैल।
ड़ांग बगौरा की घनी भागत मिले न गैल।। 9 ।।

सैर - अंगरेज कुमुक करी अगर 122 आया चढ़कैं।
जेरिन123 कौ मिला नकसा आगे सैं लड़कैं।।
सूरन के मनै चैन खड़े कादर124 भड़कैं।
का तैयारी भारी पारीछत नै मारे बड़कैं।।10।।

जांगा खाँ जपत कर लेव न जानौं (को) मरा125।
अंगरेज कहैं राजन खाँचढ़ गओ गरा126।।
पौंचे हैं ड़ांग बीच कामदेव (के)127 करा128।।
तब येक बेर तोप कों भर मारौ छरा।।11।।

दोहा - परजा में बैठे हते, कर राजा असनान।
बिगुल बजी अंगरेज की, भीर पहुंच गई आन।।12।।

सैर - दो मारे कवि129 तान बिगुल बांसुरी वालौ।
चढ़ आये ते लरबे कों करैं मन में लालौ130।
मंत्रन नें मंत्र131 करो नहीं बोलौ - चालौ।
नाजियत जान पाबै जो टोपी132 वालौ।।13।।

इक - इक बड़गैनिन133 में दो - दो फोरे।
दो हांतन तरवार घालै मन में मोरे।
मंत्रन ने मंत्र करो हाथ प्रभु134 सों जोरे।

लग्गा के लगत भगे कटी पूंछ के घोरे135।। 14।।

दोहा - नृप पारीछत के लड़ैं गओ निस्चर136 कौ तेज।
जात हतो लाहौर खॉ अटक रहो अंगरेज।। 15।।

सैर - सुभ सोध चलो राजा मन के विचार मैं।
मरनै खाँ नहीं डरनै करबे कौ रार मैं।।
मंत्रन नै मंत्र करो भीर रहै137 हार मैं।
चौंदिया138 गये अंगरेज बुंदेलन की मार मैं।।16।।

तक लये पहार जिननै खंदक करींद तैं139।
मारत हैं सूरबीर खॉ ना हीन कौं हतैं।।
मई हौं कैध140 गवने की करी है गतै।
पैल बगौरा में राजा की भई फतै।।17।।

दोहा - सब राजा रानी141 भये , पर पारीछत भूप ।
जात हती हिन्दूवान की राखो सबकौ रुप142।।18।।

सैर - प्रथम जो नसाओ काम काम दार143 नै।
सुभ सोध चला राजा जप पूंछ बामनै144।।
टारै सैं नहीं टरहैं जो लिखी राम नैं।
अंगरेज मुलक मालिक145 के लरौ सामनैं।।19।।

सुभ हुइहैं146 नृपत कौ कर खरग लेत में ।
अब चढ़ आओ अंगरेजई पै ज्वाब देत में।।
मिलनैं न कछु हमकौं निसचर के हेत में।
तब सात सै जबान147 चढ़ रहे(हैं) खेत में।।20।।

एक बेर फुकी छावनी सब जुरमिल तापौ।
लरबे की सान मन में न कदरोई148 चापौ।
रघुवीर है सहाई नाम हर कौ जापौ।
दूसरैं सिमरिया149 में ड़ारौ छापौ150।।21।।

छोरे न हथयार नृपत दिन सात लौं।

तक तक कैं ड़ारे छापे चूके151 न घात लौं।
सब कछु पास अपने जो रही बात लौं।
राजा ने जंग मारी खबर है बिलात152 लौं।।22।।

दोहा - बसत सरसुती कंठ में,जस अपजस कबि गाइ153।
छत्रसाल के छत्र की ,पारीछत पर छाई154।।23।।

सैर - जौलौं न गोल डगा155 भरी सबनें हामी156।
जब काम परे सरक गये नमक हरामी।
मॉ रच्छा करी आन के उन गरुर के गामी।
जे राजा जैतपुर के भये जानी - नामी।।24।।

रन के निसान देखैं चौगान में गड़े ।
सूरवीर देखो दोई कोद हैं खड़े।
उनसे विमुख हुये ते दरजे पै ना चढ़े।
तुम पारीछत राजा अंगरेज से लड़े।।25।।

दोहा - नृपत केसरी सिंघ157 नें,कहूं158 ना राखो मेर।
आन परी ती सीस पर ,काटी बल्लम टेर।।26।।

सैर - जो प्रथम जंग मारी तो दई बाउनी159।
जैंलौं नावन160 पूजी लगती सुहाउनी।।
काऊ नें सैर भाखे काऊ नें लाउनी।
अब के हल्ला161 में फुॅकी जात छाउनी।।27।।

राजा की सूरवीरी मुख सैं न काउँ में।
न सत्य वचन पाये ते परे दाउँ में।।
अंगरेज कहैं कैसे बिलायत खाँ जाउँ में।
हाइ हाइ परनैई नये गाउँ मैं।।28।।

करी पच्छ लड़ाई रानी नैं सबनें जानी।
तीकी जा चली जैइ अकथ कहानी।।

बड़े - बड़े सूरवीर बदले बानी।
तुम पारीछत राजा अंगरेज शैतानी162।।29।।

राजा हुये रहीस163 सुनी मारे डर कैं।
बेबतन बिना हो उन अंगरेज सें लरकैं।।
कह दुज किसोर सूरबीर जाइ न टरकैं।
रये पारीछत राजा इक साकौ करकैं।।30।।

सुनकैं सलाह कीनी अपनी मत की।
हरसे सहाय श्री गिरजापत की।।
पढ़ते किसोर सैर164 ढुलक बाजै गत की।
दिन दिन सवाई साहबी श्री पारीछत की।।31।।

सुनकैं सलाह काम करो अपनी मत कौ।
सिर पै165 तो पंजा श्री गिरजापत कौ।।
अंगरेज हुआ रेज166 मारे अपनी अत167 कौ।
जैसौं ना फूस फूलै राजा पारीछत कौ।।32।।

दिन लरबे के पौंचे दिनकर लगे तपन।
राजा की बिजै होई जा दुज लगे जपन।।
सूरन के मनै चैन कादर लगे चपन।
राजा के हल्ला167 बसैं लगी कंपनी कंपन।।33।।

दोहा - पारीछत महराज कौ ,दसऊ दिसा में नाम।
मंत्र करो अंगरेजन नैं,फिर मैं वादत लाम168।।34।।

पारबती के पत करी,पारीछत की गौर।
सत्रहु मारे न बचै,करै फिरत है दौर।।35।।

बीर बंस छत्रसाल कौ,कीरति सुकवि सुकाही।
पारीछत नरनाह कौ,सब नृप जोहै169 राही।।36।।

सैर - वागत[170] हो लाम देखौं फौज भीर जोर कैं।
इकदमे रानै हे किले बाउन टोर कैं।।
कह दुज किसोर सुरन मुख जाइ मोर कैं।
मैं मारहौं तिलगा गंगा में बोर कैं।।37।।

दोहा - परसराम बाउन भये ,मच्छ रुप धर कच्छ[171]।
हर कीनौं हर भाँति सौं पारीछत की पच्छ।।38।।

सुरभि चरावत हरि सुनै,कालिंदी के तीर।
पारीछत महाराज की,पच्छ करी रघुवीर।।39।।

इति श्री राजा पारीछत जू कौ कटक दूसरो संपूरन समापता.

भादों बदी 2.संवत् 1971 मुकाम छत्रपुर महलन के द्वारे मोदी के पछीत लिखते पं. दुबे भईया लाल ।। जो बांचै ताकौ श्री राम राम पोचै।।

'पारीछत कौ कटक' पारीछत और अंग्रेजों के युद्व पर रचित लोकशैली का कटक काव्य है, जो 1857 ई. के पूर्व भी हरबोलों के द्वारा गाया जाता था और बाद में भी। यह वीर रस परक लोक काव्य 1847 ई. के पूर्व तक आजादी के दिवानों को प्रेरणा देता रहा। यहां इसके कुछ छंद प्रस्तुत हैं। पहली पंक्ति संवादात्मक शैली से शुरु होती है, जैसी की अनेक रासो काव्यों में प्रयुक्त हुयी है।

## टिप्पणी -

(भ = भगवान दास श्रीवास्तव का पाइ, जो बुंदेलखंड़ इतिहास परिषद, भोपाल द्वारा प्रकाशित 'पारीछत विशेषांक' में प्रकाशित हुआ है। द = पं. भैयालाल दुबे का हस्त लिखित पाठ।)

## शब्दार्थ -

1.प्रहार (भ) , पहार = जैतपुर नरेश महाराज जगतराज के तीसरे पुत्र पहाड़ सिंह (1758 से 1765 ई.), उनके पुत्र गजसिंह और गजसिंह के पुत्र केसरी सिंह के पुत्र पारीछत। 2. दीप = द्वीप,जम्बू द्वीप = भारत वर्ष। 3. बुढ़वामंगल = लोकोत्सव, जो नदी या सरोवर में नावें ड़ालकर मनाया जाता हैं बाहर की गीतकार और नर्तकियों के कला - प्रदर्शन से दर्शक इतने आकृष्ट होते हैं कि नावों पर फैले पाल हटा दिये जाते हैं।यह उत्सव वाराणासी में गंगा नदी पर मनाया जाता हैं लेकिन इस बार चरखारी में हुआ था। 4. चरखारी के राजा रतनसिंह (1829 - 57 ई.) 5. प्रवीण = कुशल। 6. शपथ। 7. भगवती =देवी। 8. बांदा के नवाब अली बहादुर। 9. साहब,कलकत्ते कौ साब = अंग्रेज।10. दीक्षित।11. अनाज, खाघ सामग्री ।12. हाथ। 13. सहदखल (भ) 14. के (भ) 15. खजाना (भ)। 16. हाथ (भ)। 17.जू (भ पाठ में नहीं है) । 18. ही (भ)। 19. कलकत्ता से करने है बखेड़ा (भ)। 20. अंग्रेज पदाधिकारी। 21. घातक चाल चलना ,चालबाजी करना। 22. से केते (भ)। 23. कुछ न (भ)। 24. हिय (भ)। 25. डरात (भ)। 26. दण्ड , जुर्माना। 27. चले (भ)। 28.मजकूर ( अरबी) = कथित या उक्त। 29. गांव या कस्बा। 30. रच लें (भ)। 31. महराज (भ)। 32. हरबली(भ),हरावल (तुर्की) =सेना का अग्र भाग।33. बड़ा नगाड़ा ( प्रकट युद्व के धौंसा बाजे - छत्रप्रकाश )। 34. सुगमै (भ)। 35. राढ़(भ)। 36. लमीला (भ) (?) कटीला की = कांटेदार, असरदार ,चुनौती भरी। 37.लीच(भ)।नगीच=समीप।38. क्या(भ)।39. भई सौ (भ)।40. तिलंगन(भ)।41. हुले (भ)। 42. कछु वये(भ) कछुअये = कछुओं वाले घाट।43. क्या करना है बिहार में(भ)।44.शहर।45.भये(भ)। 46.तीपे(भ) 47. जंगल के वासी। 48. व्यर्थ। 49.गलना। 50. हमने समझ (भ)। 51. जो(भ)। 52. क्यारन(भ)। 53. में(भ)।54.छोड़न(भ) 55.हैं(भ)। 56.अंग्रेज 57.गौरे(भ).। 58.महराज की आकुच परै मेरा (भ)। 59. आभामण्डल। 60. दीवान, जो कायस्थ था। 61.बिगटें(भ)। 62. दोनों(भ)। 63. किलकती कालिका (भ)। 64. खुशयाली(भ)। 65.लार्ड 66. बिलायत(भ)। 67.पहरे(भ)। 68.घंटे(भ)। 69. क्लात(भ)। 70. साते(भ)। 71. छरादी(भ),छरीदा = अकेला। 72.आ(भ)। 73. नौनेर(भ)। 74.हिय में (भ)। 75. हेर पहर(भ),हरीफ =शत्रु। 76.पहर बल (भ)। 77. जसै(भ)। 78.जब(भ)। 79.चला(भ)। 80.अंगरेजौ(द)। 81. नीचे(भ)। 82. जी घरी ले(भ)। 83. भागते (भ)। 84. कालिका (द)। 85. एक गांव। 86. गिरते (भ)। 87. गिरते(भ)। 88. रुधिर छी(भ)। 89. तहवर(भ)। 90.तुपके(भ)। 91. बल्ल(भ)।

92.मुडि(द)। 93. पुर वै (भ)। 94. खूबसूरत(द)। 95. मरतो(द)(भ)। 96. से(भ)। 97. बुंदेला राजा। 98. नख भरऊ से ना चलतो(भ)। 99. तोप(द)। 100.भू भार ते(भ),भारथ =युद्व। 101.छबिना(द)। 102. फड़(द)। 103. छत्रन(भ)। 104. दिया(भ)। 105. नोन(भ)। 106. कौ(द)। 107.भूमै(भ)। 108.जपन(भ)। 109.जालोन(भ) 110.समता(भ)। 111. जाने(भ)। 112. देस ने किया उकंस(भ)। 113. लिहुवा(द)। 114.इस मजबूत सिंह झांसी में मंच किया(भ)। 115. छत्रीन (द) ।116.भ पाठ इसी पंक्ति तक उपलब्धहै। 117. निश्च्ति अवधि। 118. चौगान ः= अश्वों पर खेला जाने वाला खेल,मंत्र =नीति। 119.इतिहास का तथ्य जो लोक साक्ष्य से उजागर हुआ है। 120. दोहरी नीति वाली। 121. (फारसी) अनीति करते हैं ,जुल्म करते हैं। 122. अग्रणीं 123.जोरन या जेरन = गांव के नाम। 124 काय। 125.भरा (द)ं126.गर्व। 127.गोरे,विलासी। 128. कला,अंश। 129. कविता करने वाला। 130. लालसा। 131. परामर्श। 132. हैट। 133. देशी बंदूक। 134. प्रभ(द)। 135. पुंछ कटें घोड़ों की तरह तेज भागना। 136. अंग्रेजों के लिये प्रयुक्त।137. लीरा है(द)। 138. चौधियाना =आश्चर्य करना। 139.करी दतै(द) करींद्र = हाथी ऐरावत अर्थात खंदक रुपी हाथी से । 140.कैध = कैद = तरफ।141. रानी (द) लयें= भोग विलास में मस्त, राजी लयें = संधि किये हुऐ। 142.इस प्रकार की पंक्तियां मध्ययुग के ग्रंथों में मिलती हें,जो राष्ट्रप्रेम या राष्ट्रीयता की घोतक हैं। 143. कामदार= मंत्री,दार के स्थान पर दाम करने से अर्थ होगा = काम (विलासिता) और दाम (धन) के लोभ ने। 144. ब्राम्हणों। 145. मालिक(द),अंग्रेज अपने को मुल्क का मालिक कहते थे, यहां व्यंग्य का भाव है। 146. हुव है(द)। 147. अब ज्वान(द),'अब'हटाकर 'हैं' जोड़ा गया है, लय की दृष्टि से। 148. कायरता।149. गांव का नाम।150.हमला करना।151. चूकौ(द)।152. विलायत।153. काइ(द)। 157. जैतपुर नरेश और पारीछत महराज के पिता। 158. कहु (द)। 159. बावन गढ़ गढ़ियों वाला देश। 160. जुबन= यौवनावस्थां 161. आक्रमण। 162. पंक्ति की लय खंड़ित है। 163. रईस। 164. सिहिर (द)। 165. दुसरै।(द)।166. फारसी =कण, छोटा टुकड़ा। 167. अपनेपन, अपना स्वामित्व। 167. ब.आक्रमण।168. युद्व। 169. जोब ै(द)। 170 बोलना,कहना। 171 कच्छप।

## ऐतिहासिक संकेत

(1) जैतपुर नरेश महाराज पारीछत महाराज जगतराज के तीसरे पुत्र पहाड़ सिंह (1758 -65 ई.) के प्रोत्र अर्थात उनके पुत्र गजसिंह और गजसिंह के पुत्र केसरीसिंह तथा केसरीसिंह के पुत्र पारीछत थे।पारीछत कौ कटक में महाराज पारीछत के उस युद्व का वर्णन है,जिसमें उनका और अंग्रेजों का युद्व जैतपुर तथा बगौरा में हुआ था।

(2) कटक के अनुसार चरखारी नरेश रतनसिंह (1829-57 ई.)2 ने बुढ़वामंगल का आयोजन किया थां जिसमें बुंदेलखंड़ की रियासतों - जैतपुर, सरीला ,जिगनी, ढुरई, बिजना, चिरगांव, ओरछा, छतरपुर, पनना , बिजावर, शाहगढ़, बानपुर, दतिया, समथर, अजयगढ़ गौरीहार, कलिंजर आदि के कुशल नरेश तथा बांदा के नवाब अली बहादुर सम्मिलित हुए थे। राजाओं को देवी की शपथ रखाई गई थी। कटक में रतनसिंह का नाम रतनेश दिया गया हैं जो उसका उपाम था और जिसका प्रयोग उसके द्वारा रचे ग्रंथों में हुआ हैं।3

(2 अ.) बुढ़वामंगल तत्कालीन विशिष्ट उत्सव था, जो नदी या सरोवर में नौकाओं पर गायकों की तानों और नर्तकियों के नृत्यों के प्रर्दशनों से मनाया जाता था। वाराणासी में इसका प्रचलन था। संभवतः उसी का अनुसरण चरखारी में किया गया था। क्योंकी वहां सरोवरों की एक श्रृंखला हैं राजाओं की इस गुप्त संगोष्ठी का विवरण इतिहास में प्राप्त नहीं है, पर इस संबंध में दो जनश्रृतियां प्रचलित हें- 1. एक के अनुसार नरेन्द्र मण्डल द्वारा बुंदेलखंड़ की स्वतंत्रता के लिये क्रांति का प्रस्ताव पारित हुआ था और जिसके सूत्राधार जैतपुर नरेश पारीछत बनाये गये थे। इसके समर्थन में एक लोकगीत की दो पंक्तियां हैं। -

**सबरे राजा जुरे चरखारी, बुढ़वामंगल कीन।**
**पुन सब बैठ जाय गढ़ियन में , पारीछत को मुहरा दीन।।**

इन पंक्तियों से स्पष्ट है कि आजादी का संकलप करने के बाद सब राजा अपने - अपने राज्यों में शान्त बैठे रहे और पारीछत को मोहरे में लगा दिया। कटक की एक पंक्ति है - ' रह न जाबै देस में, कलकत्ते कौ साब'। यहां देश का अर्थ भारत भी हो सकता है, पर काव्येतिहास में शब्द की व्यंजना को अधिक महत्व मिला है।

दूसरी जनश्रुति में चरखारी नरेश रतनसिंह का छल प्रकट होता है,क्योंकी उन्होंने छाती में लावा पक्षी छिपाकर शपथ ली थी कि ' जब तक यह जान बाकी है, तब तक वे आजादी के लिये लड़ेंगे।' बाद में लावा को मार ड़ाला था।यह सत्य है कि चरखारी ने अंग्रेजों का साथ दिया था।4

(3) दीक्षित ( नाम अज्ञात) ने राजा से विनती की थी कि आपके पास न तो खाघ सामग्री है और न धन। राजा क्रोधित हो उठे और बोले कि भगवान शंकर सहायक हैं, तो कोई कमी नहीं होगी। यह सुनकर दीक्षित ने राय दी कि ' अंग्रेजो से लड़ाई छेड़कर अपना राज्य न छोड़ें। अंग्रेजों से षड़यंत्र न करें, क्योंकी होल्कर, सिंधया और सभी राजा उनसे ड़रते हें। अंग्रेज अब इस देश के स्वामी हैं।' वस्तुतः कवि ने इस प्रसंग के द्वारा तत्कालीन परिस्थिति का संकेत दिया है।

(3अ) इतिहास - ग्रंथों से स्पष्ट है कि 1802 - 03 ई. की ऐतिहासिक ' बेसिन - संधि' के बाद अंग्रेजों ने बुंदेलखंड़ के अनेक राज्यों पर दबाव ड़ालकर उनसे संधियां की थीं। मराठों ने इस भू भाग को ' सोने की नदी' और सामरिक महत्व का स्थ्ल माना था ( पेशवा बालाजी बाजीराव द्वारा बुंदेलखंड़ से लिखित 22 दिसंबर, 1742 ई. का पत्र)5, फिर अंग्रेजों की आंख से कैसे बचता।उन्होंने अपनी कूटनीति से 1812 ई. तक ओरछा, पन्ना,दतिया जैसे बड़े राज्यों से संधियां कर लीं और छोटे राज्यों को सनद् लेने के लिये विवश कर दिया 6। 1823 ई. तक सनदों का बाजार गर्म रहा।

(4) दीक्षित का इतिहास संदर्भ इतिहास में उपलब्ध नहीं है। उनके जाने के बाद नौनेर के राव साहब आये। राजा पारीछत सेना की तैयारी कर रहे थे। युद्व के नगाड़े बज उठें पनवाड़ी के निकट राव साहब और अंग्रेजों की लड़ाई छिड़ गयी। वीर सैनिक मृत्यू से नहीं बचा करते, उन्होंने अपने प्राण होम दिये। कुछ तिलंगों ने अंग्रेजों के खजाने लूट लिये और भाग गये। यह खबर पाकर झांसी से अंग्रेज सेना चल पड़ी, जिसका पहला पड़ाव मऊरानीपुर में और दूसरा कुलपहाड़ में पड़ा। चरखारी नरेश रतन पुर की रानी ने लिखा कि किला छोड़ देना और यदि लड़ना है, तो यु, करना। बुंदेले वीरों , व्यर्थ अपने प्राण न गॅवाना। यह खबर पाकर सैनिकों ने किला छोड़ दिया और युवा शस्त्र लेकर डट गये।

(5) अंग्रेजों की सेना आयी और उसने जैतपुर घेर लिया। किले के चारों ओर नंगी तलवारें दिखाई दे रहीं थीं। रियासत के दिवान कायस्थ थे,जो अंग्रेजों से मिल गये थे। अंग्रेज सेना अधिक थी। दोनों दल यु,द्व के लिये तैयार हो रहे थे। जिसे निकट जानकर कालिका और सभी योगनी आन्नद से भर उठीं। अंग्रेज लाई का संदेश आ गया था,अतएव अंग्रेजों ने रात से ही व्यूह रचना कर ली थी। दूसरी ओर जैतपुर नरेश पारीक्षत ने सात सौ सेनिकों को लेकर मोर्चा बांध लिया था। तोपची थैली पाकर लापरवाह हो गया था।   उसने तोपों में नौ बार बत्ती दी थी। लेकिन जब शत्रू हरावल में आगे पहुंचा ,तब हुसैन बख्स की तोप ने धोखा दे दिया। फलस्वरुप जैतपुर की सेना डगमगा गयी। रणक्षेत्र में लोथें पट गयीं और कालिका का खप्पर भर गया।

अंग्रेज सेनापति अगर रण में गिराता ,तो नदी रुखी न होती। तलवार ,बंदूक, तीर,बल्लम, बर्छी आदि शस्त्र उपयुक्त समय में चलते थे और अपना हुनर दिखाते थें रुण्ड - मुण्ड सभी नग्न पड़े थे। अगर तोपें धोखा न देतीं तो फिर महायुद्व होता। इस लड़ाई में हजारों कट गये और खेत अंग्रेजों का रहा। उन्होंने राज्य का एक टुकड़ा दबा लिया।

दोहा क्रमांक 28 व्यंजना का अच्छा उदाहरण है।   'मड़ई ' या मड़इया इस जनपद में उस झोपड़ी को कहते हैं जो अस्थाई तौर पर खड़ी की जाती हैं लड़ाई ऐसे बिखर गयी जैसे मड़ई। ' नकियाऊ फांस' वह है, जो नाक में लगाई गयी हो और जिसे नकेल भी कहते हैं। देश की नकेल अंग्रेजों के हाथ में चली गयी। मध्ययुग के काव्य में देश के दोनों अर्थ है - पहला पूरा देश अर्थात भारत और दूसरा विशेष स्थान या भू भाग, जेसे जैतपुर। ' लिड़ुआ पैलें पार के' अर्थात ' पहली पार के लड्डू से अर्थ चरखारी के बुढ़वामंगल में पारीछत के नेतृत्व का प्रस्ताव पारित होने की खुशी में बांटे गये लड्डुओं से हैं बुंदेलखंड की आजादी के संर्घर्ष में नेता बनना ही लड्डू का अर्थ देता है। मध्य युग में लड्डू ही मिष्ठान का राजा था। इसलिये मुहावरे में उसी का प्रयोग हुआ हैं वस्तुतः जैतपुर नरेश पारीछत पर अंग्रेजों का आक्रमण उनके इसी नेतृत्व के कारण हुआ था और यह भी सही है कि बुंदेलखंड़   की आजादी की लड़ाई पारीछत को हराकर ही कुचली जा सकती थी।

छंद क्रमांक 29 में मजबूत सिंह के संबंध में यह लिखा गया है कि उसने झांसी में किसी (?) से सलाह की थी। मंत्र शब्द मध्ययुगीन काव्य में कूटनीतिक अर्थ देता है, बल्कि वह कूटनीति का पारिभाषिक शब्द रहा हैं इतिहासकार कवि का कथन है कि जो क्षत्रिय वीर को शत्रु के हाथों सौंप दे ,वह क्षत्रीय नहीं कहा जा सकता। अंग्रेजों ने तीन महिनों का समय निर्धारित किया था। दुर्जन विचार तो राम - सीता के भजने से दूर किया जा सकता हैं ।

(5अ.) उक्त विवरण में जैतपुर - युद्व का संक्षिप्त विवरण है, जिससे ज्ञात होता है कि लोक कवि अंग्रेजों की दमनकारी नीति से भयभीत होकर नाम - पहिचान ओर अन्य तथ्य छिपा लेता था। वस्तुतः गुप्तचरों से खबर पाकर अंग्रेजों ने जैतपुर नरेश पारीछत पर दबाव ड़ालने के लिये मेजर स्लीमन ने उनके सन्मुख ' सहायक संधि' का प्रस्ताव रखा था। जिसके अनुसार राज्य की रक्षा का भार अंग्रेज सेना पर होता था। जिसका व्यय राज को देना पड़ता था। पारीछत इस गुलामी को कैसे स्वीकारते,इसलिये अंग्रेजों ने पनवाड़ी (जिला - हमीरपुर) पर आक्रमण कर उन्हें छेड़ा था। फलस्वरुप जैतपुर और चरखारी की सम्मिलित सेना ने उन्हें हराकर खदेड़ दिया। अभी तक बुंदेलखंड के इतिहास में पनवाड़ी के युद्व के संबंध   में दो तथ्यों के बीच विरोधाभास था। बुढ़वामंगल में चरखारी के राजा का छल और पनवाड़ी में चरखारी की सेना का अंग्रेजों से युद्व दोनों विरोधी ध्रुव हें। जो आपस में मिल नहीं सकते। इस कोहरे को दूर करने वाला कटक का छंद क्रमांक 10 है, जिसके अनुसार नौनेर के राव साहब की सेना ने ही जैतपुर का साथ दिया था ओर पनवाड़ी के युद्व में विजय प्राप्त की थी। चिरगांव   के स्वामी राव बखत सिंह इस युद्व में मारे गये थे।7अ

(5ब)   हमीरपुर जिले के इतिहास के अनुसार वर्मा नदी के पास राठ से जैतपुर जाने वाले मार्ग पर स्थित 'कैथा' में अेग्रेजों की एक छावनी बनी थी। जहां से स्लीमन ने जैतपुर पर हमला करने के लिये प्रयाण ेिकया था। उसने इलाहाबाद से सेना बुलायी थी और लाहौर जाती सेना नौगांव छावनी में रोककर उसे पूर्व की तरफ आक्रमण करने का आदेश दिया था। महाराजारीछत ने सभी राजाओं को संदेश भेजकर बिलगांव में मोर्चा जमाया। बिलगांव वर्मा नदी के तट पर स्थित हैं उसके मैदान में स्लीमेन को रोकने के लिये उत्तर की तरफ मार के उपयुक्त रुई भरी गांठों और रेत भरे बोरों की दो कतारें खड़ी की गयीं। पुरैनी, बिलगांव,सिवनी, मुस्करा और पड़ोसी गांवो के जवान मरने मारने को एकत्र हो गये। पुरैनी और बिलगांव की जनश्रुतियों से पता चलता है की जैतपुर के गोलंदाजों   के सामने अंग्रेजी सेना न ठहर सकी। यह युद्व संवत्1898 वि. के चैत माह में हुआ था। कटक में इसका वर्णन नहीं हैं।

(5स) विजय की खुशी में डूबा जैतपुर अंग्रेजों की चालों से सावधान नहीं रहा। स्लीमैन ने रियासत के दिवान और गोलंदाजों को लाभ देकर अंधा बना लिया था। कटक के छंद 18 की पंक्ति 'लाला दिमान आन मिला उनका अंगी।' और 'देती न दगा तोपें तौ भौ भारथ परतो।' (छंद क्र.25) में भी अंग्रेजो के षड़यंत्र का स्पष्ट संकेत है। साथ जैतपुर नरेश पारीछत का साथ किसी ने नहीं दिया, वे अकेले लड़ते रहे। (छंद क्र.26)

(5द)   कटक का प्रथम भाग अपूर्ण प्रतीत होता है, क्योकी उसमें राजा के शोये का वर्णन नहीं हैं जिसकी सम्पूर्ति एक लोक

गीत करता है-

**बडे पारीछत महाराज, किले के लाने जोर भंजाई राजा नें।**
**सबरे राजा जुरे चरखारी , बुंढ़वामंगल कीन।**
**पुन सब बैठ जाय गढ़ियन में, पारीछत को मुहरा दीन।।बड़े.।।**
**कै सूरज गहनै पपरे,कै नगर में मच रई हूल।**
**कै ऐसो दानो पजो, सूरज भये अलोप।।बड़े.।।**
**पैली न्यांव धंधवा भई , दूजी कछारन मांह।**
**तीजी मानिक चौक में,जहॅ जंग नची तलवार।।बड़े.।।**
**गुर्जन गुर्जन रोई पुतरिया, गजमाला रोई मवास।**
**हांड़ी बिसूरै मानिक चौक में, कोउ नइयां पीठ रनिवास।।बड़े.।।**

**यह लोक गीत प्रस्तर अभिलेख से भी अधिक कीमती है, भले ही इतिहास न माने। शिलालेख तो राजा महराजाओं द्वारा बनवाये गये हें।इस कारण उनके पक्षधर हो सकते हैं। लेकिन लोकगीत लोक कंठ में बसी लोक की आवाज है। लोक कवि लोक का इतिहास लिखता हैं इतिहास उसे साक्ष्य के रुप में स्वीकारे या नहीं।**

(6) कटक के दूसरे भाग में महाराज पारीछत और अंग्रेजों के बगौरा युद्व का वर्णन है।जिसका उल्लेख किसी भी इतिहास - ग्रंथ में नहीं मिलता। राजा आखेट के बहाने जैतपुर से बगौरा ड़ांग (जंगल) में पहुंचे। वहां जवानों को सैला और पगड़ी बांटी तथा रण की व्यूह - रचना कर ली। बुंदेलखंड़ के सब नरेश विश्वासघात कर गये और पारीछत को अकेले ही लड़ना पड़ा। अंग्रेज भी सेना सजाकर आ गया, लेकिन उसे पराजित होना पड़ा। बगौरा का जंगल इतना घना था कि अंग्रेज को भागने के लिये मार्ग मिलना कठिन हो गया।

दूसरी घटना उस समय की है ,जब पारीछत स्नानादि के बाद अपनी प्रजा के बीच बैठे थे, तब अनेक अंग्रेजों का आक्रमण हो गया। कवि ने बिगुल बजाने वाले दो अंग्रेजों को मार ड़ाला। एक बंदूक (बड़गैन) से दो को मार दिया गया। पारीछत के युद्व करने से अंग्रेज (निशिचर) तेजहीन हो गये। लाहौर जाने वाली सेना डॉग में ही रह गयी। पहले राजा की विजय हुयी और पारीछत ने भारत की प्रतिष्ठा रख ली। 'जातहती हिंदूवान की , राखो सबकौ रुप' में महाराज पारीछत की राष्ट्रीय भावना उजागर हुई है। राजा की विजय का समाचार विलायत (सुदूर देशों) तक फैल गया। भगवान की कृपा से राजा का यश चारौ ओर फैल गया।

लोक कवियों ने आजादी की लड़ाई में काफी सहयोग दिया, जिसकी गवाह कटक की दो पंक्तियां हैं-

**काहू नें सैर भाषे,काहू नें लावनी।**
**अबके हल्ला में फुंकी जात छावनी।।** छंद 2/26।। ढउंपसजवरू2/26।।झ

पारीछत की ओर से लोककवि ही नहीं, विष्णू के सभी अवतार विशेषतया कृष्ण और राम सहायक बने। द्विज किशोर कहते हैं कि सूरवीर कभी मुख नहीं मोड़ता और शत्रु को गंगा में डुबाकर मारने का साहस रखता है।

(6अ) बगौरा के युद्व का वर्णन एक लोकगीत और पारम्परिक तुकबंदियों में भी मिलता हैं यहां संदर्भित पंक्तियां ही उद्वत हैं -

**अरी कमोदनी तू कैसें रै गई बाँड़ बेला में ।।टेक।।**
**राजा जंगी जैतपुर वारे, पुरजन के अधिकार**
**जंग की करै तयारी , ड़ाँगई बगौरा की। अरी.।**
**चारऊँ ओर पहारन की , पारी छत दाबी पार**
**गोरा उरे बगौरा की ड़ांगन - ड़ांगन मँझयार।अरी.।**
**बेला सपने दै रई, राजा सुन लेव मोरी बात**
**अरे तोरी तोपें डूब रईं,गुर्जन में लेव धराय ।अरी.।**
**अरी कमोदनी तू कैसें रै गई बाँड़ बेला में ।।**

**0ध्ध्ध्ध्ध्0**

# मुर्गा बोले पतेरन में

**मुर्गा बोले पतेरन में**

**पारीछत दहाड़े हजारन में।**

**ढडके फिरंगी पहारन में।1।।**

**0ध्ध्0**

**पाठे को झिन्ना रुकत नइयाँ।**

**पारीछत कौ हाँती अरत नइयाँ।।2।।**

**0ध्ध्0**

**भागे फिरंगी महोबा को जायँ।**

**राजा पारीछत खदेरत जायँ।।3।।**

**0ध्ध्0**

**राम रची सो होय,डँगाई में खूब चली तरवार।**

**जुग - जुग जियो पारीछत, डँगाई तैंनें जेर करी।।4।।**

(6ब) पारछत कौ कटक में बगौरा के युद्व तक का वर्णन है, लेकिन जनश्रृतियों, गजेटियरों और अन्य सूत्रों से खानाबदोशों की तरह एक जगह से दूसरी जगह फिरते महाराज पारीछत और उनकी पत्नि श्रीमति रानी साहिबा का वृतांत अत्यंत कारुणिक हैं स्लीमैन ने घोषणा की थी कि जहां राजा पारीछत मिलेंगे,वह राज्य अंग्रेजी राज्य में सम्मिलित कर लिया जायेगा। बमीठा जिला छतरपुर में राजा - रानी का मिलन हुआ और वे राजगढ़ के जंगल में रहने लगे। उस जंगल को भी अंग्रेज सेना ने घेर लिया किसी तरह गरौली के पारीछत के बहाने वे बच गये। जैतपुर की सैनिक टुकड़ी ने कप्तान हडसन को मौत के घाट उतार दिया। पारीछत ने चरखारी नरेश रतन सिंह से रानी साहिबा को अपनी रनिवास में रखने का आग्रह किया, पर किले से 11 तोपों की सलामी के संकेत को ताड़कर पारीछत आलीपुरा के पास जोरन के महलों में रहने के लिये चल पड़े। उनकी गिरफ्तारी पर इनाम की घोषणा पहले ही हो चुकी थी। जासूसों से जानकारी पाकर स्लीमैन वेश बदलकर जोरन गया, जिसे देखकर पूजा में बैठे पारीछत ने रानी को संकेत दिया। फलस्वरुप बारुद का भयानक विस्फोट हुआ, लेकिन रानी शहीद हो गयीं और राजा बंदी बना लिये गये।

इतिहासकार पं. गोरेलाल तिवारी के अनुसार पारीछत के विद्रोह के बाद सं. 1899 (1842ई.) में जैतपुर की सनद जब्त का जागीर खेतसिंह को दे दी गयी।8 लेकिन हमरीपुर गजेटियर में स्पष्ट है कि राजा को जंगल से पकड़कर कानपुर ले जाया गया और उनका राज्य खेतसिंह को दिया गया। जो कि चरखारी राज्य का इच्छुक था। पारीछत की मृत्यू के संबंध में कई जनश्रुतियां प्रचलित हैं। एक के अनुसार पारीछत अंग्रेजों के चंगुल से आजाद हो गये थे और बमीठ के पास घाटी में उनकी मृत्यू हो गयी। दूसरी जनश्रृति है कि बंदी पारीछत कानपुर के हाता सवाईसिंह में नजर कैद रखे गये थे और वहीं सं. 1910 (1853ई.) में स्वर्गवासी हुये। तीसरी किवदंती के अनुसार उन्हें कानपुर में फांसी दी गयी थी। पारीछत की जुझारु शक्ति और वीरता के कारण लोक तो उन्हें अमर मानता हैं लोकमुख का भरतवाक्य हैः-

**राम रची सो होय,लड़ाई तैंनें खूब लड़ी।**

**जुग - जुग जियो परीछत,लड़ाई तैंनें जेर करी।।**

**संदर्भ संकेतः** 1.सुराज -म.प्र. आदिवासी लोक कला परिषद भोपाल

2.बुंदेलखंड़ का संक्षिप्त इतिहास, पं. गोरलाल तिवारी, प्रथम सं. पृ.237,238,।

3.भ्पेजवतल व`ि जीम तपेम ंदक ंिसस व`ि जीम डंतंजीेंं पद

ठनदकमसाीेंदकण्क्तण्ठण्क्णळनचजंण्1986ण्च्98.101.

4. वही,पृ.294।

5. तुलसीकृत विनय पत्रिका की टीका 'विनय चंद्रिका'(र.का.1851ई.) 1876 ई. चरखारी प्रेस से प्रकाशित।

6.बुंदेलखंड़ का संक्षिप्त इतिहास, पं. गोरलाल तिवारी,पृ.360।

7.न्यू हिस्ट्री आफ दि मराठाज,वाल्युम 2, जी.एस.सरदेसाई,पृ.242।

ं8. । भ्पेजवतल व`ि जीम तपेम ंदक ंिसस व`ि जीम डंतंजीेंं पद

ठनदकमसाीेंदकण्क्तण्ठण्क्णळनचजंण्1986ण्च्98.101.

8. 7अ. बुंदेलखंड़ का संक्षिप्त इतिहास, पं. गोरलाल तिवारी पृ.342।

7ब. भ्ंउपतचनत ळ्रूमजजममतण्1909ण्भ्पेजवतल ैमबजपवदण्
9. बुंदेलखंड़ का संक्षिप्त इतिहास, पं. गोरलाल तिवारी पृ.295।
10.आजादी के गायक हरबोले - स्वराज पुस्तक माला

## 4. अरी कुमुदनी तू कैसी रै गई बाँड़ बेला में

अरी कुमुदनी1 तू कैसी रै गई बाँड़ बेला में। टेक।
चरखारी फूली केतकी,बांदा में फूलो गुलाब
बीच बेला में फूली कमोदनी,संभू तोखाँ देउँ चढ़ाय2 । अरी.।
बेलाताल गहरे परे ,मँझयारे3 कुमुद4 कौ फूल
अरे बीच बेला में रुपो5 बिरजानो6, हम पारे7 केसरी सिंह8 ।अरी.।
किले पार खाई खुदी, दोरें हते मसान
भैंसासुर छिड़ियाँ थपे ,दरवाजें बिराजे9 हनुमान।अरी.।
डलन किसुरुआ तोरे खुद गये,अरे गाड़न खुदे मुरार
अरी बेला तेरी झोर10 में, जी मिल गओ सिंसार । अरी.।
काबुल और खंदार देस 11 है, जाँसें चढ़ो फिरंगी
पूँछत बारंबार,कहां राजा है जंगी। अरी.।
राजा जंगी जैतपुर वारे,पुरजन12 के अधिकार
जंग की करै तयारी , ड़ाँगई बगौरा13 की। अरी.।
चारऊँ ओर पहारन की , पारीछत दाबी14 पार
गोरा उरे15 बगौरा की ड़ांगन - ड़ांगन मँझयार।अरी.।
कीरा सिंघारी राजा लग गओ,दूबा नें मार दई धान16
बँधवा पै रो रई ढ़िमरिया, लरका हो गये बारहबाट।अरी.।
बेला सपने17 दै रई,राजा सुन लेव मोरी बात
अरे तोरी तोपें डूब रईं,गुर्जन में लेव धराय18।अरी.।
अरी कमोदनी तू कैसें रै गई बाँड़ बेला में ।।
00ध्ध्ध्ध्ध्ध्00

गीर्तार्थ -
कुमुदनी तुम बेला जैसे ताल में अनाथ कैसे हो गईं?
चरखारी में केतकी फूली और बांदा में गुलाब। बेलाताल में कुमुदनी फूली , तुझे शिव पर चढ़ा दूँ ?
बेलाताल गहरे (गंभीरता या गहराई से ) पडे हें और बीच में कुमुदनी फूली है। ऐसा लगता है

कि बेला के बीच रुपा बिराजमान हो और केसरी सिंह ( जैतपुर नरेश) वहीं पड़े हों।
किले के चारों तरफ खाई है ,मसान द्वार पर हैं,भैंसासुर सीढ़ियों में थपे हैं और हनुमान जी द्वार में बिराज रहे हैं।
बेलाताल,तुमसे टोकरों किसरुआ और गाड़ियों मुरार खोदे गये,तुम्हारे आंचल में ही दुनिया भर को प्राण मिलते हैं।
काबुल और कंधार जैसे बहुत दूर के देश में आये अंग्रेज बार - बार यही पूंछते हैं कि युद्व वीर राजा कहां है।
जैतपुर के राजा युद्ववीर हैं।जो प्रजाजन के हक के लिये बगौरा की ड़ांग में युद्व की तैयारी में लगा है।
पारीछत ने चारों ओर से पर्वतों की सीमा दाब ली है और अंग्रेज बगौरा के जंगलों में पुर गये। राजा, सिंघाड़ी में कीड़ा लग गया है और दूबा से धान की फसल मारी गयी है। बांध में रोती ढ़ीमरिया कहती है कि अब लड़के बरबाद हो जायेंगे। बेला ताल सपने में कहता है कि 'राजा मेरी बात सुनो ।तुम्हारी तोपें डूब रही हैं,गुजरें में रखवा लो । कुमुदनी तुम बेला जैसे भरे तालाब में आनाथ कैसे हो गईं ?

**संदर्भ संकेतः**

1.लोक कवि की अन्योक्ति,कुमुदनी द्वारा जैतपुर नगरी ( मातृभूमि ) का वर्णन। 2. कुमुदनी के बलिदान की सार्थकता का संकेत। 3. मंझारे पाठ भी है। 4. कमल पाठ है पर रुपा ( चांदी ) से उसका सादृश्य नहीं बैठता। 5. रुपा सोना प्रतीक - युग्म स्त्री - पुरुष के अर्थ में बहुत प्राचीन काल से परिचित हैं। यहां रुपा या कुमुदनी मातृ भूमि के लिये प्रयुक्त हुआ हैं। 6. मान में रुठना , रोष युक्त होना। 7. लेटाये या पहरे में रखा । 8. जैतपुर नरेश पारीछत के पिता। 9. पवन पाठ भी हैं 10. आंचल। 11. देशों के नाम दूरी के अर्थ में प्रयुक्त। 12. पुरहन ( = पुर को नष्ट करने वाला ,शिव, विष्णू ) पाठ भी है, जिसका अर्थ खींचतान कर यों लगाया जा सकता है कि ' पुरहन का अधिकार न ले जाय' 13. बगौरा डाँग में युद्व का वर्णन द्विज किशोर रचित ' पारिछत कौ कटक' में भी है। - 'कर कूंच जैतपुर से बगौरा पै मेले।' 14. दाबी की जगह ' की ' पाठ होना सार्थक नहीं है। 15. बुंदेली में 'ऊरना' क्रिया का कर्मवाच्य - इकट्ठे ड़ाले गये या हुये। 16. परिस्थिति के अशुभ होने का संकेत ,अपशकुन की तरह। 17. बेला ताल की आत्मा का मानवी करण, चंदेल नरेश परम`िर्दिदेव की सुपुत्री बेला की स्मृति में ही बेला ताल नामकरण। 18. 'तोपें डूबना' पराजय का सांकेतिक रुप।

**गायन - संदर्भ :**

पारीछत और अंग्रेजों के युद्व (1840-42 ई.) के तुरंत बाद रचा लोक गीत, जो 1842 ई. से 1857 ई. तक खूब गाया गया और उसके बाद भी यत्र - तत्र प्रचलित रहा।

1 संदर्भ ग्रंथ -'सुराज' म.प्र. आदिवासी लोक कला परिषद भोपाल

2. आजादी के गायक हरबोले - स्वराज पुस्तक माला

0ददददधध0

## बड़े पारीछत महराज

किले के लाने1 जोर भंजाई2 राजा नें ।टेक।

**चरखारी3 मंगल रची, सब राजा लये बुलाय**

**पारीछत मुजरा करें,राजा रये मुख जोय। बड़े.।**

सबेरे राजा जुरे चरखारी, बुढ़वा मंगल कीन
पुन सब बैठ जाय गढ़ियन में , पारीछत को मुहरा5 दीन।बड़े।
कै सूरज गहनै परे, कै नगर में मच राई हूल6
कै एसो दानो7 पजो , सूरज भये अलोप8 ।बड़े.।
ना सूरज गहनै परे, ना नगर में मच गई हूल
राजा पारीछत उतरे किले सें, सूरज भये अलोप।बड़े.।
पैली न्याँव धंधवा9 भई दूजी कछारन माँह
तीजी मानिक10 चौंक में , जहँ जंग नची तलवार।बड़े.।
देस - दिसावर सालो नहीं , सालो जैतपुर गांव
एक जनो मोय ऐसो सालो,सालो मल्ल जुवराज11।बड़े.।
गुर्जन - गुर्जन रोई पतुरिया12 गजशाला13 रोई मवास14
ठांड़ी बिसूरै मानिक चौंक में , कोऊ नईयां पीठ रनवास15 ।बड़े.।
बड़े पारीछत महराज बावनी16 लानें जोर भंजाई राजा नें।।
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

## गीतार्थ -

महाराज पारीछत महान हैं,जिन्होंने किले के लिये सारी शक्ति लगा दी।
चरखारी ने बुढ़वामंगल रचा,सब राजा बुलाये। जैसे ही पारीछत ने मुजरा किया,सभी उनका मुख जोहने लगे।
,सभी राजा चरखारी में एकत्र हुये और उन्होंने बुढ़वामंगल मनाया, फिर अपने - अपने किलों में दुबककर पारीछत को मुहरे में लगा दिया या तो सूरज को ग्रहण लग गया या नगर में ठेल - पेल मच गई अथवा कोई दानव उपजा,
जिससे सूरज लुप्त हो गये ?
न तो सूरज को ग्रहण लगा और न नगर में ठेल - पेल मची, राजा पारीछत के किले से उतरने में (इतनी धूल उठी या इतना तेज फैला ) कि सूर्य लुप्त हो गये।
पहली लड़ाई धॅधवा में हुई और दूसरी कछारों में। तीसरी मानिक चौक में, जहां तलवार ही नचती रही।
फिरंगियों ने महसूस किया कि देश - विदेश वे लड़ते रहे ,लेकिन जैतपुर उन्हें साल गया और खास तौर से वीर योद्वा युवराज।
गुर्ज - गुर्ज जाकर पातुर रोई,राजशाला और किले में रोती रही, अब मानिक चौक में खड़ी - खड़ी बिसूरती है कि रनिवास की रक्षा के लिये कोई नहीं है।
पारीछत महराज महान हैं, जिन्होंने बावनी के लिये सारी शक्ति लगा कर युद्व किया।

## गायन संदर्भ :-

जैतपुर के राजा पारीछत का अंग्रेजों के युद्व (1840-42 ई.) के तुरंत बाद इस गीत की रचना और 1842 ई. से 1857 ई.तक स्वतंत्रता संग्राम का प्रेरक गीत। उसके बाद भी उसका प्रचलन।

## संदर्भ संकेतः

1.आजादी के लिये। 2. भुना ली ,बदला ले लिया। 3. रियासत का नाम। 4. विनय पूर्वक नमस्कार। मध्य युग का बहुप्रचलित दरबारी शब्द।अरबी। 5. युद्व में सबसे आगे, शतरंज या चौसर की गोट। 6. हूल के कारण धूल में सूर्य का छिप जाना। 7. 'दानो' की जगह 'दानी' पाठ मिलता है।दानी पाठ होने से अनुवाद होगा - कोई दानी ( सूरज से अधिक दानी ) उपजा है , जिससे ( लज्जित होकर) सूरज लुप्त हो गये? सूर्य को प्रकाश बांटने के कारण दानी कहा जाता है। 8. लोप या लुप्त न होना, लेकिन बुंदेली में यह शब्द लुप्त होने के अर्थ में ही प्रयुक्त होता है। 9. नगर सीमा पर कोई निश्चत स्थान ,धँधवा की जगह बंधवा पाठ का अर्थ किसी बंधान या तालाब के बांध से हैं। 10. माणिक्य - जटित, लेकिन लोक गीतों में किसी भी चौक को मानिक चौक कहते हैं। अधिकतर नगर के प्रमुख चतुष्पथ या चौराहे को । 11. इतिहासकार गोरे लाल तिवारी ने लिखा है कि पारीछत के पराजित होने के बाद अंग्रेजों ने जैतपुर की सनद जप्त कर ली और दीवान खेतसिंह को जागीर दे दी। अतएव युवराज का कहीं कोई उल्लेख नहीं मिलता। 12. मध्यकालीन रियासत की नर्तकी, जैतपुर में पारीछत के प्रसाद के सामने के एक भवन को ' रण्डी महल ' कहा जाता है। 13. गजमाला पाठ भी है। जिसका अर्थ है , गजों का समूह । 14. सवास पाठ भी है , परन्तु उसका अर्थ समझ में नहीं आया। 15. महराज पारीछत की रानी तो युद्व करते हुये बाहर आ गयी थी, पर अंतःपुर में अन्य रही होंगी। 16. बावन गांव या एकड़ या लाख की मालगुजारी वाली रियासत की आजादी के लिये।

1.संदर्भ ग्रंथ- सुराज, म.प्र. आदिवासी लोक कला परिषद भोपाल

2.अजादी के गायक हरबोले - स्वराज पुस्तक माला

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

## 6. मुर्गा बोले पतारन में

मुर्गा बोले पतारन1 में
हथनी मारे हजारन में।
पारीछत दहाड़े हजारन में
ढड़कें फिरंगी पहारन में।।1।।
पाठे2 को झिन्ना3 रुकत नैंया।
पारीछत को हॉती टरत नैंयां।
भूरी हथनिया गरद मिल जाय
पारीछत कौ तेगा कतल कर जाय।।2।।
डारे हथिनिया हजारन पछार
पारीछत को तेगा कर गओ संहार।
बांदा की मेंड़न ठटी बरछी4
अबकी बार लौटो5 हलाऊं धरती ।।3।।
कर लई पूजा सुमर लये राम
भूरा गढ़6 के किले में खूब लड़े ज्वान।
नौ सौ तेगा बटेरा7 चले
पनवाड़ी 8 में राजा अकेले लड़े9।।4।।
नौ सौ खुरपी हजार हंसिया10

नदिया - नदिया भागे नवाब11 रसिया12।
भागे फिरंगी महोबा को जायँ
राजा पारीछत खदेरत जायँ।।5।।
राजा की गोली उर बामन13 के बान
दल गेर - गेर मारें पारीछत के ज्वान।
मकना हाँती अमौआ14 की झूल
नरसिंगा15 भारी कटारन की शूल।।6।।
भगो रे भगो रे जिनें प्यारे हैं प्रान
हम न भगें रे पारीछत के राज।
बानी न लजैयो निभईयो बान17
खेतन सें भगीयो ना चायँ निकर जायें प्रान।।7।।
महुआ भूंजे खपरियन में18
पारीछत धमके दुपरियन में।
गोंहुंन की रोटी उर मारु19 भटा
पारीछत के मारे कड़ आये गटा20 ।।8।।
सबके मारे   रस बस जाव
पारीछत के मारे कहां भग जाव।
हंड़िया में राँधो परैया में खाओ
भगो मोरी सौतो पारीछत आओ22।।9।।
खरी दुपरिया पहरिया की ओट
मुरक देखो कक्का भतीजे की चोट23।
कक्का खायें ककरी दिमान खायें फूट24
ऊंगई में लूट लये बैनी के पूत25।।10।।
जुनरी बिकानी सवा मन की 26
पारीछत ने तौली अपन मन की।
मकना हांती टरत नइयाँ
पारीछत को तेगा डरत नईयां।।11।।
हांती पै हौदा औ घोड़ा पै जीन
चले तीर नेजा पारीछत की सांग
उतरत घाटी बजो ड़ंका27
पारीछत के जी को मिटो टंटा28 ।।12।।
हाँत सुमरनी गरें माला

पारीछत छोड़ी धरमसाला29।।13।।

राम रची सो होय

ड़ंगाई में खूब घली 30 तलवार।

जुग - जुग जियो पारीछत,

ड़ंगाई तैंनै। जेर करी 31।।14।।

गीतार्थ :

जंगल में मुर्गा की बॉग देते ही पारीछत अपनी हथनी पर सवार होकर युद्व शुरु कर देते थे और हथनी हजारों अंग्रेजों को मार भगाती थी।

पारीछत हजारों में दहाड़ते थे और अंग्रेजों के सिर ऐसे लुढ़कते थे,जैसे पहाड़ से लुढ़क रहे हों ।1।

जिस तरह पठार का झरना नहीं रुकता ,उसी तरह पारीछत का हाथी कभी विचलित नहीं होता। भूरी हथिनी भले ही धूल में मिल जाय,पर पारीछत का तेगा दुश्मनों का कत्ल करता रहता है। 2।

हथिनी ने हजारों को पछाड़ ड़ाला है और पारीछत के तेगा ने संहार कर दिया है।

बॉदा की सीमा पर शस्त्रों की पूरी तैयारी है। इस बार लौटते हो तो धरती हिला दूंगा। 3।

भगवान की पूजा और भजन के बाद जैतपुर के सैनिक भूरागढ़ के किले में खूब लड़े।

नौ सौ तेगा बटेरों की तरह लड़े और पनवाड़ी में राजा अकेले ही युद्व करते रहे। 4।

नौ सौ खुरपी और हजार हंसिया राजा की तरफ से लड़ने लगे, जिससे रसिया नवाब बांधा छोड़कर नदी के किनारे - किनारे भागे।

फिरंगी भागते हुये महोबा जा रहे थे और राजा पारीछत उन्हें खदेड़ रहे थे । 5।

राजा की गोली और ब्राम्हणों के बाण तो थे ही ,पर पारीछत के सैनिक दुश्मनों को घेर - घेर कर मार रहे थे।

नर हाथी पर अमौआ की झूल पड़ी थी, लेकिन उस पर सवार नरसिंह को कटारी लगने से काफी पीड़ा थी । 6।

किसी ने कहा - 'जिन्हें प्राण प्यारे हैं ,वे रण से भाग जायें।' दूसरे बोले - ' पारीछत के राज में हम नहीं भागेंगे '।

राजा पारीछत के सैनिकों से कहा - ' अपनी वाणी पर लज्जित न होना और अपनी आन - बान का निर्वाह करना । रनखेत से भागना नहीं , चाहे प्राण निकल जायें ।7।

सभी सैनिकों ने महुये खपरियों में भूंजे । राजा पारीछत दुपहरी में अचानक आ धमके।

गेंहू की रोटी और मारु भटा खाने वालों के भी पारीछत के कारण छक्के छूट गये । 8।

दूसरों की मार से तो कहीं प्रेम से रहा जा सकता है, पर राजा पारीछत की मार से नहीं बचा जा सकता।

हण्ड़ी में पका लिया और पारे में खा लिया ,दुश्मनों की औरतें कहती हैं कि 'मेंरी सौतो भागो ,पारीछत आ गया । 9।

खरी दोपहरी में पहाड़ी की ओट से भतीजा कितनी अच्छी चोट कर रहा है , कक्का जी जरा मुड़कर तो देखो।

कक्का ककरी और दिमान जी फूट खा रहे हैं। जंगल में बेनी का बेटा लुट गया है।10।

ज्वार सवा मन की बिकी है ,पारीछत ने अपने मन की खरीद ली है नर हाथी रण क्षेत्र से नहीं हटता और उसी तरह पारीछत का तेगा किसी से नहीं ड़रता ।11।

हाथी पर हौदा और घोड़े पर जीन सुशोभित थे। तीर और नेजा चल रहे थे। पारीछत की सांग अलग से चमकती थी।

घाटी से उतरते ही ड़ंका बज गया और पारीछत के मन की दुविधा दूर हो गयी। 12।

युद्व में विजयी होने पर पारीछत ने हाथ में सुमरनी और गले में माला पहन ली। यह दुनिया की धर्मशाला छोड़ दी।13।

राम ने जो लिख दिया वही होगा , पर इस बार जंगल में खूब युद्व हुआ।

पारीछत युगों - युगों तक जियें, उन्होंने डंगाई युद्व में सबको पछाड़ दिया।14।

**संदर्भ संकेतः**

1. जंगल। 2.पठार। 3. झरना। 4. युद्व की तैयारी कर चुनौती देना। 5. बांदा के नवाब ने अेग्रेजों का साथ दिया था और राजा पारीछत के ड़र से भाग गया था। 6. बांदा के किनारे केन नदी पर स्थित। 7. बटेर पक्षी लड़ने के लिये प्रसिद्व। 8. हमीरपुर जिले का एक नगर कुलपहाड़ से राठ के मार्ग पर स्थित। 9. पहले बुंदेल खंड़ के सभी राजाओं ने चरखारी में बुढ़वामंगल मनाते हुये अंग्रेजों के विरुद्व एक साथ मिलकर युद्व करने का संकल्प किया था, पर बाद में पारीक्षत को अकेले ही लड़ना पड़ा। 20. जनता हंसिया - खुरपी लेकर क्रांतकारियों का साथ देने निकल पड़ी। लोक कवि ने इसे जन क्रांती सिद्व कर दिया हैं बुंदेलखंड़ में गुसाई लड़ाकू वगै के रुप में प्रसिद्व रहे हैं।14. आम के रंग का एक वस्त्र।15. नृसिंह- नरसिंह - नरसिंघ - नरसिंग - नरसिंगा, बहुत वीर पारीछत का विशेषण। 16. कटारों से घायल होने की पीड़ा।17. बुंदेलखंड़ के सांस्कृतिक मूल्य। 18. पारीछत की सेना ने महुआ भूंज - भूंज कर खाये थे।इतिहास के लिये लोक साक्ष्य। 19. रण में काट करने वाला। जुझारु। आजकल शानदार के अर्थ में प्रयुक्त। मारु भटा में कवि की अनोखी व्यंजना है। 20. गटा कढ़ना एक मुहावरा है जो भय और आश्चर्य दोनों भावों के लिये आता है। 21. मिट्टी का ढ़क्कन । 22. पारीछत के शौर्य से दुश्मनों की स्त्रियों के भय की व्यंजना। भूषण कवि ने उनमें अतिश्योक्ति का चमत्कार उत्पन्न किया है। 23. गुरिल्ला युद्व का संकेत। 24. ऐसी पंक्ति निरंर्थक रुप में भी खड़ी कर दी जाती थी और युग्म की पंक्ति सार्थक हुआ करती थी। यह लोक पद की विधागत विशेषता है। 25. युद्व के परिणाम स्वरुप सेना का ककड़ी - फूट खाना, लूट - पाट होना आदि हर समय स्वाभाविक था। 26. मंहगाई का संकेत। 27. नगाड़ा, धौंसा बजना और युद्व शुरु होने का संकेत या विजय की घोषणा करना। 28. झगड़ा - फसाद, जी का टंटा का अर्थ मन की द्विवधा। 29. साधू का जीवन स्वीकार कर संसार रुपी धर्मशाला त्याग दी। लोकश्रृति है कि विजय के बाद पारीछत बैरागी हो गये थे। 30. युद्व का घमासान रुप। 31. अंतिम पंक्ति से पारीछत के निधन का संकेत मिलता है। लोक कवि उनकी अमरता की घोषण करता है।

संदर्भ ग्रंथ- सुराज ,म.प्र. आदिवासी लोक कला परिषद भोपाल

## 7. भगे फिरत अंगरेजा बेकल, दौआ हो राओ हौआ

लक्षमन सिंह1 फिरत हैं दौआ।

मारत खात लखत अंगरेजन, काटत ककरी जौआ2।

भगे फिरत अंगरेजा बेकल,दौआ हो राओ हौआ।

बांदा3 से कोठी4 तक मारी,फौज फिरंगी कौआ5।

सुन लो सब कोई कान खोलके भाग चले लखनौआ6।।

**गीतार्थ -** लक्षमन सिंह दौआ (आजादी से) फिरते हैं।अंग्रेजों को देखते ही ककरी के जौआ की तरह काटकर मार ड़ालते हैं।अंग्रेज व्याकुल होकर भागते हैं दौआ हौआ हो गया है।बांदा से कोठी तक धूर्त फिरंगियों की फौज मृत्यू के घाट उतार दी गयी है।सभी कान खोलकर सुन लें ,लखनौआ भाग रहे हैं।

**संर्दभ संकेत -**

अजय गढ़ जिला पन्ना म.प्र. का एक क्राान्तिकारी, जिसने अंग्रेजों के विरुद्व खुले आम युद्व किया था।

हाल का फूटा फल जो परिपक्व न हुआ हो।

उत्तर प्रदेश में केन के किनारे बसा प्रसिद्व नगर।

सतना जिला की भूतपूर्व रियासत कोठी।

विशेषण,धूर्तता का प्रतीक।

**लाक्षणिक अर्थः-** ,ऊपरी तड़क - भड़क होने पर भीतरी कोमलता, कायरता और निर्बलता के प्रतीक।

**गायन - संदर्भ : अजयगढ़ जिला पन्ना के लक्षमण दौआ विख्यात विद्रोही थे। राज्य और पेंशन छिनने पर वह विद्रोही हो गया। यह लोक गीत 1857 ई. पूर्व का है। इसका प्रचलन पूरे देश में था। 1857 ई. तक ही नहीं बाद में भी गाया गया।**

(संदर्भ ग्रंथ - सुराज - आदिवासी लोक कला परिषद भोपाल)

## 8 .भच्छन कर ततच्छन घोर मात कालिका

**मूंद मुख डंडिन1 को चुगलन कों चबाई खाई ।**
**खूंद2 दौड़ दुष्टन को शत्रुन संहारिका।।**
**मार अंगरेज रेज कर देई मात चंड़ी।**
**बचै नहीं बैरी एरी प्रलयंकारिका3।।**
**संकर की रक्षा कर दास प्रतिपाल कर।**
**दीन की सुन टेर आकैं मात प्रानपालिका4।।**
**खाय लेई म्लेच्छन कों झेल नंहि करौ अब।**
**भच्छन कर ततच्छन घोर5 मात कालिका6।**

**0ध्ध्ध्ध्ध्0**

**गीतार्थ :**

**शत्रुओं का संहार करने वाली माता कालिका,दण्डधारियों का मुख बंद कर दे और चुगलखोरों को नष्ट कर दुष्टों को रौंद दे। अंग्रेजों को मारकर उनके टुकड़े - टुकड़े कर दें मॉ चंड़ी। हे प्रलयंकारी माता, एक भी बैरी न बचे। प्रण पालन करने वाली मॉ,इस दीन शंकर की पुकार सुनकर अपने दास की रक्षा कर। विकराल रुपा माता कलिका , अब विलम्ब न कर , तुरंत म्लेच्छों का भक्षण कर । उन्हें नष्ट कर दे।**

**संदर्भ संकेत :**

दण्डिन - डंडिन - दण्डधारी,राजा,पुलिस - कर्मचारी आदि।

बार - बार रौंदना।

'बचे नहिं बैरी 'बाल बच्चे संघारिका ।ं पाठ दिया गया है।

' दीन की सुन आय मात कालिका' पाठ दिया गया हैं

विकराल, भयंकर।

गढ़ा मंड़ला के विख्यात शहीद गौंड़ राजा शंकर साह की अपनी अराध्या देवी माता कलिका के प्रति प्रार्थना का छंद , जो जबलपुर के डिप्टी कमिश्नर को तलाशी में मिला था। उसने लिखा था - यह एक प्रार्थना है जिसमें उसने देवी से प्रार्थना की है कि सब यूरोपियन नष्ट हो जायें , हमारा शासन उखड़ जाय और उसका पुनः स्थापित हो जाय। यह एक रेशमी थैली में मिला था। जिसे वह उस पलंग पर रखता था। जिस पर से वह उस समय उठा था। जब मैं उसके घर में घुसा। यह घटना 19 सितम्बर,1856 ई. की हैं।

**गायन संदर्भ :**

**गौंड़ नरेश शंकरसाह की प्रार्थना का एक छंद, प्राप्ति 1857 ई. उसके पूर्व गाया गया। कवित्त**

गायकी।

(संदर्भ ग्रंथ - सुराज - म.प्र. आदिवासी लोक कला परिषद भोपाल)

## 9.काटकूट कें सबई फिरंगी चित्रकूट पै धमके

स्यामलगिर1 भोरई आं धमके।

तीन सहस साधू लै धाये,अंगरेजन पै बमके।

कानपुर 2 से भगे फिरंगी , पुन बिठुर 3 जा चमके।

होन लगी तकरार रार है , आन फिरंगी ठमके।

सात दिना लौं भई लराई, गिरी गुसॉई हुमके।

कटकूट के सबई फिरंगी , चित्रकूट4 पै धमके।

रेवाराम5 देख लेव जा गत, आने मिलो सब जमके ।। 6

**गीतार्थ -**श्यामगिरी गुसॉई सबेरे - सबेरे बड़े वेग से आ पहुंचे। तीन हजार गुसॉई लेकर अंग्रेजों पर चढ़ बैठे।कानपुर से अंग्रेज भागे और फिर बिठुर जाकर जम गये। लड़ाई होने लगी और अंग्रेज सहम गये। सात दिनों तक लड़ाई होती रही।गिरि गुसॉई जोश से उछलकर बढ़े। सभी अंग्रेजों को मार भगाकर चित्रकूट आ गये। रेवाराम कहते हैं कि यह दशा देख लो और सब दृढ़ता से एक हो जाओ।।

**संदर्भ संकेतः**1.चित्रकूट के प्रसिद्व क्रान्तिकारी।2.उत्तर प्रदेश का प्रसिद्व नगर।जहां बागियों का नेतृत्व नाना जी करते थे। 3.बिठुर 1857 ई. क्रान्ति का केंद्र।4.बुंदेलखंड़ का प्रसिद्व तीर्थ।5.लोक कवि का नाम।6.कहीं - कहीं यह पक्ति लोकमुख में नहीं है।

**गायन - संदर्भ :**

श्यामलगिरि गुसॉई का कानपुर,बिठुर और चित्रकूट में अंग्रेजों के विरुद्व युद्व ( 1857 ई. के लगभग ) के बाद गीत की रचना और लोक में प्रचलन।

संदर्भ ग्रंथ -( सुराज म.प्र.आदिवासी लोक कला परिषद भोपाल)

## 10. बांदा लुटो रात को गुँईयाँ

बांदा1 लुटो रात के गुँईयाँ

सीला देबी 2 लरी दौर कें सँग में सौंक मिहरियाँ।

अंगरेजन ने करी लराई , मारे लोग लुगईयाँ।

गिरि गुसाँई3 तब दौर हैं, लरन लगे भौंमईयाँ।

सीला देवी को सिर काटो,अंगरेजन ने गुँईयाँ।

भगी सहेलीं तब गाँउन सें,लेंके बाल मुनईयाँ।

गंगासिंह टेर कें रैगये,भगौ इतै ना रइयाँ।

0ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :**सखी - रात में बांदा लुट गया करीब सौ स्त्रियों के साथ शीला देवी आजादी के लिये लड़ीं।अंग्रेजों ने युद्व किया और स्त्रीयों - पुरुषों को मार ड़ाला। गिरि गुसाँई दौड़कर उसी भूमि पर लड़ने लगे। सखी , अंग्रेजों ने शीला देवी का सिर काट लिया। तब सभी सहेलियाँ अपने बाल - गोपाल लेकर गांव से भाग गयीं।गंगा सिंह कहते - कहते थक गये कि भाग जाओ यहां नहीं रहना हैं ।

**संदर्भ - संकेतः**

1.उत्तर प्रदेश का एक प्रमुख नगर।

2.शीला देवी एक क्रांतिकारी वीरांगनाजिनका परिचय अज्ञात हैं।

3.कंचनगिरि गुसाँई हिम्मत बहादुर के बाद उनका पुत्र नरेन्द्र गिरि उनकी जागीरों का स्वामी और कंचनगिरि उसका भाई। सं. 1897(1840 ई.) में नरेन्द्रगिरि की मृत्यू के बाद अंग्रेजों ने उसकी जागीर जबत कर ली और कंचनगिरि को दो हजार रुपये मासिक मुकर्रर कर दिये। ( बुंदेलखंड़ का संक्षिप्त इतिहास,गोरेलाल तिवारी, प्रथम संस्करण, पृ. 282 ) स्वतंत्रता संग्राम में अंग्रेजों के विरुद्व युद्व किया।

### गायन संदर्भः

**हिम्मत बहादुर गुसाँई के द्वितीय पुत्र कंचनगिरि का अंग्रेजो से युद्व और उनकी मृत्यू के बाद अंग्रेजों की लूट। सन् 1857 ई. के स्वतंत्रता - संग्राम के समय गायी जाने वाली लोक प्रिय रचना। पद शैली की फाग गायकी।**

(संदर्भ ग्रंथ : सुराज - म.प्र. आदिवासी लोक कला परिषद भोपाल )

## 11. अंगरेजन खाँ बुला इनन ने बंटाधार करा दये

चूना मूंड़न पे बुझवा दये।1
हांत पांव में कीला ठोंके, पाछे सें संदवा2 दये।
तेरा दिना चार मइना लों,गोंड़न 3 खून मिटा दये।
जार दओ है बिला बिलखुरा 4 लूटो जन भगवादये।
अंगरेजन खाँ बुला इनन 5 ने, बंटाधार 6 करा दये।
'खान फकीरे' काँलों कइये,ऐसे हाल करा दये।।

**गीतार्थः-**

**अंग्रेजों ने सिर पर चूना रखकर उसमें पानी ड़ाल दिया।दोनों हाथ पीछे बांधकर हाथ पैर में खीला ठोंक दिये। चार माह तेरह दिनों में अंग्रेजों ने सभी परिवारों को नष्ट कर दिया। पूरे बिलखुरा गांव को जला दिया। और वहां के लोगों को भगा दिया।इन्होंने अंग्रेजों को बुलाकर अपना बंटाधार करा दिया।**

### संदर्भ - संकेतः

1.पीड़ा देकर आतंक फैलाया।

2.संदवा संदान शब्द का कर्मवाच्य, जिसका अर्थ है काटना, विभाजित करना। वेसे आजकल वह 'बांधने' के अर्थ में प्रयुक्त होता हैं

3.खून का अर्थ वंश,कुल,जाति।

4.गांव का नाम।

5.अंग्रेजों के दलाल।

6.नाश।

**गायन संदर्भ :1857 ई. के लगभग अंग्रेजों का क्रान्तिकारियों को पीड़ा देना,गांव जलाना और लूटना आदि का लोक कवि की कलम से सजीव चित्र। 1857 ई. और उसके बाद गायी गयी फाग।**

(संदर्भ ग्रंथः सुराज- म.प्र. आदिवासी लोक कला परिषद भोपाल)

## 12. खूबई लरी मरदानी

**खूबई लरी मरदानी 1**
**अरे भाई झांसी वारी रानी।**
**सिगरे सिपइयन को पेरा जलेबी**
**अपन खाई गुरधानी 2।अरे।**

**बुरजन - बुरजन तोपैं लगे दड़**
**गोला चलाये आसमानी 3।अरे। 4**

**गीतार्थ :**

मर्दानी झांसी की रानी खूब लड़ीं। सभी सिपाहियों को पेड़ा जलेबी मिलीं पर स्वयं ने गुड़ धानी खायीं मर्दानी झांसी की रानी खूब लड़ीं बुरजों - बुरजों में तोपें लगवा दीं और आसमानी गोला चले।झांसी की रानी मद्‌रनी थीं, खूब लड़ी।

**संदर्भ - संकेत**ः 1.पुरुषोचित साहस की मूर्ति, 2.गुड़ में पगे हुये भुने गेंहू या उनके लड्डू। 3.ऊंचाई तक । 4.गीत अपूर्ण लगता है।

**गायन - संदर्भः**

झांसी की रानी के युद्व के उपरांत सर्वाधिक लोकप्रिय लोक गीत की रचना। गायन कालः 1857 ई. के बाद से अब तक लोक मुख में जीवित।

(संदर्भ ग्रंथः सुराज म.प्र. आदिवासी लोक कला परिषद भोपाल)

## 13. कट गयी झांसी वारी रानी

**कट गयी1 झांसी वारी रानी।**
**झांसी वारी रानी, कट गई झांसी वारी रानी लाल।**
**चौतरफा से आफत आ गई, झांसी भई बिरानी।**
**घर - घर बिड़न लगे अंगरेजा2, लूटत हैं रजधानी।**
**काटत हाथ - पांव रजपूतन,सुनत न कोऊ बानी।**
**बहुएँ - बिटियाँ3 पकर लेत हैं,करत रात4 मनमानी।**
**'खान फकीरे' ऊधम मच रओ, सबरी बात5 नसानी।।**

**गीतार्थ -**

झांसी की रानी रनखेत में जूझ गयी।चारों तरफ से आफत आ गयीं झांसी दूसरे की हो गयी। अंग्रेज घर - घर घुसकर लूटने लगे, राजधानी लुट गयी।राजपूतों या वीरों के हाथ - पैर कटते रहे,पर किसी ने नहीं सुनी। बहू - बेटी को पकड़कर मनमानी करने लगे।फकीरे खाँ कहते हें कि सब जगह उत्पात हो रहा है और सारी बात बिगड़ गयी है।

**संदर्भ संकेतः**

बुंदेली का एक मुहावरा, बलिदान हो गयी, जूझ गयी। 2. दूसरा पाठ - अंगरेजवा। दोनों प्रचलित। 3. दूसरा पाठ बेटी। बहुएँ के साथ बिटियाँ उचित लगता है।4. दूसरा पाठ - रहत। नीचे की पंक्ति में 'बात' के वज्न से ' रात ' का जोड़ उचित है। 5. बात का लाक्षणिक अर्थ है स्वतंत्रता की योजना। बात बिगड़ना एक मुहावरा है जिसका अर्थ है काम बिगड़ना या असफल होना।

**गायन संदर्भ :**

झांसी की रानी के बलिदान के बाद झांसी और खासतौर से बुंदेलखंड़ की दुर्गति का सजीव चित्र। 1857 ई. के बाद से अब तक लोकप्रिय।

(संदर्भ ग्रंथः'सुराज' म.प्र. आदिवासी लोक कला परिषद)।

## 14. उरझा सैन फिरंगी लूटैं

घिर गये बानपुर वारे1 हैं।
चौतरफा से घेरा पर गये गँसे2 गांव के द्‌वारे हैं।
उरझा सैन फिरंगी लूटैं, जारे पुर घर सारे हैं।ं
गौंएँ मार ड़ार दई दैरन3, छेंके जन अति वारे हैं।
'दादूराम ' टेर कें कैरये छाँड़ लो4 घर द्‌वारे हैं।।5

**गीतार्थ :**

कानपुर वाले घिर गये हैं। चारों तरफ से घेरा पड़ गया है और गांव का हर द्‌वार गँसा हुआ है। सेना को उलझा कर फिरंगी लूटमार कर हैं। घर, पुरा, नगर सब जला दिये गए हैं। गायें मार कर द्‌वार पर ड़ाल दी हैं और छोटे - छोटे बाल बच्चों को रोक लिया है। दादूराम सभी से कह रहे हैं कि घर द्‌वार छोड़कर चलो।

**संदर्भ संकेतः**

1 बानपुर नरेश मर्दन सिंह, जो 1857 ई. के स्वतंत्रता - संग्राम में अंग्रेजों के विरुद्‌व लड़ते रहे। 2. हर द्‌वार पर सैनिक खड़ा कर देना ही गाँसना है। 3. गाय मारकर ड़ाल देना पुरानी सजिश थी, जो अंग्रेजों ने अपायी थी। 4.घर द्‌वार की ममता छोड़ क्रान्ति के लिये तैयार हो जाओ। 5. सन् 1857 ई. का लोक कवि ऐसा ही मुखर था।किन्तु अंतिम पंक्ति में वह संकेतात्मक शैली में ही अपना संदेश देता है।

**गायन संदर्भः**

बानपुर के राजा मर्दन सिंह जब जंगल में रहकर युद्‌व की तैयारी कर रहे थे, तब हूरोज का बानपुर पर आक्रमण और लूटपाट तथा लोककवि का यथार्थ्र चित्रण। 10 मार्च,1958 को अंग्रेजों का अधिकार और उसी समय से गीत का गायन।

(संदर्भ ग्रंथः सुराज मप्र. आदिवासी लोक कला परिषद)

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

## 15. फिरंगी झांसी भरोसे ना रहियो

लोहागढ़1 कठिन मवास,
फिरंगी झांसी भरोसैं ना रहियो।
जहँ तोप चलें, गोला चलैं, भालन की है मार,
जहँ सीस हथेली लै चलैं,यमराजा के सिरदार,
फिरंगी झांसी भरोसे ना रहियो।
लोहागढ़, कठिन मवास।।1।।
का कइये बानपुर2 बारे की,
मर्दन नृपत जुझारे की।
सेना सजन, बजन रमतूला, चोटें समर नगारे की,
अंगरेजन के गरै उतर गई3, पैनी धार दुधार4 की,

काकइये बानपूर वारे की।मर्दन सिंह।।2।।

0ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :**

लोहागढ़ कठिन किला है, अंग्रेजों , झांसी के धोखे में मत रहना। जहां तोपें चलती हें,गोला चलते हैं, भालों की मार होती है, जहाँ यमराज के सिरदार योद्‌वा अपने सिर हथेली पर लेकर चलते हैं।,वह लोहागढ़ कठिन किला है, अंग्रेजों झांसी के धोखे में मत रहना।1।

बानपुर वाले योद्‌वा राजा मर्दन सिंह की क्या कहें। सेना का सजना,रमतूला का बजना और युद्‌व के नगाड़े पर चोट पड़ा, साथ ही दुधारा की पैनी धार अंग्रेजों के गले उतर जाना,सब कुछ का क्या कहें! बानपुर वाले मर्दन सिंह की क्या कहें।2।

**संदर्भ संकेतः**

1. समथर जिला झांसी से कुछ दूर पर लुहारी का लोहागढ़ किला, जिसमें समथर नरेश हिन्दूपति का सामंत रहता था। 2. टीकमगढ़ म.प्र. के 9 किलो मीटर पश्चिम में स्थित नग। 3. एक मुहवरा जिसके दो अर्थ हैं - 1. समझ में आना। 2. कत्ल करना। 4. एक तलवार, जिसके दोनों तरफ धार होती है।

**गायन संदर्भः**

1857 ई. के स्वतंत्रता - संग्राम में गायी गयी लेद और फाग की बिखरी पंक्तियां।

(संदर्भ ग्रंथः सुराज मप्र. आदिवासी लोक कला परिषद)

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

## 16. फिरत करम के मारे तुम कां

फिरत करम के मारे तुम कां
जाओ फिरंगी जाओ रे।
जा माटी नई मिलै करो तुम,
कोटिन भांति उपाय रे
तुम इतनी आसान न समझो
ई माटी को खेलवो।
ई माटी में परजे तुमको,
उलटे पापर बेलवो।
वीर बुन्देलन की जा माटी,
जा माटी कछु और है।
सांची सुन लो चबै न तुमसे,
ई माटी को कौर हैं
कऊ चनन के धोके में
ककरा नई चबाव रे......
हरबोलन की है जा माटी
जा माटी हरदौल की
जा माटी आल्हा ऊदल की
रकत रकत के हौल की

छत्रसाल अरु चम्पत
परमार वर के भरे हुजूम
विन्धवासनी खप्परवारी
रखवारी ई भूमि की
अपनी मांद परे सिंहन को,
कौल हमें सन सत्तावन को
है नंगी तलवार कौ,
बैन नर्मदा और बेतवा
मैया चम्बल धार कौ
चाय अब जीतै या हारै
आय दूसरो सन सत्तावन
हम पैलऊँ आजाद हैं
मरबे बारन की समाधी पै
मेला भरै चढ़ाव रे
जा माटी नई मिलै..................

**गीतार्थ**ः अरे फिरंगियो तुम क्यों हमारे देश में आ गये। तुम यह जान लो कि यह देश तुम्हें कभी नहीं मिल सकेगा। तुम कितने ही उपाय कर लो लेकिन तुम्हें सफलता नहीं मिलेगी। हमारी मातृभूमि को तुम आसानी से हड़प करना चाहते हो? अरे तुम यह नहीं जानते कि चनों की जगह तुम कंकड़ चबा रहे हो। तुमको ही उलटे पापड़ बेलने पड़ेंगे।हमारी बुन्देली भूमि जहां हरबोले,छत्रसाल,आल्हा -ऊदल जैसे वीरों की भूमि है।यहां पर विंधवासिनी देवी का निवास है। वे अपने हाथ में खड़ग - खप्पर लिये इस भूमि की रक्षा करती हें।फिर तुम्हारे इरादे कैसे पूरे होंगे? तुमने सोते हुये सिंह जगाये हें।सिंह की माद में जाने का परिणाम तुमको भोगना पड़ेगा। यहां नर्मदा, वेतवा, चम्बल का पानी और वीर प्रसावनी धरा तुम्हारे इरादों को खाक कर देगी।

संकलन - धमेंन्द्र पारे अनुवाद - डॉ. विजय चौरसिया

## 17. ऐंसी हती बुन्देली नारें,तरवारन सी धारें

ऐंसी हती बुन्देली नारें,तरवारन सी धारें
हतीं सिरे की लक्ष्मीबाई,जो की सकत बिसारें।
झांसी ऊंची करी उनई ने,पैलऊ पैल हमारें
कंय 'प्रकाश' गोरा दुबकतते, सुन उनकी ललकारें।।

0ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थः-**

हमारे बुंदेलखंड की नारियां बड़ी तेज तर्रार थीं,वे तलवार की धार के जैसा स्वभाव रखती थीं।उनमें सर्वप्रथम झांसी वाली रानी लक्ष्मी बाई उनके लिये आर्दश बन गई। जिन्हें हमारा देश भूल नहीं सकता। सबसे पहले देश में उन्होंने ही स्वतंत्रता के लिये अलख जगाया था। लक्ष्मीबाई का नाम सुनकर गोरे ड़र जाते थे। उनकी ललकार सुनते ही वे छिप जाते थे।रानी का सामना करने की गोरों में कूबत नहीं थी।

बुंदेलखंड़ की नारियो की वीरता के लिये लिखी गई उक्त चौकड़ियां आजादी का अलख जगाने के लिये बड़ी कारगर हैं।

संकलन - धर्मेन्द्र पारे अनुवाद - ड़ॉ. विजय चौरसिया

## 18. दोउ हातन लयें तरवारें , बाई साब सहारें

दोउ हातन लयें तरवारें , बाई साब सहारें
मोंड़ा बांदो पिठइयन ऊपर,ऊखों सोई संभारें।
रासें दयें घोड़ा की मोंसें,गोरे शीश उतारें
भई प्रकाश कें गंजी, कैसी गजब गुजारें।।

0ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थः-

लक्ष्मी बाई जब युद्व में जाती हैं तो उनके दोनों हाथों में तलवारें थीं।उनकी पीठ पर दामोदर राव बंधे थे। घोड़े की रास को अपने मुंह में दबाकर दोनों हाथों से तलवार के वार करके गोरों को मारती काटती जाती थीं।प्रकाश कहते हैं उनका युद्व लोगों को आश्चर्य में ड़ालने वाला होता था।

संकलन - धर्मेन्द्र पारे अनुवाद - ड़ॉ. विजय चौरसिया

## 19. झांसी कोंकर ऐन जुहारें

झांसी कोंकर ऐन जुहारें, रानी कड़ी सकारें
तन को छुअनन - दव पोरासें, रए गोरा सिरमारें
लसकर - पोंची नरवा लांहो, कैयऊं लगी किनारें
चारे की प्रकाश कें गंजी,जर गई जग उजयारें।।

0ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थः-

युद्व पर जाने से पूर्व रानी ने झांसी को प्रणाम किया,मातृभूमि को शीश नबाकर भोर में ही निकल पड़ीं। अंग्रेज उनके शरीर को नहीं छू सके।लड़ते -लड़ते वे नाले के पास पहुंच जाती हैं।उनका घोड़ा घायल हो गया था।लेकिन वे लड़ती रहीं आ।ैर अंत में रानी चिता में प्रेश करके अपने आपको जला देती हैं।लेकिन उनके जीते जी गोरों ने उनके शरीर को हाथ नहीं लगाया।

संकलन - धर्मेन्द्र पारे अनुवाद - ड़ॉ. विजय चौरसिया

## 20. बोलतई धरती को पानी

बोलतई धरती कों पानी,जो तो जग नें मानी
पूरी सब हो जा तइमन की,जीनें कैसी ठानी।
गोरन कौ मों कारों करकें, जीते हिन्दुस्तानी
कयें प्रकाश झांसी की रानी बन गई ती मरदानी।।

0ध्ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थ :-

इस वीर भूमि का पानी असर दिखा रहा था। हमारे रणबांकुरे दुश्मन से लोहा लेते रहे। देश

की आजादी के लिये अनेक सपूत शहीद हुये। गोरों का मुंह काला हुआ।हिन्दुस्तान आजाद हुआ। प्रकाश कवि कहते हैं कि आजादी के लिये झांसी की रानी मरदानी बन गई थीं।

संकलन - धमेंन्द्र पारे अनुवाद - ड़ॉ. विजय चौरसिया

## 21. मोपै अब नई चले दबारो

मोपै अब नई चले दबारो,मोंतो बदलो कारो
जो झांसी तो मोरी होगी, जोतो मनें विचारो।
सोई बरिता ना ललकारो,नइतो निठुअई हारो
कयें प्रकाश लड़नें तो लड़लो,हो जैहे निबटारो।।

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थ :- रानी कहती हैं कि अरे दूसरे देश से आने वालो अब तो अपना इरादा बदलो, हमारे सामने तुम्हारी मनमानी नहीं चलेगी

संकलन- गुप्तेश्वर द्वारका गुप्त अनुवाद - ड़ॉ. विजय चौरसिया

## 22. तुम रन भूमि में जैयो मोरे वीर

तुम रन भूमि में जैयो मोरे वीर
बैरियों की छातीयों गड़ैयो तुम तीर।
जो मोरी कोख सै जनम लियो है
जो तुम दूध हमाओ पियो है
ऑंई दूध को मोल लाड़ले
पीठ न बैरी खौं दिखैयो मोरे वीर........
वा कश्मीर नगरिया तुमारी
मैं महतारी सो वा महतारी
दुशमन ओड़ै पै दांत गड़ाये
ओकी लाज बचैयो मोरे वीर.......
दादा परदादा तोरे गये ते
बाप शहीद होत कें गये ते
लरका होय तो रन पौचैयो
सो कुल परिपाटी निभैयो मोरे वीर.....
खून सनी तोरे देश की माटी
आज भी रे गई गिलगिट घाटी
वीर सुभाष से सैनिक बनाके
देश को मान बढ़ैयो मोरे वीर
विश्व देश को मान बढ़ैयो
सत्य अहिंसा को पाठ पढ़ैयो
जो कोऊ तुमखौं आंख दिखाये

ओई को मान घटैयो मोरे वीर
तुम रन भूमि में जैयो मोरे वीर।।
0ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थ :-

मेरे भाई तुम युद्व करने रण -भूमि में जाओ।दुश्मनों की छाती को अपने तीरों से छलनी कर दो। तुमने यदि मेरी कोख से जन्म लिया है तो मेरे दूध का मूल्य चुका दो। तुम दुश्मन को कभी भी अपनी पीठ न दिखाना। काश्मीर प्रदेश तुम्हारा है।वह भारत देश का ही अंग है। जिस प्रकार मैं तुम्हारी मॉ हूं, इसी प्रकार वह भी तुम्हारी मॉ है। दुश्मन काश्मीर पर नजर गड़ाये हैं तुम काश्मीर की रक्षा करना। तुम्हारे दादा - परदादा और पिताजी देश की रक्षा के लिये शहीद हो गये हैं। तुम नवयुवक हो तुम युद्व के मैदान में पहुंचो और अपने कुल की परंपरा बनाये रखना। तुम वीर सुभाष के समान अपने देश का मान बढ़ाना। तुम सपूर्ण विश्व में भारत का मान बढ़ाना। आने वाली पीढ़ी को तुम सत्य - अहिंसा का पाठ पढ़ाना। जो भी तुमको आंख दिखाये उसका सिर नीचा कर देना। तुम रणभूमि में जाकर देश की रक्षा करना मेरे भाई।

संकलन- गुप्तेश्वर द्वारका गुप्त अनुवाद - ड़ॉ. विजय चौरसिया

## 23. सत्य अहिंसा कौ पढ़ो,मोहन मोहन मंत्र

सत्य अहिंसा कौ पढ़ो,मोहन मोहन मंत्र
बिना रार हथियार हम ,हो गये आज स्वतंत्र
एक लंगोटी वारे बाबा,को फुरगो जो मंत्र
आज दिन हो गओ स्वतंत्र.........
जिनके राजन सूरज डूबे,झूठे तिनके मनसूबे
बिन तकरार बिन हथयार न ,भयो रार का अंत....
जनम जनम के बंधे बंधाये,सुअना आज पंख फैलाये
सांप मरो लाठी न टूटी,कीनो ऐसो तंत्र आज दिन
अपना ओढ़ना, अपना बिछोना,अपनी नींद में जगना सोना
अपनी रात जुन्हइया अपनी,अपनी सदा बसंत....
अजादी की खुशी मानना ,लेकिन कीमत भूल न जाना
लाखन लाल गये बदले में,गओ हीरा सो संत......
ओढ़ चदरिया आजादी की,याद भुलाना मत गांधी ही
बूंद - बूंद का माल चुकाना,तुमको अभी अनंत......
लाज देश के हाथ तुम्हारे,सावधान रहना है प्यारे
अब भी तुम पर रचे जा रहे,नये - नये षड़यंत्र
सत्य शांति का शंख बजा दो ,जग को निज हुंकार सुना दो
रह न सकेगे आजादी के ,परवाने परतंत्र
आज हो गयो देश स्वतंत्र।।
0ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थः-

महात्मा गांधी का सत्य अहिंसा का मंत्र देश के लिये ऐसा फलित हुआ कि आज हम आजाद हो गये ,उनकी लड़ाई बिना हथियार की थी।वे अपने शरीर में लंगोटी लगाते थे। सात समुंदर पार से आये अंग्रेज जिनके राज में कभी सूर्य अस्त नहीं होता था। उनके इरादे चकनाचूर हो गये। गांधी जी के इस अहिंसा रुपी हथियार से सांप भी मर गया और लाठी भी नहीं टूटीअर्थात हमें आजादी मिल गई।हम स्वतंत्र हो गये। अब हम आजादी का जश्न मनायेंहॉ लेकिनआजाद होकर हम उन शहीदों तथा उन गांधी बाबा को नभूले। अब तुम्हारे हाथ में देश की बागड़ोर है।उसे सावधानी से रखना। हमारे देश की आजादी मिली तो यह साबित हो गया कि आजादी का स्वप्न देखने वाले कभी परतंत्र नहीं रह सकते।

संकलन- गुप्तेश्वर द्वारका गुप्त अनुवाद - डॉ. विजय चौरसिया

## 24. बुन्देले हरबोले बोलो,कां गई झांसी रानी हो

भईया हो भईया हो ,मोरे भारत के रखवइया हो
कोऊ तो अब पता बता दो,कां गई सोन चिरैया हो
बुन्देले हरबोले बोलो,कां गई झांसी रानी हो
भमल गये का मस्ती में तुम, पानीपत को पानी हो.......
राधा ओर सीता की धरती,घूंघट ड़ारे बैठीती
भइया तोरी राखी के बल, दुशासन से ऐंठीती
लुटी लाज चिल्लाती रैगई,अपनी धरती मइया हो
कोऊ तौ अब पतो बता दो,कां गई सोन चिरइया हो।।
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थः-

अरे भाईयो तुम तो भारत के रक्षक हो हमें तनिक यह तो बता दो कि हमारा भारत जिसे सोने की चिड़िया कहा जाता था। वह चिड़या अब कहां है। हमें उसका पता ठिकाना तो बता दो। अरे हरबोलो तुम ही बता दो कि झांसी की रानी कहां है? तुम आजादी मिलने के बाद सबको भूल गये? तुम तो पानीपत का पानी हो। तुम्हारी ही धरती पर सीता - राधा , द्रोपदी जैसी हस्तियां जन्मीं थी। तुमने सबको भुला दिया।

संकलन- गुप्तेश्वर द्वारका गुप्त अनुवाद - ड़ॉ. विजय चौरसिया

## 25. अंगरेजी परी गोरी गम खानें

अंगरेजी परी1 गोरी गम खानें2।
काँना बने चौकी काँना बने थाने,
काँना जो बन गये जे जेल खानें। अंगरेजी.।
अँगीत बनी चौकी पछीत बने थाने
दैरी पै बन गये जे जेलखाने।3
अंगरेजी परी गोरी गम खानें।।

गीतार्थः

अंग्रेजी (सेना या राज्य) यहां है, गोरी, धीरज खोना होगा। कहां चौकी बनी है,कहां थाने बने

हैं और कहाँ जेलखाने बन गये हें? आगे चौकी बनी है, पीछे थाने बने हैं और देहरी पर जेलखाने बन गये हैं।

## संदर्भ संकेतः

1. लाक्षणिक अर्थ है - अंग्रेजी सेना पड़ी है अथवा अंग्रेजों की राज्य सीमा आ गयी है।

2. अंग्रेजों के आतंक से प्रजा भयभीत है,इसलिये एक गोरी अपनी सहेली से धैर्य रखने के लिये कहती है।

3. कहीं से कोई भी आजादी नहीं है। आगे - पीछे और द्वार पर सब जगह नियंत्रण। परतंत्रता में यह विशेष दासता होती है।

## गायन संदर्भ :

बुंदेलखंड़ की देशी रियासतों और अन्य प्रदेशों में अंग्रेजों की शासन व्यवस्था लागू होने पर लगभग 1857 ई. के बाद रचा गया और बहुत अधिक गाया जाने वाला लोक गीत।

संदर्भ ग्रंथः'(सुराज' म.प्र.आदिवासी लोक कला परिषद )

## 26.सात समुंदर दूर से आकें हम पै डॉको डारो जू

सात समुंदर दूर सें आकें ,हम पै डॉको डारो जू ,
कै हॉ - हॉ जू , कै हूॅ - हूॅ जू ।।
सात समुंदर दूर सें आकें ...........
हमें बना दओं गली को कंगला,
गोरन माल डकारो जू ,
कै हॉ - हॉ जू , कै हूॅ - हूॅ जू ।।
सात समुंदर दूर सें आकें ...............
रकत चूस रओ खटमल भईया,
इनखों तुरतई मारो जू ,
कै हॉ - हॉ जू , कै हूॅ - हूॅ जू ।।
सात समुंदर दूर सें आकें.................
गान्धी जू ने खादी चला दई ,
बिदेसी खों बाहर निकारो जू ,
कै हॉ-हॉ जू, कै हूॅ - हूॅ जू ।।
सात समुंदर दूर सें आकें .........
गान्धी लड़ रये आजादी खों,
उनखों देव सहारो जू ,
कै हॉ - हॉ जू , कै हूॅ - हूॅ जू ।।

## गीतार्थः

अग्रेजों ने दूर से आकर इस देश पर डाका ड़ाला है। हमको कंगाल बनाकर सारा माल हजम कर लिया है। इन रक्त चूसने वाले खटमलों को नष्ट करने के लिये साहस करो। गांधी जी ने खादी चलवाकर विदेशियों का वहिष्कार किया था। वे आजादी के लिये लड़ रहे हैं उनको संबल देना जरुरी है।

यह स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व का एक कोरस लोक गीत है। इसमें मुख्य स्वर के साथ बीच

- बीच में कोरस स्वर भी है। यह गीत लोक धून पर आधारित है। कै हॉ - हॉ जू , कै हूॅ - हूॅ जू । स्वीकृति के पुराने संबोधन हैं।यह गीत प्रायः बुंदेलखंड़ क्षेत्र में स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व सांस्कृतिक कार्यक्रमों में गाया जाता था। यह लोकगीत परंपरागत लोकगीत है,इसलिये इसके मूल रचयिता का नाम भिज्ञ नहीं हैं। यह गीत लोक प्रचलित होने के कारण जनमानस को स्वतंत्रता हेतु प्रेरित करता है।

संकलन एवं अनुवाद : श्रीमति मालती घोष , घोषयाना छतरपुर से प्राप्त।

## 27.गान्धी की लंगोटी की धुजा है स्वराज की

सिधि सम्पदा सम्हारन सुखमा समाज की।
डबि डाज रही राखन है कृषक लाज की।
आरत से देस भारत के करन काज की ।
गान्धी की लंगोटी की धुजा है स्वराज की।।1।।
खादी की बनी गौरव भारत के ताज की
लख- लख की भीति मन में अराजकी।
चकचूरती कठिन बैरी बाज की
गान्धी की लंगोटी की धुजा है स्वराज की ।।2।।
भारत के हरन क्लेस भरन विभव भ्राज की।
तन नग्न के सु ढकिबे की सरन साज की।
सुरसरि सी सन्त जग में छबि छटा छाज की।
गान्धी की लंगोटी की धुजा है स्वराज की।।3।।
दुख भरन कृषकन के घर आनाज की।
काटन गुलामी पाटन मुनि पंचराज की।
प्रतिमा है नरोत्तम जू तप और त्याग की।
गान्धी की लंगोटी की धुजा है स्वराज की ।।4।।
0ध्ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थ :

महात्मा गांधी की खादी की लंगोटी ऐसी प्रतीत होती है , जैसे स्वराज की पताका हो ,वह समाज को सिद्वि और सम्पत्ति देने वाली ,कृषकों की लाज बचाने वाली और देश की गौरव है। अराजकों के लिये भय , दुश्मनों की गति के लिये विनाशक और भारत के क्लेशों के लिये नाशक है। गंगा की तरह पवित्र और गुलामी के फंदों को काटने वाली और त्याग की साकार प्रतिमा है।
संदर्भ : गांधी जी की खादी और गुणों की प्रशस्ति में गाया गया "सैरा" लोक गीत।

संकलन कर्ता एवं अनुवादः गोकुल नगरिया मऊरानीपुर से प्राप्त
संकलन - गुप्तेश्वर द्वारका गुप्त अनुवाद - ड़ॉ. विजय चौरसिया

## 28. देखो टूटै न चरखा को तार

देखो टूटै न चरखा को तार, चरखवा चालू रहै।।टेक।।
गांधी महात्मा दूल्हा बने हैं,दुल्हिन बनी सरकार।
चरखवा चालू रहै......................
सबरे वालेंटियार1 बने बराती, नउआ बनो थानेदार।

चरखवा चालू रहै......................

सब पटवारी गारी गावैं,पुड़ी बेलैं तहसीलदार।

चरखवा चालू रहै......................

गांधी महात्मा नेंग में मचले,दायजे में मोगें सुराज।

चरखवा चालू रहै...................

ठॉड़ी गर्वनमेंट2 बिनती सुनावै,जीजा गौने में दैबी सुराज.।।3

चरखवा चालू रहै.................................

0ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :**

देखो चरखा का तार न टूटे चालू रहे। गांधी महात्मा दूल्हा बने हैं और सरकार दुल्हिन। सभी वालेंटियर बाराती बने हैं और थानेदार नाई। सभी पटवारी गारियाँ गाते हैं और तहसीलदार पुड़ी बेलते हैं। महात्मा गांधी नेंग में रुठे हैं और दायजे में स्वराज मांगते हैं।गवर्नमेंट खड़ी - खड़ी विनती करती है - 'जीजा , गौने में स्वराज दूंगी।'

**संदर्भ संकेतः**

1. स्वयंसेवक, लेकिन उस समय वालेंटियर शब्द बहुत प्रचलित था। छात्र - जीवन की मुझे स्मृति है कि ' वालेन्टियर बनने के लिये लोगों में होड़ लगी रहती थी, अतएव अनुवाद में भी वही शब्द प्रयुक्त किया गया है।

2. पंक्ति में गवर्नमेंट का मानवीकरण है, इसलिये अनुवाद में वही रखा गया हैं

3. यह गीत जैसा प्राप्त हुआ है, वैसा ही दिया गया है।सम्भव है कि कुछ पंक्तियां बीच में छूट गई हों।

**गायन संदर्भ :**

1920 के स्वदेशी आंदोलन और उसके बाद 1947 ई. तक बहुत अधिक प्रचलितं

(संदर्भ ग्रंथःसुराज म.प्र. आदिवासी लोक कला परिषद)

## 29. भैया अब सुराज के लानें तन मन सें लग जानें

भैया अब सुराज के लानें तन मन से लग जानें।

करौ फैसला घर अपने में, ना जैयो कोई थानें।

बिस्कुट और बरंड़ी1 छोड़ो,समां लठारा2 खानें।

द्विज खुमान अब परधीनता सें नातो ना रानें।।1।।

सब कोई गाढ़ा पैरो भाई,तासों होय भलाईं

घर - घर राँटा चरखा धर लेव बनवा लेव नटाई3।

छोड़ देव इजलास तसीली उर दीमानी भाई।

सौकत अली औ गांधी नें, सब खाँ दओ जगाईं

द्विज खुमान अब अपनी ऊअत4 किस्मत देत दिखाई।।2।।

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थः**

भाई अब स्वराज के लिये तन - मन से लगना हैं हम अपना फैसला अपने घर में करें, कोई थाने न जाए। बिस्कुट और ब्रंड़ी छोड़कर हमें समा-लठारा खाना है। द्विज खुमान कहते हैं कि हम हमें गुलामी से कोई नाता नहीं रखना।।1।।

सभी खद्दर पहनें जिससे कल्याण होता है। हर घर में रहँटा - चरखा और नटाई हो । सब तहसील,कचहरी और दीवानी में जाना छोड़ें।शौकत अली और गांधी जी ने सबको जगा दिया हैं द्विज खुमान कहते हैं कि ऐसा लगता है,जैसे अपनी किस्मत जाग रही हो।।2।।

### संदर्भ संकेतः

1. बिस्कुट और ब्रांड़ी दोनों विदेशी वस्तुओं के प्रतीक हैं।
2. दोनों देशी चांवल यानी कि देशी वस्तुओं के प्रयोग का अर्थ देते हैं।
3. अटेरन, सूत की आंटी बनाने का यंत्र।
4. उदय होती हुई। मुहावरा - भाग्योदय होना।

### गायन संदर्भः

स्वदेशी आंदोलन(1920ई.) के बाद की रचनाऐं।1920ई. से 1947 ई.तक अधिक गायी गयीं। चौकड़िया फाग।

संदर्भ ग्रंथः सुराज म.प्र. आदिवासी लोक कला अकादमी।

स्वाधीनता के पूर्व महायुद्व के दिनों में अ्ंग्रेजों की अर्थव्यवस्था डगमग होने लगी। तब उन्होंने एक चाल चली और वह यह थी कि उन्होंने धड़ाधड़ नोट छापना शुरु किये और देश में उन्होंने दिल खोलकर इन नोटों को चलाया। उसके परिणाम स्वरुप मंहगाई बढ़ गई और इधर नोटों की अधिकता के कारण नोटों का मूल्य भी गिर गया। जितने मूल्य के नोट छापे गये नियमानुसार उतने मूल्य का सोना केंन्द्रीय राजकोष में होना चाहिये। तभी उस कागज के टुकड़े का मूल्य होता है तथा उसकी बाजार में साख होती है। परंतु अ्रगेजी सरकार ने इसकी कोई चिन्ता नहीं की और रखे हुये सोने से अपने युद्व का कार्य चलाया उसके बाद जो स्थिति उत्पन्न हुयी उसका परिणाम देश ने अब तक भोगा। भाग्य से अपना देश स्वतंत्र हुआ और हमारी राष्टीय सरकार ने उस स्थिति का द्दढ़ता से सामना किया और एक हद तक उसमें उन्हें सफलता मिली।

उस समय की स्थिति का चित्रण करना हमारा लोक कवि नहीं भूला उस समय के लोक कवियों ने उस समय अनेकों रचनायें रची उन्हीं में से एक रचना इस प्रकार है। जिससे लोगों में सामाजिक चेतना जागी।

## 30. कागज को जबसे चलो प्यारे भाई नोट

दोहा -कागज को जबसे चलो प्यारे भाई नोट।
सूती कपड़ा अदर गऔ कश्मीरा पै चोट
टेक -जबसे आन परी तेजाई,महिमा की न जाई
छन्द - खद्दर मारकीन दई फैंक,लैबे इकलाई उर चैक,
करते काम जरा नई नेक,नए भये गुण्ड़ा।
देसू गई पनइयां छूट,पहरन लगे चप्पल बूट,
घर को सब खो बैठे ठूंठ, पहिरे मुण्ड़ा।
उड़ान - सो दई सब पूजी गंवाई।
टेक - घर की जनी झोंक नई ड़ारें ,चक्की करत पिसाई।
छन्द - देखो तेजाई की बात,पेंचन बटी सिमइयां जात,
धरती नहीं पटा पै हाथ, घर की नारी ।
कर दई तेजाई नैं खेंच,घर घर धरें कुटी के पेंच,

देसू धरी गड़ासी ऐंच,दुनिया सारी।
उड़ान - ऐसी तेजी आई।
टेक - एक मील पैदल न निंगत,मोटर टिकट कटाई।
छन्द - जाते एक मील न निगके,पैसा पैला देते गिनके।
लेटैं रात पलंग पै दिनकें,आजाद भये।
पैसा जीनों हो जांय, चार कटवावें अंग्रेजी बार,
लेवैं तेल सुगंधी डार, का समय भये
उड़ान - को कानों कहें सुनाई।
टेक - गोटी राम बनाकें दे गये , रामकिसुन दरसाई।
छन्द - बीड़ी बिण्ड़ल केर रिवाज, गुण्ड़ा करते फिरत मिजाज,
तिरिंया पहिरन लगीं जहाज, फेंक दये छल्ला।
कहते रामकिसुन हैं खास, जिनका ग्रात घमूरी वास,
लगता कोंच परगना पास,जालौन जिला।
0ध्ध्ध्0

गीतार्थ :

मेरे प्यारे भाई जबसे कागज के नोट चले और उसकी अधीकता हुयी। तबसे लोगों ने सूती कपड़ा का आदर करना छोड़ दिया। जबसे मंहगाई आई उसकी महिमा का बखान करते नहीं बनता। लोगों ने खद्दर और मारकीन फेंक दी। उसके बदले में इकलाई और चैक का कपड़ा पहनने लगे। लोगों ने काम करना छोड़ दिया और छैला बनकर घूमने लगे।देशी जूता पहनना छोड़ दिया उसकी जगह चप्पल और बूट ने ले ली। लोगों ने अपनी पूंजी गंवा दी। घर की औरतों ने चक्की में पिसाई करना बंद कर दिया । इस मंहगाई की बात तो देखो। अब तो सिमैया मशीन से निकलने लगीं। घर की औरतें पटा पर हाथ नहीं रखतीं और न ही पटा पर सिमैंया बेलती। पहले आदमी कहीं भी पैदल चला जाता था। अब उसे एक मील भी जाना है । तो बस ,मोटर की टिकट कटाता है। लोग दिन में पलंग पर लेटकर आराम करने लगे। लोग बीड़ी का बंड़ल हाथ में रखकर छैला बनकर घूमने लगे।

यह फाग रामकिसुन ग्राम घमूरी,परगना कोंच, जिला जालौन ने स्वाधीनता के पश्चात् लिखी थी।

देश के स्वतंत्र होने के बाद लोगों में सामाजिक चेतना जागी जिससे उनकी दिनचर्या बदल गई। इस लोक गीत में उस समय जो सामाजिक चेतना आई उसके दर्शन होते हैं।

साभार - फाग रणजीत रसायन

संकलन गुप्तेश्वर द्वारका गुप्त अनुवाद ; डॉ. विजय चौरसिया

## 31. सैंया होकें भारतवासी काये हँसी करावत मोर

सैंया होकें भारतवासी काये हँसी करावत मोर ? (टेक)
खादी की धोती नई ल्याओ
'धूप -छांह'1 जबरन पहिराओ
तुम पै चलत न जोर ।सैंया.।

'खन'2 से मन हट गओ हमारो
से न चानें3 हमें तुमारो
छमा करौ जू खोर।सैंया.।
गाढ़ा4 की चाली बनवा देव
कुसमानी5 रंग में रंगवा देव
लगा हरीरी कोर ।सैंया.।
जो न स्वदेसी को अपनाओ
हमने जानी तो बस आओ-
अमन6 सभा को छोेर ।सैंया.।
पैंया परों देस रस पागो
बहुत सो चुके हौ उठ जागों
कहें खुमान7 भओ भोर ।सैंया.।

## गीतार्थ :

प्रिय, भारतवासी होकर मेरी हँस क्यों कराते हो?
खादी की धोती नहीं लाते और 'धूप - छांह' जबरन पहनाते हो,तुम पर हमारा वश नहीं है। खन से मेरा मन हट गया है ,मुझे नहीं चाहिये।मेरा दोष क्षमा करें। गाढ़ा की चोली बनवाकर उसे कुसुम रंग में रंगवा दो और हरी किनारी लगवा दो।
यदि आप स्वदेशी को नहीं अपनाते तो हम जान गये ,अमन सभा को छोड़कर तुरंत आ जाओ। मैं पैर पड़ती हूं देश प्रेम में पगो। बहुत सो चुके अब जागो। खुमान कहते हैं कि सुबह हो गयी है।

### संदर्भ संकेतः

1. एक कपड़ा।2. .एक कपड़ा। 3. चाहना।4. खद्दर।5.कुसुम पौधे के फूल का रंग , बुंदेली में ललछौंही रंग के लिये प्रयुक्त।6.शान्ति।7.लोक कवि।

### गायन संदर्भः

1920 के स्वदेशी आंदोलन में और उसके बाद भी गाया गया।

(संदर्भ ग्रंथःसुराज म. प्र. आदिवासी लोक कला परिषद)

0ददददध्ददददध्ददददध्0

## 32. बाजी भारत की रनभेरी

बाजी भारत की रनभेरी, सुन सन् ब्यालिस1 केरी।
क्रांतिदल की धूम मची ती , बलिया2 में जिन केरी।
इक तें इक हते भट बाँके, तरुनई रंग रँगे री।
दहल उठी अंग्रेजी3 'मथुरा' देख फौज इन केरी।।1।।
जब - जब एक रास मिल राजै4, दुस्मन होत पराजै।
रामचन्द नैं रावन मारो ,निसचर सहित समाजै।
कृसनचंद्र ने कंस पछारो,दुज - देवन के काजे।
गौरमेंट सें बिन असि5 'मथुरा' गांधी लेत सुराज।।2।।

0ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थ :

सन् ब्यालिस में भारत की रणभेरी बज उठी। बलिया में क्रान्तिदल की धूम मच गयी।वे सब एक से एक बहादुर थे। यौवन के रंग में रंगे हुये। उनकी फौज देख अंग्रेज सरकार थर्रा गयी। ।1।।

जब - जब सब मिल एक राशि में शोभित होते हैं,तब - तब शत्रु की पराजय होती है।रामचंद्र जी ने सभी राक्षसों के साथ रावण को मारा था। कृष्णचंद्र ने ब्राम्हण और देवों के लिये कंस को पछाड़ दिया था। मथुरा कवि कहते हैं कि गांधी जी अंग्रेजों से बिना शस्त्र के स्वराज ले रहा हैं।।2।।

संदर्भ संकेतः

1.1942 ई. का आंदोलन।2.उत्तर प्रदेश के बलिया नगर की उस ऐतिहासिक घटना की तरफ संकेत है, जो 1942 ई. में घ्टित हुई थी।3. लाक्षणिक अर्थ है अग्रेजी राज्य। 4.जिस व्यक्ति की ओर से विपत्तियां आई हैं,उसी के नाम राशि वाले व्यक्ति द्वारा वह पराजित हुआ।राम और रावण,कृष्ण और कंस तथा गौरमेंट और गांधी जी क्रमशः र , क , और ग अक्षर वाली नाम राशियां हैं। 5.शस्त्रहीन या अहिंसक क्रान्ति से लोक कवि भी परिचित था। कवि का पूरा नाम मथुरा प्रसाद वैघ है।

गायन संदर्भः

1942 ई. क1े बाद 1947 तक गायी जाने वाली दो फागें।

संदर्भ ग्रंथ - सुराज म.प्र. आदिवासी लोक कला परिषद

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

## 33. पनघट में ड़ोलैं फिरंगी

हरे - हरे खेत1 उजड़ गये सबरे,
लूटी रे सम्पत सारी बिदिसिया।
बै - बै बीज फूट के तैंनें,
कर दयो देस भिखारी बिदिसिया।।1।।
जल भरवे न जाव, जल भरवे न जाव,
पनघट में ड़ोलैं फिरंगी2।।2।।
बाजीगर सौ दिखाय,बाजीगर सौ दिखाय,3
बंदरा4 बिलायत वारो।।3।।
फूट बीजा बाये , फूट बीजा बये,
लूटो गुड़ानो5 फिरंगिया।।4।।
सिर पै बांधे कफन, सिर पै बांधे कफन,
सहीदन की पलटन निकर गयी।।5।।
चलाउत जाओ चरखा,कताउत जाओ सूत ।
गोरा खदेरन कों बनिया को पूत6।।6।।

0ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थः

सब हरे भरे खेत उजड़ गए, विदेशियों ने सारी सम्पत्ति लूट ली
विदेशियों तुमने फूट के बीज बोकर सारे देश को भिखारी बना दिया है।1।
सखी, जल भरने न जाओ ,पनघट पर फिरंगी डोल रहा है।2।
बिलायत का बंदर बाजीगर सा दिखता है।3।
अंग्रेजों ने फूट के बीज बोकर गुड़ाने को लूट लिया है।4।
सिर पर कफन बांधकर शहीदों की सेना निकल गयी है।5।
चरखा चलाते जाओ,सूत कातते जाओः
गोरों को खदेड़ने के लिये बनिया का पूत है।6।

**संदर्भ संकेत :**

1. समृद्वि के प्रतीक। 2. अंग्रेजों का आतंक व्यक्त करना और उनके चरित्र पर चोट। 3. अंग्रेजों के वेश की विचित्रता। 4. अंग्रेजों की चालाकी का संकेत। 5. बुंदेलखंड़।6. महात्मा गांधी।

**गायन संदर्भ :**

दूसरे स्वतंत्रता - संग्ारम के दौरान गाये गये स्फुट लोक गीत।

संदर्भ ग्रंथ - सुराज म.प्र.आदिवासी लोक कला परिषद

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

## 34. भारतवासी सोय रये सब, सिगरी दुनिया जागै री

भारतवासी सोय रये सब , सिगरी दुनिया जागै री।
हिन्दू मुसलमान दोउ सो रए, गांधी गुनियॉ जागै री।।
माते और महाजन सो रए, खितहर रिनियॉ जागै री।
बूढ़े घर सो रए पै उनकी , नई दुलहनिया जागै री।।
घर के सो रए पै खटका में, घर कौ मुखिया जागै री।
कहै जसोदा सधवां सो रई , विधवा दुखिया जागै री।।

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ -**

भारतवासी सब सो रहे हैं और पूरी दुनिया जाग रही हैं हिन्दू - मुसलमान दोनों सो रहे हैं और गांधी जी गुनिया बनकर जाग रहे हैं।सेठ - साहूकार सब सो रहे हैं और खेती करने वाले मजदूर जाग रहे हैं।बूढ़े लोग घर में सो रहे हैं और उनकी नई नवेली दुल्हन जाग रही हैं घर के सभी लोग सो रहे हैं पर घर का मुखिया जाग रहा है।जसोदा जी कहती हैं सधवा स्त्री सो रही है और दुखहारी विधवा स्त्री जाग रही है।

संकलनकर्ता - डॉ. हरिमोहन पुरवार अनुवाद - डॉ. विजय चौरसिया

## 35 . चना जोर गरम बाबू

चना जोर गरम बाबू ,
मैं लाया मजेदार चना जोर गरम।
चना को गांधी जी ने खाया

जाके ड़ंड़ी नमक बनाया

सतयाग्रह संग्राम चलाया

चना जोर गरम

तुम भी चना चबेना खाओ

खाके गांधी जी बन जाओ

अंग्रेजों को मार भगाओ

चना जोर गरम

0ध्ध्ध्0

**गीतार्थ -**

**स्वतंत्रता के आंदोलन के समय गांधी जी का इतना प्रभाव था की चना बेचने वाला भी अपने चना में मसाला मिलाकर चने बेचते समय गाता था की चना जोर गरम बाबू मैं लाया मजेदार चना जोर गरम, मेरे चने को गांधी जी ने खाया और ड़ांड़ी यात्रा करके नमक बनाया,उन्होंने सत्याग्रह आंदोलन चलाया। इसलिये तुम भी मेरे चने को खाओ और गांधी जी के समान बन जाओ और अंग्रेजों को भारत से मार भगाओ। चना जोर गरम........**

संकलनकर्ता - डॉ. हरिमोहन पुरवार अनुवाद - डॉ. विजय चौरसिया

## 36. मन समझ करौ उपकार देस में

मन समझ करौ उपकार देस में,

दिया तौ जलाओ ऐजू खुसियन के

अरे हॉ हो देस में बाती करौ मेहनत बारी,

तुम डारौ लगन कौ तेल देस में

दिया तौ जलाओ एजू खुसियन के,

अरे हाॗ हो देस में करौ तरक्की हिलमिल कें

तुम पढ़ लिख बन हुसयार देस में

दिया तौ जलाओ एजू खुसियन के

अरे हॉ देस में बिरछ लगाओ खेती कर लो

उर कर छोटौ परिवार देस में

दिया तौ जलाओ एजू खुसियन के

अरे हॉ देस में बेकारी है चौतरफां

तुम खोलो नये रुजगार देस में

दिया तौ जलाओ एजू खुसियन के

अरे हॉ देस में फैली बेल दहेजों की

तुम जा सैं चलो उखार देस में

दिया तौ जलाओ एजू खुसियन के

**गीतार्थ -**

अरे मन ! तुम देश में उपकार करते हुये खुशियों के दीपक जलाओ और मेहनत की बाती बना और अपनी लगन का तेल ड़ालकर खुशियों के दीपक जलाओ। चारों ओर बेकारी है तुम नये - नये रोजगार खोलो और खुशियों के दीपक जलाओ। दहेज की बेल फैली है, उसे तुम उखाड़ते हुये चलो।अपने देश में खुशियों के दीपक जलाओ।

संकलनकर्ता एवं अनुवाद - गुप्तेश्वर द्वारका गुप्त

## 37. अंग्रेजन के गुलाम राजा

बुंदेलखंड़ की जनता रोबै, भये राजा अत्याचारी।
अंग्रेजन के गुलाम राजा , तिनके हम गुलाम भारी ।।टेक।।
सत्ताईस कर हमरे सिर पै,कैसें चुकत चुकाये सें।
है बेकारी कर्जा भारी , सूत पै सूत लगाये सें।
उर लागान चौगुनों हो गओ, आठ रुपैया बीघा कौ।
चुलयउन,गुलयउन,मड़वा, महुठौ और कठवा कौ। 1
झरी, ब्याई, जैजिया लागे, पैला पोली है नियारी। 2
अंग्रेजन के गुलाम राजा , तिनके हम गुलाम भारी।।1।।
लगत बिगार कृषक मजदूरन, चमर 3 गठरिया लागत हैं।
पुलिस सिपाही निसदिन आबै, दूध मलाई मांगत हैं।
कंड़ा और नकरिया मांगें,खाट औ जोरा लागत हैं।
खरी तेल तेलन से लेबैं,गारी चार सुनावत हैं।
छिरिया - बुकरा देंय गड़रिया, हँड़िया - गगरी, तिरकारी ।
अंग्रेजन के गुलाम राजा , तिनके हम गुलाम भारी ।।2।।
लगै पोतनी माटी कौ कर, खपरा,ईटन,पत्तन कौ।
नदिया की रेता कौ कर है,और पहारन पत्थर कौ।
गाड़ी - बैला कौ कर न्यारो,गधा - खच्चरा कौ लागै।
पान बरेजन कौ कर बाड़ौ, बरई लोग उठ - उठ भागै।
कीं से कहें सुनाबें की खाँ ब्याकुल हो गये नर - नारी।
अंग्रेजन के गुलाम राजा , तिनके हम गुलाम भारी।।3।।
चालीस सेर कौ सस्तौ गल्ला,जुंड़ी - जवा बिकत नैंया।
बीस सेर कोउ गोंउँ न लेबै,डेढ़ सेर कौ घी भैया।
कुदवा- समा - बसारा खइये,बेंचें माल बजारन में।
तऊ पै टैक्स चुकत कछु नईयाँ,लुक - छिप रइये हारन में।
जब मुंसी - मंसूर 4 पधारें,तब जूतन की भर मारी।
अंग्रेजन के गुलाम राजा , तिनके हम गुलाम भारी।।4।।
पैंतिस रियासत की जनता नैं जुरमिल एक विचार करो।
कै राजा जो टैक्स छुड़ाबैं,कै उन हातन मिटो - मरो।
सन् इकतिस चौदा जनवरि कों,चरन पादुका 5 पै आये।

पैंतिस राजा बुंदेलखंड़ के,ए,जी,जी, के ढ़िंग धाये।
भड़की जनता बस में करबे,करौ फौज की तैयारी ।
अंग्रेजन के गुलाम राजा , तिनके हम गुलाम भारी।।5।।
स्वतंत्रता के सब नेतन खाँ,जबरन डाकू ठैराओ।
भीलन की पलटन बुलवा कें,खेमा 6 ऊकौ लगवाओ।
गन - मसीन,बंदूक औ टोंटा 7 - लारी में भर मंगवाये।
एक दिना पैले सब नेता,पकर जेल में पठवाये।
जौ लख जनता उखड़ पड़ी सब, देख चकित भये अधिकारी।
अंग्रेजन के गुलाम राजा , तिनके हम गुलाम भारी ।।6।।
चलीं फिरंगी गन - मसीन तब,ढ़ोर हिरन पंक्षी मारे ।
भरी सभा में भई अनहोनी ,ढूंड़ - ढूंड़ नेता मारे।
बचे - खुचे कछु पकर - पकर कें,लारिन में दये बैठारे।
जनता चिपट गई लारिन सें,तिनें कुचर 8 भागीं कारें।
सो लै गये गौगांव छावनी 9, जेल भरी जनता सारी।
अंग्रेजन के गुलाम राजा , तिनके हम गुलाम भारी।।7।।
जीके घर के नेता मर गये,ऊंके घर फिर लुटवाये।
बैल - ढ़ोर लिलाम कराये,उर मकान फिर जरवाये।
बुंदेलखंड़ के गाँउन - गाँउन, फेर ढोंडेरो 10 पिटवाओ।
जो सुराज कौ नाम लेवगे,तो हम कीला ठुकवाओ।
गांवन - गांवन पी.ए. फिसर नें करो दमन भौतई भारी।
अंग्रेजन के गुलाम राजा , तिनके हम गुलाम भारी।।8।।

0ध्ध्ध्0

**गीतार्थः**

बुंदेलखंड़ की जनता रोती है कि राजा अत्याचारी हो गये। राजा अंग्रेजों के गुलाम हैं और राजाओं के ज्यादा गुलाम हम हैं।।टेक।।

हमारे सिर पर सत्ताईस कर हैं,जो चुकाने से नहीं चुक सकते।एक तरफ बेकारी है तो दूसरी तरफ भारी कर्जा जो ब्याज पर ब्याज लगाने पर हो गया। आठ रुपया बीघा के हिसाब से लगान चौगुना हो गया हैं चुलयउन, गुलयउन,मण्डप,महुआ और लकड़ी पर कर है। झरन, ब्याई,जैजिया कर और पैला - पोली की नाप अनोखे हैं।1।

किसान और मजदूरों को बेगार करनी पड़ती है और चमारों को बोझ उठाना पड़ता है। पुलिस रोज आकर दूध मलाई मांगती है और कंड़ा,लकड़ी,रस्सी, चारपाई आदि भी।तेलियों से खरी और तेल लेकर गालियां देती है।गड़रिया उसे बकरी - बकरा,हण्डी - गगरी और साग - सब्जी देते हैं।2।

मकान पोतने की मिट्टी, खपड़ा, ईट, पत्ती, नदी की रेत, पर्वत के पत्थर, गाड़ी - बैल और गधा - खच्चर पर कर ( टैक्स ) लगता है। पान के बरेजे पर कर बढ़ गया है,इसलिये बरई

भाग जाते हैं। किससे कहें और किसको सुनाबें, सभी स्त्री - पुरुष दुखी हैं।3।

अनाज चालीस सेर का सस्ता बिक रहा है और ज्वां , जवा कोई नहीं खरीदता। बीस सेर के गेंहूं और ड़ेढ़ सो का घी कोई नहीं लेता।हम कोदों,समा और बसारा खाकर बाकी का माल बजारों में बेचते हैं, फिर भी टैक्स नहीं चुक पाता और हमें लुक - छिप कर जंगलों में रहना पड़ता है।जब मुंशी - मंसूर आते थे तो जूते ही पड़ते थे ।4।

पैंतीस रियासतों की जनता ने एक होकर फैसला किया कि या तो राजा टैक्स खतम करें या उनके हाथों हम मर - मिट जायें।चौदह जनवरी सन् इकतीस को सब चरण पादुका एकत्र हुये। बुंदेलखंड़ के पैंतीस राजा ए.जी.जी. के पास गये। जनता अधिकार करने के लिये भड़क उठी और दूसरी तरफ फौज की तैयारी होने लगी। 5।

स्वतंत्रता के लिये संघर्ष करने वालों को ड़ाकू साबित किया गया। भील सो बुलवाकर उसका तंबू लगवाया और मशीन गन,बंदूक तथा कारतूस मोटर में भरकर मंगवाये गये। एक दिन पहले सब नेता जेल में ड़ाल दिये गये। यह देखकर जनता विरोध में खड़ी हो गई और अधिकारी चकित हो गये। 6।

अंग्रेजों की मशीन गनें चलीं और पशु - पक्षी मरने लगे। सभा में एक अनहोनी घटना हुयी की नेताओं को खोज - खोज कर मारा गया।जो बचे उनको पकड़कर मोटरों पर बैठाला गया। जनता लारियों और कारों से चिंपट गई और कारें कुचलत हुई भागी। सबको नौगांव छावनी ले गये और जनता से जेल भर गया। 7।

जिन घरों के नेता मर गये ,वे घर लूटे गये। पहले बैल और पशु नीलाम करे गये,फिर मकान जलवा दिये गये।बुंदेलखंड़ के गांव - गांव में मुनादी करवा दी गयीकि जो स्वराज का नाम लेगा , उसे कीला ठुकवाया जाएगा। पीए. फिसर ने गांव - गांव दमन किया। 8।

### संदर्भ संकेतः

1.चुलयउन =चुलिया (?) , विवाह में दायजे की विशेष टोकरियॉ । 2. गुलयउन= गुली (?) , महुआ के फलों से निकली हुयी। 3. मड़वा = मड़वाई या मण्डप की लकड़ी । 4. महूंठों = महुआ वृक्ष और उससे उत्पन्न उपज। 5. कठवा = लकड़ी। 6.. झरी = झरन, बोरा से झिंरा हुआ। ब्याई = तुलाई। जैजिया = चमारों के चमड़ा पर टैक्स का नाम। पैला = 1चौरी, 8 चौरी = चमारों द्वारा बेगार। 4. मुंशी = अमीन, मंसूर = अहं ब्रह्मास्मि मानने वाला सूफी। मुंशी उस जमाने में अपने को ही ब्रम्हा समझते थे। 5. छतरपुर जिले का एक स्थल जहां चरणपादुका काण्ड घटित हुआ। 6. तम्बे,अस्थायी वास। 7. कारतूस। 8. कुचलकर। 9. छतरपुर जिले का एक कस्बा जहां सेना की छावनी थी। 10. डौंड़ी, मुनादी।

### गायन संदर्भः

1931 ई. के चरणपादुका कांड़ ( छतरपुर ) के बाद रचा और गाया गीत। देशी राज्यों के उत्तरदायी शासन हेतु किये गए आन्दोलनों में अधिक प्रचलित।

संकलन एवं अनुवादः डॉ. नर्मदा प्रसाद गुप्त

( संदर्भ ग्रंथः सुराज म.प्र. आदिवासी लोक कला परिषद )

## 38. गौरमेंट के बिन असि मथुरा ,गान्धी लेत सुराजै

गौरमेंट के बिन असि मथुरा ,गान्धी लेत सुराजै
जब जब एक रास राजै,दुसमन होत पराजै।
रामचंद नै रावन मारो , निसचर संग समाजै।
किसन चंद नें कंस पछारो,दुज देवन के काजै।
गौरमेंट के बिन असि मथुरा ,गान्धी लेत सुराजै।।

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :**

जब एक राशि मिलती है तब शत्रु पराजित होता है। राम ने रावण और राक्षसों का संहार किया था और कृष्ण ने कंस को पछाड़ा था। इसी तरह गांधी जी ने बिना शस्त्र के संघर्ष करते हुये स्वराज ले लिया।

**संदर्भ :** 1947 ई. के बाद गाया जाने वाला फाग गीत।

संकलनकर्ता एवं अनुवादः ननुआ काछी भैंसाय जिला हमीरपुर से प्राप्त।

## 39. चुनरिया रंग दैयो मोरे यार

चुनरिया रंग दैयो मोरे यार ।।टेक।।
भारत के रनवीरों की हो जीमें झलक अपार।।चुनरिया।।
चूनर ऊपर हर रेसे में ,सुराज की झलक दिखा दैइयो।
सुद्व सूत की चादर मोरी ,सांन्ती को कलफ चढ़ा दैयो ।।
तीन रंग की रंगा के चूनर,झंड़ा रुप सजा दैइयो।
गान्धी बब्बा की सूरत खों ,चरखा संग छपवा दइयो।
झांसी बारी रानी के कर , होबै नगिन कटार।।चुनरिया।।
दादा भाई तिलक गोखले, और लाजपत से हो बीर।
अपने प्रान देस के ऊपर , जिनने अरपन करे अधीर।
देस धरम पै सरबस त्यागो,मोती लाल न मानी पीर।
मौलाना, आजाद, पंत जू, पटैल बल्लभ भये फकीर।
बालक वीर हकीकत के गल ,बहे रक्तन की धार।।चुनरिया।।
आजादी के लिये भगतसिंघ,हौं फांसी पै चढ़े हुये।
डेढ़ लाख भारत सपूत हों,जेल के अंदर पड़े हुये।
मरें बहादुर साहब रुस्तम के हों बच्चे कड़े हुये।
हों बीर सुभास बने सेनापत,पलटन कों करके सिंगार।।चुनरिया।।
जुलुम भये जलियान बाग के नक्से ठीक बना दइयो।
डायर पापी के फायर से खून की नदी बहा दइयो।
कई हजार लाल भारत के तड़फत हों दिखला दइयो।
फतेचंद जोरावर जिंदा ईंटन में चुनवा दैइयो।
ग्यारा साल के मदन लाल पै , हो रये हों गोली के बार ।।चुनरिया।।
सरोजनी कमला की चक्की ,जेल में रै रै चलती हों।
कस्तूरी बाई सोऊ बैठी ,हांत रोष से मलती हों।
बिड़ला मंदिर की छिंड़िया पै बापू खों चढ़वा दइयो।
ई नक्सा पै भारत भर के नैनन नीर बहा दइयो।
इक पागल ने राष्ट्रपिता खों गोली दई हो मार।।चुनरिया ।।

0ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :**

मेरे प्यारे दोस्त भारत माता की चुनरी रंग देना। जिससे देश के वीर बहादुर सेनानियों का बलिदानी रंग चमक उठे। मां की चुनरी के रेशों - रेशों पर स्वतंत्र देश की एक तस्वीर दिखलाना।मेरी शुद्व सूत खादी की चादर घर शांति का पेंट(कलफ) चढ़ा देना चारों ओर तीन रंगों की (तिरंगा) गोट लगाकर एक झंड़ा का रुप देकर उसे सजाअे ा । गांधी बाबा की फोटो उनके चरखा सहित छपा देना। जिस पर झांसी की रानी के हाथों में नंगी तलवार भी चमकती दिखें।दादा भाई्र नौराजी, तिलक,गोखले, लाजपतराय, मोती लाल नेहरु, मौलाना अब्दुल कलाम आजाद,बल्लभ भाई पटैल,हकीकत राय जैंसे वीरों ने आजादी के लिये अपने प्राण निछावर किये और अपना खून बहाया। मेरे दोस्त? ऐसे रणवीरों की झलक चुनरी में और मेरी खादी की चादर में दिखें।

जिस चुनरी को देखते ही नजर आने लगें फांसी पर चढ़े हुए सरदार भगत सिंह। जेल के भीतर कैद डेढ़ लाख भारत के सपूत। दफन किये हुये बहादुर शाह जफर, रुसतम और बच्चे। एक ओर वीर जवाहर लाल नेहरु योद्वा की तरह अड़े हुये हैं।दूसरी ओर सुभाषचंद्र बोस युद्व का सामान और सेना लिए हुये।उसी चुनरी में । मेरी खादी की चादर में उभर - उभर कर दिखने लगें।जलियावाला बाग का जलूस। पापी डायर की दनादन फायरिंग और बहती हुई खून की नदी।आजादी के लिये कई हजार भारत के सपूतों की लाशें। फतहचंद्र, जोरावर की कुर्बानी की कहानी।ग्यारह साल के बालक मदन लाल पर बरसती गोलियां।जेल के अंदर चक्की चलाती सरोजनी नायडू, कमला नेहरु,दुख से पीड़ित कस्तूरबा। बिरला मंदिर की सीढ़ियों पर बापू। जिनके वियोग से देशवासियों की आंखों से बहती अश्रूधारा दिखा देना। किसी पागल बेटें के हाथों में हिंसा की पिस्तौल और राष्ट्रपिता की हत्या दिखला देन। मेरे दोस्त! उस चुनरी में । मेरी खादी की चादर में ऐसे रणवीरों की झलक बार - बार दिखे।

**संदर्भः** जनवरी 1948 के बाद गाया गया लोक गीत

संकलनः गया प्रसाद 'नीरस' देवरी कला सागर से प्राप्त

## 40. गांधी टोपी चल गई देखो चारउ देश

वीर जे पैदा हो गये भारत में । श्री गांधी जी महराज।।टेक।।
श्री गांधी जी महराज तपी कैसी अंगरेजी।
गांधी नेता खड़े करे गेरउ से तेजी।।
गांधी टोपी चल गई देखो चारउ देश।
आज तलक नहीं पूजो कोई फिर जैसे गांधी भेष।ं
जैसे गांधी भेष पजे हैं जैसे नाहर।
पंड़ित मोतीलाल सुत वीर जवाहर।।
जिनके घर लक्ष्मी खड़ी माया को नइ पार।
जे अब जेहलों में ड़रे फिर छोड़े घर उर द्वार।।
छोड़े घर उर द्वारा मानते नहीं कुछ शंका।
जिनका चारऊ देश बोलते हैं सब ड़ंका।।
पूजन जिनकी हो रही जबलपुर में खास।
नाती गोकुलदास के फिर बाबू गोविंददास।।

बाबू गोविंददास चढ़े फल फूल रुपैया।
मित्र द्वारका दास सगे से दूले भईया।।
और मिश्र जी के साथ में लक्ष्मण सिंह चौहान।
जिनके मुँह खे देखते फिर पुलिस कप्तान।।
पुलिस और कप्तान लिये पल्टन सब ठाड़े।।
छाती रोपे वीर खड़े हैं मिस्टर पांडे।।
गन मशीन गेरऊ लगी माला उर तलवार।
नेता बिचले फिरत हैं जब हलो जय सरकार।।
हलो जाय सरकार जिहल खें जाय बिचारे।
सुत बंधो पुलन्दर सिंह और जे खबरावारे।।
काशी प्रसाद पांडे खड़े राखो नैया सील।
गिरफतार ओह भये फिर लल्लू लाल वकील।।
लल्लू लाल वकील और नेतों की नारी।
धन दौलत और जान उन्हें नहीं तनकऊ प्यारी।।
ए.वी.सी. दरजा जेल के अपनी - अपनी शैल।
लन्दन लौ जाहिर भये फिर बिट्ठल भाई पटेल।।
बिट्ठल भाई पटैल पारसी उन्हई में का।
जेहलों में नहीं समांय बिड़े नेता अनलेखा।।
रोजई झंड़ा गड़त त, उर रोजई देय उखर।
कहें फकीरे लाल जी, फिर जा आगे खुलहे सार।।
0ぉぉ0

**गीतार्थ** :

गांधी जी जैसे वीर इस देश में पैदा हो गये। चारों ओर गांधी टोपी चल रही हैं आज तक कोई भी गांधी जी के समान पूज्यनीय नहीं हुआ। पंड़ीत मोतीलाल और उनके पुत्र जवाहर लाल नेहरु जिनके घर में धन का भंड़ार है। वे अपना घर - द्वार छोड़कर जेलों में पड़े हैं। उनके नाम का ड़ंका पूरे देश में बज रह है। जिनकी पूजा खासतौर पर जबलपुर में हो रही है। गोकुलदास के नाती बाबू गोविंददास के ऊपर लोग फल- फूल और रुपया पैसा चढ़ा रहे हैं।उनके मित्र पंड़ित द्वारका प्रसाद मिश्र और साथ में हैं लक्ष्मण सिंह चौहान, जिनके मुंह को पुलिस और कप्तान देख रहे हैं। पुलिस और कप्तान अपनी सेना के साथ खड़े हैं और मिस्टर पांड़े उनके सामने सीना तानकर खड़े हैं।चारों ओर मशीन गन लगी हैं। अंग्रेज सरकार हिल गई है। सभी नेता जेल को जा रहे हैं। लल्लू लाल वकील भी गिरफ्तार हो गये हैं।इन क्रांतीकारियों को धन दौलत का मोह बिलकुल नहीं है।सबको जेल में ए.बी.सी. का दरजा मिल रहा है। बिट्ठल भाई पटैल का नाम तो लंदन तक में जाहिर हो गया। नेताओं से जेलें भर गई।नेता लोग प्रतिदिन झंड़ा गड़ाते हैं और अंग्रेज उनका झंड़ा उखाड़ कर फैंक देते हैं।गायक फकीरे लाल कहते हैं इसका फायदा आगे मिलेगा।

संकलन डॉ. कृष्ण कुमार हूंका अनुवाद : डॉ. विजय चौरसिया

## 41. नबाबी ढ़ीली परी आसफ खाँ की

नबाबी ढीली परी आसफ खां की,
दुरगा की उठी तलवार।
दुरगा की तलवार धार का तीखा पानी।
गढ़ मण्डला की लाज राखवे को महारानी।।
बोली यों दरबार में सुनो सकल दरबार।
आजादी की शान पै, आ रही विपद की मार।।नबाबी.
आ रही विपत की मार मानिकपुर वाला।
अधम, नीच नबाब कुटिल आसफ मतवाला।।
भेजो अपने दूत के हाथों जो पैगाम।
गढ़ मण्डल खाली करौ या लड़ौ कठिन संग्राम।।नबाबी .
लड़ो कठिन संग्राम सुभट मेरे सरदारो।
उठो खींच तलवार शाह की गरब उतारो।
सब जोधा मिल देश की ,कीजै आज सहाय।
आजादी की राह पर ,अपना रक्त बहाय।।नबाबी.
अपनो रक्त बहाय बजाओ खूब दुधारा।
माँ का खप्पर भरे देश है जिसको प्यारा ।।
सुनके रानी के वचन भड़क उठे सरदार।
मारी जाय नबाब कों,रोष भरी तलवार।।
रोष भरी ललकार,खेंच विष भरी दुधारी।
हाथी पर असवार चली दुरगा भयहारी।।
पैदल से पैदल भिरे,असवारन असवार।
रानी नें नव्वाब को,दई करारी हार।।नबाबी.
दई करारी हार पड़ी, भगदड़ दुश्मन में।
आजादी के वीर गोंड़, ड़रते न मन में।।
धन्य - धन्य दुरगावती,धन्य सकल सदार ।
आजादी की राह में, दई रक्त की धार।।नबाबी.
दई रक्त की धार, भई घनघोर लड़ाई।
पर रानी ने नहीं, समर में पीठ दिखाई।।
रानी सुरपुर वासनी,देव हमें वरदान।
हम स्वतंत्रता पर सदा ,करें निछावर प्रान।नबाबी.
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थ :

जब रानी दुर्गावती की तलवार उठी तो आसफ खाँ की नबावी ढ़ीली पड़ गयी। गढ़ मंड़ला की रक्षा करने रानी दुर्गावती ने अपनी तेजधार वाली तलवार निकाल ली। रानी ने राजदरबार में आकर सभी दरबारियों से कहा - हमारी आजादी में दखल ड़ालने के लिये मानिकपुर का अधर्मी,नीच,कुटिल और मतवाला नबाव आसफ खाँ ने अपने दूत के हाथों संदेश भेजा है - कि रानी आप गढ़ मंड़ला को खाली कर दो या कठिन युद्व के लिये तैयार हो जाओ। रानी ने अपने

सैनिकों से कहा - मेरे सैनिको आप लोग युद्व करने के लिये तैयार हो जाओ और तलवार से आसफ खाँ की गर्दन काट दो। सभी बहादुर सैनिक अपने देश की रक्षा करने के लिये अपना खून बहा दो। रानी के वचन सुनकर सैनिक भड़क उठे, वे तलवारें लेकर युद्व करने चल दिये। रानी दुर्गावती भी दो धार वाली विष से भरी तलवार लेकर हाथी पर सवार हो गयीं।पैदल सैनिकों से पैदल सैनिक युद्व कर रहे थे और हाथी ,घोड़ों पर सवार सैनिक हाथी घोड़ों पर सवार दुश्मनों के छक्के छुड़ा रहे थे। अजादी के वीर गोंड़ सैनिकों ने आसफ खाँ की सेना को खदेड़ दिया। धन्य हो रानी और उनका सरदार, उन्होंने आजादी के लिये खून की नदियां बहा दी पर युद्व क्षेत्र में पीठ नहीं दिखाई । हे स्र्वगवासी रानी आप हमें वरदान दें कि हम स्वतंत्रता के लिये अपने प्राण तक निछावर कर दें।

लेखक :झलकन लाल वर्मा छैल

संकलनःश्याम सुन्दर बादल अनुवाद : डाँ.विजय चौरसिया

## 42. बंदो भारत माता तुमखों,पइयां परौ नबाओं सीस

बंदो भारत माता तुमखों,पइयां परौ नबाओं सीस
ं माथौ टेकों तेरी देहरी पै , मइया दै दो हमें असीस।।
देई सरसुती तुमखों सुमरों,भूले आखर देव बताय।
गनपत देवता तुमें मनाओं,भारत लरबौ देव लिखाय।।
साखौं गाओं गान्धी जू कौ , करके बार - बार परनाम।
जिन्नें लोहा लओ गोरन सें, छेड़ो स्वतंत्रता संग्राम।
ऐसो जुद्वं कमऊ नई देखों,लड़नै परै बिना हथयार।
बंदूक न मशीनगन सामूं ,खड़े निहत्थे खाबें मार।।
अफरीका से आये गांधी,आओ स्वदेशी में नओ ज्वार।
कपड़ा जरे विदेसी घर - घर , गांव - नगर फैलो उजयार।
खादी पैरो प्यारे भाई , खादी है गीता का ज्ञान ।
चरखा लै लेब घर चलाओ,जेई स्वदेशी की पहचान
रालट की रिर्पोट पै गान्धी,दओ विरोध को झंड़ा गाड़।
जलियांवाले बाग में डायर,खुल कें खेलो नरसंहार।।
गान्धी जू नें करी घोषणा,फिर जनता में आओ उफान।
चलो खिलाफत को आंदोलन,चलो असहयोग तूफान।।
गांव - गांव में नगर - नगर में उमड़े सब मजदूर किसान।
मुसलमाल उर हिन्दू जुरमिल, एक भये निरधन धनवान।।
छोड़े सब सरकारी सेवा,लेबें अपनो हक अधिकार।
घबराई अंगरेजी सत्ता,साइमन आकें करें विचार।
नगरन में विरोध भयो जमकें,कारे झंड़ा दये दिखाय।
पुलिस की लाठिन से घायल हो,सरगै गये लाजपत राय।।
लाहौर मंच से भई घोषणा,नेहरु जी बोले ललकार।
छोड़ों सबई बहाने बुनबों,पूरी स्वतंत्रता देव हमार।।
दाण्ड़ी जात्रा कर गान्धी ने,सागर तट पै करो पयान।
तोड़ दओ कानून नमक को,नओ आंदोलन भओ घमसान।।

उतै क्रांतिकारी दल जूझे,बेड़ी मॉ की काटबे काज।
भगत सिंघ ,सुखदेव,राजगुरु ,फांसी चढ़े परी जौ गाज।।
क्रिप्स मिशन ने करी रियाय, दै दओ उपनिवेस कौ राज।।
कांगरेस नै निरनै कर लओं,हम तो लैहें पूर्ण स्वराज।।
अंगरेजो अब भारत छोड़ो, घर - घर में गूंजी आवाज।
टूट पड़ी भारत की जनता, रेलें रुकी काट दये तार।
थानन पै फैराये झंड़े ,कउं - कउं जनता की सरकार।।
भओ भयंकर दमन पुलिस की,गोलिन से भये कई शिकार।
संर्घषों की ऊंचाई पै,पौंचो अहिंसा को हथियार।।
पै सुभाष नओ मोरचा खोलो, आजादी की फौज बनाय।
देश भक्त लड़ - लड़ के जूझे,अंगरेजन लागी घबराय।।
सन् छियालिस में नौ सेना ने, दई चुनौती कर विद्रोह।
बिबस भई अंगरेजी सत्ता ,त्यागो राज करन को मोह।।
सैतालिस पंदरा अगस्त कों,भइया भारत भओं स्वतंत्र।
बंटवारा भओ पाकिस्तान को, चल गओ अंगरेजन कौ मंत्र।।
दंगा भये जरे घर दोरे , लुट गई बिहनन की लाज।
लोहू तलन में लोथें बिछ गई, भओ भेड़ियन कौ फिर राज।।
अनसन करो महात्मा जू नें , दंगे रुके सानती कौ काज।
पै भई राष्ट्रपिता की हत्या,अंसुवन भींजी जगत - समाज।।
रै - रै कलम आज तौ,कैसें भरहें गैरो घाव।
मलहम चानै है करुना कौ,संगें रैबे की बो चाव।।

**गीतार्थ** :भारत माता , सरस्वती देवी और गणेश जी की वंदना के बाद गांधी जी की गौरव गाथा का वर्णन हैं यह गाथा उन गांधी जी की है जिन्होंने शस्त्र रहित होकर स्वतंत्रता - संग्राम लड़ा था। गांधी जी ने आफ्रीका से लौटकर स्वदेशी आंदोलन को नये प्राण दिये। विदेशी वस्त्र जलाये गये। खादी का प्रचार - प्रसार हुआ। रालट की रिर्पोट पर गांधी जी ने विरोध किया। जनरल ड़ायर ने जलियांवाले बाग में नरसंहार करा दिया। खिलाफत और असहयोग आंदोलन चले। गांव - नगर की जनता उमड़ पड़ी। सरकारी सेवा छोड़ने का संकल्प शुरु हुआ। जिससे सत्ता ड़र गई। साइमन कमीशन का जमकर विरोध हुआ। पुलिस की लाठियों से घायल लाला लाजपतराय स्र्वगवासी हो गये। लाहौर अधिवेशन की अध्यक्षता करते हुये नेहरु जी ने पूर्ण स्वाधीनता की घोषणा की। दांड़ी यात्रा कर गांधी जी ने ' नमक कानून' तोड़ा। उधर क्रांतिकारी दल भी देश प्रेम से भरकर इस जूझ में शामिल हो गया। भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव फांसी पर चढ़ गये। क्रिप्स मिशन औपनिवेशक राज्य की दलील दी,पर कांग्रेस पूर्ण स्वराज पर अड़ी रही। 1943 ईसवी में "अंग्रेजो भारत छोड़ो" का नारा तो लगा पर गांधी जी ने करो या मरो कहकर जनता को उद्वेलित कर दिया। रेलें रुक गई। तार काटे गये। थानों पर झंड़े फहराये गये और कहीं कहीं जनता का शासन हो गया। लेकिन अंग्रेजों के भयंकर दमन ने सबको हिला दियां सुभाष चंद्र बोस ने आजाद हिन्द फौज की स्थापना की और देश भक्त स्वतंत्रता के लिये जूझने लगे। उधर नौ सेना का विद्रोह हुआ। अंग्रेजी सत्ता घबड़ा गई और 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हो गया। लेकिन अंग्रेजों की कूटनीति ने विभाजन करवा दिया। जिससे जन - सम्पत्ति की बहुत

हानि हुयी। गांधी जी के अनशन से देश में शांति आई । लेकिन राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की हत्या कर दी गई। सारा संसार शोक में डूब गया। यह गहरा घाव तभी भर सकता है जब करुणा का मलहम लगे।

**संदर्भः**

1848 ईसवी के बाद की रचना राष्ट्रीय आल्हा के रुप में गायी जाती थी।

संकलन भावार्थ एवं संदर्भः नर्मदा प्रसाद गुप्त छतरपुर

## 43. अरे गांधी बब्बा आये

दर्शन खों चलो - चलिये,अरे गांधी बब्बा आये।
हिन्दू मुसलिम,सिख,ईसाई,सब खों कंठ लगाये।
मिलजुर के इक मानवता की, धरम धुजा फहराये।
बड़े - बड़े राजा - महराजा गांधी टोंपी लगाये।
घर - घर चरखा चलन लगे खादी गांधी ले आये।।
दर्शन खों चलो चलिये, अरे गांधी बब्बा आये।
चालीस दिनन को लें के अनसन, जल बिन अन्न न खाये।
मौलाना वीर जवाहर, गोविंददास कहाये।
नगर गांव तैहसील जिल्हों में जा - जा के सब छाये।
गाड़न झेला और चढोत्तरी,लाखन भीड़ लगाये।
दर्शन खों चलो चलिये,अरे गांधी बब्बा आये।
राज पाट धन कुटुंब छोड़ दये , ऐसो दुख्य उठाये।
गांव गलिन में कीरत गूंजे, सब नर मुक्ति पाये।
सब दासों के दास "फकीरे" आंखन देखी गाये।
सत्य अहिंसा लेके गांधी सतवादी वीर कहाये।
दर्शन खों चलो चलिये,अरे, गांधी बब्बा आये।

0ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :**

यह खबर सुनते ही की गांधी बाबा आ रहे हैं। जनता उनके दर्शनों को उमड़ पड़ी। हर व्यक्ति एक दूसरे से कहने लगा गांधी जी आ गये हैं। हम सब उनके दर्शन को चलें।
जिन्होंने हिन्दू , मुसलमान, सिख, ईसाई सभी जाति के लोगों को हृदय से लगाया है। हम सभी गांधी बाबा के महाल आदेशों को ध्यान में रखते हुये सभी एक होकर मानव धर्म का झंड़ा फहरायें। बड़े - बड़े राजा - महराजा गांधी जी से प्रभावित होकर गांधी टोपी लगाने लगे।गांधी जी सूत की खादी का महत्व लेकर आये हैं। जिससे घर - घर गांधी चरखा चलने लगे। जिन्होंने देश की गरीब जनता की उन्नति, सुख, शांति के खातिर अन्न - जल को छोड़कर चालीस दिनों का अनशन व्रत किया। जिनके साथ मौलाना अब्दुल कलाम आजाद, पं जवाहर लाल नेहरु, सेठ

गोविंददास जैसे वीर रहे हैं। जो नगरों गांव, तहसीलों, जिलों में जा - जा कर जनता को प्रभावित करते रहे हैं। जिनके दर्शनों के लिये देश भक्त जनता अपने - अपने वाहनों बैलगाड़ियों द्वारा चढोत्तरी - भेंट ले लेकर लाखों की संख्या में एकत्रित हुये।
जिन गांधी बाबा ने अपने प्यारे देश के खातिर आजादी के लिये अपना घर - द्वार, धन , दौलत, कुटुम्ब - परिवार, ऊंचा राजपद छोड़ कर दुख और कष्ट सहे हैं। गुलामी से छुटकारा पाने, आजादी लाने के लिये उनकी कीर्ति, यश, बढ़ाई गांव - गांव गली -गली में गूंजने लगी। एक फकीरे राम का व्यक्ति (इस गीत का रचियता) जो बेड़ियों में जकड़ा था। उसने अपने इस गीत में आखों देखी बात व्यक्त कर गाई है।इस तरह गांधी जी सत्य अहिंसा को लेकर सतवादी वीर कहलाये।

जनवरी 1948 के बाद गाया गया लोक गीत

संकलन एवं अनुवाद : माधव शुक्ल मनोज

(संदर्भ ग्रंथ : सुराज,म.प्र. आदिवासी लोक कला परिषद)

## 44. गांधी जू के जे बंदरा

गांधी जू के जे बंदरा।
आंख कान मूंदें दो देखो
एक रखे मो पै अंगुरी
सतपथ की जे बातै भईया
इनैं न तुम मारो पथरा
गांधी जू के जे बंदरा।
अच्छो देखो सुनो भी अच्छो
कड़वी बानी बोलें नें।
श्ीतल शांत करो मन सबकों
रखो नै कोऊ पै अंगरा
गांधी जू के जे बंदरा।
सत्य अहिंसा समता के जो
तीन तिरंगा बैठे हैं
समझो इन्हें और समझाओ
बनों नें मैं मैं के बुकरा
गांधी जू के जे बंदरा।
0ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :**

गांधी जी के उद्देश्यों के प्रतीकात्मक तीन बंदर हैं। एक आंख मूंदे है!दूसरा कानों में अंगुली डाले है!!तीसरा मुंह पर अंगुली रखे है!!! तीनों बंदर हमें सतपथ की शिक्षा देते हैं। इनको तुम पत्थर मत मारो। उनसे शिक्षा ग्रहण करो। पहला बंदर जाहिर करता है - अच्छा देखो! दूसरा

बताता है - अच्छा सुनो!! तीसरा कहता है - कड़वा मत बोलो!!! सभी को शांति खुशी दो! किसी का दिल मत जलाओ!! किसी को दुखी मत करो!!! सत्य , अहिंसा , समता के तीनों रंग बंदर में समाहित हैं। उनको समझो! दूसरों को समझाओ!! अपने कोरे अहम के बकरा मत बनो!!!

संकलन एवं अनुवाद : माधव शुक्ल मनोज

## 45. एक चुवन्नी चांदी की

एक चुवन्नी चांदी की
जय बोलो महात्मा गांधी की।
देश गुलामी में जकड़ो है
तानाशाही नें पकड़ो है
जिनने सच्ची डगर दिखाई
चलते खों आजादी की
एक चुवन्नी चांदी की
जय बोलो महात्मा गांधी की।
अध नंगो हथयार बिना जो।
फौज और सरकार बिना जो।
लड़ो विदेशी गोरों से जो।
चमक उठी तलवार सरीखी
सत्य अहिंसा गांधी की
एक चुवन्नी चांदी की
जय बोलो महात्मा गांधी की।
हिन्दू , मुसलिम,सिख,ईसाई।
आपस में सब भाई - भाई।
पग - पग पर चल - चल कर जिसने
संझा सबह मुनादी की।
एक चुवन्नी चांदी की
जय बोलो महात्मा गांधी की।

**गीतार्थ :**

जिस प्रकार चांदी की चवन्नी दमकती है, उसी प्रकार गांधी जी की कीर्ति पग - पग पर मार्गदर्शक के रुप में चमकती है। हे भाई गांधी जी की जय बोलो। देश को तानाशाह सरकार ने पकड़कर गुलाम बना लिया है। ऐसी स्थिति में गांधी जी ने आजादी हासिल करने के लिये सही रास्ता दिखलाया है। बिना अस्त्र - शस्त्र के गांधी जी के पास फौज और सरकार नहीं है। फिर भी वह विदेशी अंग्रेजों से लड़ा। उसकी भावनाओं में बैठी सत्य - अहिंसा, तलवार की तरह चमक उठी।गांधी जी ने सुबह शाम पग - पग पर चलते हुये जोर से आवाज लगाते हुये कहा मेरे देश के हिन्दू ,मुसलमान,सिख, ईसाई सभी भाई - भाई हैं। हम सब एक हैं।

संकलन एवं अनुवाद माधव शुक्ल मनोज

## 46. देख गरीबी टपरिया में
## बब्बा रहन लगे झुपड़िया में

देख गरीबी टपरिया में,बब्बा रहन लगे झुपड़िया में
मोंड़ा - मौंड़ी रार करत हैं
नंग - धुरंग उघारे फिरत हैं
गांधी नें छोड़ों कपड़ा पहिरवो
बैठे वे घामो - दुपहरिया में,बब्बा रहन लगे झुपड़िया में।।
कांते वे सूत - कतावें सब खों।
खादी सुदेसी पहिरावे सब खों।
सब खों समझावें आजादी आहे
मजीरा बजाउत नगरिया में,बब्बा रहन लगे झुपड़िया में।ं
इक दिन गरीबी पै परहै तुषार
आंगन में सबके आहै बहार
धुध के धुंआ - लग जेही आगी
जोर जुलम की अटरिया में,बब्बा रहन लगे झुपड़िया में।ं।
0ध्ध्ध्0

गीतार्थ :

देश की गरीब जनता झोपड़ियों में रह रही है। उनकी ऐसी दयनीय हालत देखकर गांधी जी का दिल भर आया,वे भी झोपड़ी में रहने लगे। जहां नंगे धूल से लिपटे वस्त्रहीन बच्चों को रोते देखते हैं, उन्हें देख गांधी जी ने भी वस्त्र पहनना छोड़ दिया। वे तपती दोपहरी में गरीबों का दुख - दर्द महसूस करने के लिये बैठ गये। वे चरखा से सूत कातने लगे। सभी को चरखा चलाने और सूत कातने के लिये प्रेरित करने लगे। वे स्वयं के हाथों की बुनी खादी सभी को पहनाना चाहते थे। वे सबको समझाते थे कि स्वावलम्बी बनो, एक दिन मंजीरे बजाती हुयी आजादी तुम्हारे गांवों में आयेगी। तब तुम्हारी गरीबी समाप्त हो जायेगी। तुम्हारे आंगन में खुशहाली आयेगी। जोर जुल्म की ऊंची हवेली धुधकेगी। उसमें अपने आप आग लग जायेगी।

संकलन एवं अनुवादः माधव शुक्ल मनोज

## 47. गांधी बब्बा बोलत ते

गांधी बब्बा बोलते ते,मिसरी सो रस घोलते ते।
गांधी बब्बा ड़ोलते ते,आजादी खौं तौलत ते।
गांधी बब्बा सोऊत ते,अपनौ सपनौ बोऊत ते।
गांधी बब्बा देखत ते,हीन गरीबी लेखत ते।
गांधी बब्बा ढूंकत ते,अंगरेजों पै थूँकत ते
गांधी बब्बा गाऊत ते,सब खों एक बताऊत ते।
0ध्ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थः

गांधी जी देश के चप्पे -चप्पे में जाते आजादी लाने की सोचते,वे सान्तवना देकर सभी का मन प्रसन्न करते।सो जाने पर गांधी जी,आजादी के सपनों का ताना - बाना बुनते।देश की परवशता गरीबी कैसे दूर की हो उसकी राह खोजते। मन की खिड़की से झांककर ब्रिटिश सरकार की करतूतों पर थूंकते, गांधी जी सभी जन के साथ बैठकर गाते - हमें एक होकर संगठित रहना

है। सभी को बार - बार समझाते।

संकलन एवं अनुवादः माधव शुक्ल मनोज

## 48. दाल चांवल रोटी के

दाल,चांवल,रोटी के।
गांधी एक लंगोटी के।
थारी बिलिया लुटिया के।
गांधी जू की कुटिया के।
ज्वांर ,बाजरा, कुटकी के।
गांधी जू की मटकी के।
दीन,हीन सब गांव के।
गांधी नंगे पांव के।
रघुपति राजा राम के।
गांधी सेवा ग्राम के।
हाथ पांव मन फरती के।
गांधी अपनी धरती के।
हते विदेशी कौंड़ी के।
गांधी पांच पसेरी के।

0ध्ध्ध्0

गीतार्थ :

गरीबों के लिये खाने को दाल ,चांवल ,रोटी नहीं पहिनने को कपड़ा नहीं, इसलिये गांधी जी ने सब कुछ त्याग कर तन पर एक लंगोटी ही लपेटी। उनकी घास - फूस की झोपड़ी में एक थाली, कटोरा, लोटा था। गरीबों की ही तरह उनकी मटकी में जुआर - बाजरा कुटकी ही थी। गरीब जनता के पांवों में कांटे चुभते देखकर गांधी जी नंगे पांव रहने लगे। वे श्री राम जी के सिद्वांतों पर चलते थे। वे ग्रामीण जनता की सेवा करते,उनके हाथ - पांव में थिरकती ओजस्वी फुर्ती थी। वे धरती मॉ के लाड़ले बेटे थे। उनके सामने अंग्रेज कौंड़ी (तुच्छ) के थे और गांधी जी एक पसेरी ( पांच किलो) के समान थे।

संकलन एवं अनुवादः माधव शुक्ल मनोज

## 49. गांधी हमें जगा रये ते

गांधी हमें जगा रये ते
गांधी हमें बता रये ते
गांधी हमें सुना रये ते
चेतो - चातो गुनो उठो फिर
ऊ देखों अंगरेजन खों
जिनने देश हड़प लव भइया
काम - धाम स्टेशन खों

अंगरेजी सरकार स्वारथी
आपस में खूब लड़ा रई है
अपनो देश पतंग सरीखों
अपनी ड़ोर उड़ा रही है
अपनौ अबै गरीब देश है
खावे खों रोटी नइयां
समझ बूझ के काम करो अुर
लड़ों न झगड़ों आफत में
वरवशता में एंनर होकें
धौं कछु नहिं खांसत में
भेद भाव को दूर करो अुर
मन से गरे मिलो भैया
आपस कौं जौ बैर - बुराव है
होकें फूल खिलो भैया।
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :**

गांधी जी हमें सावधान कर समझाते हुए - सुनाते हुये दिखा रहे थे - उन अंग्रेजों का जिन्होंने हमारा काम धंधा रहने की जगह हड़प ली,हमें गुलाम बना दिया। ब्रिटिश सरकार बड़ी स्वार्थी है हमें आपस में लड़ा कर राज्य कर रही हैं हमारे ही देश की पतंग हमारी ही ड़ोर से उड़ा रही है। अपना देश गरीब हो गया है, उसे भर पेट रोटी नहीं मिलती रहने को घर - गृहस्थी, पीने को साफ पानी नहीं मिलता है भाई ?ै समझदारी से काम करो इस आफत में फंसकर आपस में लड़ो झगड़ो नहीं। दूसरे के सहारे / गुलामी और रोगों से त्रस्त झुकने - खांसने से कुछ नहीं होगा। जाति - पांती के भेद - भाव को दूर करो। आपस की दुश्मनी कमजोर करती है। सभी एक होकर गले में बांहें ड़ालकर मिलो। मुस्कराहट और उत्साह लिये फूलों की तरह खिलो।

संकलन एवं अनुवादः माधव शुक्ल मनोज

## 50. बुन्देली धरती के पूतो अपनो देश बचा लो राम

बुन्देली धरती के पूतो, अपनो देश बचा लो राम जै गंगा
देश मे बस गये परदेशी, पुरखन की जा हो रही हेटी जै गंगा
आग और पानी वाली जा, बुन्देलन की माटी है जै गंगे
हल्दी घाटी पानीपत में, रणभेरी में करें रे विचार जय गंगे
मंगल पांड़े रण सैया में, अपने दै दये है रे बलिदान जय गंगे
वीर बानपुर राजा रे शाहगढ़, उनने दै दये अपने प्रान जय गंगा
झांसी की रानी मरदानी ,अपने मन में करे विचार जै गंगा
रण चंड़ी वे बनके निंकरी,ड़लहौजी के जिया घबराय जै गंगा
रोटी ,कमल की बनी निशानी, आजादी को कारन आय जै गंगा
कुंवर सिंग और तात्या टोपे, आजादी पै हो रये बलिदान जै गंगा
तुम भैया सुख सें काये सो रये, बुन्देलो की हो आन बान जै गंगा
याद करो तुम आल्हा-ऊदल, सामूं काल के न पांछूं जांय जै गंगा

बरछी , ढ़ाल,कृपान,कटारी, रकत की प्यासी है तलवार जै गंगा
रैन विहूनी अरे चंदा बिन,नदिया लगै बिना जलधार जै गंगा
देश विहूनो विन जुवानों के, ऊंसई बिना पुरुष की नार जै गंगा
धन्य - धन्य झांसी की धाती, धन्य -धन्य वो पानी राम जै गंगा
धन्य -धन्य दुरग जे में दुरगा, सम बैठी लक्ष्मी रानी राम जै गंगा
पूत सपूत वनो रे धरती के, पूत कपूत को का है काम जै गंगा
पिरन प्रतिज्ञा ऐसी ठानो,आ जा मात भूम के काम जै गंगा
हिन्दू मुसलिम सिक्ख ईसाई, तुम हो भारत की संतान जै गंगा
0ध्ध्ध्0

गीतार्थः -

बुंदेलखंड़ की धरती के सपूतो, अपने देश को बचा लो। अपने भारत देश में परदेशी आ गये हैं। जिसके कारण हमारे पूर्वजों को नीचा देखना पड़ रहा है। बुंदेलखंड़ की यह मिट्टी आग और पानी उगलती है। हल्दी घाटी और पानीपत के युद्व को याद करो । याद करो मंगल पांड़े को जिसने मातृ भूमि की रक्षा के लिये अपने प्राणों की बाजी लगा दी। इसी प्रकार बानपुर के वीर राजा ने भी अपने प्राणों का बलिदान दिया। झांसी की रानी लक्ष्मी बाई के बारे में अपने मन में सोचो। जब रानी लक्ष्मी बाई रणचंड़ी बनकर युद्व के मैदान में आई तो ड़लहौजी का दिल घबड़ाने लगा। रोटी और कमल का निशान देश की आजादी का कारण बना। कुंवर सिंह और तात्या टोपे आजादी के लिये बलिदान हो गये। मेरे भाई तुम क्यों सुख से घर में सो रहे हो। तुम तो बुंदेलखंड़ की आन - बान और शान हो। तुम आल्हा - ऊदल को याद करो। जिसने आगे और पीछे से काल का सामना किया। उनकी बरछी,ढ़ाल, कृपाण,कटार और तलवार खून की प्यासी हैं। जिस प्रकार रात्री चंद्रमा के बिना और नदी पानी के बिना अच्छी नहीं लगती। उसी प्रकार देश नवयुवकों के बिना अच्छा नहीं लगता। वह वैसा ही लगता है जैसा बिना पुरुष की नारी।

धन्य हो झांसी की भूमि और वहां का पानी धन्य हो - वह दुर्ग जिसमें रानी लक्ष्मी बाई विराज मान हैं। तुम इस धरती के सपूत बनो, क्योंकी कपूतों का इस धरती में कोई काम नहीं। सभी आज यह प्रतिज्ञा करो की हमारा यह जीवन मातृभूमि के काम आ जाये। हिन्दू मुस्लिम,सिक्ख और ईसाई हम सभी इस भारत देश की संतान हैं। जय गंगा।

आजादी की पहली लड़ाई में जनता की भागीदारी तो थी और उस समय की परिस्थितियों में बुंदेलखंड़ में लोक जागरण का जैसा रुप उभरा,उसमें प्रमुख योगदान था हरबोलों का। देश का सच्चा इतिहास और उसका नैतिक और सामाजिक आदर्श इनके लोकगीतों में सुरक्षित है। लोकगीत राष्ट्रीय संतुलन बनाये रखने और विश्वबन्धुत्व की भावना स्थापित करने के परम साधन हैं। राष्ट्रीय भावना को,जन चेतना को लोकगीतों में व्यक्त करने की एक सुदीर्घ परंपरा रही है।

संकलन - ओम प्रकाश चौबे सागर अनुवाद- डॉ. विजय चौरसिया

## 51. रथ साजो बावन हाथी कौ

टेक - रथ साजो बावन हाथी कौ,

भाई रेवा ऊले पार।

छन्द -भाई रेवा ऊले पार धन्य वहां रची प्रभुताई।
देश - देश की चीजें वहॉ सब दओ दिखाई ।
एक लेंन से रच गयेबंगले सिलसिले वार।
धन्य नमूना जो रचो इन्द्रासन की उन्हवार।।1।।
रे रथ साजौ बावन हाथी कौ........
इन्द्रासन की उन्हवार जवाहर लाल बखानें।
रेड़ियो बीचन बीच लेकचर सबै सुनानें।
गजरथ तो ऐंसो जो शोभा वरन न जाय।
सुभाषचंद बीमार थे जब हाय - हाय हो जाय।। 2।।
रे रथ साजौ बावन हाथी कौ........
जब हाय - हाय हो जाय गांधी जी नहीं आये।
हो रहो आम दरबार सभा में आनंद छाये।
बिना गांधी के वहां सूनों लगे दरबार।
सुभाषचंद खैं बढ़ गयो मोतिझिरा बुखार।। 3।।
रे रथ साजौ बावन हाथी कौ........
मोतिझिरा बुखार सजो रथ बावन हाथी कौ।
बाजे बजे अपार फूल गरगज भई छाती।
सुभाष चंद की फोटो लैके बैठे गोविंददास।
त्रिपुरी रथ बांको सजो माई रेवा जी के पास।।4।।
रे रथ साजौ बावन हाथी कौ........
माई रेवा जी के पास स्वयं सेवक सिवराजी।
किस्म किस्म पोशाक दरसें कैंसे साजी।
चौतरफा दरवाजे सजे किसम किसम रंगीन।
झिंझरी झालर चमकतीं उर किसम - किसम के फूल।। 5।।
किसम - किसम के फूल अफीसर सब सरकारी।
चारा घास रंगीनपुरी, जा सोहै न्यारी।
भीड़ जुरी चंहु ओर की देखन को संसार।
कहें फकीरे लाल जी गोविंददास पै भार।।6।।
रे रथ साजौ बावन हाथी कौ........

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थ :-

जबलपुर में हुये कांग्रेस के त्रिपुरी अधिवेशन में नर्मदा नदी के किनारे बावन हाथियों का रथ सजाया गया था। तिलवाराघाट में नर्मदा जी के किनारे एक नया शहर बस गया। देश - देश की चीजें वहां दिखाई देने लगी। नेताओं के रहने के लिये एक कतार में बंगले बन गये। नेताओं को बैठने के लिये मंच पर इंद्रासन के समान सजावट की गई। उसी मंच से पंड़ीत जवाहर लाल नेहरु जी ने अपने भाषण दिये। पूरे देश के लोगों ने रेड़ियो पर उनके भाषण सुने। गजरथ

की सजावट तो ऐंसी थी कि उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। अधिवेशन के समय सुभाष चंद्र बोस बीमार पड़ गये। सभी तरफ हाहाकार मच गया। जब गांधी जी अधिवेशन में नहीं आये। तो सभी लोग निराश हो गये। गांधी जी के न रहने से अधिवेशन सूना - सूना लगने लगा। उसी समय सुभाषचंद्र बोस को तेजी से मोतिझिरा बुखार आ गया। तब सेठ गोविंददास जी सुभाष चंद्र बोस की फोटो लेकर रथ पर बैठे। त्रिपुरी कांग्रेस का रथ नर्मदा किनारे सजा - धजा खड़ा था। नर्मदा जी के किनारे कांग्रेस के स्वयंसेवक सज - धज कर खड़े थे। चारों दिशाओं में तरह - तरह के फूल नजर आ रहे थे। अधिवेशन में बहुत से सरकारी अधिकारी थे। इस पूरे अधिवेशन का भार सेठ गोविंददास जी के ऊपर था। अधिवेशन देखने चारों दिशाओं से लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी थी।

कांगेस के त्रिपुरी अधिवेशन से भारत के नागरिकों में राजनैतिक चेतना जागी थी।

**संदर्भ ग्रंथ** - "श्री गांधी बहार सागर" प्रकाशकः शुभुचिंतक प्रेस जबलपुर कवि फकीरेलाल पटैल द्वारा त्रिपुरी अधिवेशन के समय रचित फाग

संकलन - गोपाल चंद्र नायक गाड़सरई जिलाः डिंड़ौरी

अनुवाद - डॉ. विजय चौरसिया

0ध्ध्ध्ध्0

## 52. हमरे चमके भाग्य सितारे

हमरे चमके भाग्य सितारे, जीवन भये सुखारे।
अबलों हमें जमींदारों नें,दीनें हैं दुख भारे ।
कांग्रेस सरकार हमारे , बिगरे जनम सुधारे।
दया दृष्टि कर सब जमींन,के दये हमें हक सारे।
जुग - जुग जीवें ये नेतागन भये प्रान रखवारे।
परमानंद आज घर - घर में सुखी रहें घरवारे।।

जग में अब सुख चैंन मनाओ, गुन स्वराज के गाओ।
मिटी गुलामी जमींदार की ,अब स्वतंत्र कहलाओ।
ग्राम सुधारक बनी योजना ,दुख दिल सें बिसराओ।
नहरें ताल कुंआ नये बनहें, अन्न अधिक उपजाओ।
दूर होय भुखमरी देश की ,खाओ खूब खबाओ।
परमानंद बहुत बरसन में, समय सुहावन पावो।।

बन हैं ज्ञानी ग्राम निवासी, बुद्विमान सुख राशि।
गांवन - गांवन खुले मदरसा,शिक्षा बुद्वि प्रकाशी।
दीन किसानन के बालक प्रिय पाहैं शिक्षा खासी।
दूर होय दीनता मूर्खता बनें विवेक विलासी।
परमानंद अचल सुख सम्पत, पावें कीर्ति सुवासी।।

सो गयी प्रथा जमींदारी की, दायक दुख भारी की ।

ग्राम सुधार योजना जागी ,दीनन दुखहारी की ।
पलटी दुखद भाग्य की रेखा ,ग्रामन नर नारी की।
फूलें फलैं किसान वाटिका ,समता फुलवारी की।
कांग्रेस नें राम राज सी, राजनीती जारी की।
परमानंद प्रेम से बोलो, जय चरखाधारी की।।

0ध्धध्0

**गीतार्थ :-**

आज हमारी किस्मत चमक गई है। जीवन सुखमय हो गया है। अभी तक जमींदारों ने हमको बहुत दुख दिये थे। देश के आजाद होने के बाद कांग्रेस सरकार ने हमारा जीवन सुधार दिया। उनके नेताओं ने हम पर दया दृष्टि की और हमारा हक और जमींन हमको वापस दिलवा दी। ये नेता जुग - जुग जीयें। ये हमारे जीवन के रखवाले हैं। आज सभी लोगों के घरों में खुशहाली है। अब सभी लोग सुखचैन से जीवन गुजारो और स्वराज के गुणों को गाओ। अब तुम स्वतंत्र हो गये हो। अब जमींदारों की गुलामी नहीं करनी पड़ेगी। अब ग्राम सुधार की योजनायें बनेंगी। नहरें, तलाब, कुंऐं सभी का नव निर्माण होगा। देश की भुखमरी दूर हो जावेगी। गांव - गांव में स्कूल खुल जावेंगे। गरीब और किसान सभी उसमें शिक्षा पायेंगे। जिससे लोगों की मूर्खता दूर होगी। वे विवेकशील और शिक्षित होंगे। जमींदारी प्रथा समाप्त हो गई है। उस प्रथा ने हमें बहुत दुख दिया है। कांग्रेस सरकार ने देश में रामराज्य लाने की सोची है।अब प्रेम से बोलो चरखाधारी महात्मा गांधी की जय!

स्वाधीनता के बाद अशिक्षित ग्रामीणों में समाजिक चेतना दर्शाती बुंदेलखंड़ी फाग।

रचियता - पं. परमानंद बुधौलिया मऊ रानीपुर झांसी
संकलन - गोपाल चंद्र नायक गाड़सरई जिलाः ड़िंड़ौरी
अनुवाद - डॉ. विजय चौरसिया

0ध्धध्0

## बुंदेली लोकगीतों में सामाजिक चेतनाः-

नशीली वस्तुओं का सेवन एक बहुत बुरी सामाजिक बुराई है। जिसका आज व्यापक प्रचार है। इस बुराई से आज समाज त्रस्त है पीड़ित है और परेशान है। समाज के सभी वर्ग में किसी न किसी रुप में मादक वस्तुओं का प्रचलन है। धनवान, निंधन, पंड़ीत, मूर्ख, शिक्षित, अशिक्षित, बाल - वृद्व सभी इसके शिकार हें। यघपि समाज में इसको घृणित और हेय दृष्टि से देखा जाता है और इसकी निंदा भी की जाती है। परंतु इसके साम्राज्य की जड़ों को उखाड़ फेंकना सरल नहीं है। पूज्य महात्मा गांधी जी के आदेशों के अनुसार मादक वस्तुओं के निषेध का अपनी राष्ट्रीय सरकार की ओर से प्रयत्न भी किया गया था। परंतु उसमें विशेष सफलता नहीं मिली है। केवल कानून से ही यह बुराई रुक जाय यह कठिन बात है,इसके लिये तो जब राष्ट्रीय चरीत्र बहुत ऊंचे और सांस्कृतिक ढ़ंग पर विकसित होगा और जब समाज में आंतरिक चेतना जागृत होगी। तब यह बुराई अपने आप निंमूल हो जायेगी और यदि निंमूल न भी हो सकी तो उसका विकास तो निश्चित रुप से रुक जायेगा। हमारे लोक गीतकार इस बुराई के प्रति जागरुक हैं। लोक जीवन में यह कितनी बहुरुपणी होकर व्याप्त है। इन लोक गीतों में इसकी झांकी देखिये -

## 53. जो दुख सहो न जाय

दोहा - सखी सात घर सें चलीं, जुरी कुंआ पै आय।
अपने अपने पतिन के लच्छन रहीं सुनाय।।
टेक - सखी सब कहें हकीकत आई, अपन - अपन समझाई।
छन्द - मेरे पिया जू भांग बनाकर,लोटा भर पी जाते हैं।
बोलें न चालें खटिया पै पड़े - पड़े ऐंड़ाते हैं।
जब खाना खौं खांय सखी री ,सेर दोक खा जाते हैं।
जो मैं बोलों सखी उन्हें तौ लाले आंख दिखाते हैं।
उड़ान - जो दुख सहो न जाई।
छन्द - पियें चरस ड़ोलें बखरी में पिया हमारे के ये ढ़ंग।
लाली आंख बदन में आली ,जौलों नशा की रहे उमंग।
मोरी तरफ कों हेर सखी री ,बिना काम के करते जंग।
येई सोच में अरी सखी री बन बन कें हम होगई तंग।
उडान - ना कछु और सुहाईं
दोहा- सखी कहत सुन दूसरी ,पिया को आवै झींम ।
बारा आना भर सखी , खाते रोज अफीम।।
टेक - खा अफीम रयें ऐंड़ सेज पर कैसो करिये माई।
छंद - सूख गई सब देह पिया की ,रकत मांस न रओ शरीर ।
दिन भर खांसत रहें पौर में ,बड़ी कठिन है उनकी पीर।
कहैं मिठाई दूध मंगावैं,आंखिन में बरसत हें नीर ।
पउआ भर अब खान लगे हैं , देख उन्हें हो गई अधीर।।
उड़ान - सो मजा न हमनें पाई।
दोहा - हम कैसी करिये सखी, सुनों हमारो हाल ।
गांजा पीना कठिन है बन बन करौ बिहाल।।
टेक - परे बंग कर रहे जंग मुंह तन छाई पीराई।
छंद - बड़े भोर से आग चिलम की, ये तदवीर लगाते हैं।
भनसारे में खांसत, पड़े - पड़े चिल्लाते हैं।
सूख गया सब बदन रंज रहै ; उठा हमें तरसाते हैं।
कैसो करिये सेज पै, कभी नहीं वे जाते हैं।
उड़ान - ऐसे उमर गंवाई।
दोहा - पिया हमारे की सुनों का का कहिये बात।
आठ आना की रोज जे , बोतल भर पी जात ।।
टेक - पी प्याला बोतल कर खाली,चपटौ दयो उड़ाई।
छंद - गिरत परत लेव फिरत खोर में कछु कहत कछु कह आवै।
बरजावै जो नशा सखी री हमें नहीं देखो जावै।
तीन रोज लौ सुनौ सखी री , न उनको भोजन भावै।
बिन बोलें सें रोज गालियां, देत हमें दुःख दिखलावैं।
उड़ान - ई मां रंज उठाई।
दोहा - पिया हमारे की सखी, बहुत बुरी है चाल।

मदक पिये सें धन गयौ, कर दओ हमें बिहाल।

टेक - हाल चाल का कहिये , उनकी गई सब देह सुखाई।

छंद - बिलियां धोबें बड़े भोर सें चिपरन की कीते तदवीर।

अफीम घोरी, चड़ाई, फूंकत मां कंप रहो शरीर।

किमाम करके जासू डार ददयौ चुट्टा देखत गई पीर।

उड़ाते छींटा रहें हमेशा मंगावें खाने को वे खीर।

दोहा - कैसो करिये ये सखी,लगे दिखत में लाज।

कयें रंजदारी बड़ी, सैंया चंडूबाज।

टेक - चांडू पी गाफील बन बैठे,कानों इन्हें सिखाई।

छंद - चांडू कर तैयार बनाकें,गदिया तकिया लगवाई।

सरके पर कर पौर में दिया लयो उन लगवाई।

मुंह बाके रह गये लगाकें चरचरात चर -चर माई।

जो कछु बोलों मैं उनखौं,हमें झाम रहे बतलाई।

उड़ान - सौ नफा न उनमें पाई।

दोहा - चतुर सखी बोली वचन, तुम तो पर गई फंद।

पिनक नशा में पी मगन, हमें बड़ा आनंद।।

टेक - कह दुज सखुन 'महीपत' गाकें सबकी दशा सुनाई।

0ध्ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थ :-

सात सहेलियां पनघट पर जमघट कर अपने - अपने पतियों की बुरी आदतों के बारे में एक दूसरे को बतलाती हैं। सभी सहेलियां अपनी - अपनी समझ से अपने पतियों की बुरी आदतों को बतलाती हैं। एक सखी कहती है - मेरे पति देव प्रति - दिन एक लोटा भांग बनाकर पी जाते हैं। वे भांग पीकर चुपचाप खाट पर लेटकर अपने हाथ - पैर अकड़ाते रहते हैं। वे जब खाना खाने बैठते हैं, तो वे दो सेर वजन का भोजन खा लेते हैं। उनसे यदि कुछ बोलो तो वे मुझे लाल - लाल आंख दिखलाते हैं। हे सखी मुझसे यह दुख सहा नहीं जा रहा है।

दूसरी सखी अपने पति के व्यसन के बारे में बताती है। वह कहती है मेरे पति चरस पीते हैं, वे चरस पीकर दिनभर बखरी में टहलते रहते हैं। उनको जब तक नशा रहता है तो उनकी आंखें लाल - ला दिखती हैं। वे जब मेरी ओर देखते हैं तो बिना किसी कारण के वे मुझसे विवाद करते रहते हैं। हे सखी मैं यही सोच - सोच कर परेशान हो रही हूं।

तीसरी सखी कहती है - हे सखी मेरे पति अफीम खाते हैं। वे प्रतिदिन बारह आना वजन की अफीम खाकर झूमते रहते हैं। अफीम खाने के कारण उनका शरीर सूख गया है। उनके शरीर में खून और मांस बिलकुल नहीं रह गया है। वे दिन भर आंगन में बैठकर खांसते रहते हैं। उनका यह दुख मेरे से देखा नहीं जाता। वे अफीम खाने के बाद मुझसे मीठा और दूध की मांग करते हैं। उनकी आंखों से आंसू बहते रहते हैं। अब तो वे भोजन भी कम करने लगे हैं। वे मात्र एक पाव भोजन करने लगे हैं। यह देखकर मुझे बहुत दुख होता है।

चौंथी सखी कहती है - हे सखी मैं क्या करुं। तुम मेरे हाल सुनो - मेरे पति गांजा पीते

हैं। वे जब गांजा पीते हैं, तो उनके मुख में वेदना दिखाई देती है। ये रोज सुबह चिलम में आग ड़ालकर चिलम जलाते हैं। वे बिस्तर में पड़े - पड़े खांसते और चिल्लाते रहते हैं। उनका पूरा शरीर सूख गया हैं। जिससे मुझे बहुत दुख होता हैं वे रात को सोते समय मेरे बिस्तर पर भी नहीं आते। मैं क्या करुं।

पांचवीं सखी कहती है- हमारे पति देव के हाल सुनो - वे रोज आठ आना की बोतल भर शराब पी जाते हैं। वे शराब पीकर नशे में यहां - वहां घूमते रहते हैं। वे कुछ कहना चाहते हैं और कुछ कह जाते हैं। मैं उनको शराब पीने के लिये मना करती हूं । मुझे उनका दुख देखा नहीं जाता। वे तीन दिनों से खाना भी नहीं खा रहे हैं। बिना बोले वे मुझे गालियां देते रहते हैं। मुझे उनका यह दुख देखा नहीं जाता।

छठवीं सखी कहती है - हे सखी मेरे पति देव के आदत बहुत बुरी है। वे मदक पीते हैं। जिससे मैं परेशान हो गई हूं। उनका पूरा शरीर सूख गया है। वे सुबह उठते ही मदक के लिये कटोरियां धोने लगते हैं। वे अफीम घोरकर पी जाते हैं और जब वे फूंकते हैं तो उनका शरीर कांपने लगता हैं। उनके मुंह से थूंक छिटकता रहता है। वे खाने के लिये हमेशा खीर मांगते हैं।

सातवीं सखी कहती है - हे सखी मुझे तो कहने में शरम लग रही है मेरे पति देव चंडू बाज हैं। यह चांडू पीना ना जाने इनको किसने सिखा दी है। ये चांडू तैयार करके गद्दा और तकिया लगाकर चांडू पीते हैं। उस समय ये मुंह फाड़कर रह जाते हें। उनको यदि कुछ बोलो तो वे हमको ही समझाने लगते हें।

तब उनमें सबसे होशियार सखी कहती है मेरे पति जब नशे में मगन रहते हैं तो मुझे बड़ा आनंद आता है।

यह दृश्य चित्रण कितना स्वाभाविक तथा यथा तथ्य है। पनघट पर जमघट है। सात सखियों का,अपने - अपने नशाबाज पतियों के सम्बंध में बातें चल रही हैं। विशेषता यह की सातों भिन्न-भिन्न प्रकार के नशों के शौकीन हैं। पहले का शौंक है भांग पीना, दूसरे का चरस, तीसरे का अफीम, चौंथे का गांजा, पांचवे का शराब, छठवें का मदक और सातवां पति है चांड़ूबाज। इन सातों प्रकार के नशों का क्या प्रभाव पड़ता है,लोकगीतकार ने इसका स्वभाविक चित्रण किया है। लोक जीवन की यह झांकी कितनी शोचनीय,चिन्तनीय और विचारणीय है।

संकलन : गुप्तेश्वर द्वारका गुप्त अनुवाद : डॉ. विजय चौरसिया

## 54. नशा मुक्ति

नशा कौनऊ हो ऊमें नैयां भलाई
कै बौल मेरे भाई.........
तन खौं जा नाश करै लालच हत्यारी
एक बेरे लग्गई तौ छुटै न छुटाई
कै बोल मेरे भाई.........
चार जनन सेंगरें मुस्कल से बैठ पाउत
ईके तो संग रे में होवै बुराई
कै बोल मेरे भाई.........
ऐंसो रस भर चरोंटी ईकौ ज।ै जान लेव

ई नं कहौ कीसेंनें चुरिया फुरवाई
कै बोल मेरे भाई.........
सांसऊ हिलगंट बिर्दं सुरजैं सुरजाओ नैं
काई सें ईको असर देत है दिखाई
कै बोल मेरे भाई.........
कीसें कयें रामधई भुकतत हैं ओई सई
जीनें जा गैल तकौ ईकी मतमाई
कै बोल मेरे भाई.........
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थः-**

मेरे भाई नशा किसी भी प्रकार का हो उसमें बुराई है । नशा करने वालों का शरीर नष्ट हो जाता है। नशा की आदत यदि एक बार लग जाती है। तो मुश्किल से भी छूटती नहीं है। नशा करने वालों के पास चार लोग मुश्किल से बैठ पाते हैं।इसके कारण कितनी औरतें विधवा हो गई हैं। जिसने नशा किया है। वह अपने जीवन में कष्ट भोग रहा है। जो भी इस रास्ते पर चला उसकी बुद्वि मारी गई है।

संकलन : गुप्तेश्वर द्वारका गुप्त अनुवाद : डॉ. विजय चौरसिया

## 55. कै गये गांधी यार दारु है दुश्मन हमारी

कै गए गांधी यार, दारु है दुश्मन हमारी
धन्य हमारो देश जौ,धन बापू से पूत
जी के हिरदे भीतरे,दास बनी अछूत
बौद्व धरम औ उपनिषद,मनुस्मृति के पेज
कुरान शरीफ कस राखियो दारु से परहेज
बैज्ञानिक सब करत हैं,आजकल के यार
दारु सेवन ना करौ ,छोड़ देव संसार
0ध्ध्ध्0

**गीतार्थः-** ये भाई शराब का सेवन करना बंद कर दो।गांधी जी ने कहा है - शराब हमारी दुश्मन है। धन्न हो हमारे देश का और धन्य हो गांधी जी जैसे सपूत का जिन्होंने शराब को हृदय से नकारा हैं बौद्व धर्म और उपनिषद तथा मनु स्मृति के पन्नों एवं कुरान शरीफ में भी शराब से परहेज किया गया है।देश के सभी वैज्ञानिक भी कहते हैं - हे भाई शराब पीना छोड़ दो नहीं तो यह शरीर तुम्हारा साथ छोड़ देगा।

संकलन - गुप्तेश्वर द्वारका गुप्त अनुवाद : डॉ. विजय चौरसिया

## 56. पी के आये दारु वे मोय भयो रंज

पीके आये दारु वे मोय भयो रंज
रसवादी के भौंरा रे..........

एक दिना आये ते, पीके लहराये ते
गिरे भरभरयाये ते, जहां धरो गंज
गिरतई से चोट लगी, देखन खैं मैंई भगी
और संग नंद जगी, भओ सुक भंग
घर भर में शोर मचो,सांचऊ नओ खेल रचो
नंगे हो खीब नचो , देख भयो रंज
आज भई गत बतात,आंख जौन देख आत
सांसी लिख ओई बात,सुन लईयो कंज
रसवादी के भौंरा रे............

0ध्ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थः-

उस दिन मेरे पति शराब पीकर आये तो मुझे बहुत दुख हुआ। वे शराब के नशे में भरभरा कर गिर गये । वहां पर रखा था गंज, उससे टकराकर वे गिर गये, गिरते ही उनको चोट लगी।उनको देखने में भागी तो मेरे पीछे मेरी नंद भी भागी और घर भर में शोर मच गया।इसे देखकर मुझे बहुत दुख हुआ। आज मेरे साथ जो बीता मैं तुमको बता रही हुॅं तुम सभी सुन लो।

संकलन - गुप्तेश्वर द्वारका गुप्त        अनुवाद : डॉ. विजय चौरसिया

## 57. दारु होवै ना जा साजी

दारु होवै न जा साजी, मोरी मानौ रे पिया
कही मानौ रे पिया....
सो जा दारु करावै लड़ाई पिया
सो लड़ाई रुकै,मोरी मानौ रे पिया
दारु तनखा हमारी लै जावै पिया
सो तनखा बचाव मोरी मानौ रे पिया
टोरै दारु तुम्हारे शरीर पिया
सो शरीर बचाव मोरी मानौ रे पिया
दारु रोग लै आवे अनेक पिया
रहैं सुक सैं सबई मोरी मानौ रे पिया
सुनो प्रान आधार मोरे प्यारे पिया
मोरी सौतन दारु छोड़ौं कही मानौ रे पिया

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थः-

हे प्रिय पति देव शराब बुरी चीज है। इसे पीना छोड़ दो। शराब पीने से लड़ाई - झगड़ा होता

है। मेरी बात मानिये, शराब पीना छोड़ दें, जिससे लड़ाई झगड़ा बंद हो जावे। शराब में तुम्हारी पुरा वेतन खर्च हो जाता है । आप अपना वेतन बचायें। शराब पीने से आपका शरीर नष्ट हो रहा हैं आप शरीर की रक्षा करें। शराब पीने से अनेकों प्रकार की बीमारियां हो रही हैं आप सुख से रहें।सुनो मेरे जीवन के आधार प्रिय पति देव - मेरी सौतन इस शराब को त्याग दो और सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करो।

संकलन - गुप्तेश्वर द्वारका गुप्त अनुवाद : डॉ. विजय चौरसिया

## 58. देखो दारु पिये शरीर

देखो दारु पिये शरीर, करे सीना जोरी
ऐंसी तलब लगत है इनखों,तनकंऊ बंधै न धीर,
होतई सें संझा जे देखो,फिरें कलारी वीर
दारु पी - पी बाहर निकरें, बनैं बहादुर वीर
नाली नरदन खांयें कुलाटें,हैं ऐंसें मति धीर
सुअर चंद खों मारत जावें,लखें श्वान बेपीर
सूंगें टांग उठा के इनखों, ठांड़ी देखें भीर
गैल चलत ठाड़े सब होवैं, दशा देख गंभीर
भैया कहत पियन वारन के, ऐंसई होत नजीर
बड़े पिवैया सुन लो भैया,समझ लेव तासीर
साहूकार की बही सें,अब लौ छिक न पाई लकीर

0ध्ध्ध्0

गीतार्थः-

शराब पीने वालों के शरीर को शराब पीने लगती हैं जब इसकी तलब लगती है। तो मन को चैन नहीं रहती।शाम होते ही शराबी कलारी पहुंच जाता है। शराबी शराब पीने के बाद बहादुरी दिखाते हैं। फिर नाली में गिर जाते हैं।वे शराब के नशे में सुअर और कुत्तों को मारने लगते हैं। कुत्ते भी टांग उठाकर इनके ऊपर पेशाब कर देते हैं। लोग देखते रहते हैं। शराब पीने वाले भाईयो शराब में बहुत सी बुराईयां हैं। इसे त्याग दो।

संकलन - गुप्तेश्वर द्वारका गुप्त अनुवाद : डॉ. विजय चौरसिया

## 59. अपनी दशा कराहों न

जे गौने के आये लिबौआ,मैं गौनों करवाहों ना
ऐंसे घर में जाकें बिन्ना ,अपनी दशा कराहों ना
ई घर पानी पी - पी रहहों, ऊं घर कौरा खाहों ना
जो कोऊ जिद में मोय पठैहौ, लौट के जिन्दा आहों ना
उनखों प्यारी दारु लग रई, उनको प्यार मैं पाहों ना
पैली बेरा गई सो जानी, बे बातें कओ चाहौं ना
दारु छोड़ कहौ सजनी री ,तुमें छोड़ मैं जाहों ना
दारु छोड़ सजन लै चलहौ,तौ अपजस मैं गाहों ना

0ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थ :

मेरी ससुराल से लिबौआ मुझे लेने आये पर मैं उस घर में नहीं जाऊंगी। मुझे शराबी के घर में जाकर अपनी हालत खराब नहीं करवानी। इस घर में मैं पानी पी - पी कर रह जाऊंगी पर उसके घर का भोजन मुझे करना नहीं है।यदि आपने उसके साथ मुझे जबरन भेजा तो मैं जिंदा लौटकर वापस नहीं आऊंगी। उनको तो मुझसे ज्यादा शराब प्यारी है। जब मैं पहली बार उनके घर गई तो मुझे मालुम पड़ा। यदि मेरे पति देवता शराब पीना छोड़ दें तो मैं खुशी - खुशी उनके साथ चली जाऊंगी और उनकी बुराई भी नहीं बताऊंगीं।

संकलन - गुप्तेश्वर द्वारका गुप्त अनुवाद : डॉ. विजय चौरसिया

## 60.सुनौं फूंक रये पैसाखौं जो बोतल बारे पानी में

सुनौं फूंक रये पैसा खौं, जो बोतल बारे पानी में
रो रये भरी जवानी में
उनके दिल खें रये न चैन, खलबल मची रहै दिन रैन
घर बाहर रहवें बैचैन
पकरत सूद सुंगर सी जानौं,चे़ नशा की घानी में
फटे हाल से खुदई रहें वे,घरबारी खों चार कहैं वे
ऐसी रस्ता सुनों गई वे
पंद्रा दिन की परी लांगनैं,आओ बुढ़ापो जुआनी में
लरका रोवत भूख के मारे,बिटिया ड़री ताप के मारें
चारों तरफ मची गिदवारें
जिनसै लैके खाई उदारी,वे ढ़ाड़े मेहमानी में
घेरे रोग रहत दस ठैंया,कैसे पार लगत है नैया
ड़रे - ड़रे घोकत हैं भैया
ऐसे दिन बीत गये,मन करजे खींचातानी में
हम जा कै रये सांसी सुन लो,पैलऊ मन में जो सब गुन लो
खुदई गैल फिन अपनी चुन लो
चेत जाओ नें गैल चलौ बा कोऊ रे अनजानी में
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :-**

तुम शराब की बोतल के लिये क्यों अपना पैसा बरबाद कर रहे हो। तुम भरी जवानी में रो रहे हो।शराब पीने वाले के दिल में चैन नहीं रहती। वह हमेशा बेचैन रहता है।वे दूसरों से पैसा उधार लेकर उसे नशे में खर्च कर देते हैं।वे फटे - पुराने कपड़े पहनते हैं और अपनी पत्नी को भला - बुरा कहते हैं ।शराब के कारणा वे पंद्रह - पंद्रह दिनों तक खाना नही खाते , जिससे भरी जवानी में बूढ़े दिखने लगते हैं।उनके बच्चे भूख के कारणा बिलखते रहते हैं और उनकी बच्ची बुखार में तप रही है। उसने जिनसे पैसा उधार लिया वे घर के सामने आकर अपना पैसा मांग रहे हैं। नशा करने वालों को अनेकों प्रकार के रोग घेरे रहते हैं।न जाने उनका जीवन कैसे चलेगा। वे ड़रे ड़रे से सोचते रहते हैं । इस प्रकार से घर की गृहस्थी कैसे चलेगी। हम जो कह रहे हैं उसे अच्छे से मन में धर लो। तुम अपना रास्ता खुद चुन लो और गलत रास्तों पर मत चलो।

संकलन - गुप्तेश्वर द्वारका गुप्त अनुवाद : डॉ. विजय चौरसिया

## 61. पीवौ छोड़ दो सब यार

पीवौ छोड़ दो सब यार,
जा दारु नौनी होवे ना.....
बड़े भाग से पाओ जो तन,
ईखों तना सवारौ
नई जानत कै दिन की जिंदगानी
विरथा नैं खो ड़ारौ
कछु देखो सुनों रे संसार
जा दारु नौंनी होवै न..........
चढ़ी जुआनी में सांसऊ तुम ,
संयम नियम निबाहौं
असमय उमर ढ़ली सी लगहै
फिर का कर पाहौ
लावै असमय बुढ़ापौ,
सुनौ यार जा दारु नौनी होवे न...........
तुमसै आज बता रैई भैया,
सांची मोरी मानौ
जो न चैतहौ आंगू सै तो
की लौ देऔ ड़रानों
आदत लईयो रे अपनी सुदार,
जा दारु नौंनी होवे न .........
अपने दिल से कबई पूंछ लो
मानों नई बिरानी
धरम - करम सब माटी हौवे
ऐसे गुन कौ पानी
ई सौ होत तुमारौ बंटाढ़ार,
जा दारु नौंनी होवे ना............
जिनने दारु पी है भैया,
गत उनकी तुम देखो
दारु नै उनखों पी ड़ारौ,
कित्ते मरे सरे खौं
जा दारु नौंनी होवे न.......

0ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :-**

मेरे मित्र तुम शराब पीना छोड़ दो। शराब अच्छी चीज नहीं है। बड़े भाग्य से यह शरीर मिला है। इसे संभाल कर रखो। न जाने कितने दिनों का जीवन है। इसे व्यर्थ में न गंवाओ। इस संसार

में आये हो तो कुछ देखो सुनो। यह शराब अच्छी चीज नहीं है।इस चढ़ती जवानी में तुम नियम और संयम से रहो। शराब पीने से तुमको असमय ही बुढ़ापा आ जावेगा तो फिर तुम क्या करोगे। इसलिये मेरे मित्र सुनो यह शराब खराब चीज है। मैं आज तुमको बता रहा हूं भाई मेरी बातों को सच मानो। यदि तुम अभी भी सर्तक नहीं हुये तो फिर किससे कहोगे। तुम अपनी आदत सुधार लो क्योंकी शराब बुरी चीज है। तुम स्वतः अपने दिल से पूंछो। शराब पीने से धर्म - कर्म सब नष्ट हो जाते हैं। इससे तुम्हारा बंटाधार हो जावेगा। जिसने शराब का सेवन किया है तुम उसके हाल देखो। शराब ने उनके शरीर को खोखला बना दिया है और न जाने कितने लोग शराब पीकर मर गये। इसलिये मेरे मित्र शराब मत पियो क्योंकी शराब बुरी चीज है।

संकलन - गुप्तेश्वर द्वारका गुप्त अनुवाद - डॉ. विजय चौरसिया

## 62. बलमवां विनती सुन लैयो

दैयो दारु पीवो छोड़
बलमवां विनती सुन लईयो
घर में नैया चून चनन कौ
लग्गई मेहमानन की होड़
तुमरे इतन इज्जत घर की
ईखों दईयो नै तुम तोड़
पुरा परोसी नाव धरें ना
रैयो सबसें नातौ जोड़
सरकारी फरमान निकर गओ
देव अब जीवन खों नओ मोड़
सांसी कै रओ चेत जाव अब
देखौ परखे जो सांचो निचोड़
0ধধধধধ্0

गीतार्थ :-

हे प्रिय पति देव जी आप शराब पीना छोड़ दें। घर में खाने को आनाज नहीं है और घर में मेहमानों की भीड़ लग गई है। आप शराब के नशे में घर का सम्मान नष्ट मत कर देना। आप ऐसा कोई काम मत करना, जिससे पड़ोस के लोग आपका नाम धरें। शासन से भी आदेश निकल गया है कि शराब पीना स्वास्थय के लिये हानिकारक है। अब आप जीवन को नया मोड़ दें। आपके पास अभी भी समय है। आप सचेत हो जावें और शराब पीना छोड़ दें।

संकलन : गुप्तेश्वर द्वारका गुप्त अनुवाद : डॉ. विजय चौरसिया

## 63. कही मान लो छोड़ो नसे बाजी

कही मान लो छोड़ो नसे बाजी, कही मान लो
चरस पिये धरम,करम,लाज शरम जाय,
ज्ञान जाय ध्यान जाय,मान घट जाय

कही मान लो छोड़ो नसे बाजी........
भंग पिये बादी हो जात है सब अंग,
मदरा गांजो कर देत पैसे से तंग
कही मान लो छोड़ो नसे बाजी...
मदिरा पिये से हो जात है बदनाम,
थुक - थुक तम्बाखू और बुरो काम,
कही मान लो छोड़ो नसे बाजी.........
0ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ -**

पत्नी अपने पति को समझा रही है।कि आप नशा करना छोड़ दीजिये। चरस पीना , भंग खाना कोई भी नशा अच्छा नहीं हैंभांग से शरीर में बादी बढ़ती है।पैसों की परेशानी अलग से हो जाती है।तम्बाखू खाने से दिन भर थूंकते रहना पड़ता है।इसलिये आप कोई भी नशा न करें। ऐसा मेरा कहना है।

संकलन - पुष्पा खरे अनुवाद : डॉ. विजय चौरसिया

## 64. छोड़ो छोड़ो रे तमाखू यार

छोड़ो छोड़ो रे तमाखू यार, छोड़त काये नईयां
ईकी तलफ होत बेकार,छोड़त काये नईयां.......
ई के खातई मों भर जावै ,बेर बेर जा थूंकन आवै
गल छलुआ ई संग बरयावै,असर जा अपनों ऐंन दिखावै
मूंड़ चढ़ै उर चढ़ै बुखार,छोड़त काये नैंया............
साफ - सफाई गई भाड़ में,जात पांत सब जाय ब्याड़ में
बढ़ा गई तो तकत आड़ में,कर्रई रई ना मांस हाड़ में
सबसे मांगत हांत पसार, छोड़त काये नैंया................
तन खों ऐसो जाई नसाबै,सांस लेत दूभर हो जावै
थूंक - थूंक खपरा भर जावै,ऐसौ कफ जो रोज गिरावै
छिपुलिया करत शरीर सब यार,छोड़त काये नैंया
गुड़मुड़ानें डारें रोवै,रात रात भर नींद न आवै
ऐसौ अपनो असर जनावै,खांसी ईसें खूबई आवै
पल तनकऊ बंटे ना यार ,छोड़त काये नैंया
जा तौ खांसी भूंख बुजावै,आंखन बीच रतौंधी लावै
घर में खलबल खूब मचावै,कोरी उमर बुढ़ापा लावै
ईकी बड़ी बिकट फटकार,छोड़त काये नैंया

हमाई कही मान जो लैहौ,तुम सांसऊ फिर सुक में रैहौं
नइ्र तर तौ पीछे पछतैहौ,उर फिन दोस खुदई खैं दैहौ
ईसैं मानौं कही हमार, छोड़त काये नैंयां
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :-**

मेरे मित्र तुम तम्बाखू क्यों नहीं छोड़ते।इसकी आदत बहुत बेकार होती है। इसके सेवन से मुंह भर जाता है जिसके कारण बार - बार थूंकने जाना पड़ता है।इसके सेवन से सिर दर्द और बुखार आ जाती है। इसके सेवन से घर में साफ - सफाई नहीं रहती । यह जब खतम हो जाती है तो लोग आजू - बाजू में किसी दूसरे तम्बाखू खाने वाले को तलाशने लगते हैं। इसके सेवन से मांस का कड़ापन समाप्त हो जाता है। जब तम्बाखू की तलब लगती है तो किसी के भी सामने हाथ पसार कर मांगने लगते हो। यह शरीर में ऐसा घर कर लेती है कि सांस लेना भी मुश्किल होने लगता है। इसके सेवन से रात - रात भर नींद नहीं आती,रात को दिखना बंद हो जाता है।कम उम्र में ही बुढ़ापा के लक्षण दिखने लगते हैं। हम कह रहे हैं तुम यह बुरी आदत छोड़ दो नहीं तो तुमको बाद में पछताना पड़ेगा। इसलिये मेरे मित्र तुम तम्बाखू का सेवन करना छोड़ दो।

संकलन - गुप्तेश्वर द्वारका गुप्त    अनुवाद - डॉ. विजय चौरसिया

## 65. जिनके पियत तम्बाकू सैंया

जिनके पियत तम्बाकू सैंया,उन तिरियन सुख नइयां।
खांसत खांसत रुई सी धुनकत,परतन पलका मइयां।
टन्नांकें टैया से ड़ारें,मांझ मंझौटे मइयां।
सगुन कहै ऐसिन की चरचा,इतै करौ न गुइयां।
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थः**

किसी स्त्री का पति तम्बाकू पीता है। वह इस बात की चर्चा अपनी सखी से कर रही है। उसकी सखी ऐसे लोगों से बड़ी घृणा करती है।वह उनकी चर्चा भी नहीं सुनना चाहती। उसका कथन है - जिनके पति तम्बाकू पीते हैं,उन्हें जीवन में सुख नही मिलता,वे पलंग पर लेटते ही खांसने लगते हैं और उनके मुख से रुई धुनकने जैसी आवाज निकलने लगती है, टन्ना कर ( खांसते - खांसते क्लान्त होकर कुछ क्षणों के लिये विसुध सा हो जाना ) टैया (बड़ी कौंड़ी ) के बराबर बलगम उगल देते हैं। ऐसे लोगों की चर्चा करना ही बेकार है।

संकलन एवं अनुवादः श्याम सुन्दर बादल
( संदर्भ ग्रंथः बुंदेली का फाग साहित्य, आदिवासी लोक कला परिषद)

## 66. गाँजौ पियौ न पीतम प्यारे

गाँजौ पियौ न पीतम प्यारे
गाँजौ पियौ न पीतम प्यारे ,जर में कमल तुमारे ।
जारत काम बिगारत सूरत,सूखत रकत नियारे।

जो तौ आय साधू सन्तन कौ,अपुन गिरस्थी वारे।
ईसुर कात छोड़ दो ईकों, अबै उमर के वारे।
0ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :**

किसी गांजा पीने वाले को उसकी पत्नी कहती है मेरे प्रीतम गांजा मत पियो,यह कलेजा को जला देगा,इसके पीने से काम भी बिगड़ जायेगा और तुम्हारी सूरत भी, यह तो साधू - संतों के पीने की चीज है अपन तो घर - गृहस्थी वाले हैं।इ्रसुरी कहते हैं इसको छोड़ दो तुमको कई वषरें तक जीना हैं

संकलन एवं अनुवादः श्याम सुन्दर बादल
( संदर्भ ग्रंथः बुंदेली का फाग साहित्य, आदिवासी लोक कला परिषद)

## 67. चाय पी पी के दूध की कर दई मंहगाई

चाय पी पी के दूध की कर दई मंहगाई
बड़ी आफत जा आई.....
बेंचे दूध घरे न खावें,लड़का वारे बूंद न पावें
चाहे पाहुन लो आ जावें
देवी देवता लो होम देशी घी के न पाई
बड़ी आफत जा आई........
घर को बेंचे मोल को धरते,रिश्तेदारों से छल करते,
जे नई बदनामी से ड़रते,
ड़ालड़ा से काम चले हाल का सुनाई
बड़ी आफत जा आई
घी और दूध के रहते भूखे, जब तो बदन परे हैं सूखे
भोजन करत रोज के रुखे
स्वाद गोरस बिन भोजन को समझो न भाई
बड़ी आफत जा आई
देशी घी को हेरत फिरते, चालीस रुपया सेर बताते,
ड़ालड़ा तो खूब पिलाते,
बेईमानी की खाते हैं खूब जे कमाई
बड़ी आफत जा आई
जब से चलो चाय को पीना, जिनको मिलै न धड़के सीना
आदत वालों का मुश्किल है जीना,
सुबह शाम उनको परवे न रहाई,
बड़ी आफत जा आई
अपना बने चाय के आदी, चाले स्पेशल को स्वादी,
कर दई गौरस की बरबादी,
बीच होटल में जहां देखो चाय है दिखाई,
बड़ी आफत जा आई

0ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :**

इस लोक गीत में चाय के अधिक चलन से लोग परेशान हैं।उनका कहना है कि चाय का पीना जबसे शुरु हुआ है तबसे बच्चों तक के लिये दूध मिलना मुश्किल हो गया है।जिससे बच्चों की स्वास्थय पर असर पड़ा।जिन लोगों की चाय पीने की आदत पड़ गई है।जब तक वे चाय नहीं पीते, उनकी तबियत खराब होने लगती है। होटल में चाय सादा और स्पेशल दोनों प्रकार की मिलती है।अतः सभी लोग चाय पीना कम करें।

संकलन - पुष्पा खरे अनुवाद : डॉ. विजय चौरसिया

## 68. पिया हो गये तबाह सट्टा हार के

पिया हो गये तबाह सट्टा हार के
फिरन लगे हाथ झार के
सबरी मिटा गिरस्थी डारी,घर में बचे न लोटा थारी
रोवे लड़कन की महतारी,गहना जेवर सब लै गये उतार कें
फिरन लगे हाथ झार के...
रुपया पैसा सबरे हारे,लड़का बिटिया फिरें उघारे
अब तो फिरें हाथ पसारे,खाना खरचा खें बल पे उधार कें
फिरन लगे हाथ झार के....
हम तो समझा समझा हारे ,करजा ऊपर से कर ड़ारे
उलझन में हैं प्राण हमारे,कछु घर में नइ बो सब हार के
फिरन लगे हाथ झार के...
अच्छे - अच्छे सब पछतावें,सट्टा जुआ से पार न पावें
सब की नजरन से गिर जावें,काम करियो तुम सोच विचार के
फिरन लगे हाथ झार के.....
पिया हो गये तबाह सट्टा हार के
फिरन लगे हाथ झार के........

0ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ -**

एक पत्नी अपने सट्टा खेलने वाले पति से परेशान है।पत्नी पति से कह रही है कि जबसे तुमने सट्टा खेलना शुरु किया है। तबसे हमारी पूरी गृहस्थी बरबाद हो गई। तुमने मेरे गहने - जेवर बेच ड़ाले। अब बच्चों को पहनने के लिये कपड़े तक नहीं सिलवा पा रहे हैं।उधार मांगकर गुजारा चल रहा हैं मैं आपको कहां तक समझाऊं मुझे सबकी नजरों में नीचा देखना ड़ता हैं तुम अब भी विचार करो और यह जुआ और सट्टा खेलना बंद कर दो।

संकलन - पुष्पा खरे अनुवाद : डॉ. विजय चौरसिया

ईसुरी विलक्षण प्रतिभा के कवि थे। कविता उनकी सहज वाणी थी। जिसमें बुंदेलखंड़ का प्रेम - व्यवहार , रीति, नीति, एवं जीवन की अनुभूतियों के श्रोत ने वह धारा बहाई जो यमुना, नर्मदा, चम्बल और टोंस के घेरे को तोड़कर आज के बुन्देली बोली एवं साहित्यक धरातल पर

सर्वत्र समान रुपेण तरंगित दिखाई पड़ रही हैं

कवि ईसुरी की भाषा विशुद्व बुंदेली है। जिसमें मिठास लालित्य माधुर्य का बाहुल्य हैं इस प्रेम की अद्भुत पुजारी ने अपनी चौकड़िया छंद विधा के माध्यम से लोगों तथा बड़े - बड़े कवियों को भी अपनी ओर आकर्षित किया हैं हिन्दी से जुड़े अन्य भाषा - भाषियों को भी ऐसे महान बुन्देली कवि की काव्य कला से परिचित होना अति आवश्यक है और आवश्यक है उनके द्वारा रची गयीं चौकड़ियां जो हमें सामाजिक चेतना प्रदान करती हैं।

69. पर गओ बेईमानी कौ पारो,कौ करहे - निपटारो।

मानस बड़े भाग से हौंवें,रजउ छोड़ दो लोवै।
मिल के चाल चलौ दुनिया में,सक से राख घरोवै।
जिन्दगानी को कौन भरौसो,जुबन जात रथ रोवै।
भरे तला में सपरत ईसुर,नंगे कहां निचोवै।

0ध्ध्ध्0

गीतार्थः तुम सभी प्रकार के लोभ छोड़ दो,हे प्रियतमा-रजउ?
यह मनुष्य योनी बड़े भाग्य से मिलती है। इसलिये इस दुनिया में मिलकर लो, सभी के साथ अच्छा प्रेम व्यवहार करो।इस जिन्दगी का कुछ भरोसा नहीं है,जवानी के जाते ही रोना ही शेष रह जाता है।
ईसुरी कहते हैं-एक दिन इस संसार रुपी तालाब में सभी को स्नान करना है। तब तुम्हारे साथ कुछ भी नहीं होगा,यहां तक की तुम वस्त्रहीन कर दी जाओगी, तब निचोने के लिये तुम्हारे शरीर में एक भी वस्त्र नहीं होगा।

संकलन एवं अनुवादः माधव शुक्ल मनो

## 70. अपनी का काऊ से कानें

अपनी का काऊ से कानें,कए से का मिल - जाने।
मुंदी रहन दो ,परत न खोलो कौ बदनाम बखाने।
जैसी तुमने करी रजउ,वा काए गम - खाने।
जा थैली की चोट ईसुरी,बनिया को दिल जानें।

0ध्ध्0

गीतार्थः
अपनी बात किसी से भी नहीं कहना है। क्योंकी कहने से क्या मिल जायेगा,वह बात मन ही मन में रहने दो ,उसका रहस्य मत खोलो, यदि रहस्य खोला तो अपनी ही बदनामी कराओगे। हे रजऊ,प्रियतमा जैसा तुमने किया है। उसके लिये मुझे ही गम खाना है। जीवन भर की कमाई से भरी उस थैली के चले जाने का दर्द भला कौन है ?जो समझता है।
ईसुरी कहते हैं - वह दर्द अंदर ही अंदर है,बाहर नहीं दिखता हैं जिसे बनिया का दिल ही जान सकता है।

संकलन एवं अनुवादःमाधव शुक्ल मनोज

## 71. तुम खाँ कात लगत हैं जाडे

तुम खाँ कात लगत हैं जाड़े,बरसा के दिन आड़े
ई अषाढ़ में चूके कब - कब, कीनें भर लये भांड़े
ई बरसा से कब कोऊ लागो, जोगी राजा पांडे
ईसुर कात हमें का करनें, रोज करे रऔ ठांड़े
0ध्ध्ध्0

गीतार्थ :

भैया बरसात के दिन आ गये, क्या तुमको इस मौसम में भी ठंड़ लगने लगी है। इस अषाढ़ के चूकने पर क्या ा कोई भी किसान अनाज का भंड़ार भर सकता है? इस बरसात से ही सभी को सभी कुछ मिलता है, सभी का इससे नाता है। चलो , खेत जोतो और बीज बोओ।
ईसुरी कहते हैं- यदि मेरे कहने का बुरा लगता है , तो मेरी बला से ,मुझे नहीं तुमको ही मरना है। रोज ही अपने बैलों को खड़ा किये रहो मुझे क्या करना है।

संकलन एवं अनुवादः माधव शुक्ल मनोज
(साभारः चौमासा.मध्य प्रदेश आदिवासी लोक कला अकादमी वर्ष 14 अंक 45 नवंबर 97)

## 72. घर में नाज नईं खैवे खों

घर में नाज नईं खैवे खों,ना बरबरी - रेबे - खों
बड़ी शान से लें तकाजो,ना पूंछें देवे खों
नोंकदार हैं,बड़ी बात के ,चूकत न कैबे - खों।
ईसुर अंत गांव भग चलिये ,उतै न कोऊ लैवे खैं।
0ध्ध्0

गीतार्थ :

खाने के लिये आनाज नहीं है, रहने के लिये खुद का मकान नहीं है। फिर भी बड़ी शान से दिया गया तकाजा सुन लिया जाता है, इतने पर भी चुकता करने के लिये पास में कुछ भी देने को नहीं है। वे तो बड़ी - बड़ी बातें करने में आक्रोश भरी धमकी देने में जरा भी नहीं चुकते। इस तरह साहूकार द्वारा दिया गया श्रृण उसका ब्याज रुपी भूत - सताने के लिये और परेशान करने के लिये रह जाता है,
ईसुरी कहते हैं- यदि ऐसा व्यवहार कहीं हो । तो उस गांव को छोड़कर दूसरे गांव में बस जाओ, जहां तकाजा करने वाला कोई नहीं हो।

संकलन एवं अनुवादः माधव शुक्ल मनोज
(साभारः चौमासा.मध्य प्रदेश आदिवासी लोक कला अकादमी वर्ष 14 अंक 45 नवंबर 97-फरवरी 98)

## 73. छूट जात जगत से नातो

छूट जात जगत से नातो ,चल कौल दे तातो।
बैठे रहे खाट के ऐंगर को लओ बांट पिरातो।
बैठो रओ सगो संबंधी,लगा न दीनो हांतो।
पांछू देख लगौ को संगे,भाई बंद बता दो।
पाप पुण्य को धरौ ईसुरी, धरमराज कैं खातो
0ध्ध्ध्0

**गीतार्थः**

इस संसार से संबंध छूट रहा है। कोई साथ देने के लिये तैयार नहीं है। सभी पलंग के पास बैठे रहे, किसी ने भी दुख ,दर्द,कष्ट नहीं बांटा। सगे संबंधी और रिश्तेदारों ने भी साथ नहीं दिया। पीछे पलट कर भी तो तू देख और बता की तेरे साथ कौन है, भाई पुत्र परिवार जन भी नहीं। ईसुरी कहते हैं- जीवन के कर्म ही साथ जाते हैं। जो भी किया है वह लिखा है। अच्छे कर्मो को हिसाब धर्मराज के पास रखा है।

संकलन एवं अनुवादः माधव शुक्ल मनोज

## 74. रैया मन - मोहल से बरकी

रैया मन - मोहल से बरकी,तुम नई भई अहीर की।
होत भोर जतुनें ना जैयी,दैकें कोर कजर की।
उन कौ राज - उनइ्र की रैयत, सिर पै बात जबर की।
ईसुरी कात तला में बस कैं, सैंये शान मगर की।

0ध्0000

**गीतार्थः**

तुम अहीर की लड़की नहीं हो ,इसलिये बचके रहना तुम अपनी आंखों में काजल लगाकर सुबह होते ही यमुना किनारे मत जाना उनका ही तो राज है,उनही की प्रजा है,वे शक्तिशाली हैं।

ईसुरी कहते हें- इसलिये तुम्हें आज्ञोल्लंघन की आवांछनीय परिस्थितियों से बचना चाहिये,तालाब में रहकर मगर - की शान सहना चाहिये।

संकलन एवं अनुवादःमाधव शुक्ल मनोज

(साभारः चौमासा.मध्य प्रदेश आदिवासी लोक कला अकादमी वर्ष 14 अंक 45 नवंबर 97-फरवरी 98)

## 75. बाहर अंगिया पैर कड़े गओ

बाहर अंगिया पैर कड़े गओ,नेंचे मूंड़ करें - गओ।
जीसें नाव धरै नें कोऊ,ऐसी चाल चले गओ।
हवा चलै उड़ जै है पल्ला, घूंघट हाथ धरै गओ।
ईसुर इन गलियों में विन्नू , धीरे पांव धरै गओ।

0ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थः**

बेटी जब भी अपने घर से बाहर निकलो,तो अंगिया (चोली ) पहिन कर जाया करो।तब अपना सिर झुकाकर चला करो।ऐसी चाल चला करो, जिससे कोई भी तुम्हारे वंश को बदनाम न कर सके। हवा चलने पर प्रायः सिर पर रखा साड़ी का पल्ला उड़ जाया करता है। तुम उसे संभालकर घूंघट खींचकर चला करो।

ईसुरी कहते हैं - हे बेटी , इन रास्तों में खिलखिला कर मत हंसा करो। संभल - संभल कर धीरे - धीरे पांव रखा करो।

संकलन एवं अनुवादः माधव शुक्ल मनोज

(साभारः चौमासा.मध्य प्रदेश आदिवासी लोक कला अकादमी नवंबर 97-फरवरी 98)

बिहारी ने कहा है - 'किते न औगुन जग करत, वयनय चढ़ती बार ' ऐसी बढ़ती जवानी के क्षणों में 'ईसुरी की उक्त शिक्षा देश - कालादि के अनुकूल ही है।संसार की नश्वरता की ओर संकेत करते हुये वे अपनी रजऊ से कहते हैं -

## 76. मानुस कबै कबै फिर होने

मानुस कबै कबै फिर होने,रजऊ बोल लो नोनें।
चलती बेरा प्रान छोड़ दये,की के संगे कौनें।
जियत - जियत को सब कोऊ सबको,मरै घरी भर रोने।
होजें और जनम खां बातें, पाव न ऐसी जोनें।
हंड़िया हात परत ना ईसुर, आवै सीत टटोनें।

' तुलसी ' के "साधन धाम विबुध - तनु मोह कृपा कर दीनों" वचन में और उक्त गीत के "मानुस कबै - कबै फिर होने" तथा "पाव न ऐसी जोनें" वचनों में एक ही बात कही गई, पर परिस्थितियों की भिन्नता से उसके लक्ष्य में भिन्नता स्पष्ट है।एक गृहस्थ "वयो गते किम् वनिता - विलासः" के उद्वेश्य से अपनी स्थिति में बोल रहा है एवं एक विरक्त साधक अपनी स्थिति में । गंगाधर भी ईसुरी के स्वर में स्वर मिलाकर कह रहे हैं -

## 77. प्यारी लूट मजा लव रस के,जे जोवन दिन दस के।

प्यारी लूट मजा लव रस के,जे जोवन दिन दस के।
इनखां पाय गमांय देव ना, काम करो कछु जस के।
इनकी भरन न भरियो मन में , रहे न तुम्हरे बस के।
इक दिन ढड़क आयें ओली में,रस जैहैं नस - नस के।

इसी भाव का पंजाबी गीत है-

सदा न बागों कोकिल बोले ,सदा ना बाग बहारां।
सदा न हुसन जवानी रेंदा, सदा न सौबत यारां।

" जे जीवन दिन दस के" और सदा न हुस्न जवानी रेंदा" में कितनी समानता है।

बुंदेली के एक अन्य लोक गीत में संसार की उक्त परिवर्तनशीलता पर एक वीरांगना की उक्ति सुनिये। उसका पति रण में वीर गति को प्राप्त हो गया है और वह क्या कह रही है -

सदा न तुरैया अरे फूले हो,सदा न सावन होय।
सदा न राजा अरे रन में जूझे, सदा न जीवै कोय।

वीरांगना कहती है तुरैया हमेशा नहीं फूलती और न ही हमेशा सावन का महिना रहता है।राजा हमेशा रण भूमि में युद्व नहीं करता और न ही कोई हमेशा के लिये जीवत रहता है।

संकलन एवं अनुवादः श्याम सुन्दर बादल

( संदर्भ ग्रंथः बुंदेली का फाग साहित्य, )

## 78. खोय देत हौ जीवन बिना काम के

खोय देत हौ जीवन बिना काम के

भजन करौ कछु राम के...........
जी बिन देह जरा न रुकती,चाहो अंत समय में मुक्ति
ऐसी करो जतन से जुक्ती, ध्यान करियो सबेरे न तो शाम के
भजन करौ कछु राम के.............
लख चौरासी भटकत आये, मानुष देह कठिन से पाये
फिर भी माने न समझााये,गलती चक्कर में फंसे बिना राम के
भजन करौ कछु राम के............
ईश्वर मालिक से मुंह फेरे,दिल से नाम कभु न टेरे
वन के नारि कुटुम्ब के चेरे,कोरी ममता में फंसे इते आन के
भजन करौ कछु राम के................
छोड़ो मात पिता और भ्राता,जो हैं तीनों लोक के दाता
करियो उन ईश्वर से नाता,क्षमा करिहें अपराध अपना जान के
भजन करौ कछु राम के.............

**गीतार्थ** - एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को समझा रहा है कि मनुष्य जीवन को सार्थक बनाना हो तो भगवान का भजन करो, क्योंकी मनुष्य का जीवन चौरासी लाख यौनियों में भटकने के बाद मिलता है और तुम इस बात को भूल रहे हो। अभी कुछ नहीं बिगड़ा तुम परिवार की मोह ममता छोड़कर भगवान से नाता जोड़ लो । वह सब गल्तियों को भुलाकर तुम्हें अपना लेंगे।

संकलन एवं अनुवाद - प्रवीण खरे

## 79. स्वारथ को व्यवहार जगत में

स्वारथ को व्यवहार जगत में स्वारथ को व्यवहार जगत में
बिन स्वारथ कोई बात न पूंछे, देखा खूब विचार
जगत में स्वारथ को व्यवहार.........
पूत कमाके धन खों,ल्यावे माता करे प्यार
जगत में स्वारथ को व्यवहार..............
पिता कहे यह पुत्र हमारो,अकलमंद हुसियार
जगत में स्वारथ को व्यवहार.....
नारी सुदर भूषण मांगे, करे पति से प्यार
जगत में स्वारथ को व्यवहार..............
नहीं कोऊ संगी नहीं कोई साथी, मतलब के सब यार
जगत में स्वारथ को व्यवहार............
यह माया तुम छोड़ो प्यारे, भजो जगत करतार
जगत में स्वारथ को व्यवहार................

**गीतार्थ -** संसार में बिना स्वार्थ के कोई प्रेम नहीं करता।समाज में जब पुत्र पैसे कमाकर मॉ को देता है, तभी उसकी मॉ अधिक प्यार करती हैंपिता भी पुत्र को अकलमंद तथा होशियार बतलाते हैं।पत्नी भी अपने पति को प्यार तभी करती है। जब वह आभूषण गहने उसे बनवा

कर देता है।बिना स्वार्थ के कोई किसी को नहीं मानता।अतः भगवान के भजन में मन लगाना ही उत्तम है।

संकलन एवं अनुवाद - प्रवीण खरे

## 80. गरब करे सोई हारे

गरब करे सोई हारे,
हरि सो गरब करे सोई हारे.....
गरब करो रतनागर सागर
जल खारो कर ड़ारे
हरि सो गरब करे सोई हारे........
गरब करे लंका पति रावण
टूक - टूक कर ड़ारे
हरि सो गरब करे सोई हारे........
गरब करे चकवा चकवी ने
रैन बिछोहा ड़ारे
हरि सो गरब करे सोई हारे........
इन्द्र कोप कियो ब्रज के ऊपर
नख पर गिरवर धारे
हरि सो गरब करे सोई हारे........
मीरा के प्रभु गिरधर नागर
जीवन प्राण हमारे
हरि सो गरब करे सोई हारे........

0ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ** -

यदि ईश्वर के सामने किसी ने घमंड़ दिखाया तो वह हमेशा हारेगा। एक बार समुद्र ने घमंड़ किया, तो भगवान ने उसके जल को खारा कर दिया। इसके बाद चकवा - चकवी ने घमंड़ किया तो उनको रात्री में बिछोह सहन करना पड़ा। रावण ने घमंड़ किया तो वह भी परास्त हुआ।इंद्र के घमंड़ को भी भगवान ने चूर - चूर कर दिया और पर्वत को एक अंगुली पर उठा कर दिखलाया।अतः मनुष्य को घमंड़ कभी नहीं करना चाहिये।उसे जो मिला है उसे ईश्वर की कृपा ही मानना चाहिये।

संकलन एवं अनुवाद - प्रवीण खरे

## 81. सब से बोलौ मीठी वानी

सब से बोलौ मीठी वानी, थोड़ी है जिन्दगानी।
येई बानी सुरलोक पठावै,येई नरक निसानी।
येई बानी हाथी बैठारै, येई उतारै पानी।
येई बानी से तरै ईसुरी,बड़े - बड़े मुनि ज्ञानी।

0ध्ध्ध्0

**गीतार्थ -**

**सभी से मीठे वचन बोलना चाहिये, क्योंकी यह जीवन कुछ दिनों का है। यही बोली आपको स्र्वग में पहुचा सकती है तो यही बोली नरक में भी पहुंचा सकती है। इसी बोली के कारण आप हाथी पर बैठ सकते हैं, तो यही बोली आपकी बेज्जइती भी करा सकती है। ईसुरी कहते हैं इसी वाणी के कारण बड़े - बड़े मुनि, ज्ञानी तर गये हैं।**

संकलन एवं अनुवादः श्याम सुन्दर बादल

## 82. करौ देश उपकार रे भाई

**करौ देश उपकार रे भाई**
**करौ देश उपकार।।टैक।।**
**तुम पढ़ लिख लो अपने हित खौं**
**देखौं परखौं चित अनुचित खौं**
**एई है जग में सार रे भाई**
**करो देश उपकार...............**
**समै के संगै तुम चेतौ अब**
**परो दुक्ख अब सब मैटो अब**
**सुख की लाओ बहार रे भाई**
**करौ देश उपकार.................**
**तुमसै है जग लगो भओ जो**
**अपढ़ रओ नें पढ़ कें रओ जो**
**ऐई में सार है भाई**
**करो देश उपकार रे भाई।।**

**0ध्ध्0**

**गीतार्थ :-** हे मेरे भाई इस भारत देश का उपकार करो। तुम पढ़ लिख लो और अपने उचित अनुचित को समझो। यही इस संसार का सार है। समय के रहते हुये तुम सर्तक हो जाओ। दूसरों के दुख को मिटाओ। उनके जीवन में सुख की बहार लाओ। तुमसे यह संसार है तुम पढ़े लिखे हो या अनपढ़ पर तुम देश के उपकार में लगे रहो । यही जीवन का सार है।

संकलन एवं अनुवाद : डॉ. विजय चौरसिया

## 83. मोहन लखों देश पै गुरखा

**मोहन लखों देश पै गुरखा,गरज करें दुख बरखा।**
**प्रगटे, दीनबन्धुताई खाँ, लग न जाय कउँ करखा।**
**हात दोइ,पै बानें चारउ, पदम प्रेममय परखा।**
**सत्य संख है,गदा अहिंसा,चक्र सुर्दशन चरखा।।**

**0ध्ध्0**

**रुच - रुच ऐसो बोल सुनाओ,दिल न दुखे पराओ।**
**सत के बल हिंसा सों बचके,अत्याचार मिटाओ।**

औसर तक,कऔ बे औसर की, कभउँ न बीन बजाओ।
लालच सों, भय सों, संकोच सों,कभउँ न बात बनाओ।
कहो रात सों रात श्याम जू, दिन खों दिनइं बताओ।।
0ध्ध्ध्0
मनुआ जो साँचे सुख चैये,पर के दुख नसैये।
कभउं काउ की बुरइ न तकिये,बात बुरई न करिये।
जात - पांत के भेद भुलाकैं,सब सों हिल - मिल रैये।
कैये एक न कभउं काउ सों,चाय चार सुन लैये।
बापू कही स्याम तब मन सों,हिंसा दूर भगैये।।
0ध्ध्ध्0
बापू हम तोरी कइ करहैं,जोर - जोर न धरहैं।
कोऊ जोरे लाख - करोरन,एक काम न सरहैं।
प्रभु को छोड़ भरोसो बोझा,लाद - लाद के मरहैं।
बसा राम - राघव बानी में, सब काजै तन गरहैं।
कौन बात की फिकर स्याम जो,मन सों उन्हें सुमरहैं।।
0ध्ध्ध्0
हम खाँ कभउं नहीं बेजानें,चीज पराई चानें।
तन गारैं मिल जाय ओई में,सुख सों जग में रानें।
जो कछु बचे और के काजें,लग जाय ओउ ठिकानें।
हाथ न कभउं सकोर सुकुत सों,बनने हमें सियानें।
सुकुतई जात स्याम संगे जब, हंसा होत रमानें।।
0ध्ध्ध्0
सांची और मधुर चुन लैये,अटकर की ना कैये।
बोल बतातन में जेठन की,ना मरजाद भूलैये।
अपनें कये को टिक्का राखे,चुक्का कबों न खैये।
स्याम कूत हो जोन बात को ,सोई स्याम बतैये।।
0ध्ध्ध्0
प्रभू जो कैसी फाग रची है, प्रकृती प्रकट नची है।
अरुन संग ऊषा खेलत है, संग सुरेस सची है।
इतनी रंग रोरी बरसी है,धरा न तनक बची है।
का कये स्याम फाग प्राची संग, रवि की जोंन मची है।।
0ध्ध्ध्ध्0
अम्बा, अरे को परो न टारो,सब तज भओ तुमारो।
गलि - गलिन द्वारन - द्वारन पै, भटक - भटक के हारो।
अपनों जान काउ नें अबलों,दओ न तनक सहारो।
तारो मात समाधी बनियां,मोखाँ काय बिसारो।
स्याम सुरथ के जीवन रथ सो, मम रथ आन संभारो।।
0ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :**

कवि कहते हैं मोहन इस देश में लाखों लोग दुखी हैं।हमारे दो हाथ और दो पैर हैं इन्हें अच्छे कायरें के लिये आगे बढ़ाओ। सत्य शंख ह,ै गदा अहिंसा है, और चक्र सुर्दशन चरखा है।आप ऐसी वाणी बोलिये, जिससे किसी का दिल न दुखे।सत्य के बल पर हिंसा से बचकर देश का अत्याचार मिटाओ। किसी भी अवसर बेअवसर पर अपनी बात नहीं कहना चाहिये।लालच, भय और संकोच में कभी भी अपनी बात नहीं बनाना चाहिये। यदि रात्री है तो रात्री को रात्री और दिन को दिन ही बतलाना चाहिये। यदि तुम सत्य बोलोगे, तो तुमको कभी दुख नहीं आयेगा।कभी किसी की बुराई नहीं करना चाहिये और न ही बुरा देखना चाहिये। जात - पांत का भेद भुलाकर सबको हिल मिल कर साथ रहना चाहिये। कभी किसी से कुछ नहीं कहना चाहिये , चाहे तुमको इसके लिये चार की सुनना पड़े। बापू ने कहा है अपने मन से हिंसा को दूर भगा दो।

बापू हम आपकी कही बातों का अनुसरण करेंगे। कभी भी पराई चीज को अपना नहीं कहेंगे। यह शरीर एक दिन मिट्टी में मिल जाना हैं इसलिये जब तक इस जग में हैं सुख भोग लेना चाहिये। हमारे पास जो समय बचे उसे दूसरों के काम में लगा देना चाहिये। सत्य और मधुर वचन ही सुनना चाहिये।बड़ों के सामने ज्यादा बात नहीं करना चाहिये। जो बात सत्य हो उसी को बतलाना चाहिये। इस जीवन रुपी रथ को संभाल कर चलाना चाहिये।

संकलन : श्याम सुन्दर बादल

अनुवाद : डॉ.विजय चौरसिया

( संदर्भ ग्रंथः बुंदेली का फाग साहित्य, आदिवासी लोक कला परिषद)

## 84. जागो रे किसान भइया जागने की बेला है

जागो रे किसान भइया जागने की बेला है।।टेक।।
जी के संगे गांधी है,को कहै अकेला है।।जागो।।
गांधी बाबा अलख जगायें,सत्याग्रह की धूम मचायें
हरिजनन खों गले लगायें,दारु पीवो बंद करायें
जेलन की कोठरिन में,बंदियन का मेला है।।जागो।।
सत्य अहिंसा को व्रत धारो,जोर जुलुम में कमऊं न हारो
मातृ भूमि को काज संवारो,चायें अपनो तन मन वारो
देह का है आदमी की,मिट्टी का ठेला है।।जागो।।
जागो रे किसान भइया जागने की बेला है.......

0ध्ध्ध्0

**गीतार्थ** :

किसान भाई जागरण की बेला आ गई है, जागो। तुम्हारे साथ गांधी जी हैं। फिर अकेला होने की चिन्ता नहीं है। गांधी जी के सत्यागग्रह ने धूम मचाई है और हरिजनों को गले लगाकर नशाबंदी भी करा दी हैं जेलों की कोठरियां भर गई हें। हे भाई तुम भी सत्य अहिंसा का व्रत लो, जुल्मों के विरुद्व संघर्ष करो और मातृ भूमि के लिये तन - मन निछावर कर दो।

संदर्भ : स्वतंत्रता संग्राम में कृषकों का जागरण लोक गीत

संकलन एवं अनुवाद : रामकली रैकवार सागर से प्राप्त

## 84. राधे गोविंद भजो राधे गोविंद

राधे गोविंद भजो राधे गोविंद
रसवारी के भौंरा रे।
माता ने जायो,दूध प्रेम से पिलायो
तुमें सूके में सुलाओ अपुन भोगे दुख दंद
रसवारी.........
बालापन आयो,खेल कूंद में गंवायो
गुन ग्यान नहीं भायो रहे ऐसे भन मंग
रसवारी.........
ब्याह करा लीनो माता - पिता त्याग दीनो
प्रेम पत्नी सें कीनो रचे ऐसे छल - छंद
रसवारी........
आयो विरधापन मन लगे पछतावा
दास लगे समझावन कैंसे बन है स्वतंत
रसवारी.........

0ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :**

मानव के 'मन' को रस में लिप्त भंवरे की उमा दी गई है।जो सदा रस भोग के पीछे ही भागता रहता है।हे रसिक भंवरे! राधे गोविंद का नाम लो। माता ने जन्म दिया है उसने बड़े प्यार से अपना दूध पिलाकर पाला है। तुझे हर कष्ट से बचाया है,उसने खुद सब कष्ट भोगे हैं। बचपन तूने खेल -कूंद में गंवा दिया। कुछ गुण और ज्ञान अर्जित नहीं किया,बस रस में ही तू मस्त रहा। यौवन में विवाह किया तो माता - पिता को भी त्याग दिया। बस पत्नी सुख में ही तू लिप्त रहा। सारे छल कपट के काम ही तूने किये। अब जब वृद्‌वावस्था आई है। रोग परवशता ने तुझे घेर लिया है, तो स्वतंत्र होने के लिये कैसे तड़फ रहा है ? और अपने कमरें पर पछता रहा है।तेरे लिये एक ही रास्ता है कि राधे गोविंद भजो। प्रभु का नाम लो।

स्त्रोतः ऋचा श्रीवास्तव

संकलन : डॉ. सुरेश कुमार मालवीय     अनुवाद : डॉ. विजय चौरसिया

## 86. आईं जिनके घर फूहर नारियाँ

आईं जिनके घर फूहर नारियाँ
वे घर कैसे चलें।
वे तो परीं दुफर तक सोवैं
उनसे काम दंद न होवैं
चूलो चकिया देख रोवें
बासन भाड़े एक न धोवें

फेरे न दोरे में बारियाँ
वे घर कैसे .........
दुफरो उठ कें चूलो बारो
चौका छाल करो न झारो
फिर बिन छानो चून निकारो
मांड़न हेत थार में ड़ारो
जा में माछी मिलीं दो चारियां
वे घर कैसे...........
जब उनने कीनी तरकारी
कर दई नोन बिना की खारी
जेमे खाँ जब परसी थारी
कढ़ गईं बायरे छोड़ उधारी
जिये खाने सो लगें मन झरियाँ
वे घर कैंसें...........
बे न शरम काऊं की खातीं
सास- सुसर खँा चिल्लातीं
बच्चन से भी लड़तीं राँती
दिन भर दोरें बैठी रांती
कहें राम किशन बलिहरियाँ।
वे घर कैसें..................

0ध्ध्ध्0

गीतार्थ :

जिनके घर में फूहड़ स्त्रियाँ आ गयीं वे घर कैसे चलेंगे? वे दोपहर तक पड़ी सोती हैं। उनसे कोई काम नहीं होता। चूल्हा - चक्की देखकर उन्हें रोना आता है, न ही बरतन धोना आता है।दोपहर को उठकर बिना झाड़े ही चूल्हा जलाती हैं। बिना छना आटा मांड़ने लगती हैं, जिसमें मक्खी तक गिर जाती है। सब्जी में नमक ज्यादा ड़ालती है जिससे सब्जी खारी हो जाती है। जिसको ऐसा खाना परोसती हैं उसे थाली देखकर घिन आने लगती है। फूहड़ स्त्रियाँ किसी की शर्म नहीं करतीं हैं। अपने सास - ससुर से चिल्लाकर बात करती हैं।बच्चों तक से उनकी बराबरी से लड़ती हैं और दिन भर घर के दरवाजे पर बैठी रहती हैं।ऐसी फूहड़ स्त्रियों की तो बलिहारी है। माता पिता को हमेशा अपनी बेटीयों को ससुराल में सेवा करने की शिक्षा देकर ही ससुराल भेजना चाहिये।

स्त्रोतः ऋचा श्रीवास्तव

संकलन : डॉ. सुरेश कुमार मालवीय      अनुवाद : डॉ. विजय चौरसिया

(संदर्भ ग्रंथः जनपदीय संस्कार गीत.म.प्र. आदिवासी लोक कला अकादमी)

## 87. बिन्नू सासरे में तनिक न डराइयो

बिन्नू सासरे में तनिक न डराइयो
एक सुनों सौ सुनाइयो...

उठियो भर दुफरे सो सो कें
ससुरा जो घर आकें टोंकें
जब तुम कइयो बेजा रोकें
दद्दा सूने में हाथ लगाइयो
एक सुनों सौ सुनाइयो...
बिन्नू चूले नौं ने जइयो
फुलका फूले फूले खइयो
सासु में दो कूल्हे दइयो
ननदी बैरन में गुलचा लगाइयो
एक सुनों सौ सुनाइयो...
कोई कहे तरकारी छौंको
वा पे कुतिया जैसी भौंको
धाक धका धक दिन भर धौंको
आगी जेठा की मूंछ में लगाईयो
एक सुनों सौ सुनाइयो...
आग पानी को कुंआ दिखा कें
खड़िया मिट्टी को विष खा कें
चौखो दिन भर ड़ाँट पिला कें
दिल दिल घोड़ी सो दूला नचइयो
एक सुनों सौ सुनाइयो...

0ध्ध्ध्0

**गीतार्थः** वैसे तो सभी माता - पिता अपनी बेटियों को सेवा करने की शिक्षा देकर ही ससुराल भेजते हैं।परंतु कुछ लोगों की ऐसी भी शिक्षा होती है। यह लोक गीत भले हंसी ठिठोली के उद्देश्य से रचा गया है, पर कुछ जगहों की यह सच्चाई भी है। जहां पर ऐसी शिक्षा भी दी जाती है। जो अपनी बेटी के स्वर्ग से घर को नर्क बना देती हैं।

घर की बुजुर्ग स्त्रियां अपनी बेटी को समझा रही हैं। कि बेटी ! ससुराल में बिलकुल ड़रना मत । कोई तुमसे एक बात कहे तो बदले में उसे सौ बातें सुनाना। सुनो बेटी! तुम दोपहर को सोकर के उठना , यदि तेरे ससुर आकर तुझे कुछ कहें या ड़ाँटें तो तुम रोकर कहना कि - देखो पिताजी! सूने में मुझे हाथ मत लगाना, बेटी चूल्हे के तो पास भी मत फटकना और दूसरे रोटी बनायें तो खूब फूली रोटी ही खाना तथा सास कुछ बोले तो उसको दो कूल्हे लगाना तथा अपनी शत्रु ननद को घूंसा लगाना। कोई अगर कहे की जरा तरकारी छौंक दो तो उसके ऊपर कुतिया की तरह चिल्लाना, दिन भर अपनी ही बात कहना । जेठ कुछ कहे तो उसकी मूंछ में आग छुआ देना। सभी को डर दिखाना कि कोई कुछ बोला तो मैं कुएँ में गिर पड़ुंगी या आग लगा लूंगी। ज्यादा हो तो खड़ीया मिट्टी खाकर जहर खाने का अभिनय करना। पति को दिन भर ड़ॉटना,उसे दिल - दिल घोड़ी की तरह नचाकर रखना। बस बेटी ! किसी से बिलकुल मत ड़रना और कोई एक कहे तो उसे बदले में सौ बातें सुनाना।

स्त्रोतः निशा श्रीवास्तव

संकलन : डॉ. सुरेश कुमार मालवीय

अनुवाद : डॉ. विजय चौरसिया

## 88. उड़ जाने गंगा राम परोसी

उड़ जाने गंगा राम परोसी बैठे कौन भरोसे में
अरे हॉ हो परोसी हैं ना किबरिया पिंजरा में
दस द्ॅवारे खुले हैं अलाम परोसी,बैठे कौन भरोसे में
अरे हॉ हो परोसी गये सुआ फिर न आये
चाहे लाखों खरचिऔ दाम परोसी, बैठे कौन भरोसे में
अरे हॉ हो परोसी धोकौं सौ इक दिन होनें
होनें सपनों कैसे काम परोसी,बैठे कौन भरोसे में
अरे हॉ हो परोसी जौन दिना सुअना उड़ने
लुटें आंदी कैसे आम परोसी,बैठे कौन भरोसे में
अरे हॉ हो परोसी एक दिना ऊ घर जानें
चाहे जाड़ौ लगै चाय घाम परोसी,बैठे कौन भरोसे में
अरे हॉ हो परोसी चतुर कहैं मानों मोरी
कहौ प्रेम सें सीताराम परोसी,बैठे कौन भरोसे में

0ददददध्0

**गीतार्थ :**

अरे पड़ोसी! भला किसके भरोसे बैठे हो, एक दिन तो यह प्राण पंछी उड़ जाना हैं। अरे पड़ोसी! पिंजरा में तो एक भी खिड़की नहीं है, दस दरवाजे तो खुल्लमखुल्ला खुले हुए हैं।अरे पड़ोसी ! भला किसके भरोसे बैठे हो। अरे पड़ोसी ! तोता अगर उड़ गया तो फिर लौटकर नहीं आयेगा। उसके लिये फिर तो चाहे लाखों रुपये खर्च कर दो। किसके भरोसे में बैठे हो। अरे पड़ोसी! एक दिन तो धोखा सा हो जायेगा। सपना के समान काम हो जाना है। किसके भरोसे में बैठे हो। अरे पड़ोसी! जिस दिन यह तोता उड़ेगा उस दिन तो ऐसा लगेगा जैसे आंधी के आम लुट गये हों। भला पड़ोसी किसके भरोसे बैठे हो। अरे पड़ोसी एक दिन तो उस घर जाना ही है। चाहे फिर ठंड़ लगे या फिर धूप। भला पड़ोसी तुम किसके भरोसे बैठे हो। अरे पड़ोसी चतुर कहते हैं कि मेरा कहना मानों और प्रेम के साथ सीताराम कहो। तुम किसके भरोसे में बैठे हो।

संकलनः गुप्तेश्वर द्वारका गुप्त जबलपुर
अनुवाद : डॉ. विजय चौरसिया

## 89. चल बिरछ पूज गुन गांय सखी री

चल बिरछ पूज गुन गांय सखी री मनसा पूरी बेड़ करहैं
अरे हॉ हो सखी री पैलों बिरछ हे नीमा कौ
जीमें बसतीं हैं दुरगा माय, सखी री मनसा पूरी बेड़ करहैं
अरे हॉ हो सखी री दूजो बिरछ है जामुन को
जीमें बसें री कालका माय, सखी री मनसा पूरी बेड़ करहैं
अरे हॉ हो सखी री,तीजौ बिरछ है अमुआ को
जामें बसें राजा राम, सखी री मनसा पूरी बेड़ करहैं
अरे हॉ हो सखी री कदम को चौथो बिरछा सुनों
जीमें बसत किसन भगवान, सखी री मनसा पूरी बेड़ करहैं

अरे हॉ हो सखी री बिरछ पांचमां पीपर को।
जीमें बस रये कोटन देव, सखी री मनसा पूरी बेइ करहैं
अरे हॉ हो सखी री बेल पात बे चढ़ा चलौ
सोइ आसिस देंय भोलानाथ, सखी री मनसा पूरी बेइ करहैं
00ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :**

हे सखी! वृक्षों की पूजा करो और उनके गुणगान गाओ, वे अपनी इच्छाओं की पूर्ति करेंगे। हे सखी! पहला वृक्ष नीम का है,जिसमें माता दुर्गा जी निवास करती हैं।वे ही इच्छा पूर्ति करेंगी। हे सखी! दूसरा वृक्ष जामुन का है जिसमें काली माता का वास है। वे ही अपनी इच्छा पूर्ति करेंगी। हे सखी ! तीसरा वृक्ष आम का कहलाता है, जिसमें श्री रामचंद्र जी रहते हैं। वे ही हमारी इच्छा पूर्ति करेंगे। हे सखी चौथा वृक्ष कदम का है, जिसमें श्रीकृष्ण जी रहते हैं। वे ही हमारी इच्छा की पूर्ति करेंगे। हे सखी ! पांचवा वृक्ष पीपल का कहलाता है, जिसमें करोड़ों देवों का वास है। वे हमारी इच्छा की पूर्ति करेंगे। हे सखी! छटवां वृक्ष आंवले का है। जिसमें करोड़ों देवों का वास है। वे ही हमारी इच्छा की पूर्ति करेंगे। हे सखी ! जल और बेलपत्र को चढ़ायें, जिससे श्री शंकर जी आशीष देते हैं। सखी! वे ही हमारी इच्छा पूर्ण करेंगे।

संकलन : गुप्तेश्वर द्वारका गुप्त जबलपुर    अनुवाद : डॉ. विजय चौरसिया

## 90. चल चलिये बिरछा रोपैं

चीन समै को दाम परौसी , चल चलिये बिरछा रोपैं
अरे हां हो परौसी,बाग बगीचा उखट रहे
गये पुरखा जो तौ लगाये,परौसी चल चलिये बिरछा रोपैं
अरे हां हो परौसी,पशु - पक्षी सबरे बिलमें
उर गैलारौ सुसताय परौसी चल चलिये बिरछा रोपैं
अरे हां हो परोसी, एक पुन्न जो सबसै बड़ो
सोई मुफत में लेव कमाय,परौसी चल चलिये बिरछा रोपैं
अरे हां हो परौसी, परस्वारथ जो कहलावै
ईसें जनम सफल हो जाय, परौसी चल चलिये बिरछा रोपैं
अरे हां हो परौसी गुप्तेश्वर की कई मानौ
मोसे आजई गये बताय परोसी, चल चलिये बिरछा रोपैं
0ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :-** ये मेरे पड़ोसी समय को पहचानो और चलो वृक्ष लगायें। हमारे पुरखों ने जो बाग बगीचे लगाये हैं। वे सब उखड़ रहे हैं। पशु - पक्षी सभी इसकी छांव में आराम करेंगे। ये पड़ोसी तुम मुफ्त में यह पुण्य का काम कर लो। जिससे तुम्हारा जीवन सफल हो जावे। इसलिये चलो पड़ोसी वृक्ष लगायें।

संकलन : गुप्तेश्वर द्वारका गुप्त जबलपुर    अनुवाद : डॉ. विजय चौरसिया

## 91.ऐसौ करलो गुइंया काम,जीसें बची रहे हरयाली

ऐसौ करलो गुइंया काम

जीसें बची रहे हरयाली
हरयाली बिरछन से होवै
बिरछा लगा के रोको घाम
हरियाली से बाग - बगीचा
ईसें लगे सुहानें गाम
हरयाली से धरा सुहागन
लगवै सुबहो शाम
हरयाली पा चहकें चिड़ियां
पावें जीव जन्तु आराम
हरयाली से मन खुशहोवैं
लईयो पंकृति को अचरा थाम
हरयाली नव जीवन देवै
उर देवे खुशी तमाम
हरयाली गुप्तेश्वर लावै
लगे न कोंड़ी और छिदाम
0ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :-** ये मेरी सहेली तुम ऐसा काम करो। जिससे हरियाली बची रहे। वृक्षों से हरियाली होती है। वृक्षों को लगाकर धूप को रोको । हरियाली से बाग बगीचे सुंदर लगते हैं। हरियाली होने से पक्षी चहकते हैं। वे इसकी छांव में आराम करते है।हरियाली नव जीवन प्रदान करती है।वृक्ष लगाने में कोई पैसा नहीं लगता। इससे जीवन में प्रसन्नता आ जाती है।

संकलन : गुप्तेश्वर द्वारका गुप्त जबलपुर    अनुवाद : डॉ. विजय चौरसिया

## 92. बिरछा देवें शीतल छैंया

बिरछा देवें शीतल छैंया
घामो व्यापत नैंया
सुआ,परेवा,गलगल,मैंना
विलमत राय मुनैंया
छिरिंया बुकरियां भैंस बैलवा
संग विलमती गैंया
बिरछा देत आसरो सबखों
घालैं नई कुलैंयां
जेई कुदरत और सवांरत
पर्यावरण की बैया
बिलमत बिरछ तरें गुप्तेश्वर
राजा रंक गमैयां
0ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :-**

वृक्ष हमें शीतल छांव देते हैं। जिससे हमको घूप नहीं लगती।जिसके नीचे

तोता,कबूतर,गलगल,मैना,बकरियां गाय,और भैंस अपना समय गुजारती हैं।वृक्ष सभी को सहारा देते हैं।वे पर्यावरण की रक्षा करते हैं।वृक्ष राजा - रंक और ग्रामीणों का कल्याण करते हैं।

संकलन : गुप्तेश्वर द्वारका गुप्त जबलपुर     अनुवाद : डॉ. विजय चौरसिया

## 93. ओ मोरे बब्बा बिरछा लगाव

ओ मोरे बब्बा बिरछा लगाव
ओ मोरे दद्‌्दा बिरछा लगाओ
बिरछन से रोको पानी के बदरा
बिरछन से खेती में अन्न उपजाव
ओ मेरे भैया बिरछा लगाव
बिरछन सें रोको दुपैरी को घामों
बिरछन की छैंया मा सबई बिलमाव
ओ मोरी भौजी बिरछा लगाव
बिरछा से रोको प्रदूषन की लहरें
बिरछा लगावे की अलख जगाव
ओ मोरी बिन्ना बिरछा लगाव
बिरछा तो जीवन दाता जगत को
गुप्तेश्वर पेड़ लगाओ हरियारी लाव
जन - जन चेतौ बिरछा लगाव

0ध्ध्ध्0

गीतार्थ :- ये मेरे बाबा वृक्ष लगाओ। ये मेरे दादा वृक्ष लगाओ। वृक्ष पानी वाले बादलों को रोक लेते हैं।वृक्ष लगाकर खेतों में अन्न उपजाओ। ये मेरी भौजी वृक्ष लगाओ। ये मेरी बहन वृक्ष लगाओ। तुम प्रदूषण को रोको। जन - जन में चेतना लाओ और वृक्ष लगाओ।

संकलन : गुप्तेश्वर द्वारका गुप्त जबलपुर     अनुवाद : डॉ. विजय चौरसिया

## 94.जे बिरछा न काटो रे बिरछा हैं पालन हारे

जे बिरछा न काटो रे बिरछा हैं पालन हारे
केंथा , आम , करोंदा, औंरा
खटुआ निबुआ न्यारे
इमली , बिरिया और मकोरा
महुआ हैं रसवारे
कौहा,कंजा,सरई,सगौना
नोंनें रखें घर द्वारे
पीपर , बरीया , बेल और तुलसी
जे हैं पूज्य हमारे
खैर अचार , बिही और मुनगा
जामुन,कुल्लू वारे
रेंवजा बमूरा नीम और छेवला
हर्रा बहेरा प्यारे

गुप्तेश्वर कयें रुख - रुखडियां

आयुर्वेद उचारे

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थ :-इन वृक्षों को मत काटो वृक्ष हमारे पालनहार हैं। कैंथा, आम, करौंदा, आंवला, खटुआ, नीबू , इमली, बेर, मकोय और महुआ रसों से भरपूर हैं। कौहका,कंजा,सरई और सागौन घर में सुंदरता लाते हैं।पीपल, बरीआ, तुलसी और बेल के वृक्ष हमारे पूज्यनीय हैं। कत्था, अनार, बिही और मुनगा,जामुन,नीम,छेवला,हर्रा, बहेरा आदि सभी वृक्ष हमारे प्यारे हैं। ये वृक्ष और इनके छोटे - छोटे पौधे हमारे उपचार में सहयोग करते हैं।

संकलन : गुप्तेश्वर द्वारका गुप्त जबलपुर अनुवाद : डॉ. विजय चौरसिया

## 95. हरयाली से धरा सुहागन

ऐंसो करलो गुंइयां काम

जीसें बची रहे हरयाली

हरयाली बिरछन सें होवै

बिरछा लगाकें रोको घाम

हरयाली से बाग बगीचा

ईसें लगें सुहानें गाम

हरयाली से धरा सुहागन

लगवै सुबहो - शाम

हरयाली पा चहकें चिड़ियां

पावैं जीव जन्तु आराम

हरयाली से मन खुश होवें

लइयो प्रकृति को अचरा थाम

हरयाली नवजीवन देवै

उर देवै खुशी तमाम

हरयाली गुतेश्वर लावैं

लगे न कौंड़ी और छिदाम

0ध्ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थ :-ये मेरी सखी तुम ऐसा काम करो जिससे हरियली बची रहे। वृक्षों से हरियाली होती है वृक्ष लगाकर धूप को रोको। हरियाली से बाग - बगीचे सुंदर लगते हैं।हरियाली होने से पक्षी चहकते हैं। वे इसकी छांव में आराम करते हैं। हरियाली नवजीवन प्रदान करती है। वृक्षों को लगाने में कोई पैसा नहीं लगता।इससे जीवन में खुशी आ जाती है।

संकलन : गुप्तेश्वर द्वारका गुप्त जबलपुर अनुवाद : डॉ. विजय चौरसिया

## 96. पानी के प्रदूषन सें रोग होत भारी

पानी के प्रदूषन सें रोग होत भारी।

रोग होय भारी उर फैले बीमारी।।

पानी कौ तौ कूरा कचरा रोक लेत है बहवो।

जिनमें पनपें बगदर देखो,कीट पतंगन रहवों।

होय मलेरिया पैदा ईसें,आफत करै हमारी
होय बुखार पीलिया ईसें छूत रोग अतिकारी।।
पेचिस ,पागलपन उर लकवा अतिसार हत्यारी
टेढ़े मेढ़े होत पांव संग होत देह की ख्वारी
मोतीझिरा उर हैजा करवे हलाकान होतई सें।।
चरम रोग की मार परै सुन दुबराबें सोचई सें।
रोग असाध्य बनावें देखो जकड़ बीच की नारीं
आंगू रोग अनेकन ठैंया इतैं उतें ला फैलें।।
एक रोग होतई खुल जाती  रोग राई की गैलें।
जीवन लगै नरक के घांई का कह ये लाचारी
करत पोलियो घातक हमला ईसै बरके रहयै।।
गुप्तेश्वर कवि बता रये फिर न हमसे कहियो।
घेर रई है भैया जा तौ हमखों रे महामारी।।

0ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :-** प्रदूषित पानी से अनेकों प्रकार के रोग होते हैं। कूड़ा - कचरा पानी को रोक लेते हैं।जिसमें मच्छर और अनेकों प्रकार के कीड़े जन्म लेते हैं।जिससे मलेरिया फैलता है और हमारी आफत हो जाती है। पानी के प्रदूषण से बुखार, पीलिया, पेचिस, पागलपन, लकवा, अतिसार, हाथ पैर में टेढ़ापन जैसी अनेकों बीमारियां होती है। जिससे हमारा शरीर नष्ट हो जाता हैं मोतिझिरा और हैजा परेशान कर देता है। चर्म रोग के बारे में सुनते ही दुबले पड़ जाते हैं। पानी के प्रदूषण से असाध्य रोग हो जाते हैं।जब शरीर में एक बार रोग हो जाता है तो अनेकों रोग होने लगते हैं।यह जीवन नरक के समान लगने लगता है। पानी के प्रदूषण से ही खतरनाक पोलियो रोग हो जाता है। इसलिये हम तुमको इससे सावधान कर रहे हैं। पानी को प्रदूषित न होनें दें। प्रदूषित पानी से हमको अनेकों प्रकार की महामारी घेर रही हैं।

संकलन : गुप्तेश्वर द्वारका गुप्त जबलपुर
अनुवाद : डॉ. विजय चौरसिया

## 97. उमदा हिफाजत सें सबई रखो पानी

उमदा हिफाजत सें, सबई रखो पानी
हांथ मौ धोबे,निस्तार खों सपरवे
पूजा रचा सब खों, पूजैं राखैं पानी
उन्ना लत्ता धोवें,औ बरतन भांड़े धोवे
लिपाई ,पुताई में सबखों चइये पानी
पानी सें जिव जन्तु पानी सें बिरछा
ढ़ोर जनावर सबई चाहें पानी
पानी न ऐंसो लुढ़काव भल - भला कैं
दूसरे न तरस जांय,पीवे खों पानी
नित करें खरच करौ,घर में उर बाहर
गुप्तेश्वर खेती के काम आवै पानी

0ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थ :-

पानी की बचत करके रखो पानी हाथ, पैर धोने स्नान करने तथा पूजा - पाठ में काम आता हैं कपड़े और बर्तन धोने के लिये पानी चाहिये। लिपाई पुताई के लिये पानी चाहिये। पानी से जीव - जन्तु और वृक्ष जीवित रहते हैं। पशु - पक्षी सभी को पानी चाहिये। पानी को बिना कारण मत बहाओ। जिससे दूसरे लोग पानी के लिये तरस जायें। पानी को व्यर्थ में खर्च मत करो। पानी खेत के काम आता है।

संकलन : गुप्तेश्वर द्वारका गुप्त जबलपुर
अनुवाद : डॉ. विजय चौरसिया

## 98. एजू पानी खों बचाव हॉ जू पानी खों बचाव

एजू पानी खों बचाव, हॉ जू पानी खों बचाव
घर बाहर की सबई गंदगी, बिन पानी ना जावैं
पै पानी में मिलै गंदगी,बीमारी लै आवै
पिरदूषन की परी चपेटैं,ईसें लो बरकाव
साफ - सफाई आंजर - पांजर,गेरऊ सब कोई राखियो
मिलजुल के सब एका करके,पानी उमदा राखियो
गांव - गांव के जन - जन चेतौं,रच लो कछु उपाव
पानी की बस एक बूंद है जीवन देवे बारी
बिरथा बूंद गमैयो न जू,मानों हमाई बात
पानी सबखैं पूजत रहवै,हिकमत तौ बैठाओ
पर ना जावै टौंटो सांचऊं,गांठ बांध लै लेवौ
ईसें आगू चेत चलो जू,नई परहै पछतावो
गुप्तेश्वर कवि तुमें बता रये,मानों सही सुझाव
0ध्ध्ध्0

गीतार्थ :-

पानी की बचत करो घर और बाहर की गंदगी बिना पानी के नहीं जाती। यदि पानी में गंदगी मिल जाये तो अनेकों प्रकार की बीमारियां होती हैं। इसलिये प्रदूषण से बचाव करना चाहिये। पानी की एक - एक बूंद जीवनदायनी है। पानी की बचत करना चाहिये जिससे कभी पानी की कमी न होनें पावे।

संकलन : गुप्तेश्वर द्वारका गुप्त जबलपुर अनुवाद : डॉ. विजय चौरसिया

## 99. अपने आंजर पांजर देखो

अपने आंजर पांजर देखो ,गेरऊं प्रदूषण घूरत है
हां घूरत है गेरऊं प्रदूषण घूरत है
कर रये कटाई बेरहमी कैसे जंगल की बिगरी सूरत है
धुंआ है गैसन वारो सिर पै राखड़ पांव सों पूरत है
दूरन देशी दुशमन बैठो,दावा तो ऐन बसूलत है
धीमों जहर जो फैलत जा रओ,कैसे घना ऊ ऊरत है
खिसकत जा रही उखटत जा रई नोंनी धरा की मूरत है

चेत चलौ अब लौ गुप्तेश्वर,चूक न जाऔ महूरत है
अपने आंजर पांजर देखौ गेरंऊ प्रदूषण घूरत है
0ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :-**

अपने शरीर को देखो चारों ओर प्रदूषण दिखाई दे रहा है। लोग बुरी तरह से जंगलों को काट रहे हैं। जिससे जंगलों की स्थिति खराब हो गई है। कई प्रकार की रसायनिक गैसों का धुंआ आकाश में बिखरा पड़ा है। जिससे वातावरण में धीमा जहर फैलता जा रहा है। इस पृथ्वी का नक्शा बदलते जा रहा है। अभी मौका है सर्तक हो जाओ और पृथ्वी से प्रदूषण समाप्त कर दो।

संकलन : गुप्तेश्वर द्वारका गुप्त जबलपुर अनुवाद : डॉ. विजय चौरसिया

## 100. आंखन देखै जौन अबै भओ

आंखन देखौ जौन अबै भओ,और न जानें अब का होनें
देखत - देखत राज बदल गओ,राजा रैयत काज बदल गओ
काल बदल गओ आज बदल गओ,देखौ सबई समाज बदल गओ
सांसऊ खेत परोसी चर गये,जनम जिनदगी भर को रोनें
उनके नग नग ऍंसे फरकें,जैसे काम करत नोंपर के
चाल चलत हुशियारी करक,ेपै जानत सब जौ लौ बरकें
जीखों देख कही स्यानन नें, हड़िया आवै शीत टटौंनें
बुरओ न मानों मोरे कये को,दिन ऊगे से दिन डूबे लौ
नाव अकेलौ रै जैहै जौ,कहैं कृष्ण जू सुन लो ऊधो
पता नई कै दिन की माया ,ईसें कै रये रइयो नौंनै
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :** समय परिवर्तनशील है। अपनी आंखों के सामने एक से एक घटनायें हो रही हैं और आगे न जाने क्या होगा।अपने देखते ही देखत राज्य में बदलाव आ गया। लोगों के कार्य करने की शैली बदल गई।इस प्रकार पूरा समाज ही बदल गया है।खेतों को पड़ौसी नष्ट कर रहे हैं। जिससे जीवन भर रोना पड़ेगा। उनके हाथ पैर ऐसे फड़क रहे हैं जैसे वे पहली बार किसी काम को कर रहे हैं।वे होशियारी करके चाल चल रहे हैं। फिर भी मैं अनदेखा कर रहा हूं। मेरे कथन को बुरा मत मानना, जब सुर्ययोदय होता है तो सूर्यास्त भी होता है। आप अच्छे कार्य करो,जिससे तुम्हारे मरने के बाद तुम्हारा नाम जीवित रहे।पता नहीं कितने दिनों का यह जीवन है। इसलिये जब तक जीवन है तब तक खुशहाली से अपना जीवन व्यतीत करो।

संकलन : गुप्तेश्वर द्वारका गुप्त जबलपुर अनुवाद : डॉ. विजय चौरसिया

ns'k dh vU; Hkk"kkvksa ds yksd xhrksa esa

lkekftd ,oa jktuSfrd psruk

## हिन्दी भाषा के लोक गीतों में सामाजिक एवं राजनैतिक चेतना

### 1. गांधी चालीसा

मातृ भूमि की चरण रज भारत की जय गीत।
राष्ट्रपिता की विमल यश वणरें परम पुनीत।
बुद्विहीन तन जानिके,सुमरों महा - महेश।
स्वतंत्रता का स्तवन लिख दो श्री गणेश।।
आजादी का अमर उजाला,चक्र सुदर्शन चरखा वाला।
सत्य - अहिंसा समता वाला,असहयोग आंदोलन वाला।
युग को राम रहीम पढाया, दया प्रेम का दीप जलाया।
विपुल वासना का विष पायी, सातविक जीवन का अनुयायी।
लाठी और लंगोटी का धन,दीपक - बाती जैसे तन - मन।
काले - काले घन घिर आये,व्यापारी बन गोरा आये।
कूटनीति का जाल बिछाया,अपना पांव अधिक फैलाया।
कचचा माल गया बिलायत,पक्का बनकर भारत आया।

चौपट हुआ स्वदेशी धंधा,भारत हुआ आंखों का अंधा।
अपना घर हो गया पराया, नहीं नमक तक भी मिल पाया।
रोटी - कपड़ा की मजबूरी, बढ़ी बहुत आपस में दूरी।
शिक्षा हुयी नौकरी वाली,खेत की उजड़ी हरियाली।
लूट - पाट की मारा मारी , मूड़ पकड़ रोते व्यापारी।
कर्जा और लगान बढ़ गया,पानी सिर के ऊपर चढ़ गया।
धरम करम पर साढ़े - साती,नीति हो गयी ठकुर सुहाती।
बढ़ा लगान खेत का भारी,कृषकों की हो गयी निकारी।
गोरों के कानून थे काले,कांटे जैसे चुभने वाले।
विश्वबंधु बन बापू आये,दुनिया को संदेश सुनाये।
जियो और जीने दो सबको, भाग दूसरों का मत लपको।
मानव - मानव को पहचानो, सबको अपने जैसा जानो।
सत्य - अहिंसा को फैलाया, राम राज्य का अर्थ बताया।
चरखा,तकली यज्ञ चलाया,खादी का व्यापार बढ़ाया।
वस्त्र विदेशी फूंक जलाया,छुआ - छूत का भेद मिटाया।
हरिजन को हंस गले लगाया,महिलाओं को ऊपर उठाया।
समता का सत पाठ पढ़ाया,मानवता का मान बढ़ाया।
अपनी बोली अपनी बानी,अपना देश अन्न और पानी।
सबको मिले पेट भर रोटी , तन ढ़ंकने के लिये लंगोटी।
रहे सदा जो भूले भटके, वे अपने अवरोधों में अटके।
अलग - अलग थे भाई - भाई , बनी पराई थी परछांई।
सबको अपना बोध कराया, स्वतंत्रता का ध्वज फहराया।
गई गुलामी बीती रात,आया अरुणिम नया प्रभात।
जन - गण - मन जनजीवन गाया,सुख की महा उदधि लहराया।
अपना घर आंगन सब अपना,पूर्ण हुआ आंखों का सपना।
धन्य हो गई भारत माता,गाती भारत भाग्य विधाता।
बारी अब न खाई तरकारी,ग्राम सवराज करी रखवारी।
घर - घर में पंचायत चर्चा,वस्त्र स्वदेशी सीमित खर्चा।
राम - राज्य का स्वप्न सलोना,दुख - सुख सबका अपना होना।
किन्तु दाल में दिखता काला,है इतिहास बदलने वाला।
युग का मानस धुआं - धुंआ है , इधर है खाई उधर कुंआ हैं
दुनिया एटम बम पर ऐंठी, सर्वनाश के तट पर बैठी।
एक बार फिर बापू आओ, दुखी विश्व की आग बुझााओ।
कर में लाठी ,घड़ी कमर में
उर में हिन्दुस्तान।
खादी के तारों से लिपटी
बापू की पहचान।
सत्य - अहिंसा सत्याग्रह की जय।।

**गीतार्थ :**

मातृ भूमि की चरण धूलि से निस्सृत चेतना भारत के जय गान में स्पन्दित हो। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के निर्मल पुनीत कीर्ति के वर्णन का प्रयास है। ज्ञान के आभाव में सहायतार्थ वागीश महेश का समरण करता हूं। सिद्‌विदायक श्री गणेश स्वतंत्रता का स्तुति गान स्वयं लिख दें।

चरखा रुपी सुदर्शन चक्र धारण करने वाले महात्मा गांधी स्वतंत्रता के अमर प्रकाश हैं।गांधी जी ने स्वातंत्रय समर में सत्य - अहिंसा असहयोग को अस्त्र - शस्त्र के रुप में प्रयोग किया। लोक को राम - रहीम की एकता का उपदेश दिया। मानवता के हृदय में दया - प्रेम का दीप प्रज्वलित किया। नीलकंठ की भांति वासनाओं का विषपान कर सात्विक जीवन जिया।

अपरिग्रही गांधी जी मात्र लाठी और लंगोटी के धनवान थे। उनके तन - मन में दीपक और लौ जैसा अन्तरावलम्बन रहा है।

गौरांग अग्रेज व्यापार के निमित्त भारत में आये। किन्तु भारत देश के लिये विपत्ति के काले - काले बादल बन गये। कूटनीति के बल पर अंग्रेजों ने समूचे भारत पर अपना अधिकार कर लिया।

भारत देश का कच्चा माल इंग्लैण्ड से रुपांतरित होकर भारत में ही मंहगे मूल्य पर विक्रय के लिये आने लगा। स्वदेशी रोजगार धंधे नष्ट हो गये। भारतीय जनमानस के सम्मुख घनान्धकार था। भारतवासी अपने ही देश में पराये जैसे हो गये। उनको नमक तक के भी लाले पड़ गये।

भारतीय शिक्षा प्रणाली दूषित हो गई। शिक्षा सिर्फ सरकारी नौकरी के लिये उपयोगी रह गई। कृर्षि कर्म चौपट हो गया। व्यापारियों की दुर्दशा थी। पूरे देश में मार - काट और लूट - पाट मच गई । भारतीय जनमानस के धर्म - कर्म भ्रष्ट कर दिये गये। नैतिकता में चालाकी और चापलूसी आ गई। भूमि का लगान बढ़ गया। कृषक अपनी जोत भूमि से बेदखल हो गये। उन पर कर्ज चढ़ गया। गौरांगों के कानून काले थे। जनमानस में कांटों की भांति चुभकर पीड़ा पहुंचाते थे।

ऐसी विषम परिस्थिति में विश्वबंधु बापू ने भारत में अवतार लेकर दुनिया को संदेश दिया कि दुनिया के लोगो,सब कोई जियो और दूसरों को भी जीवित रहने दो। एक दूसरे का मौलिक हक मत छीनो।

मनुष्य , मनुष्य का मूल्य पहचाने। अपनी ही भांति दूसरे के मान - सम्मान का ध्यान रखे। सत्य अहिंसा के दर्शन का विस्तार किया। राम राज्य का अर्थ दुनिया को समझाया।

चरखा- तकली से सूत निकाला, खादी को जीवन व्यवहार से जोड़ा। विदेशी वस्तुओं की होली जलाई। छूत - अछूत की भावनाओं को दूर किया। हरिजनों को प्यार दुलार दिया। महिलाओं को समानता की हैसियत प्रदान की।

जन मानस को समानता का पाठ समझाया। मानवता को गौरवान्वित किया। अपने देश की आंचलिक बोलियों और हिन्दी भाषा को श्रेष्ठता दी। अपने देश की माटी, पवन, पानी और अन्न को स्वीकारा और आदर किया।

ऐसा उपक्रम किया की देशवासियों को पेट भर भोजन और वस्तु मिल सके। देशवासी जो अपने कर्तव्य पथ से भटक गये थे। अपने दुराग्रहों में उलझे थे। उनको कर्तव्य बोध कराया।

भाई - भाई अलग - थलग थे। आपस में अविश्वास था। विचलित लोक मानस को आत्म बोध कराया। भारत देश को अंग्रेजों से स्वतंत्र कराया।

परतंत्रता की स्याह रात्री व्यतीत हो गयी। आशा और उल्लास का अरुणिम प्रभात आ गया है। लोक मानस जन - गण - मन का जय गीत गाने लगा। सुख - समृद्वि का सागर लहराया था। लोगों की चिरपोषित आकांक्षा साकार हुयी। देश स्वतंत्र हो गया। अपनी धरती, घर और आंगन का मालिकाना हक मिल गया। भारत वसुन्धरा निहाल हो गयी। प्रमुदित मन भारत माता " भाग्य विधाता " का गान गुनगुनाने लगा।

लोक विश्वास जाग उठा कि अब रक्षक - भक्षक की भूमिका नहीं निबाहेंगे। ग्राम स्वराज से लोक रक्षा होगी।

लोग परस्पर पंचायती राज्य की संरचना और संचालन की चर्चा करने लगे। स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग से दैनिक जीवन का खर्च सीमित और संतुलित हो गया।

स्वतंत्र देशवासी रामराज्य के आदर्श को चरितार्थ करने की चेष्टा करने लगे। एक दूसरे के दुख सुख में सहभागी और सहयोगी हाने लगे।

किन्तु मनचाही स्थिति नहीं बन पाई। इतिहास बदलने के लक्षण उभरने लगे। सफलता में कुछ खोट दिखाई पड़ने लगी। सम्प्रति युग मानस अशान्त और बुझा - बुझा है। बिखराव की स्थिति है। पुंजीवाद और साम्राज्यवाद का शिकंजा कसता जा रहा है। दुनिया की मानसिकता आणविक आयुधों के दर्प से उत्तेजित है। जीवन सर्वनाश के तट पर बैठा है।

लोक कल्याण के आकांक्षी मानवता के शुभचिंतक बापू एक बार फिर से धरती पर आओ, दुखी दुनिया का संकट दूर करो। सर्वनाश की आग बुझाओ।

गांधी का परिधान और व्यक्तित्व विलक्षण है। हाथ में लाठी और कमर में घड़ी लटकी हुयी है। हृदय में हिन्दुस्तान का निरंतर स्मरण है। खादी के पुनीत धागों से बापू का विराट रुप परिवेष्टित है। सत्य - अहिंसा - सत्याग्रह की त्रिधार में प्रवाहमान हो।

संकलनकर्ता : गोमती प्रसाद विकल रीवा

## 2.चैांक उठा था विश्व एक दिन सुन यह तेरी बानी

चैांक उठा था विश्व एक दिन सुन यह तेरी बानी
रह न सकेंगी इस अछूतपन की अब कहीं निशानी ।।
गिरे हुये अपने पैरों से उठ ऊंचे होवेंगे।
पिछड़े हुये बढ़ेंगे आगे अब न पड़े सोबेंगे।।
तू चल पड़ा मृत्यू से लड़ने प्राणों की धर बाजी।
तुझे बधाई है ओ विजयी , जीती दुस्तर बाजी।ं1।।
लड़ता है पर सदा शत्रु पर प्रेम भाव दरसाता।
चींटी तक की रक्षा करके असुर भाव भरवाता।।
पाप करें हम,किन्तु प्रायश्चित को वह आगे आ जाता।
अजब अटपटी लीला है कुछ नहीं समझ में आता।।
फिर भी खींचे जा रहे पीछे ऐसा जादू ड़ाला ।
जुग - जुग जिये हमारा मोहन जगत मोहने वाला।।2।।

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :**

**गांधी जी की यह घोषण सुनकर विश्व चकित हो गया कि अब अछूतपन और छुआछूत का भेद नहीं रहेगा। पतित और पिछड़े दोनों प्रगति करेंगे। गांधी जी की लीला अनोखी हैं वे शत्रु से लड़ते हें पर उससे प्रेम भाव भी रखते हैं चीटी तक की रक्षा करते हैं। पाप कोई करे प्रायश्चित वे करते हैं। सभी उनके जादू से मोहित हैं।**

**संदर्भ - छुआछूत को नष्ट करने के अभियान पर गाया जाने वाला लोक गीत।**

**संकलन- भारतेन्दु अरजरिया कुल पहाड़ जिला महोबा(उ.प्र)**

## 3. गांधी के राज में, बापू के राज में

**कलियुग का अंत आ गया आया है सत्य - युग**
**मानव को मोल बढ़ गया आया है धर्म - युग**
**गांधी के राज में, बापू के राज में।**
**सबके ही हक समान हैं कैसा यें ऊंच नीच**
**दुश्मनी क्यों ड़ालता है भाईयों के बीच**
**गांधी के राज में, बापू के राज में।**
**पुतला जला रहे हैं हम इस छूतछात का**
**गढ़ भी ढ़हा रहे हैं हम इस जात - पात का**
**गांधी के राज में बापू के राज में।**
**पानी कुंआ में लेंगे हमें रोकता है कौन ?**
**दर्शन करेंगे मंदिरों में टोंकता है कौन?**
**गांधी के राज में बापू के राज में।**
**देंगे मिला इन रुढ़ियों को धूल में अभी**
**बेकस है हमें रहना इस भूल में कभी**
**गांधी के राज में, बापू के राज में।**
**पीछे किसी से रहने को हरगिज नहीं तैयार**
**कहना ना अब अछूत हमको खबरदार**
**गांधी के राज में , बापू के राज में।**
**हरिजन हैं हम हरिधाम में उत्सव मनायेंगे**
**जो गिर चुके तुमको भी हम हरिजन बनायेंगे**
**गांधी के राज में , बापू के राज में।**
**हर दिल को प्रेम - प्रीति के अमृत से भरेंगे**
**गांधी का हर हमेशा जय - जयकार करेंगे**
**गांधी के राज में , बापू के राज में।**

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :**

**गांधी जी के द्वारा सत्य और धर्म का युग लाया गया है। इसलिये मानव का सम्मान बढ़ गया है। अब सबके अधिकार समान हैं। छुआ - छूत और जाति - पांति को हम नष्ट करेंगे।**

हरिजन कुओं से पानी भरेंगे और मंदिरों में जाकर देवता के दर्शन करेंगे। सभी रुढ़ियों को तोड़ ड़ालेंगे। हमें बेबस मत समझो। हम किसी से पीछे नहीं रहेंगे। सावधान हमें अब अछूत न कहना। हम हर ह्रदय में प्रेम का रस भरेंगे और गांधी बाबा की जय जयकार करेंगे।

संदर्भः हरिजनों द्वारा प्रभात फेरी में गाया गया लोक गीत

रचनाकार स्व.वियोगी हरि

भगवद दत्त दिल्ली से प्राप्त

## 4. भारत को जग का मुकुट बनाना है

सत्य प्रेम समता मानवता सबमें हमको लाना है ।
सूर वीरता भर भारत को जग का मुकुट बनाना है ।
त्यागी कौंसिल में बैठाकर लोभ का नाश कराना है।
त्याग मूर्ति नीतिज्ञ भेज अन्याय को दूर भगाना है।
अंग पक्ष लोलुपी सिफारिस सोच संकोच मिटाना है।
मनुष्यता के निकट जौहरी परख - परख पहुंचाना है।
कहनी रहनी करनी संयम इन पर दृष्टि जमाना है।
सूर वीरता भर भारत को जग का मुकुट बनाना है।।
गान्धी जी की नीति पकड़ लो जिसने शान बढ़ाई है।
हिन्दू - मुस्लिम - सिक्ख ,ईसाई समझो भाई - भाई हैं।
मेल मंत्र से कई सदी की गई आजादी पाई है।
स्वारथ में सिद्वांत न त्यागो नहिं जग होय हंसाई है।
जिम्मेवार बनें सब नेता भारत वीर कहाना है।
सूर वीरता भर भारत को जग का मुकुट बनाना है ।।

गीतार्थ : सत्य, प्रेम, समता, मानवता के साथ वीरता का गुण भारत को जगत में श्रेष्ठ बना सकता है। त्यागी और नीतिज्ञ लोभ और अन्याय को विनिष्ट कर सकते हैं। पक्षपात,सिफारिश और संकोच मिटाकर कथनी और करनी पर संयम रखना है। गांधी जी की नीति में हिन्दू - मुस्लिम , सिख और ईसाई सब भाई - भाई हैं। इस एकता के मंत्र से भारत को आजादी मिली है। अब नेतागण स्वार्थ लिप्त होकर सिद्वांत न त्यागें ।

संदर्भ : राष्ट्रीय लावनी के दो चरण , जो 1947 के बाद फड़ गायकी का महत्वपूर्ण अंग थी।

रचयिता - लावनी बाज स्वः मुशी राजधर सक्सेना अकौना के संग्रह से प्राप्त।

एक बाल गीत इंदौर के मनस्वी नागर ने गांधी जी को भावांजली के रुप में प्रस्तुत किया है। एक बार पंड़ीत जवाहर लाल नेहरु गांधी जी से मिलने साबरमती आश्रम पर आये। उनको बापू की कुटिया में एक लाठी पड़ी हुई दिखाई दी तो उनने बापू से पूंछा हे बापू! बतलाइये अगर हिंसा करना भयानक पाप है तो आप लाठी लेकर क्यों चलते हो। आप इस हिंसा के प्रतीक को अपने साथ क्यों रखते हो। गांधी जी व्यंग्य समझकर हंस कर बोले - तुम जैसे शैतान बच्चे जब शैतानी पर उतारु हो जावें तो ऐसे समय में यही लाठी जान बचा देती है। इतना सुनकर नेहरु जी निरुत्तर हो गये थे।

5. गांधी जी से मिलने आये, साबरमती जवाहर लाल।
बापू की लाठी देखी तो, सूझी एक बात तत्काल।
कहा जवाहर ने गांधी से, हिंसा अगर भयानक पाप।

तो लाठी लेकर क्यों चलते, हिंसक को क्यों रखते आप।
हंसकर बोले गांधी बाबा, लाठी खूब बचाती जान।
जब शैतानी करने लगते तुम जैसे लड़के शैतान।

भारतीय संस्कृति में ऋषि मुनियों को जब यज्ञ आदि के लिये गीली लकड़ी लेनी होती थी ,तो वृक्षों से प्रार्थना करनी पड़ती थी । अहिंसा वृति से की वह वृक्ष और भी अधिक बढ़ सके,इसलिये कुछ उचित अंश ही विच्छेद किया जाता था। यदि अनिवार्यता की विवशता से पूरा वृक्ष ही काटना पड़ता तो तदर्थ पांच नये वृक्ष लगाना व उनका पालन - पोषण करना धर्म भी था , तद्जनित कर्म भी था। यही तो भारतीय संस्कृति की महानता है। इसी स्वर से स्वर मिलाते हुये श्री दुलीचंद अध्यापक ने आहवन किया है कि -

6. आओ बच्चों, वृक्ष लगायें। सुंदर पर्यावरण बनाएँ।ं
धरती का श्रृंगार है प्यारे। जीवन - रक्षक वृक्ष हमारे।।
मधुर - मधुर फल हमको देते। शीतल छाया ताप हर लेते।।
शुद्व हवा जीवन सुख देते।बनकर वैघ रोग हर लेते।।
आओ बच्चों, वृक्ष लगायें। सुंदर पर्यावरण बनायें।।

## संथाली भाषा के लोक गीतों में समाजिक राजनैतिक चेतना

जिस जाति ने सभ्यता के थपेड़ों को कलांतर से सहकर भी आदिम युग की सभ्यता, अपने पूर्वजों के आचार - विचार एवं उनके शैर्य को बचाये रखा है। उस जाति का साहित्य किसी भी जाति के साहित्य से क्या कम महत्व रखता है।भले ही वह लिपिबद्व न हो ? शिक्षा से दूर रहने पर भी वे लोग सामाजिक और राजनैतिक सं सम्बन्धित लोक गीत गा गा कर जंगल में मंगल मनाते हैं।

इस संथाली लोक गीत में राष्ट्र पिता स्वः बापू को बड़ी सुंदर श्रद्वांजली अर्पित की गयी है।

1. हिन्द रेन सोना,धरती रेन आत्मा मराड़्
अहिंसा सारियाक ताहे कानताम आड़ाड़्
माराड़् नायके देवा सेवा के दाम,
बपुडिच्को लगित् जिकी ए म एनाम
बा बांचाबिंच् बचावकेत् बोनाम
हैच नाम मित टेन मारसाल आनते
चालाक् तुलुच्एम् मारसाल आतले
भागना को ,अमाक् रोड़ आक्जोमको
भागानाको,आमाक् होर पाक्जांको।।

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

गीतार्थ :

हे हिन्द के स्वर्ण ! धरती के महात्मा, सत्य और अहिंसा की पुकार तुम्हारी ही थी। ओ महान पुजारी! तुमने जो पूजा की वह उपेक्षितों के लिये ही थी। तुम इसी जीवन में प्रकाश लेकर आये , जाते - जाते प्रकाश दे गये। वे भाग्यवान हैं जो तुम्हारी पुकार सुनने वाले हैं, वे भाग्यवान

हैं, जो तुम्हारी बात मानने वाले हैं, वे भाग्यवान हैं जो तुम्हारा नाम स्मरण करने वाले हैं,वे भाग्यवान हैं जो तुम्हारे पथ पर चलने वाले हैं।

संकलन एवं अनुवादः श्याम सुन्दर बादल

( संदर्भ ग्रंथः बुंदेली का फाग साहित्य, आदिवासी लोक कला परिषद)

## 2. चेतना दिसम् खुन गांधी बाबाये दराये कान्

चेतना दिसम् खुन गांधी बाबाये दराये कान्
तीर तापे तायो गो कानुन पुथी
बहक् रेताय खद्दर टोपरी
तारिन रेताय नायो गो मोटा गामछा
माहो दिसम् रेन मरनैवा वंचाव
तवोन लगितये है अकाना।।1।।
चेतना दिसम राज गतेज
लतार दिसम रानी गतेज
मूलागढ़ किज रेयेकना
हती गतेज आलुम अड़ागे
उनि रेगि सोना मेनाआअनिरिगे संखा
मेनाआहती गतेज आलुम अड़ागे।।2।।
नुयिन मारांग धरीत रे गाडा
इंगराज को बेनाब आकात्
गाडा रे दो बाबाज जुराकना
गाडा खोम दा बाबा राकाप कज में
मनिवा होड़ बाबपाज बाजचाव कोआ।।3।।
0धधधधध्0

गीतार्थ :

पश्चिम दशा से गांधी बाबा आये हैं। मां उनके हाथ में कानून की पोथी हैं उनके माथे पर खद्दर की टोपी हैं मॉ उनके मािे पर मोटा सा गमछा है।वे हम लोगों को बचाने आये हें। हे बन्धुगण सुनो ध्यान देकर।।1।।

पश्चिम दिशा से राजा ने आकर ,पूर्व दिशा रे रानी ने आकर,नूलागढ़ पर अधिकार जमा लिया।अब वे छोड़ना नहीं चाहते, हम भी पराधीनता से मुक्ति पाने के लिये निरंतर संघर्ष करते रहेंगे।।2।।

इस हमारी धरती पर अंग्रेजों ने गहरे गर्त बना रखे हैं। हम उनमें गिर गये। हे गांधी बाबा हमें बाहर निकालो ,फिर हम समाज को बचायेंगे।। 3।।

संदर्भ : गांधी लोक गीत ग्रंथ

# मेरठ जनपद का लोक गीत

# गांधी दिवा दिखैयो रे

तेरे घर में घुस गये चोर
गांधी दिवा दिखैयो रे ?
तेरे तो भाई गांधी टोपी वाले
यह टोपवाला कौन ?
गांधी दिवा दिखैयो रे ?
तेरे तो भाई गांधी धोती वाले,
यह पतलून वाला कौन ?
गांधी दिवा दिखैयो रे ?
तेरे तो भाई गांधी लाठी वाले ,
यह बंदूक वाला कौन ?
गांधी दिवा दिखैयो रे ?

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

संदर्भ : गांधी लोक गीत ग्रंथ

## हरियाणा जनपद का लोक गीत

## सत्याग्रह - हथियार

घर - घर लेडी - लेडी लंदन रोवे
गांधी बनो गले का हार
घुटनन कर दिई गवरमेन्ट
अब वा के थोथे बाजे हथियार
बर्र तितैया जैसे चिटमन लागें
बेड़ा कौन लगावे पार?
हाहाकार मचो लंदन में
भैणा, अब रुठ गये करतार,
बाजी नायें पायें या लंगोटीवाले से
हाथ या के सत्याग्रह हथियार
लंदन कोपा गांधी बाबा
संग में और जवाहर लाल
अब तक तो भारत में भैंणा
मुफ्ता मारा माल
नियत विरुद्व होय जो राजा
वा को ऐसे ही बिगड़े हाल

नीयत विरुद्व रावण कीनी
लंका बिछो मौत को जाल
हथियार उठाओ गांधी बाबा
नित नित कहे जवाहर लाल

**गीतार्थः**

लंदन के घर - घर में महिलायें रो रही हैं।गांधी हमारे गले का हार बना गया।सरकार घुटनों के बल झुक गई,अअब उसके हथियार थोथे बज रहे हैं।मधुमक्खियों के समान लोग अंग्रेजों पर चिपटने लगे। कौन बेड़ा पार लगायेगा।

लंदन में हाहाकार मच गया।इस लंगोटी वाले से हम बाजी नहीं ले जा सकते।उसके हाथ में सत्याग्रह का हथियार है। लंदन कांप उठा, गांधी बाबा के साथ पंड़ीत जवाहर लाल जी भी हैं। अब तक तो भारत में बहन हमने मुफ्त का माल उड़ाया है।जब राज की नीयत बुरी हो जाती है,तो उसका हाल ऐसे ही बिगड़ जाता है।रावण ने भी नीयत बुरी की थी। जिसके कारण लंका में मौत का जाल बिछ गया था। हथियार उठाओ गांधी बाबा नित नित कहता है जवाहर लाल।

" राष्ट्रपिता गांधी के साथ स्वतंत्र भारत के प्रधान मंत्री जवाहर लाल नेहरु का उल्लेख इस लोक गीत की विशेषता है।"

## भोजपुरी विरहा

गांधी के लड़इया नहिं जितबे, रे फिरंगिया ?
चाहे कर कितना उपाय;
भल - भल मजवा उड़ौले ऐहि देसवा में
अब जइहैं कोठिया बिकाय
0ध्ध्ध्0

**गीतार्थ :**

ओ रे फिरंगी गांधी जी की लड़ाई में तुम नहीं जीत सकते, चाहे तुम कितना भी उपाय करो।भले - भले मजा उड़ा लिये तुमने इस देश में ,अब तो तुम्हारे महल बिक जायेंगे।

संदर्भ : गांधी लोक गीत ग्रंथ

## अवधी बिरहा

तुलसीपुर जिला गोंड़ा के निवासी नारायण अहीर द्वारा यह अवधी बिरहा दिल्ली में रामदयाल अहीर से प्राप्त हुआ, जिसने कहा , मेरे गुरु ने ऐसे बीसीयों बिरहे रच ड़ाले हैं। इस बिरहा में गांधी जी की उस कलकत्ता यात्रा की झांकी प्रस्तुत करने का यत्न किया गया है, जो उन्होंने अंतिम बार दिल्ली पधारने से पहले वहां शांति स्थापित करने के लिये की थी। गीत की अंतिम पंक्तियों में लोक कवि ने बड़े अर्थ पूर्ण ढ़ंग से बताया है कि गांधी जी ने यह बुद्वि अंग्रेजों से ही सीखी थी। जीन जैसा मोटा कपड़ा पहनने की बुद्वि । खादी की परंपरा में लेखक - कवि की पूरी आस्था है -

## सुमरी गांधी ओ गंगा

सुमरी गांधी औ गंगा
बस्तर पहिरे रंग रंगा
जिनके कर्म में राज लिखा
फिर कोई नहीं मेटने वाला
कितो काम करिहै वो गाजी
कितो काम करिहै भाला
लड़ने में अंग्रेज खड़ा है
बिगड़ परे हिन्दु काला
राम चंद्र कोरनाथ क्या
लेक्चर देत निराला
बैठे गांधी पूजा करते
फेर रहे तुलसी माला
हाथ कमण्डल भस्म रमाये
बगल लिहें मिरग छाला
जाय तो पहुचे कलकत्ते में
वहां केर सुन लेहू हवाला
ठीक दुपहरे लूट भई वो
घर - घर बंद भये ताला
आना थाना पुलिस वहां पर रहे पहरा
लिहे बंदूक सिपाही करें टहरा
आज सभा में सुनो गांधी का लहरा
अक्किल अगरेज से लीन
कपड़ा पहिरो मोटो जी
नहीं तो होइ जैहो बेदीन
0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0

संदर्भ : गांधी लोक गीत ग्रंथ

# संदर्भ ग्रंथ


1सुराज : मध्य प्रदेश आदिवासी लोक कला परिषद भोपाल

2.मंड़ला मयूख : राय बहादुर हीरा लाल रघुनंदन शर्मा,प्रकाशक-हिन्दी प्रेस प्रयाग 1928।

3.बस्तर का मुक्ति संग्राम 1774 - 1910 - म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी ।

4.जनपदीय संस्कार गीत भाग 1 एवं 2 म.प्र.लोक कला अकादमी भोपाल

5. एक लंगोटी वारो - माधव शुक्ल मनोज स्वराज पुस्तक माल. स्वराज संस्थान संचालनालय भोपाल

6. बुंदेली का फाग साहित्य : श्याम सुदर बादल आदिवासी लोक कला परिषद भोपाल

7. गोण्ड़ जनजातिय गीत :रुप सिंह कुशराम म.प्र. आदिवासी लोक कला परिषद।

8. आजादी के गायक हरबोले : नर्मदा प्रसाद गुप्त - स्वराज संस्थान संचालनालय ।

9. चौमासाः म.प्र. आदिवासी लोक कला अकादमी भोपाल

10. मंड़ला का सम्यक दर्शन- नित्य गोपाल दीक्षित

11. म.प्र. का लोक संगीत- शरीफ मोहम्मद-म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी

12. कोरकू देवलोक- डॉ. धर्मेन्द्र पारे :म.प्र. आदिवासी लोक कला परिषद

13. संपदाः म.प्र. लोक कला अकादमी

14. मंड़ला गजेटियर 1912

15. गढ़ मंड़ला के गोंड़ राजाःराम भरोस अग्रवाल गोंड़ी पब्लिक ट्रस्ट मंड़ला।

16.बुंदेलखंड़ का संक्षिप्त इतिहास, पं. गोरलाल तिवारी,

17History of the rise and fall of the Marathas in Bundelkhand.Dr.B.D.Gupta.1986.P98-101-

18. तुलसीकृत विनय पत्रिका की टीका 'विनय चंद्रिका'(र.का. 1851ई.) 1876 ई. चरखारी प्रेस से प्रकाशित।

19.न्यू हिस्ट्री आफ दि मराठाज,वाल्युम 2, जी.एस.सरदेसाई,पृ.242।

20 आदिवासी जिला मंड़ला - गिरजा शंकर अग्रवाल गोंड़ी पब्लिक ट्रस्ट मंड़ला।

21 भारत की जनजातिय संस्कृतिःम.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी

22 दी बैगा डॉ. बेरियर एल्विन

23 मध्य प्रदेश की जनजातिय संस्कृति डॉ. शिवकुमार तिवारी - म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी

24. मालवा के लोक गीतः चंद्र शेखर दुबे.म.प्र. आदिवासी लोक कला परिषद

25. बघेल खंड़ के लोक गीत : लखन प्रताप सिंह उरगेश- म.प्र. आदिवासी लोक कला परिषद

26.भ्ंउपतचनतळ्रमजजममतण्1909ण्भ्पेजवतल ैमबजपवदण्

27 भील चेतना गीत लेखक - महिपाल भूरिया मुद्रणः नई दुनिया प्रेस इंदौर 1977

28 बुन्देली भाषा और साहित्य मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी

0ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्ध्0